जनपद जालौन का सारस्वत योगदान

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी (उ.प्र.)

में

हिन्दी साहित्य विषयान्तर्गत स्वीकृति हेतु प्रस्तुत

पी-एच.डी.

का

शोध प्रबन्ध

शोध पर्यवेक्षक -
युगकवि डॉ० राम स्वरूप खरे
एम. ए., पी-एच.डी., साहित्य रत्न
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य
दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई
जनपद जालौन (उ.प्र.) पिन - २८५००१

अनुसंधित्सु
लखन लाल
एम. ए. (हिन्दी साहित्य)
ग्राम-इटैलिया (बाजा)
जिला हमीरपुर (उ.प्र.) पिन २१०४२२

शोध केन्द्र

दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई

अनुक्रमणिका

युग कवि डॉ. राम स्वरूप खरे
पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष एवं प्राचार्य
दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उरई–285001, जनपद जालौन (उ0प्र0)

आवास :
5, प्राचार्य निवास, राजकीय पशु चिकित्सालय के निकट, राठरोड,
उरई, जनपद–जालौन, उ0प्र0
दूरभाष : 05162-253184

शोध निदेशक का प्रमाण पत्र

क्षेत्रीय ज्ञाताज्ञात एवं अल्पज्ञात साहित्यकारों के ऊपर शोध कराने में यद्यपि अनेकानेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, तथापि यदि सुयोग्य शोधार्थी दैव योग से सुलभ हो जाये तो इस विषय के पूर्ण होने में शोधार्थी एवं शोध निदेशक को अतीव आनन्द की अनुभूति प्राप्त होती है।

मेरी प्रेरणा से बुन्देलखण्ड के जनपद बाँदा पर मेरे सुयोग्य शिष्य रामगोपाल गुप्त ने शोध कार्य पूर्ण करके पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस समय वह नेहरू महाविद्यालय, बाँदा में हिन्दी के रीडर, विभागाध्यक्ष एवं हिन्दी पाठ्यक्रम शोध समिति के संयोजक हैं।

उन्हें मेरा शुभाशीष। इसी प्रकार श्री सत्यनारायण सिंह परिहार प्रधानाचार्य इण्टर कालेज राठ ने हमीरपुर जनपद के कवियों पर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत करके हिन्दी में पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस समय डॉ0 परिहार साप्ताहिक 'बुन्देलखण्ड केशरी' का कुशलता पूर्वक सम्पादन कर रहे हैं। वह एक अच्छे कवि भी हैं।

इसी प्रकार ललितपुर जनपद के साहित्यकारों पर भी मैंने अपने शिष्य सुकवि श्री आदर्श 'प्रहरी' की धर्मपत्नी श्रीमती वन्दना सक्सेना को प्रेरणा दी, किन्तु अनेक अन्तः बाह्य विषम परिस्थितियों के कारण वह अपना शोध प्रबन्ध पूर्ण न कर सकी, वह अधूरा ही रह गया। पुनश्च उनके पति का भी देहावसान हो गया। यह टीस कसकती

ही रही।

विगत दो वर्ष पूर्व प्रिय शिष्य लखन लाल से सम्पर्क हुआ। उनकी रुचि एवं दृढ़ इच्छा शोधकार्य करने की थी और मैं भी किसी कुशल शोधकर्त्ता के अन्वेषण में था। अतएव जालौन जनपद के साहित्यकारों पर कार्य कराने की इच्छा बलवती हो उठी। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी ने **'जनपद जालौन का सारस्वत योगदान'** शीर्षक शोध हेतु 07 मार्च 2003 को बैठक में स्वीकृत कर दिया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध शोधार्थी के कठिन परिश्रम स्वाध्याय एवं अध्यवसाय की दृढ़ लगन का परिचायक है। इसमें भाषा भले ही पूर्ण रूपेण साहित्यिक न हो सकी हो क्योंकि अनुसंधित्सु पूर्व में विज्ञान वर्ग का छात्र रहा है फिर भी यह प्रयास इस सन्दर्भ में प्रशंसनीय है कि इसमें तथ्यों के आधार पर अनेक विलुप्त ज्ञाताज्ञात साहित्यकारों का प्रामाणिक परिचय देने का एक सफल प्रयास किया हैं इसमें पूर्ण रूपेण मौलिकता विद्यमान है।

अतएव यह शोध प्रबन्ध विद्वत्जनों के समक्ष परीक्षणार्थ प्रस्तुत करने की संस्तुति करता हूँ।

दिनांक

डॉ० राम स्वरूप खरे

शोध निदेशक

श्री रामकुमार

भाई साहब

की

माता जी

स्वर्गीया श्रीमती शान्ती देवी

को

सादर समर्पित

आत्मकथन

एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् मुझे पी–एच.डी. करने की रुचि जाग्रत हो गयी। चूँकि मैंने यह परीक्षा अपने ग्राम इटैलिया (बाजा) जिला हमीरपुर में रहकर व्यक्तिगत रूप से ब्रह्मानन्द महाविद्यालय राठ (हमीरपुर) से सन् 1999 ई0 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी। यह शोधकार्य मैं या तो राठ में रहकर पूरा करता या उरई में। इस उधेड़बुन में मेरा एक वर्ष ऐसे ही व्यतीत हो गया। एक वर्ष पश्चात् सन् 2000 ई0 मे मैं उरई आ गया। इसी उरई में मैने सर्वप्रथम जयदेवी अवस्थी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शिक्षक के रूप में तीन वर्ष तक शिक्षण कार्य किया। कुछ समय मुझे यहाँ अपने आपको स्थापित करने में लग गया। पी–एच.डी. करने की इच्छा कभी कुंठित हो जाती तो कभी यह इच्छा मेरे अन्दर अँगड़ाई लेने लगती थी।

अचानक एक दिन मैं युगकवि डॉ0 राम स्वरूप जी खरे के निवास 5 प्राध्यापक राठ रोड, उरई में पहुँच गया। गुरुजी बैठे हुए कुछ लिख रहे थे। चूँकि मैंने बी.एस–सी. की परीक्षा इन्हीं के कार्यकाल में सन् 1990 ई0 में उत्तीर्ण की थी। इस कारण उनके प्रति मेरा लगाव होना स्वाभाविक था। मैंने आदरणीय गुरुजी को अपने मन की बात बतायी, पहले तो वे बोले– "भाई! तुम तो विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी रहे हो। हिन्दी में शोध कार्य कैसे कर सकोगे?" मैंने कहा– "गुरुजी मुझे साहित्य से लगाव है। मैंने एक उपन्यास 'रंग दे तिरंगा खून में" लिखा है जो प्रकाशित भी हो चुका है, इसलिये मुझे अपने आप पर विश्वास है कि मैं यह कार्य अवश्य पूर्ण कर लूँगा।" मेरी बात सुनकर गुरुजी बोले– "ठीक है किस विषय पर शोधकार्य करोगे?" मैने कहा कि मैं रामचरित मानस में प्रयुक्त तद्भव, तत्सम शब्दों पर या जनपद हमीरपुर

के कवियों पर शोध कर लूँगा। गुरुजी ने कुछ सोचा और बोले– ''जनपद जालौन के साहित्यकारों पर भी शोधकार्य हो सकता है।'' मुझे जैसे मुँह माँगी कीमत मिल गयी हो। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। मैं सोचने लगा कि गुरुजी ने तो मुझे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल बना दिया। यह मेरी बाल–सुलभ स्वनिल कल्पना थी। बस मैंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि मैं जनपद जालौन के साहित्यकारों पर ही शोधकार्य करूँगा।'' गुरुजी ने पुनः कहा– ''सोच लो, और सोचकर कल बता जाना, इसमें भाग–दौड़ अधिक है।''

मैं अगले दिन पुनः गुरु जी के समीप पहुँचा और मैंने अपना दृढ़ निश्चय गुरु जी को बता दिया। गुरु जी बोले– ''अच्छा, तुम कम से कम पचास साहित्यकारों के साक्षात्कार लेकर आओ और उनके सम्बन्ध में अपने विचार भी लिख लाना।'' उन्होंने मुझे आठ दिन का समय दिया।

आठ दिनों तक मैं खूब घूमा–फिरा। अधिकांश विज्ञजनों ने मुझे निराश भी लौटाया, पर मैं इसे भी उनका अनुग्रह ही मानता था। आठ दिनों में मुझे केवल बीस साहित्यकारों का लिखित परिचय प्राप्त हो सका। मैंने एक रफ कापी में उनका व्यक्तित्व और कृतित्व लिखा और गुरुजी को दिखाया। इतने ही साहित्यकारों को पढ़कर वे बोले ''बस इतने ही।'' मैंने कुछ डरते हुए बताया कि गुरुजी, कम लोगों ने साक्षात्कार दिया। गुरु जी पुनः बोले– ''ऐसे काम कैसे चलेगा?'' उन्होंने मेरे द्वारा लिखित कवि परिचयों को बारीकी से देखा। जहाँ अशुद्धियाँ थी वहाँ इंगित किया और निदेशित भी किया कि अभी और अच्छा लिखो। पुस्तकें पढ़ोगे तो और अच्छा लिख लोगे।'' गुरु जी की इन बातों से मुझे और प्रेरणा मिली।

कुछ दिन पश्चात् शोध रूप रेखा पुस्तिका बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

झाँसी के लिये भेज दी गयी। मेरे मन में एक डर था कि रूपरेखा पुस्तिका मान्य होगी या नहीं। एक दिन गुरु जी ने मुझे यह शुभ सूचना दी कि तुम्हारी –'शोध रूपरेखा' मान्य हो गयी है। मैं बहुत प्रसन्न था।

इस शोध प्रबन्ध को 10 अध्यायों और चार परिशिष्टों में विभक्त किया है।

प्रथम अध्याय पूर्व पीठिका के रूप में अंकित हैं– किसी क्षेत्र की भौगोलिक, प्रशासनिक, शैक्षिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थिति के जाने बिना वहाँ की साहित्य परम्परा और साहित्यकार के बारे में जानना असंभव होता है। अतः प्रथम अध्याय में जनपद जालौन की भौगोलिक स्थिति, प्रशासनिक स्थिति, शैक्षिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक तथा साहित्यिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है।

द्वितीय अध्याय में दिवंगत साहित्यकारों के नाम जन्मतिथि, जन्मस्थान, शिक्षा, विवाह, पिता का नाम, माता का नाम आदि दिये गये है साथ ही संक्षिप्त परिचय कृतित्व एवं मूल्यांकन किया गया है। इसके अतिरिक्त इनके सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विचार दिये गये हैं। दिवंगत साहित्यकारों की संख्या 26 है।

तृतीय अध्याय में जनपद जालौन के लेखकों के नाम, जन्मतिथि, जन्मस्थान, शिक्षा, विवाह, माता एवं पिता का नाम, संक्षिप्त परिचय, व्यक्तित्व एंव कृतित्व तथा मूल्यांकन किया गया है। इन लेखकों को जन्मतिथि के क्रम में न रखकर विधाओं के क्रम में रखा गया है। इन लेखकों के सम्बन्ध में विभिन्न मनीषियों के विचार प्रस्तुत किये गये हैं लेखकों की संख्या 18 है। कुछ स्थापित लेखकों के साक्षात्कार भी दिये गये हैं।

चतुर्थ अध्याय में तहसील जालौन के साहित्यकारों के नाम, जन्मतिथि,

जन्मस्थान, माता–पिता के नाम तथा संतति एवं साक्षात्कार के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को उजागर किया गया है। इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या 25 है।

पंचम अध्याय में तहसील उरई के साहित्यकारों के नाम, जन्मतिथि, जन्मस्थान, माता–पिता के नाम तथा संतति परिचय तथा व्यक्तित्व को उजागर किया गया है। इस अध्याय में साहित्यकारों की रचनाओं को उद्धरण रूप में देकर मूल्यांकन किया गया है। उरई के साहित्यकारों की संख्या 27 है।

षष्ठ अध्याय में कालपी तहसील के साहित्यकार लिये गये हैं। इन्हें क्रमानुसार जन्मतिथि, जन्मस्थान, माता–पिता के नाम तथा संतति परिचय एवं उनके व्यक्तित्व को उजागर किया गया है। इसमें भी साहित्यकारों की रचनाओं के आधार पर मूल्यांकन किया है। कालपी तहसील के साहित्यकारों की संख्या 13 है।

सप्तम अध्याय में कोंच तहसील के साहित्यकारों का नाम, जन्मतिथि जन्म स्थान, माता–पिता के नाम तथा संतति परिचय के साथ साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय, व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से उनका मूल्यांकन किया गया है। इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या 23 है।

अष्टम अध्याय में माधौगढ़ तहसील के साहित्यकारों के नाम, जन्मतिथि, जन्मस्थान, माता–पिता के नाम तथा संक्षिप्त परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व के माध्यम से उनका मूल्यांकन किया गया है। इसमें साहित्यकारों की संख्या 8 है।

नवम् अध्याय में जनपद जालौन के पत्रकारों का नाम, जन्मतिथि,

जन्मस्थान, माता पिता के नाम संतति परिचय एवं साक्षात्कार दिये गये हैं। स्थापित पत्रकारों के लेख फीचर आदि की संख्या के आधार पर उनका मूल्यांकन किया गया है। साथ ही बहुत कुछ ऐसे पत्रकार भी हैं जो अभी पत्रकारिता जगत में नये आये हैं। अतः उनके केवल नामोल्लेख भर कर दिये गये हैं। उनका परिचय आदि कुछ नहीं दिया गया है।

दशम् अध्याय उपसंहार से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत दसों अध्यायों की संक्षिप्त जानकारी दी गयी है।

अन्त में सन्दर्भ ग्रंथ सूची दी गयी है। इसके अतिरिक्त चार परिशिष्ट हैं जिनमें सुप्रसिद्ध साहित्यकारों के चित्र स्वहस्त लेख, जनपद जालौन का मानचित्र एवं अन्य उल्लेख्य सामग्री शोध विषय पर प्रस्तुत की गयी है।

प्रयास सामने है। सभी साहित्यकारों एवं विद्वत् जनों के सहयोग एवं जानकारी से आज इस प्रबन्ध को पूर्ण करने में सफल रहा।

गुरुजी डॉ0 स्वरूप जी का मुझे भरपूर सहयोग मिला। मैं उनके ऋण से कदाचित् कभी उऋण हो पाऊँ। शृद्धेया गुरुमाता श्रीमती कमलादेवी ने मुझे पुत्रवत् स्नेह दिया। मैं उनका बहुत आभारी हूँ।

गुरु जी के कनिष्ठ पुत्र ब्रह्मानन्द भाईसाहब एवं बहन अपर्णा खरे का मैं आभारी हूँ जिन्होंने अनेक अवसरों पर मुझे महत्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध करायी।

मैं अपने पूज्य पिता श्री अमरजू पाल, शृद्धेया मातेश्वरी श्रीमती दयारानी, अनुज रामकुमार एवं अनुजबधू श्रीमती विमलेश के प्रति क्या कहूँ? ये सब तो मेरे आत्मीय हैं हीं। इन्होंने मेरे प्रत्येक अच्छे कार्य को अपनी स्वीकृति देकर मेरा हौसला बढ़ाया। मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सम्पत पाल का

आभारी हूँ, जिसने मेरे हर दुख और सुख में मेरा साथ दिया। मेरी पत्नी मेरी प्रेरणास्रोत है—मार्गदर्शिका है।

मैं अपने पाल परिवार का बहुत आभारी हूँ जिनमें सर्व श्री श्यामबिहारी, ठाकुरदास, महीपत पाल, रघुनाथ पाल, लल्लूपाल, ईश्वरदास पाल (इंस्पेक्टर कृषि विभाग), रामचरन, धनपत, तिलका, हरगोविन्द, शिवनाथ एवं मैयादीन में से अधिकांश ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी विद्यालयी शिक्षा नगण्य है किन्तु इनका प्रेम भाईचारा एवं आत्मीयता दूसरों के लिये प्रेरणादायी है। मेरा इन लोगों से अटूट रिश्ता है। ये मेरी प्रगति में हमेशा प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। यहाँ मैने अपना नया संसार बना लिया है किन्तु इनकी अनुपस्थिति मेरे मन में एक कसक पैदा करती है।

सम्प्रति मैं एस.आर. इण्टर कालेज, उरई में हिन्दी शिक्षक के रूप में कार्यरत हूँ। समस्त शिक्षक वर्ग का सहयोग मेरे लिये प्रेरणादायक रहा। विद्यालय के प्रबन्धक श्री अशोक कुमार राठौर, प्रधानाचार्य श्री रमाकान्त द्विवेदी का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने मेरे डगमगाते कदमों को बल प्रदान किया। श्री अशोक कुमार राठौर जी एक अच्छे शिक्षक हैं; का समय—समय पर मार्गदर्शन मिला। वैसै मैं उनके अच्छे गुणों से तो पूर्व से ही प्रभावित था। सुगठित शरीर, आकर्षक व्यक्तित्व, चेहरे पर हमेशा मुस्कान—कार्य के प्रति निष्ठा, विद्वत्ता एक साथ अनेक गुणों के भण्डार हैं वे। जैसा उनका बाह्य व्यक्तित्व वैसा ही आन्तरिक। उनके हँसमुख चेहरे को देखकर और उनकी स्वस्थ विनोदपूर्ण वाणी से चिन्ताग्रस्त व्यक्ति को प्रसन्न करने की अद्भुत क्षमता है। सुख और दुख में एक समान रहने वाला यह व्यक्ति निश्चित रूप से महामानव की गरिमा को सुशोभित करता है। प्रधानाचार्य श्री

रमाकान्त द्विवेदी अपनी सूझ–बूझ के लिये जाने जाते हैं। अनेक अवसरों पर जब मेरा किसी साहित्यकार से साक्षात्कार नहीं हो पाता था और जब मैं उन्हें इन बातों से अवगत कराता तो वे कहते– ''भाई पाल! अमुक व्यक्ति के पास चले जाना, आपका कार्य हो जायेगा। इस तरह से उनकी सूझ–बूझ ने मेरा काफी कार्य आसान बना दिया था।

इसी श्रृंखला में डॉ0 चन्द्रप्रकाश गुप्त (चर्चित नाम डॉ. सी.पी.गुप्ता) प्रभारी चिकित्साधिकारी प्रा0स्वा0के0 इटौरा (जालौन) का मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने अनेक बार मेरे लिये अपना अमूल्य समय देकर साहित्यकारों से परिचय कराया।

इसी विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती प्रभा दीक्षित ने मुझे अपना छोटा भाई मानकर इस कार्य के लिये मेरा सदैव उत्साहवर्द्धन किया है। बहन प्रभा दीक्षित का मैं आभारी हूँ। इसके अतिरिक्त श्री मधुकान्त दुबे (अंग्रेजी प्रवक्ता) का यह कहकर मुझे प्रोत्साहित करना कि 'पाल साहब' वास्तविक पी–एच.डी. तुम ही कर रहे हो। मैं तुम्हें हमेशा लिखते हुए देखता हूँ तो लगता है कि ऐसे की जाती है पी–एच.डी.। मानवीय गुणों से परिपूर्ण पूरे विद्यालय परिवार का मैं आभार व्यक्त करता हूँ।

उन साहित्यकारों का जिक्र करना यहाँ समीचीन होगा जिन्होंने सबसे अधिक शोध सामग्री उपलब्ध करायी। इनमें सर्वप्रथम नाम श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' का है। इन्होंने अपने पुस्तकालय से दुर्लभ सामग्री मेरे लिये सहर्ष सुलभ करा दी, साथ ही अपना अमूल्य समय भी दिया। निश्चित रूप से वे उदार हृदय व्यक्ति हैं। डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरवार, डॉ0 हरीमोहन पुरवार के स्नेही स्वभाव ने मुझे अधिक प्रभावित किया।

क्षेत्रीय कार्य में मुझे कड़वे व मीठे दोनों प्रकार के अनुभव प्राप्त हुए जिस प्रकार अनेक कड़वे घूँटों के पश्चात् एक मीठा घूँट सारे कड़वापन को दूर कर देता है। ऐसे अनुभव मेरे लिये सुखद रहे।

बाबू किशोर सिंह यादव (लिपिक) कोंच जो उच्चकोटि के साहित्य प्रेमी है ने मेरा बहुत सहयोग किया। उन्होंने अपनी आकर्षक मधुर वाक्य चातुरी से एक–एक साहित्यकार का परिचय कराया और घूम–फिर कर शेष बचे साहित्यकारों को खोज–खोजकर उनको मुझसे मिलवाया। मैं श्री किशोर सिंह यादव का इस कार्य के लिये आभार व्यक्त करता हूँ।

जालौन के प्रसिद्ध गीतकार एवं शिक्षक रवीन्द्र शर्मा का भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा जिन्होंने अनेक दिवंगत साहित्यकारों के बारे में जानकारी दी।

मेरा यह शोध ग्रंथ एक ऐसा उपवन है जो अनेक प्रकार के प्रसूनों से सुवासित है। जहाँ आपको गुलाब, गेंदा, गुड़हल आदि के रंग एवं खुशबू तन–मन को सुवासित करेंगे वहीं बेला, चमेली, जूही, चम्पा भी अपनी महक और सौन्दर्य से इठलाती हुई अपनी छटा को बिखेरती हुई मन में गुदगुदी उत्पन्न करेगी। समीप ही सरोवर के सरसिज जो दिवाकर की स्वर्ण रश्मि के पड़ते ही पूर्ण मनोरथ के साथ खिलकर सूर्यास्त के बाद अपनी जीवन लीला समाप्त कर–चन्दा की रजत चाँदनी में न जाने कितने गीत, कितनी भावनाओं को अपने हृदय में समेटे प्रियतम चन्दा के साथ रजनी में हास परिहास करती हुई चकोरी से ईर्ष्याभाव लिये मचलती सी प्रतीत होगी। उपवन में बाहर के यत्र–तत्र प्रसूनों का भी समावेश करने का भी दुराग्रह किया है भले ही उनका जन्म इस क्षेत्र में नहीं हुआ है किन्तु यहाँ बसकर इस उपवन को महकाने मे अपना पूर्ण सहयोग किया है। मैं जानता हूँ कि क्षेत्र मे सुवासित प्रसूनों की

कमी नहीं है फिर भी इनके सहयोग को नकारा नहीं जा सकता है। कदाचित् मेरे लिये–इस उपवन के लिये इन प्रसूनों को नकारना स्वार्थपरता एवं ईर्ष्याभाव ही होगा।

अन्त में मैं फर्म राजेश प्रिण्टर्स का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने बहुत कम समय में मेरे शोध प्रबन्ध को सुसंगठित किया।

अनुसंधित्सु

लखन लाल
(लखन लाल)

प्रथम अध्याय

पूर्व पीठिका

क) जनपद जालौन की भौगोलिक स्थिति

ख) जनपद जालौन की प्रशासनिक स्थिति

ग) जनपद जालौन की शैक्षिक स्थिति।

घ) जनपद जालौन की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थिति।

ड) जनपद जालौन की साहित्यिक स्थिति।

जनपद जालौन की भौगोलिक स्थिति

मानव ने जब अपने निंदयारे लोचन खोले तो उसने अपने आपको प्रकृति की गोद में पाया। जब उसने सुरम्य मनोहर प्रकृति का अवलोकन किया तो उसके मन में विचार आया कि इस सृष्टि का आदि क्या है? किसने बनाया और कैसे बनी? इसका रहस्य पूर्ण रूप से मानव नहीं जान सका। वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर यह सूर्य का हिस्सा मात्र है जो कालान्तर मे ठंडी होकर इसमें जलाशय (समुद्र) वनस्पतियाँ एवं जीव जन्तुओं की उत्पत्ति हुई। इन सभी जीवधारियों में मानव सबसे विकसित प्राणी है। मानव पृथ्वी के कुछ रहस्यों को खोलता चला गया और बराबर इस प्रयत्न में लगा हुआ है। पृथ्वी पर रहने वाले मानव ने अपने–अपने क्षेत्र के भूखण्डों को अपनी संस्कृति अपने विचारों के आधार पर उस भाग का नामकरण किया। इस तरह से अनेक राष्ट्र बनते चले गये। इन सभी राष्ट्रों के मेल से विश्व का मानचित्र बना। इन्हीं राष्ट्रों में भारत वर्ष जो अपनी संस्कृति, अपनी विविधता एवं भौगोलिक परिवेश के लिये संसार के मानचित्र में अपनी छटा बिखेरता हुआ विश्वाकाश में एक चमकते हुए सितारे की तरह देदीप्तिमान हो रहा है। भारत वर्ष में 28 राज्य एवं 7 केन्द्र शासित प्रदेश है। इन्हीं राज्यों में उत्तर प्रदेश नाम का एक राज्य है। इस राज्य में 70 जिले हैं। इन 70 जिलों में जनपद जालौन नाम का एक जनपद है। उत्तर प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जनपद जालौन स्थित है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र अपनी संस्कृति अपनी वीरता को इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखाये हुए गौरव के साथ अपना मस्तक ऊँचा किये हुए है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जन्म लेने वाला प्रत्येक नागरिक अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है। माँ का आँचल छोड़ते ही बच्चा अपने

महान पूर्वजों आल्हा–ऊदल एवं झाँसी वाली रानी के बलिदान की गाथाएँ सुनकर अपने आपको धन्य मानने लगता है। इन्हीं यश गाथाओं से प्रेरणा लेकर अपने वतन के लिये, अपने देश की माटी की रक्षा के लिये तन–मन से सदैव समर्पित रहता है। चूँकि बुन्देलखण्ड क्षेत्र की कोई प्रशासनिक स्थिति नहीं है किन्तु वह अपनी संस्कृति यहाँ के रीति–रिवाज एवं तीज–त्योहारों को अपने में समेटे हुए सदा मुस्कराता सा अडिग बना खड़ा हुआ है। इसी भूमि में महर्षि पारासर, वेद व्यास, उद्दालक प्रभृति ऋषियों तथा स्वतन्त्रता संग्राम की अग्रदूत महारानी लक्ष्मी बाई झाँसी,नाना साहब, कुँवर सिंह बाँदा आदि ने इस क्षेत्र की क्रांति भूमि से कर्म क्षेत्र के द्वारा इसे इतिहास में अमर बना दिया। इसी बुन्देलखण्ड क्षेत्र में जनपद जालौन है जो अपनी मीठी बोली के लिये प्रसिद्ध है। साथ ही साहित्यिकता, ऋषि मुनियों की जन्मस्थली आदि के लिये जाना जाता है। जनपद जालौन की कालपी तहसील में सुप्रसिद्ध साहित्यकार हास्य–व्यंग्य के मूर्धन्य विद्वान वीरबल पैदा हुए जो अकबर के नवरत्नों में से एक रत्न गिने जाते थे। जनपद जालौन में पाँच तहसीलें हैं –जालौन, कोंच, उरई, कालपी एवं माधौगढ़।

जनपद जालौन को बुन्देलखण्ड का पूर्वी द्वार माना जाता है। जनपद जालौन त्रिकोणाकार में बसा है। सम्पूर्ण जनपद 26. 27 अंश और 25.46 अंश उत्तरी अक्षांश तथा 79.52 व 78.56 अंश पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित है। इसकी सीमा तीन नदियों से घिरकर बनी है। उत्तर सीमा में यमुना नदी, पश्चिम सीमा में पहूज नदी, दक्षिण व पूर्वी सीमा में बेतवा नदी से बनी है। इसके पूर्व में हमीरपुर जिले की सीमा, पश्चिम में भिण्ड व ग्वालियर जिले की सीमा, उत्तर में औरैया इटावा व कानपुर देहात जिले की सीमा, दक्षिण में

झाँसी जिले की सीमा मिलती है। जिला जालौन की लम्बाई 95 किमी0 व चौड़ाई 80 किमी0 है। इसका क्षेत्रफल 4565 वर्ग किमी0 है। जनपद का अधिकांश भूभाग मैदानी है। नदियों के किनारों की भूमि पानी के बहाव व कटाव के कारण ऊँची–नीची व ऊबड़–खाबड़ है। यमुना व पहूज नदी के किनारे जमीन अधिक ऊँची–नीची व ऊबड़–खाबड़ है।[1]

जलवायु

जलवायु से तात्पर्य जल तथा वायु से है। यहाँ की जलवायु नम तथा उष्ण है। जनपद जालौन में जाड़ों में ठंडी हवाएँ तथा गर्मियों में तन को झुलसाने वाली लू चलती है। मई–जून के महीने में यहाँ का तापमान 48^0 C तक पहुँच जाता है तथा दिसम्बर व जनवरी में अधिक सर्दी के कारण तापमान 3^0C या 4^0C या कभी–कभी शून्य को भी छूने लगता है। कभी–कभी पानी न बरसने के कारण फसलें सूख जाती हैं इस कारण अधिकांश भूमि को नहरों, ट्यूबवैलों एवं कुँओं द्वारा सिंचाई करनी पड़ती है। शहरी क्षेत्रों में नगर का गन्दा पानी जो नालों में बहता है से पम्पसैट द्वारा कुछ भूमि की सिंचाई कर ली जाती है। पानी न बरसने पर राँकड़ भूमि की फसल सूखकर बत्ती बन जाती है। वे किसानों का मुँह चिढ़ाने लगती है, मानो कह रही हों –" मैं तो जा रहीं हूँ, तुम मुझे कैसे रोक पाओगे?" किसान लाचार होकर आँसू बहाने के अतिरिक्त कुछ नहीं कर पाता है।

मिट्टी :–

जनपद जालौन की अधिकांश भूमि उपजाऊ है। इस मिट्टी में लगभग सभी प्रकार की फसलें उगायीं जाती हैं। मिट्टी के वर्गीकरण के

आधार पर देखते हैं तो हम पाते हैं कि यहाँ पर चार प्रकार की मिट्टी पायी जाती है– काबर, मार, पडुवा तथा राँकड़।

काबर मिट्टी कुछ हल्के काले रंग की होती है। यह पानी को खूब सोखती है। यदि किसान आषाढ़ मास (मई–जून) का पहला पानी बरसने के बाद इसकी जुताई देशी हल या ट्रैक्टर आदि के द्वारा कर देता है तो इसकी नमी बुबाई के समय तक बनी रहती है। इस मिट्टी में चना, मसूर, मटर, बिना सिंचाई के खूब होते हैं। इसमें ज्वार बाजरा के साथ अरहर की भी अच्छी पैदावार हो जाती है। क्वार मास का पानी बरस जाने के बाद तो कहना ही क्या है।

जनपद की मार मिट्टी गहरी काली व चिकनी है। यह मिट्टी भी पानी अधिक सोखती है। अधिक पानी बरसते रहने पर बहुत दिनों तक खेत जुताई के योग्य नहीं हो पाते है। कुछ समय पश्चात् खेत जुताई के योग्य होते भी है तब तक पुनः पानी बरस जाने पर खेत ज्यों के त्यों हो जाते हैं अर्थात् उसमें देशी हल या ट्रैक्टर के द्वारा जुताई सम्भव नहीं हो पाती है। किसान परेशान हो जाता है। किसी–किसी वर्ष तो वर्षा ऋतु की एकाध जुताई के बाद ही क्वार के महीने में एक या दो बार उलट–पलटकर किसान उसमें बीज बो देता हैं। इस मिट्टी में सभी फसलें हो जातीं हैं लेकिन गेहूँ की फसल बहुत अच्छी होती है। इस मिट्टी के सन्दर्भ में एक लोकप्रचलित कहावत प्रसिद्ध है– **''मार जोतिये, कुलै ब्याहिये।''**

पडुवा मिट्टी का रंग पीला व सफेद होता है। यह भी पानी खूब सोखती है पर इसमें जुताई बहुत जल्दी आ जाती है। यह मिट्टी खूब उपजाऊ होती है। इस मिट्टी में ज्वार, बाजरा, गेहूँ, गन्ना, सोयाबीन आदि

की फसलें अच्छी होती हैं। पडुवा भूमि जिस किसान के पास जितनी अधिक होती है, वह किसान उतना ही सुभीते का माना जाता है। इस मिट्टी के सम्बन्ध में भी एक लोक प्रचलित कहावत प्रसिद्ध है—

पड़ुवा खेती रड़ुवा भ्राता। जौ बाजे खें देय विधाता।।

राँकड़ मिट्टी बहुत सख्त व कड़ी होती है। इस मिट्टी में सफेद खुरदरे छोटे—छोटे कंकड़ पाये जाते है। इस मिट्टी में जुताई करना काफी कठिन होता है। अधिक कंकड़ों वाली जमीन कहीं—कहीं ऐसे ही पड़ी रहती है। उसमें झाड़ियाँ आदि ऐसे ही उग आती हैं किन्तु जहाँ कंकड़ों की संख्या कम है वहाँ की भूमि कृषि योग्य बना ली गई है किन्तु इसमें पैदावार कम होती है। नदियों के समीप वाली भूमि इसी तरह की है। यह भूमि ऊबड़—खाबड़ एवं कहीं बहुत गहरे नाले एवं भरके होते है। बहुत कम भूमि पर किसान बैलों के द्वारा खेती करता है। ऐसी जगह के बैल ऊँचे—नीचे टीलों पर चढ़ने—उतरने के अभ्यस्त हो जाते है। यदि मैदानी इलाकों के जुते हुए बैल को खरीदकर किसान उसमें खेती करना चाहे तो उन बैलों के द्वारा खेती करना असंभव हो जाता है। अच्छी बरसात हो जाने पर, मुख्यतः क्वार महीने के अन्तिम सप्ताह में वर्षा होने पर ज्वार, चना, सरसों, सिहुँआ हो जाता है। राँकड़ मिट्टी के सम्बन्ध में भी जनपद के लोगों द्वारा यह कहावत सुनी जा सकती है—"**ऊँची डड़िया खेती न करियो, न झूठों की मानों बात।**

ब्याव बुढ़ापे में न करियो, नई भर ज्वानी में राँड़ हो जात।।

सिंचाई

कृषि की सिंचाई के लिये इस जनपद में बहुत से साधन है। जैसे—नहर, नलकूप, कुँआ तथा तालाब। कहीं—कहीं बरसात के पानी को

चैकडम बना कर नालों में पानी इकट्ठा करके कुछ क्षेत्र की सिंचाई कर ली जाती है पर सबसे सस्ती एवं कम समय लेने वाली सिंचाई नहर द्वारा होती है। जनपद जालौन में बेतवा नहर है जिसकी दो शाखाएँ हैं– एक कुठौंद शाखा तथा दूसरी हमीरपुर शाखा। दोनों शाखाओं के द्वारा जनपद की भूमि की सिंचाई की जाती है। इन शाखाओं की लम्बाई 1500 किमी० है। सबसे अधिक सिंचाई कुठौंद शाखा से की जाती है। बड़ी नहर से कई उपशाखाएँ निकालकर जनपद के अधिकांश भाग में पानी वितरित कर दिया जाता है।[2]

नहर के जिस स्थान से छोटी नहर (बम्बी) निकाली जाती है, नहर के पन्द्रह–बीस मीटर आगे या इससे अधिक एक झाल (चैकडम) बना दी जाती है जिससे पानी का वेग एकदम रुक जाता है और पानी अगल–बगल बने हुए कुलाबों में जाने लगता है। पानी का वेग भी बढ़ जाता है। जनपद जालौन में छोटी–छोटी नहरों (बम्बी) का जाल बिछा हुआ है। सिंचाई के लिये पानी भी फसलों को समय पर मिल जाता है।

जिस भूमि पर नहर का पानी नहीं पहुँचता है वहाँ सिंचाई के लिये नलकूपों की व्यवस्था है। बिजली के द्वारा नलकूपों को चलाकर खेतों की सिंचाई कर दी जाती है पर इसमें एक समस्या बिजली की है। बिजली के न आने से या बीच में बिजली के खम्भे या तार टूट जाने से समय पर सिंचाई नहीं हो पाती है और फसलें सूखने लगती हैं। बिजली की आँख मिचौली से किसान परेशान हो जाता है साथ ही समय का अपव्यय भी बहुत अधिक होता है। सिंचाई भी कम क्षेत्र की हो पाती है।

वर्तमान में जनपद जालौन में नलकूपों की संख्या लगभग 480[3] है।

यत्र–तत्र कुँओं के द्वारा भी इस जनपद के खेतों की सिंचाई होती

रहती है। किसान स्वयं की लागत लगाकर कुँआ बनवा लेता है। कुँआ बोरिंग करके उसमें पम्पसैट रखकर पानी बाहर निकाला जाता है। इस सिंचाई में खर्च अधिक आता है। ज्यादा सिंचाई करने के लिये अधिक डीजल की आवश्यकता पड़ती है और निश्चित भू–भाग की सिंचाई कुँआ द्वारा हो पाती है।

तालाबों द्वारा भी यहाँ सिंचाई की जाती है। तालाबों को वर्षा के पानी से भर लिया जाता है। इसके बाद क्वार के महीने में या क्वार में बरसात हो जाने पर अगली सिंचाई के लिये वह पानी काम आ जाता है। तालाब के किनारे पम्पसैट रखकर तथा खेतों की तरफ लम्बी पाइप लाइन बिछाकर सिंचाई कर ली जाती है। तालाब द्वारा सिंचाई बहुत कम क्षेत्रफल में हो पाती है। एक तो जनपद में तालाबों की संख्या बहुत कम है, इसके साथ ही यहाँ के तालाबों का आयतन कम होने के कारण पानी इतना अधिक नहीं होता है कि दो–तीन सिंचाई बराबर की जा सके। मटर, चना, अरहर की एक बार की सिंचाई एकाध किसानों की हो जाती है जो कि इन फसलों के लिये पर्याप्त होती है।

बिजली

जनपद जालौन में विद्युत की आपूर्ति पनकी पावर हाउस कानपुर से की जाती है। इसके अलावा माताटीला विद्युत गृहों से भी विद्युत की आपूर्ति की जाती है। ये विद्युत जनपद के उद्योगों एवं सिंचाई के साधनों तथा घरेलू उपयोग के काम आती है। जिले में विद्युत शहर व गाँवों में पहुँच रही है।[4] पर किसी–किसी गाँव में आज भी बिजली नहीं पहुँच सकी है।

पारीछा विद्युत गृह जो जिले से लगभग 80 किमी0 की दूरी पर है, के बन जाने से इस जिले की आपूर्ति में सुधार हुआ है।[5]

अब भी कुछ ग्रामीण क्षेत्र बिजली से पूर्णतया नाता तोड़े हुए हैं तो शहरी क्षेत्र के लिये वही बिजली जीवन का एक हिस्सा बन चुकी है। गर्मी के मौसम में बिजली के चले जानेपर या किसी कारणवश खराब हो जाने पर लोग बेचैन हो उठते हैं। कुछ धनी वर्ग तो बिजली के इतने अधिक आदी हो चुके हैं कि उन्होंने घर पर जनरेटर या इनवर्टर रख लिया हैं ताकि विद्युत के चले जाने पर विद्युत की आपूर्ति पंखे, कूलर, टी.वी., फ्रीज आदि के उपयोग में आ सके।

फसलें

अपना देश कृषि प्रधान देश है। यहाँ की लगभग 75 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में निवास करती है। जिले का मुख्य व्यवसाय कृषि है। जालौन के 3/4 भाग में खेती की जाती है। इस जिले में तीन फसलें होती हैं।[6]

१– खरीफ की फसल:–

अषाढ़ मास (जुलाई–अगस्त) में वर्षा प्रारम्भ हो जाने पर किसान खेतों की जुताई करके इसमें धान, मूँग, बाजरा, मक्का, अरहर आदि फसलें बो देता है। जनपद जालौन में जिस दिन खेत की बुबाई के लिये बीज निकलता है उस दिन घर की महिलाएँ देहरी को गोबर से लीप देती हैं और गोबर के छोटे–छोटे दीपक बनाकर उनमें थोड़े–थोड़े बीजों के दाने डाल देतीं हैं। उस दिन घर की महिलाएँ किसी को कोई वस्तु माँगने पर नहीं देतीं हैं। वे मना करके कह देती है कि आज हमारे घर से बुबाई के लिये बीज निकला है, हम आज कोई वस्तु तुम्हें नहीं दे सकती हैं। यह प्रथा बहुत पुरानी है और आज तक चली आ रही है। खरीफ की फसल कार्तिक के महीने (नवम्बर–दिसम्बर)

में काट ली जाती है।

खरीफ का क्षेत्रफल 71.87 हजार हेक्टेयर है।[7]

रबी की फसलः—

रबी की फसल क्वार—कार्तिक के महीने में बोयी जाती है। दशहरा के त्योहार के बाद जनपद का किसान बीज लेकर खेतों में पहुँच जाता है। कुछ किसान ट्रैक्टर से बुवाई करते हैं और कुछ हल (नारी) के द्वारा खेत की बुबाई करता है। नारी में दो लोगों की आवश्यकता पड़ती है। किसान बैलों को पैना[8] से हाँकता है और दूसरे हाथ से नारी के मुठिया को पकड़कर एक सीध में कूँड़ बनाता जाता है। उसी में एक बाँस का पाइप लगा होता है जो एक ओर नारी के निचले स्थान पर लगा दिया जाता है जहाँ एक छोटा छेद बना होता है उसमें फिट कर दिया जाता है और दूसरे सिरे पर एक लकड़ी की चाड़ी लगा दी जाती है। दूसरा व्यक्ति अथवा कृषक पत्नी झोली गले में लटकाये रहती है जिसमें बीज भरा रहता है। वह बीज मुट्ठी में लेकर उस चाड़ी में डालती जाती है। किसान चाँदनी रात में बैलों को हाँकता है और दुनियाँ जहाँ से बेखबर ठुमरी गाता जाता है—

अरजुन तौ भइया काहे दूबरे—रे.....

काहे हैं बदन मलीन।

कि तौ सतावै घर धनिया

कि तौ बगर की गाय।

हाँ आ.................ए.............

न तौ सतावै घर धनिया,

न तौ बगर की रे गाय।

मैंड़ै बसत कौरवा...............रे

दाम देत दिन जाय।।

जब से ट्रैक्टर के द्वारा बुवाई होने लगी है ये ठुमरी लगभग बन्द सी हो गई है। बूढ़े पुराने लोग अब अपने पुराने समय को याद करके आँगन में चारपाई डालकर सोने से पहले गुनगुनाकर अपने मन की तसल्ली कर लेते हैं। मैंने जब इस सन्दर्भ में कोहना गाँव जो कि आटा से लगभग 7–8 किमी0 उत्तर पश्चिम दिशा में स्थित है के एक बुजुर्ग श्री भोले पाल[9] से बात की तो वे बोले–''लला, अब पहलूँ कैसो समै कहाँ धरो है गो? पहलूँ के समै (क्वार मास) हर खितवन पै ठुमरी गाई जात्ती। मोरौ गरौ तौ ऐसौ हतो लला कि का कहनै ? अपने खितवन से गा देंव तौ आस–पास के गाँवन वाले जान जात्ते कि भोले दादी गा रओ हैगो।'' एक गहरी साँस खींचकर वह बुजुर्ग पुनः बोला–'' आ हा हा रे जमाने! निकर गओ लला! जब से यौ पिन्ट चल गओ हैगो तभई सें यौ जमानौ खराब भओ हैगो। रई–सई कसर ई फिल्मन नै पूरी कर दई हैगी। पहलूँ ध ाोती कुरता पहनो जात्तो लला और मूँड़ पै साफा। खोरन में से निकर जावै तौ लगै कोउ गबडू ज्वान जात हैगो। लला दूदऊ–घी खूबई होत्तो। अब का है? कछू नहियाँ।'' उपर्युक्त ठुमरी भी उसी बुजुर्ग ने मेरे सामने गा के सुनाई थी। दीवाली भी गा के सुनाई। मैंने अपनी बात पर आकर कहा–''फूफा, ये बात तो सही है कि तुम्हारी ठुमरी का भविष्य अंधकार में है लेकिन आज विकास भी तो बहुत कुछ हो गया है। गेहूँ, चना, मटर, खूब होता है। पहले तो लोग बाजरा की रोटी खाकर पेट भरते थे।'' जब मैंने ऐसा कहा तो वे तपाक से बोले–''ऐल्ले

लला, या पिसिया की रोटी पचतऊ नहियाँ। पेट गुटर–गुटर होत हैगो। पहलूँ बाजरा की रोटी भैंस के दूद में मींड़ खौं खात्ते.......... आ हा हा हा ऐसौ लगत तो जैसे खटरस भोजन मिल गओ है गो।''

बहुत से बूढ़े बुजुर्ग आज भी बीते हुए कल की मधुर स्मृतियों को अपने मानस पटल पर संजोये हुए रात्रि विश्राम के समय ठुमरी, साखी व दीवाली गान को गुनगुनाकर अपने जीवन की मधुर स्मृतियों को तरो–ताजा कर लेते हैं। उनका अतीत ही उन अनपढ़ बुजुर्गों को उनके जीने के लिये बल प्रदान करता है। उन्हें हानि–लाभ से कोई प्रयोजन नहीं। उन्होंने जीवन में क्या खोया क्या पाया शायद इस गणित के चक्कर में वे नहीं पड़ते हैं। वे तो अपने अतीत के सच्चे आनन्द की अनुभूति से सरावोर होते रहते हैं– प्रतिदिन, प्रतिशाम या खाली समय में।

रबी की फसल फाल्गुन मास में पूर्ण रूप से पक जाती है और किसान चैत्र के महीने में फसल को काटना शुरू कर देता है। वैशाख के महीने तक पूरी फसल कट जाती है। मड़ाई बैलों से, ट्रैक्टर थ्रेसर से या हार्वेस्टर से की जाती है। रबी की फसल में मुख्य रूप से चना, अलसी, मटर, मसूर, गेहूँ, सरसों, जौ, अरहर आदि फसलें उगायीं जाती हैं।

जनपद जालौन में रबी की फसल का क्षे0 313.41 हजार हैक्टेयर है।[10]

जायद की फसलः–

यह फसल प्रत्येक मौसम में बोई जाती है किन्तु यहाँ कुछ लोग गर्मियों के दिनों में अर्थात फाल्गुन चैत्र के महीने में खेतों में सब्जियाँ आदि बो देते हैं। कुछ लोग नदी की रेत में क्यारियाँ बनाकर उनमें लौकी, खरबूजा, करेला, ककड़ी, टमाटर, बैंगन, मूली, कद्दू, आदि सब्जियाँ उगाते हैं। अधिकतर

फसलें केवट लोग उगाते हैं किन्तु अब अन्य जाति के लोग भी नदी की बालू वाले मैदान में सब्जियाँ उगाने लगे हैं। वे जितने स्थान में सब्जियाँ उगाते हैं उतने घेरे को बारी (झाड़ झंकारों द्वारा घिरा भाग) कहते हैं। जिन लोगों के पास कुँआ, ट्यूबवैल आदि का साधन है वे अपने खेतों में हर मौसम में ये फसलें (मौसमी सब्जियाँ) उगाते हैं। गर्मी के महीने में बारी वाले लोग पास वाले शहरों में प्रतिदिन सब्जी बेचने आते हैं। लगन और मेहनत से फसल उगाने वाला अच्छा पैसा कमा लेता है। फसलों की रखवाली हेतु घास–पूस की झोपड़ी बनाकर कुछ अकेले ही तो कुछ सपरिवार वहीं डेरा डाल देते हैं। जिस वर्ष सब्जी का भाव मंहगा हो जाता है उस वर्ष उनकी चाँदी हो जाती है और जिस वर्ष सब्जी सस्ती बिकने लगती है तो उन्हें बड़ा कष्ट होता है क्योंकि वे रात दिन मेहनत करते हैं।

जनपद में जायद की फसलें 28000 हेक्टेयर में बोयी जाती है।[11]

मौसम तथा ऋतुएँ :–

प्रमुख रूप से मौसम तीन होते हैं– गर्मी, वर्षा व सर्दी। प्रत्येक मौसम में दो ऋतुएँ होती हैं। प्रत्येक ऋतु दो महीने की होती है। इस प्रकार पूरे वर्ष में छः ऋतुएँ होती हैं।

१. गर्मी का मौसमः–

सर्दी के समाप्त हो जाने पर गर्मी का मौसम प्रारम्भ होता है। गर्मी का मौसम फाल्गुन मास (मार्च) से शुरू होकर ज्येष्ठ मास (जून) तक चलता है। जनपद जालौन में सर्वाधिक गर्मी बैसाख–ज्येष्ठ के महीने में पड़ती है। इन महीनों में गर्म हवाएँ चलती हैं जिसे लू कहा जाता है। ये गर्म हवाएँ शरीर को झुलसाने लगती हैं। कभी–कभी लोग गर्मी से बेहाल होकर या बिजली के

चले जाने पर घरों से बाहर निकलकर पेड़ की छाया ढूढने लगते हैं। गर्मी के मौसम में गाँव–देहात के कुछ लोग चारपाई बगैरह बुनते हैं तो कुछ अन्य खेती किसानी से सम्बन्धित काठ का काम करते रहते हैं। कुछ सनई के रेशों को ढेरा से रस्सी बनाते रहते हैं।

२. वर्षा का मौसम :–

जब तपन बहुत अधिक बढ़ जाती है और वह तपन लोगों को बेहाल कर देती है तब इसी तपन से बंगाल की खाड़ी से मानसून उठकर चलती हुई पुरवाई के साथ बादल जनपद जालौन की सीमा के अन्दर उमड़ने –घुमड़ने लगते हैं। आये हुए बादलों को देखकर लोगों के हृदय प्रसन्नता से भर उठते हैं। इन बादलों की अगवानी मोर, पपीहा तथा मेढक प्रसन्नता के गीत गाकर करते हैं। काले–भूरे बादलों को देखकर निष्ठुर बबूल भी प्रसन्नता से फूल उठता है। सूखी बेरी (गर्मी के मौसम में बेरी के पत्ते पूरी तरह से झड़ जाते हैं) भी कोपल देने लगती हैं। बेरी में कोपल फूटने से लोग समझ जाते हैं कि बरसात बहुत जल्दी होने वाली है। लोग टिटहरी के अण्डों को देखकर अंदाजा लगाने लगते है कि कितने महीने बरसात होगी। जनश्रुति के अनुसार खेतों के बड़े गड्ढे व सूखे तालाब जब पहली बरसात में भर जाते हैं तो टिटहरी उन्हीं किनारों पर अपने अण्डे दे देती है। यदि चार अण्डे उसके घौंसले में दिखे तो चारों महीने पानी बरसेगा, यदि तीन अण्डे हुए तो तीन माह पानी बरसेगा। लोगों का विश्वास है कि टिटहरी तालाब के किनारे अण्डे देती है। जिस स्थान पर टिटहरी अण्डे रख देती है, वहाँ तक पानी नहीं भरता है अर्थात् टिटहरी के अण्डे कभी नहीं डूबते हैं। कदाचित् इन तालाब–पोखरों को सागर का हश्र याद है। इसी तरह ज्येष्ठ–आषाढ़ मास में कौआ अपना

घौंसला पेड़ों की छोटी व पतली लकड़ियों को चुनकर बनाता है। यदि कौआ अपनी चोंच से लकड़ी के आधे भाग को दबाता है तो लोग कहते है कि आधे अषाढ़ से पानी बरसेगा। पानी बरसने के बाद चारों तरफ हरियाली दिखने लगती है। सभी लोगों के हृदय आनन्द से भर उठते हैं। इस बरसात से किसान सबसे ज्यादा प्रसन्न होते हैं। हरियाली को देखकर कवि हृदय भी पुलकित होकर कविता की रसधारा को सफेद कागज में बहाता चला जाता है।

यह बरसात आषाढ़ (जुलाई) मास से प्रारम्भ होकर आश्विन मास (अक्टूबर) तक होती है। सावन व भाद्रपद मास में सबसे अधिक वर्षा होती है।

सर्दी का मौसम

सर्दी का मौसम कार्तिक मास (नवम्बर) से शुरू होकर माघ मास (फरवरी) तक होता है। अगहन–पौष के महीने में कड़ाके की सर्दी पड़ती है। इन दो महीनों में बरसात भी हो जाती है और घना कोहरा पड़ने लगता है। कभी–कभी यह कोहरा फाल्गुन मास तक को छू लेता है। इन महीनों में पानी बरस जाने पर किसान बहुत खुश होता है।इस बरसात के पानी को 'महट' नाम से जाना जाता है। अच्छा पानी बरस जाने पर किसान को सिंचाई की आवश्यकता नही पड़ती है। जहाँ पर सिंचाई के साधन नहीं है वहाँके लिये तो यह पानी अमृत रूप हो जाता है। कभी–कभी अधिक बारिश से फसलें सड़ जाती हैं। कोहरा एवं धुन्ध से बची फसलों के फूल मुरझाकर गिरने लगते हैं और पैदावार कम हो जाती है। कहीं–कहीं अधिक सर्दी एवं कोहरा के कारण फसलों को 'पाला' मार जाता है जिससे खेत की फसल सूख जाती है। सर्दी में लोग स्वेटर लोई और अन्य ऊनी कपड़ों को पहनकर सर्दी से छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। अधिक धुन्ध एवं कोहरे के कारण बहुत

कम दूरी का भी दिखाई नहीं देता है। कभी–कभी तो सड़कों पर अनेक दुर्घटनाएँ तक हो जाती हैं।

जनपद जालौन के गाँव देहातों में लोग घर में या दरवाजे के बाहर अलाव जला लेते हैं। उन अलावों के आस–पास पड़ोस के दो–चार लोग बैठकर हाथ गरम करते रहते हैं। लोग तम्बाकू–गुटका खाकर खेत–खलिहान की बातें करते हैं। बूढ़ी महिलाएँ भी साथ में अलाव तापती हैं। उनकी बहुएँ व बेटियाँ स्वेटर पहने घर का सारा काम देखती हैं। बूढ़े बाबा–दाई नाती पोतों को अलाव के पास ही गोद में बैठा लेते हैं। उन छोटे बच्चों के हाथों में सुबह से हम रोटी देख सकते हैं। बासी रोटी को मोड़कर मुँह से काट–काट कर खाते रहते हैं। छोटे बच्चे उसे 'कट्टू' कहते हैं। यहाँ के लोग सर्दी के मौसम का आनन्द अलाव तापकर लेते हैं। अधिक ठंड पड़ने पर बूढे बुजुर्ग इस लोकगीत को गुनगनाते हैं–

बारे खौं मैं बोलत नहियाँ, ज्वान लगै मो भाई।
बूढ़न खौं मैं छोड़त नहियाँ, औढ़े चाहे रजाई।।

शहर के लोग हीटर जलाकर ठंड से निजात पाते रहते हैं।

छोटे बच्चे भी ठंड का आनन्द लेते हुए तेज आवाज में कह उठते है–

ठंड लगी–ठंड लगी धनिया फुआ।
आरे में चून धरो, पै दै पुआ।।

ऋतुएँ :–

वर्ष में ऋतुएँ छः होती हैं और प्रत्येक ऋतु दो मास की होती है। वे ऋतुएँ इस प्रकार हैं–

१. बसन्त ऋतु :–

चैत्र और बैसाख इन दो महीनों में बसन्त ऋतु होती है। इस ऋतु में पतझड़ के बाद नई–नई कोपलें पेड़–पौधों से निकलने लगती हैं। फसल भी इन्हीं दो महीनों में पककर तैयार हो जाती है। मौसम सुहाना हो जाता है और आम्र के पेड़ों पर कोयल का मधुर स्वर गूँजने लगता है। यह ऋतु सभी जीवधारियों को मदहोश बनाने वाली होती है। बसन्त को 'ऋतुओं की रानी' कहा जाता है।

२. ग्रीष्म ऋतु :–

ज्येष्ठ–आषाढ़ इन दो महीनों में ग्रीष्म ऋतु होती है। इस समय बहुत अधिक गर्मी पड़ती है और तेज गर्म हवाएँ चलती हैं। जिसे लू कहा जाता है।

३. वर्षा ऋतु :–

श्रावण–भाद्रपद ये दो महीने वर्षा ऋतु के होते हैं। इन महीनों में जनपद में खूब वर्षा होती है। इन महीनों में धरती हरी घास से ऐसी प्रतीत होने लगती है मानो वसुधा ने धानी रंग की साड़ी पहन ली हो।

४. शरद ऋतु :–

आश्विन–कार्तिक मास के दो महीनों में शरद ऋतु होती है। इस ऋतु में बादल स्वच्छ हो जाते हैं। चन्द्र तारे इतने स्वच्छ दिखाई देने लगते है मानो इन्होंने नहाने के बाद नये कपड़े पहन लिये हों। इन्हीं दो महीनों में हिन्दुओं के दो धार्मिक त्योहार दशहरा व दीपावली होते हैं।

५. हेमन्त ऋतु :–

अगहन–पौष के दो महीने हेमन्त ऋतु के होते हैं। इन दो महीनों में

सर्दी खूब पड़ती है।

६. शिशिर ऋतु :—

माघ तथा फाल्गुन के दो माह शिशिर ऋतु के कहलाते हैं। इन दो महीनों में कड़ाके की सर्दी कुछ कम होने लगती है। धूप भी अच्छी लगती है। पेड़ों के पत्ते पीले होकर गिरने लगते हैं। शिशिर ऋतु 'पतझड़ की ऋतु' कहलाती है।

वनस्पति

जनपद जालौन में एक जैसी वनस्पति पायी जाती है। ये अपने आप उगने वाली घास, झाड़ियाँ, पेड़—पौधे सभी वनस्पति के अन्तर्गत आ जाते हैं। जनपद में नीम, बबूल, शीशम, खैर, बेरी, आम, यूकेलिप्टस, करौंदा, बेल, इमली आदि के वृक्ष पाये जाते हैं।

बबूल की छाल को चमड़ा बनाने में तथा खैर की छाल को कत्था बनाने में प्रयोग किया जाता है। वन विभाग जिले में वृक्ष लगाने का कार्य कर रहा है। चमारी व बोहदपुरा के जंगलों के संरक्षण का जिम्मा इसी विभाग का है। जिले में दवाओं में प्रयोग होने वाली वनस्पतियाँ भी पायी जाती हैं। धुरट में खस व केवड़ों के बगीचे से इत्र बनाया जाता है। फलों में जिले में अमरूद, बेर, जामुन, नीबू बहुतायत में पाये जाते हैं। आम की पैदावार जिले में कम होती है। जिले में उरई मुख्यालय पर फल संरक्षण विभाग इन फलों के अचार सोस आदि बनाने की ट्रेनिंग का कार्य करता है।[12]

पशु

जनपद जालौन में मुख्य रूप से सभी प्रकार के पशु पाये जाते हैं। जिनमें बैल मुख्य है। बैलों से किसान खेती का काम करते हैं लेकिन अब

अधिकतर खेती ट्रैक्टरों के द्वारा होने लगी है। बहुत से किसान आज भी बैलों से कृषि एवं बोझा ढोने का कार्य करते हैं। इसके अतिरिक्त जनपद में गाय, भैंस, बकरी, भेड़, सुअर, मुर्गी, आदि पाये जाते हैं। गाय, भैंस, बकरी व भेड़ से दूध प्राप्त किया जाता है। जनपद में जंगली जानवर भेड़िया, सियार, नील गाय आदि पाये जाते हैं। आजकल जनपद में नील गायों की संख्या बहुत हो गयी है। ये झुण्ड के झुण्ड घूमते है और फसलों को नष्ट कर देते हैं। किसान नील गायों से अधिक परेशान हैं।

खनिज

पृथ्वी के गर्भ से निकलने वाले पदार्थों को खनिज कहा जाता है। इस जनपद में मुख्य रूप से बेतवा नदी से बालू निकाली जाती है, जो मकान बनाने के काम आती हैं। नदी की बालू दूर–दूर स्थानों में भेजी जाती है। जनपद में पहाड़ नहीं है कुछ पहाड़ियाँ है जिन्हें तोड़कर गिट्टी निकाली जाती है जो भवन तथा सड़कें बनाने के काम आ जाती हैं। दूर–दूर तक बेतवा की बालू प्रसिद्ध है।

जनसंख्या

2001 की जनगणना के अनुसार जनपद जालौन की कुल जनसंख्या 1455857 है जिसमें महिलाओं की संख्या 667595 तथा पुरुष 788264 हैं। ग्रामीण जनसंख्या 1115381 तथा शहरी जनसंख्या 340478 है। पुरुषों की साक्षरता 889988 है और स्त्रियों की साक्षरता 526774 है।[13]

व्यवसाय

जनपद का मुख्य व्यवसाय कृषि है। इसके अतिरिक्त छोटे–छोटे गृह

उद्योगों का कार्य भी किया जाता है। गृह उद्योगों में आटा चक्की, अगरबत्ती बनाना, डबल रोटी, बिस्कुट, बीड़ी बनाना, गुटका, तेल मिल, आरा मशीन, स्टील, फर्नीचर, साबुन तथा दवाओं के निर्माण से सम्बन्धित अनेक इकाइयाँ कार्य कर रही हैं।[14] जनपद जालौन का 'भैरव' गुटका विशेष प्रसिद्ध है।

उद्योग

जिले में उद्योगों का विकास हुआ है। इस समय जिले में लगभग 110 प्रिंटिंग प्रेस, 6 बर्फ फैक्ट्री, 100 दाल धान व तेल मिल, टायर–ट्यूब का कारखाना, हड्डी का चूरा कारखाना, साबुन फैक्ट्रियाँ, कोल्ड स्टोर कार्य कर रहे हैं। बडे उद्योगों में हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड ने लाइफबॉय साबुन, वेजीप्रो सोयाबीन के उत्पाद व रिफाइण्ड तेल आदि लोहा बनाने में प्रगति व बलबीर स्टील, अल्फा कास्टिंग, कपड़ों की फिनसिंग व प्रिंटिग हेतु उर्वशी सिन्थेटिक आटा, मैदा बनाने हेतु एक फ्लोर मिल व कई अन्य नई बड़ी फैक्ट्रियाँ हैं।[15]

केडिया सिन्थेटिक (वीटो के धागे), मरकरी पैकर्स, सिन्थेटिक बोरे, टायर, टान्सफार्मर्स के बनाने, एस0 आई0 डी0 सी0 माइका पेपर, सुनील अग्रवाल स्टील पाइप, अरुण जैन स्टील इंगिट्स, रतन हाटी वी0पी0 जी0 पी0 सीड्स, उरई ऑयल कैम आदि नये उद्योग प्रगति पथ पर अग्रसर हैं।[16]

जनपद में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिये सरकार काफी सुविधाएँ दे रही है। जिले की जनता में उद्योगों की ओर दिलचस्पी बढ़ी है। जिले में इसके अलावा बारूद बनाने के कारखाने, रेडीमेड कपड़े बनाने, मुर्गी पालन, मछली पालन व सिलाई–कढ़ाई के साथ–2 ब्यूटी पार्लर केन्द्र भी खुले हैं।[17]

यातायात के साधन :-

जनपद में यातायात के लिये कच्ची तथा पक्की सड़कें बन गयी हैं। ये सड़कें गाँवों को कस्बों से जोड़ती हैं।

इस जिले में दो प्रान्तीय व एक राष्ट्रीय मार्ग है। प्रथम राष्ट्रीय मार्ग कालपी से पिरौना तक है। इस राजमार्ग पर कालपी में यमुना नदी पर पक्का पुल बना है। प्रथम प्रान्तीय राजमार्ग की सड़क शंकरपुर से मोहाना तक पड़ती है। जिले में अन्य पक्की सड़कों में उरई से कदौरा—हमीरपुर, उरई से कोंच—नदीगाँव, उरई से जालौन बँगरा—माधौगढ़—रामपुरा जगम्मनपुर तक, कोंच से एट, उरई से गोपालपुरा, मदारीपुर से कालपी, कुठौंद से माधौगढ़ बाया गोहन, उरई से कोटरा, उरई से करमेर—ऐर, उरई से मऊरानीपुर, कोंच से समथर, कोंच से जालौन, उरई से चुर्खी—बाबई— सिरसा कलार, जालौन से बाबई आदि।[18]

उरई में राजकीय परिवहन निगम का डिपो एवं वर्कशाप है। जिले से दूर—दूर तक के लिये सैकड़ों बसें चलती है।[19]

कच्ची सड़कें:-

ब्लाक स्तर पर ग्रामों को जोड़ने हेतु विभिन्न कच्चे मार्ग हैं। लगभग प्रत्येक गाँव, कस्बे की सड़कों से जुड़ गये है। 'प्रधानमंत्री सड़क योजना' के अन्तर्गत प्रत्येक गाँव को पक्की सड़कों से जोड़ने का कार्य चल रहा है।

रेल लाइन :-

मध्य रेलवे की लाइन इस जिले से निकलती है। मध्य रेलवे की यह शाखा कानपुर से झाँसी को जोड़ती है। इसकी लम्बाई 83 किमी० है। इस

जनपद में रेलवे स्टेशन–पिरौना, एट, भुआ, उरई, उसरगाँव, कालपी। एट से कोंच तक रेलवे लाइन 15 किमी0 लम्बी रेल लाइन जाती है। इसलिये एट स्टेशन को एट जंक्शन के नाम से जाना जाता है।[20]

जंगल

जनपद जालौन में कोई जंगल नहीं हैं किन्तु कँटीली झाड़ियाँ भरी पड़ी है। बिलायती बबूल भी बहुतायत में मिल जाते हैं। बोहदपुरा एवं चमारी के जंगलों में इसी कँटीली झाड़ियों एवं बिलायती बबूलों की भरमार है। बबूल की छाल से चमड़ा रंगा जाता है। इनका विस्तार किया जा रहा है।

ख) जनपद जालौन की प्रशासनिक स्थिति :–

जिले की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिये जनपद जालौन को पाँच तहसीलों में बाँटा गया है। ये तहसीलें जालौन, कोंच, कालपी, उरई, तथा माधौगढ़ हैं। इसके बाद विकासखण्ड बनाये गये। इनकी संख्या 9 है। ये विकास खण्ड डकोर, कोंच, नदी गाँव, जालौन, कुठौंद, रामपुरा, माधौगढ़, महेबा, कदौरा हैं। जिला स्तर पर जिला पंचायत कार्यालय है। जनपद जालौन में न्याय पंचायतों की संख्या 81 हैं ग्राम पंचायतों की संख्या 564 है। जनपद में कुल गाँवों की संख्या 942 है जिसमें गैर आबाद ग्रामों की संख्या 213 है। उरई, जालौन, कोंच, कालपी इन चार नगरों के प्रबन्ध के लिये नगर पालिकाएँ हैं तथा 6 नगर पंचायतें क्रमशः नदीगाँव, माधौगढ़, रामपुरा, ऊमरी,, कदौरा तथा कोटरा है।[21]

जिले का सबसे बड़ा प्रशासनिक अधिकारी जिलाधिकारी होता है। जिलाधिकारी ही जनपद की शान्ति व्यवस्था को कायम रखता है। जिले की व्यवस्था हेतु अलग–अलग विभाग बाँट दिये गये हैं जैसे– प्रशासनिक

विभाग, पुलिस विभाग, न्यायविभाग, स्वास्थ्य विभाग, कृषि विभाग, शिक्षा विभाग, उद्योग विभाग, जिला राशन पूर्ति अधिकारी, जिला संख्या अधिकारी, मद्य निषेध (आबकारी विभाग), उद्यान विभाग, लघु सिंचाई विभाग, स्वजल परियोजना, जल विद्युत विभाग, विश्व वानिकी विभाग, सहकारिता विभाग, पशु पालन विभाग, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, आँगनवाड़ी बाल विकास परियोजना विभाग, समाज कल्याण विभाग, स्वयं सहायता समूह।[22]

१. प्रशासनिक अधिकारी :—

जिले का सबसे बड़ा प्रशासनिक अधिकारी जिलाधिकारी होता है। जिलाधिकारी राजस्व के मामले को देखता है। जिलाधिकारी की सहायता के लिये उप जिलाधिकारी, मुख्य विकास अधिकारी तथा ब्लाक स्तर पर खण्ड विकास अधिकारी, सरपंच, ग्राम स्तर पर ग्राम प्रधान तथा पंचायत सचिव कार्यरत रहते हैं। इन सबकी सहायता से जिले की व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहती है। जनपद जालौन के प्रथम जिलाधिकारी श्री इकबाल अहमद थे जो मार्च 47 से फरवरी 48 तक रहे।[23]

२. न्याय विभाग :—

न्याय विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी जनपद न्यायाधीश होता है। न्याय व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने हेतु दो न्यायाधीश और नियुक्ति होते हैं। एक न्यायाधीश फौजदारी तथा दूसरा दीवानी मुकद्मों को देखता है तथा संविधान के अनुसार लोगों को उचित न्याय दिलाते हैं।

३. पुलिस विभाग :—

जनपद में शान्ति एवं सुरक्षा की व्यवस्था पुलिस विभाग करता है। पुलिस विभाग का सबसे बड़ा अधिकारी पुलिस अधीक्षक होता है। इनकी

सहायता हेतु अपर पुलिस अधीक्षक उपाधीक्षक, इंस्पेक्टर (कोतवाल), थानेदार, पुलिस व चौकीदार होते हैं। अच्छे प्रबन्ध हेतु अनेक गाँवों को मिलाकर थाना बनाया जाता है। कई थाना मिलकर कोतवाली तथा कई कोतवाली को मिलाकर उपाधीक्षक की नियुक्ति होती है। जनपद में पुलिस थानों की संख्या 12 है।[24] तथा 4 (चार) कोतवाली हैं। [25]

सन् 2001 के आँकड़ों के अनुसार जनपद में एक अपर पुलिस अधीक्षक, 5 पुलिस उपाधीक्षक, 4 निरीक्षक, 80 उपनिरीक्षक हे0 का0 ना पु0—72 हे0कां0सं0पु0 66, आरक्षी ना0पु0—641 ए आरक्षी स0पु0 236 का स्वीकृति नियतन है, जिसके सापेक्ष में 1 अपर पुलिस अधीक्षक, 5 पुलिस उपाधीक्षक, 4 निरीक्षक, 61 उपनिरीक्षक ना0पु0, 62 हे0 कां0 ना0पु0, 57 हे0कां0स0पु0, 613 आरक्षी ना0पु0, 20 आरक्षी स0पु0 उपलब्ध हैं। इस प्रकार जनपद में 19 उपनिरीक्षक, ना0पु0 10 हे0कां0ना0पु0, 9 हे0कां0स0पु0, 28 आरक्षी ना0पु0, 32 आरक्षी स0पु0 के पद रिक्त चल रहे हैं।[26]

४. स्वास्थ्य विभाग :—

जनपद में स्वास्थ्य विभाग का अधिकारी मुख्य चिकित्साधिकारी होता है। यह जनपद के अस्पतालों की प्रबन्ध व्यवस्था की देखभाल करता है। जिले भर में अस्पतालों की शाखाएँ तहसील ब्लाक तथा गाँव स्तर तक फैली हुई हैं, जहाँ लोग मुफ्त में दवाएँ लेते हैं तथा इलाज करवाते है। अस्पताल में डॉक्टर—नर्स तथा चौकीदार आदि होते हैं जो मरीजों की देखभाल करते हैं और उपचार हेतु दवाएँ सीरप आदि बाँटते है। इन अस्पतालों में चेचक, टी0वी0, बी0सी0जी0 तथा बैक्सीन के टीके लगाये जाते हैं। नर्स घर घर जाकर गर्भवती महिलाओं को टीका लगाती हैं। जनपद के मुख्यालय उरई

अस्पताल में ह्रदय रोग, नेत्र रोग, हड्डी रोग, दाँत रोग, कुष्ठ, कान एवं टिटनेस आदि के अलग–अलग विभाग हैं।

वर्ष 2001–2002 में गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण के तहत 47606 महिलाओं को चिन्हित करके 33893 की जाँच की गई। तदुपरान्त 44603 टी0टी0, 6837 बूस्टर, 28323 आई0एफ0ए0 टीके लगाये गये। अधिक खतरे वाली 28323 महिलाओं का उपचार किया गया।[27]

वर्ष 2001–2002 में कुष्ठ नियंत्रण कार्यक्रम के तहत 650 नये कुष्ठ रोगी खोजे गये तथा उन्हें पंजीकृत किया गया है। 1263 मरीजों का उपचार किया जा रहा है। कुल 1027 कुष्ठ रोगियों का रोग नियंत्रण में है।[28]

दृष्टि हीनता निवारण कार्यक्रम के तहत 4996 मोतिया बिन्द के आपरेशन किये जाने का लक्ष्य था जिसके सापेक्ष में 1145 आपरेशन मोतिया बिन्द के करके तथा 1942 को आई0ओ0एस0 के अन्तर्गत लाभ प्राप्त कराया गया।[29]

टी0वी0 के नियंत्रण कार्यक्रम के तहत 7486 नये मरीजों का परीक्षण किये जाने का लक्ष्य निर्धारण किया गया था जिसके सापेक्ष में 7683 की पूर्ति की गयी तथा 2016 नये टी0वी0 रोगियों को पंजीकृत किया।[30]

मलेरिया कार्यक्रम के तहत 1 लाख 24 हजार 543 रक्त पट्टिकाएँ बनाई गई।[31]

परिवार कल्याण कार्यक्रम के तहत 6823 नसबन्दी आपरेशन, 18658 कापर टी, 13865 सी0सी0यूजर्स, 6673 ओ0पी0 यूजर्स, 7709 समतुल्य आपरेशन किये गये।[32]

टीकाकरण अभियान के तहत 49988 बी0सी0जी0, 48065 डी0पी0टी0, 48065 पोलियो, 47943 मीजिल्स, 14469 टी0टी0, 22333 टी0टी0 दस वर्ष,

16908 टी0टी0 16 वर्ष, 44603 टी0टी0 गर्भवती महिलाओं, 28323 आयरन, 5 एम0जी0 महिलाओं को 33448 विटामिन 'ए' बच्चों को दी गयी।[33]

इसके अतिरिक्त पशुओं की देखभाल प्रजनन क्षमता को बढ़ाने हेतु एवं नयी नस्लों एवं अधिक दूध प्राप्त करने के लिये पशु अस्पताल में पशुओं का कृत्रिम गर्भाधान कराया जाता है। पशुओं में रोग आदि व्याधियों से बचाने हेतु जुलाई से सितम्बर माह में पशुओं का टीकाकरण किया जाता है। पशुओं में खुरपका, मुँहपका, गला घोंटू आदि रोगों का इलाज पशु अस्पताल में किया जाता है। गाँव देहात में कुछ लोग टोना टोटका में विश्वास करके अर्जुन के पाँच नाम भोजपत्र पर लिखकर गौशाला में चिपका देते हैं किन्तु अब अधिकतर लोग जागृत हो गये हैं। रोग होने पर वे पशु अस्पतालों की शरण लेते हैं। जो पशुओं के मरने से होने वाली हानि से बच जाते हैं।

कृषि विभाग :–

जनपद में कृषि विभाग का अधिकारी जिला कृषि अधिकारी होता है। यह विभाग जनपद की भूमि प्रबन्ध व्यवस्था की देखभाल करता है। कृषि के लिये नये उन्नत बीज, कीटाणु नाशक दवाएँ तथा खेती की विधियों को किसानों तक सुलभ कराता है। बीज के सम्बन्ध में यह विभाग किसानों को मिनीकिट–उपलब्ध कराता है और किसानों से टोकनमनी ले ली जाती है।

जनपद जालौन का कुल प्रतिवेदित क्षे0–343.39 हजार हेक्टेयर है। खरीफ का क्षे0 71.87 हजार हेक्टेयर जबकि रबी का क्षे0 313.41 हजार हेक्टेयर है। जनपद की फसलें 28000 हेक्टेयर में बोयी जाती हैं। जनपद का अधिकांश क्षे0 एक फसली है। कुल सिंचित क्षे0 159.80 हजार हेक्टेयर है। कुल 80 प्रतिशत क्षेत्रफल की सिंचाई नहरों द्वारा होती है।[34]

१. दलहन विकास कार्यक्रम :—

इस योजना में चना, मटर, अरहर मसूर, मूँग, उर्द आदि दलहनी फसलें आती हैं। इसमेंफसलों के बीजों पर अनुदान दिया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत किसानों पर दलहन बीजों पर 30 प्रतिशत अधिकतम 800 रु० प्रति कुन्तल का अनुदान दिया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत दवा के छिड़काव के लिये डस्टर तथा स्प्रिंकलर दिये जाते हैं। स्प्रिंकलर सैट पर अनुसूचित जाति को 50 प्रतिशत तथा सामान्य कृषकों को 33 प्रतिशत का अनुदान दिया जाता है।[35]

२. तिलहन उत्पादन कार्यक्रम :—

इस योजना में खरीफ में तिल, सोयाबीन एवं रबी में राई, सरसों तथा अलसी की फसलें आती हैं। इस योजना में भी फसल सुरक्षा कार्यक्रम में डस्टर सुरक्षा कार्यक्रम में डस्टर तथा स्प्रिंकलर सैट अनु० जाति तथा महिलाओं के लिये 50 प्रतिशत का अनुदान दिया जाता है और सामान्य कृषकों को 30 प्रतिशत के अनुदान का प्रावधान किया जाता है।[36]

३. मैक्रोमोड योजना :—

इस योजना के अन्तर्गत गेहूँ, जौ, धान आदि की फसलें बोयी जाती है। इसमें 10 वर्ष तक की पुरानी प्रजातियों में 200 रु० प्रति कुन्तल का अनुदान देय है। इस योजना में डस्टर, स्प्रेयर तथा स्प्रिंकलर सैट में अनुदान दलहन योजना की तरह ही देय है।[37]

४. रेशा उत्पादन कार्यक्रम :—

इस योजना के अन्तर्गत सनई, अमारी तथा जूट की फसलें बोयी

जाती हैं। ये रेशेदार फसलें होती हैं। कृषक इनके रेशों को निकालने के लिये नदी या तालाब में एक सप्ताह तक के लिये पानी में सड़ाते है जब इनका रेशा निकालने योग्य हो जाता है। इन रेशों से किसान रस्सी बनाता है। इस योजना में बीज पर 800[38] रु0 प्रति कुन्तल अनुदान देय है।

६. शिक्षा विभाग :–

जनपद में प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के तहत अनुसूचित/अनुसूचित जनजाति के बालक/बालिकाओं को निःशुल्क पुस्तकों का वितरण किया जाता है और साथ में वजीफा भी दिया जाता है। 'स्कूल चलो अभियान' के तहत बालक बलिकाओं एवं अभिभावकों को शिक्षा से सम्बन्धित जानकारी दी जाती है। शिक्षा कार्यक्रम के तृतीय चरण में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के बालक बालिकाओं को 274730[39] पुस्तकों का वितरण किया गया।

" विकलांग बच्चों की सहायता उपलब्ध कराये जाने हेतु विद्यालयों में 1426 विद्यालय से बाहर 491 चयनित हो विकास खण्डों में 445 तथा शेष अन्य विकास खण्डों में 963 बच्चे चिह्नांकित किये गये। इस हेतु 4 शिविर बनाये गये और 353 विकलांगता के पात्र बच्चे पाये गये। विकलांग 353 बच्चों की सूची जिला विकलांग कल्याण अधिकारी को प्रेषित की गई, 1238 विकलांग बच्चों को उपकरण सुलभ कराये गये।[40]

७. उद्योग विभाग :–

जनपद में शासन द्वारा निम्न उद्योगों की स्थापना की गयी है। उनमें से मुख्य है, लघु उद्योग, प्रधान मंत्री रोजगार योजना, उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम।

क) लघु उद्योग :–

लघु उद्योग में मुख्यतया ऑयल स्पेलर हैण्डमेड पेपर, फोटो स्टेट, जनरल इंजीनियरिंग एवं कम्प्यूटर प्रिटिंग द्वारा प्रोसेसिंग से सम्बन्धित है। इन इकाइयों में 104.13[41] लाख रुपये पूँजी निवेश हुआ एवं 221[42] लोगों को रोजगार प्राप्त कराया गया।

ख) प्रधानमंत्री रोजगार योजना :–

इस योजना के अन्तर्गत ऐसे अभ्यर्थी जिनकी आयु 18 वर्ष से 35 वर्ष के बीच हो और शैक्षिक योग्यता कम से कम आठवीं पास एवं समस्त स्रोतों से परिवार की आय अधिकतम 40 हजार रुपये एवं जनपद का पिछले तीन वर्ष से निवासी रहा हो। महिलाओं एवं अनुसूचित जाति/ अनु0 जन जाति को 10 वर्ष की छूट का प्रावधान है। योजना के अन्तर्गत उद्योग सेवा एवं बैंकों के माध्यम से 1 लाख रुपये का प्रावधान है।" इसकी अधिकतम सीमा 2 लाख रूपये है। इसमें अभ्यर्थी को अपना अंशदान पाँच से 16.25 प्रतिशत तक लगाना पड़ता है तथा अनुदान 15 प्रतिशत अधिकतम 7500/–रु0 है जो भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा सीधे बैंकों को उपलब्ध कराया जाता है।"[43]

'योजनान्तर्गत इस जनपद का वर्ष 2001–2002 हेतु 580 लाभार्थियों को लाभान्वित करने का निर्धारण किया गया जिसके विरुद्ध मार्च मास 2002 तक 607 अभ्यर्थियों को ऋण स्वीकृत एवं प्रशिक्षण प्रदान कर 521 अभ्यर्थियों को 252.45 लाख का ऋण उपलब्ध कराया जा चुका है।[44]

ग) उद्यमिता विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम :–

इस योजना के अन्तर्गत नवयुवक एवं नवयुवतियों को स्वः रोजगार स्थापित करने के लिये प्रशिक्षण के माध्यम से प्रोत्साहन किया जाता है और

इस सम्बन्ध में जानकारी उपलब्ध करायी जाती है।

वर्ष 2001–2002 में 10 एक दिवसीय प्रशिक्षण के माध्यम से 500 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षित करना प्रस्तावित था जिसके विरुद्ध माह मार्च 2002 तक 10 दिवसीय कार्यक्रम आयोजित करते हुए 536 प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण दिया गया।[45] जिसके अधिकांशतः का प्रधानमंत्री स्वरोजगार के अन्तर्गत स्व रोजगार उपलब्ध कराया जाता है।

८. उद्यान विभाग :–

जनपद में उद्यान विभाग बागवानी सब्जी तथा फूलों की खेती के विकास के लिये सतत् प्रयत्नशील हैं। छोटे किसानों के लिये तो यह अत्यन्त लाभकारी है। जिनकी खेती कम है वे बागवानी लगाकर आम फसलों से अधिक आय प्राप्त कर लेते हैं। इसके महत्व को देखते हुए औद्यानिक फसलें प्राथमिकता का क्षेत्र बन गयी हैं। छोटे–मोटे किसानों के लिये यह फसलें वरदान स्वरूप बन गयीं है।

'भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद भारत सरकार आई.सी.एम.आर. की संस्तुति के अनुसार स्वस्थ जीवन यापन हेतु प्रतिदिन 75–125 ग्राम हरे पत्तेदार सब्जियाँ, 85 ग्राम अन्य सब्जियाँ, 95 ग्राम जड़ एवं कंदीय सब्जियाँ तथा 85 ग्राम फल का उपयोग आवश्यक है। उद्यान विभाग का प्रयास है कि जनपद में उसके उत्पादन के साथ–2 वितरण की भी व्यवस्था की जाये ताकि जनपद के प्रत्येक व्यक्ति को सुलभ हो सके।[46]

औद्यानिक योजनाओं के प्रमुख उद्देश्य औद्यानिक फसलों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु उत्पादन एवं कृषि तकनीकों का उच्चीकरण करके उनकों आत्मसात करना एवं फसल चक्र परिवर्तन कर उत्पादकों को उनके श्रम एवं

निवेश पर आय बढ़ाना। इसके साथ ही उत्पादकों को उन फसलों का उचित मूल्य दिलाना। फल सब्जी संरक्षण कुकरों बेकरी, मशरूम एवं मत्स्य पालन में प्रशिक्षण देकर इन कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना। कृषकों को नवीनतम तकनीकी प्रशिक्षण के माध्यम से ज्ञान कराना।

रणनीति :—

औद्यानिक योजनाओं की प्रमुख रणनीति फल, शाक भाजी एवं आलू की खेती में प्रति इकाई क्षेत्र के उत्पादन में वृद्धि करना और अधिक मूल्यवान फलों, आम, लीची, ऑवला व नीबू आदि की प्रजाति तथा शाक भाजी में टमाटर, मटर, परवल, भिण्डी, गोभी, सब्जियों के उत्पादन में विशेष बल देना। उन्नत शुद्ध रोगमुक्त फल तथा संकर शाक भाजी बीज आधारित आलू बीज के उत्पादन में वृद्धि तथा कृषकों एवं बागवानों को भागीदार बनाना। फल एवं सब्जी का संरक्षण करना। फसल तुड़ाई के समय जो क्षति होती है उनको दूर करना।

९. लघु सिंचाई विभाग :—

जनपद जालौन की भूमि सिंचन हेतु अनेक योजनाएँ कार्यान्वित हो रही है। जहाँ सिंचाई नहरों या अन्य साधनों द्वारा नहीं हो पाती है वहाँ गहरी बोरिंग कराकर खेती की सिंचाई की जाती है। इस योजना का आरम्भ जनपद में वर्ष 1982–83[47] से हुआ है। अब तक जनपद में 1089[48] गहरी बोरिंगका कार्य पूरा किया गया है। 'माननीय मुख्यमंत्री जी के आदेशों से गहरी बोरिंग कार्य की विशेष सहायता योजना प्रदेश में चलायी जा रही है। योजना सम्बन्धी शासनादेश संख्या 6017 दिनांक 4.9.98 के अनुसार निजी कृषकों द्वारा नलकूपों के निर्माण हेतु विशेष सहायता योजना के अन्तर्गत

निजी गहरे नलकूपों का निर्माण कुछ क्षेत्रों में भूगर्भ जल काफी गहरे चले जाने के कारण नलकूपों का निर्माण किया गया है जिसमें विद्युत व्यय को शामिल करते हुए सरकार लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम 1 लाख रुपये का अनुदेय है। गहरे नलकूप योजना के अन्तर्गत यदि कृषकों की बोरिंग असफल हो जाती है तो बोरिंग की कुल लागत का 10 प्रतिशत अथवा 1000—00 रुपये जो भी कम हो कृषक से लिया जाता है और शेष व्यय शासन द्वारा वहन किया जाता है। इस योजनान्तर्गत निम्न प्रकार वोरिंग कार्य की प्रक्रिया निर्धारित की जाती है।[49]

सर्वप्रथम कृषक द्वारा इस विभाग द्वारा निःशुल्क दिये गये फार्म को भरकर खसरा खतौनी की नकल सहित रु0 1500/— सर्वेक्षण कार्य हेतु जमा करना पड़ता है। इसके उपरान्त विभाग द्वारा कृषक के सर्वेक्षण हेतु प्रपत्र भूगर्भ जल सर्वेक्षण विभाग को प्रेषित कर दिया जाता है। भूगर्भ जल सर्वेक्षण विभाग द्वारा सर्वे रिपोर्ट के आधार पर प्राथमिक आकलन सहायक अभियन्ता कार्यालय तैयार कर कृषकों को उपलब्ध कराया जाता है जिसमें प्राकलन की धन राशि का 1/2 धन कृषक को विभाग में जमा करना होता है।[50]

पम्प सैट :—

पम्प सैट के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान तक पानी पहुँचाया जाता है। सिंचाई कार्य हेतु पम्पसैट 5 होर्स पावर या इससे अधिक 8 होर्स पावर तक के इंजन बैंक के ऋण द्वारा क्रय किया जाता है। खण्ड विकास अधिकारी की संस्तुति के अनुसार न्यूनतम धनराशि 1875/— रु0 अनुदान देय है।[51]

स्वजल परियोजना :–

यह परियोजना पेयजल एवं पर्यावरणीय स्वच्छता कार्यक्रमों के सम्मिलित रूप की परियोजना है। इसका क्रियान्वयन कार्य ग्रामीण समुदाय एवं गैर सरकारी संस्थाओं के सहयोग से होता है। जिसमें ग्रामीण समुदाय पेयजल निर्माण कार्यो के लिये 10%[52] अंशदान तथा संचालन एवं रख रखाव हेतु 100%[53] व्यय वहन करता है।

इसके अतिरिक्त इस परियोजना का कार्य हैण्डपम्पों के रख रखाव, वोरिंग शौचालय निर्माण सोख्ता एवं नाली निर्माण तथा जल संरक्षण का कार्य ग्रामीण पेयजल एवं स्वच्छता समिति द्वारा किया जाता है।

१०. सामाजिक वानिकी वन विभाग :–

वन हमारे जीवन के लिये इतने महत्वपूर्ण है कि इनके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्रकृति का सन्तुलन वनों पर ही निर्भर रहता है। बढ़ती हुई जनसंख्या को देखते हुए अब इनका महत्व और भी बढ़ गया है। सरकार भी इस ओर विशेष ध्यान दे रही है। जगह–जगह दीवार लेखन एवं साइन बोर्ड पर काव्यमय भाषा में लिखित सदवाक्य सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। किसी महान चिन्तक ने इन्हें 'हरा सोना' कहा हैं। सामाजिकवानिकी वन प्रभाग जालौन (उरई) का सृजन वर्ष 1964 में किया गया था। इसकी भौगोलिक सीमा 24^0 45′ से 26^0 26′ उत्तरी अक्षांश तथा 78^0 58′ से 79^0 57′ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित हैं। जनपद जालौन का भौगोलिक क्षे0 4565 वर्ग किमी0 तथा वनों का क्षे0 257 वर्ग किमी0 है। इस प्रकार जनपद की 5.63 प्रतिशत वन भूमि हैं।[54]

जनपद में वर्ष 2001–2002 के दौरान 330.3 हेक्टेयर वन भूमि में

वृक्षारोपण कराया गया तथा वर्षा काल 2002 में वृक्षारोपण हेतु 300 हेक्टेयर क्षेत्रफल में अग्रिम मृदा कार्य कराया गया। कोंच एवं जालौन कस्बों में सड़कों के किनारे वृक्षारोपण हेतु 344 ब्रिकगार्डों का भी निर्माण कराया गया। [55]

जनपद में पर्यावरण जागरुकता हेतु तहसील एवं ब्लाक स्तर पर गोष्ठियों का आयोजन कराया जाता है। 5 जून पर्यावरण दिवस के अवसर पर विभिन्न गोष्ठियों के अलावा अनेक कार्यक्रमों का आयोजन कराया जाता है जिसमें अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का संकल्प लिया जाता है। वाद–विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन कराकर प्रतिभागियों को प्रेरित एवं प्रचार–प्रसार हेतु पुरस्कार वितरित किये जाते हैं। ये पुरस्कार जिलाधिकारी द्वारा प्रदान किये जाते हैं।

आप्रेशन ग्रीन कार्यक्रम के तहत विभिन्न सरकारी विभागों शिक्षण संस्थानों तथा किसानों द्वारा वन विभाग की तथा अन्य नर्सरियों से पौधे क्रय कर खाली पड़ी भूमि पर वृक्षारोपड़ कराया जाता है। यह भूमि बचत भूमि कहलाती है। माह जुलाई से सितम्बर 2001 में कुल 237942[56] पौधों का रोपड़ विभिन्न स्थानों पर किया गया है।

विश्व वानिकी योजना के अन्तर्गत इस जनपद में तीन ग्रामों में संयुक्त वन प्रबन्ध योजना के अन्तर्गत टीकर, बुढ़ेरा, तथा परैछा ग्रामों में वहाँ के ग्राम वासियों द्वारा वनों का प्रबन्ध संयुक्त रूप से किया जा रहा है।[57]

११. पंचायती राज :–

पंचायती राज विभाग से सम्बन्धित सभी ग्राम स्तरीय कार्यक्रम ग्राम पंचायतों द्वारा किये जा रहे हैं और उन कार्यों के लिये समस्त धन राशि शासन द्वारा ग्राम पंचायतों को सीधे दी जा रही है। ग्राम पचायतों को निम्न

कार्य सौंपे गये हैं–

शिक्षा :–

ग्राम पंचायतों को प्राथमिक विद्यालय एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के कार्य हस्तान्तरित किये गये हैं। इनके भवन अब ग्राम पंचायतों की सम्पत्ति होंगे। इनके रख रखाव की देखभाल ग्राम पंचायत करेंगी।

राजकीय नलकूप :–

राजकीय नलकूपों को ग्राम पंचायतों को हस्तान्तरित कर दिया गया है। राजकीय नलकूप अब ग्राम पंचायतों के स्वामित्व में हैं। राजकीय नलकूपों के विद्युत बिल का भुगतान शासन द्वारा सीधे राज्य विद्युत परिषद को दिया जा रहा है।

हैण्ड पम्प :–

सभी मौजूदा हैण्ड पम्प एवं नये हैण्ड पम्प ग्राम पंचायत की सम्पत्ति हैं। हैण्ड पम्पों की देखभाल एवं रख रखाव की व्यवस्था ग्राम पंचायतों के अधीन है। हैण्ड पम्पों की मरम्मत के लिये धनराशि शासन द्वारा सीधे ग्राम पंचायतों को उपलब्ध करायी जा रही है।

युवा कल्याण:–

युवक मंगल दल, नेहरू युवा संगठन, महिला मंगल दल, व्यायाम शाला अखाड़ा तथा खेलकूद सम्बन्धी कार्यो का संचालन ग्राम पंचायतों द्वारा किया जाता है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य :–

ग्राम स्तर पर स्थित 'मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्र' ग्राम पंचायतों को

हस्तांतरित कर दिये गये हैं। इसमें कार्यकर्ता (महिला) दाई ग्राम पंचायत के पूर्ण नियंत्रण में कार्य करती है। इन कल्याण केन्द्रों के रख रखाव हेतु धनराशि शासन द्वारा ग्राम पंचायतों को उपलब्ध करायी गयी है।

महिला एवं बाल विकास :–

महिला एवं बाल विकास के समस्त कार्य ग्राम पंचायतों के नियंत्रण में सम्पादित किये जाते हैं। आँगनबाड़ी कार्यकत्री एवं सहायिकाओं को ग्राम पंचायतों को हस्तांतरित किया गया है। बालक/बालिकाओं के पोषाहार का वितरण ग्राम पंचायतों के अधीन होता है।

कृषि कार्य :–

कृषि से सम्बन्धित समस्त ग्राम स्तरीय कार्य ग्राम पंचायतों द्वारा किये जाते हैं। बीज, खाद, आदि का वितरण इसी माध्यम से होता है।

पशु धन विकास :–

पशुधन विकास के 'पशु सेवा केन्द्र' तथा द श्रेणी के पशु चिकित्सालय एवं उनमें नियुक्त कर्मचारियों को ग्राम पंचायतों को हस्तांतरित किया जाता है। यह केन्द्र पशुओं की नस्ल सुधार हेतु एवं दूध उत्पादन क्षमता बढ़ाने हेतु कृत्रिम गर्भाधान आदि का कार्य करता है।

राशन की दुकान :–

ग्राम पंचायतें राशन की दुकान से वितरित सामग्री चीनी, अनाज, चावल, मिट्टी का तेल आदि पर निगरानी रखेगी। अनुसूचित जाति एवं गरीबी रेखा के नीचे आने वाले लोगों को कन्ट्रोल रेट वस्तुएँ उपलब्ध करायेगी और काला बाजारी न हो इसका भी समुचित प्रबन्ध करेगी।

ग्राम विकास :–

ग्राम्य विकास से सम्बन्धित समस्त स्तरीय कार्य ग्राम पंचायतों के अधीन सम्पन्न किये जाते हैं। जैसे–खड़ंजा, नाली आदि का कार्य। जवाहर ग्राम समृद्धि योजना की धन राशि विकास कार्यों हेतु शासन से सीधे ग्राम पंचायतों को दी जा रही है।

मत्स्य पालन :–

ग्राम पंचायतों के अन्तर्गत मत्स्य पालन हेतु तालाब, नदी, आदि के पट्टे इन्हीं के द्वारा आवंटित किये जाते हैं। केवट, काछी, या ढीमरों को विशेष वरीयता के अनुसार पट्टे के साथ मत्स्य पालन हेतु अनुदान देता है।

इसी तरह शूकर, भेड़ एवं मुर्गी पालन के लिये भी ग्राम पंचायतें सम्पन्न कराती हैं।

१२. समाज कल्याण विभाग :–

समाज कल्याण विभाग द्वारा कक्षा 1 से डिग्री कालेज तक के छात्र/छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करता है।

कक्षा 1 से कक्षा 5 तक पढ़ने वाले समस्त अनुसूचित जाति छात्रों को रु0 25/– प्रतिमाह की दर से छात्रवृत्ति दिये जाने का प्राविधान है। इस छात्रवृत्ति में आय का कोई बन्धन नहीं है इस योजना के अन्तर्गत चालू वित्तीय वर्ष में (2001–2002) 195.26 लाख का आवंटन प्राप्त हुआ था तथा समस्त धनराशि व्यय करके 65087 छात्रों को लाभान्वित किया।'[58]

'कक्षा 6 से 8 तक पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के छात्रों को 40/– रु0 प्रतिमाह छात्रवृत्ति वितरण की जानी है। इसमें भी आय का कोई बन्धन नहीं है। इस योजना के अन्तर्गत चालू वित्तीय वर्ष (2001–2002) हेतु 89.

181 लाख का आवंटन प्राप्त हुआ था तथा समस्त धनराशि व्यय करके 18579 छात्रों को लाभान्वित कराया गया।[59]

कक्षा 9 से 10 तक के छात्रों को जिनके अभिभावकों की मासिक आय 2500/- रु0 है तो उन छात्रों को 60 रु0 प्रति माह की दर से छात्रवृत्ति दिये जाने का प्राविधान है। इस योजना के अन्तर्गत रु0 58.860 लाख आवंटन प्राप्त हुआ था तथा समस्त धनराशि व्यय करके 6924 छात्रों को लाभान्वित किया गया।[60]

इसी तरह दशमोत्तर कक्षाओं में अध्ययन करने वाले छात्रों को जो कक्षा 11 से स्नातक प्रथम वर्ष के छात्रों को 90 रु0 प्रतिमाह तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को 190 रु0 प्रतिमाह की दर से छात्रवृत्ति दिये जाने का प्राविधान है। चालू वित्तीय वर्ष (2001–2002) में रु0 47.00 लाख का आवंटन प्राप्त हुआ था तथा समस्त राशि व्यय करके 3120 छात्रों को लाभान्वित किया।[61]

आई0टी0आई0 में पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के छात्रों को रुपया 50/- प्रतिमाह की दर से 10 माह की छात्रवृत्ति का भुगतान किया जाता है। इस योजना में रु0 0.88 लाख का आवंटन प्राप्त किया गया।[62]

अस्वच्छ पेशा छात्रवृत्ति :-

'कक्षा 1 से कक्षा 10 तक पढ़ने वाले ऐसे अभिभावकों के छात्र जिनके माता–पिता अस्वच्छ पेशा का कार्य करते हैं उन्हें कक्षा 1 से 5 तक 250/- रु0 तथा कक्षा 6 से 8 तक 400/-रु0 एवं कक्षा 9 से 10 तक 500/- रु0 वार्षिक की दर से छात्रवृत्ति तथा अभिभावक को तदर्थ अनुदान का भुगतान किया जाता है। इस योजना के अन्तर्गत चालू वर्ष (2001–2002) में 2.12

लाख का आवंटन प्राप्त हुआ जिसमें से रु0 2.01 लाख व्यय करके 251 छात्रों को लाभ दिया गया तथा शेष राशि शीघ्र ही व्यय कर ली जायेगी।[63]

अनुसूचित जाति के व्यक्तियों की पुत्रियों की शादी एवं बीमारी हेतु अनुदान :-

"ऐसे अनुसूचित जाति के व्यक्ति जिनकी वार्षिक आय रु0 1200/- तक है उन्हें पुत्री की शादी हेतु रु0 10,000/- तथा बीमारी हेतु 2000/- रु0 का अनुदान दिया जाता है। चालू वर्ष में इस योजना में रु0 18.400 लाख का आवंटन प्राप्त हुआ जिसमें से रु0 16.930 व्यय करके 205 व्यक्तियों को लाभान्वित किया गया। शेष धनराशि चालू वर्ष में व्यय कर ली जायेगी।[64]

इसी तरह निराश्रित विधवाओं की पुत्रियों की शादी हेतु रु0 10,000/- का अनुदान दिया जाता है। इस योजना में रु0 1 लाख[65] का आवंटन हुआ जिसे व्यय करके 10[66] "विधवाओं को लाभान्वित किया गया है।

गैर अनुसूचित जाति के व्यक्तियों द्वारा अनुसूचित जाति के व्यक्तियों का उत्पीड़न किये जाने पर समाज कल्याण विभाग उत्पीड़ित व्यक्ति को अनुदान का भुगतान करता है। यह विभाग सामान्य घटना पर रु0 6,250/- का भुगतान अभियोग दाखिल होने पर तथा रु0 18750/- निचले आयोग द्वारा आरोप सिद्ध होने पर बलात्कार की घटना पर महिला की मेडिकल जाँच के उपरान्त रु0 25000/- तथा न्यायालय द्वारा दोष सिद्ध होने पर 25000/- रु0 का भुगतान किया जाता है। कमाने वाले व्यक्ति की हत्या पर 1,50,000/-रु0 का भुगतान तथा न कमाने वाले व्यक्ति की हत्या पर 75000/- रु0 का भुगतान पोस्टमार्टम रिपोर्ट के उपरान्त किये जाने का प्रावधान है। चालू वित्तीय वर्ष में रु0 22717 लाख रु0 का आवंटन प्राप्त हुआ

जिसमें से रु0 16. 395 लाख रु0 व्यय करके 145 व्यक्तियों को लाभान्वित किया गया।"67

किसान/वृद्धावस्था पेंशन योजना :-

इस योजना के अन्तर्गत 60 वर्ष से ऊपर की आयु वाले निराश्रित वृद्धाओं को जिनकी वार्षिक आय 12000 रु0 से कम है। उन्हें यह विभाग 125/- रु0 प्रतिमाह की दर से पेंशन देने का प्राविधान किया गया है। जनपद में इस योजना के अन्तर्गत 17270 लाभार्थियों को पेंशन का भुगतान किया गया है।

१३. पशुपालन विभाग :-

जनपद में पशुपालन के माध्यम से विभिन्न योजनाएँ क्रियान्वित हैं। इसके अन्तर्गत पशु चिकित्सा तथा स्वास्थ्य से सम्बन्धित योजनाओं पर कार्य किया जा रहा है।

पशु चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ :-

इसके अन्तर्गत पशु चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सम्बन्धित देखभाल हेतु उन्नीस (19) पशु चिकित्सालय जिसमें 6 द श्रेणी पशु चिकित्सालय एवं 34 पशु सेवा केन्द्र कार्यरत हैं। 68

नस्ल सुधार :-

जनपद में 25 केन्द्रों के द्वारा अतिहिमीकृत वीर्य से कृत्रिम गर्भाधान किया जाता है तथा जनपद में 8 नैसर्गिक प्रजनन केन्द्रों पर उन्नतशील नस्ल के भैंसा, साड़ों द्वारा प्रजनन कराया जाता हैं। जनपद में बाँझपन चिकित्सांलयों पर बाँझपन शिविर का आयोजन किया जाता है।

भेड़ पालन एवं नस्ल सुधार :-

जनपद में आटा तथा बोहदपुरा में भेड़ फार्म कार्यरत हैं। जहाँ से नस्ल सुधार हेतु उन्नतिशील किस्म के मेढ़ा भेड़ पालकों को उपलब्ध कराये जाते हैं। इस विभाग द्वारा भेड़ों की अच्छी नस्ल प्राप्त की जा रही है।

बकरी प्रजनन एवं नस्ल सुधार :-

जनपद में बोहदपुरा फार्म पर बकरी प्रजनन केन्द्र कार्यरत है जहाँ से नस्ल सुधार हेतु उन्नतिशील बकरे गर्भाधान हेतु क्षेत्र में वितरित किये जाते है। 18 पशु चिकित्सालयों पर उन्नतशील बकरे रख रखाव नस्ल सुधार हेतु कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

सुअर नस्ल सुधार :-

जनपद के 13 पशु चिकित्सालयों और उन्नतिशील नस्ल के सूकर साँड़ रखकर सूकर गर्भाधान कार्यक्रम चलाया जा रहा है।[69]

चारा विकास :-

कृषकों को पशुओं की उचित देखभाल एवं अच्छे स्वास्थ्य हेतु उन्नतिशील चारा ज्वार, बरसीम, लाविया एवं जई आदि के लिये बीज वितरित किये जाते हैं। बोहदपुरा फार्म एवं कुनिया प्लान्ट पर उन्नतिशील चारा एवं उसका बीज उत्पादन का कार्यक्रम सुचारु रूप से चलाया जा रहा है।

पोल्ट्री काम्पलैक्स :-

आटा प्रक्षेत्र पर 20,000 ब्रायलर पक्षियों को पालने हेतु पोल्ट्री काम्पलैक्स कार्यरत है। यहाँ पर 20 लाभार्थियों को स्वतः रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं।[70]

१४. सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग :-

'प्रशासनिक और पत्र प्रतिनिधियों के मध्य सेतु के रूप में समन्वय स्थापित रखने हेतु सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग जनपद जालौन निरन्तर प्रयासरत है। जिनमें किसान मेला प्रदर्शनी गीत एवं नाट्य सरकार के सुदूर अंचल तक प्रचार–प्रसार हेतु विभिन्न योजनाएँ एवं नाट्य योजना, चलचित्र प्रदर्शन योजना, जिला सूचना केन्द्र आदि कार्यक्रमों की कवरेज करके समाचार पत्रों में प्रकाशन कराया जाता है।[71]

इसके अतिरिक्त प्रशासन विभाग द्वारा मद्यनिषेध (आबकारी विभाग) द्वारा मद्य की दुकानों को उनकी गुणवत्ता के अनुसार चलायी जा रही हैं। विज्ञापनों के माध्यम से मद्यपान के द्वारा होने वाली हानियों की चेतावनी दी जाती है साथ में अवैध रूप से बनने वाली शराब पर प्रशासन अंकुश लगाता है।

स्वयं सहायता समूह, सहकारिता विभाग, आँगन बाड़ी बाल विकास परियोजना प्रशासन द्वारा संचालित किये जाते हैं।

ग) जनपद जालौन की शैक्षिक स्थिति :-

शिक्षा हमारे देश में वैदिक काल से चली आ रही है। उस समय की शिक्षा को गुरुकुलीय शिक्षा कहा जाता था। गुरुकुल जो नगर से दूर एकांत निर्जन स्थान पर शिष्य गुरु के सम्पर्क में रहकर वेदों की ऋचाओं को कंठस्थ किया करता था। शुद्ध उच्चारण पर विशेष ध्यान दिया जाता था। चूँकि उस समय कागज एवं मुद्रण की व्यवस्था नहीं थी इस कारण गुरु भोजपत्र पर लिखकर अपने शिष्यों को समझाते थे। वैदिक काल की शिक्षा गुरु शिष्य के मधुर सम्बन्ध के लिये जानी जाती थी। शिष्य गुरु को अपना सब कुछ मानकर गुरु की सेवा सुश्रुवा पूरे मन से करता था। गुरु भी शिष्य को पुत्रवत्

स्नेह करता था।

कालान्तर में मुगलकाल में मुगलकालीन शिक्षा का प्रचलन हुआ। अब गुरुकुलों का स्थान मकतवा व मदरसों ने ले लिया। वैदिक मंत्रों के स्थान पर अरबी, फारसी की आयतों ने ले लिया था। मुगल कालीन शिक्षा में गुरु शिष्य सम्बन्ध तो वही रहे लेकिन गुरु द्वारा शिष्य को अधिक प्रताड़ित किया जाता था। यदि शिष्य पढ़ने में कमजोर हुआ तो उसे डंडे के द्वारा पीटा भी जाता था। फिर भी गुरु शिष्यों के सम्बन्ध मधुर थे।

अंग्रेजी शासन में शिक्षा का स्वरूप अलग हो गया था। उस समय लार्ड मैकाले एवं मुदालियर आयोग ने शिक्षा के नियम निर्धारित किये जिसमें भारतीयों को शिक्षित करके बाबू बनाया जाता था। बौद्धिक विकास एवं आध यात्मिक विकास के लिये उसमें कोई स्थान नहीं था। वर्तमान में बहुत कुछ शिक्षा का आधार लार्ड मैकाले की शिक्षा पद्धति पर आधारित है। वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था को शिक्षण की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है–

१. बेसिक व जूनियर तक की शिक्षाः–

बेसिक शिक्षा को कक्षा 1 से कक्षा 8 तक माना जाता है। जनपद में बेसिक शिक्षा का सबसे बड़ा अधिकारी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी होता है। इसके नीचे एक निरीक्षक होता है तथा प्रत्येक ब्लाक में दो प्रति उपविद्यालय निरीक्षक होते हैं। इन्हीं की देख-रेख में जनपद की बेसिक शिक्षा चलती है। यही अधिकारी जनपद के सारे विद्यालयों की देखभाल करते हैं और वर्ष में होने वाली परीक्षा का संचालन भी यही अधिक करते हैं।

२. उच्चत्तर माध्यमिक शिक्षा :–

कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की शिक्षा व्यवस्था उच्चत्तर माध्यमिक शिक्षा

कहलाती है। जनपद में माध्यमिक शिक्षा का सबसे बड़ा अधिकारी जिला विद्यालय निरीक्षक होता है। जिले के समस्त हाई स्कूलों एवं इण्टर कालेजों की सभी व्यवस्था इस अधिकारी की जिम्मेदारी पर होती है। जनपद की हाई स्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाओं का संचालन माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद द्वारा होता है।

३. विश्व विद्यालयी शिक्षा :-

इण्टर से ऊपर तक शिक्षा व्यवस्था को उच्चतम शिक्षा व्यवस्था कहा जाता है। बी0ए0 से एम0ए0 तक की शिक्षा व्यवस्था महाविद्यालयों में संचालित होती है। जिले में कुल 11 महाविद्यालय हैं। जिनमें उरई मुख्यालय में एक कन्या महाविद्यालय शामिल है। इन महाविद्यालयों का संचालन प्रबन्ध ा समिति एवं बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी द्वारा होता है। जनपद में कोई विश्व विद्यालय नहीं है। जनपद में एक संगीत महाविद्यालय भी शामिल है जो उरई मुख्यालय में स्थित है। प्रत्येक महाविद्यालय में उच्च शिक्षा आयोग इलाहाबाद से योग्य एवं अनुभवी प्राचार्यों एवं प्राध्यापकों की नियुक्ति की जाती है जिन्हें स्थानीय प्रबन्ध तन्त्र सहर्ष स्वीकार करता है। स्नातक स्तर पर प्रत्येक विषय के लिये कम से कम एक प्राध्यापक और स्नातकोत्तर विषयों के लिये तीन-तीन प्राध्यापक नियुक्त किये जाते हैं।

इस जनपद में बी0एड0 प्रशिक्षण के लिये दो महाविद्यालय हैं। प्रथम गाँधी महाविद्यालय द्वितीय दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय हैं इनमें प्राध्यापकों की नियुक्ति प्रत्येक 10 प्रशिक्षार्थी के ऊपर एक प्राध्यापक की नियुक्ति नियम के अनुसार की जाती हैं इस प्रकार इन महाविद्यालयों में कम से कम 10 प्राध्यापक ही प्रारम्भ में नियुक्त कर दिये जाते है।

४. तकनीकी प्रशिक्षण :–

इसके अतिरिक्त जनपद में तकनीकी एवं मेडिकल प्रशिक्षण की शिक्षा दी जाती है जैसे– फल संरक्षण केन्द्र से फलों के संरक्षण की शिक्षा, सिलाई ट्रेनिंग, टाइप इन्स्टीट्यूट कम्प्यूटर एवं एन0टी0टी0 का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

जनपद में विद्यालयों की संख्या :–

जनपद में 1268 प्राथमिक विद्यालय, 8 संस्कृत विद्यालय, 366 जूनियर हाई स्कूल, 98 उच्चत्तर माध्यमिक व इण्टर कालेज, 1 बी0टी0सी0 प्रशिक्षण केन्द्र, 5 राजकीय सीनियर बेसिक स्कूल, 1 पोलिटेक्निक, 1 आई0टी0आई0, 6 मकतब, 1 बी.के0एस0 संगीत महाविद्यालय, राजकीय फल संरक्षण केन्द्र, कई टाइप इन्स्टीट्यूट, सिलाई ट्रेनिंग, कम्प्यूटर केन्द्र आदि हैं।[72] वर्तमान में 11 डिग्री कालेज हैं।

मनोरंजन:–

मनोरंजन हेतु जनपद में 8 सिनेमाघर हैं।[73] इसके अलावा कई जगह रामलीला का आयोजन हर वर्ष होता रहता है। ईद के मेले लगते हैं, नुमाइश, होली, दीवाली आदि के आकर्षक मेले लगते हैं। घरों में डिस्क एवं वीडियों सैट पर सी0डी0 प्लेयर के द्वारा फिल्म आदि देखी जाती है। देश–विदेश से बातचीत हेतु एस0टी0डी0 व आई0एस0डी0 ट्रंक की सुविधाएँ जनपद में उपलब्ध हो चुकी हैं। गाँव–गाँव में टेलीफोन सुविधा उपलब्ध हो रही है।

घ) जनपद जालौन की ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थिति :–

'किसी भी जनपद विशेष के बारे में यह आकलन करना कि उसने `इतिहास एवं पुरातत्व को क्या दिया है, निःसन्देह बहुत ही दुष्कर एवं जटिल

कार्य है। उन परिस्थितियों में तो यह कार्य और भी चुनौती पूर्ण हो जाता है, जब विवेच्य जनपद के बारे में पाश्चात्य विद्वानों द्वारा यह चुनौती दी जा चुकी हो कि उसका तो कोई इतिहास ही नहीं है परन्तु यह भी सत्य है कि इस प्रकार की चुनौतियाँ ही मन में संकल्प और उत्साह का संचरण करती हैं।[74]

हिन्दुस्तान की ऐतिहासिक परम्परा है जो अतीत में प्रारम्भ हुई और संघर्षो के बीच निरन्तर जीवित है। इस इतिहास परम्परा की घोर उपेक्षा और तथ्यों को तोड़–मरोड़ में इस देश के प्रति जितना अन्याय किया उतना शायद ही किसी देश के साथ हुआ होगा। यदि पराये ही यह करते तो समझ में आ सकता था पर जब अपने ही लोग इस कार्य में लगे हों तब उनके प्रति आक्रोश व्यक्त करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। इतना ही नहीं निर्भयता पूर्वक ऐतिहासिक सत्यों की प्रतिष्ठापना करना यह आज के इतिहास और पुराविदों का कर्तव्य हो जाता है।[75]

जालौन जनपद का गठन सन् 1854 ई0 में हुआ था किन्तु इसके पूर्व यह जनपद भिन्न–भिन्न शासकों के अधीन रहा। जालौन जनपद के निकटस्थ क्षेत्रों में आर्य सबसे पहले आकर बसे। तब यह चेदि जनपद माना जाता था और यमुना से कुरु और मध्य देश के मध्य में था। इस प्रकार महाभारत में वर्णित राजा ययाति ही इस जनपद (जालौन) के प्रथम ज्ञात सम्राट हैं।[76]

मनु के नाती ऐल पुरुरवा से जो वंश चला वह चन्द्रवंश कहलाया। ऐल के पुत्र आयु, आयु के पुत्र नहुष और नहुष के पुत्र ययाति थे। राज्य के बँटवारे में ययाति के बड़े पुत्र यदु को चम्बल, बेतवा, केन नदियों की घाटियों वाला क्षेत्र प्राप्त हुआ था।[77] इससे यह कहा जा सकता है कि जालौन के क्षेत्र से यदु का शासन समाप्त हो गया परन्तु इक्ष्वाकु वंश 41वीं पीढ़ी के

अयोध्या नरेश राजा सगर ने सम्पूर्ण उत्तर भारत पर अधिकार कर लिया था।[78] इसी वंश के राजा कोशिका ने चेदि राज्य पर अधिकार कर लिया और 'चेदियों के ऊपर चलने वाला' की उपाधि धारण की।[79] जालौन जनपद का क्षेत्र उत्तराधिकार में वसु के पुत्र प्रत्याग्रह को प्राप्त हुआ।[80]

महाभारत काल में यह जनपद चेदि राजा शिशुपाल के शासन में आया। इसकी राजधानी चन्देरी थी।[81] ईसा से 400 वर्ष पूर्व जालौन जनपद का क्षेत्र महापद्मनन्द (घनानन्द) के अधिकार में आ गया था।[82] वह उत्तरी भारत का पहला सम्राट था जिसके राज्य की सीमाएँ हिमालय से विन्ध्याचल तक थीं।[83] ई० पूर्व 321 तक नन्द वंश के शासक इस क्षेत्र को अपने अधिकार में किये रहे। इसी अवधि में चन्द्र गुप्त मौर्य ने घनानन्द को हराकर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। इस प्रकार चन्द्रगुप्त के साम्राज्य में नर्मदा के डार का समस्त भाग आ गया था।[84]

अतः जालौन का क्षेत्र भी मौर्य साम्राज्य में आ गया। बिन्दुसार के समय में जालौन का क्षेत्र अवन्ति प्रान्त में था जिसकी राजधानी उज्जैनी थी। इस समय जालौन अशोक के अधीन था क्योंकि बिन्दुसार ने अवन्ति का राज्य कार्य अशोक को सौंप रखा था।[85] अशोक ही बिन्दुसार के बाद राज्य का उत्तराधिकारी हुआ।

मौर्यों के पश्चात यह जालौन का क्षेत्र शुंग राजाओं के आधीन रहा। "तिब्बती तारानाथ तथा पाणिनि के मतानुसार शुंग ब्राह्मण थे।"86 पहली शताब्दी के अन्त तक जालौन कुषाण राज्य के अधीन हो गया था। कनिष्क कुषाण वंश का प्रतापी राजा था। "जालौन क्षेत्र का कुषाण साम्राज्य का अन्त वासुदेव के शासन काल में अर्थात् 150–176 ई० में हुआ। पुनश्च नरवर के

पास पवाया के नागवंशी भारशिवों ने इस क्षेत्र से कुषाण साम्राज्य का अन्त करके एक नये साम्राज्य की नीव रखी।[87]

चौथी शताब्दी में जालौन का क्षेत्र गुप्त वंश के अधिकार में आ गया था।[88] इस वंश में कई प्रसिद्ध सम्राट हुए। जिनमें चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, स्कन्द गुप्त आदि प्रमुख थे। बुद्ध गुप्त के समय यमुना और नर्मदा के मध्य का शासन उसके माण्डलिक रश्मि चन्द्र के पास था जिसके दो सरदार मातृ शिशु और धान्य विष्णु सारा राज्य संभाले थे। समुद्रगुप्त के समय से ही हूणों के आक्रमण भारत में होने लगे थे। हूण राजा तोरमण ने 500 ई0 के लगभग यहाँ पर अधिकार करने में सफलता प्राप्त की।[89]

तोरमण के बाद उसका पुत्र मिहिरकुल गद्दी पर बैठा। 525 ई0तक मिहिरकुल ने पंजाब से ग्वालियर तक के क्षेत्र को अपने अधिकार में कर लिया था। इस प्रकार जनपद जालौन का इलाका भी उसके राज्य में था। मिहिरकुल ने अपना प्रभाव जालौन क्षेत्र पर लगभग 40 वर्षो तक कायम रखा।[90]

गुप्त वंश के कमजोर होने पर मन्दसौर के राजा यशोधर्मन ने पश्चिमी मालवा में अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित कर ली और मिहिरकुल को हराकर इस क्षेत्र से भगा दिया।[91] यशोधर्मन के बाद हर्षवर्धन ने इस क्षेत्र पर 648 ई0 तक राज्य किया।[92] इसके पश्चात कुछ वर्षो तक का इतिहास अँधकारमय है। संभवतः 800 ई0 के लगभग प्रतिहारों (परिहार) ने अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इस वंश के प्रमुख राजा नागभट्ट और उसका नाती मिहिरभोज था किन्तु गुर्जर और परिहार जालौन क्षेत्र में शांति पूर्वक राज्य नहीं कर सके। उनके राष्ट्रकूटों, कल्चुरी राजाओं के आक्रमणों का सामना करना पड़ रहा था और चन्देल भी अपनी शक्ति बढ़ा रहे थे। चन्देल राजा हर्ष

के पुत्र यशोवर्मन ने कन्नौज के परिहारों की युद्ध में सहायता की थी अतः उनको चित्रकूट का क्षेत्र और कालिंजर का किला परिहारों से उपहार में प्राप्त हुआ था।[93] इन किलों के प्राप्त होने से चन्देलों की शक्ति बहुत बढ़ गई। कहने को तो जालौन का क्षेत्र परिहारों का था परन्तु वास्तविक रूप से ये चन्देलों के अधिकार में आ गया था।[94]

चन्देल वंश के संस्थापक ननुकर थे।[95] इस वंश के प्रमुख राजाओं में जयशक्ति, राहीला, हर्ष, यशोवर्मन तथा धंग का राज्य पूरे बुन्देलखण्ड में था। कहा जाता है 100 वर्ष की आयु पर्यन्त धंग ने गंगा यमुना के संगम पर जल समाधि लेकर मृत्यु का वरण किया।[96] धंग के बाद उसका पुत्र गण्ड इस क्षेत्र को अपने अधिकार में किये रहा किन्तु गण्ड के शासन काल में ही मुसलमानों के आक्रमण भारत पर होने लगे। महमूद गजनवी के आक्रमणों का विरोध करने के लिये भारत के राजाओं ने एक संघ बनाया था। इस संघ में गण्ड भी शामिल था।इस कारण महमूद गजनवी ने चन्देल साम्राज्य पर आक्रमण करके भारी लूटपाट की और लूट का धन लेकर लौट गया। अतः यह जालौन चन्देलों के अधीन बना रहा।[97]

चन्देल वंश में राजा परमार्दि देव (1165 से 1203) जिसको इस क्षेत्र में परमाल के नाम से जाना जाता है। परमाल के समय में उरई माहिल परिहार की राजधानी थी जो चन्देलों के अधीन थी। परिमार्दि देव ने माहिल की बहन मल्हना से विवाह कर लिया था यही नहीं माहिल की दो अन्य बहनें देवला तथा तिलका थीं, उनका विवाह भी माहिल की इच्छा के विरुद्ध अपने दो सरदारों दच्छराज एवं बच्छराज से करवा दिया था। परमाल ने माहिल को अपना मंत्री बना लिया था किन्तु इस पर भी माहिल का क्रोध शांत नहीं हुआ।

वह अन्दर ही अन्दर परमाल से बदला लेने के लिये कूटनीतिक चालें चलकर उसको नीचा दिखाने के लिये प्रयत्न करता रहता था। माहिल जैन धर्म को मानने वाला था।[98] अतः खुद को युद्ध से दूर रखता था। दच्छराज और बच्छराज से माहिल के द्वेष का कारण यह भी था कि ये दोनों सरदार बनाफर जाति के थे और इस क्षेत्र में इस जाति की गिनती क्षत्रियों में नहीं की जाती थी इस कारण इन विवाहों के कारण माहिल अपने को बहुत अपमानित महसूस करता था। [99] इसका अतिशयोक्ति पूर्ण एवं विशद वर्णन जनकवि जगनिक द्वारा प्रणीत आल्हखण्ड में भलीभाँति हुआ है। उस समय दिल्ली का राजा पृथ्वीराज चौहान था। माहिल हमेशा आल्हा ऊदलको किसी बड़ी लड़ाई में झौंकने की जुगत भिड़ाता रहता था।

राजपूत काल में राज्यों की शक्ति का प्रतीक उनके गढ़ हुआ करते थे। वह अपने राज्य के मार्मिक स्थलों में गढ़ बनाया करते थे (यही कारण है कि अब भी बुन्देलखण्ड में अनेक गढ़ या गढ़ियों के खण्डहर पाये जाते हैं) चन्देल वंश के राजाओं ने 8 प्रसिद्ध गढ़ बनाये थे। उनमें से कालपी एक था। कालपी यमुना नदी पर स्थित थी और कालपी होकर उत्तरी भारत से दक्षिण भारत जाने का एक थल का रास्ता भी था।[100]

चन्देलों के पश्चात 1202 ई0 के कुतुबुद्दीन ऐबक ने इसको जीता। इसके बाद कालपी दिल्ली शासन में महत्वपूर्ण स्थान रखने लगी। यहाँ हमेशा अच्छी फौज रखी जाती थी। दक्षिण की ओर प्रहार करने का मुख्य स्थान रहा है यह।[101]

बाबर और अकबर के समय में भी कालपी का इतिहास अत्यन्त रोचक रहा। अकबर कालपी से हाथी खरीदता था और दक्षिण आक्रमण के लिये

सेनाएँ इसी स्थान से चलती थीं। औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात सं0 1707 में सम्राट बहादुर शाह ने छत्रसाल को सरकारी तौर पर कालपी का क्षेत्र दे दिया था।[102]कनिष्क के शासन काल में उसका बनारस का क्षत्रक बनस्पर था। बाद में बनस्पर महाक्षत्रक भी बना। बनस्पर के वंशज ही बुन्देलखण्ड में बनाफर कहलाने लगे।[103]

चन्देलों के समय में अपनी वीरता तथा युद्ध कौशल के कारण ये प्रसिद्ध थे परन्तु समाज में ये निम्न कोटि के माने जाते थे। आल्हखण्ड में इनको जगह–जगह 'ओछी जात बनाफर क्यार' से सम्बोधित किया जाता है। बुन्देलखण्ड में इनकी बोली बनाफरी कहलाती है।[104]

कूटनीति के चतुर खिलाड़ी माहिल एक बार बिठूर के मेले में गये हुए थे। मेले में उनकी मुलाकात माधौगढ़ के राजा जम्मी से हुई। जम्मी अपनी बहन के लिये मेले से कोई अमूल्य उपहार ले जाना चाहता था। माहिल ने जम्मी को सलाह दी कि यहाँ पर उपहार योग्य कोई वस्तु नहीं मिलेगी यदि उपहार देना ही है तो दशरापुर गाँव में देवला के गले में पड़े नौलखा हार को प्राप्त करके लाओं। जम्मी ने आक्रमण करके दस्सराज और बच्छराज का बध कर दिया और नौलखा हार तथा अन्य कीमती चीजें अपने साथ ले गया। यह माहिल की पहली कूटनीतिक सफलता थी लेकिन ये सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं हुई क्योंकि माहिल की बहन मल्हना ने अपने पति परमाल को इस बात के लिये मना लिया था कि उसकी दोनों विधवा बहनें तथा उनके पुत्र आल्हा ऊदल और मलखान वयस्क होने तक राजपरिवार में रह सकें।

ऊदल अभी कम उम्र के ही थे। वे एक दिन शिकार खेलते हुए उरई की सीमा तक आ गये। प्यास से व्याकुल ऊदल को पनिहारियों ने पानी नहीं

पिलाया। इस पर ऊदल ने क्रोध में उनके घड़े फोड़ दिये। इस घटना की शिकायत माहिल के पुत्र अभई से की गई। अभई अपने सैनिकों के साथ युद्ध करने लगा। इस बात की खबर माहिल को भी लगी। माहिल ने घटनास्थल पर आकर युद्ध रुकवा दिया और व्यंग्यात्मक लहजे में कहा–''यदि वीरता ही दिखलानी है तो माधौगढ़ (माड़ौ) में दिखलाओ, जहाँ के राजा ने तुम्हारे पिता को मारकर उनकी खोपड़ी को किले के मुख्य द्वार पर टाँग रखा है।[105]

सावन के महीने में लोग इस लड़ाई को बड़े ओजपूर्ण ढंग से गाते हैं–

बडे लड़ैया हो महुबे के, ता बदला लेव बाप के जाय।
टंगी खुपड़ियाँ है माड़ौ में, निशदिन हाय–हाय चिल्लाय।।
सोवत मारो बच्छराज को, ता फिर बाँधे–बाप तुम्हार।
पत्थर कोल्हू में पिरवा दओ, नाली बही खून की धार।।
जाके लरका सुख में सोवै, ऐसे जीवन को धिक्कार।।
दस्सराज के ऊदल बेटा, ओछी जात बनाफर क्यार।[106]

आल्हा ऊदल ने माधौगढ़ को जीतकर अपने पिता का बदला ले लिया। इस विजय से चन्देल राजा परमाल तो खुश हुए परन्तु माहिल को इतनी खुशी नहीं हुई और वह अन्दर ही अन्दर आल्हा ऊदल और मलखान से शत्रुता रखने लगा और इनके विनाश के लिये प्रयत्नशील रहने लगा। माहिल को डर था कहीं ये चन्देल राज्य पर अधिकार ही न कर लें उसने षडयन्त्र करके आल्हा ऊदल को महोबे से निकलवा दिया। इन भाइयों की वीरता से प्रभावित होकर कन्नौज के राजा जयचन्द ने इन भाइयों को शरण दे दी। अजमेर और दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान और परमाल चन्देल में आपस में बड़ी शत्रुता थी। उरई नरेश माहिल ने इसका भरपूर लाभ उठाया

उसने आल्हा ऊदल की महोबा में अनुपस्थिति की सूचना पृथ्वीराज को दी और महोबा पर आक्रमण करने के लिये उकसाया। 1182–83 में पृथ्वीराज की सेना दिल्ली से चली।[107] अब परमाल को आल्हा ऊदल जैसे बीरों की कमी महसूस हुई। उसने अपने भाट जगनिक को दोनों वीरों को कन्नौज से वापस महोबा में बुला लाने को कहा। पहले तो दोनों भाई आने के लिये तैयार नहीं थे परन्तु अपनी माँ के कहने पर तैयार हो गये। आल्हा की सेना ने कालपी पर यमुना पार करके हमीरपुर पर अधिकार कर लिया, उधर परमाल की सेना बेतवा के किनारे स्थित मोहाना (जालौन) नामक स्थान पर आ जुटीं[108]

उरई से लगभग 14 मील पश्चिम तथा कोंच से दक्षिण पूर्व में 10 मील की दूरी पर स्थित अकोढ़ी नामक गाँव के पास पृथ्वीराज एवं चन्देलों के मध्य हुए युद्ध में चन्देलों की भारी पराजय हुई।[109]

माहिल की आँख के काँटे ऊदल सहित कई अन्य प्रमुख वीर इस युद्ध में मारे गये। इस प्रकार अपने पूर्वज नागभट्ट प्रतिहार की हार का बदला (जिसकों 831 ई0 में नन्नक चन्देल ने हराकर चन्देल राज्य की स्थापना की थी) माहिल ने अपनी कूटनीतिक चालों के द्वारा लिया क्योंकि इस युद्ध के बाद चन्देल शासक फिर कभी अपने पुराने वैभव को प्राप्त नहीं कर पाये। इस युद्ध के बाद जालौन का बहुत बड़ा भाग पृथ्वीराज चौहान के अधीन आ गया। उसने अपने सरदार पज्जून राय को शासक नियुक्त किया।[110] चौहान काल का ये कुँआ और पृथ्वीराज के सेनापति चामुण्डराय जिसका जन्म स्थान कोंच था द्वारा निर्मित कराया गया। कोंच में एक तालाब अभी भी है।[111] इसी बीच गोर के शासक शहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी ने आक्रमण करके पृथ्वीराज चौहान को तराइन के युद्ध में हरा दिया। उसके प्रमुख गुलाम कुतुबुद्दीन

ऐबक ने 1202–03 में आक्रमण करके कालिंजर महोबा और कालपी के किले पर अधिकार करके इस (जालौन) क्षेत्र में मुसलमानों ने अधिकार स्थापित कर लिया।[112]

'शासन की सुविधा के लिये ऐबक ने अपने एक अफगान सरदार का मुख्यालय जगम्मनपुर के पास बनाया तथा अपने गुलाम इल्तुतमिश के द्वारा इस क्षेत्र पर किसी प्रकार अधिकार बनाये रखा। फीरोज तुगलक ने (1351–81) सर्वप्रथम कालपी में अपने अधिकारी का मुख्यालय बनवाया। तैमूर के आक्रमण के समय कालपी की जागीर ताजिउद्दीन तुर्क के पोते मलिक जादा फीरोज के पुत्र मुहम्मद खाँ के पास थी। तुगलक वंश के पतन और दिल्ली में सैयद वंश शासन स्थापित हो जाने पर मुहम्मद खाँ का पुत्र कादर खाँ पिता के बाद 1426 ई0 में कालपी का शासक बना।[113]सामरिक दृष्टि से कालपी सबसे उपयुक्त स्थान था। अतः जौनपुर के इब्राहीम और मालवा के हुसंगशाह दोनों ने कालपी पर अधिकार करने का निश्चय किया।[114] सन् 1433–34 में जौनपुर और मालवा की सेनाओं ने कालपी पर अधिकार करने के लिये प्रयाण किया।[115]

1443 ई0 के आस–पास कादर खाँ ने खुद को कालपी का स्वतन्त्र शासक घोषित कर दिया और कादर शाह कहलाने लगा। 12 जनवरी 1445 को जौनपुर और मालवा की सेनाएँ युद्ध के लिये एरच तक आ गई। दोनों पक्षों में सन्धि हो गई और कालपी की जागीर पुनः नादिरशाह के हाथ में आ गयी। 1479 ई0 में जौनपुर के शासक को हुसैन शाह सरकी पर आक्रमण करके बहलोल लोदी ने पराजित किया और कालपी पर अधिकार कर लिया इस प्रकार हुसैन शाह ने आजम हुमायूँ को कालपी की जागीर सौंपी।[116]

बहलोल लोदी के बाद सिकन्दर लोदी दिल्ली की गद्दी पर बैठा। सिकन्दर लोदी को दिल्ली में अफगान सरदारों के विरोध का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि उसकी माँ हिन्दू स्वर्णकार थी। अफगान सरदार कालपी के हाकिम आजम हुमायूँ को दिल्ली की गद्दी पर बैठाना चाहते थे इस कारण सिकन्दर लोदी ने 1489 में कालपी पर आक्रमण करके आजम हुमायूँ को परास्त करके महमूद खाँ लोदी को कालपी का हाकिम बनाया।[117]

कुछ समय पश्चात जलाल खाँ ने कालपी पहुँचकर अपने को स्वतन्त्र घोषित करके अपने नाम का खुतवा पढ़वाया।[118] उसने नियामत खातून इमादुल मुल्क, बदरूद्दीन जलवानी और हरम के रखवालों को कालपी की सुरक्षा के लिये छोड़ा और खुद 30 हजार सैनिकों के साथ आगरा पर आक्रमण के लिये प्रस्थान किया। [119] इब्राहिम लोदी ने जलाल खाँ को मार डाला और कालपी की जागीर अली खाँ को प्रदान कर दी। इस जनपद से लोदी वंश के शासन का अन्त बाबर द्वारा पानीपत के युद्ध में इब्राहिम लोदी की पराजय के साथ हुआ। पानीपत के युद्ध में 21 अप्रैल 1520 ई0 में इब्राहिम लोदी की मृत्यु हुई। परिणाम स्वरूप अव्यवस्था हुई उसका फायदा उठाकर अफगान सरदार आलम खाँ कालपी का सरदार बन बैठा। 1527 ई0 में कालपी और उसके आस–पास का बड़ा भाग मुगलों के अधिकार में आ गया। कालपी के शासक आलम खाँ ने बाबर का आलीशान स्वागत किया और 7 जनवरी 1528 ई0 में बाबर ने चन्देरी पर आक्रमण करने के लिये एरच प्रस्थान किया। वह मॉडैर के रास्ते सीधे कनार पहुँचा और दूसरी बार बिहार और बंगाल की विजय के बाद लौटते समय कालपी की यात्रा बाबर ने घोड़ों से की थी इसके समय में कालपी परगना की राजस्व आय लगभग 4 करोड़ 28

लाख थी।[120]बाबर के बाद दिल्ली का बादशाह हुमायुँ हुआ। उसने कालपी की जागीर यादगीर नासिर मिर्जा को दे दी। 26 जून 1539 को चौसा के युद्ध में शेरशाह ने हुमायूँ को पूर्ण रूप से परास्त कर दिया। पराजय के बाद मुँह छिपाकर भागते हुए हुमायूँ का शेरशाह ने पीछा किया और रास्ते में शेरशाह ने कालपी पर अधिकार कर लिया। 1540 ई0 में शेरशाह ने कालपी की जागीर मल्लू खाँ को सौंप दी। शेरशाह की मृत्यु के बाद अब्दुल्ला खाँ उज्बेक हुमायूँ का दरबारी तथा कालपी की जागीर का अधिकारी था। हेमू से घबराकर वह कालपी से भाग गया। अकबर ने पुनः उसे कालपी की जागीर देकर सुजात खाँ की पदवी प्रदान की।[121]

अकबर के समय जालौन जनपद का क्षेत्र आगरा सूबे में था। कालपी के आस–पास का क्षेत्र जिसमें उरई, भदेख, चुर्खी, कनार, मुहम्मदाबाद आदि 16 परगना थे। ये सब कालपी सरकार में थे।[122] इस जिले का पश्चिमी क्षेत्र कोंच खकसीस आदि एरच सरकार में शामिल थे।[123] कालपी में एक टकसाल स्थापित की गई जहाँ पर ताँबे का सिक्का ढाला जाता था।[124]

अकबर के समय कालपी की जागीर बैरम खाँ के मना करने पर उसके पुत्र अब्दुर्रहीम खानखाना को दे दी गयी।[125] कालपी के महेशदास ने वीरबल के नाम से अपनी कीर्ति दूर–दूर तक पहुँचायी।[126] बीरबल का जन्म 1528 में कालपी में हुआ तथा मृत्यु 1585 ई0 में अफगान युद्ध में हुई।

आगरा से इलाहाबाद जाते समय अकबर कालपी में जागीरदार अब्दुल मतलूब खाँ का मेहमान बना। यह पूरी यात्रा नाव से की गयी थी। कालपी में अकबर को निरंजनीय सम्प्रदाय के संत रोपड़ गुरु के बारे में पता चला। अतः उसने उनके दर्शनार्थ इटौरा गाँव की यात्रा की और गुरु से

मुलाकात की। अकबर ने यहाँ पर एक तालाब बनवाया तभी से यह गाँव इटौरा अकबरपुर के नाम से जाना जाता है।[127]

जहाँगीर के समय में कालपी की जागीर अब्दुल्ला खाँ के पास रही जिसने मधुकर के पुत्र रामचन्द्र बुन्देला को हराकर 3 हजारी का मंसव जहाँगीर से प्राप्त किया। जहाँगीर ने कोंच की जागीर वीरसिंह बुन्देला को दे दी जिसने जहाँगीर के कहने से अबुल फजल की हत्या करवा दी थी। शाहजहाँ के समय भी अब्दुल्ला कालपी का किलेदार बना रहा। कोंच की जागीर वीरसिंह बुन्देला के पुत्र जहाँगीर के पास थी परन्तु उसने विद्रोह कर दिया। इस कारण उसको इस जागीर से हाथ धोना पड़ा और जालौन जिला में पूर्ण रूपेण फिर से मुगलों का अधिकार हो गया।

बुन्देलखण्ड में चम्पतराय बुन्देला की शक्ति बढ़ रही थी। इससे हारकर 1642 ई0 में मुगलों ने चम्पत राय से दोस्ती कर ली। शाहजहाँ ने कोंच और कनार की 3 लाख की जागीर चम्पतराय को दे दी। चम्पतराय के पुत्र छत्रसाल के रूप में बुन्देलों को नया नायक मिल गया। इस प्रकार जालौन छत्रसाल के अण्डर में आ गया। छत्रसाल ने मुगल खजाना लूट कर उत्तम सिंह धंधेरे को कालपी में नियुक्त किया।[128]

23 सितम्बर 1729 को बंगश की सेना कालपी से यमुना पार करके अपने इलाके में चली गयी। इस समय पेशवा बाजीराव ने छत्रसाल की पूरी मदद की। अतः उन्होंने बाजीराव को तीसरा पुत्र मानकर अपने राज्य का तीसरा भाग पेशवा बाजीराव को देने का वचन दिया।[129]

सन् 1732 ई0 में पेशवा ने अपना भाग प्राप्त करने के लिये चिम्पाजी को एक प्रतिनिधि मण्डल के साथ भेजा। इस प्रतिनिधि मंडल में गोविन्द

बल्लाल खेर भी थे। जिन्होंने जालौन में मराठा राज्य स्थापित किया और इतिहास में गोविन्द पन्त बुन्देला के नाम से जाने गये।

गोविन्द पन्त ने अपने छोटे पुत्र गंगाधर गोविन्द को कालपी उरई तथा जालौन का इलाका सौंपकर उनका मुख्यालय कालपी में बनाया और अपने एक सम्बन्धी को गुरसराय का क्षेत्र प्रदान किया जो आगे चलकर गुरसराय के राजा कहलाये। गंगाधर गोविन्द की कमजोर स्थिति को देखकर अवध के नवाव सुजाउद्दौला ने 11 जनवरी को कालपी पर आक्रमण कर दिया। 1766 ई0 में भरतपुर के जाट राजा जवाहर सिंह ने जालौन के मराठा क्षेत्र में प्रवेश किया। सिन्धु नदी पारकर इन्होंने रामपुरा के राजा कल्याण सिंह को हराकर रामपुरा और गोपालपुरा पर अधिकार कर लिया तथा दतिया के राजा शत्रु जीत ने जवाहर से मित्रता करके कुदारी, ताजे गाँव मराठा राज्य के ढाई दर्जन गाँव पर कब्जा कर लिया। इसके पश्चात जवाहर सिंह ने कोंच पर अधिकार कर लिया। जवाहरसिंह के भरतपुर लौटने पर गोविन्द ने बुन्देलों की मदद से कालपी, रायपुर, कोंच एवं दबोह पर फिर से अधिकार कर लिया। जब कोंच की जागीर माधव सिंह गूजर को दे दी गयी तो उसने मराठों की आधीनता स्वीकार कर ली। 1770 तक जालौन में फिर से मराठों की शक्ति स्थापित हो गई। मई 1778 में अंग्रेज सेनापति कर्नल लेसली कालपी के उस पार यमुना तट पर आ गया। मजबूर होकर गंगाधर गोविन्द को संधि करनी पड़ी। गंगाधर गोविन्द की मृत्यु 1801 में हुई। गंगाधर गोविन्द का पुत्र और उसके बड़े भाई बाला जी का पुत्र दोनों ही छोटे थे। इसलिये खेर बन्धुओं ने 14–12–1798 ई0 को इटौरा में मीटिंग करके गुरसरांय के दिनकर राव अन्ना को दोनों अल्पवय बच्चों का संरक्षक

बनाया। गंगाधर के पूर्व पूना के पेशवा के आदेश से इनको जालौन के 52 गाँव नबाव हैदराबाद के वंशज और दिल्ली के बजीर के पद से भगाये गये नबाव गाजीउद्दीन को देने पड़े जिससे बावनी स्टेट की स्थापना जनपद में हुई।[130] पिता की मृत्यु के बाद गोविन्द राव नाना जालौन के राजा हुए। 1806 में संधि के अनुसार कालपी जालौन के राज्य से निकलकर अंग्रेजों के अधीन आ गई। 1822 ई० में गोविन्दराव की मृत्यु हो गई। मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र बाजीराव जालौन के शासक बने। इनके काल में जालौन की प्रजा बड़ी सुखी थी। मराठों ने अंग्रेजों के इलाके में लूटपाट करने का निश्चय किया और झाँसी मार्ग पर पिण्डारियों को बसा रखा था। बाद में ये स्थान आज भी पिण्डारी गाँव से जाना जाता है। इनकी (बाजीराव) की कोई सन्तान नहीं थी। इनकी पत्नी लक्ष्मीबाई ने कम्पनी सरकार से अनुमति लेकर अपने छोटे भाई को गोद लेकर गोविन्द राव नाम से जालौन की गद्दी पर बैठाया राज्य के पुराने दीवान नारोभास्कर को लक्ष्मीबाई का हस्तक्षेप पसन्द नहीं था। आपस में वैमनस्य हो गया और नारोभास्कर की हत्या कर दी गयी। 1830 ई० में कम्पनी सरकार ने शासन में सुधार लाने के लिये जालौन राज्य का प्रबन्ध अपने हाथ में ले लिया तथा कैप्टेन डूलन को प्रशासक नियुक्त कर दिया।[131] कैप्टेन डूलन का बसाया मुहल्ला उरई डोलनगंज नाम का था और डूलन ने ही उरई अपने राज्य का मुख्यालय बनाया। 1840 में जनरल लार्ड आकलैण्ड ने जालौन राज्य का विलय अंग्रेजी राज्य में कर दिया। नाना गोविन्द राव की नातिन ताराबाई जालौन में ही रहती थी। यदि अंग्रेज चाहते तो ताराबाई के पुत्र को जालौन राज्य दिया जा सकता था परन्तु ऐसा न करके अंग्रेजों ने इनके परिवार के आश्रितों को 70 हजार रुपये पेंशन की व्यवस्था करके

सम्पूर्ण राज्य को हड़प लिया। ताराबाई को जालौन तथा हमीरपुर का मकान और 1000 रु0 प्रतिमाह का भत्ता गुजारा स्वीकार किया।

पुरातात्विक स्थिति :-

प्रागैतिहासिक काल का इतिहास लिखते समय इतिहास वक्ता पूरी तरह से उपलब्ध पुरातात्विक स्रोतों पर निर्भर रहता है, न केवल प्रागैतिहासिक के लिये वरन् पुरातात्विक स्रोत इतिहास के शुद्ध रूप को प्रस्तुत करने में सहायक होता है। ''प्राचीन इतिहास के ज्ञान के लिये पुरातात्विक प्रमाणों से बहुत सहायता मिलती है। ये साधन प्रमाणिक हैं तथा इनसे भारतीय इतिहास के अनेक अंध युगों पर प्रकाश पड़ता है। जहाँ साहित्यिक साक्ष्य मौन होते हैं वहाँ हमारी सहायता पुरातात्विक साक्ष्य करते हैं।''[132]

पुरातात्विक स्रोतों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्रोत शिलालेख ही हैं। इसके अतिरिक्त अभिलेख सिक्के, स्मारक भवन, मूर्तिकला, चित्रकला, मृदभाण्ड एवं पाण्डुलिपियाँ आदि उल्लेखनीय हैं।

१. अभिलेख :-

अभिलेखों को कई भागों में विभाजित किया जा सकता है जैसे सरकारी भूमि अनुदान पत्र, निजी अभिलेख, राजकवियों द्वारा लिखी गयी प्रशस्ति इत्यादि। भूमि अनुदान पर अधिकतर ताँबे की चादरों पर उत्कीर्ण होते हैं। निजी अभिलेख ज्यादातर मंदिरों या मूर्तियों पर उत्कीर्ण रहते हैं।

२. सिक्के :-

उपलब्ध सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र कहते हैं। प्राचीन भारत में आजकल की तरह कागज की मुद्रा का प्रचलन नहीं था वरन् धातुपत्र या

धातुमुद्रा का प्रचलन था। प्राचीन सिक्के ताँवे चाँदी सोने एवं शीशे के बनते थे।पकाई मिट्टी के साँचे बड़ी मात्रा में प्राप्त होते हैं।[133] पुरातात्विक सामग्री में सिक्कों का भी महत्वपूर्ण स्थान है। जिन सिक्कों पर कोई लेख नहीं होता था वे आहत सिक्के कहलाते हैं। सिक्कों की बनावट एवं प्रयुक्त धातु राज्य की अर्थव्यवस्था का संकेत देती है। अज्ञात सिक्कों के प्रकाश में आने पर हमारी जानकारी में वृद्धि होती है। वस्तुतः सिक्कों का इतिहास मानव का बुना हुआ है। इन्हीं के माध्यम से काल शासक एवं सामाजिक सभ्यता का भी ज्ञान प्राप्त होता है। सिक्कों पर प्रतीक अथवा प्रतिमा चिह्न पौराणिक एवं दार्शनिक स्थिति का आभास देते हैं।

३. स्मारक एवं भवन :—

इनके अन्तर्गत प्राचीन इमारतें मन्दिर मस्जिद दुर्ग तथा गढ़ी आदि आते हैं। इनसे विभिन्न युगों की सामाजिक धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का बोध होता है। इनके अध्ययन से भारतीय कला के विकास का ज्ञान प्राप्त होता है। स्मारकों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(१) धार्मिक भवन (मन्दिर, मस्जिद, समाधि आदि)

(२) धार्मिकेत्तर भवन (स्थापत्य दुर्ग एवं गढ़ियाँ)

मन्दिर निर्माण के विस्तृत सिद्धान्तों का विवेचन वृहत्संहिता, मानसार, समरांगड़ सूत्रधार अपराजित प्रिच्छा शिल्परत्न, रूप मण्डल, विश्व कर्म प्रकाश आदि अनेक ग्रंथों में किया गया है। भारत में स्थापत्य शास्त्र भी है और कला भी। एक ओर इस महादेश के दोनों पक्षों पर स्थापत्व की महनीय एवं अद्भुत कला कृतियों के महान निर्देशन फैले पड़े हैं और दूसरी ओर इस विषय के भारतीय साहित्य वेद वेदांग, इतिहास, पुराण, आगम एवं शिल्प शास्त्रीय या

वास्तु शास्त्रीय ग्रंथों का विवेचन है। प्रथम कलाकृतियाँ है दूसरे कला सिद्धान्त। दोनों के समन्वय के बिना भारतीय आत्मा की आत्मा का स्वरूप नहीं पहचाना जा सकता।[134]

मूर्ति कला :-

प्रतिमा का अर्थ है प्रतिरूप। मानव मस्तिष्क में अंकित आकृति को मूर्त रूप देना ही मूर्ति कला है। मूर्ति पूजा की परम्परा सिन्धु सभ्यता से प्रारम्भ हुई थी। सिन्धु हड़प्पा से प्राप्त मूर्तियाँ बताती है कि द्रविड़ सभ्यता में मूर्तिपूजा का प्रचलन था। कर्म एवं पुनर्जन्म के सिद्धान्त भी द्रविड़ों के थे और वे काष्ठ मृतिका एवं पत्थर की प्रतिमाएँ बनाते थे।[135]

गुप्त काल में मूर्ति पूजा विशेष रूप से लोकप्रिय हुई है। मूर्तिकला दो भागों में विभाजित की जा सकती है-

1) राज्याश्रित   2) लोकाश्रित

राज्याश्रित कला पर राज्य के विशेषाधिकार की छाप रहती है। इसी कारण कई बार इसमें एक रसता भी प्राप्त होती है जबकि लोक कला में व्यक्तिगत रुचि के कारण विभिन्न दृष्टिकोणों का विवेचन होता है।[136]

९. चित्रकला :-

पुरातात्विक स्रोतों के रूप में चित्रकला प्राचीनतम साक्ष्य है। जब मनुष्यों ने अपने हृदय के भावों को प्रकट करने के लिये किसी अन्य कला का सहारा नहीं लिया था तब के साक्ष्य भी उपलब्ध हो चुके हैं। चूँकि जीवन और कला का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है इसीलिये चित्रकला ने मनुष्य के तात्कालिक परिवेश को पूर्ण रूप से उकेरा। चित्रकला के प्राचीनतम चिह्न भीम बैठक की गुफाओं से प्राप्त होते हैं। इन 475 गुफाओं में न जाने कितने चित्र बने हुए हैं।

प्रागैतिहासिक मानव के ध्वंशावशेष के चित्र प्रागैतिहासिक जीवन के अध्ययन में हमारी बहुत अधिक मदद करते हैं।[137]

निःसन्देह सौन्दर्य को स्थायी बनाये रखने के प्रयत्नों ने ही चित्रकला को जन्म दिया होगा। वैदिककाल में स्वास्तिक कमल चक्र, पूर्णकुम्भ आदि प्रचलन में आये।[138] शैली विशेष के आधार पर चित्रकला को प्राचीन मुगल कालीन और आधुनिक युगीन कला के रूप में विभाजित किया गया है।

मृदभाण्ड :–

मिट्टी के बने बर्तन भी पुरातात्विक काल निर्धारण में सहायक होते है। मृदभाण्डों से संस्कृति के विकास क्रम पर भी पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। जैसे–गंगा जमुना दोआब में सबसे नीचे की सतह पर गेरुए रंग के मृदभाण्ड मिले हैं। उनके ऊपर की सतहों में मृदभाण्डों का क्रम यह है कि पहले काले और लाल मृद भाण्ड और फिर चित्रित धूसर मृदभाण्ड उसके बाद चमकदार काले मृदभाण्ड। ये क्रमशः सिन्धु घाटी, वैदिक काल तथा मौर्य काल को प्रदर्शित करते हैं।[139] आरम्भ में हाथ से बनाये गये मृदभाण्ड मिले है बाद में मिट्टी के बर्तन चाक पर बनने लगे।[140] इन मृदभाण्डों में धीरे–धीरे कलात्मक सुधार कला के विकास की ओर इंगित करता है।

पाण्डु लिपि :–

हस्तलिखित ग्रंथों को पाण्डुलिपि कहते हैं।[141] लेख आदि का पहला रूप जो काँट–छाँट या बढ़ाने–घटाने के लिये तैयार किया जाये।[142] वस्तुतः पाण्डु लिपि किसी भी कृति की प्रकाशन की पूर्व की अवस्था है जिसमें परिमार्जन और परिवर्धन की पर्याप्त गुंजाइश रहती है अपितु यह कहना चाहिये कि पाण्डुलिपि का उद्देश्य होता है कि कृति में किसी प्रकार की कोई

कमी न रह जाये। आज के सन्दर्भ में यही परिभाषा अत्यधिक समीचीन प्रतीत होती है।

समूचा बुन्देलखण्ड पुरातत्व एवं ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध क्षेत्र है। बुन्देलखण्ड का अत्यन्त महत्वपूर्ण जनपद जालौन भी अकूत पुरा सम्पदाओं से भरपूर है। पुरावशेषों के माध्यम से इतिहास के काल निर्धारण तथा तत्कालीन समाज की व्यवस्थाओं पर प्रकाश डाला जा सकता है और निश्चित रूप से किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है।[143]

प्रागैतिहासिक तो नहीं लेकिन जनपद के मुख्यालय उरई से कुछ ताम्र उपकरण प्राप्त हुए हैं।मकान की खुदाई के साथ ताम्र उपकरण एवं ताम्र पिण्ड प्राप्त हुआ है। ताम्र उपकरणों में दो हैण्डैक्स व एक पहिया नुमा गोल आकृति प्राप्त हुई।[144] जनपद में विभिन्न स्थलों की खुदाई से लौह युगीन, ताम्र युगीन, कुषाणकालीन एवं अन्य काल खण्डों की पुरा सम्पदा प्राप्त हुई है। बेतवा के किनारे सागर के निकट ऐरण में ऐसे ही अवशेषों का रेडियो कार्बन विधि से काल निर्धारण ईसा से लगभग 1800 ई0 पूर्व माना गया है। बेतवा के किनारे बसे जनपद जालौन के अनेक नगरों का आकलन उसी काल का किया जा रहा है।[145]

कोंच के तहसील प्रांगण की खुदाई में प्राप्त लौह उपकरण कोलों की उपस्थिति का परिचय देते हैं क्योंकि लोहे के प्रयोग का समुचित ज्ञान कोलों को ही था। हाल ही में कालपी में की गई खुदाई में 45 हजार वर्ष पुराने जीवाश्म तथा अस्थि हथियार प्राप्त हुए हैं। इनके विश्लेषण से इस क्षेत्र के इतिहास के कई अनुछुए अद्भुत और महत्वपूर्ण पहलू प्रकट होने की आशा है।[146] इनसे उन लोगों को मुँहतोड़ उत्तर दिया जा सकेगा जो कहते हैं इस

क्षेत्र का कोई इतिहास नहीं है।[147]

जनपद जालौन में कालपी के सदर बाजार स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर में तथा रामपुरा स्थित गढ़ी से प्राप्त शिलालेख में और पाहूलाल मन्दिर कालपी के शिलालेख में उनके निर्माताओं का नाम व काल दिया हुआ है। ये शिलालेख देव नागरी लिपि में है जबकि रोपड़ गुरु मन्दिर के दक्षिण द्वार के ऊपर लगा शिलालेख संस्कृत भाषा में है।

कालपी संग्रहालय में उपलब्ध प्राचीन मुद्राएँ चित्रकला प्राचीन मूर्तिकला तथा प्राचीन पात्र आदि के रूप में यहाँ पाण्डुलिपियों का अद्‌भुत संग्रह है। बुन्देलखण्ड संग्रहालय उरई में उपलब्ध ताम्र उपकरण सहस्रों प्रकार के सिक्के अनगिन पाण्डु लिपियों का भण्डार, चित्रकला का विविध रूप, मूर्तियों का अनुपम प्रकार एवं लोक संस्कृति से सम्बधित अनेकानेक वस्तुओं का संग्रह उल्लेखनीय है।

श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त के निजी संग्रहालय में भी बहुत सारी उल्लेखनीय वस्तुएँ संग्रहीत है। इनके यहाँ स्टैन्सिल, कटवर्क शैली के चित्रों का अनूठा संग्रह है। रागमाला और बारह मासा के लगभग दो सौ वर्ष पुराने बुन्देली शैली के पाण्डुलिपि, लघुचित्रों का संग्रह है। शताधिक पाण्डुलिपियाँ भी उपलब्ध हैं।

श्री पूरन लाल अग्रवाल के संग्रहालय में आहत मुद्राओं से लेकर आधुनिक काल तक के सिक्के उपलब्ध है। श्री के0के0गहोई के निजी संग्रहालय में प्राचीन सिक्कों के अतिरिक्त आयुर्वेद का प्रचुर ग्रंथ उल्लेखनीय है।

श्री राम लला मन्दिर कोंच के पाण्डुलिपि संग्रह में आज से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व प्राचीन भारतीय साहित्य एवं दुर्लभ संस्कृत ग्रंथों की सुन्दर

पाण्डुलिपियाँ कराकर उनका संग्रह कराया गया था। इसमें अभी भी सैकड़ों पाण्डुलिपियाँ एवं यंत्र आदि है।[148]

रामकृष्ण निरंजन के पिता श्री द्वारा स्थापित राम जानकी मन्दिर कलन्दर शाह की मजार उल्लेखनीय है। जालौन में द्वारिकाधीश मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर, करन खेरा मन्दिर, कन्जौसा में रामेश्वरम् पंचमुखी और उरई क्षेत्र के मन्दिरों में मन्दिर, लक्ष्मी नारायण, नृसिंह मन्दिर, अक्षरा मन्दिर, रामेश्वर मन्दिर, रामसीता मन्दिर, जामा मस्जिद, खौं खौं देवी, मंसिल माता, रामलला मन्दिर तथा रोपड़ गुरु कुकुरगाँव आदि उल्लेखनीय स्थल है।

जहाँ तक मूर्तियों का प्रश्न है इनके अन्तर्गत ब्राह्मण, जैन, बौद्ध तथा लौकिक सभी प्रकार की मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। सर्वाधिक प्रकार के गणेश, दुर्गा, शिव तथा विष्णु रूपों के प्राप्त होते है। विशेष मूर्तियों में सूर्य प्रतिमा, ब्रह्मा की प्रतिमा तथा नित्य गणेश की मूर्तियाँ उल्लेख्य हैं।

इस जनपद में सिक्कों में प्राचीन आहत मुद्राओं से लेकर श्रीनगर, कालपी, दतिया, मिन्ट मार्क से युक्त सिक्के भी प्राप्त होते हैं। कहीं–कहीं कुषाण काल, गुप्त काल तथा नागशासकों के सिक्के भी प्राप्त होते हैं।[149]

प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 रामस्वरूप खरे के अनुसार– इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि जनपद जालौन में प्रचुर परिमाण में पुरातात्विक सामग्री का अनूठा भंडार विद्यमान हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि सच्चे खोजी आयें और पूरी ईमानदारी से इस सामग्री का सर्वेक्षण और पर्यवेक्षण करें तो भविष्यमें अनेक अनुद्घाटित तथ्य उजागर होंगे, इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है।[150]

ङ) जनपद जालौन की साहित्यिक स्थिति :—

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के अनुसार ''साहित्य समाज का दर्पण होता है।'' जैसा समाज होगा वैसा ही साहित्य रूपी दर्पण उनके अक्स को प्रतिबिम्बित करेगा। समाज में लोगों का रहन—सहन, खान—पान, रीति रिवाज, बोली एवं उसकी संस्कृति इन सबके मिश्रण से साहित्य का प्रादुर्भाव होता है।

सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड में पश्चिमी हिन्दी से प्रादुर्भाव 'बुन्देली' का व्यवहार दृष्टि गोचर होता है। इसके विकास का क्रम इस प्रकार है:—
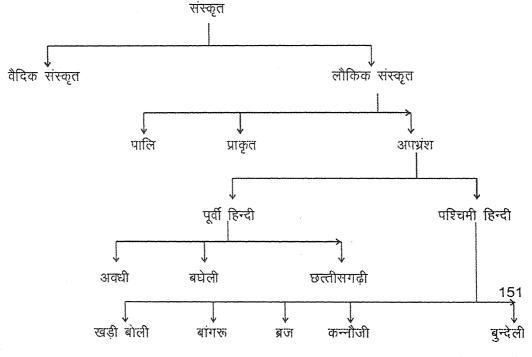
जालौन जनपद झाँसी जनपद के उत्तर में स्थित है। इसकी पूर्वी सीमा पर निभट्टा एवं लोधन्ती बोलियाँ प्रचलित है। शेष भाग में प्रामाणिक बुन्देली का प्रभाव है। मध्य जालौन में ऐ. औ. की अपेक्षा ए एवं ओ का प्रयोग होता है।[152]

पश्चिमी जालौन में मुख्य अन्तर उच्चारण के विवृत होने में है। ए. तथा ओ का ऐ एवं औ को कर्म सम्प्रदान के चिह्न स्वरूप में को, कौं, कौ,

हौ चल्यौ, गअउ, करौ तथा बड़ों का प्रयोग होता है। सर्वनामों में वह तथा यह क्रमशः बअ् एवं न्यअ् हो जाते हैं।[153] अन्यत्र डॉ0 ग्रियर्सन ने प्राचीन एवं सांस्कृतिक बुन्देलखण्ड को दक्षिणी सीमा नर्वदा नदी तक मानी है।[154] **सुप्रसिद्ध भाषाविद्** [155] **का मन्तव्य भी यहाँ दृष्टय है–**

"बुन्देली बुन्देलखण्ड की बोली है। शुद्ध रूप में यह झाँसी, जालौन, हमीरपुर, ग्वालियर, ओरछा, सागर, भोपाल, नरसिंहपुर सेवनी तथा होशंगाबाद में बोली जाती है। इसके कई मिश्रित रूप दतिया, पन्ना, चरखारी, दमोह, बालाघाट तथा छिदवाड़ा के कुछ भागों में पाये जाते हैं।"

इसके बोलने वालों की संख्या लगभग 80 लाख है। यह ओंकार बहुला है। मूल बुन्देलखण्डी में अब काव्य सर्जना की जा रही है। इसका लोक साहित्य यत्र–तत्र विपुल राशि में अपने उद्धार की प्रतीक्षा कर रहा है। **गद्य का एक उदाहरण दृष्टव्य है–**" एक गाँव में माते की छीर के ढिंगा एक गरीब किसान की खेती ठाँड़ी ती। ताखौं लख कै माते बोलो कि काये रे, हमाई खेती,अपने ढोरन सौं चरा लयी, तो खौं देख नयीं परत कै हम रखवारी कर रए।"[156]

केशव कृत रामचन्द्रिका एवं लाल कृत 'छत्र प्रकाश' में ब्रज के साथ–साथ बुन्देली के शब्द प्रचुर परिमाण में प्रयुक्त हुए हैं। सम्प्रति शोधार्थी इसके स्वरूप उद्भव और विकास में संलग्न हैं। बुन्देली का फाग साहित्य लोक कथाएँ, लोकोक्तियाँ आदि प्रभूत मात्रा में उपलब्ध है। ईसुरी का नाम बुन्देली कवियों में मूर्धन्य है।[157] इसके अतिरिक्त पँवारी, राठौरा, खटोला, बनाफरी, कुण्डरी, निभट्टा, भदावरी (तोवर गढ़ी) लोधी छिंदवाड़ी कोष्ठी कुम्भार तथा नागपुरी इसकी अन्य उप बोलियाँ है। बुन्देली का व्याकरण प्रमाणिक एवं समृद्ध है। हिन्दी भाषा के समान इसमें भी आठ कारक होते है।

जिन्हे संस्कृत में विभक्ति कहते हैं। इसकी परिभाषा है– संज्ञा व सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया व दूसरे शब्द के साथ सूचित किया जाता है। उसे कारक कहते हैं। इसके साथ जो अक्षर अर्थात् चिह्न लगाया जाता है उसे विभक्ति कहते हैं।[158] बुन्देली काव्य की कुछ पंक्तियों का रसास्वादन यहाँ अनुपयुक्त न होगाः–

व्यास कहै जिन बँबई सूरत, औध लई बिन ओध करे की।

हाँसी नहीं पर साँची कहौ, यह झाँसी भई उन्हैं फाँसी गरे की।।

घासीराम व्यास

ओजू हमें लगत है प्यारौ, कंचन आँग तुमारौ।

बिन सिंगारे दमकत ऐसे, चिलकत जैसे पारौ।।[159]

ईसुरी की फागें बुन्देली साहित्य में सर्वाधिक प्रसिद्ध है। एक उदाहरण दृष्टव्य है–

करके नेह टोर जिन दइयो,

दिन–दिन और बढ़इयौ।

जैसे मिलै दूध में पानी,

ऊसई मनै मिलइयो।[160]

जहाँ तक बुन्देली साहित्य के विवेचन का प्रश्न है उसमें बुन्देली काव्य मुहावरे, लोकगीत संस्कार गीत इत्यादि का ही समावेश किया जाता है। यत्र–तत्र लोक काव्यात्मक गाथाएँ भी मिलती है जो हमें चम्पू काव्य का स्मरण दिलाती हैं। बुन्देली काव्य साहित्य को हम क्रमशः प्राचीन मध्य एवं आधुनिक काल में विभाजित कर सकते हैं।

"प्राचीन काल के सुप्रसिद्ध कवियों में जगनिक विष्णुदास, केशवदास,

गोरेलाल, पद्माकर, ठाकुर, बोधा, अग्रदास, अक्षर अनन्य, हरिसेवक मिश्र मदनेश, बख्शी हरवंश, ब्रज एवं बिहारी लाल प्रमुख हैं।

मध्यकाल के कवियों में बलभद्र मिश्र, गोविन्द स्वामी, हरीराम शुक्ल, गदाधर भट्ट, प्रवीण राय, कृपाराम तथा प्राणनाथ आदि प्रमुख हैं।

आधुनिक काल के प्रमुख कवियों में जानकी प्रसाद द्विवेदी, शिवप्रसाद चतुर्वेदी, रामचन्द्र भार्गव, हरिप्रसाद हरि, लोकनाथ द्विवेदी, सन्त बृजेश, रामचरण ह्यारण मित्र, सुधाकर शुक्ल, ज्वालाप्रसाद ज्योत्सी, अवधेश, सन्तोष सिंह, बाबूलाल, माधौ शुक्ल मनोज, दुर्गेश दीक्षित, शिवानन्द, नीरज जैन तथा कोमल चन्द कल्याण आदि प्रमुख हैं।''[161]

गाँव में परस्पर बातचीत के लिये मुहावरों का प्रयोग करते हैं। मुहावरे का अर्थ होता है परस्पर बातचीत का सवाल जबाव के माध्यम से हिन्दी में लक्षणा एवं व्यंजना द्वारा सिद्ध वाक्य को मुहावरा कहते हैं :– संसार में मनुष्य ने अपने लोक व्यवहार में जिन– जिन वस्तु और विचारों को बड़े कौतूहल से देखा है, समझा है तथा बार बार उनका अनुभव किया है। उनको अपने शब्दों में बाँध लिया है, वे ही मुहावरे कहलाते हैं।[162] बुन्देल खण्डी मुहावरों में सामाजिक प्रथाओं एवं विभिन्न संस्कारों का उल्लेख पाया जाता है जैसे– शिष्यत्व ग्रहण करने के लिये 'कंठी लेना'' भक्ष्याभक्ष्य ग्रहण करने वाले को ' ''वह तो साओ आदमी खौं लील जैहै।'' इसी प्रकार स्त्रियाँ कोसते समय प्रायः ''तेरौ तीसरो होई;; तेरी ठठरी बँधे'' राख भये आदि मुहावरों का प्रयोग करती हैं।163

स्थान–स्थान पर भ्रमण करने से संचार के कटु एवं मधुर अनुभव ऐसे व्यक्तियों को हुआ करते है जो सदैव पर्यटन करते हैं। यही अनुभव काव्य पंक्तियों में उतरकर कहावतों एवं लोकोक्तियों का रूप धारण कर लेती है।× × ×।[164]

ही नगरों में गये हैं, वहाँ जनमें नहीं। अतः इन गीतों को ग्राम गीत कहना उचित है।[172] इसके विपरीत डॉ0 सत्येन्द्र श्रीराम, इकबाल सिंह, राकेश, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ0 कृष्ण देव उपाध्याय, कृष्णानन्द गुप्त, देवेन्द्र सत्यार्थी, प्रभूति विद्वान इन्हें लोकगीत कहते हैं। इनके अनुसार :— ग्राम गीत केवल ग्रामों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं और लोकगीत ग्रामों तथा नगरों दोनों का। अतएव लोकगीत को ग्राम गीत कहकर उसके अस्तित्व को सीमित संकुचित नही बनाया जा सकता है।[173]लोकगीत प्रकृत काव्य है वह लोक हृदय की सरल स्वाभाविक एवं संगीतमय अभिव्यक्ति है।[174]

शास्त्रीय संगीत की विशेष परवाह न करके सामान्य लोक व्यवहार में उपयोग में लाने के लिये मानव अपने आनन्द तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज रूप में उद्‌यत करता है वही लोकगीत है।'[175] लोक गीत हृदय के खेत से उगते हैं। सुख के गीत अमंगल के जोर से जन्म लेते हैं और दुख के गीत तो खौलते हुए लहू से पनपते हैं और आँसुओं के साथी बनते हैं।[176] उनकी धुन और कथ्य दोनों ही में लचीला पन होता है। समयानुकूल परिवर्तन उनमें ही हो सकता है और होता है।[177]

लोक गीतों में लोक मानस की करुणापूर्ण एवं मधुरतम् अनुभूतियाँ सहज रूप में अभिव्यक्त होती हैं। बुन्देली लोक गीतों में भी ऐसी ही सहजता, सरसता और माधुर्य विद्यमान है।[178]

बुन्देली लोक गीतों के वर्गीकरण में विभिन्न विद्वानों का योगदान अविस्मरणीय है। इनमें से किसी ने उन्तीस[179]शीर्षकों में विभाजित किया, किसी ने पन्द्रह[180]प्रकारों में विभाजित किया, किसी ने आठ[181] वर्ग में विभाजित किया तो किसी ने ग्यारह[182]विभागों में विभाजित किया है।

जनपद जालौन के लोक गीतों में यहाँ के निवासियों का जीवन दर्शन यत्र–तत्र सुलभ हो जाता है। वे मानव जन्म को अमूल्य मानते हैं। परमात्मा को छोड़कर यह जीव सांसारिक विपत्तियों में मारा–मारा फिरता है। यथा–

'हंसा फिरत विपत के मारे, अपने देश दिनारे।'

काल का सर्वत्र राज्य है उससे कोई बच नहीं सकता है। हाँ सुकर्मो के द्वारा ही सद्गति प्राप्त की जा सकती है। कैसी सुन्दर अभिव्यक्ति है इस लोक गीत में :–

बचत बनै ता बचौ ईसुरी,
तानें काल कमानें।

लोक कवि तृष्णा को माया का रूप मानता है। इसके प्रेम पाश में फँसकर ही जीव चौरासी लाख यौनियों में भटकता फिरता है। प्रायश्चित और प्रबोध की कैसी सुन्दर झाँकी बन पड़ी है–

तिसना के भरकन में चर कें,
जौ जी कितउ बिलखत रै है।
पर चौरासी जोनन में इत–उत,
जौ जियरा तरसत रै है।

इस संसार को लोक कवि ईसुरी ने भाड़े की बखरी अर्थात् किराये का मकान माना है–

रैयत बखरी है भारे की,
बिना कुची तारे की।

जहाँ तक ब्रह्म के स्वरूप का प्रश्न है वहाँ इस जनपद का निवासी तथा कवि समुदाय ''एकोऽम बहुस्यामः'' की भावना से प्रेरित है वह अनेकता

में एकता के भाव को स्वीकार करता है। यही कारण है कि इस जनपद में विभिन्न देवी–देवताओं की अर्चना की जाती है। चाहे शिव हों, राम हों, विष्णु हों, लक्ष्मी, उमा, ब्रह्माणी अथवा छोटी या बडी माता हों इस सब में एक मातृ ब्रह्म की परा शक्ति और अंश विद्‌यमान है। घटौरिया, नट बाबा, मसान, पीरबाबा, भुइयाँ बाबा, भैरव बाबा, हरदौल, कारसदेव, मरही देवी, शीतला देवी, प्रभृति यहाँ के अन्य देवी देवता भी मान्य है। प्रायः ग्राम एवं नगरों से दूर हनुमान मन्दिर है। प्रति मंगल को यहाँ पहुँच कर यहाँ के निवासी भक्ति भावना का नैवेद्य अर्पित करते हैं।[183]

जनपद जालौन की साहित्यिक परम्परा आदि काल से ही समृद्ध है। व्यास, बाल्मीकि के पश्चात कालपी से श्रीपति जी 17वी शताब्दीं में हुए थे। जिनका प्रभाव रीतिकाल के प्रमुख आचार्य भिखारीदास पर भी पड़ा था। इसके अतिरिक्त कालपी के रसिकेन्द्र जी प्रसिद्ध निबन्धकार बृजमोहन वर्मा और साहित्य चेता कृष्ण बल्देव वर्मा का भी महत्व कम नहीं है। उरई में हनुमत्पताका और गंगागुण मंजरी के प्रसिद्ध कवि कालीदत्त नागर, स्व0 विमला सक्सेना, सूर्य प्रकाश दीक्षित, बेनीमाधव तिवारी, मणीन्द्र प्रसिद्ध कवि रहे हैं। कोंच में दयाल जी, स्व0 फणीन्द्र जी, स्व0 अशंकजी, मन्नूलाल चौधरी, मोहन लाल दाऊ आदि काल के कवि चंदवरदायी तथा रीतिकाल के कवि पजनेश का भी सम्बन्ध कोंच से है। जालौन के कवियों में स्व0 डॉ0 आनन्द, स्व0 कन्हैया लाल मिश्र 'कमलेश' मातादीन पुरवार, जयगोविन्द तिवारी 'रत्नाकर' हुल्लड़ कवि कुल्लड़ और स्व0 श्री लक्ष्मीनारायण मित्तल प्रसिद्ध कवि हैं। बुन्देलखण्ड की इस परम्परा में घासीराम व्यास, मुंशी अजमेरी, सियाराम शरण गुप्त, घनश्याम दास पाण्डे जाज्वल्यमान रत्न थे। यह भूमि

रत्न गर्भा है लेकिन यहाँ की परम्परा के प्रदेश को आज सार–सम्हार की आवश्यकता है। यहाँ के कवियों की अप्रकाशित रचनाओं के प्रकाशन दिन'दिन क्षीण व क्षयग्रस्त होती ग्रामीण शब्दावली के रक्षण, मन्दिर में पड़ी हस्तलिखित पोथियों के विवरणों की सूचियाँ बनाने की आज महती आवश्यकता सर्वत्र अनुभूयमान हो रही है। सबसे बड़ी आवश्यकता है उरई, झाँसी, हमीरपुर से एक–एक मासिक और एक एक त्रैमासिक पत्रिकाओं के प्रकाशन द्वारा यहाँ की साहित्यिक परम्परा को संगठित करने की उसे विकसित करने की।[184]

जहाँ प्राचीन तथा मध्य युगीन कवियों की विशिष्ट काव्य परम्परा जालौन जनपद की रही है। वहाँ अधुनातन कवियों की भी एक सशक्त काव्य परम्परा विद्यमान है, इसमें प्राचीन एवं नवीन दोनों ही शैलियों में काव्य रचनाएँ हुई हैं।[185]

उल्लेख्य कवि स्व0 कालीदत्त नागर, स्व0 डॉ0 आनन्द राजाराम पाण्डेय, राधेश्याम योगी, हरिश्याम पारथ, सन्तोष सौनकिया 'नवरस' स्व0 डॉ0 शिवसहाय स्वामी 'आरण्यक' स्व0 शिवराम श्रीवास्तव 'मणीन्द्र', स्व0 पं0 बाबूराम गुबरेले, स्व0 रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव, ब्रह्मानन्द मीत, शिवानन्द बुन्देला, रामस्वरूप सिन्दूर, स्व0 शारदा प्रसाद उदैनिया 'मनोज', स्व0 बालकृष्ण शर्मा 'विकास', राधेश्याम दाँतरे, हरनारायण 'विद्रोही' विकल, रवीन्द्र शर्मा, पं0 राममोहन शर्मा, परमात्मा शरण 'गीतेश', योगेश्वरी प्रसाद 'अलि', यज्ञदत्त त्रिपाठी, स्व0 रामबाबू अग्रवाल, स्व0 रागी, कुसुमाकर प्रभृति। **युग कवि एवं प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ0 रामस्वरूप खरे के शब्दों में**– "कितने ही काव्य वाटिका में खिले हुए कवि प्रसून जिनकी अपनी सुरभि अलग–अलग है। प्रत्येक का आकर्षण एवं सौन्दर्य भी पृथक–पृथक। इसमें से अनेक कवियों की ऐसी सशक्त रचनाएँ हैं जिन पर पृथक–पृथक शोध अपेक्षित हैं।[186]

1. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 3
2. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 6
3. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 6
4. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 6
5. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 6
6. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 9
7. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन
8. पैना–बांस की छड़ी में एक छोटी तथा पतली नोक वाली कील लगा ली जाती है।
9. ये बुजुर्ग मेरे फूफा है जिनका जन्मस्थान निवास स्थाना कोहना है जो कालपी तहसील के अन्तर्गत आता है। साक्षात्कार का दिनांक 23/10/2003
10. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 98
11. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 98
12. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 8
13. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 165
14. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 10
15. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 10
16. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 10
17. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 10
18. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 11
19. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 12
20. हर्षिता भूगोल जिला जालौन लेखक– डॉ0 बी0 शर्मा पृ0 सं0– 12

21. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 165

22. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 165

23. जिलाधिकारी कार्यालय में पट्टिका पर अंकित नाम

24. श्री ब्रजकिशोर यादव (पुलिस कांस्टेबल) से साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी तिथि 10/06/04

25. श्री ब्रजकिशोर यादव (पुलिस कांस्टेबल) से साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी
तिथि 10/06/04

26. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 157

27. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 140

28. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 139

29. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 139

30. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 139

31. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 139

32. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 139

33. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ०प्र० जनपद जालौन पृष्ठ सं० 140

34. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 98
35. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 98
36. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 98
37. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 99
38. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 99
39. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 147
40. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 147
41. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 150
42. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 150
43. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 150
44. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 150
45. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 151
46. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0

जनपद जालौन पृष्ठ सं0 143

47. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 143
48. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 143
49. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 143
50. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 143
51. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 145
52. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 160
53. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 160
54. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 128
55. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 128 व 129
56. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 129
57. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 130
58. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 104

59. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 104

60. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 104

61. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 105

62. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 105

63. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 105

64. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 105

65. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 106

66. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 106

67. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 106

68. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 124

69. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 124

70. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृष्ठ सं0 124

71. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प्र0

जनपद जालौन पृष्ठ सं0 162

72. हर्षिता भूगोल लेखक डॉ0 बी.शर्मा पृ0 सं0 13

73. विशेष घूमकर जाकर संकलन किया।

74 इतिहास एवं पुरातत्व को जनपद जालौन की देन, कु0 अपर्णा खरे के अप्रकाशित शोध ाग्रंथ की संक्षिप्तका से उद्घृत पृ0 सं01

75. स्मारिका, भारतीय इतिहास संकलन समिति उ0प्र0 (1982) 'इतिहास बदलना है' शोध लेखक सम्पादक– ठाकुरप्रसाद वर्मा लेखक वी.एस.वकड़कर पृ0सं01

76 मजूमदार एवं कुशलाकर, प्रथम भाग पृ0 , सं0 277

77. आदि भारत प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप पृ0 सं0 126

77. आदि भारत प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप पृ0 सं0 126

78. आदि भारत प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप पृ0 सं0 126

79. आदि भारत प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप पृ0 सं0 126

80. आदि भारत प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप पृ0 सं0 126

8.1 बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास पं0 गोरेलाल तिवारी, पृ0 सं0 4

82. मजूमदार और कुशलाकर प्रथम भाग प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप भाग 2 पृ0 सं0 32

83. मजूमदार और कुशलाकर प्रथम भाग प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप भाग 2 पृ0 सं0 185

84 एन्सीएन्ट इण्डिया, आर.सी. मजूमदार, पृ0 सं0 106

85. कल्चर हिस्ट्री ऑफ बुन्देलखण्ड, एम.एल.निगम, पृ0 सं0 26

86. आदि भारत प्रो0 अर्जुन चौबे, कश्यप पृ0सं0 273

87 पृ0 सं0 473

88 मजूमदार और कुशलाकर भाग–3, पृ0 सं0 8

89 बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास– पं0 गोरेलाल तिवारी, पृ0 सं0 64

90 बुन्देलखण्ड का इतिहास पं0 चतुर्भुज शर्मा, पृ0सं0 64

91. जिला गजेटियर हमीरपुर, बलबन्त सिंह पृ0 सं0 24

92. ब्रोकमेन पृ0 सं0 115

93. हिस्ट्री ऑफ चन्देल राज एन.एस.बोस, पृ0 सं0 32

94. हिस्ट्री ऑफ चन्देल राज एन.एस.बोस, पृ0 सं0 173

95 मजूमदार और कुशलाकर भाग 4 पृ0 सं0 82

96 द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग–3 कर्नल वेलेजली हेम पृ0 सं0 507

97. दिल्ली सल्तनत (799–1526) डॉ0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव पृ0 सं0 59

98. चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास डॉ0 अयोध्याप्रसाद पाण्डेय, पृ0सं0 104

99. इतिहास एवं पुरातत्व को जनपद जालौन की देन–कु0 अपर्णा खरे, अप्रकाशित शोध ग्रंथ, पृ0 सं0 60

100. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृ0सं0 1 व 2

101. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृ0सं0 2

102. जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–2002 सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ0प्र0 जनपद जालौन पृ0सं0 2

103 अंधकार युगीन भारत काशीप्रसाद जायसवाल अनु, रामचन्द्र वर्मा पृ0 सं0 76

104 अंधकार युगीन भारत काशीप्रसाद जायसवाल अनु, रामचन्द्र वर्मा पृ0 सं0 77

105 इतिहास व पुरातत्व को जालौन जनपद की देन–अपर्णा खरे अप्रकाशित शोध ग्रंथ पृ0 सं0 61

106 लोक आल्हा गायक स्व0 धनीराम श्रीवास इटैलिया (बाजा) हमीरपुर से साक्षात्कार द्वारा दिनांक 15/09/1995

107 फाइनल रिपोर्ट ऑफ सैटिलमैन्ट अपरगना कालपी पी.जें. व्हाइट पृ0सं0 41

108 बुन्देलखण्ड का पुरातत्व डॉ0 एस0डी0 त्रिवेदी पृ0 सं0 16–17

109 चन्देल कालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास, डॉ0 अयोध्या प्रसाद, पृ0 सं0 96

110 चन्देल आज और जैजात भुक्ति, ले0 आर0 के0 दीक्षित पृ0 सं0 145

111 जिला गजेटियर हमीरपुर, ले0 बलवन्त सिंह पृ0 सं0 266

112. मेडिवल इंडिया अण्डर मोहम्मडन रूल– स्टेनलीपूल, पृ0सं0 51

113. कला और कलम, डॉ0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ0सं0 31

114 प्राचीन भारत का इतिहास, श्री माली और झा पृ0सं0 19

115 प्राचीन भारत, ले0 रामशरण अग्रवाल, पृ0 सं0 44

116 द स्टूडैन्ट इंगलिश डिक्शनरी, पृ0सं0 440

117 जनपद जालौन के मध्यकालीन प्रमुख भवनों का ऐतिहासिक मूल्यांकन डॉ0 हरीमोहन पुरवार के अप्रकाशित शोधग्रंथ, पृ0सं0 246

118 सारस्वत वार्षिक पत्रिका जनपद जालौन विशेषांक सम्पादक–अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' पृ0 सं0 3

119 सारस्वत वार्षिक पत्रिका जनपद जालौन विशेषांक सम्पादक अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' पृ0 सं0 38

120. एचिन्सन, पृष्ठ सं0 541

121. द माथिर–उल–उमरा प्रथम भाग एच0 बेवरिच, पृ0सं0 82

122. आइन–ए–अकबरी लेखक अबुल फ़जल संशोधित अनुवाद यदुनाथ सरकार भाग–3, 1989, पृ0सं0 104

123. आइन–ए–अकबरी लेखक अबुल फ़जल संशोधित अनुवाद युदनाथ सरकार भाग–3, 1989, पृ0सं0 199

124 आइन–ए–अकबरी लेखक अबुल फ़जल संशोधित अनुवाद युदनाथ सरकार भाग–3, 1989, पृ0सं0 57

125. द माथिर–उल–उमरा–एच0 बेवरिच पृ0सं0 57

126 अकबरी दरबार, रामचन्द्र वर्मा पृ0सं0 117

127 जिला गजेटियर हमीरपुर, बलन्तसिंह, पृ0सं0 288

128 बुन्देलखण्ड केशरी, महाराज छत्रसाल बुन्देला, डॉ0 भगवान दास गुप्ता, पृ0 सं0 36

129. पेशवा बाजीराव एण्ड मराठा एक्पैंशन वि0जी0 दिघे, पृ0सं0 103

130. मराठों का नवीन इतिहास द्वितीय भाग संस्करण 1972, लेखक जी.एस. सरदेसाई,

पृ0सं0 221

131 मराठों का नवीन इतिहास द्वितीय भाग संस्करण 1972, लेखक जी.एस. सरदेसाई, पृ0सं0 221

132 प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति के.सी.श्रीवास्तव, पृ0सं0 13

133. प्राचीन भारत, रामशरण अग्रवाल, पृ0सं0 23

134. भारतीय स्थापित्य डॉ0 द्विजेन्द्र नारायण शुक्ल, पृ0सं0 36

135. विष्णुपुराण की भूमिका, एच.एच.विल्सन, पृ0सं0 2

136. जनपद जालौन के मध्य कालीन प्रमुख भवनों का ऐतिहासिक मूल्यांकन अप्रकाशित शोध ग्रंथ, हरीमोहन पुरवार, पृ0सं0 246

137. 'धर्मयुग' सम्पादक डॉ. धर्मवीर भारती सितम्बर 1973 ई. पृ0सं09

138. कला और कलम डॉ0 गिरिराज किशोर अग्रवाल, पृ0सं0 31

139. प्राचीन भारत का इतिहास, श्री माली और झा, पृ0सं0 19

140. प्राचीन भारत, रामशरण अग्रवाल, पृ0सं0 44

141. हिन्दी शब्द सागर, पृ0सं0 124

142. समथिंग रिटन बाई हैण्ड, दा स्टूडैन्ट डिक्शनरी, पृ0 सं0 440

143. इतिहास एवं पुरातत्व को जनपद जालौन की देन अप्रकाशित शोधग्रंथ कु0 अपर्णा खरे, पृ0सं0 138

144. जनपद जालौन के प्रमुख भवनो का मूल्यांकन, डॉ0 हरीमोहन पुरवार, पृ0सं0 246

145 सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) जनपद–जालौन सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त, 'कुमुद' पृ0सं0 3

146 इतिहास एवं पुरातत्व को जनपद जालौन की देन (अप्रकाशित शोधग्रंथ) कु0 अपर्णा खरे, पृ0सं0 140

147. 1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम और जनपद जालौन, डॉ0 डी.के. सिंह, पृ0सं0 1

148 इतिहास एवं पुरातत्व को जनपद जालौन की देन (अप्रकाशित शोध ग्रंथ) कु0 अपर्णा खरे, पृ0 सं0 141

149 इतिहास एवं पुरातत्व को जनपद जालौन की देन (अप्रकाशित शोध ग्रंथ) कु0 अपर्णा खरे, पृ0 सं0 143

150. बुन्देलखण्ड संग्रहालय उरई में दिये गये संगोष्ठी के कुछ अंश, दिनांक 3.12.1999

151. भाषा विज्ञान, डॉ0 रामस्वरूप खरे प्रथम संस्करण 1985 पृ0 सं0 125

152. भाषा का सर्वेक्षण खण्ड नौ, डॉ0 ग्रियर्सन, पृ0सं0 227

153 . भाषा का सर्वेक्षण खण्ड नौ, डॉ0 ग्रियर्सन, पृ0सं0 227

154 . भाषा का सर्वेक्षण खण्ड नौ, डॉ0 ग्रियर्सन, पृ0सं0 86

155 हिन्दी भाषा का इतिहास, डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा, पृ0 सं0 66

156. भाषा विज्ञान, डॉ0 रामस्वरूप खरे प्रथम संस्करण 1985 पृ0 सं0 128

157. हिन्दी भाषा का परिचयात्मक ज्ञान प्रथम संस्करण 1973, डॉ0 रामस्वरूप खरे, पृ0सं0 29

158. संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण पं0 कामताप्रसाद गुरु, पृसं099

159. बुन्देली काव्य परम्परा द्वितीय, डॉ0 बलभद्र तिवारी, पृ0सं0 205

160 ईसुरी प्रकाश सम्पादक गौरीशंकर द्विवेदी पृ0सं0 58

161 जनपद जालौन के वर्तमान कवि अप्रकाशित रचना, पृ0सं0 32,33

162. त्रिवथागा अंक (मार्च 1965) पं0 रामनरेश त्रिपाठी, पृ0सं0 30

163 जनपद जालौन के वर्तमान कवि अप्रकाशित रचना पृ0 सं0 34

164 राजस्थानी कहावतें भूमिका भाग, डॉ0 सुनीत कुमार चटर्जी

165. राजस्थानी लोकोक्ति संग्रह भूमिका, डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल

166. बुन्देली कहावत कोश सम्पादक कृष्णानन्द गुप्त, पृं0सं0 9

167. कविता कौमुदी पंचम भाग, रामनरेश त्रिपाठी, पृ0सं0 9

168. राजस्थानी लोकगीत, सूर्य किरण पारीक, पृ0सं0 85

169 हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ0सं0 600

170 अवधी ग्राम साहित्य, द्वितीय अध्याय, डॉ0 कृष्ण किशोर मिश्र

171 माधुरी महादेव लाल बरगाह, अंक अप्रैल 1942, पृ0सं0 314

172. हिन्दी लोक साहित्य प्रथम खण्ड, डॉ0 गणेशदत्त सारस्वत पृ0सं0 28

173 लोक साहित्य की भूमिका, श्री सत्यव्रत अवस्थी पृ0सं0 114

174 छत्तीस गढ़ी लोक गीतों का परिचय, श्यामाचरण दुबे भूमिका भाग, पृ0सं0 4 व 5

175 एस्ट्रडी ऑफ ओरीजन होक्लोर श्री कुंज बिहारी दास, पृ0 सं01

176. धरती गाती है, देवेन्द्र सत्यार्थी पृ0सं0 117

177 स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑफ फोक लोर भाइथालोजी एण्ड लीजैण्ड भाग–दो, पृ0सं0 1037

178 बुन्देली लोक गीत संगोष्ठी, अभिनव साहित्य परिषद, उरई में अध्यक्षीय भाषण का अंश दिनांक 14 सितम्बर 1985, डॉ0 रामस्वरूप खरे।

179 हमारा ग्राम साहित्य पं0 रामनरेश त्रिपाठी, पृ0सं0 1,2,3

180 बुन्देली लोकगीत भूमिका, ख, ग

181. बुन्देली लोक साहित्य (हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास भाग 16) में कृष्णानन्द के लेख से उद्घृत पृ0सं0 335

182. बुन्देली लोक काव्य सम्पादक बलभद्र तिवारी, पृ0सं0 49

183. जालौन जनपद के वर्तमान कवि अप्रकाशित रचना, पृ0सं0 44

184. जालौन जनपद के वर्तमान कवि अप्रकाशित रचना, पृ0सं0 46

185. जालौन जनपद के वर्तमान कवि अप्रकाशित रचना, पृ0सं0 69

186. जालौन जनपद के वर्तमान कवि अप्रकाशित रचना, पृ0सं0 69

द्वितीय अध्याय

जनपद जालौन के दिवंगत साहित्यकार

महेशदास दुबे उपाख्य वीरबल ब्रह्म
श्रीपति मिश्र
रामरतन शर्मा 'रत्नेश'
कालीदत्त नागर
हरगोविन्द दयाल 'नश्तर'
द्वारिका प्रसाद 'रसिकेन्द्र'
मुंशी धनू सिंह 'वीरेन्द्र'
कालीचरण दीक्षित 'फणीन्द्र'
रामनाथ चतुर्वेदी 'विप्र'
डॉ० आनन्द
पं० चतुर्भुज शर्मा 'बापू'
दीनानाथ 'अशंक'
पं० मोहनलाल शाण्डिल्य
स्वामी शिवसहाय 'आरण्यक'
भगवती शरण सक्सेना
बालकृष्ण शर्मा 'विकास'
बाबूराम गुबरेले
रामबाबू अग्रवाल
भगीरथ सिंह 'साहित्याचार्य'
कृष्णदयाल सक्सेना 'निःस्पृह'
बल्लभ दीक्षित
श्यामसुन्दर गुप्त
डॉ० लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी'
शिवराम श्रीवास्तव 'मणीन्द्र'
आदर्श कुमार सक्सेना 'प्रहरी'
सन्तोष कुमार दीक्षित

मनुष्य का शरीर मरणधर्मी है। वह इस वसुन्धरा पर जन्म लेकर एक निश्चित अवधि तक जीवित रहकर विविध क्रियाकलाप करके इस संसार से हमेशा के लिये प्रयाण कर जाता है। श्रीमद् भगवतगीता में भी इसी प्रकार का भाव व्यक्त किया गया है जो इस क्षण भंगुर संसार में जन्म लेता है उसकी मृत्यु भी सुनिश्चित है। यथा–

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि।।[1]

एक रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से युगों–युगों तक जीवित रहता है और मनुष्य के मानस पटल पर छाकर एक छत्र राज्य करता है। रचना के माध्यम से उसकी भावनाएँ हमारा पथ प्रदर्शक बनकर हमारा मार्ग दर्शन कराती है। कबीर अपनी रचना के माध्यम से रूढ़ियों एवं पाखण्ड़ों से लड़ने की प्रेरणा देता है तो सूर श्रीकृष्ण के बाल सौन्दर्य एवं समस्त क्रीड़ाओं से ह्रदय को ओत–प्रोत कर देता है। वहीं तुलसीदास जी मानवता के प्रत्येक पक्ष को उद्घाटित करके मानव ह्रदय में प्रेरणा स्रोत की सरिता बहा देता है। जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' के माध्यम से बुद्धिपक्ष की अपेक्षा ह्रदय पक्ष को सर्वोपरि बताते हैं जो कि आज के भौतिकवादी युग के लिये सटीक प्रमाणित होता है। इस धरती पर न जाने कितने साहित्यकारों ने जन्म लिया और अपने साहित्य सृजन के माध्यम से इस संसार पट्टिका पर अपने जन्म लेने की सार्थकता को स्वर्णाक्षरों में अंकित कर गये।

जनपद जालौन की मिट्टी ने भी अनेक साहित्यकारों को जन्म दिया है। इस मिट्टी की महक उनकी कृतियों में विद्यमान है, जिनको पढ़कर हमारा तन–मन उन रचनाओं की मीठी सुगन्ध से सुवासित होता रहता हैं किन्तु दुर्भाग्य

की बात है कि अर्थाभाव के कारण अधिकांश साहित्यकारों की कृतियाँ प्रकाशित नही हो सकीं हैं। मेरे विचार से यदि उनकी कृतियों का प्रकाशन एवं प्रचार–प्रसार हुआ होता तो निश्चित रूप से वे साहित्यकारों की पंक्ति में आगे खड़े दिखायी देते। ये बड़े हर्ष की बात है कि कुछ साहित्यकार 'संकलन' निकालकर नये कवियों को इन संकलनों के माध्यम से उन्हें प्रकाश में लाने का श्लाघनीय कार्य कर रहे हैं। इन संकलनों के माध्यम से निश्चित रूप से प्रतिभावान साहित्यकार समालोचकों एवं विद्वानों की दृष्टि में आयेंगे। जिस प्रकार से प्रतिभा नष्ट होती जा रही है, वह प्रतिभा नष्ट होने से बच जायेगी। मेरा प्रयास है कि जनपद जालौन के दिवंगत एवं जीवित साहित्यकारों को अपने परिश्रम के द्वारा अपनी सामर्थ्य के अनुसार खोजकर (अनुसंधान कर) उन्हें मैं अपने शोध ग्रंथ में स्थान दूँ। चूँकि दिवंगत साहित्यकार आज हमारे बीच नहीं है लेकिन उनकी कृतियों के द्वारा जिन्होंने अपने विचार, अपनी भावनाओं को कैद कर रखा है, उन्हीं कृतियों के माध्यम से उनका मूल्यांकन करूँ। वैसे उन महान साहित्यकारों के मूल्यांकन की मेरी सामर्थ्य नहीं है फिर भी मैं अपने विवेक के अनुसार–अपने सामर्थ्य के द्वारा उनके विचारों को, उनके शब्दों को जिन साहित्यकारों ने एक–एक शब्द को माला के रूप में पिरोकर कविता, उपन्यास, कहानी आदि अनेक विधाओं की रचना करके, सदा के लिये अपनी इहि लीला समाप्त करके साहित्यकाश में नक्षत्र की भाँति दूर–बहुत दूर हमारी आँखों से ओझल हुए टिमटिमा रहे हैं। मैं इस शोध प्रबन्ध रूपी दूरबीन से उन देदीप्तमान नक्षत्रों की चमक दिखाने का प्रयास करूँगा।

जब मैंने महान आलोचक एवं हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का हिन्दी साहित्य का इतिहास पढ़ा तो मुझे आश्चर्य हुआ कि

एक व्यक्ति ने इतने अधिक साहित्यकारों की खोजबीन करके तथा उनकी कृतियों के माध्यम से वे जिस स्थान पर बैठने योग्य थे उन्हें वहीं बैठा दिया। आज भी वे साहित्यकार उसी स्थान पर विद्यमान (विराजमान) हैं। मेरे मन में भी एक भावना प्रबल हुई कि क्या मैं जनपद जालौन के साहित्यकारों की खोजबीन नहीं कर सकता हूँ। ये विचार मैंने आदरणीय गुरु जी युग कवि डॉ0 रामस्वरूप खरे साहब के सामने व्यक्त किये। गुरु जी बोले–''क्यों नही भई, आप में लगन और परिश्रम करने की क्षमता हो तो निश्चित रूप से यह कार्य हो सकता है।'' बस तभी से मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया था कि मैं जनपद जालौन के साहित्यकारों पर शोधकार्य करूँगा। मुझे गुरु जी का मार्ग दर्शन मिल रहा है, मैं अपने आपको धन्य मान रहा हूँ।

जालौन जनपद के कुछ प्रमुख दिवंगत साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है–

महेश दास दुबे उपाख्य वीरबल बृह्म

जनपद जालौन की साहित्य परम्परा में सर्वप्रथम नाम महेश दास दुबे उपाख्य वीरबल का आता है। ये कलम और तलवार दोनों के धनी थे। इनके चुटकले और हाजिर जवाबी वाले चुटकुले पूरे भारत में प्रसिद्ध हैं। किसी भी तरह के वार्तालाप या वाद विवाद में अपनी बात को सही सिद्ध करने के लिये वीरबल के चुटकुले ही प्रमाणिकता की मुहर लगाते हैं। उनके चुटकुले आज भी हर जगह सुने जा सकते हैं। अर्थात ये चुटकुले हमारी लोक संस्कृति के अंग बन गये हैं।

महेशदास दुबे उपाख्य वीरबल का जन्म सन् 1528 ई0 में कालपी में हुआ था।[2] इनके पिता का नाम श्री गंगादास एवं जाति बृह्मभट्ट है। विद्वानों

के अनुसार बृह्मभट्ट से भट्ट निकाल कर बृह्म रखा गया। ये अपनी प्रतिभा एवं प्रत्युत्पन्नमति के कारण अकबर के दरबार में पहुँचे और उनके नवरत्नों में सम्मिलित होकर यश और सम्मान प्राप्त किया। ये मुगल सम्राट अकबर के मंत्री भी थे।

विद्वानों के अनुसार इनकी कोई रचना ग्रंथाकार नहीं मिलती है। स्फुट छन्द लगभग 200 मिले हैं जिनका विषय भक्ति और उपदेश है। कृष्ण की बाल लीला एवं मान छन्द भी हैं। दरबारी परम्परा के प्रभाव स्वरूप उनके छन्दों में रूप सौन्दर्य और नायिकाओं के विभिन्न चित्र हैं। अलंकार योजना में उन्होंने नये–नये उपमानों का प्रयोग किया है। इसीलिये कहा जाता है–

उत्तम पद कवि गंग के, उपमा में बलवीर।

केशव अर्थ गंभीरता, सूर तीन गुन धीर।।[3]

वीरबल की मृत्यु सन् 1583 ई0 में काबुल के पास बीजापुर में हो गयी थी। जब ये एक सैन्य अभियान का नेतृत्व कर रहे थे।[4] जनश्रुति के अनुसार वीरबल की मृत्यु का दुखद समाचार सुनकर वे शोक व्यक्त करने कालपी आये थे। 'अकबर कालपी में, कालपी के जागीरदार अब्दुल मतलब खाँ के यहाँ अतिथि रहे थे।[5] कहा जाता है कि अकबर द्वारा दीन ए इलाही' धर्म के प्रचलित करने तथा उसे राजधर्म घोषित करने मे वीरबल की सूझ–बूझ रही। इस कारण कट्टर पंथी नेता इसे 'इस्लामी धर्म' की अवनति मानते थे और धार्मिक मुसलमान वीरबल से घृणा करते थे। जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने लिखा है–''धार्मिक मुसलमान वीरबल से घृणा करते थे। वे यह मानते थे कि अकबर द्वारा इस्लाम के अधोपतन के लिये वीरबल ने उन पर प्रभाव डाला था।[6]

आपने अपनी रचनाओं में जहाँ भक्ति एवं उपदेश विषयक छन्दों का निर्माण किया है, वहीं श्रृंगार परक रचनाओं का भी सुन्दर चित्र खींचा है। श्रीकृष्ण

और राधा के रात्रि मिलन के बाद का यह चित्र दृष्टव्य है–

प्रात उठी बिन कंचुकि भामिनी,
कान्हा सों कर केलि घनी।
कवि ब्रह्म भनें जिन देखत ही,
छवि जो कुछ जाय सखी बरनी।
कुच आन नख क्षत स्याम दियौ,
मुख नार निहोरि लियो सजनी।
मानहुँ ससि सेखर के सिर तें,
निहुरो ससि लैन कला अपनी।[7]

निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वीरबल कलम और तलवार दोनो के धनी थे। हाजिर जवाबी में तो उनकी कोई सानी नहीं थी। इसी कारण आज भी वीरबल और अकबर के प्रश्नोत्तर लोगों को कंठस्थ हैं। वीरबल का नाम पूरे भारत में बड़े आदर के साथ लिया जाता है जिसके वे हकदार भी हैं। ऐसे गौरवशाली व्यक्ति जनपद जालौन को गौरावान्वित करते हैं। यह जानकर कि वीरबल जनपद जालौन के कालपी नगर के रहने वाले थे हमारा ह्रदय प्रफुल्लित हो जाता है।

श्रीपति मिश्र

आचार्य श्रीपति मिश्र रीतिकालीन कवि हैं। वे हिन्दी साहित्य के सर्वांग निरूपक आचार्यो में से एक थे। इनका उल्लेख शिवसिंह सरोज तथा ग्रियर्सन, रामचन्द्र शुक्ल, मिश्र बन्धु सभी ने इतिहास लेखन की परम्परा में उनका महत्व स्वीकार किया है और उनको यथोचित प्रमुख स्थान अपने ग्रंथों में दिया है किन्तु इनके जन्मस्थान के सम्बन्ध में सभी साहित्य इतिहासकारों का मतैक्य नहीं है।

सभा की खोजों के संक्षिप्त विवरण[8] में श्रीपति काशी–निवासी का उल्लेख मिलता है। इनकी एक पुस्तक जिसका नाम 'श्रीपति के कवित्त है जिसमें भक्ति और शृंगार विषय से सम्बधित 60 कवित्त हैं। यह हस्त लेख नागरी प्रचारिणी सभा के याज्ञिक संग्रहालय में सुरक्षित है।[9]उक्त हस्त लेख के अनुसार "श्रीपति सुजान काशीनगर निवासी हैं।"[10] के आधार पर अन्वेषक ने उन्हें काशी निवासी होना लिखा है। वस्तुतः यह काशी निवासी श्रीपति कालपी वाले श्रीपति ही हैं।[11] कालपी वाले श्रीपति ही कालान्तर में कालपी से काशी चले आये थे, जैसा कि उन्होंने काव्य सुधाकर में स्वीकार किया है–

सुकवि कालपी नगर कौ, श्रीपति सुमति अगार।

अब काशी वासी भयौ, जानत सब संसार।।[12]

इस प्रकार यह प्रमाणित हो जाता है कि श्रीपति का निवास स्थान कालपी था बाद में वे काशी में रहने लगे तथा उनकी ख्याति संसार में हुई।[13]

आचार्य श्रीपति अनूपराय के पुत्र थे। उनके पिता 'सीताराम' के उपासक थे और वह स्वयं शंकर के। यह तथ्य भी अन्तः साक्ष्य से प्रमाणित है–[14]

सेवक सीताराम कौ, राय अनूप प्रवीन।

ताकौ सुत श्रीपति भयौ, संकर पद जलमीन।।[15]

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, मिश्र बन्धु, रामनरेश त्रिपाठी और डॉ० रमाशंकर शुक्ल 'रसाल' ने उन्हें कान्यकुब्ज होना लिखा है किन्तु वे गौड़ वंशीय ब्राह्मण थे जैसा कि उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है–[16]

नागवान कुल कमल रवि, गोड़वंश अवतंस।

श्री गुरु चरण सरोज अति, नौरस मानस हंस।।[17]

आचार्य श्रीपति के जन्म के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न मत

हैं किन्तु अन्तः साक्ष्य के आधार पर शुक्ल जी, मिश्रबन्धु रामनरेश त्रिपाठी तथा डॉ0 रसाल ने उनकी कृति काव्य सरोज का रचना काल सं. 1777 माना है। 'आकनां वामो गति' के अनुसार :-

संवत् मुनि मुनि मुनि शशी, सावन शुभ बुधवार।

असित पंचमी को लियो, ललित ग्रंथ अवतार।।[18]

उनके जन्म के सम्बन्ध में ग्रियर्सन के अनुसार इनका जन्म सन् 1643 ई0 दिया है जो काव्य सरोज काव्य सुधाकर के रचना काल (सं0 1777) तथा अनुप्रास कथन में उल्लिखित रीवा नरेश अवधूत सिंह (काल सं0 1768) के प्रकाश में ठीक जँचता है।[19]

श्रीपति के समबन्ध में यदि देखा जाये कि काव्य सुधाकर का रचनाकाल (सं0 1777 ई0) है तो निश्चित रूप से कविता का स्फुटन कवि के हृदय में 57 वर्ष बाद नही हुआ होगा। कवि के हृदय में कविता तो बचपन से ही हिलोरें मारने लगती है और कविता में प्रौढ़ता 45-50 वर्ष के बीच में आ जाती है। यदि इस विचार से देखा जाये तो निश्चित रूप से उनका जन्म सं0 1670 के लगभग हुआ होगा। तर्क यह भी दिया जा सकता है कि रचना धार्मिता तो आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है और यह रचना कवि के अन्तिम पड़ाव की हो सकती है। इस सन्दर्भ में यही कहा जा सकता है कि कवि ने काव्य सुधाकर की जो रचना तिथि दी है वह कवि की प्रौढ़ और उस समय के कवियों के बीच यह रचना उच्चकोटि की रही होगी। इसलिये इसमें तिथि समेत उल्लेख हुआ है। दूसरा उनके शृंगारिक छन्द भी कवि को प्रौढ़ अवस्था को दर्शाते हैं।

श्रीपति के नौ ग्रंथों का नामोल्लेख मिलता है-

काव्य सरोज, काव्य सुधाकर, अनुप्रास कथन, श्रीपति के कवित्त, कवि

कल्पद्रुम, विक्रम विलास, रस सागर, अनूप रास तथा अलंकार गंगा है।[20]

इसमे से प्रथम चार प्रतियाँ श्री अयोध्या प्रसाद गुप्त कुमुद के संग्रहालय में सुरक्षित हैं जिसमें काव्य सरोज अधिक महत्वपूर्ण एवं चर्चित रहा।

कवि ने नायिका राधा की आँखों का चित्रण पूर्ण मनोयोग से एवं विभिन्न उपमानों के माध्यम से किया हैं। इसी सन्दर्भ में कवि की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

षंजन चंचल चारु तुरंग सुरंग सरोरुह के दल वारे।
श्रीपति जू मुक्ताहल मीन मलिंद मनोभववान विसारे।।
जोवन के नरसाल महीरुह (नरशील महारुह)प्रेम महोदधि रूप करारे।
वारत है नंदराइ लला वृष भान लली तुव नैन निहारे।।[21]

कवि ने दशरथ नन्दन श्रीराम का आकर्षक चित्र इस छन्द के माध्यम से खींचा है–

कर सर धनु अभिराम षंजन सम चंचल नयन।
अब आनंद को धाम, राम लषन दशरथ तनय।।[22]

कवि को शृंगारिक रचनाओं में अच्छी सफलता मिली है। कवि ने नयीं नवेली दुल्हन का घूँघट के भीतर सिसकारने का पूरा बिम्ब ही यहाँ खींच कर रख दिया है। अश्लेष लक्षण के माध्यम से ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

नारि लई रसरंग रचो सिसकै सतराय न घूघट षोलै।
झंपत आनन यो विलसै जनु पूरन चंद पयोधर ओलै।।
वेनी खुली है सचिक्कन स्याम सरोरुह ज्यौं घटनील में डोलै।
मानहुँ आन कुटुंव समेत करै, जमुना जल काली कलोलै।।[23]

कवि श्रीपति मिश्र हिन्दी रीति के सर्वोच्च कवि हैं। इनके सम्बन्ध में विद्यानिवास मिश्र ने कहा है –" हिन्दी साहित्य के इतिहास अधिकतर श्रीपति

के पावस–वर्णन के छन्दों से सुपरिचित रहे हैं। श्रीपति के परवर्ती रचनाकारों ने उनका आश्रय अवश्य लिया है। भिखारीदास ने अपना 'काव्य निर्णय' श्रीपति की ही भाँति 'काव्य प्रकाश' को उपजीव्य बनाकर लिखा। श्रीपति मिश्र का 'काव्य सरोज' दास के काव्य निर्णय के पहले लिखा गया है। यद्यपि लक्षण –घटना 'काव्य प्रकाश' के ही अनुसार प्रायः लगती है तथापि उदाहरणों में और उनकी विवृति में नवीन उद्भावनाएँ दिखती हैं।"[24]

आचार्य शुक्ल के अनुसार –" भिखारी दास जी तो इनके बहुत ऋणी हैं। उन्होंने इनकी बहुत बातें ज्यों की त्यों अपने काव्य निर्णय में चुपचाप रख ली हैं। दोष प्रकरण और उसमें भी दोष परिहार्य की दृष्टि से आचार्य श्रीपति हिन्दी रीति में सर्वोच्च हैं।[25]

आचार्य श्रीपति मिश्र का स्थान हिन्दी साहित्य में अग्रगण्य है। इनका केवल इतना ही परिचय काफी नहीं हैं। ऐसे साहित्यकारों पर तो सम्पूर्ण शोध प्रबन्ध लिखा जा सकता है।

काली दत्त 'नागर' :–

महान कवि काली दत्त 'नागर' जनपद जालौन की महान विभूति थे। उन्होंने दोहों एवं विविध छन्दों के माध्यम से अपनी वाणी के द्वारा साहित्य को समृद्ध किया। वे श्रृंगार विषयक मुक्तक काव्य धारा के प्रतिनिधि कवि थे। इनकी उक्तियों में चमत्कार, सरसता तथा रस संचार की अद्भुत शक्ति है। इनके दोहों में समास पद्धति की शक्ति विद्यमान है। दोहा जैसे छोटे छन्द में इन्होंने विशद भाव भर दिये हैं। नागर मूलतः श्रृंगार रस के कवि हैं। इसके साथ ही इनकी अन्य रचनाओं में ओज की भी प्रधानता

है।

पं० कलीदत्त नागर का जन्म 26 अक्टूबर 1832 ई0 में जनपद जालौन के उरई नगर में हुआ था। पंडित गौरीशंकर द्विवेदी ने काली कवि का जन्म सम्वत् 1910 एवं मृत्यु का सम्वत् 1970 माना है। डॉ0 श्यामसुन्दर बादल ने कवि का जन्म सम्वत् 1908 तथा मृत्यु सम्वत् 1987 माना है। योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' ने इनका जन्म सम्वत् 1878 एवं मृत्यु सम्वत् 1908 माना है जबकि शिवानन्द मिश्र बुन्देला ने नागर जी का जन्म सम्वत् 1870 एवं मृत्यु सम्वत् 1970 माना है। किन्तु पुष्ट प्रमाणों के आधार पर काली कवि का जन्म सम्वत् 1889 मानना ही समीचीन होगा। क्योंकि वे भारतेन्दु के समकालीन थे और भारतेन्दु का जन्म 9 सितम्बर सन् 1850 को हुआ था।[26]

इनके पिता का नाम श्री छविनाथ नागर था। ये जाति के गुजराती ब्राह्मण थे और ये नागर वंश के पाराशर गोत्र में उत्पन्न हुए थे। ये अपने पिता की इकलौती संतान थे। ये विशेष तांत्रिक, ज्योतिषी, पहलवान एवं रीतिकालीन परम्परा के सिद्ध कवि थे। इनकी साहित्य साधना स्थली उरई थी तथा सिद्धि प्राप्त स्थल–पंचनदा नामक रमणीय स्थल जालौन था। कहा जाता है कि कवि को बचपन में स्वयं गणेश जी साधु वेश में जगम्मनपुर के पास पंचनदा पर मिले और उनकी जिह्वा पर गणेश जी ने कुश से सारी कुशलता लिख दी। जब वे उसी पंचनदा नदी में घड़ा से पानी भरने गये तो दो बूँद कुश के द्वारा ही घड़ा भर गया। वे संस्कृत में मंत्र पढ़ने लगे और जैसे ही उन्होंने अपनी आँखे बन्द की कि वे तुरन्त अपने घर (उरई) के तहखाने में आ गये। गणेश जी के आशीर्वाद से अब वे अवाधित रूप से मंत्रोंच्चार और संस्कृत ग्रंथों का धारा प्रवाह पठन–पाठन एवं उच्चारण करने लगे। नागर जी माँ पीताम्बरा के उपासक थे।

काली कवि के व्यक्तित्व के सम्बंध में अयोध्या प्रसाद गुप्त 'काली कवि' और उनका काव्य' शीर्षक लेख में लिखते – ''काली कवि का नाम आते ही एक प्रदीप्त एवं तेजोमय व्यक्तित्व आँखो में उभरता है। उन्नत भाल, ऐंठदार मूछें। मल्ल विद्या में निष्णात देहयष्टि, गेहुँआ वर्ण, चमकते हुए विशाल नेत्र, भाल पर त्रिपुण्ड, उसमें सिन्दूर बिन्दु, गले में रुद्राक्ष की माला, सिर पर साफा, अजानबाहु तथा तन पर शोभित अंगरखा और धोती–यह कुल मिलाकर उनके व्यक्तित्व का बिम्ब बनता है।'' [27]

आपका प्रथम विवाह झाँसी में हुआ था। पत्नी का नाम अन्नपूर्णा देवी था जिसे ये अन्ना कहकर पुकारते थे। दुरागमन के पूर्व ही प्रथम पत्नी का देहान्त हो गया। तत्पश्चात आपका दूसरा विवाह अन्ना की बहिन के साथ हुआ जो अनन्य सुन्दरी थी। आपका एक पुत्र था जिसका नाम छन्नू था।[28] इन की शिक्षा किसी विद्यालय में नहीं हुई है। स्वतः घर पर ही अध्ययन किया है किन्तु इनकी कृतियों के अध्ययन से हमें कहीं पर भी ऐसा प्रतीत नहीं होगा कि कवि की विद्यालयी शिक्षा नगण्य थी।

1 जून सन् 1909 (सवत् 1966)[29] गंगा दशहरा के दिन यह चमकता हुआ नक्षत्र सदैव के लिये विलीन हो गया।

पं0 कालीदत्त नागर श्रृंगार रस के मूर्धन्य कवि थे। इसके साथ ही इनकी रचना हनुमत्पताका में वीर रस का ओज विद्यमान है। नख–शिख वर्णन में तो ये बिहारी लाल के समकक्ष दिखायी देते हैं। इनका मौलिक चिन्तन, नायिका भेद वर्णन, बहुत ही सरस है। हनुमत्पताका के अधिकतर छन्दों का प्रयोग राम लीला के कलाकार विभीषण एवं हनुमान का अभिनय करने वाले अभिनेता करते हैं।

सुप्रसिद्ध कवयित्री श्री शकुन्तला शीरौठिया ने व्यक्तित्व की अभिवन्दना

इस प्रकार की है—

भाषा सौष्ठव, सुगठित छन्द तथा वीर रस में सौन्दर्य का पुट आदि की विशेषताएँ काली कवि को सहज ही कवि के रूप में आसीन करती है।[30]

डॉ0 हरनारायण सिंह द्वारा सम्मति में काली कवि की इस प्रकार प्रशंसा की गयी है—

धन्य ये उरई अरु धन्य ये भारत देश।

धन्य—धन्य धरती, जहँ जन्मो कवि काली सौं।।[31]

युगकवि डॉ0 रामस्वरूप खरे ने कवि के सम्बन्ध में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये है।—

काव्य कुंज के कलित कलाधर, काली कवि कमनीय।

कला कामिनी स्वयं वरण कर, धन्य हुई रमणीय।।

मिली कल्पना और व्यंजना, अभिधा निज कर जोरि।

गुण, प्रसाद माधुर्य, ओज भी, सके न नाता तोरि।।

तुम थे शब्द ब्रह्म के ज्ञाता, उभय पक्ष निष्णात।

रीति काव्य मन्दिर के पावन, स्वर्ण कलश अवदात।।

पं0 कालीदत्त नागर की प्रसिद्ध काव्यकृति 'छवि रत्नम्' रसिक विनोद' है। जो दोहा छन्द में प्रस्तुत की गयी है। इसके अतिरिक्त 'गंगा गुण मंजरी', 'ऋतु राजीव', 'कवि कल्प द्रुम', 'हनुमत्पताका' (खण्ड काव्य), 'स्फुट दोहावली' एवं हजारों फुटकर छन्द हैं।[32] अप्रकाशित कृतियों में 'चिदम्बर रहस्य', 'उद्दीश तन्त्र' तथा 'गणपति खडिल माला' है। 'हनुमत्पताका' (खण्ड काव्य) है जिसके पृष्ठों की संख्या 64 है तथा सम्पादक प्रो0 कृष्ण दत्त बाजपेयी हैं।

पं0 कालीदत्त नागर शृंगार रस के वर्णन में पूर्ण सफल रहे हैं। आपने

नारी के मांसल सौन्दर्य का वर्णन विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से किया है। आपने नारी के स्तनों का वर्णन इस प्रकार किया है–

कलभ कुम्भ तिय कुच भये, अंकुश के भय भाग।

भाग लिखी न मिटी तऊ, सहन परे नख दाग।।[33]

इसके साथ ही जब नायक नायिका के साथ बैठ जाती है तो उसकी उज्ज्वल एवं शीतल मुस्कान खरी दोपहरी में चाँदनी रात की छटा बिखेरती है–

आज लड़ैती लाल के, ढ़िग बैठी मुसकात।

चटक दुपहरिया में रही, छिटक जुन्हैया रात।।[34]

'छविरत्नम्' पूरा का पूरा लक्षण ग्रंथ है और इसमें नारी का नख शिख वर्णन उत्कृष्ट बन पड़ा है।

पं० कालीदत्त नागर के काव्य में अलंकारों का भी प्रयोग उचित हुआ है। अर्थात् अलंकारो को काव्य में बलात् थोपा नहीं गया है वरन् भाव एवं अभिव्यक्ति के माध्यम से स्वयं काव्य में आ गये हैं। उत्प्रेक्षा, रूपक, उपमा, प्रतीप, यमक, अनुप्रास आदि की छटा यहाँ दर्शनीय है।

बदन सदन ते अनत कहुँ, जाय न किये विचार।

जनु जग बंधुआ करी, नक नथ बेड़ी डार।।[35]उत्प्रेक्षा

इसी प्रकार नारी के कपोलों पर तिल वर्णन में सन्देह अलंकार का कितना सुन्दर वर्णन हुआ है। कवि की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है।

कै कपोल अनमोल तिल, कै अलि कमल समेत।

कै सुवर्ण कै पर्ण मणि, नील वर्ण छवि देत।।   संन्देह

बिम्बाफल के अम्ब से, दल से अधर विशाल।

कहियत बाल प्रबाल से, ललित लाल से लाल।। प्रतीप

नव नागर मिठ बोलिनी, बोली तनिक सुनाय।

देत सुधा की कान में, शीशी सी ढरकाय।। उपमा

भ्रमर फिरे कुच गिरिन पै, व्याकुल तृषित शरीर।

नाभि सरोवर में मिलो, नैनन को मृग नीर।।[36] रूपक

" अपने प्राकृतिक दृश्यों की रमणीयता के कारण बुन्देलखण्ड की भूमि अनेक सुकवियों की रंगस्थली रही है। चारों ओर विन्ध्य की श्रेणियाँ मधु (महुआ) तेंदु, काँकेर, करील के सघन वन, साथ ही बेतवा चम्बल धसान आदि नदियों ने इसे रससिक्त बना दिया हैं।[37]

"काली कवि संस्कृत के श्रेष्ठ विद्वान थे, इस कारण उनकी कविता में संस्कृत के शब्दों का बाहुल्य तथा अलंकारों की छटा है। उनकी रचनाएँ पढ़कर सहसा ही बिहारी और केशव का ध्यान हो जाता है। उनकी कविता की विशेषता यह है कि रौद्र और भयानक रस के वर्णन में भी वह कोमलता बनाये रखते हैं। छन्द सृजन में उन्होंने विशेष सावधानी और सुरुचि का परिचय दिया है और उनकी दृष्टि लंका के गगन चुम्बी द्वार पर पड़ती है। जिसके शिखर पर सूर्य स्वर्ण कलश सम दीप्त मान हो रहा है। एक कवित्त पूर्ण चित्र दृष्टव्य है–

असुर मार सुरसाहि छल, दार लंकिनी दार।

लखत भयो कपि लंक को, नभ चुम्बित पुर द्वार।।[38]

जानकी जी जब हनुमान जी को पर्वताकार में देखती है तब मन में प्रसन्न होकर अतिथि सत्कार की भावना से सीता जी कह रही है–

चिरजीवहु रघुनाथ प्रिय, भेंट तुमहि यह देत।

वन–फल ही भोजन यहाँ, अतिथि तिहारे हेते।।[39]

नागर जी के काव्य में मुख्य रूप से श्रृंगार एवं वीर रस का वर्णन अधिक

मिलता है। इसके अतिरिक्त 'गंगा गुणमंजरी' में भक्ति रस का भी परिपाक हुआ है। पं0 कालीदत्त नागर कृत हनुमत्पताका खण्डकाव्य में वीर रस का अच्छा परिपाक हुआ है। रावण की आज्ञा पाकर मेघनाद अशोक वाटिका में आता है और ब्रह्मास्त्र बगुलामुखी द्वारा श्री हनुमान जी को बाँधकर दरबार में ले जा रहा है। उस समय का चित्र कवि ने चित्रित किया है जो अपने आप में अनूठा है–

बाँध बजरंग खौं अकेले रंगभूमि ही तें,
संग में सकेलें सेन धारा लिये जात है।
काली कवि कुमति पिता के लोक लोकन में,
ठोंकवे खौं अयश नकारा लिये जात है।
फूले पाप फूलन पलास तरु फारि वे सौं,
पवन कुमार है न आरा लिये जात है।
हाहाकार पारिवे खौं नगर उजारवे खौं।[40]
जारिवे खौं नगर अंगारा लिये जात है।

महाकवि काली की भाषा सरल एवं साहित्यिक है। कहीं कहीं भाषा में क्लिष्टता भी है लेकिन प्रवाह अच्छा है। इस कारण काव्य में दुर्बोधता अधिक नहीं है और पाठक उन्हीं अन्य शब्दों की सहायता से भाव समझ जाता है। भाषा में प्रसाद एवं माधुर्य एवं ओज गुण विद्यमान है। स्थल–स्थल पर मुहावरों के साहित्यिक प्रयोग ने भाषा की पर्याप्त सौन्दर्य वृद्धि की है। साहित्यिक भाषा के साथ–साथ ब्रज तथा बुन्देली भाषा का भी समावेश हुआ है।

यथा–

कोऊ चार पापी महा गंग तट त्यागे प्राण,
लागी न विलम्ब एक इन्द्र पद ले रहौ।

एक भयो शम्भु एक आन अम्बु शाई भयौ,

एक बृह्म आसन पर आनंद हितै रहौ।।

काली कवि देख यह महिमा महान तेरी

भूल भ्रम भोरौ इन्द्र शम्भु हर है रहौ।

चोर सौ, चपौ सौ, चुपकौ सौ, चिमकाई साध

चौंके चकवानौ, चतुरानन चितै रहौ।[41]

आपके काव्य में चित्रात्मक, समास एवं कहीं–कहीं पर क्लिष्ट शैली का प्रयोग हुआ है। जिससे रचनाएँ गम्भीर, जटिल एवं गूढ़ हो गयीं हैं। आपने अपने काव्य में मात्रिक एवं वर्णिक दोनों प्रकार के छन्दों का भली प्रकार प्रयोग किया हैं।

विभिन्न विद्वानों ने काली कवि के काव्य प्रतिभा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये हैं। डॉ0 हरनारायण सिंह 'यार' अजयगढ़ पन्ना ने अपने विचार कुछ इस तरह प्रकट किये है–

कवियन को राजा महाराजा तंत्र विद्या को।

महको गुलाब जैसो दहको दुनाली सो।।[42]

डॉ0 अवध किशोर जड़िया के शब्दों में–

काली की कृपा सो जंत्र जाल के जनैया खास,

दिव्य रोशनी के अंश मानो रवि के भरे।।

ध्याता बगला के मल्ल–विद् मंगला के ज्ञाता

काव्य की कला के वर्त–भूत–भवि के भरे।।[43]

राम जी दास कपूर के शब्दों में–

वन्दन अमित, अभिनंदन अयुत उस।

मल्ल कीर्तिशाली अंशुमाली कवि काली को।।[44]

आचार्य सेवकेन्द्र त्रिपाठी के अनुसार–

सुखदा सरस्वती सी सरसवती है दिव्य।

कमल सी कमला सी कला काली कवि की।।[45]

इस प्रकार काली कवि के काव्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि कवि में उच्च प्रतिभा विद्यमान थी। इनकी रचना का हर शब्द मोती के समान है और यही मोती माला बनकर काव्य रूपी कामिनी के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देते हैं। इनके दोहे एवं पद जनपद के लोगों को आज भी कंठाग्र हैं। शृंगार के तो काली कवि राजा हैं। इनके दोहे आज भी प्रासंगिक हैं। प्रचार–प्रसार की कमी के कारण ही यह कवि जनपद तथा बुन्देलखण्ड तक सीमित रह गया है। यदि उचित प्रसार–प्रचार हुआ होता तो यह कवि आज भारतवर्ष का महान कवि कहलाता। अब तक न जाने कितनी समीक्षाएँ लिखी जा चुकी होती और न जाने कितनी भाषाओं में इनकी कृतियों का अनुवाद हो चुका होता। कुछ भी हो इनके काव्य के पठन–पाठन से हृदय आन्दोलित हो उठता है। हृदयतन्त्री अनियंत्रित भाव से निनादित हो उठती है। ऐसे कवि को अधिक समय तक अन्धकार में नहीं रखा जा सकता है। आगे आने वाले समय में निश्चित रूप से इनका कालजयी काव्य अपने प्रकाश से समाज को रोशन करेगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

रामरतन शर्मा 'रत्नेश'

'रत्नेश शतक' के प्रणेता रामरतन शर्मा रत्नेश जी का जन्म सन् 1861 ई0 (मार्ग शीर्ष शुक्ल 8 सं0 1918)[46] में कालपी में हुआ था। इनके पिता पं. गिरधर लाल गुबरेले थे।[47] आपने कवि सम्मेलनों में भाग लेकर नवोदित साहित्यकारों

का मार्गदर्शन करके जनपद को हिन्दी साहित्य से समृद्ध कराया। आप रसिक समाज तथा कवि मण्डल कानपुर के अध्यक्ष रहे।[48]

आपकी छैः कृतियों में केवल एक कृति 'रत्नेश शतक' प्रकाशित है। यह कृति कवि की प्रौढ़तम कृति है। इसमें भक्ति एवं श्रृंगार विषय से सम्बन्धित 101 छन्द है।[49] अप्रकाशित कृतियों में 'राधा सुधानिधि का भाषा', लक्षणा–व्यंजना, सनाढ्य वंशावली, दिनचर्या, कर्मपद्धति, तथा नायिका भेद है।

'रत्नेश शतक' में कवि ने राधा के रूप गुण सौन्दर्य को सभी देव भामिनियों से अच्छा बताया है। कवि की निम्नलिखित पंक्तियाँ राधा के प्रति एकनिष्ठ भक्ति एवं जगत की सर्वश्रेष्ठ देवी के रूप में प्रतिष्ठित की गयी हैं। ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

गोरी में गुराई देखी, शची में सचाई देखी।
रमणीयताई देखी, रमा सुख दानी में।
रत्नेश रमा में निहारी, प्रभुताई वेश,
रूप की निकाई देखी, तारा छवि खानी में।
एक–एक गुण देखे, जेते देव दारिन में,
ते ते सब देखे एक, राधा महारानी में।।[50]

रामरत्न शर्मा 'रत्नेश' ऐसे कवि थे जिन्होंने कविता के माध्यम से रीतिकालीन कवियों के विपरीत राधा को अपनी आराध्य देवी मानकर संसार में सर्वगुण सम्पन्नता के पद पर प्रतिष्ठित किया। राधा उनके लिये श्रृंगार की अधिष्ठात्री नहीं वरन् भयहारिणी त्रयताप नसावनी आराध्य देवी थी। कवि की ये रचनाएँ कवि को निश्चित रूप से भक्त कवि सिद्ध करती हैं।

हरगोविन्द दयाल 'नश्तर'

महान साहित्यकार एवं उर्दू के शायर श्री हरगोविन्द दयाल जी 'नश्तर' का जन्म 15 जुलाई सन् 1884 ई0 में रायबरेली में कायस्थ परिवार में हुआ था किन्तु सन् 1906[51] ई0 में रायबरेली से आकर उरई में रहने लगे थे। इनके पिता स्व. पं0 जुगल किशोर सक्सेना साहित्य प्रेमी व्यक्ति थे। इनकी धर्मपत्नी का नाम स्व0 श्रीमती लक्ष्मी देवी था। इनके दो पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ है। बड़े पुत्र का नाम नारायण दयाल सक्सेना जिनका विवाह श्रीमती सुरेन्द्री देवी के साथ हुआ। कवि के छोटे पुत्र प्रेमदयाल सक्सेना का विवाह श्रीमती शीला देवी के साथ हुआ। नश्तर जी की तीन पुत्रियों में श्रीमती बूधा, बड़ी बिटनियाँ एवं छोटी बिटनियाँ है। श्रीमती बूधा लखनऊ के श्री रमापति राम को व्याही गयी है। कवि की दूसरी पुत्री बड़ी बिटनियाँ का विवाह गोड़ा निवासी श्री रामचन्द्र के साथ हुआ। कवि की तीसरी पुत्री छोटी बिटनियाँ का विवाह कानपुर निवासी श्री सतीश चरन के साथ हुआ। नश्तर जी का भरापूरा परिवार है जो अपने कुटुम्ब का नाम रोशन करते हुए विभिन्न सरकारी पदों पर कार्यरत हैं।

नश्तर जी ने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अपने जन्मस्थान रायबरेली से प्राप्त की। आपने एल.एल. बी. की शिक्षा 1906[52] ई0 में लखनऊ से उत्तीर्ण की। नश्तर जी जिला बार एसोसियन के आजीवन निर्विरोध अध्यक्ष सन् 1931–1962[53] तक रहे। वे दयानन्द वैदिक महाविद्यालय के भी अध्यक्ष रहे।

'नश्तर जी' में काव्य प्रतिभा बचपन से ही थी। जब ये कक्षा 4 में पढ़ते थे तब इनके उर्दू अध्यापक ने एक लाइन कविता की दी–''कमर में दर्द है सिर दुख रहा है।'' इस पंक्ति पर इन्होंने दूसरी पंक्ति लिख डाली–' सवाले वस्ल पर झुंझला के यूँ बोले।' इस पर उर्दू अध्यापक ने आशीर्वाद दिया–'हरगोविन्द

दयाल एक दिन तू जरूर शायर बनेगा।'' और अध्यापक की बात को उन्होने सच साबित कर दिया। इस महान साहित्यकार का निधन 5 जुलाई सन् 1962[54] ई0 को उनके निज निवास राम नगर उरई में हो गया।

'नश्तर जी' की दो रचनाएँ 'जख्म खन्दा' एवं 'नश्तर कदा' है। इसके अतिरिक्त दो अप्रकाशित रचनाएँ हैं।

सृष्टि में अनवरत काल प्रवाह चलता रहता है। कोई आता है कोई चला जाता है। शायर व्यष्टि की नियति को जीवन रहते पहचान गया था, तभी तो वह कह उठा–

मेरा कहना मान ले अन्दलीब/तू चमन से अपना मकां उठा
यहाँ रोज का यही शोर है/ये धुँआ उठा, वो धुँआ उठा
न जहाँ में कोई कमी हुई/न जहाँ में होगी कमी कोई
ये मेरा ख्याल फिजूल है/कि जो मैं उठा तो जहाँ उठा।[55]

जालौन रोड स्थित उनकी समाधि के पत्थर पर ये पंक्तियाँ आज भी पढ़ी जा सकती है। कविवर जयशंकर प्रसाद ने मृत्यु को हिमानी सा शीतल कहा है जबकि नश्तर जी उसे कयामत पर्यन्त सुखद निद्रा स्वीकार करते हैं–

कब्र भी क्या जगह है सोने की।
नींद भी आयी तो कयामत की।।

कवि हरगोविन्द दयाल उर्दू के अच्छे शायर थे। शायरी के क्षेत्र में जनपद में आपका नाम आदर के साथ लिया जाता है। इनकी गजलों में उर्दू साहित्य की मिठास के साथ क्लिष्टता के दर्शन होते हैं। जो सामान्य पाठकों के लिये दुर्बोध हो गयी है।

द्वारिका प्रसाद 'रसिकेन्द्र'

जालौन जनपद की साहित्य परम्परा में द्वारिका प्रसाद गुप्त 'रसिकेन्द्र; का नाम आज भी सुधी पाठकों के हृदय में समाया हुआ है। 18 पुस्तकों का सृजन करने वाले साहित्यकार को कब तक आँखों से ओझल किया जा सकता है। उनकी रचनाओं एवं साहित्य के द्वारा रासिकेन्द्र को हम अपने सामने पाते हैं। उनकी रचनाओं के माध्यम से हम उन तक पहुँच जाते हैं।

द्वारिका प्रसाद गुप्त रसिकेन्द्र का जन्म सन् 1889[56] ई0 में कालपी में हुआ था। आप जनपद के उन कवियों में से एक है, जिन्होंने देश के प्रारम्भिक कवि सम्मेलन में मंचों से जन–जागरण किया था। हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला, गुजराती, एवं संस्कृत आदि भाषाओं का उन्हें अच्छा ज्ञान था।[57] द्वारिका प्रसाद गुप्त रसिकेन्द्र को साहित्यालंकार, राजकवि और कवीन्द्र की उपाधियों के अतिरिक्त 'राष्ट्रीय गीत पुरस्कार' का भी सम्मान प्राप्त हुआ।[58] वे काली कवि के शिष्य और राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के बहनोई थे।[59] इससे साहित्यिक गोष्ठियाँ आये दिन होती रहती थीं। उनकी 18 पुस्तकों में से 8[60] प्रकाशित एवं 10[61] अप्रकाशित हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ आत्मसमर्पण, हरिजन्मकथा, कीर्ति कुसुम, नारी गौरव गान, सती सारन्धा, अज्ञात वास, न्यू नायिका भेद, पारिजात विजय, बाल विभूति, सतीत्व रक्षा, रसिकेन्द्र रंजन, ललित लहरी, महिमामयी और अवगुंठन है।[62] स्फुट कविताओं में मीरा और शकुन्तला काफी चर्चित रही है।[63] इनकी मुत्यु सन् 1943 ई0 में कालपी में हुई।[64]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कवि द्वारिका प्रसाद गुप्त रसिकेन्द्र

एक अच्छे साहित्यकार थे। इनकी नारी विषयक रचनाएँ 'मीरा और शकुन्तला' निश्चित रूप से नारी के आदर्श चरित्र को उजागर करती हैं। जनपद जालौन की कवि परम्परा में आपका कृतित्व निश्चित रूप से सराहनीय है।

मुंशी धनू सिंह 'वीरेन्द्र'

जनपद जालौन की साहित्यिक परम्परा में मुंशी धनूसिंह का नाम हिन्दी अभिनव कोशकार के रूप में चर्चित रहा। आपका जन्म सन् 1890 ई0 में हरदोई गूजर में हुआ था।[65] आपने वीरेन्द्र उपनाम से सामयिक कविताएँ लिखीं हैं। दुखिया किसान नामक काव्य ग्रंथ में किसानों की दीन दशा का चित्रण किया गया है।[66] सन् 1925 ई0 में इनका हिन्दी अभिनव कोश उरई के ही एक लीथोप्रेस में प्रकाशित हुआ था।[67] अपकी रचनाएँ सुधा, माधुरी, सरस्वती एवं सुकवि पत्रिकाओं में मुद्रित हुई।

जनपद जालौन के हिन्दी साहित्य के लिये मुंशी जी के साहित्यिक योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। उस समय जब प्रायः पौराणिक और ऐतिहासिक पात्रों को लेकर कवि अपना कर्म समझते थे, वही मुंशी जी ने सामयिक परिस्थितियों को पहचाना और उनका कवि हृदय समाज की पीड़ा को देखकर द्रवित हो गया। उनके कवि हृदय ने उस वेदना को समझा और उनको अपनी कविता में स्थान दिया। मेरे विचार से मुंशी धनू सिंह निश्चित रूप से जन्म जात कवि थे। ऐसे जनवादी कवि को मैं अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

कालीचरण दीक्षित 'फणीन्द्र'

जनपद जालौन अपनी अकूत साहित्य सम्पदा को समेटे हुए अपने अतीत एवं वर्तमान को एक पहलू में लपेटकर भविष्य की तरफ अग्रसर है। हिन्दी के साथ–साथ संस्कृत भाषा में भी यहाँ का कवि किसी तरह से कम नहीं है। इसी

श्रृंखला में पं0 कालीचरण दीक्षित 'फणीन्द्र' संस्कृत के उद्भट विद्वान थे। संस्कृतम् अयोध्या में इनकी संस्कृत कविताएँ प्रायः छपती रहती थी।

पं0 कालीचरण दीक्षित 'फणीन्द्र' का जन्म सन् 1893 ई में कोंच में हुआ था।[68] आपने संस्कृत कविताओं के साथ हिन्दी कविताओं की भी रचना की हैं। आपको 'काव्वसूर' की उपाधि से सम्मानित किया गया था।[69] इन्होने हिन्दी काव्य में बड़भागी केवट, शत्रुसंहार, श्याम उलाहना, राधा रहस्य एवं सीता सतीत्व नाटक के अतिरिक्त स्फुट कविताएँ भी लिखीं।[70]

पं0 कालीचरण दीक्षित फणीन्द्र जी की मृत्यु सन्1942 ई0 में हो गयी।[71]

पं0 कालीचरण दीक्षित फणीन्द्र अपनी हिन्दी एवं संस्कृत कविताओं के लिये सदैव स्मरणीय रहेंगे।

रामनाथ चतुर्वेदी 'विप्र'

संस्कृत एवं हिन्दी साहित्य श्रृंखला में एक नाम पं. रामनाथ चतुर्वेदी विप्र जी का है जिन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से जनपद के सारस्वत योगदान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। विप्र जी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान तथा संकृत पाठशाला कोंच के प्रधान थे। इनका जन्म सन् 1896 ई0 (सं0 1953)[72] ई0 में हुआ था।

पंडित जी विद्वान होने के साथ ही साथ एक आदर्श शिक्षक भी रहे हैं। आपने संस्कृत के पठन पाठन में विशेष रुचि दिखाई। आपकी संस्कृत की रचनाएँ संस्कृतम् अयोध्या में प्रकाशित होती रही। आपको भी 'काव्वसूर'[73] की उपाधि से विभूषित किया गया। आपने संस्कृत भाषा की 'रसमंजरी' और 'शिशुपाल वध' का काव्यानुवाद किया। आपने ब्रजभाषा के स्फुट छन्द भी लिखे। आपकी मृत्यु सं0 1992[74] ई0 में हुई।

डॉ० आनन्द

जनपद जालौन की साहित्य परम्परा में डॉ0 आनन्द का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। डॉ0 आनन्द के माता–पिता प्यार से मन्नूलाल पुकारते थे 'झाँसी की रानी' खण्ड काव्य के प्रणेता डॉ0 आनन्द नाम से साहित्य जगत में प्रसिद्ध हुए। डॉ0 आनन्द असाधारण व्यक्तित्व के धनी, वाणी में ओज, प्रस्तुतीकरण में स्वाभिमान, व्यवहार में मिठास, वाक्पटुता प्रभावशाली अभिव्यक्ति ये उनके स्वाभाविक गुण थे। इनकी अभिव्यक्ति में विलक्षण साहित्यिकता का पुट लिये हुए व्यंग्य विनोद में बात करना उनकी आदत में शामिल था।

आपका जन्म 25 अगस्त[75] सन् 1900 ई0 को जालौन कस्बे में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गोविन्द राव जी था। आपकी माता जी का नाम श्रीमती राधारानी था। आपका विवाह प्रेमवती देवी के साथ हुआ था। आपका दत्तक पुत्र श्री रवीन्द्र शर्मा जी हैं जो अपने पिता के पद चिह्नों पर चलते हुए पिता की यशगाथा को आगे बढ़ा रहे हैं। डॉ0 आनन्द के दो भाई और एक बहन थी। भाइयों में पं0 रामदास जी विश्व के प्रथम नं0 के मृदंग वादक थे।[76] पं0 रामदास जी ने 'मुगले आजम', 'पाकीजा', 'झनक–झनक पायल' में आधे–आधे घण्टे का रोल अदा किया है। कवि के दूसरे भाई पं0 भगवानदास शर्मा प्रसिद्ध तबला वादक एवं कवि थे। आपकी बहन श्रीमती रामकली जी है।

आपकी विद्यालयी शिक्षा कक्षा 2 तक ही हो सकी किन्तु कवि ने अपनी मेहनत और लगन से कुछ शिक्षा जेल में प्राप्त कर ली थी। आपको हिन्दी के साथ अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, अरबी, फारसी का अच्छा ज्ञान था।

आपने हिन्दी साहित्य में उच्चकोटि की रचनाओं का प्रणयन किया है यथा 'झाँसी की रानी', 'एम0एल0ए0 राज', 'सन् 48' और 'शक्ति निदान' है।

'झाँसी की रानी' आपकी सर्वोत्तम रचना है जो ओजगुण से परिपूर्ण है। इस महाकाव्य में झाँसी की महारानी की शौर्यगाथा वर्णित है। रानी के तेज साहस एवं युद्ध कौशल का सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही कवि रानी के घोड़े का सशक्त चित्रण करने में सफल रहा है। रानी का घोड़ा युद्ध भूमि में दुश्मनों पर काल बनकर टूट पड़ता था। यथा–

गज के समान मतवाला था

साहस में शेर निराला था

लेकिन जब रण में टूट पड़ा

तो आफत का पर काला था।[77]

घोड़े पर था मधुमास नया

घोड़े पर था उल्लास नया

घोड़े ने अपनी टापों से

लिख दिया एक इतिहास नया।[78]

रानी के द्वारा युद्ध में चलायी जा रही तलवार का चित्र संगीतात्मक एवं ओज से पूर्ण है। रानी की तलवार बैरियों को बिजली बनकर प्रलय जैसा चमत्कार दिखा रही थी। कवि की यह कल्पना अनूठी और मौलिक है–

थी झपट कहीं झंकार कहीं

प्रतिबिम्ब कहीं था वार कहीं

थी मार कहीं तलवार कहीं

गरदन पर गिर पड़ने वाली

अरि की बोटी से चटक–चटक

चोटी तक चढ़ जाने वाली।[79]

कवि बुन्देलखण्ड की भूमि में जन्मा पला बढ़ा, इस मिट्टी की सोंधी महक में उसका जीवन सुवासित हुआ है। अतः इसकी प्रशंसा में वह गा उठता है–

बुन्देलों ने खून बहाकर,

नित्य इसे नहलाया।

इसीलिये बुन्देलखण्ड

बुन्देलखण्ड कहलाया।।[80]

युद्धासन्न रानी जब खून से लथपथ हो जाती है तब कवि बुन्देलखण्डके पानी की प्रशंसा करता हुआ कह उठता है–

सिर से पैरों तक लोहू से

लथपथ शरीर था रानी का।

दुनिया ने देख लिया जौहर

बुन्देलखण्ड के पानी का।।[81]

कवि ने रानी के शौर्य को अपनी लेखनी के माध्यम से बड़ा सजीव एवं सटीक वर्णन किया है। इस युद्ध का बिम्ब हमारे मस्तिष्क में सजीव हो उठता है। यह कवि के लिये अभीष्ट भी था। युद्धासन्न रानी का रण कौशल यहाँ दृष्टव्य है –

रानी ने आज रण में दिखाया वह चमत्कार

करती थी चोट एक पै गिरते थे चार–चार

तलवार किसी के हुई छाती के आर–पार

घबरा के गिरा कोई लगी कटार

तलवार से तलवार के टुकड़े उड़ा दिये

यों सिंधिया नरेश के छक्के छुड़ा दिये।[82]

आवेश वेश में रानी ने

केवल कृपाण के साथ–साथ

भाला बरछी के चार पाँच

इस बार निकाले नये हाथ।[83]

इस प्रकार हम कह सकते है कि डॉ0 आनन्द की रचना धर्मिता श्रेष्ठ बन पड़ी है। भाषा सरल सरस व प्रवाहमयी है। बोधगम्य भाषा सह्रदय पाठक को आनन्द विभोर कर देती है और ह्रदय में उत्साह का संचार होने लगता है। कवि के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रकट किये है जो इस प्रकार है–

श्री जय प्रकाश नारायण के शब्दो में–'' जालौन के डॉ0 आनन्द की 'झाँसी की रानी' ऐसी ओज भरी और ह्रदयभेदी रचना हिन्दी साहित्य में कम ही होगी। 'झाँसी की रानी' एक उत्कृष्ठ महाकाव्य है जो हिन्दी साहित्य में अमर होगा यह मेरा विश्वास है।''[84]

डॉ0 रामकुमार वर्मा के शब्दों में –'' मैंने अनेक वर्षो पूर्व डॉ0 आनन्द की 'झाँसी की रानी' काव्य को अत्यन्त आग्रह और प्रेम से सुना था।उस समय वीर काव्य के क्षेत्र में वह अद्वितीय रचना समझी गयी और अखिल भारतीय काव्य मंच पर सराही गयी।''[85]

डॉ0 आनन्द के साहित्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि डॉ0 आनन्द जनपद में ओज के ऐसे कवि है जिनकी बराबरी अभी तक कोई नहीं कर सका है। आप साक्षात् वीररस के अवतार हैं। जनपद के सारस्वत योगदान में आपका प्रयास प्रशंसनीय है। स्व रचित महाकाव्य 'झाँसी की रानी' ने हिन्दी साहित्य में आपको अमर बना दिया है।

पं० चतुर्भुज शर्मा 'बापू'
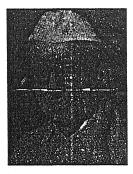
बुन्देलखण्ड केशरी जन–जन के बापू पं0 चतुर्भुज शर्मा एक ऐसे महामानव थे जिन्होंने जनपद में ही नहीं वरन् पूरे बुन्देलखण्ड में सत्य और अहिंसा के बल पर अन्याय के खिलाफ संघर्ष का बिगुल फूँका है। इनका जन्म ऐसे समय में हुआ था जब बुन्देलखण्ड के विराट ह्दय में मारो–काटो की ललकार बमों का भीषण विस्फोट, प्रत्येक व्यक्ति के ह्दय में द्रोह की आग दहक रही थी। सात्विक समिधा के स्वरूप बापू का सान्निध्य पाकर ऐसा लग रहा था जैसे इस भूमि की बरसों की साध पूर्ण हो गयी हो।

पं0 चतुर्भुज शर्मा का जन्म भाद्रपद बदी 6 सं. 1957[86] को नगर उरई में हुआ था। आपके पिता पं0 चुन्नीलाल शर्मा थे। आपकी माता का नाम रजनबाई था। आपकी तीन संतानों में मानिक चन्द्र शर्मा विष्णुदत्त शर्मा एवं सूरज दत्त शर्मा है।

बापू ने ऐसी पावन भूमि पर जन्म लिया है जिसमें जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको गौरवान्वित महसूस करता है स्वयं उन्ही के शब्दों में– 'बुन्देलों की गरिमामयी भूमि, प्रकृति की रमणीयता की सरल सरस छवि कुटीर तथा पाषाण की निष्ठुरता में अन्तः सलिला सी सुधामयी चिरकाल से महिम विभूतियों की आवासिका रही है। मुझे गौरव है यहाँ जन्मने का, विश्वास है यहाँ बसने का, मुझे उल्लास है उसकी कहानी कहने का और मुझे तोष है उसके अभिनन्दन का। मेरी जीवन कथा उसी बहुगुण मण्डिता की अभ्यर्थन मात्र है।''[87] रामचरित मानस व गीता का पठन एवं श्रवण करने का शर्मा जी का नित्य नियम था। आज भी उनके आवास पर प्रतिदिन 5 बजे से 'रामचरित मानस' का पठन–पाठन

होता है।

शर्मा जी के सम्पूर्ण जीवन पर महात्मा गाँधी के जीवन की अमिट छाप थी। इसी कारण वे बुन्देलखण्ड के बापू कहे जाते थे।

आप विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्षरत रहे तथा अन्याय के विरुद्ध बुलंद आवाज उठाते हुए समाज और राष्ट्र की सेवा में कार्तिक शुक्ल 4 सम्वत 2033 में पूर्णाहुत हो गये। राजनैतिक जीवन में आप विधायक रहे। इसके पश्चात् आप उ0प्र0 सरकार में शिक्षा मंत्री भी रहे।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'विद्रोही की आत्म कथा' है। इस पुस्तक के सम्पादक–राधा कृष्ण अवस्थी है तथा पृष्ठों की संख्या 148 है। **राधा कृष्ण अवस्थी ने इस पुस्तक के संपादकीय में लिखा है**–" विद्रोही की आत्मकथा मूलतः जीवनी होते हुए भी एक प्रकार से इतिहास की गाथा बन गयी है। जहाँ एक ओर जालौन तथा बुन्देलखण्ड की राजनैतिक जीवन की काफी झाँकी मिलती है वहीं लेखक की पैनी ऐतिहासिक दृष्टि से देश की स्थिति कभी भी ओझल नहीं हो पायी और इसीलिये राष्ट्रीय पृष्ठभूमि में– उसी सुख–दुख, उत्थान–पतन में झकोरे खाता हुआ प्रदेश तथा जालौन जिले में लेखक का जीवन आगे बढ़ता है। ××× इतिहास के प्रति लगाव हममें स्वाभिमान उत्पन्न करता है, यह ग्रंथ की अनकही कहानी है।[88]

आपकी भाषा सरस तथा सरल है। लेखक भावाभिव्यक्ति में भी पूर्ण सफल रहा है। आपके भाव और भाषा विद्रोही की आत्मकथा में 'गाँधी जी का गमछा' नामक शीर्षक से दृष्टव्य है–

गाँधी जी जब उरई से चलने लगे और सामान सम्भाला जाने लगा, तो इत्तफाक से गाँधी जी का एक गमछा (खादी का तौलिया)

खो गया। गाँधी जी बड़े चिन्तित से उसे ढूँढने लगे। परन्तु वह न मिला। पं० मुन्नीलाल पाण्डेय ने बड़े संकोच से कहा " महाराज, यहाँ खादी भण्डार है। आज्ञा हो तो अभी आ जायेगा।"[89]

बापू साहित्यकार के साथ ही जनप्रिय नेता भी थे। जनपद में उच्च शिक्षा हेतु आपने गाँधी इण्टर कालेज एवं गाँधी महाविद्यालय उरई की स्थापना कर पिछड़े जनपद को ज्ञान का दीपक प्रकाशित कर आगे बढ़ने का हौसला बढ़ाया। आज उनके द्वारा जलाया गया दीपक अपनी पूरी लौ के साथ वर्तमान पीढ़ी को विकास का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। इस महान पुरुष को जनपद वासी कभी नहीं भुला सकते हैं।

पं० चतुर्भुज शर्मा के सम्बन्ध में डॉ० दिनेशचन्द्र द्विवेदी हिन्दी विभागाध्यक्ष गाँधी महाविद्यालय उरई ने उनका अभिनन्दन इस प्रकार किया है–

इस बुन्देल भूमि का जिसको, कण–कण करता वंदन।
भाव सुमन से आज कर रहा, बापू का अभिनन्दन।।[90]

पं० चतुर्भुज शर्मा एक सच्चे राष्ट्रभक्त, राजनीतिक एवं उच्चकोटि के साहित्यकार थे। वे जनपद के पिछड़ेपन की नब्ज टटोल चुके थे। यही कारण है कि उन्होंने अपने जनपद के विकास हेतु ज्ञानदायिनी संस्था की नगर में स्थापना की। प्रतिफल में आज जनपद जालौन बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए है। ऐसे महान पुरुष शताब्दियों में एक बार जन्मते हैं। इस महान विभूति को मेरा शत–शत नमन है– वन्दन है और उनके लिये मेरे भाव सुमन समर्पितहैं।

दीनानाथ 'अशंक'

जनपद जालौन की साहित्य परम्परा में एक स्वधन्य नाम दीनानाथ 'अशंक'

जी का है। पता नही इस कृषक बालक के मन में कब साहित्य का बीजारोपड़ हुआ और वह अनुकूल समय पाकर हृदय खेत में अंकुरित ही नहीं हुआ वरन् पल्लवित व पुष्पित होकर जनपद जालौन को अपनी महक से सुवासित किया।

दीनानाथ अशंक जी का जन्म सन् 1901 (सं० 1958)[91] में पहाड़गाँव के लोधी परिवार में हुआ था। पिता जगन्नाथ जी कृषक थे तथा माता श्रीमती सबरानी देवी एक आदर्श गृहणी थी। आपने साहित्य के द्वारा समाज को सही दिशा देने का प्रयास किया।

आपकी 26 रचनाओं में 11 रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है शेष रचनाएँ अप्रकाशित हैं।[92]इसके साथ आपने संस्कृत की नीति सूक्तियों तथा कई ग्रंथों का काव्यानुवाद किया है। विभिन्न भाषाओं की नीति परक सूक्तियाँ छाँटकर उन्हें हिन्दी कविता में प्रस्तुत किया।[93] आपकी प्रकाशित कृतियों में– 'शिक्षा सप्तसती', 'राष्ट्रीय सूत्र', 'देवल देवी', 'दिव्य विचार', 'सेवा सूत्र', 'कृषि कौमुदी', 'चारुचर्या', 'मणिरत्न माला', 'नीतिशतक' तथा 'वैराग्य शतक' हैं। इनमें अन्तिम चार अनूदित हैं।[94] अप्रकाशित कृतियों के नाम –'पद्यनिवन्धाक्षो', 'सुलभ रामायण', 'कर्त्तव्य शिक्षा', 'उपाय चर्या', 'सुभाषित रत्नमाला', 'विवेक रचनावली', 'कविता कल्पलता' तथा 'सूक्ति सुमन' हैं।[95]

दीनानाथ 'अंशक' जी नीति साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

पं० मोहनलाल शाण्डिल्य

पं० मोहन लाल शाण्डिल्य जी का जन्म सन् 1903 ई० (सं० 1960)[96] में कोटरा में हुआ था। आपने कालपी में बहुत समय तक शिक्षक के रूप में कार्य किया इसके साथ ही कवि सम्मेलनों में संयोजन एवं कवि तैयार करने में इनके महत्वपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। हम कह सकते

हैं कि पं0 मोहनलाल शाण्डिल्य कवि तैयार करने का चलता फिरता कारखाना था।

आपने लगभग एक दर्जन कृतियों का सृजन किया किन्तु प्रकाशित रचना दो ही प्राप्त है। प्रकाशित रचनाओं में पारिजात तथा दिव्यालोक है।[97] राष्ट्रीय आन्दोलन का उनके सृजन में स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है।

पं0 मोहनलाल शाण्डिल्य की 'दिव्यलोक' की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं—

यों तो आये कितने जग में,

कितने जग से चले गये हैं।

कोई बन कर बुरे गये तो,

कोई बनकर भले गये हैं।

जन्म उसी का सफल कि जिसके,

उर में बहती ज्ञान सुरसरी।

कार्यो की क्यारी'क्यारी में,

है हरी—भरी रक्षिता बल्लरी।[98]

कवि ने मधु बाला शीर्षक से यौवन के कृत्रिम तथा क्षणिक सुख पर कुठाराघात करते हुए कहा है—

जिस यौवन में सुन्दरता हो,

सरल भाव से रहा विराज।

मादकता से वहीं सजाती,

विकृत भरा यह अनुपम साज।।

कृत्रिम तथा क्षणिक सुख देकर,

कितने को करती स्वाधीन।

दे देकर चषकाधर चुम्बन,

निज रस में करती तल्लीन।।[99]

कवि की भाषा सरल एवं बोधगम्य हैं। कवि ने अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से जीवन के गूढ़ रहस्यों पर भी अपनी लेखनी चलायी है। जनपद के साहित्यकारों में कवि मोहनदास शाण्डिल्य का विशेष स्थान है।

शिवसहाय 'आरण्यक'
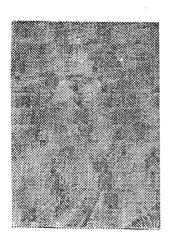
सुप्रसिद्ध कवि शिवसहाय 'आरण्यक' जनपद जालौन के एक प्रतिभाशाली कवि के रूप में जाने जाते रहे। गद्य और पद्य दोनों विधाओं पर आपकी लेखनी प्रखरता के साथ चली है। आपके साहित्य में निर्झर की तरह प्रवाह है।

शिवसहाय 'आरण्यक' जी का जन्म 7 अगस्त सन् 1907[100] ई0 में जनपद जालौन के मुख्यालय उरई के निकट रिनिया नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री त्रिजन तिवारी एवं माता श्रीमती सरावती देवी थी। आपकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती ममता तिवारी था। आपके दत्तक पुत्र ओमनारायण सनातन धर्म इ0 कालेज, उरई के हिन्दी प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं। कवि का उपनाम 'आरण्यक' है।

आपके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में श्री राधेश्याम योगी जी ने लिखा है– ''एक वर्ण विशाल अंतर्मुखी नेत्र, खिचड़ी हुए लम्बे–लम्बे केश, सूफी सन्तों सी लहराती दाढ़ी, श्यामल रंग एवं कौशेय परिधान में स्वामी जी को देख कर सर्व कालीन कवि तुलसी की याद आये बिना नहीं रहती। 'आत्मगायन' के गीत महादेवी एवं प्रसाद की याद दिलाये बिना नहीं रहते, सृष्टि महाकाव्य कामायनी से आगे के उस विश्व पर लाकर खड़ा कर देता है जो अभी तक साहित्य मनीषियों

द्वारा अदेख एवं अलेख ही रहा है।[101]

आपने विद्या विशारद तक शिक्षा प्राप्त की।

आपने अनेक खण्डकाव्य, महाकाव्य, नाटक, उपन्यास एवं समीक्षा ग्रंथों की रचना की। प्रकाशित पुस्तकों में आत्मगायन (गीत), देवव्रत खण्डकाव्य है। अप्रकाशित कृतियों में– 'सृष्टि' (महाकाव्य), 'देवयानी' (नाटक), 'जिन्दगी के कण', 'रेवती', 'तीन रेखाएँ', देवता, 'चन्द्रहास', 'उल्का' (उपन्यास), 'सीता अन्वेषण' (महाकाव्य), 'मुक्त काव्य लक्षण' है। इसके अतिरिक्त 'भविष्य' (महाकाव्य) एवं 'माण्डवी' खण्डकाव्य अपूर्ण हैं।

कवि आरण्यक साहित्य की सेवा करते हुए 84 वर्ष की आयु में मकरसंक्रान्ति सन् 1991 ई0[102] में यह टिमटिमाता नक्षत्र सदा के लिये अस्त हो गया। आपने अधिकांशतः पौराणिक गाथाओं को अपने साहित्य का विषय बनाया है। पौराणिक पात्रों का युगानुकूल चित्रण करके उन्हें आदर्श मानवरूप में प्रस्तुत किया है। 'देवव्रत खण्डकाव्य में भीष्म (देवव्रत) की अटल प्रतिज्ञा का चित्रण इन शब्दो में किया है–

सहज स्वाभिमान में बोल उठा वीर था,
लगा आजन्म अटल, बृह्मचर्य व्रत को।
पौत्र आपके ही पूर्ण, पावे युवराज पद,
क्वारा रहूँगा मैं मातु गंग का साक्षी है।
अन्तरिक्ष सुन लो, सूर्य चंद्र देख लो।
ठहरो काल–चक्र की, धरा प्रण धात्री हो।।

× × ×

यमुना प्रवाह रुका, सुमन झरे व्योम से।

जै–जै का महाघोष, गूँजा अन्तरिक्ष में।।

पुष्प बरसा कर देव, जै–जै देवव्रत की।

जै–जै देवव्रत की, करते अनुघोष थे।

आज से धरा पर तुम्हें, भीष्म कह पुकारेंगे।

नाम जप तुम्हारा, बल पायें संकल्प का।[103]

भीष्म की वीरता का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है–

विश्व में है वीर बोलो कौन सा,

जान पाया जो कि पौरुष भीष्म का,

हार मानी जबकि युग अवतार ने,

ले सुर्दशन की साधना प्रणवीर ने।[104]

कवि शिवसहाय 'आरण्यक' ने अपने काव्य में साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग किया है। कहीं–कहीं संस्कृत के तत्सम शब्दों का भी प्रयोग किया है फिर भी काव्य प्रवाह में रुकावट नही आने पायी है।

कवि 'आरण्यक' जी के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये हैं–

श्री देवराज दिनेश के शब्दों में– ''स्वामी शिवसहाय आरण्यक के देवव्रत नामक इस काव्य को पढ़कर मुझको आश्चर्य भी हुआ और सुखानुभूति भी। इन्होंने बाखूबी अपने काव्य में इन सब बातों का निर्वाह किया है। महाभारत के महान पात्र भीष्म को उत्तम रूप से निखारा है।'' [105]

श्री रामनारायण मंत्री सूचना प्रसारण तथा संचार भारत नई दिल्ली 28 जुलाई सन् 1969 ई0 के शब्दों में– ''श्री शिवसहाय 'आरण्यक' का मुक्त काव्य देवव्रत देखने का अवसर मिला। मुक्त छन्दों में लिखा यह काव्य

सुन्दर बना है। सात सर्गों में इस काव्य की भाषा कथा–प्रवाह के साथ–साथ जिस सुन्दरता और सहजता से मुक्त छन्दों में प्रवाहित हुई है वह निश्चय ही प्रशंसनीय है।[106]

कवि शिवसहाय आरण्यक के काव्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कवि की रचनाधर्मिता अच्छी बन पड़ी है। यह कवि निश्चित रूप से जनपद जालौन की साहित्यिक सम्पदा में श्रीवृद्धि करने वाला महान योद्धा रहा था।

भगवती शरण सक्सेना

भगवती शरण सक्सेना साहित्यकार के साथ एक कलाकार व अभिनेता भी थे। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की और उन्हें प्रकाशित कराया।भगवती शरण सक्सेना का जन्म 10 मई सन् 1907 ई0[107] को उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व. श्री रामसहाय सक्सेना व माता जी का नाम स्व. श्रीमती गोमती सक्सेना था। आपका विवाह जिला एटा के ग्राम पटियाला निवासी श्री पुत्तू लाल सक्सेना की सुपुत्री श्रीमती रामकिशोरी सक्सेना के साथ हुआ। आपके दो पुत्र गोपाल कृष्ण सक्सेना एवं राम जी कुमार सक्सेना है। गोपाल कृष्ण सक्सेना का विवाह श्री मन मोहन सहाय जौहरी की सुपुत्री श्रीमती रमा सक्सेना के साथ हुआ। आपकी दो पुत्रियाँ श्रीमती नम्रता सक्सेना व श्रीमती अनामिका सक्सेना है। कवि के दूसरे पुत्र राम जी कुमार सक्सेना है जिनका विवाह सीतापुर निवासी श्री राजेश्वरी प्रसाद बरतरिया की सुपुत्री श्रीमती मधु सक्सेना के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में विरल सक्सेना व कु0 वर्तिका सक्सेना है। राम जी कुमार सक्सेना सम्प्रति डी0ए0वी0 इण्टर कालेज उरई में अंग्रेजी प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं।

आपने एम0ए0 इतिहास, राजनीति शास्त्र एवं अंग्रेजी विषय से उत्तीर्ण

किया। आपने एल0टी0 का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया था।[108]

सामाजिक क्षेत्र में भी आपका कार्य सराहनीय रहा। स्काउटिंग के क्षेत्र में मदद करना, गरीबों को निःशुल्क दवा वितरण करना मुख्य कार्य रहा। हॉकी के भी आप अच्छे खिलाड़ी थे। इसके साथ ही आप अच्छे आर्टिस्ट भी थे। आपको वाटर कलर्स व पेंसिल चित्र की प्रिटिंग में पुरस्कार प्राप्त हुए।

आपकी प्रकाशित कृतियों में 'कविता सुमन, कविता प्रसून, कादम्बिनी आदि हैं। इसके अतिरिक्त माधुरी, चाँद, धर्मयुग, प्रभृति पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती थी। अप्रकाशित कृतियों में मुक्तक, छन्द व कविताएँ हैं।

छायावाद के स्तम्भकार (जयशंकर प्रसाद को छोड़कर) आपकी रचनाओं पर टिप्पणियाँ दिया करते थे।[109]

आप डी0ए0वी0 इण्टर कालेज उरई में 1935 ई0 से 30 जून 1971 तक इतिहास विषय के प्रवक्ता पद पर आसीन रहे।

साहित्य एवं समाज की सेवा करते हुए 8 जून सन् 1991 ई0[110]को आपका निधन हो गया।

आपने मानव जीवन की तीन अवस्थाओं (बाल्यावस्था, युवावस्था एवं वृद्धावस्था) के मनोहर, मदभरे, एवं कड़वे चित्र उकेरे है। इसी सन्दर्भ में आपकी ये पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है—

देखे मैंने तीन चित्र जीवन के।

मद भरी उमंग का भार लिये, उर में मादक उद्‌गार लिये।

कितनी कोमल आशाओं का, वर अपना सुन्दर साज लिये।।

जाता था मग में डोले पर, अभिसार मिलन की याद लिये।

पर सहसा कानों में आया, स्वर रोने का दुख गान लिये।।

अरमान भरी उस शव को देखा, लिपटे थे स्वप्न–स्वप्न यौवन के।

देखे मैने तीन चित्र जीवन के।।[111]

कवि भगवती शरण सक्सेना की साहित्य साधना उत्तम थी। निश्चित रूप से आप एक अच्छे साहित्यकार थे। जनपद को जो गौरव आपने हिन्दी साहित्य के लिये दिया है वह अविस्मरणीय रहेगा।

बालकृष्ण शर्मा 'विकास'

जिस प्रकार अनेकानेक पगडंडियाँ किसी राजमार्ग के निर्माण का मूलाधार बनकर उसकी गरिमा बढ़ाती हैं। ठीक उसी प्रकार भिन्न क्षेत्रों में प्रादुर्भूत प्रचार–प्रसार से दूर सामान्य कवि भी साहित्य का राजपथ निर्मित करते हैं आज यद्यपि कुछ ऐसी प्रथा चल पड़ी है कि जो कवि या साहित्यकार किसी पाठ्यक्रम में स्थान पा लेते हैं। उनका अध्ययन–अध्यापन होने लगता है समीक्षाएँ लिखीं जाती हैं और उन्हीं की कीर्ति का विस्तारण होता है। पर उसी युग के अनेक कवि प्रसार–प्रचार और किसी गुट के संरक्षण के अभाव में उतनी ख्याति नहीं पा पाते जबकि वे गुणात्मकता की दृष्टि से उनसे कहीं श्रेष्ठ होते हैं जो पाठ्यक्रम की शोभा बढ़ाते हैं।[112]

कवि बालकृष्ण शर्मा विकास जी का जन्म जनपद जालौन की तहसील कोंच में 30 मार्च सन् 1915[113] ई0 को हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामसहाय राय था। इनका विवाह राठ निवासी मूलचन्द्र शर्मा जो स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी एवं राठ नगर पालिका के अध्यक्ष थे की सुपुत्री सावित्री देवी के साथ हुआ। इनकी पाँच संतानों में चार पुत्र एवं एक पुत्री है। सबसे बड़े पुत्र श्री सन्तोष कुमार शर्मा हैं जिनका विवाह श्रीमती अर्चना शर्मा से हुआ।

इनके दो पुत्र–विक्की तथा छोटू एवं पुत्री पूजा देवी शर्मा है। कवि के दूसरे पुत्र श्री रविन्द्र शर्मा है जिनका विवाह श्रीमती सरोज शर्मा के साथ हुआ। इनके दो पुत्र निक्की व राजू है। तीसरे पुत्र के रूप में श्री दिलीप शर्मा है जिनकी पत्नी का नाम श्रीमती शान्ति शर्मा है। इनके दो पुत्र राजू, रघू व तीन पुत्रियाँ गुड्डन, रैनू व रानी है। श्री अशोक शर्मा इनके चौथे पुत्र हैं जिनकी पत्नी का नाम श्रीमती गीता शर्मा है। इनके एक पुत्र बबलू एवं तीन पुत्रियाँ सोनू, शालिनी, एवं कंचन है। 'विकास' जी की एक पुत्री श्रीमती कुसुमलता शर्मा थी जो उरई नगर के ही श्री रामप्रसाद शर्मा जी को ब्याही थी। उनका एक पुत्र कमलेश शर्मा है। भाग्य की बिडम्वना ही कही जायेगी कि उनकी पुत्री श्रीमती कुसुमलता शर्मा का असामयिक निधन हो गया। वर्तमान में स्व0 कुसुमलता शर्मा का परिवार दिल्ली में रह रहा है। विकास जी का निधन अगस्त 1995 ई0[114] को उनके निज निवास पाठकपुरा उरई में हो गया था।

पाँच, छैः सात की कक्षाएँ आपने राजकीय विद्यालय हमीरपुर से तथा आठ, नौ दस की परीक्षाएँ दयानन्द वैदिक उच्च विद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। सन् 1952 ई0 में आपने प्राइवेट इण्टरमीडिएट की परीक्षा पूर्ण विषयों में उत्तीर्ण की। सन् 1834 ई0 में आप राजस्व विभाग में लिपिक हो गये और 30 मार्च 1973 को सेवा निवृत्त हुए।

श्रीनिवास सक्सेना प्रधानाचार्य डी0ए0वी0 इण्टर कालेज तथा सिद्ध गोपाल मिश्र 'सुधाकर' उरई की प्रेरणा से आपके अन्तस में काव्यांकुर लहरा उठा। युगीन परिस्थितियों से प्रभावित होकर आपने युगपुरुष गाँधी पर अनेक रचनाएँ लिखी।सन् 1934 ई0 से सन् 1937 ई0 तक आपने अनेक कहानियों का सृजन कर डाला जो 'विश्व मित्र', 'सैनिक', 'माधुरी' आदि पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई। आपकी

सर्वप्रथम प्रकाशित कविता 'दुखिया किसान' है जो सन् 1938 ई0 में देशदूत में प्रकाशित हुई।[115]

स्थानीय साहित्य संस्था 'अभिनव साहित्य परिषद' में आपका सम्मान किया जा चुका है। वहीं से कवि को काव्य प्रकाशन की प्रेरणा प्राप्त हुई। गीत प्रतिभा (गीत संकलन) किन्नरी, बदलते सिक्के (दोनों उपन्यास), एक अधूरा पत्र (पत्रात्मक लेख) तथा गजलांजलि (गजल संकलन) अभी अप्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त लगभग सौ सवा सौ स्फुट दोहे भी हैं जो अप्रकाशित हैं। यह दोहे, विकास दोहावली में संकलित हैं।[116]

इनके अब तक प्रकाशित काव्यों में 'पर्वगीत; 'गुल्दस्तये–गजल' दो काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें क्रमशः 35 गीत, 52 गजलें संकलित हैं। गीत सरिता काव्य संकलन का प्रकाशन 8 मार्च 1986 (शिवरात्रि) को हुआ था। इसके पृष्ठों की संख्या 80 है। प्रकाशक श्री अशोक कुमार शर्मा विशारद उरई हैं।

इसी 'गीत–सरिता' काव्य संकलन में कुछ रचनाओं में रहस्यवादी विचार दृष्टिगोचर होते हैं। यथा–

मिल गई स्वांति जल की बूँद,
पपीहे को थी जिसकी चाह,
उषा ने दिये अश्रु जब डाल,
मिल गई रवि प्रियतम की बाँह।[117]

गणित एक नीरस विषय है किन्तु कवि ने इसी विषय को जीवन से जोड़कर रुचिपूर्ण बना दिया है। उन्होंने जीवन को गणितीय विधि में सजाकर अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। उनकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य हैं–

पढ़ने को पढ़ गये किन्तु अब भी पढ़ना बाकी है।

लिखने को लिख गये किन्तु अब भी लिखना बाकी है।।

× × ×

इसी जोड़ बाकी के भीतर सारा वह जीवन है।

गुणा भाग से हो जाता है विस्तृत जिसका तन है।।[118]

कवि के गीतों में वैयक्तिक वेदना की अभिव्यक्ति हुई है। इसमें प्रियतम से मिली वेदना, उपेक्षा, जीवन की वास्तविकता के निकट ले जाते हैं। जगत से मिली कटु अनुभूतियों को उन्होंने विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से अपने अन्तस की बात कही है। कवि की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

कवि अपनीबात नहीं कहता है जग से,

जग का दुख अपने गीतों में लेता है।

चकई ने कब बेबसी दिखाई किसको,

शलभों ने किसके आगे अश्रु बहाये।

प्राणी ने कब–कब पीर पराई जानी,

प्रेयसि ने कब –कब रोकर गीत सुनाये।[119]

'विकास' जी के काव्य का मुख्य विषय प्रेम और विरह है जो छायावाद के अधिक निकट पहुँचते दिखाई देते है। उनमें अन्तर्जगत का भावपूर्ण चित्रण हुआ है–

अपना घट भर ले पनिहारी

तेरी मधुमय छवि को लखकर मैं जाऊँ बलिहारी।[120]

विकास जी के काव्य के अध्ययन से पता चलता है कि इनकी भाषा सशक्त, प्रौढ़ एवं सरस है जो पाठक के मन में सीधा प्रभाव छोड़ती है। आपके काव्य में भावात्मक, चित्रात्मक एवं सरस शैली का प्रयोग हुआ है।

आपके काव्य में श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग एवं विप्रलम्भ श्रृंगार का मणिकांचन प्रयोग हुआ है। इसके साथ कहीं कही शांत रस के भी दर्शन होते हैं।

इस प्रकार 'विकास' जी के साहित्य का आंकलन करने पर हम पाते है कि बालकृष्ण शर्मा 'विकास' जी में काव्य प्रतिभा विद्यमान थी किन्तु व्यापक प्रचार-प्रसार न होने के कारण ऐसे साहित्यकार अंधकार के गर्त में खोते जा रहे है। यह बहुत ही खेद का विषय है।

बाबूराम गुबरेले

आपका जन्म विक्रम संवत 1975 (सन् 1918) भाद्र शुक्ल अष्टमी को जनपद जालौन के हदरुख नामक ग्राम में हुआ था। आपके पूर्वज मध्य प्रदेश स्थित मछन्द (भिण्ड) से आकर जालौन जिला स्थित हदरुख में बस गये थे। आपके परिवार के कुछ सदस्य विरहरा माधौगढ़, शेखपुर बुजुर्ग आदि स्थानों पर बस गये थे। आपके प्रपितामह मनराखन, पितामह हरप्रसाद तथा पिता मन्नीलाल जी थे। आपकी माता का निधन शिशुकाल में हो गया था। आप कृष्ण के परम भक्त थे। आपने मिडिल की परीक्षा सन् 1935 ई0 में उत्तीर्ण की। 1942 ई0 में राजकीय दीक्षा विद्यालय झाँसी से नार्मल परीक्षा उत्तीर्ण की। पुनः साहित्य रत्न, हाईस्कूल, इण्टर, बी0ए0, एम0ए0 (हिन्दी) की परीक्षाएँ व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण कीं। आपने सन् 1958 ई0 में बी0आर0 राजपूत शिक्षण महाविद्यालय से एल0टी0 परीक्षा उत्तीर्ण की।

एक वर्ष माध्यमिक विद्यालय मिहुँना में अध्यापक रहे। पुनः जालौन जनपद के श्रीराम इण्टर कालेज पहाड़गाँव में हिन्दी के प्रवक्ता रहे और 16 वर्ष तक निरन्तर सेवा करते रहने के पश्चात् 1980 में सेवा निवृत्त हुए। आपके अब तक तीन महाकाव्य और 9 खण्डकाव्य प्रकाशित हो चुके हैं जो आजाद रोड

नगर पालिका कोंच से प्रकाशित हुए हैं।

1. अबला	–	1984	(खण्डकाव्य)	105	पृष्ठ
2. आञ्जनेय	–	1984	(महाकाव्य)	280	"
3. क्रान्ति दूत	–	1985	(महाकाव्य)	230	"
4. युगपुरुष	–	1988	(महाकाव्य)	267	"
5. वसुषेण	–	1988	(खण्डकाव्य)	127	"
6. देवर्षि	–	1988	(खण्डकाव्य)	141	"
7. प्रबन्ध भूमि	–	1989	(खण्डकाव्य)	70	"
8. आञ्जनेय बन्धु	–	1989	(खण्डकाव्य)	177	"
9. कैकेयी	–	1990	(खण्डकाव्य)	150	"
10 भीष्म की आत्म समीक्षा	–	1990	(खण्डकाव्य)	27	पृष्ठ
11. त्रिजटा	–	1993	(खण्ड काव्य)	53	"
12 कुण्डलिया शतक	–		(मुक्तकाव्य संकलन)		

आपके काव्यों की समीक्षा करते हुए **डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव ने लिखा है–**" कवि अपने लक्ष्य में सफल हुआ है वह रागभाव, अनुभूति की अपेक्षा विचार चिन्तन एवं बुद्धि का कवि है।"[121]

आचार्य लक्ष्मीनारायण शुक्ल के शब्दों में– "पंडित जी भावुक, संवेदनशील एवं स्वाभिमानी व्यक्तियों में से एक है। किसी भी आर्न्त व्यक्ति की अपनी सामर्थ्य एवं शक्ति के अनुसार सहायता के लिये सदैव उद्यत रहते हैं।"[122]

डॉ0 बृजवासी लाल श्रीवास्तव के मतानुसार–"ग्रंथ का बाह्य कलेवर हरिऔध के प्रियप्रवास के अनुसार है। संस्कृत के द्रुत विलम्बित वंशस्थ, मालिनी, मंदाक्रांता, वसन्ततिलका का वृत्तों का बाहुल्य है। यत्र–तत्र शार्दूल, विक्रीडत,

भुजंग प्रयास तथा शिखरनी का प्रयोग मिलता है। संस्कृत बहुला शब्द योजना छन्दों की गति एवं प्रवाह ग्रंथ के उपयुक्त हैं।[123]

वीरेन्द्र प्रताप सिंह जादौन के शब्दों में– " काव्य की यह दुरूह शैली रचनाकार की विद्वत्ता, पाण्डित्य एवं परिश्रम की परिचायक तो है ही साथ ही वर्तमान काल में विकृत होती हुई काव्य धारा के लिये मार्गदर्शिका भी कही जा सकती है।[124]

डॉ0 सर्वेश कुमार के शब्दों में–" युगपुरुष महाकाव्य में प्रिय प्रवास की शैली अपनाते हुए गुबरेले जी ने बड़ा ही सुन्दर प्रयास किया है। कृति निश्चित ही हिन्दी साहित्य में वरेण्य स्थान प्राप्त करेगी।"[125]

डॉ0 त्रिलोकी लाल ब्रजबाल के शब्दों में–" बसुषेण महाकाव्य में कवि गुबरेले जी ने संस्कृत के छन्दों का प्रयोग करते हुए बड़ी कुशलता पूर्वक वसुषेण (कर्ण) के चरित्र को उदात्त रूप देने का सफल प्रयास किया है।'[126]

डॉ0 ओमप्रकाश खरे के शब्दों में–" कवि ने 141 मुद्रित पुष्ठों में देवर्षि नारद के चरित्र को पौराणिकता के आधार पर प्रस्तुत करने का प्रशंसनीय प्रयास किया है।"[127]

डॉ0 प्रेमनारायण श्रीवास्तव के शब्दों में–" कवि श्री गुबरेले ने इस काव्य खण्ड में वन्दनीय भारत भूमि की गरिमा और महिमा का संस्कृत छन्दों में सम्यक निरूपण किया है।"[128]

डॉ0 रामस्वरूप खरे के शब्दों में–" महाकवि गुबरेले ने आञ्जनेय बन्धुओं में पाण्डुपुत्र भीम के जन्म, विषपान, लाक्षाग्रह, विनाश, हिडिम्बा परिणय, आञ्जन दर्शन, कीचक वध, तथा दुर्योधन निपात तथा युधिष्ठिर यज्ञ शीर्षकों के माध्यम से आठ सर्गो में पौराणिक आधार पर भीम का ओजपूर्ण वर्णन किया

है। भाव, भाषा, छन्द, अलंकार एवं रस की दृष्टि से यह एक अनूठी कृति है। निः सन्देह हिन्दी साहित्य संसार इसे सिर माथे पर रखेगा।'[129]

डॉ० कैलाश नाथ द्विवेदी के शब्दों में–' इस पुस्तिका का कलेवर जितना सुदृढ़ है उसकी आत्मा (भावपक्ष) उतनी ही बलवती है।''[130]

बाबूराम गुबरेले के शब्दों में–'' महाधनुर्धर भीष्म वाणविद्या में अद्वितीय थे। ज्ञानियों में उनकी समता नहीं थी। वह अजेय थे। इन्ही के उत्तम चरित्र का वर्णन मैंने इस छोटी सी कृति में प्रियप्रवास की शैली में करने का प्रयास किया।'[131]

डॉ० कैलाश नाथ द्विवेदी के शब्दों में–'' अन्ततः अपनी अभिनन्दनमयी शब्द मालिका से साहित्य सेवी पं० गुबरेले को साधुवाद देता हुआ मै सहर्ष त्रिजटा काव्य कृति को साहित्य प्रेमियों के कराम्बुजों में सौंपकर भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि पं० गुबरेले दीर्घायुष्य पाकर काव्य रसिकों को रसानुप्राणित और माँ भारती के समुज्ज्वल अञ्चल को अपने रंग–बिरंगे काव्य सुमनों से सदैव सुरभित करते रहें।[132]

समग्र कृतियों के अध्ययन–मनन और चिन्तन के उपरान्त मैं कह सकता हूँ कि पं० बाबूराम गुबरेले न केवल संस्कृत छन्दों के माध्यम से वाणी व्यक्त करने में पटु थे वरन् खड़ी बोली हिन्दी के सुन्दर एवं मधुर गीत लिखकर उन्होने भारती के भव्य भवन पर अपनी भावनाओं का स्वर्ण कलश सजाया।

रामबाबू अग्रवाल

जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में कवि श्री रामबाबू अग्रवाल का जन्म 18 फरवरी सन् 1920 को हुआ था। पिता स्व. श्री वंशीधर अग्रवाल साहित्य प्रेमी व्यक्ति थे। जिनका

विवाह श्रीमती देवी से हुआ था। इन्हीं की पावन कोख से साहित्य मनीषी श्री रामबाबू अग्रवाल ने जन्म लिया था। माता–पिता के अच्छे संस्कार एवं अनुशासित माहौल में कवि की शिक्षा दीक्षा हुई। श्री रामबाबू अग्रवाल का विवाह पुखरायाँ कानपुर (देहात) के श्री बनवारी अग्रवाल की सुशील सुलच्छनी पुत्री श्रीमती शांति देवी से हुआ था। इनके पाँच पुत्र तथा तीन पुत्रियाँ थी। सबसे बड़े पुत्र श्री दिनेश कुमार अग्रवाल जी है। इनका विवाह श्रीमती शशि जी से हुआ जिनकी तीन संन्तानें नीरज, पंकज तथा सरिता हैं। दूसरे पुत्र श्री राजेश कुमार अग्रवाल है जिनका विवाह श्रीमती लक्ष्मी देवी के साथ हुआ। इनकी तीन लड़कियाँ– जॉली, डॉली एवं भारती है। तीसरे पुत्र हृदेश कुमार अग्रवाल है जिनका विवाह श्रीमती शकुन्तला देवी के साथ सम्पन्न हुआ। इनकी संतानों में सबसें बड़े अमित, उनसे छोटे अभिषेक तथा अभिजीत है। श्री अग्रवालं जी के चौथे पुत्र का नाम श्री सन्तोष कुमार अग्रवाल है और इनकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती रानी अग्रवाल है। इनकी कुल दो संतानें हैं प्रथम कु0 साक्षी एवं दूसरी संतान के रूप में चिरंजीव कुलदीप हैं। पाँचवें पुत्र के रूप में दीपक कुमार जी हैं जिनका पाणिग्रहण संस्कार श्रीमती रेखा देवी से सम्पन्न हुआ। इनकी वर्तमान में तीन लड़कियाँ हैं जिनके नाम कु0 हनी, कु0 मिनी, तथा कु0 गुड़िया है। श्री अग्रवाल जी की संतति के क्रम में तीन बेटियाँ है। सबसे बड़ी बेटी श्रीमती सुमन है जिनका विवाह इटावा निवासी श्री किशन चन्द्र के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में अरविन्द तथा सचिन है। इसी क्रम में दूसरी बेटी श्रीमती सरोज है इनका विवाह भी इटावा के श्री शीतल प्रसाद के साथ हुआ। इनके दो पुत्र सोनू तथा मोनू एवं एक पुत्री कु0 स्वाति है। श्रीमती सुनीता देवी, अग्रवाल जी की तीसरी बेटी है। इनका विवाह आगरा के श्री अजय कुमार के साथ हुआ। इनके दो पुत्र

आशु तथा रिशु हैं।

श्री अग्रवाल जी ने सन् 1935 ई0 में हाईस्कूल की परिक्षा डी0ए0वी0 उरई से उत्तीर्ण की तथा इण्टरमीडियट की परीक्षा सन् 1937 ई0 में डी0ए0वी0 कानपुर से उत्तीर्ण की। आपने बी0ए0 की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात एल0टी0 आगरा से किया। आपने गाँधी इण्टर कालेज उरई में अध्यापन कार्य प्रारम्भ करके प्रधानाचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुए। इनकी मृत्यु 16 मार्च सन् 1998 ई0 में हुई।[133]

श्री रामबाबू अग्रवाल जी एक अच्छे साहित्यकार थे। इनकी प्रकाशित कृतियाँ 'देशगीत', 'देश प्रेम', एवं 'आलोक दर्शन' हैं। अप्रकाशित रचनाओं में 'दर्द की परछाइयाँ' एवं 'समाधान' है। इनकी रचनाओं में देशप्रेम मुखर हो उठा है। इन्हें देश की माटी से बहुत प्रेम था। इनकी यह रचना दृष्टव्य है–

समय जुझारू जब आ जाता, होड़ लगे बलिदान की।
मर मिटना है नई सर्जना, माटी हिन्दुस्तान की।।

× × ×

देश शक्ति ऐसी है ज्वाला, प्राण पतंगा बन जाते।
समझ सीढ़ियाँ हैं सुरपुर की, शूली पर चढ़–चढ़ जाते हैं।
लक्ष्य एक बस कटें बेड़ियाँ, ममतामयी महान की।
मर मिटना है नई सर्जना, माटी हिन्दुस्तान की।।[134]

कवि समाज में फैले अंधकार एवं अज्ञानता से त्रस्त दिखायी पड़ता है किन्तु वह हार मानने को तैयार नहीं है। यथा–

आशा के अंकुर जीते हैं, हारी बोलो कैसे कह दूँ।
घट में बूँदे शेष अभी, खाली बोलो कैसे कह दूँ।।

मंजिल ने नित ही ठुकराया, पर अनुभव खिलते गये नये।
गरमी ने फूल जला डाले, मधु ऋतु में खिलते गये नये।।
सरिता की सतत् रवानी है, स्थित अपने निश्चित पथ में।
नित नीर पुराना बहने पर, हिमखण्ड पिघलते गये नये।।
धरती छूले नभ की बदली, न्यारी बोलो कैसे कह दूँ।[135]

इसी क्रम में अग्रवाल जी की पुस्तक आलोक दर्शन में अनेक स्थानों पर कर्म पर अधिक महत्व दिया गया है। कवि जन को कर्म में प्रेरित करता हुआ और दार्शिनिक भावों की झलक लिये हुए यह कविता दृष्टव्य है–

जन जीवन में प्राण भरो, राही पथ का ध्यान धरो।
काम करो कुछ काम करो, नाम करो निर्माण करो।।[136]

डॉ0 श्रीनारायण अग्निहोत्री, अध्यक्ष हिन्दी विभाग गाँधी महाविद्यालय उरई ने एक समीक्षा में लिखा है–" चेतना पर वस्तु सत्य का प्रभुत्व है यद्यपि अवचेतन में आत्म सत्य की सत्ता का अन्त नहीं हुआ है। यह परिस्थितियों की प्रतिक्रिया मात्र है और बौद्धिक स्वीकृति से अधिक कुछ भी नहीं है किन्तु जिन परिवेशों में विचार सारिणी को प्रस्फुटित होने की थोड़ी सी राह मिली है उसे कवि की उदात्त भाव कल्पना ही माना जायेगा–

मारतण्ड का प्रखर पराक्रम निशा अंक में खो जाता है।
श्री शोभा सम्पन्न सुमन तक धूल–धूसरित हो जाता है।।
सपनों को हम जाने अपना अमिट अटल तकदीर बन गई।
तन के प्रति अपनत्व भावना द्रुपद सुता का चीर बन गई।।[137]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कवि की मधुर वाणी से एक ओर दार्शिनिक तत्व मुखरित हुए हैं तो दूसरी ओर राष्ट्र उत्थान के लिये नव युवकों के आवाहन

से उनके देश प्रेम की भावना को सहज रूप से अनुमान लगाया जा सकता है। उनके गीत नव युवकों का आवाहन करते हैं और प्रेरणा देते हुए दिख रहे हैं मानो कह रहे हों–'' हे देश के कर्णाधार! आगे बढ़कर थाम लो बागडोर ताकि देश को उन्नत बनाया जा सके।''

अतः मैं कह सकता हूँ कि कवि की कल्पना नये भारत की कल्पना है। समाज के प्रति उनके मन में पीड़ा थी, दर्द था।

भगीरथ सिंह ''साहित्याचार्य''

जनपद जालौन के छन्दशास्त्र के ज्ञाता साहित्याचार्य श्री भगीरथ सिंह जी का जन्म 20 अप्रैल सन् 1921 ई0 में नूरपुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके प्रपिता श्री हुलसी सिंह जी जिनके पुत्र श्री जोर सिंह हुए। जोर सिंह के पुत्र चन्दन सिंह हुए जो कवि भागीरथ सिंह जी के पिता थे। इनकी माता का नाम श्रीमती रुक्मणी देवी था जो महेवा निवासी श्री भूरे सिंह जी की सुपुत्री थीं। माता–पिता के उत्तम संस्कार कवि भगीरथ सिंह जी पर पड़े। इनका विवाह श्री सूखेलाल सिंह जी की सुपुत्री श्रीमती पार्वती जी के साथ हुआ था। इनकी तीन संतानों में एक पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। इनके पुत्र राजेन्द्र सिंह जी जनपद के श्रेष्ठ कवि हैं। कवि की बड़ी पुत्री का नाम श्रीमती सियावती है जो जैनपुर निवासी श्री रामकेश जी को व्याहीं गयी किन्तु दुर्भाग्य की बातहै कि श्री रामकेश जी का अल्पायु में ही निधन हो गया। उनकी केवल एक पुत्री श्रीमती भामा है। कवि की दूसरी पुत्री रमा देवी है जो लहोई (जालौन) निवासी श्री बलवन्त सिंह को ब्याही गयीं हैं। इनका एक पुत्र उदय भानसिंह एवं पुत्री श्रीमती सुमन है।

कवि भगीरथ सिंह जी ने उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। इन्होंने विशारद, साहित्य रत्न, साहित्यालंकार एवं भिषंग रत्न की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर जनपद का नाम रोशन किया। कविता लिखने का शौक इन्हें बचपन से था किन्तु रत्नेश जी धनुकुट्टी (कानपुर) वालों से इन्हें लेखन की प्रेरणा मिली।

कवि की प्रकाशित रचनाओं में खण्डकाव्य 'पुरु' 'दुर्योधन' (सुयोधन) 'मिलिवो न भूलियो' (घनाक्षरी), 'रति संयोग', 'अंगलक्षण प्रबोधिनी' (सामुद्रिक शास्त्र) 'वयः बोधिनी' 'युगावर्त', 'नायिका भेद' (ब्रजभाषा साहित्य) 'अविरल गीत संग्रह' है। इन रचनाओं के अतिरिक्त वे त्रैमासिक पत्रिका देवपगा निकालते थे। इन्हें अपनी कृति दुर्योधन पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा विमला साहित्य पुरस्कार 23 अक्टूबर सन् 1954 ई० में दिया गया था। इस पुरस्कार की राशि 200/– रु० थी। ये बुन्देल खण्ड के प्रथम पुरस्कृत व्यक्ति थे। इनकी दूसरी रचना 'मिलिवो न भूलियो' पर महाकवि काली सम्मान पुरस्कार विश्व यायावर डॉ० श्याम सिंह शशि द्वारा सन् 1991 में प्रदान किया गया था।

विपुल एवं उत्कृष्ट साहित्य का सृजन करने वाले साहित्यकार भगीरथ 'साहित्याचार्य' जी की मृत्यु 3 जुलाई सन् 1998 ई० में हो गयी।[138]

रीतिकालीन कवियों ने राधा जी का चरित्र रूप नायिका के रूप में चित्रित किया है। कवि भागीरथ सिंह जी ने इसको नकारते हुए 'मिलिवो न भूलियो' में कृष्ण की शक्ति राधा की स्तुति की है। इनकी ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

विश्वधारा विश्वत्मिका, विश्वाश्रया विश्वमाया,

सिन्धुजा सहस्र सिन्धु स्रोत सी अगाधिकार।

श्याम पुतरीन के समक्ष श्यामा श्यामाम्बरा,

शत–शत संतन की सुरति उपाधि का।।

गोपी गोप गाय सचराचर ब्रज मही के,

जीवन की विश्व में अखण्ड साध साधिका।

भानुजा की भक्ति बृषभानु की महानुरक्ति,

जय बरसाने में सुमूर्तिमान राधिका।।[139]

प्रकृति का चित्रण करने में कवि को महारत हासिल थी। छन्दों के माध्यम से किया गया प्रकृति चित्रण अनूठा है। यथा–

नीलिमा ओढ़नी ओढ़ निशाबधू,

चन्द्र संयोग सों चाँदनी ह्वै गई।

केलिकलान में ओस सुरापी,

छकी औ थकी उन्मादिनी ह्वै गई।।

साँझ सों मौन उपासना साध,

उनीदी हवै नाद निनादिनी ह्वै गई।

रागिनी ह्वै अनुराग में, रव्वै पुनि,

आपुहि वेणुसि वादिनी ह्वै गई।।[140]

प्रकृति चित्रण के अतिरिक्त कवि के आध्यात्मिक विचार खण्ड काव्य 'दुर्योधन' में प्रस्फुटित होकर पूर्णता की तरफ अग्रसर होते दिखायी देते हैं। दुर्योधन के अन्तिम क्षण में कवि ने पात्र दुर्योधन के द्वारा निम्न पंक्तियाँ कहलवायीं–

हे कृष्णा महायोगीश, तुम्हीं प्रेरक अग–जग के वनवारी।

भूलना भारत का भविष्य, भू, धेनु, भक्त भय हारी।।[141]

कवि के साथ साथ भगीरथ सिंह जी अच्छे वैद्य भी थे। लोग इनके आयुर्वेदिक इलाज से अपना रोग निवारण करते थे। यही आयुर्वेदिक ज्ञान इनकी कविताओं में भी प्रकट होता है–

पढ़ो सुनो चित में धरो, ये दोहे सुख सार।

त्याग और अनुराग की बातें रित अनुसार।।

बच निदाध लू लपट से, प्रात सांध्य कर काम।

तीन राखिये साथ ही, प्याज पुदीना आम।।

पाँय न त्यागौ पादुका, शीश न त्यागौ पाग।

कत्था पान कपूर सौ, बनो रहै मुख राग।।[142]

भगीरथ सिंह जी ने अपनी इहिलीला समाप्त करने के कुछ दिन पूर्व निम्न पंक्तियाँ लिखी। जो हृदय में एक कसक पैदा कर देती हैं। जीवन का उद्‌देश्य समझ में आ जाता है कि यह लोक हमारे लिये सुकर्म करने का है। हमें पुण्यरूपी पूँजी इकट्ठी करनी है–

समय थोड़ा है, एक दिन हम सबको अपने देश (परलोक) जाना ही है अतः–

यारो याद संजोयो रहियो,

भूल विसर मत जइयो।

जुगन–जुगन की राम जुहारें,

विरथा मत कर दइयो।।

अब हम जात देश अपने तुम,

गीत विदाई गइयो।

कहै तकदीर अधूरी साधैं,

तुम पूरी करवइयो।।[143]

युग कवि डॉ0 रामस्वरूप जी खरे ने 29 मई 2003 को उनकी सुस्मृति श्रद्धांजलि में ये पंक्तियाँ पढ़ी जों उनके कृतित्व को उद्‌घाटित करती हैं–

'देवपगा' प्रवाहित करके

वने भगीरथ आप।

अवगाहन कर ले जो उनके,

कट जाते त्रय ताप।।

'पुरु', 'दुर्योधन' खण्डकाव्य रच,

'रति संयोग' सुचाप।

'युगावन्तारवर' 'वयः वोधिनी',

'हनुमत्पश्चात्ताप'।।

पुनः 'अंग लक्षण प्रवोधिनी',

'श्याम शतक' नायिका भेद'।

विनती यह 'मिलिवो न भूलियो',

करियौ कबहुँ न खेद।।

सुस्मृति में सश्रद्ध श्रद्धांजलि,

स्वीकृत कर चुपचाप।

मुझे दीजिये वर बन जायें,

जीवन के अभिशाप।।

कवि मिलन सार व्यक्ति थे और छन्द शास्त्र पर परिचर्चा करना वे कभी नहीं भूलते थे। महाकवि माया हरिश्याम पारथ जी से कुछ परिचर्चा के सम्बन्ध में पारथ जी का यह स्मरणीय तथ्य–" अपने विशाल ललाट पर किंचित रेखाएं खींचते हुए उन्होंने अपना आमुख गगनोन्मुख किया, जृम्भणार्थमुख विस्फारित कर चुटकी बजाते हुए बोले– ऐ ऽ ऽ..... हाँ, एक काम करो। एक वर्णक्रम अर्थात 15 वर्णो वाले वृत्तों में देखो सम्भव है कोई न कोई छन्द पंच चामर के समानान्तर

गणों वाला अवश्य होगा। निराश एवं हतप्रभ सा मैं लीन हो गया 15 वर्णों वाले वृत्तों में। सहसा यह कहते हुए मैं उछल पड़ा मामा मिल गया ....मामा मिल गया, ओ मामा! यू आर ग्रेट।[144]

उनके अमर कृतित्व का अवगाहन करने पर हम पाते हैं कि कवि की साहित्य साधना उच्च कोटि की साधना है।जीवन के सभी पहलुओं पर उनका जीवन दर्शन अवलोकनीय है। निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि कवि की रचना धर्मिता श्रेष्ठ बन पड़ी है।

कृष्ण दयाल सक्सेना 'निःस्पृह'

जनपद जालौन के सुयोग्य, साहित्य मर्मज्ञ, सुकवि कृष्ण दयाल सक्सेना निःस्पृह जी का जन्म 27 जनवरी सन् 1923[145] ई0 में जालौन जनपद के जगम्मनपुर नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री विष्णु सक्सेना जी एक सद्गृहस्थ व्यक्ति थे। ये गाँधी वादी विचारधारा के परिपोषक थे। आपकी माता श्रीमती रामलली अत्यन्त विनम्र और आध्यात्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। माता पिता के सुसंस्कार कवि कृष्णदयाल सक्सेना पर पड़े। आपका विवाह राधाकृष्ण विसारिया 1186, रामनगर, उरई की परम सहिष्णु एवं उदार ह्दया पुत्री श्रीमती परमेश्वरी सक्सेना के साथ हुआ। इनके ज्येष्ठ पुत्र स्व0 सुकवि आदर्श 'प्रहरी' जी थे जो नगर के श्रेष्ठ कवियों में से एक थे। कवि के दूसरे एवं तीसरे पुत्र अशेन्द्र कुमार एवं अश्विनी कुमार 'राहुल' हैं। उनकी एक पुत्री विभा सक्सेना है।

आपकी प्राथमिक शिक्षा मुंशी धनूसिंह प्रधानाध्यापक की देख–रेख में सम्पन्न हुई। जिनका 'हिन्दी अभिनव कोश' उल्लेखनीय है। उनके संयमित एवं

अनुशासन प्रिय जीवन का आप पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। सन् 1939 ई0 में आपने कक्षा 7 में प्रवेश लिया जहाँ श्री किशोरी लाल खरे के कर्मठ एवं निर्भीक व्यक्तित्व की छाप आप पर पड़ी। परिणामस्वरूप अध्ययन अध्यापन को आपने अपना लक्ष्य बना लिया। दृढ़ लगन, अनन्य निष्ठा एवं अत्यधिक श्रम के माध्यम से आपने सन् 1952 ई0 में आगरा विश्व विद्यालय आगरा से अंग्रेजी, संस्कृत और हिन्दी साहित्य लेकर बी.ए की परीक्षा उत्तीर्ण की।[146]

1941 ई0 में शैशवकालीन आध्यात्मिकता के बीज का प्रस्फुटन स्वामी राम तीर्थ द्वारा प्रणीत पुस्तक in woods of god realization के गहन अध्ययन के परिणाम स्वरूप हुआ। सन् 1944 में संत रामाधार मिश्र जैसे साधु पुरुष से सम्पर्क हुआ। जिससे ज्ञान के नये क्षितिज उद्घाटित हुए। साथ ही कठिनतम् परिस्थिति में अडिगता एवं निरभिमानता तथा निःस्पृहता जैसे सद्गुण विकसित हुए, जिनकी अभिव्यक्ति उनकी रचनाओं में दिखाई देती है।[147]

छात्र जीवन से ही आप इतिहास की घटनाओं को कविताबद्ध करके कवि कर्म के लिये पर्याप्त प्रसिद्ध हो चुके थे। आपका जीवन अत्यन्त संघर्षमय रहा किन्तु ईश में अगाध आस्था दृढ़संकल्प शक्ति एवं कर्म के प्रति अगाध श्रद्धा विश्वास के मूलमन्त्र को सदैव आपने अपनाया। उन्होंने अपना साहित्यिक उपनाम 'निःस्पृह' अर्थात् इच्छाओं और वासनाओं से रहित या मुक्त रखा। [148] दुर्भाग्य की बात कहें या ईश्वर का प्रकोप आपके अन्तिम समय में आपके ज्येष्ठ पुत्र सुकवि 'आदर्श प्रहरी' की मृत्यु का महान शोक भी सहन करना पड़ा। यह महान साहित्यकार कठिनतम् परिस्थितियों को झेलते हुए दिनांक 5 मार्च सन् 2003 को[149]प्रातः 8 बजे ब्रह्मलीन हो गया।

आपकी प्रथम कविता 1960 ई0 में स्थानीय साप्ताहिक 'बुन्देला' में प्रकाशित

हुई।[150] तब से आपने अनेक गीतों का सृजन किया। आप अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू और संस्कृत आदि भाषाओं में लेखन की क्षमता रखते थे। हिन्दी में आपकी कृति ''प्रेरणा के स्रोत'' एवं अंग्रेजी में –'The Pearls of Poems' 1978 में प्रकाशित हो चुकी थीं।[151]

आप विद्यार्थी रत्न पुरस्कार से अध्यापन काल में सम्मानित हुए। 1978 में आपको बुन्देलखण्ड के विशिष्ट कवि तथा हिन्दी दिवस; पर 1996 में आपको 'काव्येन्दु' की सारस्वत सम्मानोपाधि से अभिनव साहित्य परिषद उरई द्वारा सम्मानित किया गया। 'शारदा स्तवन' तथा 'दया तुम्हारी अमूल्य धन हैं' (खण्डकाव्य) आपकी अप्रकाशित रचनाएँ हैं।[152]

आपकी ख्याति जनपद में अत्यन्त समर्पित एवं सुयोग्य अध्यापक की रही है। अपने शिष्यों के प्रति विशेष अनुराग रखते थे। आप अपने गुरु स्व0 श्री किशोरी लाल खरे (संस्थापक प्राचार्य डी0वी0 कालेज उरई) से अत्यन्त प्रभावित रहे। अपनी पुस्तक प्रेरणा के स्रोत में श्री खरे के प्रति निम्नांकित शब्दों में श्रद्धांजलि उनकी गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा का परिचायक है–

वाह रे! सुधन्य 'गुरु' अनन्य इस भूतल पर
रोम–रोम त्याग वह्नि प्रज्वलित प्रदीप था
जो अबोध शिष्य–बिन्दु मोती बनाता रम्य,
शिक्षण तुम्हारा कुछ विलक्षण सा सीप था।[153]

निः स्पृह जी के काव्य में आध्यात्मिकता एवं युगबोध का असाधारण समन्वय है। आप ने जहाँ ईश्वर में आस्था और कर्म में विश्वास वाली भावना को जीवन के पथ पर उतारा है वहीं इन्होंने सामाजिक युगबोध पर अपनी पैनी लेखनी चलायी है। कर्म कभी निष्फल नही जाता है। इस सन्दर्भ में उनका यह

गीत कितना सटीक है–

कर्म कदापि न निष्फल जाता,

मूल्यांकन के योग्य हुआ है,

फल की इच्छा रहित कर्म ही,

अनुसरण हुआ है केवल

सत्त प्रदर्शित अखिल धर्म ही,

स्वार्थ न जिसमें लेशमात्र भी,

वह निष्काम कर्म कहलाता,

कर्म कदापि न निष्फल जाता।[154]

कवि कर्म पर जितना विश्वास करता है वह उतना ही जीवन में आई चुनौतियों से लड़ने की प्रेरणा भी लेता है। यथा–

जाने कितनी बाधाओं को,

मैंने शशि सम हृदय लगाया।

कष्ट भार के बोझिल मन को,

विचलित होने पर समझाया।

भाँति शलभ की दुख की लौ पर,

मिटना ही सीखा जीवन में।

निभना ही सीखा जीवन में।।[155]

निः स्पृह जी के अनुसार जो इंसान प्रकृति के अनुकूल नहीं चलता हैं और पाशविक प्रवृत्ति की ओर अपने कदम बढ़ाता जाता है वह उसकी सबसे बड़ी भूल है क्योंकि अनुकूलता जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है और प्रतिकूलता जीवन को नष्ट कर देता है। कवि की निम्न पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

समय की गति चल रही प्रतिकूल ही है

यह समझना विश्व की बस भूल ही है,

आज मानव पाशविक फिर वृत्ति ले क्यों?

जबकि चलना प्रकृति के अनुकूल ही है।[156]

निः स्पृह जी की भाषा सरल व सुबोध है। बोध गम्य भाषा पाठकों को सीधे हृदय पर प्रभाव छोड़ती है।

कवि कृष्णदयाल सक्सेना निःस्पृह ईश्वर में आस्था एवं कर्म में विश्वास रखने वाले व्यक्ति थे। आपने अपने कठिन परिश्रम एवं त्याग के द्वारा कथनी और करनी को समान भाव से देखा है। उनके निधन से सचमुच साहित्य जगत को बहुत क्षति हुई है।

कवि के सन्दर्भ में गंगाचरण राजपूत पूर्व सांसद (हमीरपुर) के विचार– ''मेरी नजर में गुरुजी महाराज गाँधी की तरह थे। उन जैसे आदर्श और सादगीमय जीवन शायद ही कोई जी सकता है। उनका जीवन त्याग और तपस्या से भरा था। उन्होंने मेरे जीवन में एक अविस्मरणीय आध्यात्मिक ज्योति जगायीं। उनके गुणों को लिखने में मेरी लेखनी असमर्थ है। आज मैं जो भी हूँ उन्हीं की कृपा से हूँ।''[157]

डॉ0 दिनेश चन्द्र द्विवेदी रीडर एवं अध्यक्ष (हिन्दी) गाँधी महाविद्यालय उरई के शब्दों में–'' श्री सक्सेना जी धीर–गम्भीर व्यक्तित्व के धनी तथा शिवत्व की शुभता आत्मसात् किये कलाओं के प्रोत्साहक व प्रशंसक थे'।'[158]

डॉ0 अभयकरन सक्सेना रीडर डी0 वी0 कालेज उरई के शब्दों में–'' मेरे गुरु एवं पूज्य जीजा जी का निधन एक युग का अन्त है। वे विद्वत्ता सदाचरण एवं त्याग की प्रतिमूर्ति के रूप में याद किये जायेंगे।''[159]

बल्लभ दीक्षित
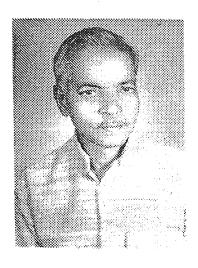
जनपद जालौन में प्रतिभाओं की कमी नहीं है किन्तु समीक्षकों की दृष्टि में न आ सकने के कारण वे अंधेरे गर्त में डूबते जा रहे हैं। ऐसे ही नामों में एक नाम श्री–श्री बल्लभ दीक्षित जी का है जिन्होंने अपनी प्रतिभा के द्वारा अपने समय में उत्कृष्ट साहित्य की रचना की और लोगों के द्वारा प्रशंसा प्राप्त की।

श्री–श्री बल्लभ दीक्षित जी का जन्म 3 जुलाई सन् 1930 ई0 को[160] कुठौंद में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री शिवबालक दीक्षित एवं माता जी का नाम श्रीमती बतासी दीक्षित था। आपका विवाह श्रीमती सिया देवी दीक्षित के साथ हुआ। आपकी पाँच सन्तानों में तीन पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। सबसे बड़े पुत्र श्री राजेश कुमार दीक्षित है। इनका विवाह ग्राम मुढ़ी फफूँद (इटावा) निवासी श्री चन्द्रदत्त दुबे की सुपुत्री श्रीमती प्रभा दीक्षित के साथ हुआ। इनकी चार सन्तानों में शेखर दीक्षित, शिखा दीक्षित, शिवा दीक्षित, शिवम् दीक्षित जो विद्यालयी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। कवि के दूसरे पुत्र राकेश कुमार दीक्षित है जिनका विवाह कल्पना दीक्षित के साथ हुआ। तीसरे पुत्र सुरेश कुमार दीक्षित हैं, इनका विवाह श्रीमती नीतू दीक्षित के साथ हुआ। आपके तीन पुत्र निखिल, रिशू एवं किशू है। श्री–श्री बल्लभ दीक्षित की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती सुमन त्रिपाठी का विवाह पटेलनगर उरई निवासी प्रकाश वीर त्रिपाठी के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री निवेदिता त्रिपाठी है। कवि की दूसरी पुत्री श्रीमती शशि अग्निहोत्री है जिनका विवाह अरुण कुमार अग्निहोत्री के साथ हुआ। इनकी तीन संतानों

में भावना, कामना व रोली है।

कवि की स्कूली शिक्षा इण्टरमीडिएट तक है। आप राजस्व विभाग में अमीन के पद पर कार्यरत रहे।[161]

आप इसी पद से सेवानिवृत्त हुए। आपकी मृत्यु 31 दिसम्बर सन् 1995 ई0[162] में हुई।

कवि की अभी तक कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई है। आपकी फुटकर रचनाएँ (हस्तलिखित) पुत्र श्री राजेश कुमार दीक्षित पिता की स्मृति के रूप में संजोये हुए हैं। कवि ने माँ सरस्वती की वन्दना से अपने काव्य की शुरुआत की है जो पारम्परिक है–

मेरी माँ! मेरी जगदम्वे! ओ अम्बे! तेरे गुण गाऊँ।

वीणा वादिनी! शरण पड़ा मैं, तू रूठी मैं तुझे मनाऊँ।।

अवनि से अम्वर तक ऐसे नेह भरे बादल घिर आये–

करे वृष्टि घनघोर सुधा की, जन–जन रसमय हो जाये।[163]

कवि दूसरों के साथ दिये गए दुःख को हँस–हँस के व्यतीत करना चाहता था। वह तो मौत की गोद में बैठकर भी जिन्दगी के तराने गुनगनाना चाहता है। इसी सन्दर्भ में कवि की ये पंक्तियाँ–

तुम रुलाने की कोशिश करो लाख पर,

आखिरी साँस तक मुस्करायेंगे हम,

मौत की गोद में बैठ कर के तुम्हें

जिन्दगी के तराने सुनायेंगे हम।[164]

कवि के लिये मृत्यु एक सुनहरा मौका है। वह जानता है कि मृत्यु जीव के लिये एक विश्राम स्थल है। बुढ़ापे में जीव की इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती

हैं। प्रयाण बेला गीत के माध्यम से कवि की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

प्रथम चरण की निशा चाँदनी आँगन में छाई,

धरती के हर कण में खुशियाँ, घर बटोर कर लाई,

प्रातः हो जब लगे पूर्णमा, पर्व दिवस आवेगा,

घर प्राणी गंगा–यमुना तट, स्नान पर्व पावेगा।

विचलित तन–मन विषय परिस्थिति देने लगी दिखाई

निश्चय ही अब चल देने की मंगल बेला आई।[165]

कार्तिक शुक्ल 14 सोमवार 6.11.95 रात्रि प्रथम चरण

कवि अपनी रचनाओं के माध्यम से शरीर की क्षणभंगुरता को बड़ी आसानी से स्वीकार कर लेता है। जीव शरीर को छोड़कर नहीं जाना चाहता है किन्तु फिर भी जाना पड़ता है। जीव के लिये यही तो एक विडम्बना है। कवि यही गाते–गाते इस संसार की नश्वरता को समझकर खुशी से इस संसार से विदा हो जाता है। कवि इस दर्शन को भली भाँति पहचान गया था और अपने जीवन में उतारा भी है। कहा भी गया है कि जीवन और दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। यह जनपद के लिये बड़े गौरव की बात है कि इस धरती पर ऐसे साहित्यकारों ने जन्म लिया।

श्यामसुन्दर 'गुप्त'
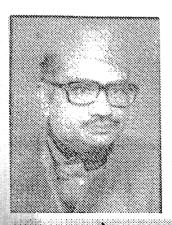
जनपद की साहित्यिक परम्परा में श्यामसुन्दर गुप्त का नाम भी आदर के साथ लिया जाता है। आपका जन्म 8 दिसम्बर सन् 1933 ई0 को उरई में हुआ था। आपके पिता श्री लालमन नीखरा एवं माता श्रीमती राजाबेटी थी। आपका विवाह श्रीमती राममूर्ति देवी के साथ हुआ।

आपकी सात सन्तानों में तीन पुत्र एवं चार पुत्रियाँ है। पुत्र क्रमशः विनय नीखरा, विजय नीखरा एवं अजय नीखरा है। पुत्रियों में श्रीमती सुमन गुप्ता, श्रीमती मीरा गुप्ता, श्रीमती संध्या गुप्ता एवं श्रीमती निशि गुप्ता है। आपने बी.ए. एवं एल.एल. बी. की परीक्षाएँ इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से उत्तीर्ण की।

आप विभिन्न आन्दोलनों में कई बार जेल जा चुके हैं। इसके साथ ही आपात काल में 19 मास तक मीसा के अन्तर्गत जेल में बन्द रहे। सन् 1977 में जनसंघ पार्टी से विधायक चुने गये। कुछ समय पश्चात् आप भाजपा के जिलाध्यक्ष भी रहे। सामाजिक क्षेत्रों में अनेक महत्वपूर्ण कार्य करते हुए आप 6 मार्च सन् 1982 में आप स्वर्गवासी हो गये।[166]

आप साप्ताहिक कौटिल्य' के संस्थापक सम्पादक रहे। आपने हिन्दी साहित्य को नवीन दिशा देने का प्रयास किया है। आपके काव्य की भाषा सरल व सरस है। बोधगम्य भाषा पाठक को भाव–विभोर कर देती है। निश्चित रूप से आप जनपद के अच्छे साहित्यकार थे।

डॉ० लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी'

कविवर लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी' बुन्देलखण्ड के लोकप्रिय कवि थे। आपके काव्य में विभिन्न रसों का पूर्ण परिपाक हुआ है। इन्होंने अपने उपनाम 'रागी' को पूर्ण रूप से सफल सिद्ध कर दिया है। **इनके राग के सम्बन्ध में श्री शिवानन्द मिश्र बुन्देला ने लिखा है–** "रागी साक्षात् रागावतार हैं।"[167]

रागी जी का जन्म सम्वत् 1993 (सन् 1936 ई0) में पं0 उमादत्त मिश्र संगीताचार्य के पाठकपुरा स्थित निवास में हुआ था। आपके स्व0 पू0 पिताजी शिवगणेश दीक्षित जो आध्यात्म एवं सरलता की साक्षात् मूर्ति थे एवं पूज्यनीया माता जी श्रीमती फूलकुँवर जो भक्ति एवं करुणा और दया की साक्षात् प्रतिमा

थी की कोख से इस काव्य प्रतिभा ने जन्म लिया था।[168] रागी जी के बड़े भाई श्री हरि गणेश दीक्षित थे। रागी जी का विवाह श्री विष्णुदत्त द्विवेदी की सुपुत्री श्रीमती शान्ती देवी के साथ हुआ। इनके तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ है। बड़े पुत्र श्री सन्तोष कुमार दीक्षित है इनका विवाह श्रीमती स्नेहलता दीक्षित के साथ हुआ। इनके तीन पुत्र राघवेन्द्र दीक्षित, भूपेन्द्र दीक्षित एवं बालकृष्ण दीक्षित है तथा एक पुत्री कु0 प्रियंका दीक्षित है। रागी के दूसरे पुत्र श्री अशोक कुमार दीक्षित हैं जो पशु अस्पताल में कार्यरत है। इनका विवाह गोहाण्ड (हमीरपुर) निवासी श्री विन्द्रावन तिवारी की सुपुत्री श्रीमती ज्ञानवती देवी के साथ हुआ। इनके दो पुत्र प्रशान्त दीक्षित एवं आकाश दीक्षित हैं।

कवि के सबसे छोटे पुत्र कृष्ण कुमार दीक्षित के असामयिक निधन ने कवि को तोड़ दिया था। पुत्र के साथ पुत्री स्व0 श्रीमती कल्पना अवस्थी की मृत्यु की पीड़ा को झेलते हुए जीवन के सत्य को स्वीकारते हुए भग्न हृदय में पीड़ा ने स्थायी रूप से मुकाम बना लिया था। रागी जी की बड़ी पुत्री किरन देवी बर्रा (कानपुर) निवासी श्री प्रेमनारायण दुवे की ब्याही गयीं हैं। इनके तीन पुत्र विनय, विकास एवं विवेक है। दूसरी पुत्री स्व0 श्रीमती कल्पना अवस्थी का विवाह बबीना निवासी श्री अखिलेश कुमार अवस्थी के साथ हुआ था किन्तु दुर्भाग्यवश एक पुत्र शिवम् को जन्म देकर असमय ही इस संसार से चल बसीं। तीसरी पुत्री साधना अवस्थी का विवाह रागी जी ने अपने वही जामात्रा श्री अखिलेश कुमार से कर दिया। इनकी दो सन्तानें शुभम् अवस्थी एवं सपना अवस्थी है।

'रागी जी की प्रारम्भिक शिक्षा दीक्षा आर्य कन्या हाईस्कूल उरई से प्रारम्भ हुई। ऐसा लगता है कि संगीत के वातावरण के प्रभाव ने कविवर रागी को बीर और हास्य रसों से तनिक हटकर शृंगार का कवि बना दिया। वैसे उनकी प्रतिभा

के फलस्वरूप वीर रस, हास्य रस, एवं राष्ट्रगीतों का प्रस्फुटन होता रहा है।[169]

कविवर रागी की काव्य प्रतिभा प्रस्फुटन की विचित्र घटना है। जब ये कालपी के एम0 एस0 वी0 इण्टर कालेज कालपी में पढ़ते थे तब ये पाठ्य पुस्तकों की नीरस पढ़ाई से ऊबकर यमुना नदी के किनारे मौरी घाट के पीपल वृक्ष के नीचे सन्नाटे में–''**पात पीपर की झर–झर झरें, मीन यमुना जल निर्मल करें।**'' गुनगुनाया करते थे। आपके गुरुवर एवं सहपाठी जो आपको एकाकी कवि कहकर परिहास करते थे, क्या पता था कि इस तरुण कवि में रागी की चेतना प्रतिभा प्रसारित होकर सौरभ बिखेरेगी एवं जीवन में काव्यानन्द का रस सर्जन करेगी। कविवर रागी का साहित्य के क्षेत्र में ही नहीं अपितु बुन्देलखण्ड केशरी पं0 चतुर्भुज शर्मा, पं0 गोविन्द नारायण तिवारी प्रभृति राजनैतिक नेताओं से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा।[170]

डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित रागी की समाज सेवा में चिकित्सा सम्बन्धी घोर रुचि होने के कारण आपने होम्योपैथी आयुर्वेद एवं आधुनिक चिकित्सा द्वारा समाज के गरीब वर्ग का कल्याण किया है। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती शान्ति दीक्षित ने सदैव समाज सेवा में हृदय से हाथ बँटाया है तथा नारी जाति के कष्टों के निवारण में आप हमेशा अग्रगण्य रही हैं।[171]

डॉ0 रागी जी की ज्ञान की खोज एवं काव्य प्रतिभा के विषय में आपके शिक्षित परिवार का बड़ा प्रभाव रहा है। आपके अग्रज श्री हरीगणेश दीक्षित कालपी में एम0एस0वी0 इण्टर कालेज में हिन्दी प्रवक्ता एवं अध्यात्म, समाज शास्त्र एवं राजनीति के सुयोग्य ज्ञाता हैं। आप एक कुशल शिक्षक ही नहीं समाज सेवी व्यक्ति एवं सिद्धान्तों के दृढ़ प्रवक्ता होने के कारण परिस्थितियों से जूझने में पूर्ण त्यागी रहकर गरीबों के हित चिन्तन में लगे रहते हैं।[172]

आपकी बहिन श्रीमती सावित्री देवी पाण्डे भी सद् व्यवहार, सरलता एवं अध्ययन–अध्यापन में जनपद में अपना विशिष्ट स्थान रखती थीं।

हिन्दी साहित्य की सेवा करते हुए यह नक्षत्र 6 अगस्त 1989 को[173] अस्त हो गया। इस नक्षत्र के अभाव में साहित्य जगत में सूनापन सा आ गया है।

रागी जी की प्रकाशित कृतियाँ 'सरित प्रवाह' एवं 'रागी के गीत' काव्य संग्रह है। रागी के गीत पुस्तक में पृष्ठों की संख्या 96 जिनमें 59 कविताएँ एवं 16 मुक्तक छन्द समाहित हैं।

कवि ने जीवन में त्रासदी एवं अनेक कठिनाइयों को स्वयं सहा है। इस कारण उनका अपना दुखवाद, सारे जहाँ की पीड़ा को समेटे हुए, इन गीतों में करुण रस की धारा फूट पड़ी है–

दु:ख तो मेरा भाई चारा,
सुख तो रहता मेहमान यहाँ।
इस दो दिन की मेहमानी में,
ओ दीप जलोगे कहाँ–कहाँ?[174]

जवान पुत्र की मृत्यु के बाद 'रागी' जी बिलकुल टूट से गये थे किन्तु उन्होंने ऐसी विकट परिस्थिति में भी जीना सीख लिया था। इनकी पत्नी श्रीमती शान्ति देवी तो और ही अधिक व्यथित रहने लगी थीं। इस कारण रागी जी अपनी पत्नी को समझाते हुए कहते थे–

माटी से मत प्यार करो प्रिय।
नश्वर है जीवन की वीणा।।
ठहरो ? झंकार करो मत प्रिय।
जिसको तुमने निज समझा था।।

वह काम तुम्हारे कब आया।

सुख में जिसने कुछ साथ दिया,

लेकिन दुख में है ठुकराया।।

ऐसे मतलब के पंथी का।

सोचो तो कौन ठिकाना है।।

जिसका पथ हरदम है न्यारा,

परदेश जिसे वीराना है।

हो चुका बहुत जो होना था,

अब तो तकरार करो मत प्रिय,

माटी से प्यार करो मत प्रिय।।[175]

कवि को अपनी माटी बुन्देलखण्ड से बहुत अधिक प्रेम है। वह उस मिट्टी को तथा वीरांगना झाँसी वाली रानी की प्रशंसा में गा उठता है–

नमन वीर बुन्देल भूमि को,

और बेतवा के जल को।

रानी के तुरंग की जय हो,

उसकी तलवार को नमन।[176]

कवि राष्ट्रीय प्रेम की भावना से ओत–प्रोत है। भारत के एक सिपाही के लिये जो अपने आपको मातृभूमि की बलबेदी पर अपना प्रसून शीश अर्पित कर देता है–

खूने शहीदां देखो कैसा रंग लाया है।

भारत का हर जवान तो दुनिया पै छाया है।।

× × ×

हर भारती जवान की देखो ये शान है।

मरता वतन पर शौक से देखी ये आन है।।[177]

आकाश के नक्षत्रों को देखकर कवि भावुक होकर उनके रहस्यों को सुलझाते हुए रहस्यवादी बनकर रात्रि का श्रृंगार करके गा उठता है। इसी में इनका छायावादी रूप झलक उठता है–

निशा की रानी सज श्रृंगार।

शून्य संग जब–जब आती।।

चुनरिया से छूकर युग चरण।

अकिंचन हिय कसकाती है।।[178]

कविवर रागी जी ने जीवन के कटु अनुभवों को बहुत करीब से देखा है– महसूस किया है। इसलिये वह इस नश्वर संसार के सम्बन्धों को झूठा करार देता है। मनुष्य के सारे सम्बन्ध तो नयनों का छलावा मात्र है। इन्ही सम्बन्धों को आधार बनाकर वह गा उठता है–

झूठे सम्बन्ध सभी।

झूठे अनुबन्ध सभी।।

बावरी बसुन्धरा की।

झूठी ही प्रीत है।।

× × ×

झूठा हर बन्धन है।

झूठा हर क्रन्दन है।।

झूँठी है हार और।

झूठी ही जीत है।।

झूठी ही प्रीत है।[179]

श्री नारायण चतुर्वेदी डी. लिट. भूत पूर्व शिक्षा और पुरातत्व निदेशक मध्य भारत, के शब्दों में– " श्री रागी जी भावना प्रधान कवि हैं। उनमें देश प्रेम का भी गहरा रंग है। बुन्देलखण्ड के तो वे बड़े भक्त है। इनकी भाषा और शिल्प उनके उपयुक्त है।"[180]

डॉ0 हरगोविन्द सिंह एम0ए0 साहित्य रत्न ब्रह्मानन्द महाविद्यालय राठ (हमीरपुर) के शब्दों में– "आध्यात्म देश भक्ति कर्मठता तथा पौरुष का सन्देश देने वाली रचनाओं का मैं हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।[181]

गिरिजा शंकर लाल सक्सेना 'स्वतन्त्र' के शब्दों में– "रागी जी बुन्देलखण्ड के लोकप्रिय कवि हैं, उनकी अनेक रचनाओं का रसास्वादन करने का सौभाग्य मुझे कई बार प्राप्त हुआ है। उनके गीतों में राष्ट्र को ऊँचा उठाने का बल है। सीधी सरल भाषा में अपनी भावाभिव्यक्ति करना उनके काव्य की विशेषता है।"[182]

कवि की भाषा सरल सुबोध एवं जन साधारण हेतु बोधगम्य है। आपके गीतों में भावात्मक एवं चित्रात्मक शैली के दर्शन होते हैं। कवि के काव्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि रागी जी की कविताओं में कलापक्ष की अपेक्षा भावपक्ष अधिक सबल रहा है। उनके गीत केवल मस्तिष्क की भाषा नहीं वरन् हृदय से निकले उद्‌गार हैं जो पंक्तिबद्ध होकर रागी के राग में समाहित होते चले गये हैं। रागी जी के काव्य में वैसे तो शृंगार, ओज एवं राष्ट्र प्रेम की भावना झलकती है, पर करुण रस तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह साकार रूप में भीगे नयनों से स्वयं कवि के सामने खड़ा हुआ हो।

शिवराम श्रीवास्तव 'मणीन्द्र'

शिव राम श्रीवास्तव 'मणीन्द्र' जी का जन्म लाला जगन्नाथ प्रसाद की कृषि भूमि वाले ग्राम रगेदा (उरई) में चैत्र शुक्ल अष्टमी सम्वत् 1969 (सन् 1912)[183] में हुआ था। आपके पिता लाला जगन्नाथ बनारस स्टेट के दीवान थे। स्वाभिमान के कारण उन्होंने बनारस छोड़कर उरई नगर के निकट राहिया ग्राम में कृषि योग्य भूमि खरीदकर खेती के कार्य को अपना पाथेय बनाया। मणीन्द्र जी में बचपन से ही काव्य प्रतिभा का प्रस्फुटन होने लगा था।

मणीन्द्र जी की प्रारम्भिक शिक्षा जिला हमीपुर स्थित ग्राम अमूँद तथा ग्राम गोहाण्ड में सम्पन्न हुई। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् आपने शिक्षण की यात्रा शासकीय हाई स्कूल उरई में तत्पश्चात् शेष सम्पूर्ण शिक्षा आपने कानपुर में प्राप्त की। मणीन्द्र जी ने बी0ए0, एल0एल0बी0 की शिक्षा सम्पूर्ण करके वकालत व्यवसाय के क्षेत्र में प्रवेश किया और आपके कवि स्वरूप की काव्य संज्ञा मिली 'मणीन्द्र' की।[184]

आपने स्वतन्त्रता संग्राम के आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। मणीन्द्र ने पं0 बेनी माधव तिवारी जो कि एक जागरुक स्वतन्त्रता सेनानी थे के सान्निध्य में सन् 1930 ई0 में अपने साथियों सहित माहिल तालाब के ऐतिहासिक घाट पर ब्रिटिश शासन को चुनौती देते हुए सार्वजनिक रूप से नमक बनाकर स्वदेशी स्वालम्बन के स्वाभिमान का विजय ध्वज मणीन्द्र जी ने फहराया। इस कार्य के फलस्वरूप ब्रिटानिया सरकार ने उन्हें कारावास की सजा दे दी।

आप महान क्रान्तिकारी वीर सपूत चन्द्रशेखर आजाद तथा श्री जगन्नाथ घोष आदि के सम्पर्क में आने पर मणीन्द्र जी भारत माता को आजाद कराने

हेतु जी जान से जुट गये। अपने अज्ञात वास के दौरान चन्द्रशेखर आजाद मणीन्द्र जी के घर में रहे और उनका आपस में भ्रातृ प्रेम जुड़ गया। आपको कई बार तनहाई की यातना झेलनी पड़ी।[185]

आप विलक्षण काव्य प्रतिभा के धनी थे। कविता के मंच पर सस्वर पाठ द्वारा श्रोताओं का मन मोह लेते थे। घनाक्षरी काव्य विधा के तो आप अद्वितीय कवि माने जाते थे। आपकों बालकृष्ण शर्मा नवीन' जी ने काव्य रचना की दिशा में विशेष प्रोत्साहित किया। महादेवी वर्मा, डॉ0 हरवंशराय 'बच्चन' तथा रामकुमार वर्मा जैसी तत्कालीन मूर्धन्य काव्य प्रतिभाओं के बीच उनके साथ अखिल भारतीय कवि सम्मेलनों के मंचों पर मणीन्द्र जी की काव्य स्वर धारा अजस्र रूप से प्रवाहित होने लगी थी।[186]

कवि बहुमुखी प्रतिभा का धनी साहित्यकार था। जहाँ वह देश के लिये सब कुछ न्योछावर करने को सदा तैयार रहा वहीं उसने साहित्य के क्षेत्र में अच्छी ख्याति अर्जित की है। कवि कभी भी हिन्दी के अपमान को सहन नहीं कर सकता था। ऐसे स्वाभिमानी मणीन्द्र जी साहित्य के क्षेत्र में सदा स्मरण किये जायेंगे।

इसी सन्दर्भ में कवि के जीवन की एक घटना है–'' एक बार कवि सनद् लेने आगरा गया हुआ था। वे अपने मित्रों सहित ताज देखने गये और वहीं बैठकर आपस में कविता से सम्बन्धित बातें करने लगे, तभी ताज के किसी कर्मचारी ने हिन्दी कविता की कटु आलोचना की । यह बात मणीन्द्र जी से सहन न हो सकी और उन्होंने बेंत उठाकर उसे सिर पर मार दिया। फिर क्या था पूरे आगरा में हड़कंप मच गया और हिन्दू मुस्लिम दंगा होते–होते बचा।[187]

गीत ग़ज़ल छन्दों के कुशल रचनाकार मणीन्द्र जी के काव्य आभार

देकर थकते नहीं है। किसी को नारी नेत्र धनुष वाण दिखाई देते हैं तो किसी को मूक भाषा को खोलते नजर आते हैं। यही कवि मणीन्द्र जी के 'बन्दी लोचन' कैसा धमाल करते है। कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

श्याम बरुनियों के सिंकचों से
श्यामल श्वेत रंग वाले,–
झाँक रहे थे युग बन्दी से,
श्याम विलोचन मतवाले।
लज्जा के प्रहरी ने आकर,
उन्हें अचानक झिझकाया।
सिहर उठे झुक पड़े कि वे,
थे विषम व्यवस्था के पाले।।
पलक पटल को खोल तिरीछी,
बीछी सी बंकिम चितवन।
डाल मेरे मानस की निधि को,
चोरी ले गये चोर नयन।
चोरी पर सहजोरी देखो–
बना गये अधरों को मौन–
उपालम्ब के शब्द युगल भी
कह न सका आतुर आनन।।[192]

आपकी रचनाओं में देश भक्ति का जज्बा विद्यमान है। आपने चीन शीर्षक कविता में चीन को ललकारते हुए कहा है–

ओ शिव के कैलाश सरोवर मानस के,

देकर थकते नहीं है। किसी को नारी नेत्र धनुष वाण दिखाई देते हैं तो किसी को मूक भाषा को खोलते नजर आते हैं। यही कवि मणीन्द्र जी के 'बन्दी लोचन' कैसा धमाल करते है। कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

श्याम बरुनियों के सिंकचों से
श्यामल श्वेत रंग वाले,–
झाँक रहे थे युग बन्दी से,
श्याम विलोचन मतवाले।
लज्जा के प्रहरी ने आकर,
उन्हें अचानक झिझकाया।
सिहर उठे झुक पड़े कि वे,
थे विषम व्यवस्था के पाले।।
पलक पटल को खोल तिरीछी,
बीछी सी बंकिम चितवन।
डाल मेरे मानस की निधि को,
चोरी ले गये चोर नयन।
चोरी पर सहजोरी देखो–
बना गये अधरों को मौन–
उपालम्ब के शब्द युगल भी
कह न सका आतुर आनन।।[192]

आपकी रचनाओं में देश भक्ति का जज्बा विद्यमान है। आपने चीन शीर्षक कविता में चीन को ललकारते हुए कहा है–

ओ शिव के कैलाश सरोवर मानस के,

भारतीय संस्कृति के तुम उद्गम थल हो।

ज़िस पर विहरे पावन चरण शिवा के है,

उस अनन्त माता के पाले भूतल हो।।

जिसने यह कह दिया नहीं तुम भारत के,

वह सचमुच उच्छृंखल है अज्ञानी है।

भारत के कण–कण अणु अणु में व्यापक है,

हिमांचली सुर सरिताओं का पानी है।।

X X X

अभी शंभु ने भी अपना प्रलयंकारी,

नहीं तीसरा नेत्र अभी तक खोला है।

कभी भारती के सामर्थ सपूतों ने,

आवाहन का मंत्र न अब तक बोला है।।

वरना तो चाऊ का चीन जलाने को,

भारत का बच्चा–बच्चा शोला है।।[193]

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कवि एक प्रतिभा सम्पन्न सहित्यकार है। आप ओज एवं शृंगार के सिद्ध हस्त कवि थे। छन्दों में आपको घनाक्षरी छन्द अधिक प्रिय थे। आपने अपने कविकर्म के माध्यम से अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को भी उकेरा है। निश्चित रूप से कवि में काव्य प्रतिभा विद्यमान थी। आप जनपद के सशक्त हस्ताक्षर थे।

आदर्श कुमार सक्सेना 'प्रहरी' :–

आदर्श कुमार सक्सेना 'प्रहरी' जनपद के ऐसे मूर्धन्य साहित्यकार थे जिन्होंने अल्प समय में ही साहित्यिक क्षेत्र में बुलंदियों को छूकर सदा के लिये अपना स्थान सुरक्षित

रखकर नक्षत्रों की दुनिया में अपना मुकाम बनाने के लिये प्रयाण कर गये। अपने अँच्छे स्वभाव एवं मृदुभाषण से सभी के हृदय में अपना स्थान बना लिया।

आदर्श कुमार सक्सेना 'प्रहरी' का जन्म 19 अप्रैल सन् 1950 ई0[194]को ललितपुर में हुआ था। आपके पिता श्री कृष्ण दयाल सक्सेना निःस्पृह व माता श्रीमती परमेश्वरी सक्सेना धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। पिता श्री निःस्पृह जी जनपद के अच्छे साहित्यकार थे। पिता के ये संस्कार बालक आदर्श कुमार पर भी पड़े। आपका विवाह इलाहाबाद निवासी श्री सालिकराम सक्सेना की सुपुत्री श्रीमती वन्दना सक्सेना के साथ हुआ। इनकी तीन सन्तानों में कु0 पूर्ति, कु0 प्रीति एवं कु0 तृप्ति सक्सेना है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ जी0आई0सी0 उरई से उत्तीर्ण की।बी0ए0 तथा एम0ए0 (हिन्दी) की परीक्षाएँ दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। आप भारतीय स्टेट बैंक उरई में गणक पद पर आसीन रहे किन्तु विधि का विधान कहें या जनपद का दुर्भाग्य यह यशस्वी साहित्यकार अल्पकाल में ही 25 मई सन् 2002[195]को सदा के लिये इस लोक से प्रयाण कर गया।

आपने गीत एवं कविताओं का सृजन किया। आपका एक काव्य संग्रह एवं गीत संग्रह प्रकाशित हो चुका है। आपका मुक्तक संग्रह प्रकाशनाधीन है। आपका गीत संग्रह 'प्यास लगी तो दर्द पिया है', उत्कृष्ट संग्रह है। इसी रचना से कवि को काव्य के क्षेत्र में विशेष पहचान प्राप्त हुई है।

आदर्श कुमार सक्सेना 'प्रहरी' सचमुच काव्य जगत के प्रहरी थें जिस प्रकार पहरेदार, अपने कर्तव्य का पालन पूरी निष्ठा के साथ करता है वैसे ही प्रहरी जी ने अपने उपनाम प्रहरी को सार्थक सिद्ध कर दिया हैं

आपकी प्रत्येक रचना सारगर्भित है। किसी भी रचना में कहीं पर भी अनर्गल प्रलाप नहीं है। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य है–

कड़ी धूप में आधा जीवन,

राहगीर की तरह जिया है।

प्यास लगी तो दर्द पिया है।।

लू के गरम थपेड़े झेले,

संघर्षों में खुलकर खेले।

बाधाओं की आई आँधी ।।

लेकिन पथ पर चले अकेले,

जलते पाँव कहीं न उफ तक।

होठों को चुपचाप सिया है।।

प्यास लगी..................................

क्या नहीं हुआ तपने में,

सिमिट गई नदियाँ अपने में।

व्यस्त हुआ सारा नभ मण्डल।।

ज्वाला की माला जपने में,

झुलसे उपवन व्याकुल तन–मन।

किसने यह अभिशाप दिया है।।

प्यास लगी तो दर्द पिया है।[196]

कवि ने सांसारिक दुःख को बहुत करीब से देखा है। बुद्ध का दुःखवाद आपकी रचनाओं में स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। पीर को प्यार से गुन गुनाते रहे ''शीर्षक कविता के माध्यम से उनके विचार दृष्टव्य हैं–

व्यर्थ की कल्पना से बहुत दूर हम,

हम नहीं वे जिन्हें स्वप्न आते रहे।

दर्द अपना पराया, किसी का सही,

पीर को प्यार से गुनगुनाते रहे।।

एक मेला लगा, फिर नगर जगमगा,

सा उठा, किन्तु प्रतिबिम्ब भाये नहीं।

किन्तु जिनको रहा खोजता यह हृदय,

लौटकर वे कभी मीत आये नहीं।।

याद में हम कभी, साल भर में कभी,

मातृ श्रद्धा सुमन कुछ चढ़ाते रहे।

प्यार को..

तृप्ति की खोज मे यह विकल है जगत,

भोग से योग से और संयोग से।

किन्तु अपनी प्रबल एक अवधारणा,

स्वस्थ मन दूर रहता सदा रोग से,

गीत की यह कड़ी, मोतियों की लड़ी,

नित्य आराधना को हम पिन्हाते रहे।

पीर को प्यार...................................।[197]

कवि आदर्श कुमार सक्सेना 'प्रहरी' उच्चकोटि के कवि एवं विचारक थे। आपने अपने अल्प जीवन में ही जनपद को साहित्य के क्षेत्र में धनी बनाने में एक और कड़ी का काम किया है। निश्चित रूप से आप जन्मजात कवि थे।

आपके हृदय से संसार के सारे दुख पिघलकर लावा रूप में कागज पर उतरते गये। कवि को संसार एवं साहित्य के मर्म की पहचान थी। मैं इस महान साहित्यकार को उनकी इस उत्कृष्ट साहित्य सेवा के लिये श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

सन्तोष कुमार दीक्षित :–

दद्दा नाम से प्रसिद्ध कवि सन्तोष कुमार दीक्षित ने जनपद जालौन में अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा यहाँ के कवि समुदाय में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली थी। आप जनपदीय, प्रान्तीय और अन्य प्रान्तों के कवि सम्मेलनों में जाकर अपनी काव्य प्रतिभा से मंच को गौरवान्वित किया और जनपद जालौन का सम्मान बढ़ाया।

कवि सन्तोष कुमार दीक्षित का जन्म सन् 1942[198]ई0 में जनपद हमीरपुर के पौथिया नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री गोपीनाथ दीक्षित जिला कोषाधिकारी के पद पर कार्यरत थे। आपकी माता का नाम पितृमती दीक्षित था। आपका विवाह इटावा जनपद के ग्राम नगरिया निवासी श्री गनपत राव चतुर्वेदी की सुपुत्री श्रीमती प्रकाशिनी दीक्षित के साथ हुआ। आपका एक पुत्र संकल्प दीक्षित है जो वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहा है।

आपकी शिक्षा स्नातकोत्तर हिन्दी तथा विधि स्नातक तक है। आपने श्री गाँधी इण्टर कालेज उरई में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर शिक्षण कार्य किया किन्तु दुर्भाग्यवश वे शिक्षण कार्य करते हुए 24 जनवरी सन् 2000 ई0[199] में आप यह असार संसार छोड़ गये।

आप में काव्य रचना का प्रस्फुटन विद्यार्थी जीवन से आरम्भ हो गया

था। आपने बुन्देली तथा खड़ी बोली में काव्य रचनाएँ की। आपकी यह बुन्देली रचना दृष्टव्य है–

वितवा की रितवा में, ककरी के खितवा में,

टेरत किवटनिया है।[200]

कवि सन्तोष कुमार 'दीक्षित' मुख्य रूप से वीर रस के कवि थे। आप अपनी वीर रस की कविताएँ मंचों पर ओजस्वी स्वर में सुनाया करते थे। आपकी ओज की यह रचना दृष्टव्य है–

बरगद के पत्ते पर शिशु मुकुन्द से लेटे,

ध्वंसों के पृष्ठों पर सृष्टि की इबारत है।

सिंहों के दाँतों को हाथों से गिनते जो,

आज के भरत हैं तो कल के ये भारत हैं।[201]

कवि में साहित्य प्रतिभा विद्यार्थी जीवन से ही विद्यमान थी। यह प्रतिभा फलते–फूलते अपना विराट रूप धारण कर ही रही थी कि दुर्भाग्यवश कवि का असामयिक निधन हो गया। निश्चित रूप से कवि एक अच्छा साहित्यकार था। इनके निधन से साहित्य जगत को जो क्षति हुई है उसकी भरपाई होना मुश्किल प्रतीत हो रहा है।

1. श्रीमद्भगवदगीता, श्रीकृष्ण द्वैपायन व्यास अध्याय, श्लोक संख्या 27 साधात्मा टी0मोटे अक्षर वाली, संस्करण पच्चीसवाँ सं0 2036, गीताप्रेस गोरखपुर
2. 'जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता' लेखक– अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद' नमन प्रकाशन, उरई, पृ0सं0 5
3. 'जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता' लेखक– अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद' नमन प्रकाशन, उरई, पृ0सं0 5
4. अमर उजाला कानपुर, लेखक अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' लेख 'कब्जे में कैद है वीरबल का रंग महल,' दिनांक 21.01.03, पृ0सं011
5. जिला गजेटियर 1921, पृ0सं0 124
6. माडर्न वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान, लेखक–ग्रियर्सन, पृ0सं0 35
7. अमर उजाला, कानपुर लेखक–अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद' लेख– 'कब्जे में कैद है वीरबल का रंगमहल, दिनांक 21.01.2003, पृ0सं0 11
8. हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथो का संक्षिप्त विवरण भाग–2, पृ0सं0 480
9. मध्यकालीन साहित्य सन्दर्भ, सम्पादक– डॉ0 किशोरी लाल गुप्त, पृ0सं0 358
10. श्रीपति के कवित्त, याज्ञिक संग्रहालय ना0प्र0सभा काशी, हस्तलेख छंद सं03
11. मध्यकालीन साहित्य सन्दर्भ सम्पादक– डॉ0 किशोरी लाल गुप्त, पृ0सं0 358
12. 'काव्य सुधाकर'– श्रीपति हस्तलेख हि0सा0 सम्मेलन प्रयाग, पृ0सं0 2
13. काव्य सुधाकर – श्रीपति हस्तलेख हि0सा0 सम्मेलन प्रयाग, पृ0सं0 2
14. मध्यकालीन साहित्य सन्दर्भ, सम्पादक– डॉ0 किशोरी लाल गुप्त, पृ0सं0 358
15. काव्य सुधाकर – श्रीपति हस्तलेख हि0सा0 सम्मेलन प्रयाग, पृ0सं0 2
16. मध्यकालीन साहित्य सन्दर्भ, सम्पादक– डॉ0 किशोरी लाल गुप्त, पृ0सं0 359
17. काव्य सुधाकर – श्रीपति हस्तलेख हि0सा0 सम्मेलन प्रयाग, पृ0सं0 2
18. काव्य सरोज– श्रीपति मिश्र
19. जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 7

20. जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 7

21 श्रीपति मिश्र ग्रंथावली सम्पादक– लक्ष्मीधर मालदीव, पृ0सं0 81

22 श्रीपति मिश्र ग्रंथावली सम्पादक– लक्ष्मीधर मालदीव, पृ0सं0 129

23 श्रीपति मिश्र ग्रंथावली सम्पादक– लक्ष्मीधर मालदीव, पृ0सं0 165, 166

24. श्रीपति मिश्र ग्रंथावली सम्पादक– लक्ष्मीधर मालदीव प्राक्कथन से उद्घृत

25. जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 7

26. राष्ट्रभाषा सन्देश (हि0सा0स0प्रयाग) 15 जून 1985 में प्रकाशित चक्रधर मलिन का लेखांश पृ0सं0 2

27. सारस्वत वार्षिक पत्रिका (1999–2000) उरई विशेषांक सरस्वती विद्या मंदिर इण्टर कालेज, झाँसी रोड उरई सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त कुमुद पृ0सं062

28. काली कवि और उनका अप्रकाशित शोध ग्रंथ लेखक– डॉ0 ओम प्रकाश खरे, पृ0सं0 77

29. छवि रत्नम् सम्पादक– भगवानदास अग्रवाल, जीवन दर्पण काली कवि सम्पादक काली कला शोध केन्द्र उरई

30. दैनिक भास्कर झाँसी, 7 जून 1985 डॉ0 हरीमोहन लाल श्रीवास्तव के साहित्य चर्चा शीर्षक से उद्घृत पृ0 सं0 6

31. 'हनुमत्पताका' काली कवि द्वितीय सं0 1983 पुण्य तिथि 1 जून पर पठित श्रद्धांजलि पृ0 सं0 2

32. छवि रत्नम् सम्पादक– भगवानदास अग्रवाल, जीवन दर्पण काली कवि प्रकाशन महाकवि काली कला शोध केन्द्र उरई

33. छवि रत्नम् सम्पादक– भगवानदास अग्रवाल, जीवन दर्पण काली कवि प्रकाशन महाकवि काली कला शोध केन्द्र उरई उदाहरण 52 पृ0 सं0 8

34. छवि रत्नम् सम्पादक– भगवानदास अग्रवाल, जीवन दर्पण काली कवि प्रकाशन महाकवि काली कला शोध केन्द्र उरई उदाहरण 29 पृ0सं0 5

35. छवि रत्नम् रचयिता– काली कवि सं0 भगवानदास अग्रवाल प्रकाशक महाकवि काली कला शोध केन्द्र उरई पृ0सं0 16

36. छवि रत्नम् रचयिता– काली कवि सं0 भगवानदास अग्रवाल प्रकाशक महाकवि काली कला शोध केन्द्र उरई पृ0सं0 4, 5 व 9

37. उदय और विकास सम्पादक– रामचरण हयारण मित्र पृ0 सं0 286

38. उदय और विकास सम्पादक– रामचरण हयारण मित्र पृ0 सं0 286

39. उदय और विकास सम्पादक– रामचरण हयारण मित्र पृ0 सं0 290

40. साप्ताहिक हिन्दुस्तान नई दिल्ली जून 1962

41. गंगा गुण मंजरी– कवि पं0 काली दत्त 'नागर' पृ0सं0 13

42. छवि रत्नम् रचयिता– पं0 कालीदत्त नागर सं0 भगवानदास अग्रवाल प्रकाशन महाकवि काली कला शोध केन्द्र उरई पृ0 सं0 13

43, 44, 45. छवि रत्नम् रचयिता– पं0 श्री कालीदत्त नागर सं0 भगवानदास अग्रवाल प्रकाशक–महाकवि काली कला शोध केन्द्र उरई पृ0 सं0 13

46 जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 10

47. जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 7

48. जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 7

49. जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 7

50. रत्नेश 'शतक'– पं0 रामरत्न शर्मा 'रत्नेश' पृ0 सं0 2

51,52,53,54 कवि के पोते अनिल सक्सेना से साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 14.01.2003

55. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक सन् 1999–2000 सम्पादक–अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद' पृ0सं0 69

56,57,58,59,60,61,62,63,64 जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 11 व 12

65,66,67 जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 11

68,69,70,71. जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 12

72,73,74 जनपद जालौन : साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', नमन प्रकाशन उरई, प्र0सं0 12

75. झाँसी की रानी, लेखक–डॉ. आनन्द प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन कवि परिचय से

76. कवि के पुत्र श्री रवीन्द्र शर्मा से साक्षात्कार के द्वारा प्रस्तुत जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 23.09.2004

77.78 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं019

79 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं0 14, 15

80 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं0 23

81 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं0 217

82 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं0 199

83 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं0 213

84 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं0 5

85 झाँसी की रानी, रचयिता–डॉ. आनन्द, प्रकाशक– आनन्द प्रकाशन, जालौन पृ0सं0 3

86 पत्र गाँधी महाविद्यालय उरई के संस्थापक पं0 चर्तुभुज शर्मा के – राजेन्द्र नाथ शर्मा बी0एड0 विभाग गाँधी महाविद्यालय, उरई पृ0 सं0 2

87 पत्र गांधी महाविद्यालय उरई के संस्थापक पं0 चर्तुभुज शर्मा– राजेन्द्र नाथ शर्मा बी0एड0 विभाग गाँधी महाविद्यालय, उरई पृ0सं0 1

88 'विद्रोही की आत्मकथा' लेखक– पं0 चतुर्भुज शर्मा संपादक राधाकृष्ण अवस्थी,

सम्पादकीय पृष्ठ

89 'विद्रोही की आत्मकथा' लेखक– पं0 चतुर्भुज शर्मा संपादक– राधाकृष्ण अवस्थी, पृ0सं0 46

90 पत्र गाँधी महाविद्यालय के संस्थापक– पं0 चतुर्भुज शर्मा राजेन्द्र नाथ शर्मा बी0 एड0 विभाग गाँधी महाविद्यालय उरई पृ0सं0 1

91,92, 93, 94, 95– जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारतिा लेखक– अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद' नमन प्रकाशन उरई पृ0सं0 13 व 14

96 जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारतिा लेखक– अयोधाप्रसाद गुप्त 'कुमुद' नमन प्रकाशन उरई पृ0सं0 14

97 जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता लेखक– अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद' नमन प्रकाशन उरई पृ0सं0 13 व 14

98 'दिव्यलोक' रचयिता– मोहनलाल शाण्डिल्य 'मोहन' प्रकाशक–राधारमण शाण्डिल्य कोटरा जालौन उ0प्र0 पृ0सं0 21

99 दिव्यलोक रचयिता– मोहनलाल शाण्डिल्य 'मोहन' प्रकाशक–राधारमण शाण्डिल्य कोटरा जालौन उ0प्र0 पृ0सं0 9

100 कवि के दत्तक पुत्र श्री ओमनारायण पाठक से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 23/12/2004

101 'देवव्रत' (खण्डकाव्य) रचयिता– 'आरण्यक जी शुभकामना संन्देश से

102 कवि के दत्तक पुत्र श्री ओमनारायण पाठक से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 23/12/2004

103 'देवव्रत' (खण्डकाव्य) रचयिता– शिवसहाय 'आरण्यक' पृ0सं0 47, 48

104 'देवव्रत' (खण्डकाव्य) रचयिता– शिवसहाय 'आरण्यक' पृ0सं0 90

105 'देवव्रत' (खण्डकाव्य) रचयिता– शिवसहाय 'आरण्यक' शुभकामना सन्देश से

106 'देवव्रत' (खण्डकाव्यं) रचयिता– शिवसहाय 'आरण्यक' शुभकामना सन्देश से

107 कवि के सुपुत्र श्री रामजी कुमार सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 12/06/2004

108 कवि के सुपुत्र श्री रामजी कुमार सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 12/06/2004

109 कवि के सुपुत्र श्री रामजी कुमार सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 12/06/2004

110 कवि के सुपुत्र श्री रामजी कुमार सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 12/06/2004

111 स्वर्ण जयन्ती विशेषांक 1979–80, डी0ए0वी0 इण्टर कालेज उरई, सम्पादक– महेन्द्र प्रकाश गुप्त पृ0सं0 113

112 'गीत सरिता' रचयिता–बालकृष्ण शर्मा विकास कवि परिचय डॉ0 राम स्वरूप खरे के शब्दों में पृ0सं0 4

113 'विकास' जी की पोती कु0 सोनू वर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 18/02/2003

114 'विकास' जी की पोती कु0 सोनू वर्मा द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 18/02/2003

115. 'गीत सरिता' रचयिता–बालकृष्ण शर्मा विकास कवि परिचय डॉ0 राम स्वरूप खरे के शब्दों में पृ0सं0 4

116 'गीत सरिता' रचयिता–बालकृष्ण शर्मा विकास कवि परिचय डॉ0 राम स्वरूप खरे के शब्दों में पृ0सं0 5

117. 'गीत सरिता' रचयिता–बालकृष्ण शर्मा विकास कवि परिचय डॉ0 रामस्वरूप खरे के शब्दों में पृ0सं0 7

118. 'गीत सरिता' रचयिता–बालकृष्ण शर्मा विकास कवि परिचय डॉ0 राम स्वरूप खरे के शब्दों में पृ0सं0 32

119. 'गीत सरिता' रचयिता–बालकृष्ण शर्मा विकास कवि परिचय डॉ0 राम स्वरूप खरे के शब्दों में पृ0सं0 44

120. 'गीत सरिता' रचयिता–बालकृष्ण शर्मा विकास कवि परिचय डॉ0 राम स्वरूप खरे के शब्दों में पृ0सं0 57

121 अबला– बाबूराम गुबरेले आमुख, पृ0सं0 3

122 आञ्जनेय— बाबूराम गुबरेले पुरोवाक से उदघृत

123 आञ्जनेय— बाबूराम गुबरेले पुरोवाक से उदघृत

124 क्रांतिदूत— बाबूराम गुबरेले, प्रस्तावना, पृ0सं0 9

125 अभिनव साहित्य परिषद, उरई, साहित्य संगोष्ठी में पढ़ा गया शोध प्रपत्र दिनांक 10/11/88

126 अभिनव साहित्य परिषद, उरई, साहित्य संगोष्ठी में पढ़ा गया शोध प्रपत्र दिनांक 10/11/88

127 अभिनव साहित्य परिषद, उरई, साहित्य संगोष्ठी में पढ़ा गया शोध प्रपत्र दिनांक 10/11/88

128 अभिनव साहित्य परिषद, उरई, साहित्य संगोष्ठी में पढ़ा गया शोध प्रपत्र दिनांक 1/9/89

129 अभिनव साहित्य परिषद, उरई, साहित्य संगोष्ठी में पढ़ा गया शोध प्रपत्र दिनांक 1/9/89

130 'कैकेयी'— बाबूराम गुबरेले मतिमानन्मत से उद्घृत

131 'भीष्म की आत्म समीक्षा'— बाबूराम गुबरेले, प्राकक्थन से

132 'त्रिजटा'— बाबूराम गुबरेले प्रकाक्थन से

133 कवि के पुत्र श्री राजेश कुमार अग्रवाल से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 14.01.2003

134 'आलोक दर्शन' रचयिता— रामबाबू अग्रवाल प्र0सं016

135 'आलोक दर्शन' रचयिता— रामबाबू अग्रवाल प्र0सं046

136 'आलोक दर्शन' रचयिता— रामबाबू अग्रवाल प्र0सं0184

137 'आलोक दर्शन' रचयिता— रामबाबू अग्रवाल प्र0सं06

138 कवि के सुपुत्र श्री राजेन्द्रसिंह द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 14.05.03

139. 'देवा पगा' स्मृति विशेषांक विमोचन दिनांक 14 मई 1999 सं0 राजेन्द्रसिंह सेंगर, उरई पृ0 सं0 29

140. 'देवा पगा' स्मृति विशेषांक विमोचन दिनांक 14 मई 1999 सम्पादक– राजेन्द्रसिंह सेंगर, उरई पृ0 सं0 34

141. 'देवा पगा' स्मृति विशेषांक विमोचन दिनांक 14 मई 1999 सम्पादक– राजेन्द्रसिंह सेंगर, उरई पृ0 सं0 34

142. 'देवा पगा' स्मृति विशेषांक विमोचन दिनांक 14 मई 1999 सम्पादक– राजेन्द्रसिंह सेंगर, उरई पृ0 सं0 44, 45, 46

143. 'देवा पगा' स्मृति विशेषांक विमोचन दिनांक 14 मई 1999 सम्पादक– राजेन्द्रसिंह सेंगर, उरई पृ0 सं0 21

144. 'देवा पगा' त्रैमासिक स्मृति विशेषांक विमोचन दिनांक 14 मई 1999 सम्पादक– राजेन्द्रसिंह सेंगर, उरई पृ0 सं0 10

145. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 1

146. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 1

147. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 1

148. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 1

149. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 2

150. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 1

151. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 1

152. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 1 व 2

153. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 2

154. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 6

155. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 3

156. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 9

157. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 16

158. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 16

159. पुष्पांजलि, सम्पादक– डॉ0 अभयकरन सक्सेना, पृ0सं0 17

160,161 कवि की पुत्रवधु श्रीमती प्रभा दीक्षित से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार

का दिनांक 07/08/04

162 कवि की पुत्रवधु श्रीमती प्रभा दीक्षित से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 07/08/04

163. अप्रकाशित फुटकर रचनाएँ रचयिता– श्री वल्लभ दीक्षित

164. अप्रकाशित फुटकर रचनाएँ रचयिता– श्री वल्लभ दीक्षित

165. अप्रकाशित फुटकर रचनाएँ रचयिता– श्री वल्लभ दीक्षित

166. कवि के सुपुत्र श्री विनय नीखरा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 12.10.2004

167. 'रागी के गीत' रचयिता– लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी' डॉ0 'रागी' एक काव्य प्रतिभा के सम्बन्ध में– शिवानन्द मिश्र बुन्देला जी का कथन

168. 'रागी के गीत' रचयिता– लक्ष्मण गणेश दीक्षित रागी कवि परिख्य से उद्घृत

169. 'रागी के गीत' रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी' डॉ0 रागी के काव्य प्रतिभा से उद्घृत।

170. 'रागी के गीत' रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी' कवि की समीक्षा श्री शिवानन्द मिश्र बुन्देला द्वारा।

171. 'रागी के गीत' रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी' कवि की समीक्षा श्री शिवानन्द मिश्र बुन्देला द्वारा।

172. 'रागी के गीत' रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित 'रागी' कवि की समीक्षा श्री शिवानन्द मिश्र बुन्देला द्वारा।

173. रागी की धर्मपत्नी श्रीमती शान्ती देवी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार क दिनांक 09.01.2003

174. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित पृ0सं0 68

175. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित पृ0सं0 16

176. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित पृ0सं0 35

177. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित पृ0सं0 44

178. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित पृ0सं0 71

179. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित पृ0सं0 78, 79

180. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित शुभ सन्देश धारा से उद्घृत

181. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित शुभ सन्देश धारा से उद्घृत

182. रागी के गीत रचयिता– डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित शुभ सन्देश धारा से उद्घृत

183. अप्रकाशित ग्रंथ 'हँसते फूलते' सम्पादक– राजेन्द्र श्रीवास्तव लल्ला एवं गीतेश जी।

184. अप्रकाशित ग्रंथ 'हँसते फूलते' सम्पादक– राजेन्द्र श्रीवास्तव लल्ला एवं गीतेश जी।

185. 'हँसते फूल अप्रकाशित ग्रंथ सम्पादक– राजेन्द्र लल्ला एवं गीतेश जी पृ0सं0 7

186. 'हँसते फूल अप्रकाशित ग्रंथ सम्पादक– राजेन्द्र लल्ला एवं गीतेश जी पृ0सं0 7

187,188,189,190 : 'हँसते फूल अप्रकाशित ग्रंथ सम्पादक– राजेन्द्र लल्ला एवं गीतेश जी पृ0सं0 7 व 8

191. 'हँसते फूल अप्रकाशित ग्रंथ सम्पादक– राजेन्द्र लल्ला एवं गीतेश जी पृ0सं0 8

192. 'हँसते फूल अप्रकाशित ग्रंथ सम्पादक– राजेन्द्र लल्ला एवं गीतेश जी पृ0सं0 23

193. 'हँसते फूल अप्रकाशित ग्रंथ सम्पादक– राजेन्द्र लल्ला एवं गीतेश जी पृ0सं0 42

194. कवि की सुपुत्री कु0 पूर्ति सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 24/01/03

195. कवि की सुपुत्री कु0 पूर्ति सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 24/01/03

196. सर्जना 2003 प्रकाशक– डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 236

197. सर्जना 2003 प्रकाशक– डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 237

198 अभिव्यक्ति वार्षिक पत्रिका 1999–2000, श्री गाँधी इण्टर कालेज, उरई (जालौन) पृ0सं0 24

199 अभिव्यक्ति वार्षिक पत्रिका 1999–2000, श्री गाँधी इण्टर कालेज, उरई (जालौन) पृ0सं0 24

200 अभिव्यक्ति वार्षिक पत्रिका 1999–2000, श्री गाँधी इण्टर कालेज, उरई (जालौन) पृ0सं0 24

201 अभिव्यक्ति वार्षिक पत्रिका 1999–2000, श्री गाँधी इण्टर कालेज, उरई (जालौन) पृ0सं0 25

तृतीय अध्याय

जनपद जालौन के लेखक

नाथूराम गुप्त

डॉ० जयदयाल सक्सेना

सुशीला मिश्रा

डॉ० राजेन्द्र कुमार पुरवार

डॉ० हरिमोहन पुरवार

क) निबन्धकार

अश्विनी कुमार ''आकाश''

ख) समीक्षाकार

डॉ० रामशंकर द्विवेदी

डॉ० दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव

डा० दिनेश चन्द्र द्विवेदी

डा० नारायण दास समाधिया

ग) कोषकार

धनू सिंह

डॉ० राम स्वरूप खरे

घ) उपन्यासकार

विनेन्द्र स्वरूप सक्सेना ''दीपेश''

प्रतिभा जौहरी

अमित कुमार द्विवेदी

ड) गद्य गीतकार

डॉ० राम स्वरूप खरे

च) कहानीकार

उषा सक्सेना

छ) नाटककार

रामरूप स्वर्णकार ''पंकज''

ज) अन्य विधाकार

रणवीरसिंह सेंगर

नाथूराम गुप्त

मृदुल स्वभाव, स्नेहसिक्त एवं अभिमान से रहित आचरण वाले साहित्यकार नाथूराम गुप्त एक ऐसा व्यक्तित्व है जो हर किसी को प्रभावित करता हैं। आध्यात्मिकता से ओत–प्रोत यह व्यक्ति साहित्य जगत में अपनी छटा बिखेर रहा है।

नाथूराम गुप्त जी का जन्म 7 मार्च सन् 1923 ई0 को जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री मुरलीधर गुप्त एवं माता स्व0 श्रीमती बड़ी बाई आध्यात्मिक विचारों की सद्गृहस्थ महिला थी। माता–पिता के अच्छे संस्कार बालक नाथूराम गुप्त पर पड़े। आपका विवाह नवाबगंज कानपुर निवासी श्री बाबूलाल जी की सुपुत्री श्रीमती शिवकली देवी के साथ हुआ। आपकी पाँच संतानों में दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हैं। आपके बड़े पुत्र विवेक कुमार का विवाह श्रीमती राजकुमारी गुप्ता के साथ हुआ। इनकी चार संतानों में वैभव, राहुल, शुभम् एवं कु0 कोमल है जो वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। दूसरे पुत्र के रूप में विजय कुमार है जो अभी अविवाहित हैं। साहित्यकार की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती शशिकला का विवाह लखनऊ निवासी श्री विकास गुप्त (इंजीनियर) के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में एक पुत्र ध्रुव गुप्त जो स्टेट बैंक में मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं तथा पुत्री पूजा गुप्ता इंजीनियरिंग की तृतीय वर्ष की छात्रा है। साहित्यकार की दूसरी पुत्री श्रीमती मंजु गुप्ता का विवाह मूसानगर (कानपुर देहात) निवासी डॉ0 नरेन्द्र दास (हार्ट स्पेशलिस्ट) के साथ हुआ। इनका एक पुत्र सौमित्र है। गुप्त जी की तीसरी पुत्री श्रीमती निधि गुप्ता का

विवाह मुजफ्फरपुर निवासी श्री सुरेश गुप्त के साथ हुआ जो चार्टेड एकाउण्टेड के पद पर कार्यरत हैं। इनकी दो संतानों में आयुष गुप्त एवं कु0 अंकिता गुप्ता है।

साहित्यकार नाथूराम गुप्त अच्छे व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार हैं। आपका शरीर सौष्ठव अच्छा है। सिर के बाल छोटे–छोटे एवं चेहरा क्लीन सेव्ड है। नियमित व्यायाम आपकी दिनचर्या में शामिल है। सुबह घूमना, स्नान करना आपके स्वास्थ्य जीवन का राज बताते हैं। भारतीय वेशभूषा धोती कुरता इनका पसन्दीदा पहनावा है।

आपकी स्कूली शिक्षा कक्षा 7 तक है। यह परीक्षा आपने सन् 1936 ई0 में उत्तीर्ण की थी। आपको लेखन की प्रेरणा राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त से मिली।

आपने 1942 के आन्दोलन में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया और इसी कारण आपको बहुत समय तक भूमिगत रहना पड़ा था। इस आन्दोलन की प्रेरणा गायत्री प्रज्ञा पीठ के संस्थापक पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य से सितम्बर 1942 ई0 की मुलाकात से मिली।

आपने 1975 के बन्दी जीवन से लेखन कार्य शुरू कर दिया था।[1]

आपकी प्रकाशित कृतियों में 'मानव धर्म' 'श्री वाल्मीकीय रामायण दिग्दर्शन, गीता जीवन दर्शन, 'नीतिसंक्षेप दर्शन' 'वेद और जीवन', 'उपनिषद नवनीति' और 'आरोग्य साधन' है।

आपने वेद, उपनिषदों, पुराणों, रामायण एवं महाभारत के उन प्रसंगों को उठाया है जो मानव जीवन के लिये उपयोगी है। बहुत बड़े ग्रंथ होने के कारण साथ ही संस्कृत भाषा में लिखे जाने के कारण वे सर्वसाधारण की

पहुँच से बाहर हैं। नाथूराम गुप्त जी ने उन प्रसंगों को लेकर सरल भाषा में उदाहरण एवं उद्धरण देकर उनकी अच्छी व्याख्या की है जो पाठक को सहज ही ग्राह्य हो जाती है।

नीतिशास्त्र के अनुसार –दूसरों का धन छीनना, पराई स्त्री पर हाथ डालना और मित्रों के ऊपर सन्देह करना– ये तीनो पापकर्म नाश करने वाले हैं।[2] इसकी लेखक ने विशद व्याख्या की है।

आपने खड़ी बोली एवं उपदेशात्मक शैली में साहित्य रचना की है। लेखक को यह अभीष्ट था क्योंकि हमारे धार्मिक ग्रंथों में मानव मूल्य के निर्माण हेतु जगह–जगह पात्रों के माध्यम से उपदेश दिलवाये गये है। आपकी भाषा से सम्बन्धित यह उद्धरण प्रस्तुत है–

शासक के दया–क्षमता का परिणाम हम अब तक भुगत रहे है। पृथ्वीराज चौहान ने सत्रह बार सुल्तान मुहम्मद गौरी को पराजित कर उसे क्षमा–दान कर वापिस जाने दिया। अठारहवीं बार उसने उन्हें परास्त कर केवल शासन च्युत ही नहीं कर दिया उनकी दोनों आँख निकलवा ली तथा यही क्षमा का व्यवहार हमारे ऊपर विदेशी गुलामी के सूत्रपात का कारण बना।[3]

नाथूराम गुप्त ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने वेद, पुराण, रामायण आदि से मानव के विकास हेतु जो मूल्य उसमें संचित है उन मूल्यों को खोजकर उन्हे पुस्तक के माध्यम से हमारे सामने प्रस्तुत किया है। ह्वास होती नैतिकता के लिये ये मूल्य मानवता के लिये औषधि हैं। इन मूल्यों में कवि ने अपने संचित अनुभव भी प्रस्तुत किये है। जो श्लाघनीय है। उनका कहना है– **"जो वैद्य ही रोगी है उसकी बात का विश्वास नहीं करना चाहिए।"** यह

वाक्य उनके लेखन के लिये खरा साबित होता है क्योंकि उन्होंने जिस आचरण को अपने लेखन में प्रयुक्त किया है पहले उन्होंने उसे स्वयं अपनाया है। आपका वेद, पुराणों, उपनिषदों एवं रामायण का अध्ययन भी अच्छा है।

डॉ० जयदयाल सक्सेना

ऐतिहासिक उपन्यासकार, नाट्य रूपान्तरकार एवं वैदिक भारत की वैज्ञानिक विवेचना करने वाले डॉ0 जयदयाल सक्सेना का जन्म ग्राम कोटरा तहसील उरई (जालौन) में 8 फवरी सन् 1925[4] ई0 को हुआ। आपके पिता श्री रामनाथ सक्सेना एवं माता श्रीमती गोविन्द कुमारी जो रूरा अड्डू (जालौन) निवासी मुंशी हरसहाय सक्सेना की सुपुत्री थी। डॉ0 जयदयाल सक्सेना का विवाह हमीरपुर निवासी बाबू शिवप्रसाद सक्सेना की सुपुत्री श्रीमती सरला सक्सेना के साथ हुआ। आपकी चार संतानों में तीन पुत्र एवं एक पुत्री है। आपके बड़े पुत्र अजय सक्सेना का विवाह श्रीमती मंजु सक्सेना के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में कु0 सुरभि व कु0 रेणुका हैं। सक्सेना जी के दूसरे पुत्र संजय सक्सेना का विवाह श्रीमती नीलम सक्सेना के साथ हुआ। साहित्यकार के तीसरे पुत्र विजय सक्सेना है जो अभी अविवाहित हैं आपकी पुत्री श्रीमती इन्दु सक्सेना का विवाह इलाहाबाद निवासी श्री आदित्य कुमार सक्सेना के साथ हुआ है। इनकी एक पुत्री कु0 अनुभूति सक्सेना है।

आप एक तेजस्वी वक्ता है। प्रत्येक बात को तर्क के माध्यम से सिद्ध करना आपकी आदत में शामिल है। दुबला–पतला शरीर, चेहरे पर ओज, छोटे किन्तु पीछे की तरफ खिंचे आपके सफेद बाल क्लीन सेब्ड आपके

व्यक्तित्व को निखार देता है। पहनावा पेन्ट शर्ट एवं हाथ में छड़ी लिये हुए अजनारी रोड पर प्रतिदिन सुबह पाँच से छैः बजे के बीच पैदल घूमने के लिये निकलते हैं इनकी विद्वत्व मंडली अक्सर इनके साथ सुबह घूमने के लिये जाती है। साहित्य, विज्ञान एवं राजनीति विषय पर चर्चाएँ होती रहती हैं। अनेक बार मैंने उनकी वार्तालाप को सुना है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1945 ई0 व 1947 ई0 में गवर्मेन्ट हाईस्कूल उरई एवं जी0आई0सी0 झाँसी से उत्तीर्ण कीं। बी0ए0 तथा एम0ए0 की परीक्षा आपने व्यक्तिगत रूप से सन् 1951 एवं 1958 ई0 में डी.ए.वी. कालेज कानपुर से उत्तीर्ण की। आपने सन् 1977 ई0 में राजनीति शास्त्र विषय में दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई से ''महाभारत की राज्य व्यवस्था'' विषय पर अपना शोधकार्य पूर्ण किया और यहीं से सेवानिवृत्त भी हुए।

आपको लेखन की प्रेरणा विद्यार्थी जीवन में प्रतियोगिता कहानी में पुरस्कृत होने से मिली।

सम्प्रति आप सी.पी.ए. काउन्सिल के जिला सदस्य हैं।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'पुराकथाओं का वैज्ञानिक विवेचन' अमर आल्हा (नाटक) है। अप्रकाशित रचनाओं में 'लाखा पातुर' वैदिक भारत तथा संध्या की परछाइयाँ, (गुप्तकालीन ऐतिहासिक उपन्यास) हैं। इसके साथ ही आपने मुंशी प्रेमचन्द्र द्वारा रचित कहानी 'कफन' का नाट्य रूपान्तर किया है। 'आखिर कब तक' जमशेदपुर में हुए हिन्दू–मुस्लिम दंगों पर आधारित वीडियो फिल्म है।[5]

'अमर आल्हा' (नाटक) में लेखक ने आल्हा के मानवीय पक्ष को

उजागर किया है। उस समय एक जाति विशेष (क्षत्रिय) को ही तलवार का धनी माना जाता था किन्तु आल्हा ने निम्न वर्ग को अपनी सेना में स्थान दिया। दलित उद्धार किया। आल्हा ने धनुवा तेली, लला तमोली, खुनखुन कोरी, मदन गड़रिया आदि सभी निम्न वर्ग की जातियों का एक संगठन बनाया जो युद्ध एवं राजनीति से दूर रहकर निम्न स्तरीय जीवन व्यतीत करते थे। यही कारण है कि इन जातियों ने आल्हा को पूरे तन–मन से सहयोग दिया और आल्हा को अपना आदर्श मानकर उसके कंधे से कंधा मिलाकर हर मोड़ पर उसके साथ रहे। नारी का उद्धार किया। गुप्तचर विभाग में सर्वप्रथम आल्हा ने ही नारी को स्थान दिया था जिसकी सर्वोसर्वा आल्हा की रानी मछला थी।

आपने अपनी 'वैदिक भारत' की रचना में जो कि वैदिक भारत एक लम्बा पीरियड है उस ढाई हजार ई0 पूर्व के विकास क्रम पर रोशनी डाली है वैदिक लोगों द्वारा खेती करना, पशुपालन, सामाजिक व्यवस्था आदि का क्रमवार वर्णन है।

डॉ0 जयदयाल सक्सेना उच्चकोटि के चिन्तक एवं विचारशील साहित्यकार हैं। ऐतिहासिक पात्रों की एवं उस समय के देशकाल की परम्परा को आधुनिक युगीन बनाकर तर्क के माध्यम से उन्हें तर्क संगत बना दिया है यह उनका मौलिक प्रयास है। हमारे स्वर्णिम इतिहास को जिन देशी एवं विदेशी आलोचकों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि भारतभूमि का कोई विशेष इतिहास ही नहीं है। यह उनके लिये करारा जवाब है।

सुशीला मिश्रा

जनपद जालौन की साहित्यिक परम्परा में श्रीमती सुशीला मिश्रा का नाम आदर पूर्वक लिया जाता है। आप समाज सेविका, राजनीतिज्ञ एवं आध्यात्मिक विचारों की विदुषी महिला हैं। जहां एक तरफ आपने अपने जीवन में आने वाले अनेक मोड़ों पर साहस और दिलेरी का परिचय दिया है, वहीं आपका मातृहृदय गरीब, बेसहारा एवं मातृहीन बच्चों के प्रति अपना असीम वात्सल्य लुटाता रहा है। आप–अपने जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्या से लड़ी है। इस लड़ाई में इन्हें कई बार पराजय मिली है तो कई बार इन्होंने अपनी मेहनत एवं लगन से इसी पराजय को विजय में बदला है।

श्रीमती सुशीला मिश्रा का जन्म 8 फरवरी सन् 1934 ई0 को इलाहाबाद में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री रामप्रसाद त्रिपाठी भू0 पू0 उपकुलपति सागर विश्वविद्यालय म0प्र0 थे। आपकी माता स्व0 श्रीमती–सुखराज कुमारी पूर्व व पश्चिम सभ्यता के बीच की कड़ी थी। आप राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत, प्रभावशाली एवं स्नेहिल महिला थी। ये संस्कार श्रीमती सुशीला मिश्रा को स्वाभाविक रूप से माँ से प्राप्त हो चुके थे। श्रीमती सुशीला मिश्रा इन संस्कृतियों में रची–बसी थीं फिर भी उनका हृदय तो पूरी तरह से भारतीय था। यही कारण है कि आपने अपना विवाह ग्रामीण परिवेश में जमींदार श्री जागेश्वरदयाल मिश्र के सुपुत्र श्री राजनारायण मिश्र से किया। यह आपका प्रेम विवाह था। श्री राजनारायण मिश्र मधुर स्वभाव व स्वाभिमानी चरित्र के जमींदार घराने के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। आप 36 वर्ष की आयु में कांग्रेस से पुखरायाँ तहसील भोगनी क्षेत्र कानपुर (देहात) से एम.एल.ए. चुन

लिये गये। सुखमय दाम्पत्य जीवन में अचानक ऐसा मोड़ आया कि किसी ने द्वेषान्ध होकर आपके पति श्री राजनारायण मिश्र की हत्या कर दी। आपकी पाँच सन्तानों में तीन पुत्रियाँ एवं दो पुत्र है।

आपकी उच्च शिक्षा एम.ए. (अर्थशास्त्र) तक है। आपने यह शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद से उत्तीर्ण की।

आपका सामाजिक क्षेत्र में समाज सेवा हेतु विशेष योगदान रहा है। आप राष्ट्रीय महिला संस्थान उ0प्र0 लखनऊ की उपाध्यक्षा रही जिसमें महिलाओं के सामाजिक उत्थान हेतु आपने अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। सन् 1999–2001 तक लोक अदालत की सदस्या रही। इसके अतिरिक्त आप उपभोक्ता सहकारी संघ की भू0पू0 डायरेक्टर रही हैं।

राजनीति के क्षेत्र में आप उ0प्र0 कांग्रेस कमेटी की सदस्या रहीं।

साहित्यिक क्षेत्र में आप कवयित्री, लेखिका एवं चित्रकार जैसे बहुमुखी व्यक्तित्व से सुशोभित हैं। आपने हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में अपने साहित्य को समृद्ध किया है।

आपने हिन्दी की गद्य विधाओं में कहानी संस्मरण, लघुकथा आदि में अपनी सफल लेखनी चलायी हैं। काव्य के क्षेत्र में आपकी भावात्मक कविताएँ उनके भावों को वहन करने में पूर्ण सक्षम है।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में– 'मोती पलकों के (काव्य संग्रह), हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबद, पिघलते पल (काव्य संग्रह) जे.एम.डी. पब्लिकेशन नई दिल्ली आदि है। गद्य विधा में आप द्वारा रचित प्रकाशित रचनाऐं– घरौदा (कहानी संग्रह), स्मृतियों का आंचल, (संस्मरण) प्रकाशक जे.एम.डी. पब्लिकेशन नई दिल्ली आदि हैं। इसके अतिरिक्त अप्रकाशित रचनाओं में 'गीता' (काव्यमय

भावार्थ सहित) और आवाजें (लेख संग्रह) आदि हैं।

आप 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से ओत–प्रोत हैं। आप छोटे बच्चों, दलित, शोषितों एवं गरीबों के प्रति हमेशा दयालु रहीं है। लेखिका श्रीमती सुशीला मिश्रा के साहित्य में भी ये भाव स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं। आपके द्वारा संस्थापित राजनारायण बालिका विद्यालय उरई में पढ़ने वाले बच्चों के प्रति उनके ये भाव–

'बच्चों में मन लगा रहता। प्रत्येक वर्ष नये बच्चे आते और जीवन में नयी स्फूर्ति प्रदान करते हैं। उनकी मुस्कुराहट में मेरे सपने साकार होते और पलों को पंख लग जाते, दिन कब बीत जाता, पता ही नहीं लगता है।[6]

लेखिका को जीवन में अनेक कटु अनुभवों से होकर गुजरना पड़ा है। आपकी भाभी के निधन पर आपके हृदय की यह सोयी पीड़ा जाग उठी है। उस समय कैसा प्रतीत होता होगा जहां एक औरत जन्म से लेकर युवावस्था तक का समय अपने माता–पिता, भाई–बहिन एवं भाभियों के साथ हँस खेलकर व्यतीत करती हैं माँ के पश्चात् भाभी ही माँ का उत्तरदायित्व निभाती है और जब वह भी सहारा छिन जाये तो सारा संसार खाली सा लगने लगता है। लेखिका के जीवन में वैसे भी दुख कम नहीं थे। इस दुख ने लेखिका के हृदय की कसक को और अधिक कसका दिया है। इस महान दुख के साथ लेखिका जीवन के अन्तिम सत्य को नहीं भूलती हैं यह सार्वभौमिक सत्य भी है कि संसार नाशवान है फिर पीड़ा कैसी? लेकिन यह तो बुद्धि का विषय है। हृदय का विषय तो एक दूसरे के प्रति मोह, दूसरे के दुख में दुखी होना है। लेखिका के इस गद्यांश में हृदय एवं बुद्धि पक्ष का अच्छा समन्वय है–

'आज भाभी के निधन से मायके शब्द पर कुठाराघात हुआ। भाई स्वयं बहुओं पर आश्रित हो गये। आयु तो अपने कदम बढ़ाती चली जाती है। कब, कौन साथ छोड़ दें, सभी विवश हैं, अन्त ही सत्य है।'[7]

आपका गद्य एवं पद्य दोनों में समान अधिकार है। आपके गद्य में काव्य जैसी सरसता है जो बरबस ही मन को मोह लेती हैं। भाषा कोमल व माधुर्य गुण से ओत–प्रोत है। हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं के माध्यम से आपने अपनी वाणी को मुखरित किया है। आपका पारिवारिक वातावरण हिन्दी व अंग्रेजी मिश्रित रहा है। आपकी सौतेली माँ अंग्रेज महिला थी इस कारण आपको अंग्रेजी भाषा के बोलने का ढंग भी अच्छी तरह मालूम है। आपके साहित्य में भावात्मक व विचारात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

इस तरह लेखिका के साहित्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि लेखिका ने संसार के सुख–दुख को अपना सुख–दुख समझा है लेखिका व्यष्टि से समष्टि की ओर तथा दुख में ही आनन्द का अनुभव करने लगती हैं। नारी उत्थान पर आपकी लेखनी प्रखरता के साथ आगे बढ़ी हैं यही लेखिका का उद्देश्य भी है।

डॉ० राजेन्द्र कुमार पुरवार

भारतीय राजनीति के ज्ञाता, अनुसन्धान की प्रवृत्ति, साहित्य मर्मज्ञ एवं पुरातन सम्बन्धी विषय वस्तु में रुचि रखने वाले डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरवार के व्यक्तित्व में अनेक गुण समाहित हैं इन्हीं गुणों के कारण जनपद में आपका विशिष्ट स्थान है।

डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरवार जी का जन्म 16 नवम्बर सन् 1948[8] ई0 को कालपी में हुआ था। आपके पिता श्री मंगलीप्रसाद पुरवार एवं माता श्रीमती गंगा देवी हैं। आपका विवाह स्व0 प्रो0 रक्षाकरदत्त विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई की सुपुत्री डॉ0 जयश्री पुरवार के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में एक पुत्र राजर्षि एवं सुपुत्री कु0 रंजिता है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1958 एवं 1960 ई0 में एम.एस.बी इण्टर कालेज कालपी से उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1963 एवं 1965 ई0 में बी.ए. एवं एम.ए. की परीक्षाएँ दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। सन् 1970 ई0 में आपने राजनीति शास्त्र विषय से पी–एच.डी. की उपाधि आगरा विश्वविद्यालय आगरा से उत्तीर्ण की।

आप विद्वत्ता के साथ ही आकर्षक व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार हैं। गोल चेहरा, बड़ी–बड़ी ऑंखे, पीछे की तरफ सफेद बाल, लम्बाकद, उत्तम स्वास्थ्य आपके व्यक्तित्व निर्माण में पूरी तरह सहायक है। इसके साथ ही आप मृदुभाषी एवं मिलनसार स्वभाव के व्यक्ति है। ऊँच–नीच, छोटे–बड़े का भाव उनमें नाम मात्र को भी नहीं है। छोटा हो या बड़ा सभी से आप प्रेमपूर्वक मिलते हैं और जटिल समस्याओं का निराकरण करने में आप सक्षम हैं।

आप सन् 1980 ई0 से हिन्दी साहित्य परिषद के महामंत्री पद पर आसीन हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा कालपी के साहित्यिक परिवेश से प्राप्त हुई। आपकी प्रकाशित रचनाएँ 'पुरातन गाथाओं का नगर कालपी' इसके

पृष्ठों की संख्या 30 है तथा प्रकाशन वर्ष 1976 ई0 है। दूसरी प्रकाशित पुस्तक 'भारतीय राजनीति एवं शासन' है। इसके पृष्ठों की संख्या 800 है तथा यह कृति सन् 1989 ई0 में प्रकाशित हुई।

डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरवार की भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। आपकी भाषा में विवरणात्मक, विचारात्मक के साथ ही गवेषणात्मक शैली के दर्शन होते हैं।

जनपद की पुरागाथाओं यहाँ के रीतिरिवाजों को उजागर करने का आपका प्रयास श्लाघनीय है। आप अपने जनपद के पुरातात्विक साहित्यिक एवं अन्य जनपदीय थातियों के प्रति निष्ठावान है। आपका जनपदीय प्रेम उच्चकोटि का है।

डॉ० हरीमोहन पुरवार

बुन्देली संस्कृति उसके इतिहास को संरक्षित एवं उद्घाटन करने वाले डॉ0 हरीमोहन पुरवार का जन्म 26 जनवरी सन् 1951[9] ई0 को जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में हुआ था। आपके पिता श्री श्यामसुन्दर लाल पुरवार एवं माता श्रीमती चित्रा देवी है। आपका विवाह कालपी निवासी श्री जगदीश प्रसाद पुरवार की सुपुत्री श्रीमती संध्या पुरवार के साथ हुआ। आपकी दो सन्तानों में पुत्र चि0 अभिषेक पुरवार एवं पुत्री कु0 जया पुरवार है।

डॉ0 हरीमोहन पुरवार एक आकर्षक व्यक्तित्व के धनी साहित्यकार हैं। रंग गोरा, चेहरे पर चमक एवं सिर के बाल छोटे और चेहरे पर मूँछें चेहरे को आकर्षक बना देती हैं। पहनावा धोती–कुरता एवं पेन्ट शर्ट है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1965 ई0 एवं 1967 ई0 मे राजकीय इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् आपने बी–एस–सी. की परीक्षा सन् 1970 ई0 में बरेली कालेज बरेली से उत्तीर्ण की। सन् 1981 ई0 में आपने विधि स्नातक की परीक्षा कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर से उत्तीर्ण की। कुछ समय पश्चात् आपने एम.ए. की परीक्षा सन् 1990 ई0 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से उत्तीर्ण की। इसी विश्व विद्यालय से आपने जनपद –जालौन के मध्यकालीन प्रमुख भवनों का ऐतिहासिक मूल्यांकन लेकर अपना शोध प्रबन्ध सन् 1996 ई0 में पूर्ण किया।

आपको लेखन की प्रेरणा अपनी धर्मपत्नी श्रीमती संध्या पुरवार से मिली।

आपने साक्षात्कार के दरम्यान अपनी विद्यार्थी जीवन की एक घटना सुनायी– ''जब मैं इण्टरमीडिएट में पढ़ता था। दीपावली निकट थी, वनस्पति विज्ञान के पीरियड में पटाखा बम चलाने पर कक्षाएँ 15 दिनों तक सस्पेंड रही थी और पूरी कक्षा को एक घण्टे मुर्गा बनाया गया था।''

आपने बुन्देलखण्ड के लोक जीवन पर अपनी प्रखर लेखनी चलायी है। आपकी प्रकाशित कृतियों में– 'जालौन जनपद में श्रीगणेश के विविध स्वरूप' इसके पृष्ठों की संख्या 40 है तथा प्रकाशन वर्ष सम्बत् 2053 है। 'बुन्देली जन जीवन एक परिचय', 'कुंवर हरदौल', जिसके पृष्ठों की संख्या 16 है। 'जनपद जालौन के शक्ति स्थल' (पृ0 सं0 71, प्रकाशन वर्ष 1997), बुन्देली लोक सुभाषित (पृ0सं 160, प्रकाशन वर्ष 2000), बुन्देली बाल लोक साहित्य (पृ0 सं0 80, प्रकाशन वर्ष 2001), बुन्देलखण्ड के लोक वाद्य (पृ0सं0 38, प्रकाशन वर्ष 2002), बुन्देलखण्ड के लोक चित्रकला (पृ0 सं0 105, प्रकाशन वर्ष 2002), बुन्देलखण्ड के लोक नृत्य (पृ0सं0 42 प्रकाशन वर्ष

2003), गौरवशाली कालपी (पृ0सं0 130, प्रकाशन वर्ष 2003)

अप्रकाशित रचनाओं में 'बुन्देलखण्ड के षोडश संस्कार,' बुन्देली लोकगीतों के विविध आयाम्, जालौन जनपद के मेला उत्सव, इतिहास एवं सांस्कृतिक लेखन (बुन्देली संस्कृति पर विशेष) आदि है।

उपलब्धियाँ : पुरातात्विक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक

आयाम प्रथम : पुरातात्विक संग्रह

1. पूर्ण रूपेण व्यक्तिगत स्तर पर बुन्देलखण्ड संग्रहालय उरई की संस्थापना 5 फरवरी 1988 में की।

अ) संग्रहालय में संग्रहीत प्रस्तर प्रतिमाएँ

भगवान श्री गणेश, भुवन भास्कर, देवी दुर्गा, देवी सरस्वती, भैरवी विद्याधर, भगवान विष्णु, भगवान शंकर आदि की छठवीं शताब्दी से अब तक की विभिन्न काल खण्डों की दुर्लभ प्रतिमाओं का अद्‌भुत संकलन है।

ब) संग्रहालय में संग्रहीत कलात्मक पात्र

ताँबे, पीतल के नक्काशीदार कलमदान, पानदान, गुथन्नी, पिचकारियाँ, गिलास, लोटे, फरशी, हुक्का, चिलमें, करवा, सरौते, आरती, दीपदान, हाथी, घोड़े, बैल, ऊँट, गाड़ियाँ आदि के विविध मनमोहक प्रकारों का संकलन

स) संग्रहालय में संग्रहीत पाण्डुलिपियाँ

संग्रहालय में लगभग 2000 हस्तलिखित प्राचीन पाण्डुलिपियों का संकलन है। जिनमें ऐतिहासिक, धार्मिक, आयुर्वेद से सम्बन्धित ज्योतिष आदि की दुर्लभ पाण्डुलिपियों के साथ साथ ताड़पत्र एवं प्राचीन दुर्लभ पत्रों का अनुपम संकलन है।

द) संग्रहालय में संग्रहीत चित्र

नंदी सवार शिव पार्वती, रथारूढ़ सूर्य, नरसिंहावतार, वराहअवतार, श्रीकृष्ण आदि के चित्रों के साथ साथ ज्योतिषाधारित चित्रावली बारहमासी चित्रावली आदि का अमूल्य संग्रह है। ये चित्र 16 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी के मध्य के है। मन्त्र चित्रों का भी अद्वितीय संगलन यहां पर उपलब्ध है।

य) संग्रहालय में संग्रहीत मुद्राएँ–

ईसापूर्व के आहत सिक्के, कौशाम्बी, हस्तिनापुर, गांधार, अवन्तिका, उज्जैन, मगध व विदिशा के सिक्के दक्षिण भारत, शालिवाहन व सतवाहन सिकन्दर, इन्डोबैक्ट्रियन सिक्के, चोल, चालुक्य के सिक्के यौधेय व कुषाण कालीन सिक्के, गुप्तकालीन छत्रप सिक्के, तुगलक खिलजी व मुगल कालीन सिक्के, ब्रिटिश भारत व विभिन्न रियासतों के सिक्कों सहित स्वतन्त्र भारत के सिक्के व नोट्स इस संग्रहालय की बहुमूल्य निधियाँ है।[10]

डॉ0 हरीमोहन पुरवार ने जनपदीय गौरव को सहेजने का सफलतम् प्रयास किया है। इसका साक्ष्य उनका स्वयं का लगभग 2 करोड़ कीमत का संग्रहालय है। सिक्के, प्रस्तर प्रतिमाएँ एवं हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ इनके संग्रहालय की शोभा बढ़ाते है। शोधार्थियों के लिये यह संग्रहालय बहुत ही उपयोगी होगा। आपका यह प्रयास स्तुत्य है।

निबन्धकार

अश्विनी कुमार 'आकाश'

अश्विनी कुमार 'आकाश' एक निबन्धकार, पत्रकार, एवं कवि हैं। आपने अपनी रचनाधर्मिता से समाज को नया आयाम देने का प्रयास किया है। आपका जन्म 10

फरवरी सन् 1972 ई0 को जनपद के मुख्यालय उरई में हुआ। आपके पिता श्री जुगलकिशोर मिश्र एवं माता श्रीमती शारदा मिश्रा है। आपका विवाह श्री हरदत्त मिश्र की सुपुत्री श्रीमती मधु मिश्रा के साथ हुआ। आपकी एक पुत्री बेबी अर्चिता 'आकाश उर्फ चिक्की है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1988 व 1990 ई0 में आदर्श इण्टर कालेज जहानाबाद (फतेहपुर) एवं गाँधी इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की तत्पश्चात् बी.ए. की परीक्षा सन् 1994 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। इसी कालेज से आपने एम.ए. की परीक्षा सन् 1997 ई0 में उत्तीर्ण की।

आप विद्यार्थी जीवन (स्नातक) में ही पत्रकारिता से जुड़ गये थे। आप अ0भा0 नवोदित साहित्यकार परिषद बुन्देलखण्ड क्षेत्र के संयोजक एवं संस्कार भारती उरई (जालौन) के सचिव पद पर कार्यरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा स्वतः ही अध्ययन काल से प्राप्त हुई।

आपने 150 से अधिक आलेख लिखे हैं। आपकी अप्रकाशित रचनाओं में 'आकाश' (निबन्ध संग्रह), 'स्वरूप जी की कहानियाँ', लघुशोध प्रबन्ध' हैं। आपकी मुख्य विधा–निबन्ध, आलेख, समीक्षा एवं कविता हैं। आपको निबन्ध विधा में अच्छी सफलता मिली हैं।

आपके उत्कृष्ट साहित्य लेखन को देखते हुए विभिन्न संस्थाओं ने आपको पुरस्कृत भी किया है, जिनमें श्यामजी अलंकरण, सरगम सम्मान, नर्मदा स्मृति पुरस्कार से सम्मानित किये जा चुके हैं।

आपकी रचनाओं में अनुसंधान की प्रवृत्ति पायी जाती है। आपकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। 'बच्चन के साहित्य में चिंतन की

अन्तर्धारा' शीर्षक से यह गद्यांश यहाँ दृष्टव्य है–

वस्तुतः जीवन–समर में क्षत–विक्षत योद्धा की भाँति वह विजय के लिये संवेग सम्मत बलिदान करने का अभियान जारी रखते हुए भी 'जीवित विजयी होने के बौद्धिक व्यूह की विरचनाएँ करता रहता है। उसके प्राण प्रगल्भित संवेगों के नीचे बौद्धिक चेतना की अन्तर्धारा प्रवाहित करती है।[11]

आपका दर्शन मानवतावादी चिन्तन एवं जन समस्याओं के निदान हेतु आत्ममंथन का सन्देश देना है। सम्प्रति . आप जिला एवं सत्र न्यायालय उरई (जालौन) में कार्यरत है।

ख) समीक्षाकार

डॉ० रामशंकर द्विवेदी

डॉ० रामशंकर द्विवेदी उच्च कोटि के विद्वान और अनेक भाषाओं के ज्ञाता है। इन्होंने धर्म, दर्शन, यात्रा आदि गम्भीर विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है। आपने बंगला साहित्य का अनुवाद हिन्दी भाषा में करके अपनी विद्वत्ता का परचम लहराया है।

डॉ० रामशंकर द्विवेदी का जन्म 9 सितम्बर सन् 1937[12]ई० ग्राम सिहारी पड़ैया (जालौन) में हुआ था। आपके पिता स्व० पं० रामाधीन द्विवेदी थे।

आपकी शिक्षा एम.ए. (हिन्दी) पी–एच.डी. तक है। आप दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई में हिन्दी विभागाध्यक्ष रहे है। सम्प्रति आप सेवानिवृत्त होकर घर में स्वाध्याय एवं लेखन कार्य में अपना समय व्यतीत करते हैं।

आपके लेखन के प्रेरणस्रोत रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय, आचार्य शिवपूजन पटेल, पं0 बनारसी दास चतुर्वेदी हैं।

आपके विचार में वह रचनाकार श्रेष्ठ है जिसने रचना के माध्यम से तादात्म्य स्थापित किया है और साहित्य को आगे बढ़ाया है। अनेक साहित्यकारों को आपने इस दिशा में प्रेरित भी किया है।

आपकी प्रमुख रुचियों में स्वाध्याय लेखन तथा गप्पबाजी है।

आपने अनेक संस्कृत ग्रंथो का हिन्दी में अनुवाद किया है। इसके साथ ही आपने बंगला लेखकों और कवियों की रचनाओं पर विशेष कार्य किया है।

आपकी प्रकाशित कृतियों में 'साहित्य और सौन्दर्य बोध' (समीक्षा), शरत् एवं जैनेन्द्र के उपन्यासों में वस्तु शिल्प (शोध समीक्षा)[13], दस्तक, झाँसी की रानी (अनुवाद), अग्नि शिखा (अनुवाद) है।

आपके उत्कृष्ट लेखन को देखते हुए विभिन्न संस्थाओं ने आपको पुरस्कृत भी किया है।

आपकी मुख्य विधा समीक्षा, संस्मरण एवं निबन्ध है। इसके साथ ही आपने संस्कृत एवं बंगला भाषा के अनेक ग्रंथों का हिन्दी में अनुवाद किया है। आप जनपद के अच्छे साहित्यकार हैं।

डॉ० दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव

डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव जी के विराट व्यक्तित्व में एक कला समीक्षक, चिन्तनशील विचारक, मर्मज्ञ, साहित्य–पारखी, अनुसन्धान की प्रवृत्ति एवं सूक्ष्म विश्लेषण कर्त्ता का व्यक्तित्व समाहित है। आपने अपने शोध कार्य के द्वारा रीति कालीन, भक्तिकालीन एवं सन्तसाहित्य में व्यवहृत क्रियापदों

का वर्णनात्मक अनुशीलन करके भाषा विज्ञान को नई ऊँचाइयाँ दी हैं जो आज 'मील का पत्थर' साबित हो रही हैं।

डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव जी का जन्म 9 जुलाई सन् 1940 ई0 में ग्राम नदीगाँव तहसील कोंच जिला जालौन में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री रघुबर दयाल श्रीवास्तव सेवढ़ा (दतिया) म0प्र0 के रहने वाले थे। आपकी माता स्व0 श्रीमती रामदुलारी श्रीवास्तव, स्व0 श्री हजारी प्रसाद श्रीवास्तव सासूती (दतिया) म0प्र0 की सुपुत्री थी। माता स्व0 श्रीमती रामदुलारी का जन्म नदीगाँव कोंच में हुआ था। साहित्यकार के माता–पिता धार्मिक एवं साहित्य प्रेमी थे। आपका विवाह उरई (जालौन) निवासी स्व0 श्री रामरतन लाल खरे की सुपुत्री श्रीमती शशि प्रभा खरे के साथ हुआ। श्रीमती शशिप्रभा सुशिक्षित एवं एक आदर्श गृहणी हैं। इनकी शिक्षा एम0ए0, बी.एड. तक है। आपकी पाँच संतानों में तीन पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र अभिनय श्रीवास्तव हैं, इनका विवाह श्रीमती मीना खरे के साथ हुआ। ब्लासम श्रीवास्तव एवं कु0 पर्शिय श्रीवास्तव इनके पुत्र एवं पुत्री है। साहित्यकार के दूसरे पुत्र श्री उन्मेष श्रीवास्तव हैं इनका विवाह श्रीमती मनोरमा खरे के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में कु0 सॉनेट श्रीवास्तव तथा ब्लूम श्रीवास्तव है। तीसरे पुत्र प्रत्यूष श्रीवास्तव का विवाह श्रीमती रजनी खरे के साथ हुआ। कु0 पायस श्रीवास्तव और मिल्की श्रीवास्तव इनकी दो संतानें हैं। साहित्यकार की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती अपर्णा खरे है जो प्रो0 उमेश खरे को ब्याही गयीं है। इनकी एक संतान सब्लाइम खरे है। दूसरी पुत्री श्रीमती अनुशंसा श्रीवास्तव है। इनका विवाह श्री उमाशंकर खरे के साथ हुआ। इनका एक पुत्र लिरिक खरे है।

डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव जी ने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की

परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1956 एवं 1958 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1960 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी महाविद्यालय से एम.ए. अंग्रेजी विषय की परीक्षा सन् 1962 ई0 में उत्तीर्ण की। तदुपरान्त एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षा एम.एल.बी. कालेज ग्वालियर से उत्तीर्ण की। आपने पी–एच.डी. तथा डी.लिट् (हिन्दी), डी.लिट् (भाषा विज्ञान) की उपाधि प्राप्त की। बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय से डी.लिट् की उपाधि प्राप्त करने वाले आप प्रथम व्यक्ति हैं।

डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव डायबिटीज, हाईब्लड प्रेशर एवं लूज मोशन से ग्रस्त हैं। उन्हीं के शब्दों में– ''यदि मैं अत्यधिक अस्वस्थ्य न होता तो भाषा और साहित्य (दोनों) पर और अनुसंधान करता।''[14]

साहित्यकार डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव की मुख्य विधा भाषा शास्त्र (व्याकरण) है। विद्यार्थी जीवन की एक घटना स्वयं साहित्यकार के शब्दों में – 'मेरे प्रसिद्ध विद्वान शिक्षक पाराशर जी की बी.ए. द्वितीय वर्ष की कक्षा में केशव के प्रसिद्ध पद **''भौंहें सुरचाप चारु प्रमुदित पयोधर''** की व्याख्या लिखाने के लिये दीनजी की टीका 'केशव कौमुदी' का अवलम्ब ग्रहण करना पड़ा था।[15]

आपकी प्रकाशित रचनाओं में डॉ0 रामस्वरूप खरे के कृतित्व की समीक्षा, डॉ0 द्विवेदी के सहयोग से सम्पादित 'गद्य विविधा, बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय से (द्वारा) बी..ए. प्रथम वर्ष की हिन्दी भाषा के पाठ्यक्रम में निर्धारित। डॉ0 द्विवेदी और डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव की लेखनी से संकलित 'निबन्धालोक' उक्त विश्वविद्यालय के बी.ए. द्वितीय वर्ष के हिन्दी साहित्य की अनिवार्य पुस्तक के रूप में प्रचलित।

'सरस्वती' 'भारतीय साहित्य' ना0प्र0 पत्रिका, परिषद पत्रिका, हिन्दी अनुशीलन, तुलसीदल, मधुस्यन्दी, चित्रेतना, प्रकाशित मन, युगचेतक एवं समकालीन सोच आदि में लगभग तीस गवेषणात्मक लेख प्रकाशित। एक लेख मनोरमा में भी।

'सत्यकथा', सच्चे किस्से, मधुस्यन्दी, दैनिकजागरण और दैनिक आज में एक कहानी प्रकाशित।

अप्रकाशित रचनाओं में हिन्दी के रीतिकालीन रीतिमुक्त काव्य में क्रियापद–संरचना (घनानन्द, बोधा, द्विजदेव, आलम एवं ठाकुर के सम्बन्ध में) आगरा विश्वविद्यालय की पी–एच.डी. की उपाधि के लिये स्वीकृत लगभग 450 पृष्ठीय गवेषणात्मक प्रबन्ध। उक्त ग्रंथ स्व0 डॉ0 रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल (तत्कालीन रीडर, क0मु0हिन्दी एवं भाषा विज्ञान विद्यापीठ आगरा) के निर्देशन में प्रणीत है।

2. मध्यकालीन हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में भक्ति–आन्दोलन के विविध सोपान– बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय की डी.लिट् की उपाधि के लिये लगभग 1300 पृष्ठीय अनुसन्धानात्मक ग्रंथ।

डॉ0 विश्वम्भर नाथ उपाध्याय (तत्कालीन कुलपति कानपुर विश्वविद्यालय), प्रो0 डॉ0 शुकदेवसिंह (बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय), डॉ0 विजयेन्द्र स्नातक (दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ0 छैलबिहारी गुप्त (अलीगढ़) तथा डॉ0 श्रीमती अरुणा उमटे (नागपुर) परीक्षकों ने इसकी मौलिकता की श्लाघा करते हुए इसे 'भक्ति का सागर' एंव भक्ति की एनसाइक्लोपीडिया आदि कहा है।

3. सन्त साहित्य में व्यवहृत क्रियापदों का वर्णनात्मक अनुशीलन

(कबीर, दादू, सुन्दरदास, चरनदास तथा अक्षर अनन्य के विशेष प्रंसग में), प्रो0 डॉ0 (श्रीमती) ऊषा सिन्हा अध्यक्ष भाषा विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय के निर्देशन में प्रणीत इस (लगभग 1400 पृष्ठीय) शोधात्मिका कृति पर उक्त विश्वविद्यालय से ही भाषा विज्ञान में डी.लिट्. की उपाधि 2002 ई0 में उपलब्ध। इसके भी परीक्षक प्रो0 डॉ0 नन्द किशोर शर्मा (कुलपति दरभंगा विश्वविद्यालय एवं पूर्व प्रति कुलपति बिहार वि0वि0) स्वयं डॉ0 सिन्हा (निर्देशक) तथा प्रो0 डॉ0 शुकदेव सिंह जैसे लब्ध प्रतिष्ठ मनीषी थे। प्रो0 डॉ0 शुकदेव सिंह ने लिखा है कि इस प्रबन्ध से लखनऊ विश्वविद्यालय की शोभा बढ़ेगी।

4. प्रसाद की सौन्दर्य चेतना एम.ए. का लघुशोध प्रबन्ध।

डबल डी.लिट्0 के सम्बन्ध में डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव से हुई भेंट में यह चर्चा उन्ही के शब्दों में –"स्व0 प्रो0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव इतिहास में डबल डी.लिट्. थे और प्रो0 हीरालाल शुक्ल (भोपाल वि0वि0) भाषा विज्ञान में डबल डी.लिट् हैं। अद्यावधि उपलब्ध सूचना के अनुसार मैं इस दृष्टि से भारत में तीसरा व्यक्ति हूँ। दो बार डी.लिट्. करने वाला कोई चौथा व्यक्ति अभी तक अश्रुत है।"[16]

आप जनपद के अच्छे साहित्यकार है साथ ही आपका व्यक्तित्व भी महान है। आपके इस महान व्यक्तित्व में महान आत्मा का वास है। इनके इस कथन से स्वयंसिद्ध हो जाता है– **"मैं साहित्यकार नहीं अपितु हिन्दी का सामान्य शिक्षार्थी हूँ तथा उसी का शिक्षक भी रह चुका हूँ। अपने प्रबन्ध की गरिमा को मेरे नाम से कलंकित न करें।"**

निः सन्देह डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य विद्वान

हैं। लेखन की प्रेरणा युगकवि डॉ0 रामस्वरूप जी से लेकर आपने उत्तरोत्तर विकास किया है। इसी प्रेरणा और आत्मविश्वास ने डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव जी को जनपद जालौन का महत्वपूर्ण साहित्यकार बना दिया। मेरे अब तक के शोधकार्य में डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव के समान दूसरा साहित्यकार मेरी नज़र में नहीं आया है। मृदुभाषी, अपने से छोटों के प्रति स्नेह, अभिमान से रहित इन सभी गुणों ने मुझे अधिक प्रभावित किया है। मेरे लिये बड़े गौरव की बात है कि उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को अपने शोध प्रबन्ध में दे सकने में समर्थ हो सका।

डॉ० दिनेशचन्द्र द्विवेदी

कवि, समीक्षक, वक्ता एवं आदर्श शिक्षक के रूप में डॉ0 दिनेशचन्द्र द्विवेदी का नाम उल्लेखनीय है। आपका जन्म 1 जनवरी सन् 1946 ई0 को जुगराजपुर कानपुर महानगर में हुआ था। आपके पिता स्व0 पं0 दुर्गाचरण द्विवेदी संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। माता श्रीमती श्यामा द्विवेदी धार्मिक एवं सद्विचारों की गृहस्थ महिला हैं। आपका विवाह पिपरायाँ जनपद जालौन निवासी स्व0 पं0 दीनदयाल तिवारी जी की सुपुत्री श्रीमती राजेश्वरी द्विवेदी के साथ हुआ। आपकी चार सन्तानों में दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। डॉ0 द्विवेदी के बड़े पुत्र राजेश द्विवेदी का विवाह जगम्मनपुर निवासी स्व0 श्री कृष्णगोपाल द्विवेदी की सुपुत्री श्रीमती चन्द्रकान्ता द्विवेदी के साथ हुआ। इनकी पाँच सन्तानों में संकल्प द्विवेदी, कु0 व्याख्या, विरक्ति, आस्था व दिशा द्विवेदी है। साहित्यकार के दूसरे पुत्र के रूप में राकेश कुमार द्विवेदी हैं। इनका विवाह बम्हौरी कलां (जालौन) निवासी स्व0 श्री प्रभुदयाल की सुपुत्री श्रीमती किरन

द्विवेदी के साथ हुआ। आपकी दो सन्तानों में निष्कर्ष द्विवेदी एवं कु0 अस्मिता द्विवेदी हैं। साहित्यकार की बड़ी पुत्री श्रीमती ऋचा चतुर्वेदी का विवाह उरई निवासी श्री विवेक चतुर्वेदी के साथ हुआ। इनकी सन्तानों में श्रेष्ठ चतुर्वेदी एवं श्रुति चतुर्वेदी है। दूसरी पुत्री के रूप में श्रीमती प्रभा त्रिपाठी का विवाह उरई निवासी श्री सुनील त्रिपाठी के साथ हुआ। इनका एक पुत्र सूर्यांशु त्रिपाठी है।

डॉ0 दिनेश चन्द्र द्विवेदी जी का कद 5 फुट 6 इंच के लगभग है। उत्तम स्वास्थ्य एवं वाणी में ओज है। भरा पूरा चेहरा और छोटी–छोटी मूँछे आपके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। आप बोलते समय अच्छी शब्दावली का प्रयोग करते है इससे छात्र/छात्राएँ मंत्रमुग्ध होकर आपके व्याख्यानों को सुनकर उन्हें कंठस्थ करने का प्रयास करते हैं। आँख बंद करके व्याखान देना ये आपकी आदत में शामिल है। काली पेन्ट और सफेद शर्ट आपके व्यक्तित्व को निखारने में सहायक हैं

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1963 ई0 में कान्यकुब्ज इण्टर कालेज कानपुर से तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1967 ई0 में डी0एम0यू0 इण्टर कालेज गोविन्द नगर कानपुर से उत्तीर्ण की। बी0ए0 की परीक्षा सन् 1969 ई0 में डी0वी0एस0 कालेज, कानपुर से उत्तीर्ण करने के पश्चात् इसी कालेज से एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षा सन् 1971 ई0 में उत्तीर्ण की। आपने पी–एच.डी. की उपाधि बुन्देलखण्ड वि0वि0 झाँसी से सन् 1992 ई0 में "हिन्दी साहित्य में गौतम बुद्ध और उनके चिन्तन की अभिव्यक्ति" विषय से प्राप्त की। सम्प्रति आप रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग गाँधी महाविद्यालय उरई के पद पर कार्यरत हैं। आप सन् 1974 ई0 से उरई नगर में अपने निज

निवास सुशीलनगर, उरई में रह रहे हैं।

विद्यार्थी जीवन की एक घटना में एक बार आपके विद्यालय में डॉ0 सी.वी.रमन जी आये थे। उनके व्याख्यानों को सुनकर आप बहुत प्रभावित हुए थे।

आपको नागरिक सुरक्षा में डिप्टी पोस्ट वार्ड की सेवाओं के उपलक्ष्य में राष्ट्रपति जी के माध्यम से पुरस्कृत किया गया हैं।

साहित्य के सन्दर्भ में साक्षात्कार के दौरान मेरी उनसे बातचीत हुई । उस बातचीत के अंश इस प्रकार हैं–

प्र0 आप हिन्दी साहित्य से क्या आशाएँ रखते हैं?

द्विवेदी जी– जीवन संघर्ष से गुजरकर मूल्य चेतस् मानवतावाद की प्रतिष्ठा करना चाहता हूँ।

प्र0 आप साहित्य को क्या देना चाहते हैं?

डॉ0 द्विवेदी –यथार्थ के प्रति स्वीकृति, अनुचित के प्रति असहमति, अन्याय के विरुद्ध संघर्ष तथा मन की चरम सन्तुष्टि।

प्र0 अभी तक की आपकी सबसे अच्छी रचना कौन सी है? मेरा कहने का तात्पर्य आपको अपनी कौन सी रचना सबसे अच्छी लगती है?

डॉ0 द्विवेदी– अभी सबसे अच्छी कहानी एवं उपन्यास लिखना शेष है।[17]

आपकी प्रकाशित कृतियों में 'कालजयी' (खण्डकाव्य) है जिसमें महाभारत का प्रमुख पात्र कर्ण शोषित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अतिरिक्त कादम्बिनी, धर्मयुग आदि पत्र–पत्रिकाओं में लेख, कविताएँ, कहानियाँ एवं आकाशवाणी छतरपुर, लखनऊ से वार्ताएँ प्रसारित होती रही हैं। आपने टेलीविजन के लिये लेखनकार्य किया जिसमें टेलीफिल्म 'प्रेरणा' और धारावाहिक

'हम जियेंगे' सौरभ बैनर डी.डी.–1 एवं मैट्रो चैनल के माध्यम से सन् 1994–95 में प्रसारित हुए। टी.वी. में ज्ञानपीठ में भी पटकथा लेखन का कार्य किया।

समीक्षाएं– तटस्थ में 'सहज कविता' जिसके सम्पादक जे.एन.यू. के प्रो0 थे।

प्रकाशित कहानियों में– 'निष्क्रमण', 'संतुष्टि', 'मरीचिका', 'ओह मैं न था' हैं।

प्रकाशित उपन्यास– 'एक और ययाति' (नये सन्दर्भो में प्रस्तुति) 'मोक्ष', और 'यात्रा' हैं।[18]

आपकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। साधारण स्तर पर बात करने में भी आप साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग करते हैं। आपकी शैली भावात्मक, विचारात्मक एवं गवेषणात्मक है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि साहित्यकार डॉ0 दिनेशचन्द्र द्विवेदी कवि, लेखक एवं समीक्षक तीनों का अद्भुत समन्वय है। निश्चित रूप से आपने जनपद के सारस्वत योगदान में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

डॉ० नारायण दास समाधिया

प्रसिद्ध समीक्षक साहित्यकार एवं शिक्षक डॉ0 नारायण दास समाधिया का जन्म 1 अप्रैल सन् 1949 ई0 को ग्राम इटहिया जिला जालौन में हुआ था। आपके पिता श्री पी.एल. समाधिया व माता श्रीमती जयवन्ती देवी है। आपकी माता धार्मिक विचारों की सद्गृहस्थ महिला हैं। आपका विवाह नोएडा नई दिल्ली निवासी श्री हरगोविन्द दास की सुपुत्री श्रीमती शीला समाधिया के साथ हुआ। श्रीमती शीला समाधिया शिक्षित तथा आदर्श गृहणी हैं। आपकी चार सन्तानों में एक पुत्र

एवं तीन पुत्रियाँ हैं। पुत्र का नाम डॉ0 दिवसकान्त समाधिया हैं। समाधिया जी की सबसे बड़ी पुत्री डॉ0 निशा है। इनका विवाह शिवपुरी (म0प्र0) निवासी श्री एम.के. शर्मा मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट के साथ हुआ। साहित्यकार की दूसरी पुत्री श्रीमती दीप्ति है। इनका विवाह सुल्तानपुर निवासी प्रो0 नीलेन्द्र के साथ हुआ। समाधिया जी की तीसरी पुत्री कु0 दिव्या समाधिया है।

आपने हायर सेकेण्डरी की परीक्षा सन् 1966 ई0 में माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल (म0प्र0) से उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा आपने सन् 1969 ई0 में जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् सन् 1971 ई0 में एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षा उसी महाविद्यालय से उत्तीर्ण की। सन् 1974 ई0 में पी–एच.डी. की उपाधि 'स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी समीक्षा' निदेशक डॉ0 आर. पी. मित्तल ग्वालियर के निर्देशन में प्राप्त की। आपने डी.लिट्. की उपाधि सन् 1984 ई0 में 'समीक्षा दर्शन' हिन्दी समीक्षा के विशेष सन्दर्भ में विषय पर प्राप्त की। सम्प्रति आप दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई में प्राचार्य के पद को सुशोभित कर रहे हैं।

आपको उत्कृष्ट लेखन हेतु एम.एल.बी. कालेज ग्वालियर से सरस्वती पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

आपकी अब तक की प्रकाशित पुस्तकों में 'समीक्षा दर्शन, जिसका प्रकाशन सन् 1985 ई0 में हुआ तथा प्रकाशक नवरंग प्रकाशन खुर्जा (उ0प्र0) है। इसके पृष्ठों की सुख्या 209 है। ''भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा' सन् 1986 में प्रकाशित हुई। इसके प्रकाशक परिचय प्रकाशन शाहदरा दिल्ली है। तीसरी पुस्तक 'लोक साहित्य' है जो सन् 1986 ई0 में प्रकाशित हुई। इसके प्रकाशक भी परिचय प्रकाशन शाहदरा दिल्ली है।

आपकी रचनाओं में गवेषणात्मक शैली का प्रयोग अधिक हुआ है। आपकी भाषा साहित्यिक खड़ी बोली है। निम्नलिखित अवतरण में गवेषणात्मक शैली का उदाहरण दृष्टव्य है–

"अंग्रेजी की रोमाण्टिक कविता तथा समीक्षा विधा की तरह भारतीय भाषाओं में सौन्दर्यमूलक स्वच्छन्दतावादी समीक्षा का अनुभूतिपरक प्राधान्य रहा है। कल्पना की कोरी उड़ान की छूट यद्यपि भारतीय साहित्यकारों को नहीं मिली फिर भी भारतीय कला दर्शन अनुभूति या रस को मेरुदण्ड मानता आया है। इसी कारण तत्कालीन राष्ट्रीय परिवेश कल्पना को अलौकिक और अनियंत्रित उड़ान की छूट नहीं दे सका। इस प्रकार अभिनव अनुभूतियों की परिधि में से यूरोपीय रोमांसवाद ने भारतीय समीक्षा को अत्यधिक प्रभावित तो किया है लेकिन समीक्षा का धरातल भारतीय भावभूमि ही रही है।"[19]

आपने शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग अपने साहित्य में किया है। आपकी भाषा के सम्बन्ध में यह गद्यांश दृष्टव्य है–

"नयी समीक्षा का अपना योगदान है। साहित्य सृजन और साहित्य समीक्षा में बार–बार ऐसे बिन्दु आते हैं जब साहित्य की स्वायत्तता की रक्षा के लिये रचनाकार और समीक्षकों को प्रयत्न करना पड़ता है।"[20]

इस प्रकार समाधिया जी के कृतित्व का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि आप अच्छे साहित्यकार एवं शोध समीक्षक है। आपने जनपद को साहित्य समीक्षा के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान देकर इसे समृद्ध किया है।

ग) कोषकार

जनपद जालौन में कोषकारों की संख्या अत्यन्त अल्प है। इस विधा की तरफ बहुत कम लोगों का ध्यान गया है। सर्वप्रथम मुन्शी धनू सिंह ने सन् 1925[21] ई0 में 'हिन्दी अभिनव कोश' प्रकाशित किया था। मुन्शी धनूसिंह हरदोई गूजर ग्राम के निवासी थे तथा ये शिक्षक भी थे।

इसके अतिरिक्त सन् 2000 ई0 में युगकवि डॉ0 रामस्वरूप खरे ने 'सहस्त्राब्दि हिन्दी साहित्यकार कोश' का प्रकाशन कराया। इस कोश में 224 साहित्यकार हैं जिनके नाम पता व्यवसाय एवं कृतित्व का उल्लेख किया गया है।

सम्पादक डॉ0 रामस्वरूप खरे ने कोश के आमुख में लिखा है– "कोश में उल्लिखित जानकारी का स्त्रोत स्वयं रचनाकार ही है। पहले इस कोश का क्षेत्र बुन्देलखण्ड तक ही सीमित रखने का विचार था किन्तु अनायास ही यह देशव्यापी हो गया।"[22]

जनपद जालौन अपनी अकूत साहित्य सम्पदा को समेटे हुए बराबर प्रगति की तरफ अग्रसर है परन्तु अभी जनपद के लिये और अधिक कोषकारों की जरूरत है ताकि इस जनपद को और अधिक समृद्ध किया जा सके।

घ) उपन्यासकार
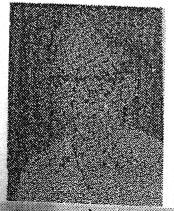
विनेन्द्र स्वरूप सक्सेना 'दीपेश'

जनपद जालौन के प्रसिद्ध उपन्यासकार विनेन्द्र स्वरूप सक्सेना एक ऐसे साहित्यकार है जिनकी लेखनी साहित्य रूपी कानन में प्रत्येक पक्ष में निर्भय सिंहनी की भांति विचरती हुई निरन्तर आगे बढ़ती हुई राज्य विस्तार कर रही है।

साहित्यकार विनेन्द्र स्वरूप सक्सेना का जन्म 1 जुलाई सन् 1940 ई0 को अलीगढ़ में हुआ था। जन्म के एक घण्टे बाद ही इनकी जन्मदात्री माता श्रीमती नन्हीं देवी इस संसार से चल बसीं। इनका पालन पोषण इनकी दादी माँ श्रीमती रामवती देवी ने किया जो कि जी.जी.आई.सी. अलीगढ़ की प्रध ानाचार्या थी। आपके पिता नरेन्द्र भाई सक्सेना थे। आपका विवाह ग्रा0 व पो0 विचौली थाना कुठौंद जनपद जालौन निवासी स्व0 श्री लाजपतराय जी सक्सेना की सुपुत्री श्रीमती चन्द्रकिशोरी सक्सेना जू0 हा0 स्कूल आटा तथा सरावन जनपद जालौन में प्रधानाार्य के पद पर आसीन रहीं के साथ हुआ।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन क्रमशः 1954 एवं 1956 ई0 में के0पी0 इण्टर कालेज अलीगढ़ से उत्तीर्ण की। बी.ए. तथा एम.ए. की परीक्षाएँ बारह सैनी डिग्री कालेज अलीगढ़ से उत्तीर्ण की और इसी कालेज के आप प्रेसीडेन्ट (छात्राध्यक्ष) सन् 1959 ई0 में रहे। यह चुनाव आपने बिना कोई पैसा खर्च किये हुए जीता था। आप हॉकी तथा क्रिकेट के अच्छे खिलाड़ी रहे। हॉकी के आप कैप्टन भी रहे और क्रिकेट में उ0प्र0 गाँधी ट्राफी को तीन बार विजय दिलायी।

आप जब नौंवी कक्षा में पढ़ते थे तभी से आपको लेखन के प्रति रुचि जाग्रत हो गयी। साहित्यकार के शब्दों में– **"बरसात की तूफानी रात थी, खिड़कियाँ एवं दरवाजे उस तूफानी बरसात में बुरी तरह से हिल रहे थे। तभी मेरे मन में आया कि इस बरसात को, इस तूफान को मैं कैद कर लूँ और सचमुच मैंने उस बरसात को, उस तूफान को कलम के माध्यम से कागज में कैद कर लिया।"**[23]

आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। आपने उपन्यास के

साथ–साथ गीत, गज़ल, कहानी आदि विधाओं पर आपने अपनी लेखनी चलायी है, किन्तु उपन्यास विधा पर आपकी लेखनी ने अच्छा सफर तय किया है।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'रानी मार्गो, जिसकी पृष्ठ संख्या 132, अमलतास, पृष्ठ संख्या 120, मुट्ठी में रेत पृष्ठ संख्या 120, तुम आदि उपन्यास हैं तथा 'कुछ सतरें कुछ पंखुरियाँ (ग़ज़ल संस्करण) पृ0 सं0 120 है। इसके अतिरिक्त अप्रकाशित उपन्यासों में 'पीपल के पत्तों पर निब के निशान' लगभग 180 प्र0, वो लोहे की पटरी दाँतो से चबा गया, लगभग 200 पृष्ठों का उपन्यास है।[24]

आपने सन् 1967 ई0 में 'सत्यकाम' फिल्म की समीक्षा भी लिखी जिसमें आपको 800 रु0 का पारिश्रमिक प्राप्त हुआ था। इसके अतिरिक्त आपने 'हलचल' साप्ताहिक पत्र का सम्पादन 1972 से 1975 ई0 तक किया। आपने स्वयं का पत्र 'मानपत्र' (साप्ताहिक) उरई से, विचार सम्राट' उरई से (जो लखनऊ से प्रकाशित होता था) तथा यंगसैडो' अलीगढ़ से निकाला।

रानी मार्गो उपन्यास ब्रज की भूमि पर एक किशोर एवं एक युवती के मध्य प्रेम का उत्कृष्टीकरण और आध्यात्मीकरण संवादो, चरित्र–चित्रण, विषय वस्तु, देशकाल दृष्टांकन के माध्यम से किया गया है। जैसे– यह किंवदन्ती है कि राधा कृष्ण से वय में बड़ी थी।, ठीक इसी प्रकार रानी मार्गो के मुख्य पात्र स्वयं रानी मार्गो और अमित दोनों के मध्य दस–बारह साल का अन्तर था। प्रेम लौकिक होते हुए भी अलौकिकता के प्रांगण में प्रवेश करा दिया गया। एक सम्पूर्ण प्रेम गाथा होते हुए भी पाठक के मानस को कोई वासना की दुर्गन्ध छू तक नहीं जाती है। समग्र उपन्यास को पाठक पढ़ने के उपरान्त

अभिभूति होता है, पुलकित होता है और उसमें आध्यात्मिकता की सिहरन दौड़ जाती है। उपन्यास का अन्त दुखान्त है यद्यपि त्रासद नहीं है।

'अमलतास' उपन्यास एक सामाजिक कथा विस्तार है। इसका स्थान राजस्थान है। काल आधुनिक है। राजस्थान जहाँ सामन्ती विचारधारा व आर्थिक सम्पन्नता सर्वत्र दिखाई देती है और उसी के साये में एक अत्यन्त मलिन बस्ती भी उपन्यास में दर्शायी गयी है जिसमें दो मुख्य पात्र– जो बहुत पढ़े–लिखे व शालीन है किन्तु आर्थिक विपिन्नता से जूझते दिखाये गये हैं। यद्यपि पूर्ण उपन्यास एक वाक्य में कहा जाये तो प्रेम उपन्यास के रूप में लिया जा सकता है किन्तु शिल्प यह कि सम्पूर्ण उपन्यास में एक ही वार्तालाप प्रेम से स्निग्ध नहीं है। उपन्यास में आदि से अन्त तक दो विभिन्न विचारधाराओं के बीच सैद्धान्तिक धरातल पर वाद–विवाद होता रहता है। उपन्यास का नायक अकिंचन होने के कारण बुर्जुआ वर्ग के विरुद्ध हमेशा संघर्षरत दिखायी देता है और अन्ततः इसी समाज के षडयन्त्र का कोप भाजन बनकर मर भी जाता है। उपन्यास का त्रासदी में अन्त होता है जिसके सभी पात्र विषाद, दुख, पीड़ा और कहर के कोहराम में समाते हुए दिखायी देते हैं।

'तुम' उपन्यास एक नारी प्रधान उपन्यास हें स्त्रीजन्य कोमलता मजबूरियाँ विषमताएँ भावना ग्रंथियों, उद्वेग, संवेग, रागद्वेष, भावातिरेक, ममता के कारण व्यवहार के चर्म बिन्दु को छूना, उग्र हो जाना और अपने बच्चे के लिये बलिदान की समस्त सीमाओं को पार करके माँ का चरित्र समुन्नत और प्रशंसनीय बनाने की दिशा में मुख्य पात्रा ने अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। संवाद यद्यपि लम्बे है। शब्दों का समन्वय थोड़ा जटिल और सामान्य पाठकों के समझ के बाहर है किन्तु सुधीजन इस उपन्यास को पढ़कर भाव

विभोर हो जाते हैं। गोर्की द्वारा रचित माँ की तुलना यदि दीपेश द्वारा रचित 'तुम' से की जाये तो निश्चित रूप से यह उपन्यास श्रेष्ठतर माना जायेगा। हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य समालोचक डॉ0 नामवर सिंह, डॉ0 रामशंकर द्विवेदी ने 'तुम' की प्रशंसा में पृथक–पृथक आलेख लिखकर लेखक को सराहा है।

'दीपेश' जी लेखक एवं कवि–शायर का अदभुत् समन्वय है। आप अपनी रचनाओं के माध्मय से अपनी माशूका का ख्वाव में आना उन्हें कितना सन्तोष प्रदान करता हैं उनकी ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

आप से शायद मिला हूँ, ख्वाव में–
हाँ मुझे ये वाक्य, याद आ गया।
खिल गयी है प्यार की, सूखी कली।
याद का झौंका, कहाँ से आ गया।
आप क्या आये कि, गुलशन का अभी–
गुँचा गुँचा झुक गया, शरमा गया।[25]

दीपेश जी जीवन की अतुल गहराइयों में डूबकर दार्शनिक हो उठते है। और गा उठते है–

आँसू सहमा सहमा आकर पलकों पर क्यूँ रुकता है–
कभी झील में तो छिप जाता, कभी जमीं पर गिरता है।
धुँआ–धुँआ से लम्हे मेरे, चिंगारी सी उम्र रही
मेरा सब कुछ कितना ज्यादा, एक चिता से मिलता है।
इनसां खीज गया है इतना, हालातों की दस्तक से–
आँख मिलाकर आसमान से, जाने क्यों क्या कहता है।[26]

साहित्यकार 'दीपेश' प्रतिभावान साहित्यकार हैं। इनकी सृजन शीलता

का मुख्य विषय समाज है। आपने अपने उत्कृष्ट साहित्य सर्जन के द्वारा समाज की रूढ़ियों एवं अत्याचारों के खिलाफ आवाज बुलन्द की है। यह बुलन्दी ही एक अच्छे साहित्यकार का धर्म है। आपकी कलम जहां प्रेम की ऊँचाइयों को छूती हुई नजर आती है वहीं मलिन बस्ती के लोगों के बीच घूमती नजर आती है। आप अपनी लेखनी के द्वारा समाज में असमानता के भाव को मिटाकर समानता का भाव लाने का प्रयत्न करते हुए दिखायी देते हैं।

प्रतिभा जौहरी

जनपद जालौन की उर्वरा मिट्टी ने ऐसे साहित्यकारों को जन्म दिया है जिसने जनपद में ही नहीं अपितु अन्य प्रदेशों में अपनी प्रतिभा की ज्योति चहुँ ओर प्रकाशित की हैं। यहाँ पुरुषों के साथ ही नारियों ने भी अपनी लगन एवं मेहनत से जनपद को उपन्यास एवं कहानी विधा से परिपूर्ण करके यह सिद्ध कर दिया है कि यहाँ कि नारियाँ पुरुषों से पीछे नहीं रही हैं। साहित्य के प्रत्येक क्षेत्र में यहाँ की नारियों ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है। प्रतिभा जौहरी ऐसे ही स्वधन्य नामों में से एक है।

प्रतिभा जौहरी का जन्म 6 मार्च सन् 1941[27] ई0 को उरई में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री कामतानाथ व माता स्व0 श्रीमती भाग्यवती देवी थी। आपका विवाह श्री चन्द्रमोहन जौहरी के सुपुत्र श्री स्वदेश जौहरी के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में रोहित किशोर एवं राहुल किशोर है। रोहित किशोर अमेरिका में आई.आई.टी. इंजीनियर के पद पर कार्यरत हैं। इनका विवाह श्रीमती जया किशोर के साथ हुआ जो सरल स्वभाव की सम्भ्रान्त महिला हैं इनकी दो पुत्रियाँ बेबी चेतना एवं रंजना है। लेखिका के दूसरे पुत्र राहुल किशोर चीफ जोनल मैनेजर स्टैण्डर्ड चार्टेड बैंक उत्तर भारत में

कार्यरत है। इनकी पत्नी का नाम अनीसा है। इनके एकमात्र पुत्र का नाम अधिराज जौहरी हैं सम्प्रति आप जी.5 ए–5 क्लिफ्टन एपार्ट मेक्टर चार्मबुड सूरज कुंड रोड फरीदाबाद (हरियाणा) मे निवास कर रही हैं।

जौहरी जी ने हाईस्कूल एवं इण्टर मीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1954 एवं 1956 ई0 में आर्यकन्या इण्टर कालेज, उरई से उत्तीर्ण की। पुनश्च बी.ए. की परीक्षा सन् 1958 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। आपने एम.ए. की परीक्षा सन् 1960 ई0 में सेन्ट जोन्स कालेज आगरा से उत्तीर्ण की। तदुपरान्त सन् 1961 ई0 में आपने बी.एड. की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'प्रतिध्वनि' (कहानी संग्रह) है जो सन् 1991 ई0 में प्रकाशित हुआ था। इसके पृष्ठों की संख्या 135 है तथा प्रकाशक श्रीमती प्रतिभा जौहरी हैं। 'परछाइयाँ' आपका दूसरा कहानी संग्रह है इसमें 10 कहानियों का संग्रह है। इसके पृष्ठों की संख्या 104 है और प्रकाशन वर्ष 1998 ई0 है। आपके उपन्यास 'हिमालय की गोद में सन् 1998 ई0 में तथा 'दिशाहीन दिशा' सामाजिक उपन्यास 1999 ई0 में पूर्वाचल प्रकाशन दिल्ली 94 द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं।

श्रीमती प्रतिभा जौहरी के सम्बन्ध में स्मारिका दीक्षान्त समारोह, 6 फरवरी 2001 दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई ने लिखा है– हमें गर्व है कि श्रीमती जौहरी ने रूस, जापान, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, इटली, स्वीडन, पौलैण्ड, जर्मनी, फिनलैण्ड, पुर्तगाल एवं बेल्जियम आदि विभिन्न देशों की यात्रा की है। आपकी रचनाओं में इन देशों की सामाजिक, राजनीतिक सांस्कृतिक झलक स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

इन यात्राओं की विलक्षण अनुभूतियों को आपने अपनी रचनाओं में संजीदगी के साथ संजोया है। यही कारण है कि आपकी जापान यात्रा से वापिसी के बाद लिखी गयी कहानी 'आधुनिक युग का अभिशाप' वहाँ के हिरोशिमा एवं नागासाकी नगरों की तबाही को अभिव्यंजित करती है। इसी तरह रूस की यात्रा के बाद लिखी गयी उनकी कहानी 'बीस डालर का नोट' वहाँ की विफल होती साम्यवादी व्यवस्था पर कटाक्ष करती है।

× × ×

हमें गर्व है कि अतीत में जहाँ इस बुन्देलखण्ड की रानी एवं झलकारी बाई जैसी वीरांगनाओं ने अपने अजेय शस्त्रों से अंग्रेज शत्रुओं पर प्रहार किये है। वहीं वर्तमान में श्रीमती जौहरी जैसी निर्भीक लेखिकाएँ अपनी सशक्त लेखनी से सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार कर रही हैं।[28]

प्रतिभा जौहरी ने साहित्य रूपी हीरे को परखा और अपनी प्रखर मेधा से उसको तराशकर उसमें सौन्दर्य एवं आकर्षण भर दिया है। आपने समाज की सड़ी–गली मान्यताओं पर करारी चोट की है। आपने समय की माँग को समझते हुए समाजोपयोगी साहित्य का सृजन किया हैं यह सृजन लोगों के पथप्रदर्शक के रूप में सहायक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

अमित कुमार द्विवेदी
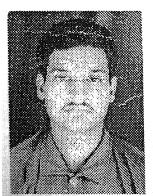
जनपद जालौन के नवोदित साहित्यकारों में अमित कुमार द्विवेदी उपन्यासकार के रूप में जाने जाते हैं।

अमित कुमार द्विवेदी का जन्म 28 मई सन् 1982 ई0 में दतिया (म0प्र0) में हुआ था। आपके पिता

श्री अशोक द्विवेदी एवं माता श्रीमती विनोदनी द्विवेदी हैं। आपका विवाह ग्राम बंगरा (जालौन) निवासी श्री विष्णु दीक्षित की सुपुत्री श्रीमती निधि द्विवेदी के साथ हुआ।

आपकी प्राथमिक शिक्षा साकेत बिहारी विद्या मन्दिर इटौरा (जालौन) में सन् 1992 ई0 में पूरी की। मिडिल परीक्षा सन् 1995 ई0 में सरस्वती सिटी मान्टेसरी उरई से उत्तीर्ण की। हाईस्कूल एंव इण्टर मीडिएट की परीक्षाएँ आपने सन् 1997 एवं 1999 ई0 में इण्टर कालेज इटौरा (जालौन) से उत्तीर्ण की।

आप गर्भस्थ शिशु संरक्षण समिति (जालौन क्षेत्र) के सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा पुस्तकों के नियमित अध्ययन से प्राप्त हुई।

आपकी एक कृति 'हत्यारी दौलत (उपन्यास) प्रकाशित हो चुकी है। इसका प्रकाशन वर्ष सितम्बर 2002 है तथा प्रकाशक शिवा पॉकेट बुक्स मेरठ है। इसके पृष्ठों की संख्या 240 है।

अप्रकाशित उपन्यासों में 'तड़पते दिल,' 'अगर तुम न होते', 'एक और सिकन्दर' है।

आपने अपनी रचनाओं में खड़ी बोली के साथ हिन्दी उर्दू अंग्रेजी आदि शब्दों का प्रयोग किया है। संवादात्मक शैली आपके उपन्यासों की जान है। आपकी रचनाओं में प्रकृति चित्रण अल्पमात्रा में हुआ है। कहीं–कहीं तो आप रेडीमेड पृकृति चित्रण से ही सभी का मन आकर्षित करा देते हैं। यथा–

''रविवार के दिन तो टाउन पार्क की भीड़ देखने लायक होती है। रंग बिरंगे फूलों के पेड़ों, फब्बारों से फैलता पानी और गिरते हुए पानी से छूटते बुलबुले बच्चों से लेकर बूढ़ों तक के मन मोह लेते थे।''[29]

वर्तमान समय में लोग एक दूसरे के हमदर्द कम उनका तमाशा मजाक उड़ाना अधिक पसन्द करते है। इसी से सम्बन्धित लेखक ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं–

"आजकल होता भी यही है। कोई मरता भी हो तो लोग सिर्फ तमाशा देखते हैं, कोई आगे बढ़कर उसे बचाने की कोशिश नहीं करता। वह यह नहीं सोचते कि कल को ये हादसा उनके साथ भी हो सकता हैं। जो भी आता, तमाशे की तरह देखता हुआ आगे बढ़ जाता।"[30]

आपका उपन्यास 'हत्यारी दौलत' आज के भौतिक परिवेश में मानव मन के अन्दर दौलत की आपाधामी में रचा ऐसा कथानक है जिसमें गैर–कानूनी ढंग से दौलत की चाहत में व्यक्ति के हाथ कुछ नहीं आता है सिवाय अपना सब कुछ गँवाने के। दौलत के चक्कर में प्रत्येक पात्र मौत को गले लगाता जाता है किन्तु दौलत की भूख मिटने का नाम ही नहीं लेती है। उपन्यास का कथानक इसी शीर्षक 'हत्यारी दौलत' के इर्द–गिर्द घूमता रहता है। अन्त में दौलत के नाम पर किसी भी पात्र को कुछ नहीं मिलता है। आधुनिक युग में इस भौतिकवादी जमाने के लिये लेखक ने एक सन्देश दिया है कि मेहनत और परिश्रम से जो मिलता है वही सच्ची दौलत है। गैर कानूनी ढंग से कमाया गया पैसा मानव के पतन का कारण बन जाता है। यही लेखक का सन्देश है और उपन्यास रचने का उद्देश्य भी है।

ङ. गद्य गीतकार

डॉ० रामस्वरूप खरे

उत्तर प्रदेश अन्तर्गत जिला ललितपुर में एक तहसील है महरौनी। उसके पूर्व में लगभग 18 किमी0 दूर कम्हेड़ी के पास एक साधारण सा ग्राम है, जिसे लोग भौड़ी के नाम से जानते है। इतिहास बतलाता है कि संवत् 1900 विक्रम में महाराज रामशाह ओरछा के महरौनी पधारे तो उसे उन्होंने अपनी राजधानी बनाया। उसी समय द्वारिका दास जी अपने पूर्व स्थान बनीपारा को छोड़ सर्वप्रथम ओरछा और फिर महरौनी आये। महाराज रामशाह ने उन्हें अपना दीवान (प्रधानामात्य) बनाया।

दीवान द्वारिकादास के दो पुत्र थे– सिंहमन और छत्रम सिंह। सिंहमन के पुत्र प्रेमसा के तीन पुत्र हुए अनन्तराम, काशीराम, रतिराम। काशीराम के यहाँ मचल ने जन्म लिया। मचल के चार पुत्र हुए जिनके नाम थे रघुनाथ, हिन्दूपत, दरयाव और मोहनलाल। मचल के दूसरे पुत्र दरयाव से रामप्रसाद, भुजबल और गजाधर उत्पन्न हुए। रामप्रसाद के पुत्र कुंजबिहारी के तीन लड़के हुए–हरचरन बंशीधर और घनश्याम।[31]

इन्हीं श्री बंशीधर के यहाँ प्रसिद्ध मनीषी डॉ0 रामस्वरूप खरे जी ने सबसे छोटे पुत्र के रूप में जन्म लिया।

राजकीय अभिलेखानुसार युगकवि डॉ0 रामस्वरूप खरे का जन्म श्री बंशीधर के यहाँ 1 सितम्बर सन् 1932 ई0 को गुढ़ा में हुआ था।[32] आपकी माता का नाम राजरानी था जो कि धार्मिक एवं दयालु स्वभाव की सद्गृहस्थ महिला थीं। आपके तीन भाई और है। सबसे बड़े भाईसाहब श्री द्वारिकाप्रसाद

जी जो अब दिवगंत हो चुके है। दूसरे एवं तीसरे भाई श्री भवानीदास एवं श्री जमुनाप्रसाद श्रीवास्तव है। आपकी दो बड़ी बहनें श्रीमती त्रिवेदी देवी एवं मानकुँअरि थी जो अब दिवंगत हो चुकी हैं। आपसे एक छोटी बहन टीकमगढ़ में अपने पुत्रों के साथ वैधव्य जीवन व्यतीत कर रही हैं।

आपका विवाह लखनऊ निवासी बाबू काशीप्रसाद श्रीवास्तव (वैयक्तिक सहायक स्वास्थ्य मंत्री उत्तरप्रदेश शासन) की लघु भगिनी सौभाग्यकांक्षिणी कमला देवी के साथ हुआ। श्रीमती कमला देवी अत्यन्त सहष्णु, धार्मिक, विनम्र एवं सद्गृहस्थ महिला हैं। आपकी छैः संतानों में चार पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। सबसे प्रथम सन्तान के रूप में स्नेहलता ने जन्म लिया। इनका विवाह श्री सुरेशचन्द्र (एस.डी.आई.) के साथ हुआ। आप गवर्नमेन्ट गर्ल्स इण्टर कालेज ललितपुर (उ0प्र0) में अध्यापनरत हैं। द्वितीय संतान के रूप में सर्वेश कुमार है जो एम.ए., एम.एस–सी. करने के उपरान्त सम्प्रति नेशनल सुभाष दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उन्नाव में हिन्दी प्राध्यापक हैं। तृतीय सन्तान के रूप में अतुल कुमार प्रकाशन कार्य देख रहे हैं और आजकल लखनऊ में रह रहे हैं। चतुर्थ सन्तान के रूप में देवेशकुमार का नाम आता है। ये लखनऊ आकाशवाणी में कार्यरत है। पंचम संतति के रूप में ब्रह्मानन्द का नाम आता है जो एम0एस–सी0 करने के उपरान्त शहीद भगतसिंह साइंस डिग्री कालेज उरई में प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं। सबसे छोटी संतति के रूप में कु0 अपर्णा का नाम आता है जिन्होंने एम.ए. की परीक्षा इतिहास विषय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करने के उपरान्त इतिहास विषय पर शोध प्रबन्ध लिखकर बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी में जमा करके अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

डॉ0 रामस्वरूप खरे जी ने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1952 ई0 में पुरुषोत्तम नारायण उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय ललितपुर से उत्तीर्ण की। इण्टर तथा बी.ए. की परीक्षाएँ क्रमशः ललितपुर एवं दतिया से उत्तीर्ण कीं। एम0ए0 की परीक्षा आपने हिन्दी साहित्य विषय लेकर जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (म0प्र0) से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से विशारद एवं साहित्य की उपाधियाँ भी प्राप्त कीं। आपने सन् 1953 ई0 में राजकीय बेसिक प्रशिक्षण विद्यालय से प्रथम बैच के रूप में प्रवेश लिया और दतिया जिला में बेसिक प्राइमरी स्कूल में एकल शिक्षक हो गये। सन् 1961 ई0 में आपने बी.एड. का प्रशिक्षण महाराजा महाविद्यालय छतरपुर (म0प्र0) से प्राप्त किया।

बहुत समय बाद आप अगस्त सन् 1966 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई के हिन्दी विभाग में प्राध्यापक चुने गये तब सन् 1982 ई0 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से हिन्दी विषयान्तर्गत 'भारतीय नारी प्रतिरूपों का ऐतिहासिक सर्वेक्षण' विषय पर पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

डॉ0 रामस्वरूप खरे का जितना अर्न्तमुखी व्यक्तित्व विकसित हुआ है उतना ही बाहरी व्यक्तित्व भी निखर आया है इसी कारण उनके निश्छल आचार विचार और व्यवहार ने उन्हें निर्भीक एवं सत्यान्वेषी बना दिया। आप छोटे कद के स्वस्थ शरीर वाले व्यक्ति है। आपके कुन्तल केश पीछे की तरफ मुड़े हुए कंधों को छूते है। प्रारम्भ से ही आपने भारतीय वेषभूषा अपनायी है। धोती कुर्ता में उनका शुद्ध अन्तःकरण बाह्य व्यक्तित्व बनकर मुखर हो उठता है।

शोषित, पीड़ित, दलित और अनपढ़ श्रमिकों से उन्हें सहज लगाव है।

निर्धनता और अशिक्षा को वे सबसे बड़ा अभिशाप मानते हैं।

आपको युगकवि, कविश्री, पण्डित, बाल साहित्य सुधाकर, आदि अनेक उपाधियों से नवाजा गया।

सम्प्रति आप सेवानिवृत्त होकर स्वतन्त्र रूप से साहित्य लेखन में व्यस्त हैं। इसके अतिरिक्त आप विभिन्न नवोदित महाविद्यालयों में अपने अध्यापन अनुभव के द्वारा अपना अमूल्य समय देकर इन महाविद्यालयों की गरिमा को बढ़ाते हैं।

आपकी अभिरुचियों में—संस्कृत साहित्य, कला, देश भ्रमण, पुरातत्व एवं सामाजिक कार्यों के प्रति पूर्णरूपेण समर्पित हैं।

आपने शताधिक कृतियों का सृजन किया है। आपकी कुछ प्रकाशित पुस्तकें इस प्रकार है—

काव्य— 'राष्ट्र वन्दना', 'स्वदेशवीणा', 'कृष्णगारी', 'अर्चना', 'नये युग का अभिनव निर्माण', 'ज्योति किरण', 'शतमन्यु' (खण्डकाव्य), 'मेरे स्वप्न तुम्हारे चित्र', 'पूजा के फूल', 'अधखिले फूल' (गद्यगीत)।

गद्य की प्रकाशित पुस्तकें इस प्रकार हैं—

'काव्य दर्पण', 'हिन्दी भाषा का परिचयात्मक ज्ञान', 'भाषाविज्ञान', 'संध्या हो गयी', 'चिन्तन के मोती', 'काँपती परछाइयाँ'।

बाल साहित्य— 'रिमझिम—रिमझिम', 'सुन—सुन—सुन', 'गुन—गुन—गुन', ,'तितली', 'इतिहास गा रहा है', 'झाँसी की रानी', 'गुल्ली डण्डा', 'कोयल रानी', 'मेरा स्कूल', 'मेरा देश', 'उड़न छू, 'वीर बालक', 'बोलरानी कित्तापानी', 'धूल भरे हीरे है हम'।

युग कवि डॉ० साहब के विपुल साहित्य को देखकर मेरे लिये यह

निर्णय कर पाना मुश्किल हो रहा था कि इन्हें किस श्रेणी में रखूँ। आपने गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं में अपनी सफल लेखनी चलायी है। गुरुजी डॉ० साहब से इस सन्दर्भ में मैने बात की तो गुरुजी मौन रहे। इधर–उधर की बातों से उन्होंने मुझे बहला दिया। फिर मैने निर्णय लिया कि गद्य में जिस विधा पर कम लेखक मिलेंगे मैं उसी विधा पर इनका नामोल्लेख कर दूँगा। इसी कारण मैनें इन्हें गद्य गीतकार के रूप में लिया है। गद्य गीतों में आपकी आध्यात्मिक भावना पूर्ण रूप से मुखरित हुई है। आपने अपने आराध्य श्रीकृष्ण से भवसागर से उबारने की प्रार्थना ये भाव सुमन अर्पित करते हुए की है–

मेरे माधव!

भव सागर में छिपे हुए काम–ग्राह ने, मेरे मन–

कुंजर को पकड़ लिया है।

तुम्हें कैसे पुकारूँ?

डूबा जा रहा हूँ नाथ!

मेरे आराध्य!

यह भाव–सुमन तुम्हें सादर समर्पित हैं ।[33]

जन्म के पश्चातय मृत्यु निश्चित है। लोग प्रतिदिन इस काल चक्र को देखते हैं फिर भी लोग इस शाश्वत सत्य को भूल जाते हैं। महाभारत के पात्र युधिष्ठिर ने तो इसे सबसे बड़ा आश्चर्य कहा है। गद्यगीतकार डॉ० रामस्वरूप खरे ने इस सत्य को इस तरह व्यक्त किया है–

राम नाम सत्य है!/ और सब अनित्य है!!

अर्थी को लिये हुए/ जा रहा था जन समूह।

बजते मृदंग–शंख! वाद्य–ध्वनि सुनकर सब

बाल वृद्ध नारी–नर–/ देखने को आ गये

देखा भी/सुना भी/ विचारा भी

तर्क किया

किन्तु

फिर भूल गये।

अनन्त उस शून्य में/विलीन सा होता गया–

राम नाम सत्य है।"[34]

नारी विभिन्न रूपों में नर का पालन करती है। फिर भी समाज में उसे उतना सम्मान नहीं मिला है जितने की वह हकदार थी। गद्यकार ने नारी के इस रूप को इस प्रकार चित्रित किया है–

देवि,

तुमने मेरी आँखों से अश्रु पौंछे,

मेरी वेदना से प्यार किया,

मेरी भावना को दुलराया,

मेरा अभिशाप तुमने वरदान माना!

पर

मैं तुम्हें क्या मानूँ?

नारी/

नहीं, नारी से महान–

श्रद्धा!

देवि!![35]

डॉ० खरे साहब के उत्कृष्ट लेखन के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने

इनकी सफल रचनाओं को पढ़कर अपने–अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये–

डॉ0 रामकुमार वर्मा के अनुसार – "मैने युगकवि श्री स्वरूप जी की अनेक रचनाओं का अध्ययन किया हैं उनमें देशभक्ति, प्रकृति चित्रण तथा जन जागरण के सुन्दर भाव विद्यमान हैं। अनुभूति और अभिव्यक्ति पर उनका पूर्ण अधिकार है। वे राष्ट्रीयता के अनन्य पुजारी, साहित्य अनुरागी तथा काव्य गगन के दे दीप्यमान नक्षत्र हैं।"[36]

श्री सुमित्रा नन्दन पन्त के शब्दों में– अर्चना के गीत पढ़े। उन्होंने मेरे मन को छुआ हैं सरल एवं प्रसादमयी भाषा में सुमधुर अभिव्यक्ति बहुत कम देखने को मिलती है।"[37]

राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त के शब्दों में– "स्वरूप जी की अकृत्रिम भाषा पर मैं मुग्ध हूँ। राम करे वे शतायु हों और बाल साहित्य जगत में अपना नाम उजागर करें। अनेकानेक बधाइयों के साथ।"[38]

डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव के शब्दों में– अर्चना, पूजा के फूल, शतमन्यु तथा अपर्णा आदि शीर्षकों से ही कवि का आन्तर व्यक्तित्व द्योतित हो जाता है। डॉ0 खरे के मानस लोक में भारतीय नैतिकता, पौराणिकता, धार्मिकता एवं आध्यात्मिका के संस्कारों के नक्षत्र अधिक भास्वर दिखाई पड़ते हैं। उनका समस्त काव्य प्रासाद इन्हीं की रश्मियों में अनुरंजित है।"[39]

डॉ0 त्रिलोकी नाथ ब्रजवाल के शब्दों में– "निःसन्देह स्वरूप जी की काव्य भाषा ऋजु सुगम और सुबोध है। उसमें सहजता है कृत्रिमता नहीं। कहीं–कहीं तो वह मुग्धा नायिका की भांति सुकोमल पद विन्यास करती हुई पाठक अथवा श्रोता को बरबस अपने माधुर्य में निमग्न कर उठती है। भावानुकूल भाषा का प्रयोग स्वरूप जी की अपनी विशिष्टता है।[40]

इस प्रकार खरे साहब के साहित्य का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि साहित्यकार डॉ० रामस्वरूप खरे की प्रतिभा उच्चकोटि की है। आपकी लेखनी ने साहित्य को जिस विधा को छुआ है वह विधा धन्य हो गयी। जनपद ऐसे मनीषी साहित्यकार को पाकर धन्य हो गया।

च) कहानीकार

उषा सक्सेना

निबन्ध, शोध निबन्ध, समीक्षा, कहानी, नाटक, गीतिनाट्य, रेडियो नाटक आदि अनेक विधाओं पर एक साथ लेखनी चलाने वाली लेखिका श्रीमती उषा सक्सेना जनपद जालौन की ऐसी विभूति हैं जिन्होंने अपने लेखन कार्य से जनपद का गौरव बढ़ाया है।

श्रीमती उषा सक्सेना का जन्म 29 फरवरी सन् 1936[41] ई० को जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व० श्रीमती कामता नाथ सक्सेना एवं माता स्व० श्रीमती भाग्यवती देवी थीं। आपके बाबा श्री कान्ह कुमार थे। श्रीमती उषा सक्सेना का विवाह स्व० श्री द्वारिका प्रसाद सक्सेना के सुपुत्र श्री करुणा शंकर सक्सेना के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में पुत्र सुधांशु शंकर एवं पुत्री डॉ० राजश्री मोहन है। किन्तु दुर्भाग्यवश लेखिका के इकलौते पुत्र सुधांशु शंकर की मृत्यु अल्पायु में ही अगस्त 1993 ई० में हो गयी। लेखिका के जीवन की यह सबसे दुखद घटना है। पुत्री डॉ० राजश्रीमोहन का विवाह डॉ० रजत मोहन के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में कु० शुभांगी एवं शोभित कुमार है। डॉ० अभयकरन सक्सेना एवं श्रीमती प्रतिभा सक्सेना लेखिका के भाई–बहन हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा आर्य कन्या इण्टर कालेज उरई से सन्

1947 ई0 में उत्तीर्ण की। हाईस्कूल की परीक्षा में आपने यू.पी. बोर्ड में दसवाँ स्थान प्राप्त किया था। पुनश्च इण्टरमीडिएट की परीक्षा आपने सन् 1949 ई0 में इलाहाबाद से उत्तीर्ण की। बी.ए. तथा एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षाएँ आपने सन् 1951 एवं 1953 ई0 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद से उत्तीर्ण की। एम.ए. की परीक्षा विश्वविद्यालय से टॉप करके गोल्ड मेडल भी प्राप्त किया था। एम.ए. (हिन्दी) में कवि कमलेश्वर आपके सहपाठी रहे हैं। श्रीमती उषा सक्सेना को महान कवयित्री महादेवी वर्मा की स्नेहिल छत्रछाया भी मिली। इन्हीं की प्रेरणा पाकर आपके लेखन कार्य में और निखार आ गया।

आपकी अब तक की प्रकाशित कृतियों की संख्या 6 है। आपका पहला प्रकाशन 'बरखा–बसन्त (ललित निबन्ध) के रूप में हुआ था। इसके प्रकाशक – सुधांशु प्रकाशन लखनऊ है तथा पृष्ठों की संख्या 100 है और यह 1966 ई0 में प्रकाशित हुआ था। 'एक बिरवा चन्दन का' यह आपका प्रथम कहानी संग्रह है जो 1991 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसके पृष्ठों की संख्या 107 है तथा प्रकाशक– आदर्श प्रकाशन गृह लखनऊ के द्वारा प्रकाशित है। 'पथ अभिलाषी' आपका 28 पृष्ठों का नाटक है, जो 1991–92 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक भी आदर्श प्रकाशन गृह लखनऊ है। आपका रेडियो नाटक 116 पृष्ठों का नाटक है जिसके प्रकाशक जनार्दन प्रकाशन हैं और इसका प्रकाशन वर्ष 1997 ई0 है। 'मेहनत के मोती' आपका लोक कथा संकलन है जो 1997 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक–सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली 110007 है तथा पृष्ठों की संख्या 104 है। 'अनजाने रिश्ते' 110 पृष्ठों का दूसरा कहानी संग्रह जो 2002 ई0 में प्रकाशित हुआ। इसके प्रकाशक चेतन साहित्य मंदिर नई दिल्ली 110024 हैं।[42]

इस प्रकार उषा सक्सेना के साहित्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि आपने अनेक विधाओं में लेखनी चलायी है किन्तु आपको नाटक एवं कहानी में अच्छी सफलता मिली है। आपके नाटकों का मंचन भी हो चुका है और वे नाटक मनीषियों द्वारा सराहे भी गये हैं।

(छ) नाटककार
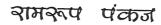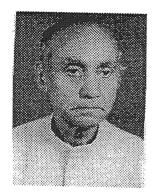
रामरूप स्वर्णकार 'पंकज' कोंच तहसील के ऐसे साहित्यकार हैं जिनकी लेखनी सिंहनी के समान काव्य रूपी कानन में निर्भय विचरण करती है। आपने काव्य के प्रत्येक पक्ष में इस सिंहनी को कोने–कोने में विचरण करवाया है। साथ ही आपने मूक समाज में भयंकर गर्जना के द्वारा लोगों के सोये हुए भावों को जगाने पर विवश कर दिया है।

रामरूप स्वर्णकार 'पंकज जी' का जीवन एक कवित्वमय जीवन है। उनमें जाति–पाँति की संकीर्णता नहीं है और न ही ऊँच–नीच का भेद–भाव। उन्होंने पुराने आदर्शो को जो मानस पटल पर धूमिल हो रहे थे पुनः उस धूल को साफ किया। रामरूप पंकज जी का जन्म 27 जून सन् 1931 ई0 में जनपद जालौन के कस्बा कोंच में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री घोंचन लाल एवं माता स्व0 श्रीमती धनकुँवर देवी थी। इनके माता–पिता धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। बालक रामरूप स्वर्णकार पर माता–पिता के संस्कार बचपन से ही दिखायी देने लगे थे। आपका विवाह रामपुरा (जालौन) निवासी स्व0 श्री गनेश स्वर्णकार की सुपुत्री श्रीमती मुन्नी देवी के साथ हुआ। आपकी

सात सन्तानों में तीन पुत्र एवं चार पुत्रियाँ है। कवि के बड़े पुत्र का नाम भास्कर सिंह 'माणिक' है जो पिता के गुणों का अनुकरण करते हुए साहित्य साधना में लगे हुए हैं। इनका विवाह श्रीमती रचना स्वर्णकार के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में पुत्र मयंक मोहन एवं पुत्री प्रियांजलि है। पंकज जी के दूसरे पुत्र उमेश चन्द्र हैं जिनका विवाह श्रीमती उमा के साथ हुआ। इनकी एक सन्तान बेबी पूजा है। कवि के तीसरे पुत्र मधुसूदन सिंह है जो अभी अविवाहित है। पंकज जी की पुत्रियों में बड़ी पुत्री श्रीमती गायत्री देवी है जिनका विवाह ग्राम पड़री निवासी श्री श्रीराम के साथ हुआ। इनके दो पुत्र सौरभ व गोलू है। दूसरी पुत्री श्रीमती गीता देवी है जो उरई निवासी श्री संजय को ब्याही गयीं। इनकी चार संतानों में कु0 जया, नीतू, डिम्पल एवं बबलू है। पंकज जी की तीसरी पुत्री श्रीमती ममता देवी का विवाह जालौन निवासी श्री रामू के साथ हुआ। अवि एवं कु0 राखी इनकी दो संतानें हैं। चौथी पुत्री कु0 हेमलता है।

आपने स्वर्गाश्रम देहरादून से सन् 1962 ई0 में प्रथमा एवं 1964 ई0 में इसी संस्थान से मध्यमा की परीक्षा उत्तीर्ण कीं।

आपको लेखन की प्रेरणा साहित्यकारों के सम्पर्क से प्राप्त हुई। आपके आदर्श कवि भूषण एवं केशव हैं।

आपकी प्रकाशित कृतियों में वीर बुन्देल लाला हरदौल' (नाटक) है। आपके साहित्यिक जीवन का प्रारम्भ कविताओं से हुआ। अप्रकाशित कृतियों में 'बुन्देली माटी' (काव्यसंग्रह), 'लक्ष्मीबाई', 'झलकारी बाई', 'पन्ना धाय का त्याग' आदि है। इसके साथ ही आप मौलिक अधिकार 'यंत्र' झाँसी के प्रतिनिधि भी रहे।

आपको सन् 1996 ई0 में श्रेष्ठ कवि नाटककार, लेखक का सम्मान

सोनार महासभा झाँसी द्वारा प्राप्त हुआ। आपको अखिल भारती साहित्य परिषद मथुरा द्वारा 15 अगस्त सन् 2001 में 'मैथिलीशरण गुप्त' सम्मान से सम्मानित किया गया। पारस प्रेम परिषद उरई द्वारा 'सप्त रसराज' की उपाधि सन् 2002 में प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी छतरपुर तथा ग्वालियर से काव्य प्रसारण होता रहता है।

आपका 'वीरबुन्देल हरदौल' नाटक के प्रकाशक बलवन्त सिंह 'गुर्जर' कोंच है। इसके पृष्ठों की संख्या 80 है।

पंकज जी ने अपने नाटक के माध्यम से बुन्देली धरती के सूरमा लाला हरदौल के चरित्र को उकेरा है– उनका यशोगान किया हैं। इनके सम्बन्ध में कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

ओरछा के उदय सपूत सूरमा बुन्देली में,
भानुकुल प्रकाशक शक्ति सौ गुनी तुम्हारी हो।
वेत्रवती मैया के, कन्हैया तुम सलोने पूत
तुमको आशीष कीर्ति, विश्व में तुम्हारी हो।।[43]

'पंकज' जी की भाषा सरल सुबोध एवं बोधगम्य है। अभिनेता जो बात मंच पर कहता है दर्शक उसे पूर्ण रूप से समझने में सक्षम है। यथा–

'हरदौलसिंह का कामदार मंगल सिंह कल तक एक चपरासी था। आज शाही सिपहसालार हैं सरकार उसे सेनापति का पद दिया गया है। जबकि राज्य के नियम के अन्तर्गत प्रधान सेनापति का चुनाव राजा ही कर सकता हैं किन्तु वह तो खुद को राजा मान बैठे! लगता है उन्हें आपका भय नहीं रहा। पूरे युद्ध में मुझसे एक शब्द भी नहीं पूछा गया जबकि में बराबर मौजूद रहा।''[44]

साहित्यकार रामरूप स्वर्णकार पंकज जी के सम्बन्ध में मुन्नालाल भारद्वाज कोंच के विचार– "बन्धु श्री रामरूप स्वर्णकार पंकज का साहित्यिक अभिनन्दन और भी अधिक हर्ष का विषय है। आप नगर की एक प्रतिभा है। आपकी रचनाओं से नगर में एक नवीन चेतना का उदय हुआ। आप राष्ट्रीयता के उपासक कवि हैं।[45]

सूर्यप्रसाद पटैरया आचार्य एम.ए. काव्यतीर्थ कोंच ने साहित्यकार द्वारा रचित नाटक के सम्बन्ध में उनके विचार दृष्टव्य हैं–

श्री बुन्देला लाला हरदौल अभिनय के लेखक श्री रामरूप स्वर्णकार 'पंकज' का प्रयत्न सराहनीय है। यह अभिनय प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का पोषक है, काव्य शैली भाव व्यंजना उत्कृष्ट है विचारधारा राष्ट्र हितैषिणी है इससे हिन्दी जगत को अधिकाधिक लाभ प्राप्त होगा।"[46]

साहित्यकार रामरूप पंकज एक अच्छे नाटककार एवं एक कवि हैं। खड़ी बोली व बुन्देली भाषा पर उनका समान अधिकार है। निश्चित रूप से उनका साहित्य राष्ट्रीयता एंव सामाजिकता से परिपूर्ण है। आप जनपद के अच्छे साहित्यकारों में से एक है। आप हिन्दी सेवा में पूर्ण समर्पित साहित्यकार हैं।

ज) अन्य विधाकार

रणवीर सिंह सेंगर

प्रसिद्ध व्यंग्यकार, हिन्दी के अनन्य उपासक, उत्कृष्ट साहित्य स्रष्टा एवं प्रसिद्ध विचारों में अग्रगण्य रणवीरसिंह सेंगर का जन्म 10 अक्टूबर सन् 1958 ई0 को ग्रा0 कन्झारी पो0 बहादुरपुर जिला जालौन में हुआ था। आपके पिता श्री कृपाल सिंह सेंगर एवं माता

श्रीमती श्यामकुँवर सेंगर है। आपका विवाह ग्राम पारा कण्डौर (हमीरपुर) निवासी स्व0 श्री बाबूसिंह गौर की सुपुत्री श्रीमती मनोरमा सेंगर के साथ हुआ। आपकी तीन सन्तानों में एक पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। पुत्र का नाम शासक गौर एवं पुत्रियाँ कु0 सलिला सेंगर व निष्ठा सेंगर है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1974 व 1976 ई0 में गाँधी इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण कीं। बी.एस–सी. की परीक्षा आपने दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से सन् 1978 ई0 में उत्तीर्ण की। आप इस परीक्षा में कुलाधिपति स्वर्णपदक विजेता रहे है। सम्प्रति आप अधिकारी इलाहाबाद बैंक कोंच में कार्यरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा स्वतः ही बाल्यकाल से प्रस्फुटित हुई।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'नाली में लोट पोट', व्यंग्य संग्रह है इसके पृष्ठों की संख्या 152 है। अप्रकाशित रचनाओं में अँगूठा टेक, भरती हुई दरारें, भारत बनाम इंडिया,(नाटक), दुनिया ज़मात है हाजिर हूँ कहना है' (आत्मकथा) है।

आपसे साक्षात्कार के समय साहित्य पर कुछ बातचीत हुई। उसके अंश इस प्रकार हैं–

प्र0 –आप साहित्य के द्वारा लोगों को क्या देना चाहते हैं?

सेंगर जी– युवा वर्ग के मन में भ्रष्टाचार के विरुद्ध विद्रोह की भावना पैदा करना चाहता हूँ।

प्र0 –आपकी मुख्यविधा व्यंग्य है। आप व्यंग्य के माध्यम से समाज एवं देश में व्याप्त बुराइयों से पर्दा उठाने का श्लाघनीय प्रयास कर रहे हैं। क्या पाठकों में इसका असर होता है?

सेंगर जी– क्यों नहीं। मनोरंजन के साथ ही मैं चाहता हूँ कि अप्रत्यक्ष रूप से लोगों के मन में यह बात बैठ जाये कि बुरा कार्य बुरा होता है। मेरा विश्वास है कि धीरे–धीरे यह करारा व्यंग्य उनके मन में गहरे तक पैठ बना लेगा।

प्र0– हमारे देश में अनेक समाज सुधारक, संतो ने समय–समय पर अपनी वाणी से, सिद्धान्तो के द्वारा व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया है। क्या आप भी इसी डगर पर चलने का प्रयास करेंगे?

सेंगर जी– (हँसते हुए) नहीं भाई। न कभी बुराई का अन्त हुआ है और न सुधार का। अच्छाई और बुराई का संसार हैं इसी कारण तो इसे संसार कहा जाता है। जब बुराइयों का प्रतिशत बढ़ जाता है तो सुधारकों एवं संतों के जन्म जरूर होते हैं।[47]

यह बात इनकी निर्विवाद रूप से सत्य हैं कि संसार में अच्छाई और बुराई साथ–साथ जन्म लेती है। देश काल के अनुसार ही अच्छाई–बुराई का आकलन किया जाता है जो आज अच्छाई कल को वही बुराई दिखने लगती है।

आपने विभिन्न शैलियों में साहित्य को समृद्ध किया है किन्तु मुख्य रूप से आपकी शैली हास्य व्यंग्यात्मक हैं इसी हास्य व्यंग्य शैली में आपका यह गद्यांश दृष्टव्य है–

"मैं सिर पर पैर रखकर नगर पालिका की ओर भागा और पड़ौसी भैंस तथा भैंस मालिक के खिलाफ अर्जी दे आया। तब से महीनों गुजर गये हैं, पड़ोसी चेहरे की मुस्कान और कुटिल हो गयी है और उसने भैंस की सांकल की लम्बाई और बढ़ा दी है, सुना है वह नगर पालिका में सारी गोटें फिट कर आया है जो भी हो मेरा भैंस कष्ट नासूर बनता जा रहा है। यदि आपके पास कोई अनमोल

सुझाव हो तो कृपया मेरा पता नोट कर लें– मैं बेचारा भैंस पीड़ित। भैंस गलीनं0 1 कोई भी मुहल्ला। नगर उरई। राज्य बुन्देलखण्ड (नारों द्वारा प्रस्तावित)।[48]

रणवीर सिंह सेंगर की भाषा शैली के सम्बन्ध में डॉ0 रामस्वरूप जी खरे ने लिखा है– ''नाली में लोट–पोट, श्री रणवीर सिंह सेंगर का व्यंग्य विधा में लिखा गया 11 लेखों का एक ऐसा पुष्प गुच्छा है जिसमें अनेक प्रकार के प्रसूनों की पृथक–पृथक महक विद्यमान हैं। सर्व श्री बरसाने लाल चतुर्वेदी, शरद जोशी, के.पी. सक्सेना एवं हरीशंकर परसाई जैसी प्रमुख प्रतिभाओं ने इस विधा को अनेकशः अलंकृत किया है। समय–समय पर अन्य जनपदीय प्रतिभाएँ भी इस सशक्त विधा में अपनी प्रवीणता प्रकट करके जनपद का नाम राष्ट्रीय स्तर तक प्रोद्भाषित करती हैं। श्री सेंगर का यह प्रकाशन एक अभिनव एवं स्तुत्य प्रयास है।[49]

रणवीर सिंह सेंगर ने 'नाली में लोट–पोट' रचना के माध्यम से सिद्ध कर दिया है कि आप एक अच्छे व्यंग्यकार है। सामाजिक राजनैतिक एवं धार्मिक समस्याओं को अपनी व्यंग्य विधा के माध्यम से उजागर किया है। वे समस्याएँ उनकी अकेले की नहीं वरन् समाज में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति की है– हम सबकी हैं। निश्चित रूप से यह प्रयास उनका श्लाघनीय ही कहा जायेगा।

1. 'नीति–संक्षेप' लेखक– नाथूराम गुप्त, लेखक परिचय से
2. वाल्मीकीय 'रामायण' लेखक– नाथूराम गुप्त, पृ0सं0 39
3. 'नीति–संक्षेप' लेखक– नाथूराम गुप्त, पृ0सं0 5
4. लेखक, डॉ0 जयदयाल सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 19/12/2002
5. लेखक, डॉ0 जयदयाल सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 19/12/2002
6. 'स्मृतियों के आँचल में लेखिका– सुशीला मिश्रा पृ0सं0 92
7. स्मृतियां के आँचल में लेखिका– सुशीला मिश्रा पृ0सं0 63
8. लेखक, डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरवार द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार दिनांक 17/04/2003
9. लेखक, डॉ0 हरीमोहन पुरवार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 26/06/2003
10. 'जीवनवृत्त एवं योगदान' अप्रकाशित परिचय पत्र से
11. 'शोध धारा' सितम्बर 2004, फरवरी 2005, प्रकाशक–शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान, उरई जालौन, पृ0सं0 63
12. सबकी ख़ैर ख़बर, सम्पादक–नासिर अली नदीम, पृ0सं0 9
13. सहस्त्राब्दि साहित्यकार कोश, सम्पादक–डॉ0 रामस्वरूप खरे, पृ0सं0 79
14. समीक्षाकार, डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार दिनांक 14/07/2003
15. समीक्षाकार, डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार दिनांक 14/07/2003
16. समीक्षाकार, डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार दिनांक 14/07/2003
17. समीक्षाकार, डॉ0 दिनेशचन्द्र द्विवेदी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार

का दिनांक 19/07/2004

18. समीक्षाकार, डॉ0 दिनेशचन्द्र द्विवेदी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 19/07/2004
19. 'समीक्षा दर्शन' लेखक– डॉ0 नारायणदास समाधिया, पृ0सं0 89
20. 'समीक्षा दर्शन' लेखक– डॉ0 नारायणदास समाधिया, पृ0सं0 205
21. 'जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता' लेखक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' नमन प्रकाशन उरई प्र0सं0 11
22. सहस्त्राब्दि साहित्यकार कोश, सम्पादक डॉ0 रामस्वरूप खरे सम्पादकीय से
23. उपन्यासकार दीपेश जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 21.09.2003
24. उपन्यासकार दीपेश जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 21.09.2003
25. कुछ संतरें कुछ पंखुरियाँ, रचयिता 'दीपेश' प्रकाशन– पुनीत आराधना, उरई पृ0सं0 27
26. कुछ संतरें कुछ पंखुरियाँ, रचयिता 'दीपेश' प्रकाशन– पुनीत आराधना उरई, पृ0सं0 55
27. लेखिका के भाई डॉ0 अभयकरन सक्सेना से प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 27/04/2004
28. स्मारिका (स्वर्ण जयन्ती वर्ष 6 फरवरी 2001) दीक्षान्त समारोह दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई, पृ0सं0 19
29. 'हत्यारी दौलत' लेखक, अमित कुमार द्विवेदी प्रकाशन – शिवा पॉकेट बुक्स, मेरठ, पृ0सं0 46
30. 'हत्यारी दौलत' लेखक, अमित कुमार द्विवेदी प्रकाशन – शिवा पॉकेट बुक्स, मेरठ, पृ0सं0 47
31. साप्ताहिक दिनान्त पृ0सं0 3 दिनांक 15/05/1978
32. युगकवि स्वरूप : व्यक्तित्व एवं कृतित्व–राममनोहर, पृ0सं0 88
33. 'अधखिले फूल', रचयिता– डॉ0 राम स्वरूप खरे, पृ0सं0 42

34. 'अधखिले फूल' रचयिता– डॉ0 रामस्वरूप खरे, पृ0सं0 77

35. 'अधखिले फूल' रचयिता– डॉ0 रामस्वरूप खरे, पृ0सं0 78

36. युग कवि डॉ0 राम स्वरूप खरे का बाल साहित्य, लेखिका– संगीता गुप्ता, पृ0सं0 110

37. युग कवि डॉ0 राम स्वरूप खरे का बाल साहित्य, लेखिका– संगीता गुप्ता, पृ0सं0 110

38. युग कवि डॉ0 राम स्वरूप खरे का बाल साहित्य, लेखिका– संगीता गुप्ता, पृ0सं0 113

39. अद्यतन हिन्दी कविता, सम्पादक– डॉ0 रणजीत पृ0सं0 59

40. स्वरूप काव्य का समीक्षात्मक विवेचन 'समीक्षक– डॉ0 दुर्गा प्रसाद श्रीवास्तव आमुख पृष्ठ से

41. लेखिका उषा सक्सेना के भाई डॉ0 अभयकरन सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी दिनांक 27/04/2004

42. लेखिका उषा सक्सेना के भाई डॉ0 अभयकरन सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी दिनांक 27/04/2004

43. वीर बुन्देला लाला हरदौल, लेखक, रामरूप 'पंकज' स्वर्णकार, प्रकाशक– बलबन्त सिंह गुर्जर, पृ0सं0 15

44. वीर बुन्देला लाला हरदौल, लेखक, रामरूप 'पंकज' स्वर्णकार, प्रकाशक– बलबन्त सिंह गुर्जर, पृ0सं0 53

45. वीर बुन्देला लाला हरदौल, लेखक, रामरूप 'पंकज' स्वर्णकार, प्रकाशक– बलबन्त सिंह गुर्जर, आमुख से

46. वीर बुन्देला लाला हरदौल, लेखक, रामरूप 'पंकज' स्वर्णकार, प्रकाशक– बलबन्त सिंह गुर्जर, आमुख से

47. व्यंग्यकार श्री सेंगर जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 10/03/2005

48. 'नाली में लोट पोट' लेखक– रणवीर सिंह सेंगर, पृ0सं0 85

48. 'नाली में लोट पोट' लेखक– रणवीर सिंह सेंगर पूर्व पीठिका, पृ0सं0 5

चतुर्थ अध्याय

तहसील जालौन के साहित्यकार

मातादीन पोरवाल
ब्रह्मानन्द मिश्र 'मीत'
सच्चिदानन्द मिश्र 'कुसुमाकर'
राधेश्याम श्रीवास्तव ''योगी''
राम स्वरूप 'सिन्दूर'
देवकी नन्दन बुधौलिया ''राजगुरु''
पूरन चन्द्र मिश्र 'पूरन'
शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला'
राममोहन शर्मा 'मोहन'
माया हरिश्याम 'पारथ'
मु० सलीम 'असर'
द्वारिका दास माहेश्वरी 'सेठ सीताराम'
डॉ० श्यामसुन्दर सौनकिया
रहमान शाह 'माहिर'
सन्तोष कुमार सौनकिया 'नवरस'
रवीन्द्र नाथ शर्मा
वसीउर्रहमान सिद्‌दीकी 'वसी'
निसार अहमद 'सागर'
नासिर अलि 'नदीम'
भगवान सिंह 'राही',
रामशंकर भारती
महेन्द्र कुमार पाटकार 'मृदुल'
विवेकानन्द श्रीवास्तव
नीलम श्रीवास्तव 'कश्यप'
अपर्णा सक्सेना

मातादीन पोरवाल

जालौन जनपद साहित्यिक सम्पदा से भरपूर ऐसा क्षेत्र है जिसकी मिट्टी ने एक से बढ़कर एक साहित्यकारों को जन्म दिया है। इन्ही साहित्यकारों में मातादीन पोरवाल का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। 'मनहारिन' कविता ने कवि को वास्तविक कवि रूप में प्रतिष्ठित कर दिया है।

कवि मातादीन पोरवाल का जन्म लगभग 1913 ई0 में जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री लालमन पोरवाल था। इनके जन्म के सम्बन्ध में **श्री राधेश्याम योगी जी ने लिखा है** –"स्वतन्त्रता संग्राम में राष्ट्र भक्ति का दर्प भरे कवि सम्मेलनों में दीनों, दुखियों, मजदूरों की पीड़ा उभारने वाला यह वयोवृद्ध नहीं जानता है कि वह कब पैदा हुआ था क्योंकि इस युग में पैदा होने वाला कोई भी प्राणी अपना जन्म समय नहीं जानना चाहता था। सहज विकास की प्रक्रिया में जन्म और सहज विश्राम की अन्तिम क्रिया में चिर–निद्रा सिद्धान्त को मानने वाला कवि केवल वर्तमान में जीवित रहता है।"[1] मातादीन पोरवाल जी की शिक्षा मात्र मिडिल क्लास तक हुई। आपने मिडिल क्लास की परीक्षा सन् 1928 ई0 में उत्तीर्ण करके जनरल स्टोर का व्यवसाय अपना लिया था। ये साहित्यिक गोष्ठियों में भाग लेते थे। यही गोष्ठियाँ इनके लेखन की प्रेरणा बनी। ये कवि सम्मेलनों में दीन–दुखियों एवं मजदूरों की पीड़ा को उभारने वाले सशक्त कवि के रूप में जाने जाते रहे हैं। आपके प्रिय कवि स्व0 श्री जय गोविन्द त्रिपाठी एवं कन्हैया लाल मिश्र

जालौन वाले है। आपकी मुख्य रुचि समाज सेवा के कार्यों में अधिक रही। इन्होंने समाज में उपेक्षित पात्रों पर अपनी लेखनी चलायी है जैसे मनहारिन, ऐतिहासिक पात्रों में यशोधरा साथ ही राष्ट्र क्रान्ति के गीत गाये हैं। शृंगार के दोनों पक्षों पर भी आपने अपनी कलम का जादू बिखेरा है।

आपका अभी तक कोई काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। आपकी 'मनहारिन' कविता काफ़ी चर्चित रही है। उसी की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

एक मनहारिन नै हजार बार रोका किन्तु,
चूड़ी बेचने को वह जाती रही गाँव में।
चाल थी नशीली और कसीली कंचुकी की कोर,
मुँह को मरोर के लगाती रही दाँव में।

× × ×

एक हाथ टोकनी सँभाले चूड़ियों का बोझ,
एक हाथ छूटे केश–पाश को संवारती।[2]

तीन दशक पहले अर्थात् 1970–80 के आस पास तक गाँव देहातों में लड़की का गौना होता था। आठ दिन ससुराल में रहने के बाद लड़की के चाचा, भाई, परिवार के लोग मिलकर उस लड़की को लेने जाते थे। उसी को चौथी चलना कहते थे। 'चौथी चल आयी थी' शीर्षक से यह कविता सचमुच पुराने जमाने की यादें ताजा कर देती हैं। इस चौथी के माध्यम से कवि ने कितने अधिक भाव भर दिये, यह कवि की अनौखी कल्पना शक्ति का परिचायक है–

परिचायक है–

रूप–सिन्धु सी नयी नवेली, चौथी चल आई थी।

पर घर जाकर पीर बढ़ गई, असमय मुरझाई थी।।

× × ×

क्या गुलाब समता कर पाया उसके मुख मंडल की।

आँखों में इतनी गहराई नहीं जलधि के जल की।।[3]

'यशोधरा' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने सिद्धार्थ के गृह त्याग का ऐसा चित्र खींचा है जो बरबस ही मन को आकृष्ट कर लेता है–

सोता रहा शिशु और सोती प्रेयसी रही,

सोता रहा जग भी अचेतन भवन में।

गौतम के ग्लानि का विचार उठा मन में।

जीवन के कितने विनोद के बिताये दिन,

करुणा का नीर भर आया था दृगन में।[4]

कवि की भाषा सरल एवं जन साधारण के समझने के योग्य है। अलंकारों का प्रयोग अच्छा बन पड़ा है।

कवि उम्र के आखिरी पड़ाव में है। उनकी रचना धर्मिता ठीक बन पड़ी है। आप जनपद के कवियों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं।

ब्रह्मानन्द मिश्र "मीत" :–

ब्रह्मानन्द मिश्र 'मीत' ऐसे साहित्यकारों में से एक है जिन्होने ब्रज भाषा, खड़ी बोली, एवं बुन्देली भाषा में पारम्परिक छन्दों के माध्यम से साहित्य को समृद्ध बनाया। आपकी कविताओं में रस, छन्द एवं अलंकारों का समावेश

साहित्य को उत्कृष्ट तो बनाता ही है साथ में साहित्यकार की प्रतिभा को भी उजागर करता है।

ब्रह्मानन्द मिश्र 'मीत' का जन्म चैत कृष्ण–4 रविवार, सम्वत् 1977 ई0 को ग्राम दहगुवाँ तहसील जालौन में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री कमलानन्द मिश्र अच्छे साहित्य प्रेमी एवं साहित्यकार थे। आपकी माता स्व0 श्रीमती रावरानी देवी रामपुरा (जालौन) निवासी पं0 श्याम लाल की सुपुत्री थी, जो धार्मिक विचारों की सुशील महिला थीं। आपके दो विवाह हुए थे। पहली पत्नी स्व0 श्रीमती लाड़कुँवर देवी थीं जो दुर्भाग्य वश सन् 1955 ई0 में चल बसीं थीं। इनका एक लड़का सतीश चन्द्र मिश्र कार्याधिकारी हरिजन समाज कल्याण विभाग लखनऊ में कार्यरत थे। सतीश चन्द्र मिश्र जी का विवाह दमरार जिला जालौन निवासी श्री रामरतन जी की सुपुत्री श्रीमती शोभा देवी के साथ हुआ। इनके दो पुत्र विश्वजीत मिश्र एवं कपिल कुमार मिश्र हैं। विधि की विडम्बना कहें या दुर्भाग्य इस उम्र में कवि को अपने बड़े पुत्र सतीश चन्द्र मिश्र की असामयिक मृत्यु (मई 2004) का दुःख झेलना पड़ा। आपके दूसरे पुत्र पं0 नलनीश चन्द्र मिश्र जो आगरा में पुलिस इंसपेक्टर के पद पर कार्यरत हैं। इनका विवाह जमरेही जिला जालौन निवासी श्री छक्की लाल जी की सुपुत्री ऊषा देवी के साथ हुआ। इनकी तीन संतानों में एक पुत्र राजा एवं दो पुत्रियाँ लकी व शिल्पी है। कवि की पाँच पुत्रियाँ– सुधा देवी, सुनीता देवी, सरोजनी देवी, सुषमा देवी, गायत्री देवी एवं सावित्री देवी है। आपका दूसरा विवाह कोंच निवासी पं0 गयाप्रसाद गोस्वामी की सुपुत्री श्रीमती कृष्णा देवी के साथ हुआ। आपकी प्रथम पत्नी श्रीमती लाड़कुँवर देवी

की संतानों में सतीश चन्द्र मिश्र, सावित्री देवी, सरोजनी देवी, सुषमा देवी एवं गायत्री देवी हैं, तथा दूसरी पत्नी श्रीमती कृष्णा देवी की संतानों में नलनीश चन्द्र मिश्र, सुधा देवी एवं सुनीता देवी हैं। ये सभी विवाहित हैं। पुत्री सुनीता देवी का स्वर्गवास सन् 1996–97 में हो गया था। आप चार भाई हैं– पं0 सच्चिदानन्द मिश्र, कुसुमाकर, शिवानन्द बुन्देला एवं श्यामानन्द मिश्र है– जो सभी अच्छे साहित्यकार हैं–

आपकी शिक्षा मध्यमा, आयुर्वेद विशारद, शास्त्री एवं आयुर्वेदाचार्य तक है। सम्प्रति आप शिव औषधालय नया रामनगर, उरई में अपने निज निवास में रह रहे हैं। आपको लेखन की प्रेरणा पिता श्री कमलानन्द मिश्र जी से प्राप्त हुई।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपके अप्रकाशित ग्रंथों में 'राष्ट्रीय गीत सरित' (खड़ी बोली में), 'नायिका भेद' (ब्रजभाषा में), 'महाराणा प्रताप' (खण्ड काव्य) एवं 'रानी किरणावती' (खण्ड काव्य है) ये ग्रंथ सवैया कवित्त एवं घनाक्षरी मे रचित हैं।

महाराणा प्रताप खण्डकाव्य में प्रताप एवं उनके घोड़े चेतक की बहादुरी का चित्रण कवि ने वीर रस में किया है। कवि की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

घेरौ जाय सिंह शाह सियार सैनिकों ने,
होने लगे शूरों के सजीव शौर्य साके हैं।
युद्ध बीच उद्धित, प्रकुद्धित प्रताप वीर,
चीर अरि भीर करे सैल के सराके हैं।।

झपट झपेट भरै चेतक चटाके जितै,

मचै हाहाकार सुन टाप के टपाके हैं,

जौन वीर ताके, हनै वीर तेग ताके से,

कौन वीर ताके, सह–हाथ वीरता के।।[5]

हमारे देश का आतिथ्य ग्रहण करने कुछ समय पहले लन्दन की महारानी भारत आयी थीं। उनका अच्छा स्वागत सत्कार भी हुआ। कवि ने उसी सन्दर्भ में अपना ये गीत लिखा जो अच्छा बन पड़ा है–

चार बोल अन्तर की बानी के, स्वागत में लन्दन की रानी के,

घर आया मेहमान वन्द्य है , जन–जन के मन में आनन्द है।

× × ×

मेल जोल करने की आदत हो, रोज–रोज एक नया स्वागत हो,

अच्छा है, गोरी से लेकर ह्यूरोज और डायर की जिन्ना की सिजदे इबादत हो।

ध्यान रहे दिल्ली की खद्दर की चद्दर पर, विस्मिल, आजाद लिखे खून की निशानी के।

स्वागत...।[6]

आप श्रृंगार के भी अच्छे कवि हैं। आपने नारी के उरोजों का चित्र खींचने में विभिन्न उपमानों का प्रयोग किया है साथ ही अलंकारों में अनुप्रास, रूपक एवं उपमा का सुन्दर समावेश किया है। इनकी ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

सरल सजीले शुभ स्वर्ण की लता में

यह माणिक मणी से खिले पुष्प रतनारे हैं।

नील मुख कान्ति नील मणि सोहती है या कि

अरविन्द कोष में मिलिन्द मतवारे हैं।

या कि मुख–चन्द्र से लगाये नेह नाता रूप–

माधुरी सुता के चकोर रखवारे है,

अमल उरोज हैं कि ओज भरे यौवन की

खोज दिवैया ये मनोज के मुनारे हैं।[7]

आपने बुन्देली भाषा में बुन्देली दादरा 'शीर्षक से पत्नी द्वारा बाँसों के कटाने की बात कही है। आपकी कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

बाँसन भिरे कटा देव बालम, जो मोरी साँसन राखे चाव।

रोक छेड़ ई पै कछु नैयां, मन चाओ अनुआद।।

बेरा बजै कुबेरा बाजै, ज्यों अनहद कौ नाद।

जा मुरली उर लीक करत है, हिय कौ करत कटाव।।

बाँसन भिरे...

काम–धाम बीचई में छूटत, होत घरई की हान।

दही मथन में मुरली फूटै, लगै मथनियाँ आन।।

कानन मूँद बचावै प्रानन, कानों करै बचाव।

बाँसन भिरे..

मुरली सुन घर दौड़ ग्वालिनें, भजे ओई के पास।

घर–घर कलह मचौ गोकुल में, पिय–तिय में अकरास।।

लगत कलंक खुलासा तौऊ, करत न कोउ उपाव,

बाँसन भिरे..

बुरए न नन्द जसोदा साजी, साजे ई बलराम।

हमने सुनी कन्हइयऊ नोनों, आँखन खौ सुखधाम।।

है जौ बुरव बाँस को टूँका, काटौ गऔ छिदाव,

बाँसन भिरे.. ।[8]

ब्रह्मानन्द मिश्र 'मीत' एक अच्छे साहित्यकार के साथ ही अच्छे वैद्य भी हैं। किसी कारण वश इनके कविता संग्रह प्रकाशित न होने की वजह से आप जनपद तक ही सीमित रह गये हैं। यदि आपका कोई भी संग्रह प्रकाशित हो जाता तो निश्चित रूप से इनकी रचनाएँ विद्वानों द्वारा पढ़ी ही नही जाती वरन् समीक्षाएँ भी लिखी जातीं।

सच्चिदानन्द मिश्र 'कुसुमाकर' :—

खड़ी बोली एवं ब्रजभाषा के सशक्त हस्ताक्षर सच्चिदानन्द मिश्र 'कुसुमाकर' जी का जालौन के साहित्यकारों में अपना विशिष्ट स्थान है। आपने छन्दोबद्ध रचनाओं के माध्यम से साहित्य का सृजन किया है। वर्तमान के अनगढ़, अतुकान्त, छन्दों से हीन काव्य से अलग काव्य शास्त्रीय ढंग से अपने कृतित्व का विकास किया है—

सच्चिदानन्द मिश्र 'कुसुमाकर' का जन्म 19 सितम्बर सन् 1924 ई0 को दहगुवाँ (जालौन) उ0प्र0 में हुआ था। इनके पिता पं0 कमलानन्द मिश्र 'कंज' संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं के प्रकाण्ड विद्वान थें। पिताजी का साहित्यिक वातावरण कवि 'कुसुमाकर' पर भी पड़ा। आपकी माता स्व. श्रीमती रावरानी रामपुरा (जालौन) निवासी पं0 श्यामलाल जी की पुत्री थी जो धार्मिक विचारों की सुशील महिला थी। 'कुसुमाकर' जी का विवाह कोटरा (जालौन) निवासी पं0 लक्ष्मीनारायण समाधिया जी की सुपुत्री श्रीमती अमृत

सबसे बड़े पुत्र योगेश मिश्र जी है जिनका विवाह श्रीमती प्रेमलता मिश्रा के साथ हुआ। इनकी चार संतानें– कविता, वन्दना, ज्योति व नीलम है। कवि के दूसरे पुत्र अश्विनी कुमार एक शिक्षक हैं। इनका विवाह श्रीमती राधा मिश्रा के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री कु0 साक्षी है। तीसरे पुत्र आशुतोष मिश्र हैं जिनका विवाह श्रीमती सरोज मिश्रा के साथ हुआ। इनकी संतानों में अभिषेक व कु0 नेहा है। कवि के चौथे पुत्र डॉ0 राकेश है जिनकी पत्नी श्रीमती मीरा मिश्रा है। इनकी चार संतानों में पुनीत, विनीत, कृष्ण मोहन और सोहन हैं। कुसुमाकर जी की एक पुत्री श्रीमती अर्चना (प्राकृतिक चिकित्सक) हैं जो झाँसी के श्री विनोद कुमार नगायच को ब्याही गयीं हैं। इनकी दो संतानों में– तरुण नगायच एवं कु0 ईशा नगायच है। आपके पिता तथा चाचा सभी कवि रहे हैं।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम दहगुवाँ के प्राथमिक पाठशाला में हुई। हाईस्कूल की परीक्षा आपने सन् 1948 ई0 में उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् 1950 ई0 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा व्यक्तिगत रूप में उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् आपने बी0ए0 तथा एम0ए0 की परीक्षाएँ आगरा विश्वविद्यालय आगरा से क्रमशः 1953 एवं 1958 में उत्तीर्ण कीं। आपने 1950 ई0 में 'साहित्य रत्न' की परीक्षा उत्तीर्ण करके शिक्षक के रूप में आपना अध्यापन कार्य शुरू किया।

आपकी अप्रकाशित कृतियों में 'उद्धव गोपी संवाद' (ब्रजभाषा), गजेन्द्र मोक्ष (खड़ी बोली) खण्डकाव्य हैं। आपकी प्रमुख विधा–कविता, (घनाक्षरी सवैया, रोला छप्पय) एवं बुन्देली साहित्य है।

आपको लेखन की प्रेरणा घर में ही पिता–चाचा एवं भाइयों से मिली। आपको 14 सितम्बर 1996 ई0 को हिन्दी साहित्य परिषद उरई से 'काव्येन्दु'

आपको 14 सितम्बर 1996 ई0 को हिन्दी साहित्य परिषद उरई से 'काव्येन्दु' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

आपका कथन है—''यदि दर्पण स्वच्छ होगा तो समाजरूपी चेहरा साफ दिखेगा।''

आपने साक्षात्कार में बताया कि मैं अपना सम्पूर्ण योगदान, साहित्य को देना चाहता हूँ।[9]

'उद्धव गोपी संवाद' कविता के माध्यम से आपने गोपियों की शिकायत बिलकुल अनूठे ढंग से की है। अलंकारों का प्रयोग तो रचना को और अधिक सुन्दर बना देता है—

जो रत है मोहन में तो रत है मोह न यौ,
प्रेम पथ पंथिनी ह्वै, नैकहु मुरीं न पै।
प्रेम गाँठ जोरत में, जो रत तौ जोर दई,
छोरत बनै न अब, ब्रज जुवती न पै।
बिलख—बिलख सब जीवन बिलान्यो जात।
एक—एक वासर गिनत अंगुरीन पै,
मानस पटल पै, अमावस घिरत नित
पावस घिरत दोऊ दृग पुतरीन पैं।[10]

'गजेन्द्र मोक्ष' (खण्ड काव्य) की रचना कवि की उदात्त भावनाओं की परिचायक है—

भैंट थी अनौखी, गजराज ने चढ़ाया जिसे
तोड़ते सरोज जिमि बना शक्र का।

जैसे ही भुशुण्ड ने चढ़ाया पुण्डरीक चारु
शुण्ड कोर चमका, आकार शशि वक्र का
निर्भय गजेन्द्र को घसीटता था ग्राह यहाँ
सत्वर छपाक शीश घात पड़ा चक्र का
आतुरता ऐसी कभी देखी नहीं दीनबन्धु,
नाल बना चक्र, चक्र काल बना नक्र का।[11]

इस प्रकार हम देखते है कि कवि अपनी रचना धर्मिता में काफी सफल रहा है। निश्चित रूप से इनका काव्य नवोदित कवियों के लिये प्रेरणा स्रोत बनकर मार्ग दर्शन में सक्षम होगा।

राधेश्याम श्रीवास्तव 'योगी'

गीत, गजल, चम्पू, कहानी, उपन्यास विधाओं पर लेखनी चलाने वाले राधेश्याम योगी जी का जन्म 28 दिसम्बर सन् 1928 ई0 को जालौन तहसील के ग्राम मकरन्दपुरा में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व0 श्री रघुवीर सहाय श्रीवास्तव एवं माता जी स्व0 श्रीमती जानकी देवी श्रीवास्तव थीं। आपका विवाह ग्राम पड़री जिला जालौन निवासी श्री रामगोपाल श्रीवास्तव की सुपुत्री श्रीमती रामकिशोरी देवी के साथ हुआ। आपकी छैः संतानों में एक पुत्री एवं पाँच पुत्र है। बड़ी पुत्री श्रीमती वन्दना मलिक का विवाह श्री पुनीत मलिक के साथ हुआ। कवि के पुत्रों में, शाश्वत, मृत्युंजय, संजात, कुणाल एवं संघर्ष श्रीवास्तव हैं।

इनके अनुज श्री माया हरिश्याम 'पारथ' जनपद के उच्चकोटि के कवि हैं।

तथा विद्या वाचस्पति है। आप गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान दिल्ली के आर्ज

सदस्य हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा निर्धनों एवं दुखियों की दीन दशा एवं प

में असफलता से मिली है।

आपके प्रिय कवियों में जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, एवं गोप

दास नीरज जी हैं। आपकी प्रमुख रुचियों में लेखन, व्यंग्य, चुटकुले आ

लिखना है।

आपका व्यक्तित्व सहज रूप से सभी को आकर्षित करने वाला है

गेरुए कपड़े, सिर पर टोपी, हाथ में छड़ी लेकर जब काव्य गोष्ठियों में जा

हैं तो सभी के केन्द्र बिन्दु 'योगी' जी ही रहते हैं। होठों पर सहज मुस्कान

और चुटीली व्यंग्य वाणी से सभी को मुस्कराने पर मजबूर कर देते हैं। मंचे

पर आप अपनी रचना **बड़े ही भाव भंगिमा** के साथ पढ़ते हैं।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपकी

फुटकर रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

कवि लौकिक जीवन में असफल प्रेमी है। आपकी यही असफलता

लौकिक धरातल से अलौकिक धरातल पर पहुँचने लगती है। इसी सन्दर्भ में

आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

हो सकता है आई हो तुम प्रिय माटी के द्वार

किन्तु तुम्हारे लिये खुले है कब से हृदय किवार।

× × ×

मंडप आम्र पतउवे बोले–"कंचन की सौगन्ध,

मंडप आम्र पतउवे बोले—"कंचन की सौगन्ध,

पहली अगवानी पर आये स्पंदन की सौगन्ध।

रहे सिसकते, पुरे चौक के, चंदन अक्षत पुंगीफल,

कैसे हो विश्वास विरह गठबंधन की सौगन्ध।

मुझे कोसता रहा अकिंचन कोई द्वाराचार,

किन्तु तुम्हारे लिये अभी तक बैठा हूँ लाचार।[12]

कभी—कभी कवि स्वयं विहरणी बनकर अपने प्रेमी के द्वार की साँकल बजाने लगता है—

मैं तुम्हारे द्वार की साँकल बजाती ही रही

प्राण! तुम मदहोश इतने! सुन न पाये।

माँग की सिन्दूर का सुख मिल न पाया।

चूड़ियाँ काली पहनने को कलपती है कलाई

रह गई सहमी उँगलियाँ पाँव की भी।

नूपुरों की ध्वनि श्रवण तक आ न पाई

कल्पना की सेज पर पायल बजाती ही रही।

प्राण! तुम मदहोश इतने! सुन न पाये।[13]

कवि सच्चा साधक है, इसके साथ ही वह सच्चा राष्ट्र भक्त भी है। आज के परिवेश में देश को चलाने वाला नेता भी अभिनेता दिखायी देता है। वह अपने देश को बचाने का आह्वान करता हुआ कहता है—

कहीं न कोई नेता है, नेता बस अभिनेता है,

डूब न जाये नाव देश की, कोई इसे बचाओ रे!

नैया पार लगाओ रे !

आपाधापी मची सभी को चिन्ता है अपनी–अपनी,

अपना राग सभी की, ढपली है अपनी–अपनी !

जिसका द्वार खटाता हूँ, वह सोया–सोया मिलता है

अपने कल की चिन्ता में सबके कल की सब भूले हैं

बंद बोतलों के जल में पावन गंगा जल भूले हैं।

यहाँ न कोई अपना है, जो अपना बस सपना है

सपनों में खोया न रहे, यह प्यारा देश जगाओ रे।

नैया पार लगाओ रे।[14]

योगी ज़ी ने श्रृंगार परक रचनाओं का भी सृजन किया हैं शुरुआती समय में कवि का मन श्रृंगार परक रचनाओं में अधिक रमा है। आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

सत्य कर जीवन श्रृंगार, सागर की साधक बाधाएँ

वृष्टि विन्दुओं सी विपदाएँ, नित प्रयास के पंख नोचती

पथ में गिनी चुनी सुविधाएँ।[15]

राधेश्याम योगी की भाषा सरल और सुबोध है। साथ ही भावों को वहन करने में सक्षम है। कवि योगी जी अपनी साहित्य साधना में लीन है। कवि उच्चकोटि का साहित्य सृजेता है। उनका यह सृजन समाजोपयोगी है।

रामस्वरूप सिन्दूर :–

कभी–कभी उद्यानों में ऐसे प्रसून खिल उठते हैं जो अपनी खुशबू से पूरा चमन सुवासित कर देता है। रामस्वरूप सिन्दूर जनपद जालौन रूपी उद्यान के

ऐसे ही पुष्प हैं जिन्होने अपनी कीर्ति महक से पूरा का पूरा उद्यान सुवासित कर दिया है। महान साहित्यकार, चिन्तक रामस्वरूप सिन्दूर का जन्म 23 सितम्बर 1929 ई0 को ग्राम दहगुवाँ तहसील जालौन में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री रामप्रसाद गुप्त एवं माता का नाम स्व0 श्रीमती सरजू देवी था। आपका विवाह कटरा बाजार मोठ के स्व0 श्री जगदम्बा प्रसाद लोहिया की सुपुत्री श्रीमती लक्ष्मी देवी के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में एक पुत्र अनिल सिन्दूर जिनका विवाह फर्रुखाबाद निवासी स्व0 कैलाश चन्द्र गहोई की सुपुत्री श्रीमती सविता सिन्दूर के साथ हुआ। आपका एक पुत्र अन्तरिक्ष सिन्दूर एवं पुत्री कु0 सौम्या है। कवि की पुत्री श्रीमती कल्पना गुप्ता का विवाह चिरगाँव (झाँसी) निवासी श्री श्रीकान्त गुप्त के साथ हुआ थां इनकी तीन संतानों में आकाश गुप्त, नम्रता गुप्ता एवं निधि गुप्ता हैं।

आप उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात डी0ए0वी0 डिग्री कालेज कानपुर में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत रहे और वहीं से सेवा निवृत्त हुए। सम्प्रति आप साहित्य की समृद्धि हेतु सतत् प्रयत्नशील हैं।

आपने विपुल साहित्य की रचना की हैं। आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'हँसते लोचन रोते प्राण', 'आत्मरति तेरे लिये' 'कविता' 'पत्रिका' एवं 'गीतान्तर' पत्रिका के सम्पादक हैं। कवि ने गीत कविता एवं गजल विधाओं पर अपनी लेखनी चलायी है। इसके साथ ही आप एक अच्छे समीक्षक भी है। शृंगार परक रचनाओं में तो इन्हें महारत हासिल है। आपकी शृंगार परक यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

लाओ लिख दूँ, ऊपर तेरे चीर के

हम दोनों दो नैना एक शरीर के

पलकें जिनकी उठती गिरती साथ हैं

साथ–साथ ही बनते जो घट नीर के।[16]

कवि ने अपनी रचनाओं में काले मेघ, वर्षा, आदि प्रतीकों के माध्यम से कविता कामिनी को सजाया है। यथा–

रात अंधेरी मैं बैठा हूँ सूने–सूने द्वार में।

कारे–कारे मेघ गरजते, भीग रहा बौछार में।[17]

कवि अपनी प्राण–प्रतिमा के नयनों में अश्रु देखकर प्रश्न करता है–

मैं समीप बैठा हूँ तेरे

तुझको तेरी छाया घेरे

मुक्त मृदुल शीतल समीर ने

पीर कौन ढाली तन–मन में

भर आया क्यों नीर नयन में।[18]

कवि रामस्वरूप सिन्दूर साहित्य प्रतिभा के धनी है। इनके काव्य सृजन के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये हैं–

पद्मसिंह शर्मा 'कमलेश', हिन्दी विभाग, आगरा कालेज आगरा के शब्दों में–''कवि सिन्दूर की कविता की एक विशेषता– उनका अभिनव पथ चुनना है। संयम और साहस का धनी कवि कभी ऐसा मार्ग नहीं चुन सकता जो घिसा–पिटा हो, रूढ़िगत हो, वह तो निराला ही मार्ग चुनता है।[19]

हालाबाद के प्रवर्तक डॉ0 हरवंशराय बच्चन के शब्दों में–''कवि सिन्दूर के पात बड़े चिकने है– वे होनहार हैं– वे जिस बल पर उभरे हैं, वह

सच्चा है, अपना है। वे अपने चारों ओर प्रवाहित जीवन के पवन से शक्ति संचय करे, उदात्त भावनाओं के सूर्य से प्रेरणा लें और एक दिन हम फलच्छाया–समन्वित वृक्ष ही न देखें–कल्पवृक्ष भी देखें।[20]

कवि सिन्दूर की भाषा सरल एवं सरस है। कोमल कान्त पदावली से साहित्य में (काव्य में) मिठास आ गयी है और यह मिठास ऐसी है जिसमें प्रत्येक सहृदय पाठक इस मिठास का आनन्द लेकर मन ही मन रसानुभूति का अनुभव करता है। यही सिन्दूर जी की विशेषता है। यही उनका कवि कर्म है।

देवकी नन्दन बुधौलिया 'राजगुरु'

आदर्श शिक्षक, राज्य पुरस्कृत कवि देवकीनन्दन बुधौलिया 'राजगुरु' का जन्म 10 जुलाई 1932 ई0 में ग्राम बाबई तहसील जालौन में हुआ था। आपके पिता श्री गयाप्रसाद बुधौलिया एवं माता श्रीमती मानकुँवर देवी थी। आपका विवाह ग्राम रेवा (उरई) निवासी श्री रामस्वरूप दुबे की सुपुत्री श्रीमती रामश्री बुधौलिया के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में एक पुत्र एवं एक पुत्री है। आपके पुत्र का नाम डॉ0 सूर्यप्रकाश बुधौलिया है इनका विवाह श्रीमती उर्मिला बुधौलिया के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में विनय व विवेक बुधौलिया है। कवि की पुत्री श्रीमती पुष्पा मिश्रा कोंच निवासी श्री बाबूराम मिश्र को ब्याही गयीं हैं। इनका एक पुत्र प्रशान्त मिश्र है जो अभी अध्ययनरत है।

आपकी शिक्षा बी0ए0, बी0एड0 एवं व्याकरण मध्यमा तक है। आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1954 ई0 में व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण करने के पश्चात् इण्टरमीडिएट व स्नातक की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1965 एवं 1968 ई0 में उत्तीर्ण की। बी0एड0 एवं व्याकरण मध्यमा की परीक्षाएँ उत्तीर्ण करके

बेसिक प्राइमरी पाठशाला में शिक्षक के पद पर नियुक्त हो गये। सम्प्रति कवि सपरिवार अपने निवास 529 गोपाल गंज उरई में रह रहे हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा श्री शिवानन्द मिश्र बुन्देला के साथ कवि गोष्ठी एवं कवि सम्मेलनों में जाने से मिली।

आपकी एक प्रकाशित पुस्तक 'सनाढ्य गोत्र' है। इन्होंने कवित्त, घनाक्षरी एवं बुन्देलखण्डी गीतों के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये हैं। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

आज कौ समय विलोक मन में विचार उठे।
देखो मँहगाई यहाँ चहुँ दिश छायी है।
पेट भर भोजन के कहुँ कहाँ लाले पड़े।
पूँजी पतियो देखो कैसी बन आयी है।
तन पर है वस्त्र जीर्ण मन में विचार दृढ़।
देखो तो विधाता इन्हें कैसी गति पायी है।
साँचे लोग फाँके करें झूठे धनवान बने।
चोर भ्रष्टाचारियों की कैसी धूम छायी है।[21]

आपने अपनी भावनाओं को बुन्देली भाषा में भी व्यक्त किया है। आपकी यह रचना नीचे दृष्टव्य है–

जो गाँव के भइया को बचपन के संगी साथी
उठत भुरहरे चलें हार को लै कै डंगर ढ़ोरा।
चरै ढ़ोर सब नदिया तीरे, खेलै गोई पारा।।[22]

कवि देवकी नन्दन बुधौलिया राजगुरू की रचनाएँ वर्तमान परिवेश

का सफल चित्रण करने में सफल रही हैं। मँहगाई की मार से लोग दबे जा रहे हैं, वही दूसरी तरफ झूठे, भ्रष्टाचारी लोग धनवान बनते जा रहे हैं। कवि इस तरह की असमानता के विरूद्ध आवाज उठाता है। बचपन में ढ़ोर डंगर चराने जाते चरवाहे और गोईपारा खेल के आनन्द का वर्णन करके अपने बचपन की मीठी यादों को ताजा कर लेता है। ग्राम्य जीवन का चित्र उसी भाषा में अच्छा बन पड़ा है।
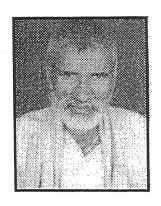
पूरन चन्द्र मिश्र 'पूरन' :—

कवि एवं रामलीला मंच के कुशल अभिनेता पूरन चन्द्र मिश्र किसी नाम के मोहताज नहीं है। आप जनपद जालौन तक ही सीमित नही हैं बल्कि विभिन्न प्रान्तों में अपने द्वारा रचित गीतों के माध्यम से रामायण के विभिन्न पात्रों को अभिनय के द्वारा जीवन्त किया है। केवट पात्र के चरित्र को तो आपने अपनी ग्रामीण बोली एवं साहित्य के मिश्रित रूप से लोगों के हृदयों में अपना एकछत्र राज्य कायम कर लिया है। इसके अतिरिक्त भरत, लक्ष्मण आदि अन्य पात्रों के साथ खलपात्रों में मेघनाद, बाणासुर, अक्षय कुमार जैसे पात्रों में जान ही डाल दी है।आपकी ख्याति कलाकार के रूप में अधिक रही है किन्तु यह नहीं समझना चाहिये कि साहित्य में वे कमतर आँके जाते है। इन्होंने साहित्य में उत्कृष्ट रचनाओं का सृजन किया है।

कवि पूरन चन्द्र मिश्र का जन्म फाल्गुन्न कृष्ण चतुर्थी सम्वत् 1989 (सन् 1932) ई0 में जालौन नगर में हुआ था। इनके पिता स्व0 श्री मूलचरण मिश्र संस्कृत के विद्वान थे।

इनका मुख्य कार्य समाज सेवा का रहा है अतः कवि ने गृहस्थ जीवन में प्रवेश नहीं किया।

आपका दुबला पतला शरीर, चेहरेपर चेचक के दाग, कभी बढ़ी हुई लम्बी दाढी तो कभी–कभी दाढ़ी के छोटे–2 बाल। शरीर पर धोती–कुरता, बगल में झोला, हाथ में छोटा सा बेंत मन्द–मन्द हँसी आपके व्यक्तित्व को निखार देता है।

आपकी स्कूली शिक्षा जूनियर हाई स्कूल तक ही हो सकी, किन्तु स्वाध्याय से आपने अनेक ग्रंथों का अध्ययन कर ज्ञानार्जन किया। आपके प्रेरणा स्रोत श्री भगवतकिशोर 'जौहर' डॉ0 आनन्द एवं अन्य **गुरुजन** हैं। आपको वे अधिक प्रिय है जो प्रतिष्ठित/ अप्रतिष्ठित सोद्‌देश्य एवं सार्थक काव्यकार हैं। आपकी रुचियों में अभिनय, चित्रकला, संगीत एवं सरल हृदय सत्संग है।

अभी तक आपका कोई काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। इनकी कतिपय रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर एक लघु शोध ग्रंथ पंकज दुबे द्वारा लिखा गया है।

बुन्देली गद्य के विकास में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपकी कविताओं एवं गीतों में बौद्धिकता की अपेक्षा हृदयगत भाव अधिक उमड़े हैं आप घास छीलती हुई विधवा को, क्रीड़ा करते बालक चरते हुए पशु, आदि को देखकर आपके ये भाव अनायास ही उमड़ पड़े हैं–

चरते हुए पशु, क्रीड़ा करते बालक

व्योम बाहें भरते किशोर, समय काटते वृद्ध

घास छीलती, असहाय विधवा

प्रेम सरोवर में हिलोरते युगल, सभी तो जुड़े हैं मुझसे।[23]

कवि देश की एकता और अखण्डता पर विश्वास कायम करते हुए कह उठता है–

मेरा ही घर जले असंभव, आग तुम्हे भी झुलसायेगी।

दिल की कालिख कभी न कभी, चेहरे के ऊपर आयेगी।।

इक स्तन से तुलसी, इक से रहीम को पाला है जिसने।

अपनी भारत माँ की छाती, बंधु प्रेम से हुलसायेगी।

जन–जन को फिर प्रिय हो जाए, मानवता आधार हमारे।।[24]

कवि ने गीत कविता, गजल, गद्य गीत सभी पर अपनी लेखनी चलायी है। धर्म को विकृत करने वालों को आपने हिन्दुस्तान का दुश्मन कहा है। कवि की यह बेबाक राय यहाँ स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है–

ये उलझते प्रश्न तो जी–जान के दुश्मन हुए।

राहबर सच पूछो, हिन्दुस्तान के दुश्मन हुए।

बन रहे राम के रहमान के अफसोस ये,

लोग ये ही राम के, रहमान के दुश्मन हुए।[25]

कवि ने भारत भूमि की प्रकृति के विभिन्न उपमानों के द्वारा उसकी आरती एवं गुणगान किया है। 'भारती–भू' शीर्षक कविता के माध्यम से आपकी ये रचना दृष्टव्य है–

सृष्टि अपलक–दृष्टि मंगलम् –वृष्टि हेतु निहारती।

विश्व – वंदित भारती – भू नभ उतारे आरती।।

दीप–दिनमणि, अरुण–चंदन, अरु नखत अक्षत–सुमन।

अवनि–उर नैवेद्य, अमृत – चेतना, पूजन –हवन।।

सत्य–अनुचरि प्रकृति स्वर्णिम–थाल नित्य संवारती।

विश्व वंदित......... ।[26]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कवि के हृदय में वे काव्य बीज विद्यमान है जो अनुकूल वातवरण में अंकुरित ही नहीं होते बल्कि पल्लवित व पुष्पित होते है। छायादार वृक्ष थके बटोही को छाया देकर मंजिल की तरफ बढ़ने की प्रेरणा देता है। बहुत कुछ पौधे पल्लवित व पुष्पित हो चुके हैं।

इनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए **राधेश्याम योगी ने लिखा है**–" धोती कुरता ढीली सी सदरी, कंधे पर टंगा एक पीला सा झोला, अक्सर बढ़ी हुई दाढ़ी, चेचक मुँह दाग–छोटी सी काया में युगों तक गूँजते रहने वाला गम्भीर घोष युक्त स्वर लिये जब कभी सड़क पर आत्मिक मुस्कराहटें बिखेरता कोई दिव्य पुरुष मिल जाये, नाक बंद किये घंटों ब्रह्म से साक्षात्कार करता कोई सन्त दिख जाये तो पहचान लीजियेगा– ये पूरन गुरु हैं। पूरन गुरु यानि पं0 पूरन चन्द्र मिश्र। यानी सम्पूर्ण कला के अवतार–पूर्ण मनुष्य–प्यारे मित्र, जीवंत ममता स्पृहणीय कर्त्तव्य निष्ठा, आधुनिक युग में भरत, लक्ष्मण और शत्रुघन के लिये प्यार भरे राम–पूरन चन्द्र मिश्र।[27]

शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' :–

बुन्देली कवियों में विशेष उल्लेखनीय कवि शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' जनपद के ऐसे सशक्त हस्ताक्षर है जिनकी लेखनी काव्य कें विभिन्न पक्षों में श्रृंगार, ओज, करुण,

हास्य, भक्ति और राष्ट्र प्रेम के साथ जीवन दर्शन की अनेक रस धाराओं को अपने काव्य में समेटे हुए सहृदय काव्य प्रेमियों को विशेष आनन्द की प्राप्ति कराती हैं।

आषाढ़ कृष्ण 5 सम्वत् 1990 (सन् 1933) ई0 को यशवत् सुकवि शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' ने उत्तर प्रदेश के जिला जालौन ग्राम दहगुवाँ में हिन्दी और संस्कृत की विद्वत्ता से सम्पन्न मिश्र परिवार में जन्म लिया। इनके पूज्य पिता पं0 श्री कमलानन्द मिश्र 'कंज' स्वयं भी संस्कृत के उद्‌भट विद्वान और हिन्दी आचार्य कवि थे। वर्णिक मात्रिक छन्दों में लिखित पूज्य 'कंज' जी की भावाभिव्यक्ति भाव एवं शिल्प दोनों ही दृष्टि से अद्‌भुत और अनुपम हैं। बुन्देला जी के काका पं0 श्री दशाराम मिश्र रामकवि, रससिद्ध एवं लोक प्रिय बुन्देली कवि थे, जिन्होंने खड़ी बोली में भी बेजोड़ कविताएँ रचीं हैं। बुन्देला जी के अग्रजद्वय में पं0 ब्रह्मानन्द मिश्र 'मीत' एक कुशल वैद्य होने के साथ–साथ ब्रजभाषा के आचार्यकोटि के कवि हैं जिन्होंने खड़ी बोली में भी उत्कृष्ट कविताओं का सृजन किया तथा श्री सच्चिदानन्द मिश्र 'कुसुमाकर' सचमुच यहीं काव्य वाटिका के रसमय बसन्त हैं जिनकी रचनाओं की परिमल सुवास से श्रोता वर्ग सदैव रसानन्दित होता रहता है।[28]

कवि की माता जी श्रीमती रावरानी मिश्रा रामपुरा (जालौन) निवासी पं0 श्यामलाल की पुत्री थीं जो धार्मिक विचारों की सुशील महिला थीं। आपका विवाह अमरा (झाँसी) निवासी पं0 देवकीनन्दन त्रिगुनायत की सुपुत्री श्रीमती कमला मिश्रा के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में एक पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। संतानों में ज्येष्ठ पुत्र विक्रमादित्य मिश्र है इनका विवाह श्रीमती

गार्गी मिश्रा के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में आद्रा मिश्र एवं अदिति मिश्रा है। कवि की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती मंजू सहारिया जो चिरगाँव (झाँसी) निवासी श्री शशि कुमार सहारिया को ब्याही गयीं है। इनकी दो संतानों में कु0 आराध ाना सहारिया एवं सन्दीप सहारिया है। तीसरी संतान के रूप में कवि की पुत्री श्रीमती गीता द्विवेदी है जो पहाड़गाँव (जालौन) निवासी श्री राजीव कुमार द्विवेदी जी को ब्याही गयी हैं।

शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' जी की प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम दहगुवाँ के प्राथमिक विद्यालय में सम्पन्न हुई। आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1952 ई0 में तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1954 ई0 में डी0ए0वी0 इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। सन् 1957 ई0 में बी0ए0 की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण करने के पश्चात् एम0 ए0 की परीक्षा सन् 1966 ई0 में आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से उत्तीर्ण की। आपने एल0टी0 की परीक्षा सन् 1959 ई0 में क्रिश्चियन कालेज लखनऊ से उत्तीर्ण की। सन् 1960 ई0 से श्री गाँधी इण्टर कालेज उरई में शिक्षण कार्य प्रारम्भ किया और वहीं से अवकाश प्राप्त किया। सम्प्रति आप निज निवास 'बुन्देला कार्यालय' झाँसी रोड उरई में निवास कर रहे हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा परिवार में प्रपिता, पिता, चाचा एवं दो बड़े भाई कवियों से मिली। इसके साथ ही राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर जी से वीर रस की कविताएँ लिखने का प्रोत्साहन मिला। श्री शिशुपाल सिंह भदौरिया 'शिशु' तथा पं0 बंशीधर पन्ना झाँसी द्वारा प्रोत्साहित करने पर बुन्देली भाषा में काव्य रचने लगे।

आपकी प्रकाशित पुस्तक 'देखो जो पीरो पट' खण्ड काव्य है जिसके पृष्ठों की संख्या 89 तथा प्रकाशक– श्रीमती कमला मिश्रा,कन्ज प्रकाशन बुन्देला कार्यालय झाँसी रोड़ उरई, में द्रोपदी के चीर हरण की कथा का मार्मिक चित्रण है। ''बिरिया सी झोर लई' (बुन्देली गीत संग्रह) है। अप्रकाशित कृतियों में– 'अभई' (खण्ड काव्य), हरदौल बुन्देला (खण्ड काव्य), प्रानन के दानी (खण्ड काव्य), यह प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी बरजोर पर आधारित है। इसके अतिरिक्त खड़ी बोली में अप्रकाशित कहानियाँ हैं।

बुन्देला जी, बुन्देलखण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद भोपाल की जिला इकाई के अध्यक्ष हैं। आपने साप्ताहिक बुन्देला प्रतिष्ठित साप्ताहिक का तीस साल तक सम्पादन किया।

आपके बचपन की एक स्मरणीय घटना सन् 1948 ई0 में आबकारी इंसपेक्टर के द्वारा निर्दोष व्यक्ति को अफीम बरामद करके गिरफतार करने पर आपने इंसपेक्टर का विरोध किया और संघर्ष भी चला। अदालत में मुकदमा पहुँचने पर निर्दोष व्यक्ति बरी छूट गया। इस कार्य में इन्हें खूब प्रशंसा मिली।

आपकी साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए आपको 'बुन्देलश्री' की उपाधि से नवाजा गया। इसके साथ ही 8 फरवरी 1997 ई0 में लोक प्रेरणा समिति जालौन द्वारा 'बुन्देल वीर' की उपाधि से विभूषित हुए। आपको 'बुन्देलश्री' की उपाधि 25 मई 2001 में बुन्देल खण्ड साहित्य एवं संस्कृति परिषद भोपाल के द्वारा एवं पुरस्कार महामहिम राज्यपाल श्री ओ0एन0 श्रीवास्तव द्वारा प्राप्त हुआ। बुन्देखण्ड विश्वविद्यालय के बी0ए0 की साहित्यिक हिन्दी के पाठ्यक्रम में बुन्देला जी की बुन्देली रचनाएँ पढ़ाई जाती हैं। बुन्देली

के सुकवि शिवानन्द मिश्र बुन्देला द्वारा लिखित शृंखलाबद्ध कविता 'झाँसी की रानी' में प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम की रणनेत्री रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य का सजीव वर्णन किया है–

तुनको लगाम दोऊ पावन पे डटो अश्व,

ऐढ़ के लखत खान गुर्ज पे बमक गओ।

रानीलल काटो सो कबूतर सो कूद परो

धरती पे गिरत धरातल धमक गओ।[29]

बुन्देलखण्ड के समाज की एवं उसके मौसम का वर्णन कवि ने शीर्षक गीत 'बुन्देलन वारो' के माध्यम से किया है–

महतारी बुन्देल भूमि है, सूरज पिता हमारौ।

अपनों देश बुन्देलन बारो।

बहत बुन्देलखण्ड में, हारन खेतन श्रम की गंगा,

खान–पान में रहन–सहन में, लखों फक्कड़ी ढंगा।

पहार पहारिया हिम गिर मानो, जटा जूट बेतड़ियाँ,

बुन्देलन के गढ़ी किलन के, बासी भूत भुजंगा।

तलवा चन्द्रमा से शीतल, शिव ने डेरा डारो,

अपनो देश.......................

× × ×

पानी भरन बहुरियाँ चलती, करती बात जिजी सें,

दो–दो जनी खैंचती गगरा, भरती कुँआ हँसी से।

दो मटका धरें अछंगा, एक बगल में दावें,

चलें मोर की चाल बाँटती, सगुन समेट असीसें

दो उगरी घूँघट में झाँके, एक नयन अनियारे।

अपनों देश..।[30]

बुन्देला जी प्रमुखतः वीर रस के कवि है। यही कारण है कि उनका प्रिय काव्य गुण ओज हैं ''बरजोरा कौ समरपन' शीर्षक कविता में इस रस का परिपाक हुआ है। इस कविता में कवि को रानी लक्ष्मीबाई के वीरत्व को उभारने में पूर्ण सफलता मिली है–

लै पाँचउ हँतयार हाँत में नंगौ तेगा,

चढ़ तुरंग की पीठ स्वयं वीरत्व पधारौ।

पाँव रकाबन जमें कसो पीठी से बालक,

बघवाबै चहुँ ओर बैरियन की घातन मैं।

सने रकत में वस्त्र अस्व ज्यौं बिजली कौंधा,

ऐसै लगो सजीवन यौवन कूदौ रन मैं।[31]

आपने अपनी बुन्देली कविता के माध्यम से लोक जीवन का अनूठा चित्रण किया है। कवि दिल्ली, मुम्बई की बातें नहीं करता है उसे तो अपने खेत खलिहान प्यारे लगते है। 'कथा खेत खरियान' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि अपने विचार प्रकट करता है–

तुम दिल्ली की बातें करो बड़े भइया

हमें करन दो सेवा अपने गाँवन की।

तुम कारन पे मलकौ मालपुआ गुलकौ,

हमें कहन दो कथा खेत खरयान की।[32]

'देखो जो पीरो पट' खण्डकाव्य में कवि ने पांडव द्वारा द्रौपदी को जुआ में हारने का अनूठा चित्रण किया है जो यहाँ दृष्टव्य है–

भीख लाज रक्षा की मांगे, सती विचारी,
वैश्या कह कें सूत्रपुत्र ने, दई है गारी
पांडु पुत्र निर्वीज जुआ में, हारी नारी
करो विलम्ब न चलो फूंक दो, सभा मुरारी।[33]

श्री कृष्ण द्वारा द्रौपदी के चीर को बढ़ाने पर वहाँ बैठे सभी सभासद उस दिव्य ज्योति से चौंधया जाते हैं। कवि ने इसका वर्णन इन पंक्तियों में किया है–

पीताम्बर में दई काउ ने, छुआ उँगरिया
प्राण हरन के पूर्व, टोर है गुरिया गुरिया
सहस भानु की किरनें फूटें, पीताम्बर सें
बड़िन–बड़िन की आँखे मिंच गई, तेज प्रखर सें
जितने तेजवन्त विधि के, रचना मण्डल में
लगन लगे भदरंग दिव्य पट की, झल मल में
लखो भीष्म कौरव दल के हित, अगन पिछोरा
लैहै सवे समेट, फूँक देहे इकठौरा।
फूटीं हती दोउ, धृतराष्ट्र तोउ चुंधयानों।
घाम दुफरिया कैसो, आँखन में उफनानो।
नग्न नारि दर्शन को, चाव बन गओ अंगरा।
घूमो दिरयोधन के, चित्त ध्वंश को घंघरा।[34]

सनातन से ही पुरुष परमेश्वर एवं नारी को किसी न किसी रूप में दासी मानता आया है। कवि ने इस भाव को अपने काव्य के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया है–

महापुरुष बैठे, सबने चेलैया साधी।

पुरुष दूध के धोये, है नारी अपराधी।।

मड़वा तरे परत भाँवर, जब कन्या वर की।

लक्ष्मी अर्द्धांगंनी कहाउत, नारी नर की।

बिदा कराय ल्याउत फिर, ऐसी दबत अंधासी।

लोक बनत परमेसुर, बनत लुगाई दासी।[35]

कवि ने अपने काव्य का सृजन स्वान्तः सुखाय के लिये किया है लेकिन ये निश्चित है कि स्वान्तः सुखाय में परहित भी छिपा होता है। यह तो कवि का बड़प्पन है कि उसने स्वयं को सिर्री (पागल) मानकर आमुख में लिखा है–

मो सिर्री की सनक देख हँस है विद्वाना।

डेढ़ भुण्टिया टीले पै रोपो खरयाना।।[36]

कवि बुन्देला जी के कृतित्व के सम्बन्ध में बुन्देली काव्य के समीक्षक का अभिमत है– '' आपने सृजन के लिये छन्द योजना इन्होंने मुख्यतः लोक गीतों से ग्रहण की है। भावों के अनुकूल छन्दों का चयन इनके कवित्व की विशेषता है।[37]

कवि शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' जी जनपद में बुन्देली भाषा के सशक्त एवं प्रौढ़ कवि है। इनके काव्य में ओज गुण की प्रधानता होते हुए भी इन्होंने लोक जीवन का भी सफल चित्रण किया है।
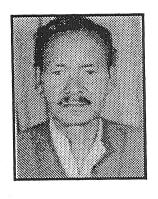
राम मोहन शर्मा मोहन :–

राममोहन शर्मा जनपद के ऐसे यशस्वी साहित्यकार है जिनकी कलम एक ओर तो संवेदनाओं के क्षितिज छूती हुई मानव मन की भावनाओं को तरंगित करके हृदय रस में सरावोर कर देती है तो दूसरी ओर उनकी कलम ओज से परिपूर्ण आग उगलती हुई मानव मन को झकझोर कर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर करती है साथ ही कवि की प्रतिभापूर्ण ऊँचाईयो को छूती हुई नजर आती है।

कवि राममोहन शर्मा का जन्म 1 फरवरी सन् 1935 ई0 को नगर जालौन में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व0 श्री पं0 नाथूराम जी शर्मा था।

आपकी शिक्षा एम0ए0 (हिन्दी) तथा बी0टी0सी0 तक है। इनका व्यवसाय अध्यापन रहा है। सम्प्रति ये सेवा निवृत्त होकर साहित्य साधना में लीन है। इनके प्रेरणा स्रोत भक्ति कालीन प्राचीन कवि हैं। आप गोस्वामी तुलसीदास को अपना आदर्श कवि मानते हैं। इनकी रुचियों में जन सेवा का कार्य प्रमुख है।

कवि का जीवन दर्शन विश्व बन्धुत्व की भावना से ओत–प्रोत है। राष्ट्रीय विचार धारा भी इनके काव्य का प्रमुख विषय रहा है। वे गीत गाकर हर समस्याओं से पार हो जाना चाहते हैं। इसी सन्दर्भ में आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

गीत गा गाकर करूँगा, हर समस्या पार

यह हमारी जिन्दगी का सर्वश्रेष्ठ विचार

विश्व के बन्धुत्व का मैं हृदय से आदर करूँ

किन्तु राष्ट्रीयत्व के दायित्व का पालन करूँ

माँ के आगे बन्धु का सम्मान कैसा ?

राष्ट्र से हो विश्व का उपमान कैसा?

राष्ट्र तन–मन–धन हमारा विश्व है व्यापार।

यह हमारी जिन्दगी का सर्वश्रेष्ठ विचार।[38]

कवि राममोहन शर्मा श्रम पर विश्वास करने वाला ऐसा व्यक्ति है जो मेहनत के बल पर धरती पर स्वर्ग लाना चाहता है। वे इसी साधन के द्वारा मातृभूमि को सजाना चाहते हैं।

आओ निर्मान करें।

श्रम का सम्मान करें।।

मेहनत से धरती पर स्वर्ग खींच लाएँ।

झूम–झूम गाएँ, देश को सजाएँ।।[39]

कवि अपने देश को समृद्ध बनाना चाहता है। इसके लिये एकता का होना अति आवश्यक है। कवि अपने देश में भाईचारे पर बल देता हुआ कह उठता है–

हम बने रहें हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई।

पूजा पद्धतियाँ भिन्न और बहु भाषाई।।

पर एक कल्पना को साकार बनाये हम।

भारत माता है, हम सब है भाई–भाई।।[40]

जो व्यक्ति नर में ही नारायण के दर्शन करता है और दरिद्र की पूजा

नारायण समझकर करता है उसी व्यक्ति ने नारायण को और गीता को समझा है। कवि के ये विचार कवि के उदात्त गुणों के परिचायक हैं यथा–

जो देख रहे नर में नारायण को।

वे ही समझे स्वरूप आराधन को।।

जो पूज रहे दरिद्र नारायण को।

वे ही समझे गीता नारायण को।।[41]

कवि समाज में रहने वाला एक सामाजिक व्यक्ति होता है। वह अपने जीवन के संचित अनुभव ही कोरे कागज पर उतारता है। कवि समाज का युगदृष्टा होता है। वह निष्ठुर समाज अन्तस की गहराई को पहचानने से इन्कार कर देता है। इस व्यंग्य के माध्यम से उनकी यह रचना दृष्टव्य है–

निष्ठुर जग पहचान न पाया।

अन्तस्थल की गहराई को

उदित–उषा की तरुणाई को

तरुणों की उस तरुणाई को

नव यौवन की अंगडाई को

अन्त– अन्त तक जान न पाया।

निष्ठुर जग पहचान न पाया।।[42]

कवि ने 'श्री राम पञ्चायतन' शीर्षक कविता के माध्यम से श्रीराम का यशोगान किया है। उनकी ये पंक्तियाँ श्री राम जी के प्रति–

चौथेपन नृपति निराशा के गहनतम,

रघुकुल कमल, दिवाकर पधारे हैं।

असत् असुन्दर, अशिव के पराभव में

सत्य शिव सुन्दर स्वरूप के सँवारे हैं।।

कौशल्या के आँगन में, मिथिला के बागन में,

मुनि जन हित बने, सबल सहारे हैं।

दुष्टन की क्षय कर, देवन अभय कर

त्रिभुवनजय़ी, राजाराम जी हमारे हैं।[43]

कवि की लेखनी काव्य के दोनों पक्षों में अबाध रूप में बहती चली गयी है। इनके सम्बन्ध में राधेश्याम 'योगी' ने लिखा है–''राममोहन शर्मा मोहन की रचना प्रक्रिया उनके जीवन साधना से प्रवाहित ऐसे विश्व दर्शन की आकांक्षा है– जैसा विश्व वे देखना चाहते हैं। पर यह संसार वैसा है नहीं। 'मोहन' को चिन्ता नहीं। वे शब्द से मनोवांछित संसार अवश्य गढ़ डालेंगे।''[44]

कवि राम मोहन शर्मा मोहन की रचना धर्मिता श्रेष्ठ बन पड़ी है। मंचीय कवि होने के कारण इनके अन्दर भावनाओं को अपनी वाणी के माध्यम से उद्‌गार करने की असाधारण क्षमता हैं, जो साधारण पाठकों के समझने में आसान है। अलंकार का प्रयोग सार्थक है। वे कविता के सौन्दर्य को बढ़ाते हैं।

माया हरिश्याम 'पारथ'
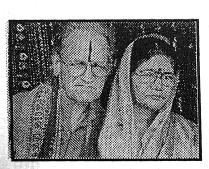
जनपद जालौन के साहित्यकारों में विशेष उल्लेखनीय छन्द शास्त्र के ज्ञाता एवं विविध विधाओं के जानकार महाकवि (निर्बल के बलराम अप्रकाशित महाकाव्य के प्रणेता)

माया हरिश्याम 'पारथ' का जन्म 2 जून सन् 1935 ई0 को मकरन्दपुरा (जालौन) में हुआ था। इनके पिता चौधरी रामसहाय श्रीवास्तव एवं माता स्व0 श्रीमती राम जानकी देवी थी। आपका विवाह ग्राम खजरी (जालौन) निवासी चौधरी हरदयाल सिंह श्रीवास्तव जी की सुपुत्री श्रीमती माया देवी के साथ हुआ। आपकी पाँच संतानों में तीन पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। बड़े पुत्र राहुल श्रीवास्तव हैं, इनका विवाह श्रीमती सुमन श्रीवास्तव के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में—ऋषीक श्रीवास्तव एवं कु0 ऋचा (देवांगना) श्रीवास्तव हैं। आपके दूसरे पुत्र विवेकानन्द श्रीवास्तव हैं जो सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज गोला कर्णनाथ खीरी में आचार्य पद पर कार्यरत हैं। इनका विवाह श्रीमती सविता श्रीवास्तव के साथ हुआ। इनके पुत्र मृणाल श्रीवास्तव एवं वेणु गोपाल श्रीवास्तव हैं। कवि के तीसरे पुत्र श्री नारायण दास श्रीवास्तव है जिनकी धर्मपत्नी का नाम श्रीमती कुसुम श्रीवास्तव है। इनकी तीन संतानों में नलिन विलोचन, कार्तिकेय एवं नीलांजना है। पारथ जी की बड़ी पुत्री श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव गोरखपुर निवासी श्री अतुल श्रीवास्तव 'पुष्पार्थी' कों ब्याही गयीं हैं। इनके दो पुत्र और दो पुत्रियाँ – शैवाल, प्रवाल एवं कु0 शुचि, शिवांगी हैं। कवि की दूसरी पुत्री श्रीमती सीता खरे है जो युग कवि डॉ0 रामस्वरूप खरे जी के सुपुत्र श्री ब्रह्मानन्द खरे जी को ब्याही गयीं हैं। इनके एक पुत्र प्रांशु एवं एक पुत्री प्रांजलि है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1951 ई0 में छत्रसाल इण्टर कालेज जालौन से उत्तीर्ण की थी और इण्टरमीडिएट की परीक्षा व्यक्तिगत रूप से 1967 ई0 में उत्तीर्ण की। सन् 1970 ई0 में बी0ए0 की परीक्षा डी0वी0 डिग्री

कालेज उरई से उत्तीर्ण करके, बी0एड0 की परीक्षा डी0वी0 डिग्री कालेज कानपुर से उत्तीर्ण की।

विद्यार्थी जीवन की घटना में एक बार ये मलखम्भ में जिले में प्रथम आये थे और इलाहाबाद में चयन हो गया था लेकिन जिला विद्यालय निरीक्षक ने इनकी जगह अपने पुत्र को सलेक्ट करवा दिया और इन्हें दुबारा नाप कराकर बाहर कर दिया।

सामाजिक क्षेत्र में इनका कार्य सराहनीय रहा। इन्होंने हरिजन उत्थान के लिये महत्वपूर्ण कार्य किये जिसमें ये तीन वर्ष तक बिरादरी से गिरे रहे।

आपको साहित्य में लेखन की प्रेरणा माँ, भाई एवं पत्नी से प्राप्त हुई।

माया हरिश्याम पारथ जी ने विपुल साहित्य की रचना की है। इनकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित बहुत सी रचनाएँ हैं। आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'माँ' (अछन्द), 'आदि ज्योति', प्रकाशक पारथ प्रेस उरई पृष्ठों की सं0 54 (घनाक्षरी में), हनुमत पचीसी' श्री गुरु चालीसा, 'मेरे गीत बने वैरागीं' तथा 'छन्द शास्त्र' एवं 'भक्त सुदामा' आदि हैं।

आपकी अप्रकाशित रचनाओं में 'निर्बल के बलराम' महाकाव्य (विविध छन्द), 'मै गोपी बन गया' (चम्पू काव्य) 'दुर्दिन' (खण्ड काव्य) हैं। इसके अतिरिक्त 'भगवत नरसी मेहता' (महाकाव्य अपूर्ण) 'माँ भारती' (गीत संकलन) 'प्रभु विरही प्राण', 'मधुर परिणय' (जीवन गीत), 'टूटती पंक्तियाँ', (कविता संग्रह), 'राममुक्तावली', 'भगवन्नाते', 'कुछ अपने', 'पतियां राम के नाम' (गद्य) एवं 'गज़ल माया' है।

आपकी मुख्य विधा– पारम्परिक शास्त्रीय छन्द विधा है। आप हास्य

व्यंग्य, चुटकुले एवं अतुकान्त कविता के प्रबल विरोधी हैं। आप ऐसा साहित्य सृजन करना चाहते हैं जिसमें जन कल्याण हो। आप पारम्परिक छन्दों के माध्यम से रीतिकालीन परम्परा का पुनर्जागरण करना चाहते हैं। कवि से दिनांक 10/10/04 को साक्षात्कार के माध्यम से साहित्य विषय से सम्बन्धित चर्चा हुई। उस चर्चा के कुछ अंश इस प्रकार हैं–

प्र0– छन्दबद्ध रचना कम लिखी जाने लगी हैं। इस सन्दर्भ में आपके क्या विचार हैं ?

पारथ जी– "सम्प्रति छन्दबद्ध, मात्राबद्ध, एवं गणबद्ध कविता छन्द बन्ध एवं ध्रुवक या ध्रुवपद युक्त गीत आदि अनुशासित काव्य रचनाएँ लिखना बन्द होने का कारण कविजनों का श्रम एवं अध्ययन से पलायन करना है साथ ही पद, पैसा और प्रतिष्ठा इन तीन पकारों का प्रलोभन है।

प्र0– आपके द्वारा रचित महाकाव्य 'निर्बल के बलराम' का हेतु एवं प्रयोजन क्या है?

पारथ जी– 'निर्बल के बलराम' महाकाव्य का हेतु एवं प्रयोजन साहित्यिक दृष्टिकोण से पारम्परिक काव्य सृजन को जीवित रखना एवं अभिनव तत्सम तथा तद्भव शब्दों को जन्म देकर हिन्दी शब्द भण्डार में वृद्धि करना है। इसके साथ साहित्य की अध्यात्म से सहितता एवं सान्निध्य कराना है।कलापक्ष को समृद्ध करना तो कवि का स्वधर्म है ही किन्तु भावपक्ष के माध्यम से विचारों में वदान्यता एवं महाकाव्य के शास्त्रोक्त लक्षणों का निर्वाह करते हुए भी मानवीय नारी एवं पुरुष परक अनुभूतियों की उदात्त भाव से सम्प्रेषित करना भी है।

मंगलाचरण में धीरोदात्त नायक के रूप में भगवान श्रीराम के माध्यम से सम्पूर्ण पृथ्वी को जन्म भूमि की तरह प्रणम्य एवं सम्पूर्ण भूमि को अयोध्या के रूप में परिणित करना है। यहाँ सम्प्रति तथा कथित जातिधर्म समभाव का उद्देश्य नितान्त नहीं है। नितराम विशुद्ध सनातन धर्म को 'सियाराम मय सब जग जानी' भावना की अभिव्यक्ति है।

प्र0— साहित्य को आप क्या देना चाहते हैं ?

पारथ जी— राजनीति से पार्थक्य एवं आध्यात्म से सम्प्रति। पारम्परिक छन्द एवं वर्णवृत्तों आदि को इदंतन प्रचलित प्रगतिवाद ,संत्रासवाद, कुण्ठावाद, एवं उखाड़ पछाड़वाद से बचाकर अपने द्वारा प्रवर्तित 'शुभ संकल्पवाद' के माध्यम से समाज के परम कल्याण कल्पना एवं भावना का प्रचार करना है।

प्र0— अछन्द रचनाओं एवं उनके रचनाकारों से आप चिढ़ते है, भले ही आप उनके सामने कुछ न कहें किन्तु निराला जी को ऐसी रचनाओं का प्रवर्तक माना जाता है। महाप्राण निराला जी के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

पारथ जी— सबसे पहले तो मैं महाप्राण निराला जी के चरणों में प्रणाम करता हुआ निवेदन करता हूँ कि पाँच भाषाओं के उस महान विद्वान ने वैदिक छन्दों के आधार पर अक्षम प्रतिभावन ह्रदयों के लिये एक मार्ग प्रशस्त किया था कि वह कविता को कविता बना रहने दें और कतिपय दुर्गमताओं से मुक्त हो सके। निराला जी ने वेद के आधार पर लयबद्ध काव्य सृजन करने का मार्ग प्रशस्त किया था न कि स्वेच्छाचारिणी काव्य प्रवृत्ति का प्रवर्तन।

आप नवोदित सहित्यकारों के उत्साह वर्धन हेतु अपनी संस्था 'पारथ प्रेम परिषद' की ओर से एक कवि एवं एक शायर को प्रतिवर्ष पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान करते हैं।

आप 'दैनिक प्रतिनिधि' 'तरुण राजस्थान', जोधपुर के सह सम्पादक/ कल्याण गीता प्रेस गोरखपुर के सहायक सम्पादक/ सूर्य जागरण (जालौन) सम्पादक/ शिक्षा में क्रान्ति जोधपुर मासिक के प्रधान सम्पादक रहे।[45]

गुरु ही मानव का सब कुछ है। गुरु को ब्रह्मा कहो या विष्णु , शंकर कहो या अविनाशी। गुरु हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। गुरु शिष्य की मुक्ति का द्वार खोल देता है। 'गुरु चालीसा' के माध्यम से कवि पारथ ने अपनी भावनाएँ गुरु के चरणों में अर्पित करते हुए कहा—

जय जय हे अनाम श्री गुरुवर।

ब्रह्मा विष्णु महेश रूप धर।।

तुम नर— नारायण तन धारी।

तुम संसार और संसारी।।[46]

कवि माँ आदि ज्येति के सामने अपने को दीन हीन, पापी, अनाचारी आदि अपने अवगुणों को माँ के समक्ष प्रकट करता है। यह भाव कवि के सरल हृदय के परिचायक हैं। इनकी यह रचना तुलसीदास जी की भाँति 'दीन हौ भिखारी हौं' के समान अपने आपकों माँ के सामने प्रस्तुत कर रहा है—

अघचारी अनाचारी व्यभिचारी 'पारथ हूँ,

जैसा भी हूँ वैसा तेरे चरणों में प्रोत माँ।

चण्डिता प्रचण्डिता माँ आदि शक्ति मण्डिता तू,

सृष्टि रश्मि प्रथम सृजननि विद्योत माँ।

प्रभा तू प्रभात की व सभा साभिजात की तू,

शक्ति आदि शक्ति की है मातु शक्ति द्योति माँ।

मित्रकुल भूषण कहाँ है मित्र ज्योति मातु,

मित्र कुल भूषण मिला दे आदि ज्योति माँ।।[47]

कवि माँ आदि ज्योति से विनय करता हुआ कहता है कि माँ तू नारी को सबला बना दे और पुरुष को भी एक नारीव्रत बना दे। आज के वर्तमान समय में पुरुष और नारी दोनों अपनी सीमाएँ लाँघते जा रहे हैं। उनका यह छन्द दृष्टव्य है—

नर्तकी कभी तो अभिनेत्री वर्तकी बना के,

नारी जाति का अमान नर नित्य करता।

मेलों में—त्योंहारों, शादी ब्याहों व्यवहारों में भी,

बेटियों का नृत्य भृत्य देख मोद भरता।

अबला है हाय काली, सबला बना दे इसे,

नर—दम्ब—अम्ब जम्भ बिन न सँवरता।

एक नारीव्रत, पुरुषों में माँगने हेतु,

माया हरिश्याम मुख्य द्वार दीप धरता।[48]

नारी हमेशा महान रही है। उसने अपने गुणों से अपनी विद्वत्ता एवं पराक्रम से अपनी महानता का परिचय दिया है लेकिन कुछ समय से नारी पर न जाने कितने जुल्म ढ़हाये गये, उस पर कितनी बंदिशें लगायी गयीं। नारी कुछ समय तक घर में कैद होकर सेविका की तरह अपना जीवन व्यतीत

करती रही पर कवि नारी की वकालत करता हुआ कहता है–

सेविका नहीं है नारी सेवा वन्दनीया दिव्य,

भाव्य भ्रामरी भवानी भावी भक्ति भावना।

भाग्य–भागीरथी का भा–चित्र मार्तृवृत मति,

भार्गवी है भूमि जा है भारती विभावना।[49]

कवि माया हरिश्याम 'पारथ' छन्द शास्त्र के ज्ञाता है। आपने विभिन्न छन्दों को भी जन्म दिया है। आपका स्वरचित शिखारिणी छन्द जिसमें 17 वर्ण तथा 6–11 पर यति है–

प्रियंवा पश्यंती नमन कर स्वीकार जननी।

शुभांगी शुभ्रांगी श्रुति विहित संस्कार सृजनी।

मनीषा मृदवंगी मृदुल मति संसार रमणी।

कृपा दे कम्राक्षी कलि कलुष की काट रजनी।।[50]

आपका यह बसन्ती वर्णवृत्त छन्द भी अच्छा बन पड़ा है जिसमें 6–8 पर यति हैं–

शुभ्रेआ नीहार जलधि में क्रीडाएँ हों

पीताभा छायी ऋतुपति की सेना आयी।

वृक्षों में सारस्वत रति की श्लोकांक्षा,

तारुण्यों में दीवित प्रतिभा शोभा लायी।[51]

कवि ने ज्ञान की देवी माँ भगवती का दिव्य मनोहर चित्र मन्तगयन्द छन्द के माध्यम से खींचा है। प्रवाह भी अच्छा बन पड़ा है–

कोविद के मन की रमणी विधि की रमणी शुचि सौंध सुकाया,

भाव अलंकृत छन्द भरा जिसने रसना रस रास रचाया।

हंस चढ़ी कर वेद लिये कर की कर छाया,

मातु गिरा पग मध्य गिरा 'हरीश्याम' लिये निज प्रेयसि माया।[52]

कवि राम भक्त है। अतः राम के दास गोस्वामी तुलसीदास जी को थोड़े ही समय के लिये अपने पास बुलाना चाहता है, ताकि वह भी भवसागर से पार हो सके–

काश! दो घडी भर तुलसी तुम यदि मेरे जीवन में आते।

तो न भव नदी बढ़ी देख मम प्राण मोह से पग रुक जाते।।[53]

"अभी देखने और कितने कहर है?" शीर्षक कविता के माध्यम से पारथ की यह रचना दृष्टव्य है–

अभी देखने कितने कहर हैं।

बचे उम्र के आखिरी दो प्रहर हैं।।

लगी जिन्दगी धूप सी छाँव में भी।

कथा–क्रान्त सी शान्ति के गाँव में भी।।[54]

कविता के सम्बन्ध में कवि का आत्म कथ्य–

" जीवन के पथरीले आरोहों में कविता एक ऐसी जीवन सहचरी है जो अनुभूति की मन्द स्मृति अभिव्यक्ति के स्निग्ध संलापों द्वारा व्यवर्त्म पर चल रही जीवन यात्रा की निर्विण्ण एवं निर्वेद भरी विथकन को क्षणमात्र में तिरोहित कर देती है। मेरे लिये तो कविता ईश्वर प्राप्ति का सर्वोत्कृष्ट साधन बन गयी है। मेरे विचार से शास्त्र विहित छन्दोबद्ध कविता ही कवि का सच्चा संदर्श है, संज्ञान है।

यद्यपि पारम्परिक छन्द रचना श्रमसाध्य है पर वह मन्त्र बन जाती है। वह साहित्य को शब्द समृद्ध, सृजना को सुख सम्पन्न तथा कवि को निकष सिद्ध कंचन बना देती है।

मेरी दृष्टि में साहित्य का अर्थ ईश्वर की सनिद्धता प्राप्त करना ही है। गद्य एवं पद्य तो उसके माध्यम भर है। इन दोनों के अतिरिक्त अशास्त्र विहित होने पर वाङ्मय का वह अनुगुंजित ध्वनित अनाहत निनाद वह अदहदनाद मात्र बैखरी (वाचिका) बनकर रह जाता है। परावाणी तो दूर वह पश्यन्ती वाणियों तक नहीं पहुँच पाता।''[55]

कवि की भाषा के दो रूप है प्रारम्भिक दौर की भाषा साहित्यिक एवं सुबोध है किन्तु ज्यों-त्यों आपकी काव्य यात्रा आगे बढ़ती गयी है त्यों-त्यों आपकी भाषा संस्कृतनिष्ठ तथा दुर्बोध होती चली गयी क्योंकि कवि में पाण्डित्य प्रर्दशन की भावना प्रबल हुई है। इस कारण कहीं-कहीं तो प्रवाह रुक सा जाता है। हृदयपक्ष न्यून एवं बुद्धि पक्ष प्रबल होता चला जाता हैं। साधारण पाठकों से तो आप कोसों दूर हो गये हैं। हाँ पण्डितों एवं छन्दशास्त्रियों के लिये तो 'छन्दशास्त्र' एक पाठशाला सिद्ध होगी। आपकी दुर्बोध एव क्लिष्ट शैली से रीतिकालीन केशव की याद आने लगती है। यह कहना अतिसंयोक्ति न होगी कि आप आधुनिक युग के केशव हैं।

कवि माया हरिश्याम 'पारथ' महान कवि साहित्य मर्मज्ञ एवं कुशल वक्ता हैं। उनके साहित्य में नारी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके साथ ही कवि में धार्मिक भावना-ऐसी धार्मिक भावना जो सभी को सद्मार्ग की ओर प्रेरित करती है। हृदय मधुरता से परिपूर्ण हो जाता है। आदर्शवाद से पूर्ण कवि

अपनी रचना धर्मिता में सतत् प्रयत्नशील है। जीवन के अन्तिम पड़ाव में भी साहित्य के प्रति लगन, निष्ठा निश्चित रूप से नवोदित साहित्यकारों के लिये अनुकरणीय है।

मु० सलीम 'असर'

मु0 सलीम अन्सारी 'असर' का जन्म जालौन नगर के मुहल्ला चमन दुबे में 1 जनवरी सन् 1940 ई0 में हुआ था। इनका उपनाम 'असर' है। आपके पिता मरहूम जनाब ईदू अन्सारी थे।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1955 ई0 में उत्तीर्ण करने के उपरान्त स्टाम्प पेपर बेचने का व्यवसाय अपना लिया। आप अपनी व्यस्ततम जीवन में से कुछ समय साहित्य सृजन के लिये निकाल लेते हैं। इनकी रचनाओं में देश भक्ति एवं सामाजिक चेतना के स्वर मुखरित हुए हैं। आपकी राजनीति में भी विशेष रुचि है।

आपके प्रिय शायरों में जोश, जिगर, बेकल उत्साही एवं बसीम बरेलवी है। उस्ताद शायर भगवत किशोर जौहर, आपके उस्ताद है।

आपकी रचनाओं में राष्ट्रभक्ति की भावना पूर्ण रूप से उभरी है। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

अय मिरे प्यारे वतन अय मिरे प्यारे वतन।
तुझमें पावन नीर की नदियाँ भी है गंगो जमुन।।
सैकड़ों गिरजा है तुझमें अनगिनत दैरो हरम
फूलते–फलते हैं तेरी गोद में कितने धरम

इन मुकद्दस तीरथों से तेरी धरती है दुल्हन।

अय मिरे प्यारे वतन।[56]

कवि ऐसी घटनाओं से दुखी होता है जो देश हित में नहीं है। साम्प्रदायिकता की भावना लोगों के मन, मस्तिष्क को झकझोर के रख देती है। इसी सन्दर्भ में कवि ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं—

यही तसादुम की जिद रही तो

न तुम रहोगे न हम रहेंगे।

उदास होगी ये रूहे—भारत

फ़ज़ा की सांसो में ग़म रहेंगे।।

ये दस्त बस्ता है अर्ज मेरी

तमाम भारत के वासियों से।

चरागे आजादी बुझ न जाये,

कहीं ये नफ़रत की आँधियों से।।[57]

शायर परोपकारी प्रवृत्ति का व्यक्ति है। वह संसार का दुख बाँटना चाहता है। यदि उनका वश चले तो उनके लिये जिन्दगी भी बाँटने को तैयार है। 'क़त्आत' शीर्षक से यह रचना दृष्टव्य है—

खुश्क होठों को अपनी हँसी बाँट दूँ।

बँट सके गर तो ये जिन्दगी बाँट दूँ।।

मेरी खुशफ़हमियाँ मेरे वश में नहीं।

वरना दुनिया को सारी खुशी बाँट दूँ।

काश फिर जोश में आ जाये गरीबो लहू।

इक नये रंग का अफ़साना बना सकते हैं।।

आज भी बज़्म में टूटे सही बेकार सही।

इतने सागर है कि मयखाना बना सकते हैं।[58]

शायर की रचना धर्मिता ठीक रही है। इनकी रचना निश्चित रूप से एकता एवं भाईचारे का सन्देश देती है।

इनके सम्बन्ध में राधेश्याम 'योगी' जी ने लिखा है–

"उस्ताद शायर भगवत किशोर 'जौहर' ने अपने ख्यालों की टकसाल में कुछ ऐसे बेशकीमती सिक्के ढाले थे जिनके दोनों पहलू चमकदार रहे और अन्दर का पदार्थ ठोस सोना निकला। उनके द्वारा ढले ऐसे ही स्वर्ण सिक्कों में एक है मुहम्मद सलीम अन्सारी 'असर'। निहायत मासूम चेहरे वाले इस शायर ने अपने वतन की मुहब्बत से लेकर इन्सानियत के लिये सब कुछ कुर्बान कर देने का संदेश दिया है।"[59]

कवि आपस की एकता का पक्षधर है। वह ऐसे कार्य को अनुचित मानता है जिसमें आपसी मनमुटाव की स्थिति पैदा हो। उसके दिल में देश भक्ति का जज़्बा है। भाईचारे में विश्वास रखने वाला कृतित्व सराहनीय है । ऐसी रचना धर्मिता से निश्चित रूप से समाज में सही संदेश जाता है।

द्वारिकादास माहेश्वरी 'सेठ सीताराम'

कवि द्वारिकादास माहेश्वरी जालौन तहसील के उन साहित्य कारों में से एक है जो साहित्य साधना के साथ–साथ कृषि से भी जुड़े हुए हैं। वह अपने आपको कृषक कहलाना ज्यादा पसन्द करते हैं। सचमुच आप

जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति हैं। आपकी रचनाओं में सामाजिक राजनैतिक एंव हास्य व्यंग्य के स्वर मुखरित हुए हैं।

द्वारिका दास माहेश्वरी का जन्म 1 फरवरी सन् 1941ई0 को जालौन कस्बे में हुआ था। आपकी शिक्षा बी0ए0 तक है। आपके पिता स्व. श्री सेठ गोकुल दास माहेश्वरी थे। आपका व्यवसाय कृषि है। यही कारण है कि कवि की रचनाओं में उस मिट्टी की सोंधी महक, गाँव देहात के रीति रिवाज का गहन रूप से उद्घाटन हुआ है।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा अन्तःप्रेरित एवं निजी अनुभूतियों से प्राप्त हुई। आपके प्रिय कवि जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पन्त एवं निराला जी है। आपकी रुचियों में कृषि अनुसंधान एवं समाज सेवा है।

कवि नयी कविता की तरफ अधिक आकर्षित प्रतीत होता है। इनकी कविता किसी भी छन्द के बन्ध को स्वीकार नही करती है। 'गुमनाम अंधेरे' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

कितनी अच्छी बात है,

हम लोग किसी की मृत्यु के बाद

श्रद्धांजलि देते समय

उसकी तारीफ में, झूठे ही सही

कम से कम एक तो हो जाते हैं।[60]

कवि की कविताओं में कहीं–कही व्यंग्य का भी अच्छा पुट मिल

जाता है। व्यंग्य के अधिक मोह के कारण कवि सीधा–सीधा कह उठता हैं–

चीन की एक कुतिया ने, 11 सुअरों के बच्चों को
दूध पिलाया और उन्हें अपनाया,
भारत के कुत्तों को एक आदर्श बनाया।

× × ×

मिंची हुई आँखों से उसे, कुछ दीखेगा?
जानवरों से ही कुछ अपनायें–
अपनों को तोड़ना छोड़, दूसरों से जुड़ना सिखायें।[61]

कवि द्वारिकादास माहेश्वरी की 'बसन्त के नाम' कविता अच्छी बन पड़ी है। इस कविता के माध्यम से ऐसा प्रतीत होने लगता है मानो हृदय अनन्त ऊँचाइयों को छू रहा हो–

मैं तो बन पतझड़ का पत्ता
उड़ जाऊँगा अनन्त शून्य में
मेरी चिन्ता यही रहेगी–
निकल रही जो हरी कोपलें
बेमौसम की गरम लपट में
कूटनीति के इस अन्धड़ में
कही अचानक झुलस न जायें।
मेरी तो बस यही कामना
दिशा हीनता के जंगल में किसी तरह से उन्हें बचायें।[62]

'बढ़िया उपाय' शीर्षक कविता में कवि का ये व्यंग्य दृष्टव्य है–

कितना बढ़िया उपाय

जिस चीज की चोरी का, उतरने का, जाने का डर हो

उसे रखते ही क्यों है?

× × ×

रोज लुटती है, पिटती है, उतर जाती है

पर तब भी बची रहती है।

क्या है?.................समझे?

जी हाँ, उसका नाम है इज्जत'।[63]

कवि की रचनाएँ ठीक हैं। आप सतत् साहित्य साधना में रत है। पारिवारिक जिम्मेदारी के बाद जो समय बचता है, उस समय का सदुपयोग कविता लेखन में करते है। कवि कितनी ऊँचाईयों को छुयेगा यह तो अभी समय के गर्भ में है।

डॉ० श्यामसुन्दर सौनकिया

जनपद के साहित्यकारों की पंक्ति में डॉ0 श्याम सुन्दर जी का नाम उल्लेखनीय है। आपके साहित्य में विषय की गम्भीरता एवं गवेषणात्मक प्रवृत्ति देखी जा सकती है। एक शिक्षक होने के साथ आपके काव्य में नैतिकता एवं सच्चाई का कलेवर दृष्टि गोचर होता है।

डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया जी का जन्म 3 सितम्बर सन् 1941 ई0 को राजा सिकरी तहसील जालौन में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री शिवनारायण सौनकिया एक आशु कवि थे। आपकी माता जी स्व0 श्रीमती अहिल्या देवी सुशील एवं धार्मिक विचारों की महिला थी। आपका विवाह

खरूसा (उरई) निवासी श्री ब्रजनन्दन नायक की सुपुत्री श्रीमती कृष्णा देवी के साथ हुआ। आपकी तीन संतानो में ज्येष्ठ पुत्र विनोदकुमार सौनकिया सम्भागीय परिवहन अधिकारी आगरा का विवाह श्रीमती आभा सौनकिया के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में दिगन्त व कु0 वर्तिका है। कवि के दूसरे पुत्र ओंकार नाथ सौनकिया का विवाह श्रीमती राखी सौनकिया के साथ हुआ। आपके दो पुत्र –क्षितिज व मुदित हैं। आपका तीसरा पुत्र विवेक सौनकिया है जो अभी अविवाहित है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1958 ई0 में अभिमन्यु उ0मा0वि0 कैलाशनगर क्योलारी से तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1960 ई0 में छत्रसाल इण्टर कालेज, जालौन से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् सन् 1962 ई0 में बी.ए. की परीक्षा दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। आपने एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षा सन् 1966 ई0 में दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। सन् 1984 ई0 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से हिन्दी विषयान्तर्गत 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अनुशीलन' विषय पर पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

आपको लेखन की प्रेरणा पिता स्व0 श्री शिवनारायण सौनकिया से प्राप्त हुई।

आपकी प्रकाशित कृतियों में 'भदावरी बोली का भाषा वैज्ञानिक अनुशीलन' (शोधग्रंथ), 'व्यथा कथा है मेरी पाती'' इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया जी से जब मैं जालौन में उनके निज निवास

पर पहुँचा तो मेरी उनसे साहित्य के सन्दर्भ में बातचीत हुई। बातचीत के अंश इस प्रकार है–

प्रश्न– आप नई पीढ़ी से क्या आशा करते हैं?

सौनकिया जी– मैं चाहता हूं कि वर्तमान पीढ़ी (जो साहित्य में रुचि रखती है।) साहित्य क्षेत्र में आये और हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनायें।

प्रश्न– आप साहित्य को क्या देना चाहते हैं?

सौनकिया जी– गंभीर विषयों पर व्यावहारिक शोधकार्य द्वारा साहित्य को बहुत कुछ देना चाहता हूँ।

प्रश्न– आज की अधिकांश युवा पीढ़ी गद्य में काव्य रचनाएँ करते हैं। जैसा कि आधुनिक युग 'गद्यकाल' के नाम से जाना जाता है। इस सन्दर्भ में आप क्या कहना चाहते हैं?

सौनकिया जी– यह सच है कि आज की युवा पीढ़ी निराला जी के नक्शे कदम पर चल रही है, किन्तु जो साहित्यकार अछन्द रचनाओं के माध्यम से अपनी बात गहराई से नहीं कह पाता है तो उससे निराशा होती है। कभी–कभी अच्छे कवि को पढ़ने से लगता है कि अभी सीख रहे हैं। बिम्ब और प्रतीक ऐसी रचनाओं की जान होते हैं।[64]

आप शोधार्थियों के लिये अच्छे शोध पर्यवेक्षक के रूप में अपना स्थान बनाये हुए हैं।

डॉ0 सौनकिया जी ने अच्छे साहित्य की रचना की है। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

पंत की ग्राम बालिका लगे

जुही की कली निराला सी

जायसी की वह पद्मावती,

बिहारी की मधुबाला सी

सूर की विरह वेदना व्यक्त,

और तुलसी की माला सी

दीखते मादक–मदिरा–नयन

लगे मधुमय मधुशाला सी।[65]

जीव चौरासी लाख योनियों में भटकता हुआ अबाध रूप से यात्रा करता है। कवि अपने आपको 'व्यथित बटोही' मानकर लौकिक से अलौकिक (प्रियतमा) से अपना दुख दर्द कह उठता है। कवि की ये पंक्तियाँ अपनी प्रियतमा (ब्रह्म) के लिये दुख भरी पाती है–

मेरे सुख का साज तुम्हारा, दर्द तुम्हारे मेरी थाती

मैं जन्मों का व्यथित बटोही, व्यथा कथा है मेरी पाती

विविध आपदाओं से गुजरी

अश्रुपूर्ण है अकथ कहानी

विषम वेदना की दीमक ज्यों

चट कर बैठी है जिन्दगानी

नैन झरे प्रिय देख तुम्हारे मन की मधुर लता मुरझाती

मै जन्मो का व्यथित बटोही..........।[66]

कवि इस संसार में प्यार का पैगाम देना चाहता है क्योंकि इस संसार से सभी को एक न एक दिन जाना है तो यह बेरुखी कैसी? कवि ने हिन्दी

ग़ज़ल 'अलविदा हो जाऊँगा' शीर्षक के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये है–

एक दिन ऐ दोस्त मैं तुझसे जुदा हो जाऊँगा
तेरी महफिल से यकायक अलविदा हो जाऊँगा।
इसलिये कहता हूं यारो बेरुखी से कर गिला
प्यार ही दिल में नहीं तो ग़म ज़दा हो जाऊँगा।।[67]

व्यक्ति जीवन भर स्वार्थ के सागर में गोते लगाता रहता है और धन, सुन्दर काया अन्त में सब साथ छोड़ देते हैं। इसी सन्दर्भ में कवि की ग़ज़ल शीर्षक 'लग गया अब तो पूर्ण विराम' के माध्यम से यह चेतावनी–

ढल गयी अब जीवन की शाम
स्वार्थ सिन्धु में गोते खाकर व्यर्थ हुए बदनाम।
निर्मल काया देख लुभाया, धनमद में अतिशय बैराया
दिशाहीन पथ–भ्रष्ट जगत में, विस्मृत लक्ष्य ललाम।।[68]

इसी तरह कवि की यह ग़ज़ल 'घायल सब अरमान हो गयें' अच्छी बन पड़ी है–

आँसू सूख गये आँखो में घायल सब अरमान हो गये।
मुरझाये सद्भाव सुमन भी लहू लुहान हो गये।
× × ×
मेरा रैन बसेरा बना हुआ था झोपड़पट्टी में।
क्रुद्ध भीड़ को तरस न आया हम बेघर बीरान हो गये।।[69]

डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया के काव्य के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये है।

डॉ0 रामशंकर द्विवेदी के शब्दों में– डॉ0 सौनकिया के गीतों में कथ्य दुख निराशा, वेदना और निजी व्यथा है। इसे जीवन का कटु यथार्थ कहते हैं। कटुता से जीवन घुट जाता है, निराश हो जाता है। पर, एक सर्जक अपने दुख की पूंजी लेकर सर्जना का संसार खड़ा कर देता है। उसे सृजन में सुख मिलता है और उसकी कुंठा का विगलन होकर उसे अकुंठ कर जाता है। इसलिये साहित्यकार टूटता नहीं है, उसी से साहस बटोर कर आगे बढ़ता है। सर्जन के पग इसी क्रम में गीत ग़जल या साहित्य की किसी भी विधा में अपना चिह्न छोड़ते जाते हैं।[70]

डॉ0 सीताकिशोर अध्यक्ष बुंदेला संस्थान दतिया (म0प्र0) के शब्दों में – निःसन्देह डॉ0 सौनकिया ने नयी कविता के इस दौर में गीत जैसी प्रायः उपेक्षित विधा में संवेदनात्मक दृष्टि से इतने सशक्त गीतों की सर्जना कर उल्लेखनीय कार्य किया है।[71]

डॉ0 श्याम सुन्दर सौनकिया ने अपनी साहित्यिक सर्जना में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। विभिन्न विधाओं के माध्यम से आप साहित्य की जो सेवा कर रहे हैं वह प्रशंसनीय है। आप साहित्य सेवा में सतत् प्रयत्नशील हैं।

रहमान शाह 'माहिर'

रहमान शाह 'माहिर' एक संवेदनशील कवि है। आप समाज में सड़ी गली मान्यताओं के प्रबल विद्रोही हैं वे समाज को अपनी लेखनी के माध्यम से बदलना चाहते हैं– सत्य का ज्ञान करा के, ताकि जन मानस

उस सत्य को समझें, जानें कि जीवन का उद्देश्य क्या है?

रहमान शाह 'माहिर' का जन्म 2 अक्टूबर सन् 1941 ई0 को जालौन कस्बे में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व0 श्री लल्लू शाह था।

आपकी शिक्षा एम.ए., जे.टी.टी. आयुर्वेदरत्न तक है। इनका मुख्य व्यवसाय अध्यापन रहा है। आत्मप्रेरित होकर इन्होंने लेखन कार्य किया। आपके प्रिय कवि व शायर कबीरदास जी एवं शम्सी मीनाई है। आपकी अन्य रुचियों मे नाट्य लेखन व मंचन आदि है।

आपकी अभी तक कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई है। किन्तु गद्यगीत, नज्म एवं व्यंग्य विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आपकी कुछ कविताएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

यह तथ्य है, परम सत्य है

प्रकाश!

अन्धकार और यह धुन्ध

प्रकाश नहीं हो सकते।

वैसे अंधेरे की खातिर, पलकें झपकती हैं–

और यह जीवन के विश्राम का अंधेरा

अंधेरा न होकर प्रकाश ही है।[72]

आप श्रेष्ठ व्यंग्यकार है। आपने भ्रष्टाचार, राजनीति एवं रिश्वत को अपना व्यंग्य का विषय बनाया है–

आप कौन है,

जो मुझे हर मोड़ पर मिल जाते हैं?

सत्तू बाँधकर, मेरे पीछे पड़ जाते है!

आप नहीं जानते..................?

मैं हूँ भ्रष्टाचार

आदमी की चहेती बेटी इच्छा का मैं पति हूँ

मेरे पुत्र का नाम राजनीति सिंह है।

जो हर क्षेत्र में कर रहा दंग है।

और आप जानते है

मेरी साली का नाम?

जो बहुत हो रही बदनाम।

जी हाँ

उसी का नाम रिश्वत है।[73]

भ्रष्टाचार की और नग्न तस्वीर को पेश करता हुआ आपका यह मुक्तक दृष्टव्य है–

देश का आचरण भ्रष्टाचार बन के बह गया

दो अक्टूबर के उद्घाटन वाला पुल

चौदह नवम्बर को ढह गया।[74]

इनका मुख्य कार्य शिक्षक का रहा है। अतः शिक्षा पर आपका यह दोहा भी दृष्टव्य है–

शिक्षक माली शिशु सुमन, है समाज उद्यान।

शिक्षा परम सुगन्ध है, सुरभित सकल जहान।।[75]

कवि ने हास्य एवं व्यंग्यपूर्ण रचनाओं में अच्छी सफलता प्राप्त की है।

सामाजिक, राजनीतिक विषयों पर आपने चुटीले व्यंग्य लिखे हैं। इनके व्यंग्य तुरन्त असर करने वाले हैं। यथा–

किया सलाम था 'माहिर' इसी पै चैंट गये।

बदी नहीं है अगर ये तो फिर बदी क्या है।।[76]

रहमान शाह 'माहिर' के सम्बन्ध में राधेश्याम 'योगी' जी ने लिखा है–

''योग्य शिक्षक, व्यवहार कुशल व्यक्ति, संवेदनशील कवि, व्यंग्यपूर्ण कविताएँ, हजलें और चुहुटियाँ लिखने वाले एक नेक इंसान की तस्वीर का यह एक पहलू है। सड़ी–गली व्यवस्था से विद्रोह, आज के समाज में समायी भ्रष्टाचार वाली दोगली सभ्यता से नाराजगी भरा उनका 'जूता' भारतीय संसद की दीर्घाओं में भी पहुँच गया था। नगर की जनता, उनके असंख्य छात्र तो उन्हें 'शाहजी' कहते हैं– किन्तु राष्ट्रीय एकता के लिये न केवल शायरी करने वाले अपितु एकांकी सृजनकर्त्ता को बुद्धिजीवी कहता है–श्री रहमान शाह 'माहिर'।[77]

रहमान शाह 'माहिर' का कृतित्व एवं व्यक्तित्व दोनों ही प्रभावशाली है। जहाँ एक तरफ विद्रोही भावना से ओत–प्रोत कवि का हृदय उन समस्त विचारों को दृढ़ता के साथ नकारता है जो समाज पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है वही दूसरी तरफ शिक्षा के बल पर शिशुओं को शिक्षा देते हुए देश का आदर्श नागरिक बनाता है। कवि एवं शायर माहिर साहब अपनी साहित्यिक सृजना को कहाँ तक पहुँचा पाते हैं यह तो समय ही बतायेगा।

सन्तोष कुमार सौनकिया 'नवरस'

कवि सन्त्तोषकुमार सौनकिया महान विद्वान, कवि एवं एक आदर्श अध्यापक के रूप में जाने जाते है। आप रसवादी कवि हैं। इसी कारण इनका उपनाम 'नवरस' है।

संतोषकुमार सौनकिया जी का जन्म 1 मई सन् 1947 ई0 को ग्राम सिकरी राजा (जालौन) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री शिवनारायण सौनकिया है। आपकी माता का नाम श्रीमती अहिल्या देवी धार्मिक विचारों की महिला है। आपके पिता श्री शिवनारायण सौनकिया आशु कवि हैं आपके बड़े भाई श्री श्यामसुन्दर सौनकिया एक अच्छे कवि व आदर्श अध्यापक है। आपको लेखन की प्रेरणा पिता एवं अग्रज से प्राप्त हुई। आपकी शिक्षा बी.ए. तक है।

आपके प्रिय कवि श्री सोम ठाकुर जी है। ये आध्यात्मिक सत्संग में विशेष रुचि रखने के कारण इनकी रचनाओं में भी आध्यात्मिकता का पुट दिखाई देता है।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

कवि अपने जीवन को और नदी की धार में सामंजस्य बैठाता हुआ गा उठता है–

हम नदिया की धार, हमारी गति चंचल है।

हम स्वच्छंद विचार, हमारी गति निर्मल है।

युगातीत हम रहे, नहीं भाया बन्धन

हम शाश्वत क्रम बहे न स्वीकारा मंथन

हम निर्झर का प्यार, हमारे स्वर कल–कल

हम नदिया की धार।[78]

यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है कि हमें दूसरों को दोष देखने से पहले अपने दोषों पर ध्यान देना चाहिये। कवि संतोष कुमार सौनकिया ने 'दूध के धोये नहीं' शीर्षक गीत के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये है यथा–

हम कमी खोजें किसी की हक हमें क्या।

जब स्वयं हम दूध के धोये नही हैं।।

दूसरे के दोष दिखते हैं तभी तक

जब तलक हम आप में खोये नहीं हैं।

कोसते है ढोल कागा के स्वरों में।

मन हरन संगीत की देकर दुहाई।।

आचमन के मंत्र तक हमने न जाने।

साधना की नापने बैठे ऊँचाई।।

दर्द की अनुभूति कैसे कर सकेंगे

जब कभी हम आँख भर रोये नहीं हैं।

हम कमी......................।[79]

कवि प्रकृति के प्रत्येक उपमानों को देखकर कुछ न कुछ सीखता है। प्राकृतिक दृश्यों का मानवीकरण करके दूब जैसी तुच्छ लगने वाली घास सचमुच में उन लोगों के लिये सीख है जो अपने अहं के कारण दूसरों को तुच्छ समझता है और उन्हें रोंदकर चला जाता है किन्तु दूब को कोई

शिकायत नही है।

सदियों से सर्वहारा वर्ग कुचला जाता रहा है किन्तु फिर भी उनका अस्तित्व विद्यमान है। शोषकों के महल ढह गये, राजपाट छिन गये किन्तु ये दूब की तरह अपने आप जन्मते हैं। उन्हें कोई मिटा नही सकता है। इसी सन्दर्भ में कवि की यह रचना दृष्टव्य है–

मुझे रोंदकर, आगे बढ़ना है बढ़ जाओ।

मेरा क्या, मैं दूब, न कुछ अन्तर आयेगा

पग–प्रहार से मेरा सर कुचले जाओ

पर मेरा आचरण तुम्हें सुख पहुँचायेगा।

× × ×

मुझको हरा–भरा रहना अपने आँगन में

मुझे मिटाने का दुःस्वप्न बिखर जायेगा।।[80]

अहंकार और अहंकारी पुरुषों का विरोध सनातन से होता रहा है। कवि भी अहंकारी व्यक्ति के लिये कहता है कि तुमसे किसी को क्या लेना–देना है? किन्तु अगर वह अभिमानी है तो उस अभिमान का भी काट है। कवि की इसी सन्दर्भ में ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

तुम सागर ही सही किसे क्या तुमसे लेना है।

पर अगस्त्य है जग में बस इतना कह देना है।

× × ×

पर अहंकार की सीमा में इतने भरमाये हो।

टिट्टिभ से पग पर आकाश उठाये हो।।

दम्भी नारद बनो किसे क्या तुमसे लेना है।

पर नर में नारायण भी है यह कह देना है।[81]

आज के युग में भ्रष्टाचार एवं दुराचरण का बाहुल्य सब जगह दृष्टिगोचर होता है। 'क्यों' कविता शीर्षक से कवि ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त प्रकट किये है—

सदाचरण के पथ से इतने गिर जाते हैं लोग

कुछ मुद्राओं में ही सस्ते बिक जाते हैं लोग

नैतिकता से शून्य निपट रसहीन हुआ जीवन

आदर्शों की बली क्या—क्या कर जाते हैं लोग

कहीं—कहीं तहखानों में धन अम्बार कहीं

अथिक परिश्रम कर भी भूखे रह जाते हैं लोग।

जिनकी करनी धरती, कथनी आसमान सी है

निराधार इतने ऊँचे भी उड़ जाते हैं लोग।

मीठा जहर पिलाते निशिदिन है विनम्र वाणी

नागफनी के कांटों जैसे चुभ जाते हैं लोग।

मृदुता—कटुता का संगम है जिनके अंतर में

दुमुँहे विषधर जैसे जग में मिल जाते हैं लोग।[82]

कवि सन्तोषकुमार सौनकिया 'नवरस' साहित्यकाश के चमकते हुए नक्षत्र है जो अपनी साहित्य साधना की चमक से साहित्य जगत को प्रकाशित करते हुए इसी साधना में लीन दिखायी देते हैं। इस तरफ इनके बढ़ते कदम निश्चित रूप से साहित्य जगत को गौरवान्वित करेंगे।

रवीन्द्रनाथ शर्मा

जनपद में कुछ ऐसे कवि है जिन्होंने अपनी पैतृक परम्परा को आगे ही नहीं बढ़ाया बल्कि उसको फलीभूति करके साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान बनाकर पैतृक परम्परा को दो पग आगे बढ़ाने का प्रयास किया है ऐसे कवियो में रवीन्द्रनाथ शर्मा का स्थान महत्वपूर्ण है जिन्होंने स्व0 मुकुन्द कवि, गोविन्द कवि एवं स्व0 डॉ0 आनन्द कवि की विरासत को अक्षुण्ण बनाये रखने में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है।

रवीन्द्र नाथ शर्मा का जन्म 21 जून सन् 1947 ई0 में मु0 कटरा, जालौन में हुआ था। आपके पिता स्व0 डॉ0 आनन्द राष्ट्रीय कवि थे। इन्होंने ही 'झाँसी की रानी' नामक खण्ड काव्य का प्रणयन किया था। आपकी माता श्रीमती प्रेमवती देवी है जो धार्मिक विचारों की गृहस्थ महिला हैं। आपका विवाह श्रीमती उर्मिला शर्मा के साथ हुआ। आपकी चार संतानों में तीन पुत्र एवं एक पुत्री है। आपके ज्येष्ठ पुत्र अंचल शर्मा जिनका विवाह श्रीमती प्रवीण शर्मा के साथ हुआ। इनकी दो संतानें कु0 सोनल शर्मा एवं कु0 रूपल शर्मा है। कवि के दूसरे पुत्र अनुपम शर्मा है जिनका विवाह श्रीमती सुनीता शर्मा के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री मुनमुन शर्मा है। तीसरे पुत्र अनुराग शर्मा है जो अभी अविवाहित है। कवि की पुत्री कु0 अनामिका शर्मा है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1962 ई0 में एवं इण्टर मीडिएट की परीक्षा सन् 1965 ई0 में छत्रसाल इण्टर कालेज, जालौन से उत्तीर्ण की। सन् 1967 ई0 में आपने बी.ए. की परीक्षा क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर से उत्तीर्ण

की। एम.ए. की परीक्षा सन् 1969 ई0 में क्राइस्ट चर्च कालेज, कानपुर से उत्तीर्ण करने के पश्चात बी0एड0 की परीक्षा सन् 1975 ई0 में गाँधी महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप छत्रसाल इण्टर कालेज, जालौन में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

आपकी बचपन की स्मरणीय घटना में स्व0 शिशु पाल सिंह 'शिशु' द्वारा छन्द याद करवाना तथा विद्यार्थी जीवन की घटना में शिक्षकों के वर्णन में पहली कविता लिखना, आपको आज भी विद्यार्थी जीवन की याद ताजा कर देती है।

आपको लेखन की प्रेरणा पिता स्व0 डॉ0 आनन्द जी से मिली, साथ ही आप पारिवारिक वातावरण को प्रेरणा स्रोत मानते हैं।

अभी तक आपका कोई संग्रह प्रकाशित नही हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाओं का सतत् प्रकाशन जारी है। अप्रकाशित रचनाओं में 'चन्दन और नागफनी' (गीत संग्रह) 'आहें' (आँसू परम्परा का काव्य) 'रात बाँधे पीरु पर' (अतुकान्त कविता संग्रह), 'गजल संग्रह', 'उत्तर रामचरित' (प्रबन्ध काव्य), 'यथार्थ भोग' (कविता संग्रह) आदि है।

आपकी विधा–गीत, गजल, छन्द अतुकान्त कविता एवं तुकान्त कविता है।

आपको बाँदा, झाँसी, उन्नाव, औरय्या, छतरपुर, रुड़की आदि स्थानों पर सम्मान अभिनन्दन एवं उपाधियाँ मिली है। इसके अतिरिक्त आपने बीस प्रान्तो के मंचों पर काव्य पाठ किया। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

राग रागिनी बजते देखे कैसी धुन बनती है

जग के रंग मंच पर जाने कितने अभिनेता आयेंगे

पर उनमें कुछ ऐसे होंगे अपनी छाप छोड़ जायेंगे

फिर देखें ये रंगी महफिल, कब किस का वन्दन करती है

राग रागिनी........... ।[83]

कवि रवीन्द्र शर्मा का विचार है कि मनुष्य में सभ्यता, संस्कार कविता के माध्यम से ही आये हैं। यदि कविता का जन्म न हुआ होता तो मनुष्य पशुवत् ही रहता। इसी सन्दर्भ में कवि की ये पंक्तियाँ—

जीवन होता बिखरा—बिखरा अश्रु भरम सब खोलते

छन्द शास्त्र में अक्षर अपनी वीणा अगर न बोलते

कविता अगर जनम न लेती पशुवत् होता आदमी

कौन सुनाता लोरी तुमको, आँचल वाली स्वेता नमी।[84]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रवीन्द्र शर्मा एक प्रतिभाशाली साहित्यकार हैं। आपने कवि कर्म के माध्यम से जनपद में ही नही वरन् देश के विभिन्न प्रान्तों में अपनी ओजस्वी वाणी एवं उत्कृष्ट काव्य रचना से सभी सहृदय स्रोताओं को प्रभावित किया है। कवि रवीन्द्रशर्मा के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि आप जनपद के ऐसे साहित्यकार हैं जो अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से साहित्य को सतत् ऊचाइयों पर ले जाने में प्रयासरत है।

वसीउर्रहमान सिद्दकी 'वसी'

पारिवारिक साहित्य परम्परा में शायर वसीउर्रहमान सिद्दीकी का नाम भी जनपद में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। आपने पारिवारिक विरासत को कायम रखते हुए साहित्य को महत्वपूर्ण आयाम दिये।

शायर वसीउर्रहमान सिद्दीकी का जन्म 2 जुलाई 1949 ई0 में जालौन कस्बे में हुआ था। आपका उपनाम 'वसी' है।

आपकी शिक्षा इण्टर मीडिएट अदीबकामिल एवं साहित्य रत्न तक है। सम्प्रति आप राज्य कर्मचारी के पद पर कार्यरत है।

आपको लेखन की प्रेरणा पारिवारिक विरासत से प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त केवल उत्साही, कैफ भोपाली आदि शायरों से आपको लेखन की प्रेरणा मिली।

आपकी रुचियों में समाज सेवा प्रमुख है।

आपका अभी तक कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है लेकिन विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। उन्हीं में से आपकी कुछ रचनाएँ यहां दृष्टव्य है–

एक दुनिया से मिले, एक ज़माने से मिले।

मुझसे लेकिन वो मिले भी तो बहाने से मिले।।

यूँ तो मिलने के लिये कोई ज़माने से मिले।

मिले इन्सान से इंसान तो ठिकाने से मिले।[85]

कवि की रचनाओं में स्वदेश प्रेम की भी झलक मिलती है। उसे अपने देश की प्रत्येक वस्तु मनमोहक लगती है। इसी सुन्दरतम् वस्तु के लिये वह गा उठता है–

अपना प्यारा वतन!

अपना प्यारा वतन!!

चाँद तारों से कैसा सजा है गगन

फूल कलियों से कैसा सुगन्धित चमन

हर रविश फूल काँटों का सुन्दर मिलन

काँपते है जहाँ पर ख़िज़ां के चमन।

अपना प्यारा वतन, अपना प्यारा वतन।।[86]

शायर 'वसी' जी अपनी लेखनी के द्वारा जीवन के प्रत्येक पक्ष को उद्‌घाटित करता हुआ साहित्य साधना में बराबर प्रयासरत है। ये साहित्य को कितनी ऊँचाइयों पर ले जाते है यह बताना कठिन है।

निसार अहमद 'सागर'

व्यवसाय से टेलर निसार अहमद 'सागर' एक ऐसा व्यक्तित्व है जिन्होंने अपने एक-एक अल्फ़ाज़ को माला में पिरोकर साहित्य के सौन्दर्य को बढ़ाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। सामाजिक एवं राष्ट्रभक्ति की रचनाओं में तो इन्होंने अपनी पूरी कला उड़ेल दी है। इन्हीं विषयों पर आपका मन अधिक रमा हुआ प्रतीत होता है।

निसार अहमद 'सागर' का जन्म लगभग 1950 ई0 में (कवि को अपने जन्म की तारीख निश्चित पता नहीं) जालौन कस्बे के मुहल्ला दबगरान में हुआ था। आपके पिता का नाम मरहूम जनाब वहीद उल्लाह था। आपकी शिक्षा मिडिल स्कूल आलि में दीनियात तक है। आपके प्रेरणा स्रोत स्व0 श्री भगवत किशोर 'जौहर' जी थे। आपके प्रिय शायर मिर्जा गालिब तथा मीर वगैरह हैं। आपकी रचनाओं में देश भक्ति एवं सामाजिक चेतना की धारा प्रबल वेग से प्रवाहित हुई है।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है पर विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। शायर निसार अहमद 'सागर' की कुछ 'नज्म यहाँ दृष्टव्य है–

अय हिन्द वालो! मुबारक तुम्हें ये आज का दिन
हँसी उजालो! मुबारक तुम्हें ये आज का दिन
अय बा–कमालो! मुबारक तुम्हें ये आज का दिन
अय हम–निवालो! मुबारक तुम्हें ये आज का दिन
कि ज़श्न आज के दिन का हजार बार करो
तुम्हारा फ़र्ज़ है भारत की जय–जयकार करो
खुद अपनी भूख की सिद्दत से तू लबे–दम है
जो तन छिपाने को कपड़ा नहीं तो क्या गम है?[87]

शायर अपनी कलम के द्वारा इन्क़लाब लाना चाहता है और जो फ़ाका कशी करके अपने बच्चों को पालता है वही सच में उसूल है। ये विचार आपकी इस रचना में दृष्टव्य है–

वो जिसने बच्चों को फ़ाका कशी में पाला है।
उसूल उसके हैं वो ही उसूल वाला है।।
कहानियाँ थी सदाक़त की जब अमानतदार
हमारे हाथ में उस दौर का रिसाला है।[88]

शायर निसार अहमद 'सागर' के कृतित्व के सम्बन्ध में राधेश्याम योगी जी ने अपने विचार प्रस्तुत किये–

''इस वतन दोस्त शायर पर तो आप अपने आपको निसार करने के

लिये ललचा उठेंगे। यह कीमती रतन—यानी जनाब निसार अहमद 'सागर' भी जौहर साहब की टकसाल से ढलकर आया ऐसा कीमती इंसान है जो शायरी की बारीकियों से प्राणों को सांगोपांग छूने की क्षमता रखता है। उम्मीदों के सूरज को सीने में छिपाये इस नायाब शायर से अभी बहुत आशाएँ है।[89]

शायर निसार अहमद 'सागर' ने अपने साहित्यकार होने का परिचय अल्फ़ाज़ की बारीकियों से दिया है। उनके एक—एक शब्द में वजन है। वे चाहे देश को प्राप्त आजादी के हों अथवा गरीबी के कारण तन में फटे चीथड़ों वाला गरीब इन्सान हो।

नासिर अली 'नदीम'

नासिर अली 'नदीम' जनपद जालौन के ऐसे साहित्यकार है जिनका हिन्दी एवं उर्दू दोनों भाषाओं पर समान अधिकार है। नदीम जी की विद्यालयी शिक्षा प्राथमिक पाठशाला तक रही किन्तु उनकी रचनाओं को पढ़कर ऐसा बिलकुल एहसास नहीं होता है कि यह साहित्यकार स्कूली शिक्षा में लगभग नगण्य है। इनके काव्य में अन्तःकरण का ऐसा अनूठा सौन्दर्य है जो पाठकों के हृदय को आनन्द से भर देता है।

नासिर अली 'नदीम का जन्म 1 अक्टूबर सन् 1955 ई0 को जालौन कस्बे में हुआ था। इनका उपनाम 'नदीम' है। आपके पिता जनाब नूरअली शाह पेशे से मिस्त्री हैं।

आप अपना तथा अपने परिवार का जीवकोपार्जन 'श्रम की पूँजी' से करते हैं। आपके प्रेरणा स्रोत हजरत अमीर खुसरो हैं। जिन्हें कवि अपना

मानसिक गुरु मानता है। साहित्यिक परामर्शदाता एवं श्रेष्ठ सहयोगी के रूप में श्री पूरनचन्द मिश्र 'पूरन' है। आपके प्रिय कवि एवं शायरी में अमीरखुसरो, जायसी, रहीम, गालिब, इकबाल एवं बेकल उत्साही है। आपकी प्रमुख रुचियों में सत्यप्रेम, तत्व दर्शन, नागरी लिपि एवं हिन्दी साहित्य सेवा है।

आपका अभी तक कोई संग्रह प्रकाशित नही हुआ है किन्तु त्रैमासिक पत्रिका 'सबकी खैर खबर' का नियमित सम्पादन कर रहे हैं।

आपके साहित्य की मुख्य विधा दोहा, कुण्डलिया एवं गजलें है। आपके नीतिपरक दोहे अच्छे बन पड़े हैं। आपके साहित्य का सबल पक्ष नीतिपरक दोहे ही हैं। आपके कुछ दोहे यहाँ दृष्टव्य हैं–

ज्ञानी ध्यानी सिद्ध जन, साधु संत अवधूत।
माता से बढ़कर नहीं, सब वाही के पूत।।

डूबते जो निकरैं नहीं, मरा कहौ नहिं ताय।
मरा उसी को जानिये, डूबै फिर उतराय।।

ढूँढ़ते–ढूँढ़ते जग थका, ढूँढ न पाया कोय।
विरला कोई पायगा, अपना आपा खोय।।

सीमित सारे शब्द है, तेरा रूप असीम।
क्या कोई कर पायगा, वर्णन भला नदीम।।

पथ में उनके पंथ में, तीव्र चलें या मंद।
नैना उनको ही लखैं, खुले रहें या बंद।।

जाकी लहरन के धुएँ, विसर सबई कछु जाय।
को नदीम लै पायगौ, वा सागर की थाय।।[90]

आपकी गजलों में आध्यात्मिक एवं सूफी ख्यालों की उड़ानें हैं। इन उड़ानों में कवि कहाँ–कहाँ से होकर गुजरता है आपकी यह गजल इन्हीं उड़ानों की सन्देश वाहक है–

प्रेमपथ के इस पथिक को, जब कभी झंझट मिले।

उनकी छवि का स्मरण करते ही नव जीवट मिले।।

× × ×

मैं इसी उद्देश्य से लगकर खड़ा था द्वार से।

भाग्य में दर्शन नहीं तो कम से कम आहट मिले।।

प्रेम की तृष्णा मुझे ले आई इस द्वार तक

बीच में कितने ही यूँ तो घट मिले पनघट मिले।

बोध की छाया भी दे और ज्योति भी दे ज्ञान की।

ढूँढता हूँ मैं मुझे भी कोई ऐसा बट मिले।।[91]

'नदीम' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार है। उन्होंने गजल, छन्द, गीत आदि में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। कवि का विचार है कि हमें कोई काम ऐसा नहीं करना चाहिये जिसमें हमारा चैन छिन जाये– हृदय की शांति चली जाये। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

काम कभी दिन में न ऐसा कोई करे व्यक्ति

रात में जो नींद उसे चैन से न आ सके।

और कभी रात को न ऐसा कोई ऐसा काम हो कि

दिन में समाज को जो मुख न दिखा सके।

साल भर ऐसे काम करना ही चाहिये कि,

बैठ बरसात में जो रूखी–सूखी खा सके,

जीवन में ऐसे काम करता नदीम रहे,।

अन्तकाल वाणी पै जो मोक्ष मन्त्र आ सके।।[92]

आपकी रचनाओं में आशावाद की झलक दृष्टिगोचर होती है। कवि जीवन में आने वाले दुखों से घबराता नहीं है वह कहता है कि घबराने में कुछ सार भी नहीं है। इस कुण्डलिया के माध्यम से आपके ये विचार दृष्टव्य है–

हँसते गाते काटिये, जीवन के दिन चार।

दुख से मत घबराइये, घबराये क्या सार।।

घबरायें क्या सार, यहाँ है दुख बहुतेरे

दुख ही दुख पाता है वह जो दुख को हेरे।।

कहे नदीम न उसको दुख के पंजे कसते।

जिसको जीना आता, जीवन गाते हँसते।।[93]

कवि 'नदीम' जी के साहित्य के सन्दर्भ में राधेश्याम 'योगी' जी ने लिखा है– "हिन्दी में उूर्द पत्रिकाओं का प्रकाशन – भारती लिपि में उूर्द की मिठास भरने का प्रयास हिन्दी गज़ल को सर्वग्राही बनाने के प्रयास में सूफी ख्यालों की उड़ान, पत्रकारिता सच्चाई, ईमानदारी और एकात्मकता को समर्पित एक बढ़िया जिन्दगी की स्मरणीय मिसाल प्यारे नासिर अली 'नदीम' जी हैं।[94]

कवि नासिर अली 'नदीम' साहित्य जगत का वह दीपक है जिसकी लौ काव्य के प्रत्येक क्षेत्र में छटा बिखेर देती है। आपके काव्य में सूफियों की लौकिक– अलौकिकता तथा रहीम जैसी नीति विद्यमान है। उन्होंने अपनी

गजलों को सर्वग्राही बनाने हेतु हिन्दी के माध्यम से अपने भावों को उकेरा है। यह आपका श्लाघनीय प्रयास है।

भगवान सिंह 'राही' :—

कवि भगवान सिंह कुशवाहा का जन्म 31 मार्च सन् 1958 ई0 में कैलास नगर (क्योलारी) जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री गयाप्रसाद कुशवाहा है। इनका उपनाम 'राही' है। आप सरस्वती शिशु मन्दिर जालौन में शिक्षण कार्य कर रहे हैं।

आपकी शिक्षा एम0ए0 तक है। इसके साथ आप संगीत में प्रभाकर है। आपको लेखन की प्रेरणा स्वयं से प्रेरित होकर मिली। आपके प्रिय कवि जयशंकर प्रसाद जी है। आपकी मुख्य रुचियों में संगीत एवं बाँसुरी वादन है।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। आपकी रचनाओं का विषय युगबोधानुसार है। वर्तमान समय की शिक्षा पर आपने अपने विचार इस रचना के माध्यम से प्रकट किये–

शिक्षा के शुचि स्वर साधो तो
मधुवन में मधुहास सुहाये।
नैतिकता की मृदुवीणा पर, मानवता के गूँजे गान।
सुहँस उठे फिर देश भक्ति का, प्राणों में संगीत महान।।
स्वालम्बिता की बंशी पर, दिव्य मनोहर राग सुनायें।[95]

'अनुभूति के क्षण' कविता के माध्यम से कवि की ये अनुभूतियाँ मन को

प्रभावित करती हैं–

सुधि बाँसुरी बजती रही।

विरहाग्नि–शर कसती रही।।

देख मम तन–मन व्यथा।

चिर चाँदनी हँसती रही।।

निशा अहिनी हृदय कलिका।

प्रत्येक पल डसती रही।।[96]

कवि भगवान सिंह 'राही' की कविताओं में अनुभूति के स्वर मुखर हो उठे हैं। अध्यापन कार्य करते हुए हिन्दी साहित्य की सेवा में लगातार प्रयत्नशील हैं।

राम शंकर भारती :–

गीत, नव कविता, छन्द एवं श्रेष्ठ अध्यापक रामशंकर भारती ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने अपनी कलम से रूपकों के माध्यम से पीड़ा को उकेरा है। कवि ने इस पीड़ा को बड़े स्नेह एवं सहज भाव से लेकर जो जिजीविषा के लिये बल प्रदान करता है का चित्रण सुन्दर ढंग से किया है। इसके अतिरिक्त आपकी कविताओं में श्रृंगार रस का अच्छा परिपाक हुआ है।

कवि रामशंकर भारती का जन्म 13 जनवरी सन् 1962 ई0 को कैलाश नगर (क्योलारी) जालौन में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री गंगादीन है। आपका पारिवारिक परिवेश सांस्कृतिकमय रहा है। इसी परिवेश में आपका बचपन और जवानी व्यतीत हुई।

आपकी शिक्षा परास्नातक, एवं साहित्य रत्न है। आप विद्यालंकार उपाधि से सम्मानित हुए। आप अध्यापन कार्य में रत हैं।

आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपकी कुछ रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं।

यह संसार नश्वर है। जीवन में न जाने कितने संघर्ष हैं। इन संघर्षो से लड़ते हुए जीवन नैया को आगे बढ़ाना साहस का कार्य है। ऐसे साहसी व्यक्ति दूसरों के लिये आदर्श बन जाते हैं। 'कगार का पेड़' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं–

कगार के पेड़ की प्राण–पीड़ा

क्या जाने नदी की अमर्यादित धारा?

वेगवान बबण्डर, चक्रवात अंधड़,

सभी समूल उखाड़ फैंकने को है तत्पर

पेड़ को, बेचारा, असहाय, निराश्रित मत समझो,

जड़ें उसकी, फाड़कर, पहाड़ का सीना, भेद कर अभेद्य को।

भीतर, बहुत भीतर पैठी हैं।

जहाँ से मिला है उसे–

अमरत्व का वर ! देवत्व का आधार !!

यही सम्बल है,

उसकी चिर जीवता का, समग्र चैतन्यता का।

हाँ यह सच है, सभी ढहते है।

एक दिन कगार का वृक्ष भी ढह जायेगा,

किन्तु वह अस्तित्व हीन, निर्मूल कभी नहीं होगा।

फिर होगा नवांकुरण, कोपलें फूटेंगी

नवजात शिशु सी किलकारी मारकर–

भोर की अनछुई किरण से

और एक दिन–

बोधि की खोज में

कोई ध्रुव, कोई सिद्धार्थ

उसकी छाँव में–

बोधिसत्व बनेगा देना सन्देश–

शाश्वता, प्राणत्व, मनुष्यत्व का।[97]

आपकी रचनाओं में स्वस्थ श्रृंगार का भी परिपाक हुआ है और यह श्रृंगार रहस्यवाद की तरफ उन्मुख हो जाता है जो कवि की प्रतिभा शक्ति का परिचय देती है–

श्रृंगार के पल, अभिसार के क्षण

स्मरण हैं – स्मरण हैं।

नीरव निशा की छाँव में.

चंद्रिका के गाँव में।

प्रीति से पगे कण–

स्मरण है –स्मरण हैं।

अद्वैत की खुली वातायन

जीव से मिला ब्रह्म साजन

द्वैत का सर्वस्व अर्पण–

स्मरण है – स्मरण है ।[98]

कवि जीवन पथ पर विघ्न बाधाओं को पार करता हुआ अपने गन्तव्य तक पहुँच जाना चाहता है। मार्ग की बाधाओं से वह हताश नहीं होता है–

हम पखेरू नंदन वन के

भले न छू पायें आकाश

पथ की विघ्न व्यथाएँ

क्या कर पायेंगी हताश।[99]

कवि की अज्ञात के प्रति भी असीम वेदना है। 'प्रियतम प्राण' के माध्यम से आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

प्रीति से पावन हो, प्रियतम प्राण तुम।

मधु रति से रसिक हो प्रियतम प्राण तुम।।

नेह की नदी में मचलता लहर मन

कूल से मिले हो प्रियतम प्राण तुम।

तुम हो शरद जुन्हाई या फागुनी पवन,

फूल से खिले हो प्रियतम प्राण तुम।[100]

कवि आज की राजनीति पर व्यंग्य करता हुआ कह उठता है कि आज सब जगह अन्याय का राज्य है। इसी सन्दर्भ में आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

धूप सहमी हुई है, चाँदनी उदास है।

खून अपना पी रही, ये कैसी प्यास है।।

संसद से चौपाल तक, अन्याय का राज्य है।

लोकतन्त्र की परिकल्पना बकवास है।[101]

कवि ने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक एवं राजनैतिक विचार धाराओं के साथ श्रृंगार के अनूठे चित्र प्रस्तुत किये हैं। वे जालौन कस्बे के उन कवियों में आते है जिन्होंने आत्म चिन्तन एवं व्यंग्य के द्वारा लोगों के ह्रदय में अपनी जगह बना ली है। आप सतत् रूप से साहित्य की सेवा में रत है।

महेन्द्र कुमार पाटकार 'मृदुल'

कवि महेन्द्र कुमार पाटकार 'मृदुल' जालौन के ऐसे सशक्त हस्ताक्षर है जिन्होंने अपनी लेखनी से चुटीले व्यंग्य, कविता एवं गीतों के माध्यम से साहित्य जगत में अपने पैर जमाये।

महेन्द्र कुमार पाटकार 'मृदुल' जी का जन्म 25 जनवरी सन् 1963 ई0 में मुहल्ला फर्दनबीर, जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामसेवक पाटकार है।

आपकी विद्यालयी शिक्षा हाईस्कूल तक है। हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के कुछ साल उपरान्त इन्होंने स्वयं का एक शाकाहारी भोजनालय संचालित किया, वर्तमान में भी आप इसी का संचालन कर रहे हैं।

आपके प्रिय कवियों में कवि राममोहन शर्मा एवं रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी जी है। इनकी रुचियों में समाज सेवा एवं राजनीति प्रमुख है। इन्होंने आत्मप्रेरित होकर रचनाएँ की। आपकी धारा प्रवाह लेखनी नीतिवचन, देश भक्ति एवं समाज में फैली असंगतियों पर प्रखरता से चली है।

आप अपनी लेखनी से सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक विषयों पर कहीं चुटीले व्यंग्य करते है तो कहीं क्रान्ति की मशाल जलाते हैं। आपकी राजनीति से सम्बन्धित यह रचना दृष्टव्य है–

जिन लोगों ने उन्हें

रोते हुए श्रद्धांजलियाँ दी।

पहले–

उन्हीं लोगों ने उन्हें

खुलकर गालियाँ दी।

× × ×

उन्हें कैसे मान लें लोग

अपना आदर्श

जो जातिवाद, खोखली नैतिकता,

हरपल कुर्सी के लिये

गिद्ध दृष्टि लगाये बैठे हैं।[102]

कवि ने अपनी वाणी की अभिव्यक्ति के लिये दोहा, छन्द का प्रयोग किया है। इन दोहों में समाज का पूरा बिम्ब झलकता है। इनके कुछ दोहे यहाँ दृष्टव्य हैं।

सच कहने के लिये भी, हो उन्मुक्त विचार।

स्वार्थ नीति में टूटता, अपना यह परिवार।।

बाल खोल रिश्वत फिरै, नगर बधू सी होय।

सत्य यहाँ लज्जित हुआ, नैतिकता दी रोय।।

नीति वचन तो हो गये, केवल कोरे ज्ञान।

अखबारों में छप रहे, उग्रवाद के ब्यान।।[103]

बुन्देली भाषा में आपके गीत अच्छे बन पड़े है। आपने 'जा दिन से आ गये पाऊने' शीर्षक गीत में गाँव देहात की छार गृहस्थी एवं वैसे ही मौके पर किसी रिश्तेदार का पाउने बनकर आ जाने का कितना मार्मिक चित्र खींचा है। यह गीत गाँव देहात का चित्र खींचने में पूर्ण सक्षम है—

जा दिन सौं आ गये पाउने, घर आँगन उजियारौ।

ओई दिन बाई नें सांचऊँ, हालई चूल्हौ बारौ।।

सुनत जुर गये पुरा परोसी, चरन धूर लैविन कों।

सारे सारीं, सरजें दै रइँ, मीठी गारी उनको।।

छूँची डरी भड़ेरी सिगरी, रूठो हाय गुसइयाँ।

झारेउँ झूरे उनकेउ भर कों, निकर न पाई सिमइयाँ।।

रूखौ—सूखौ खाय करत ते, हम सब रोज गुजारो।

जा दिन से..................।

× × ×

ऊसेंउँ हतो तौर कौ मइनाँ, दिन —दिन विपता आ रई।

काढ़ मूस कैं बाई मोई घर की लाज बचा रई।।

उधरा लैकैं करौ लला माथें, हरदी कौ टीका।

गौड़ा लौ पौंचा कै लौटी, लौट पाव है जी का।।

बड़ी बुआ ने अपइ बहू कों, धीरज दै पुचकारौ।

जा दिन सें आ गये पाउनें, घर आँगन उजियारौ।[104]

कवि साहित्यिक प्रतिभा का धनी हैं उसने छन्दों में भी एक रिश्ता कायम कर दिया है। 'हम तो लिखने वाले है' शीर्षक गीत की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

आप हमें जो समझें, हम तो लिखने वाले हैं।
कविता का मैं जनक राज हूँ, गीत ब्याहने आयेंगे।
पाँव पूँज दूँगा दोहों से, मन्त्र सुनाये जायेंगे।
कन्यादान कुण्डली संग ले, मुक्तक करने आयेंगे।
छन्द सवैया मंगल ध्वनियाँ, सूरदास फिर गायेंगे।।
और गजल का आमंत्रण दे, तुम्हें बुलाने वाले है।

आप हमें.....................।[105]

महेन्द्र कुमार पाटकार 'मृदुल' जी खड़ी बोली एवं बुन्देली दोनों ही भाषाओं के अच्छे जानकार हैं। **'मृदुल' जी की काव्य प्रतिभा के सम्बन्ध ा में राधेश्याम योगी जी ने लिखा है** –'' जागरुकता, तीखी समझदारी, युगानुकूल, सफल व्यावसायिकता, अदम्य निर्भीकता, धाँसू अभिव्यक्ति, चुटीले व्यंग्य राष्ट्रवादी क्रान्तिकारिता एवं मनमौजी स्वभाव का सम्मिलित स्वरूप बनाम महेन्द्र पाटकार 'मृदुल'।[106]

कवि मृदुल में साहित्यिक प्रतिभा विद्यमान है उन्होंने कविता कामिनी का जो शृंगार वर्णन किया है वह श्रेष्ठ है। जहाँ आपके बुन्देली भाषा के गीतों ने गाँव–देहात का मार्मिक चित्र उकेरा है वहीं खड़ी बोली में राजनीतिक एवं सामाजिक बुराइयों पर व्यंग्य अच्छे बन पड़े हैं। आप अपनी साहित्यिक साधना में सतत् प्रयासरत् हैं। देखना है आप साहित्य के द्वारा अपना मुकाम

कहाँ तक बना पाते हैं यह तो अभी से कुछ कहना कठिन है।

विवेकानन्द श्रीवास्तव

संस्कृत काव्य रचना, गीत एवं मुक्तक के ख्याति प्राप्त साहित्यकार विवेकानन्द श्रीवास्तव का जन्म 3 मई सन् 1963 ई0 में ग्राम मकरन्दपुरा (जालौन) में हुआ था। आपके पिता महाकवि श्री हरीश्याम श्रीवास्तव जी है और माता श्रीमती माया देवी है। आपके बाबा (प्रपिता) स्व0 श्री रघुवीर सहाय श्रीवास्तव जी थे। विवेकानन्द श्रीवास्तव जी का विवाह श्री शिवशंकर लाला श्रीवास्तव जी की सुपुत्री श्रीमती सविता श्रीवास्तव के साथ हुआ। आपके दो पुत्र–मृणाल श्रीवास्तव एवं वेणु गोपाल श्रीवास्तव है। आप वर्तमान में सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज में गोला कर्णनाथ खीरी आचार्य के पद पर कार्यरत हैं।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की व्यक्तिगत परीक्षाएँ सन् 1984 ई0 एवं 1986 ई0में उत्तीर्ण की। आपने बी0ए0 की परीक्षा सन् 1988 ई0 में डी0वी0 डिग्री कालेज उरई से उत्तीर्ण की। इसी कालेज से एम0ए0 (संस्कृत) की व्यक्तिगत परीक्षा सन् 1990 ई0 में उत्तीर्ण की। इसी कालेज (डी0वी0डिग्री कालेज) से आपने बी0एड0 की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा अपने पिता कवि श्री माया हरीश्याम 'पारथ' से मिली। घर के साहित्यिक वातावरण का प्रभाव कवि विवेकानन्द श्रीवास्तव जी पर पड़ा।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु

आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी अप्रकाशित रचनाओं में 'राम राजस्य कल्पना' (संस्कृत काव्य) एवं प्रथक–प्रथक 200 से अधिक श्लोकों की रचना आपने की है। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं।

भारतं में प्रियम् सुन्दरम् सुन्दरम्।
कर्मवाणी मनोभिश्च वन्दे चिरम्।।
भीलनीदन्त भक्त्या मृदः कोमलम्।
राघवः भुञ्जते भुक्त शेषं फलम्।।
कुत्रचित् सः निषादं गुहं निर्धनम्।
कण्ठ मालिङति स्नेह प्रीत्या परम्।। भारतं..........[107]

कवि संसार के दुखों से द्रवित हो उठता है, जिसके हृदय में दीन–दुखियों के लिये प्रेम नहीं है उनके लिये क्या कहा जा सकता है? इसके लिये कवि मौन हो जाता है लेकिन कवि की भावनाएँ इन दीनों के प्रति उमड़ उठती है–

नहिं नैनन नीर बहे जिनके सुनि,
पीर पराई कराह भरी।
करुणा न बहे जिनके उर सों
लखि दीनन के दुख की गठरी।।[108]

कवि सांसारिक वैभव की कामना नहीं करता है, वह तो ईश्वर की भक्ति में इतना लीन हो जाना चाहता है कि तन–मन की भी सुधि न रहे। दुर्मिल सवैया के माध्यम से आपके विचार यहाँ दृष्टव्य है–

चिर चाह न हो जग वैभव की,

हरि के पद पंकज में रति हो।

तन की सुधि भी न रहे उनके,

गुण कीर्तन चिन्तन में मति हो।

मन दम्भ न दर्प रहे नित निर्मल,

साधु व सन्त सुसंगति हो।।[109]

कवि की रचना धर्मिता श्रेष्ठ बन पड़ी है। परिवार के साहित्यिक वातावरण का प्रभाव आप में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। फिर भी आपने छन्दों के साथ संस्कृत काव्य की रचना करके परिवार को दो कदम आगे बढ़ाने का सफल प्रयास किया है। **कवि के सम्बन्ध में डॉ0 मनु श्रीवास्तव रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग बुन्देलखण्ड झाँसी ने लिखा है–"** विवेकानन्द श्रीवास्तव ने संस्कृत पदावली में काव्य रचना की है जो कि बड़ी ही सारगर्भित एवं सुरम्य बन पड़ी है। छन्दों का प्रयोग सार्थक है।[110]

कवि का हिन्दी तथा संस्कृत भाषा पर पूर्ण अधिकार है जिस प्रकार हिन्दी की कोमल पदावली के माध्यम से कवि अपने भावों को प्रकट करता है उतनी ही सरल एवं हृदय को छू लेने वाले भाव संस्कृत भाषा में भी व्यक्त करता है।

नीलम श्रीवास्तव 'काश्यप'

मुक्तक गजल एवं गीत कोकिला कु0 नीलम श्रीवास्तव 'काश्यप' ऐसी कवयित्री हैं जिन्होंने काव्य की रचना करके तथा उन रचनाओं को अपने स्वर से सजाकर

धन्य कर दिया। उनके गीत और मुक्तक उनके कंठ से निकलकर कानों में मधु सा उड़ेल देते हैं, कण–कण गतिमान हो उठता है। श्रोता मंत्र मुग्ध सा उन्हें सुनता रह जाता है।

कु0 नीलम श्रीवास्तव का जन्म 29 सितम्बर सन् 1968 ई0 में कस्बा जालौन में हुआ था। आपका जन्म काश्यप गोत्र में हुआ है इसी कारण आप अपना उपनाम 'काश्यप' लिखती हैं। आपके पिता डॉ0 जीवनलाल श्रीवास्तव एवं माता श्रीमती सरोज श्रीवास्तव हैं। आपका एक भाई प्रशान्त श्रीवास्तव एवं बहनें नेहा, अर्चना एवं आराधना है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ कस्तूरबा इण्टर कालेज जालौन से सन् 1983 एवं 1985 ई0 में उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1987 ई0 में बी0ए0 की परीक्षा गाँधी महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। सन् 1990 ई0 में एम0ए0 राजनीति शास्त्र से एवं 1992 ई0 में एम0ए0 (हिन्दी) की परीक्षा डी0वी0 डिग्री कालेज उरई से उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा कवि श्री रवीन्द्रनाथ शर्मा जी से प्राप्त हुई। आपकी अभी तक कोई कृति प्रकाशित नहीं हुई है किन्तु विभिन्न पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

आपकी प्रमुख विधाओं में गीत, गजल, एवं मुक्तक छंद है। आपकी अधिकांश रचनाएँ श्रृंगार रस से परिपूर्ण है इसके अतिरिक्त आपकी रचनाओं में वीर रस का परिपाक गौड़ रूप से हुआ है। आपकी नारी विषयक रचनाएँ अच्छी बन पड़ी हैं। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

छेड़िये न आप मेरे स्वाभिमान को,

सर पै उठा लूँगी मैं आसमान को।

नारी का सत्य छेड़ना कोई हँसी नहीं

मरने नहीं दिया है कभी सत्यवान को।

वैसे तो मैं हूँ कोमल खुशबू कली हूँ,

महका के रख ही दूँगी इस बियावान को।

माना कि देखने में ताकत तुम्हीं में है,

लेकिन झुकाया मैंने हर शक्तिमान को।।[111]

'दहेज' के कारण कुछ लोग नववधुओं को जलाकर घिनौना कुकृत्य कर डालते हैं। कवयित्री ऐसे लोगों को एक बार सोचने पर जरूर मजबूर कर देती है क्योंकि नारी ही प्रत्येक खानदान को जिन्दगी देने वाली है। इसी सन्दर्भ में आपकी यह रचना दृष्टव्य है—

मुझको जलाने वालो ये भी तो सोच लो,

देती हूँ जिन्दगी मैं हर खानदान को।

कीमत पै अपनी तुम यूँ दम्भ न करो,

रहकर बढ़ाया नीलम हीरे की शान को।[112]

आपके मुक्तक की ये पंक्तियाँ भी बड़ी प्रिय लगती हैं—

मैं गीत लिखती हूँ, गजल के लिवास में।

सागर समेट लेती हूँ, छोटे गिलास में।।[113]

आप श्रृंगार रस की अच्छी कवयित्री हैं। आपकी श्रृंगारपरक कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं—

पीले—पीले दिन जब से बसन्त हो गये।

सच मानों उस दिन से तुम सन्त हो गये।।

जीने को तो हम शाकुन्तल पल जिये

तुम मुनि श्रापित दुष्यन्त हो गये।[114]

इसी तरह का आपका यह मुक्तक भी दृष्टव्य हैं–

याद आयी तेरी बावरी हो गयी,

रंग ऐसा चढ़ा सावरी हो गयी।

तन हुआ राधिका साधिका राधिका,

मन तो मीरा हुआ बाँसुरी हो गयी।[115]

कवयित्री जिन्दगी में हार नहीं जीत की आकांक्षा करती है। निश्चित रूप से नीलम श्रीवास्तव आत्मविश्वास से पूर्ण कवयित्री है। आपका आत्म विश्वास आपकी इस रचना में स्पष्ट झलक रहा है–

मन से जो मिले मुझे वो मीत चाहिये,

मैं भी गजल बनूँगी मुझे गीत चाहिये।

शब्दों से खेल खेल के भावों में जीयूंगी

मुझे जिन्दगी में हार नहीं जीत चाहिये।

वैसे तो मेरा हौसला काफी बुलन्द है।

प्यार की सुगन्ध पला छन्द–छन्द है

गीत, गजल, ओज व्यंग्य कुछ भी लिखूं मैं

पर तुझको जो पसन्द मुझे वो पसन्द है।[116]

कवयित्री ने गीत एवं गजल दोनों विधाओं में अपनी लेखनी चलाकर साहित्य को समृद्ध करने का प्रयास किया है। इन्हीं गीत गज़लों को। जब

कवयित्री अपनी मधुरवाणी में लयबद्ध कर देती है तो कवि मंच में समा सा बँध जाता है। सुरीला कंठ आपको ईश्वर ने उपहार में दिया है। लेखन और गायन में दोनों गुण जहाँ होंगे वहीं निश्चित रूप से मंच में चार चाँद लग जाते हैं। जनपद जालौन के कवियों में आपका विशिष्ट स्थान है।

अपर्णा सक्सेना

कु0 अपर्णा सक्सेना का जन्म29 मार्च सन् 1980 ई0 में जालौन में हुआ था। आपके पिता श्री विशम्भर दयाल सक्सेना सरकारी पद पर कार्यरत हैं। आपकी माता श्रीमती पूर्णिमा सक्सेना अत्यन्त मृदुभाषिणी एवं साहित्यानुरागिनी महिला है। धार्मिक क्रियाकलापों में आपकी विशेष रुचि है। आपके तीन भाई प्रवीण सक्सेना, पवन कुमार सक्सेना एवं प्रमोद कुमार सक्सेना है। प्रवीण कुमार सक्सेना एक कवि के रूप में जाने जाते हैं।

आपकी उच्च शिक्षा एम0ए0 (हिन्दी) तक है। सम्प्रति आप विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में व्यस्त हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा अपने भाई प्रवीण कुमार सक्सेना से मिली। आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी मुख्य विधा गीत एवं कविता है।

आपने समाज में फैली बुराइयों को अपने काव्य का माध्यम बनाया है तथा उन समस्याओं को जो समाज में भयंकर रूप से पनप रही हैं उन्हें उठाया है। 'दहेज प्रथा' हमारे समाज की बहुत बड़ी समस्या है, न जाने कितनी बधुएँ इसकी बलिबेदी पर चढ़ चुकी हैं। कवयित्री ने इसे कविता के

माध्यम से इस प्रकार हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है–

दहेज की आग

कुछ ऐसी है लगी

न धुँआ ही उठा

न राख ही मिली।

बिना दहेज के भी

दुलहन नहीं लगती है भली।[117]

कु0 अपर्णा सक्सेना कुछ कर गुजरने की तमन्ना रखती हैं। वह चाहती है जो कार्य हमारे पूर्वज नहीं कर सके है, वह कार्य हम करके दिखा देंगे। गृहदीवारों में कैद न होकर स्वधर्म का पालन करते हुए बाहर भी कदम रखेंगे और अपने कुल एवं देश का नाम ऊँचा करेंगी–

जो हमारे पूर्वजों ने

नहीं किया

या वे नहीं कर सके

वह हम करके दिखलायेंगे

गृह परिचारिका बन

केवल घर के कार्यों में

जीवन नहीं गवायेंगे।[118]

अपर्णा सक्सेना फुरसत के समय में कविता एवं गीतों के माध्यम से अपने समय का सदुपयोग करती हैं। आपकी रचना धर्मिता अभी शैशवावस्था में हैं। देखना है आप साहित्य को कितनी ऊँचाइयों तक ले जाती है।

1. ''सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका द्वितीय अंक 1993, सम्पादक,– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 60
2. ''सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 5
3. ''सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 6
4. ''सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 6
5. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 10/10/04
6. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 10/10/04
7. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 10/10/04
8. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 10/10/04
9. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, दिनांक 22/05/03
10. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, दिनांक 22/05/03
11. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, दिनांक 22/05/03
12. काव्य मञ्जूषा 2003, सम्पादक–प्रवीणकुमार सक्सेना 'उजाला', पृ0सं0 96
12. काव्य मञ्जूषा 2003, सम्पादक–प्रवीणकुमार सक्सेना 'उजाला', पृ0सं0 95
14. ''सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 11
15. ''सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक –नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 11
16. 'हँसते लोचन रोते प्राण', रचयिता, राम स्वरूप 'सिन्दूर' प्रकाशक–प्रभाकर शर्मा, सफल प्रकाशन कानुपर, पृ0सं0 79
17. 'हँसते लोचन रोते प्राण', रचयिता, राम स्वरूप 'सिन्दूर' प्रकाशक–प्रभाकर शर्मा, सफल प्रकाशन कानुपर, पृ0सं0 15

18. 'हँसते लोचन रोते प्राण', रचयिता, राम स्वरूप 'सिन्दूर' प्रकाशक–प्रभाकर शर्मा, सफल प्रकाशन कानुपर, पृ0सं0 7

19. 'हँसते लोचन रोते प्राण', रचयिता, राम स्वरूप 'सिन्दूर' प्रकाशक–प्रभाकर शर्मा, सफल प्रकाशन कानुपर, पृ0सं0 10

20. 'हँसते लोचन रोते प्राण', रचयिता, राम स्वरूप 'सिन्दूर' प्रकाशक–प्रभाकर शर्मा, सफल प्रकाशन कानुपर, आमुख पृष्ठ

21. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 15/10/03

22. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 15/10/03

23. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993 सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 17

24. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993 सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 18

25. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993 सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम,' पृ0सं0 18

26. 'सर्जना', 2003 सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 29

27. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक, नासिर अ़ली, नदीम, पृ0सं0 60,61

28. 'पंच विन्ध्य' पत्र 23 से 29 जनवरी 2000 के बुन्देलखण्ड के साहित्यकार 'शिवानन्द मिश्र बुन्देला, शीर्षक से

29. 'पंच विन्ध्य' पत्र 23 से 29 जनवरी 2000 के बुन्देलखण्ड के साहित्यकार 'शिवानन्द मिश्र बुन्देला, शीर्षक से

30. वार्षिक पत्रिका, 1999–2000, श्री गाँधी इण्टर कालेज, सम्पादक– डॉ0 शालिग्राम शास्त्री, पृ0सं0 88

31. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम से, प्रकाशक–रेखाप्रकाशन, आगरा, पृ0सं0 13

32. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय के तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम से, प्रकाशक–रेखाप्रकाशन, आगरा, पृ0सं0 14

33. ''देखो'' जो पीरो पट' रचयिता, शिवानन्द मिश्र बुन्देला, प्रकाशक– श्रीमती कमला मिश्रा, कञ्ज प्रकाशन, बुन्देला कार्यालय, झाँसीरोड, उरई, पृ0सं0 62

34. ''देखो'' जो पीरो पट' रचयिता, शिवानन्द मिश्र बुन्देला, प्रकाशक– श्रीमती कमला मिश्रा, कञ्ज प्रकाशन, बुन्देला कार्यालय, झाँसीरोड, उरई, पृ0सं0 63, 64

35. ''देखो'' जो पीरो पट' रचयिता, शिवानन्द मिश्र बुन्देला, प्रकाशक– श्रीमती कमला मिश्रा, कञ्ज प्रकाशन, बुन्देला कार्यालय, झाँसीरोड, उरई, पृ0सं0 66

36. ''देखो'' जो पीरो पट' रचयिता, शिवानन्द मिश्र बुन्देला, प्रकाशक– श्रीमती कमला मिश्रा, कञ्ज प्रकाशन, बुन्देला कार्यालय, झाँसीरोड, उरई, पृ0सं0 18

37. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी के तृतीय वर्ष के पाठ्यक्रम से, प्रकाशक–रेखाप्रकाशन, आगरा, पृ0सं0 15

38. 'सर्जना' 2003 सम्पादक– डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय, पृ0स0 54

39. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 15

40. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 15,16

41 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 16

42. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 16

43. 'सर्जना' 2003 सम्पादक– डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय, पृ0स0 55

44. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 61

45. 'आदि ज्योति' रचयिता, माया हरिश्याम 'पारथ', प्रकाशक–पारथ प्रेस, क्षीर सागर पटेल

नगर, उरई कवि के संक्षेप परिचय में

46. श्री गुरु चालीसा' रचयिता, माया हरिश्याम 'पारथ' प्रकाशक– पारथ प्रेस, पटेलनगर, उरई

47. 'आदि ज्योति' रचयिता, माया हरिश्याम 'पारथ', प्रकाशक–पारथ प्रेस, क्षीर सागर पटेल नगर, उरई, पृ0सं0 1

48. 'आदि ज्योति' रचयिता, माया हरिश्याम 'पारथ', प्रकाशक–पारथ प्रेस, क्षीर सागर पटेल नगर, उरई, पृ0सं0 39

49. 'आदि ज्योति' रचयिता, माया हरिश्याम 'पारथ', प्रकाशक–पारथ प्रेस, क्षीर सागर पटेल नगर, उरई, पृ0सं0 41

50. 'काव्यं मञ्जूषा' 2003 सम्पादक– प्रवीण सक्सेना, 'उजाला', पृ0सं0 87

51. 'काव्यं मञ्जूषा' 2003 सम्पादक– प्रवीण सक्सेना, 'उजाला', पृ0सं0 87

52. 'काव्यं मञ्जूषा' 2003 सम्पादक– प्रवीण सक्सेना, 'उजाला', पृ0सं0 88

53. 'सर्जना' 2003 सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 26

54. 'सर्जना' 2003 सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 27

55. 'काव्यं मञ्जूषा' 2003 सम्पादक– प्रवीण सक्सेना, 'उजाला', पृ0सं0 86

56. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 48

57. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 48

58. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 48

59. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 65

60. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 25

61. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 26

62. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 26

63. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 26

64. कवि से साक्षात्कार, साक्षात्कार का दिनांक 25/08/2004

65. 'व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता, डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया, प्रकाशक— दिगन्त प्रकाशन कानपुर, पृ0सं0 62

66. 'व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता, डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया, प्रकाशक— दिगन्त प्रकाशन कानपुर, पृ0सं0 34

67. 'व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता, डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया, प्रकाशक— दिगन्त प्रकाशन कानपुर, पृ0सं0 60

68. 'व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता, डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया, प्रकाशक— दिगन्त प्रकाशन कानपुर, पृ0सं0 61

69. 'व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता, डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया, प्रकाशक— दिगन्त प्रकाशन कानपुर, पृ0सं0 62

70. 'व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता, डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया, प्रकाशक— दिगन्त प्रकाशन कानपुर, आमुख से

71. 'व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता, डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया, प्रकाशक— दिगन्त प्रकाशन कानपुर, आमुख से

72. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक— नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 21

73. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक— नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 21

74. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 22

75. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 22

76. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 22

77. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 61

78. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 19

79. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 19

80. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 20

81. 'सबकी खैर खबर' त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 20

82. हनुमत–साधना अप्रैल/सितम्बर 2004 प्रकाशन चिरगाँव झांसी उ0प्र0, 284301

83 पारथ प्रेम परिषद, में कवि गोष्ठी में सुनी रचना

84 पारथ प्रेम परिषद, में कवि गोष्ठी में सुनी रचना

85. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम', पृ0सं053

86. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 53

87. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक–नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 49

88. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 50

89. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 65

90. 'सर्जना' प्रथम संस्करण 2003, सम्पादक डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 64,65

91. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 39

92. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 40

93. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 40

94. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 61

95. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 33

96. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 33

97. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 31

98. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 31

99. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 31

100. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ0सं0 32

101. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ०सं० 32

102. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ०सं० 29

103. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ०सं० 29

104. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ०सं० 30

105. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ०सं० 30

106. सबकी खैर ख़बर, त्रैमासिक पत्रिका, द्वितीय अंक 1993, सम्पादक—नासिर अली 'नदीम', पृ०सं० 61

107 काव्य मञ्जूषा, सम्पादक—प्रवीण सक्सेना उजाला, पृ०सं० 42

108 काव्य मञ्जूषा, सम्पादक—प्रवीण सक्सेना उजाला, पृ०सं० 41

109. सर्जना, 2003 प्रथम संस्करण, सम्पादक—डॉ० राजेशचन्द्र पाण्डेय, पृ०सं० 110

110 काव्य मञ्जूषा, सम्पादक—प्रवीण सक्सेना उजाला, पृ०सं० 9

111. कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/10/2004

112. कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/10/2004

113. कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/10/2004

114. कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/10/2004

115. कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/10/2004

116. कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/10/2004

117. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक—प्रवीण सक्सेना 'उजाला', पृ०सं० 23

118. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक—प्रवीण सक्सेना 'उजाला', पृ०सं० 24

पंचम अध्याय

तहसील उरई के साहित्यकार

नन्दराम शर्मा

गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज'

मिश्री लाल आर्य

विजयकुमार पाण्डेय

यज्ञदत्त त्रिपाठी

रूपनारायण शुक्ल

योगेश्वरी प्रसाद 'अलि'

परमात्मा शरण शुक्ल 'गीतेश'

राजेन्द्र श्रीवास्तव 'लल्ला'

धर्मनाथ प्रसाद

शोभा श्रीवास्तव

डालचन्द्र अनुरागी

रामप्रकाश त्रिपाठी

अब्दुल मलिक अब्बासी

पं० रविशंकर मिश्र

रामजी कुमार सक्सेना

अरुण नागर

माया सिंह 'माया'

राकेश कुमार पटैरिया

डॉ० अलका नायक

किरण नागर

विजय कुमार गुप्त

चन्द्रप्रकाश दुबे 'चन्द्र'

शफीक उर्रहमान 'कशफी'

अपर्णा खरे

शिखा दीक्षित

प्रज्ञा श्रीवास्तव "आकांक्षा"

नन्दराम शर्मा

सुप्रसिद्ध गीतकार, कलाकार, अभिनेता, अध्यापक व संगीत कला में निपुण नन्दराम शर्मा ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से भक्ति एवं नीति की सरस धारा को बहाकर जनमानस को तृप्त किया है। आपके अधिकतर गीत आख्यानिक गीति की कोटि में आते हैं।

कवि नन्दराम शर्मा का जन्म 1 दिसम्बर सन् 1928 ई0 में ग्राम ऐंधा तहसील उरई (जालौन) में हुआ था। आपके पूर्वज जिला–हमीरपुर के ग्राम धमना से कतिपय लोधी राजपूतों के साथ पूर्व निर्जन क्षेत्र ग्राम ऐंधा में आकर बस गये जो लेखक की जन्मस्थली है। आपके पिता श्री रामसहाय जी काव्य कला के विद् रहे हैं। शर्मा जी के कवित्व शक्ति का प्रस्फुटन शैशव काल से ही रहा है। इन्हें हिन्दी के साथ ही उर्दू भाषा का भी ज्ञान है। आपकी माता श्रीमती रानी शर्मा धार्मिक विचारों की महिला थी। आपका विवाह धुरहट (जालौन) निवासी श्री मातादीन जी की सुपुत्री श्रीमती फूलारानी के साथ हुआ। आपकी चार संतानों में दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। बड़े पुत्र श्यामनारायण शर्मा (वकील) का विवाह इछौरा (हमीरपुर) निवासी श्री गजराज शर्मा की सुपुत्री श्रीमती तारा देवी के साथ हुआ। इनके दो पुत्र और एक पुत्री है। बड़ा पुत्र अमितकुमार छोटा पुत्र अनूपकुमार एवं पुत्री कु0 अभिलाषा है जो वर्तमान में अध्ययनरत हैं। कवि के छोटे पुत्र राघवेन्द्र कुमार का विवाह श्रीमती तारा देवी की छोटी बहिन सोना देवी के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में

आशीषकुमार व कु0 आरती है। शर्मा जी की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती कृष्णादेवी है जो ग्राम लोधीपुरा निवादा (हमीरपुर) निवासी श्री गयाराम शर्मा जी को ब्याहीं है। ये छतरपुर (म0प्र0) में रेडियो सिंगर है। अनिल, प्रदीप, संदीप एवं सरला, साधना, रानी इनकी छैः संतानें हैं। कवि की छोटी पुत्री श्रीमती गिरिजादेवी ग्राम लखावती पो0 भदरवारा (झाँसी) के श्री शिवकुमार शर्मा जी को ब्याही हैं। इनकी संतानों में मनीष, दीपेश एवं श्रीमती वंदना शर्मा है।

आपकी स्कूली शिक्षा मिडिल तक है। आप बेसिक प्राइमरी स्कूल में अध्यापक के रूप में कार्यरत रहे। आपने 27 वर्ष तक ग्राम ऐंधा में अध्यापन कार्य किया एव यहीं से प्रधानाध्यापक के पद से सेवानिवृत्त हुए।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'पंचामृत' एवं 'सिद्धान्त सरोवर' है। आपकी रचना पंचामृत 42 पृष्ठों की एक अनूठी रचना है। इसका प्रकाशन वर्ष (द्वितीय संस्करण) 1993 ई0 है। प्रकाशक विश्वनाथ कौशल सरपंच ऐंधा (जालौन) है।

आपकी अप्रकाशित रचनाओं में रामायण की आठ नारियाँ, एवं हरदौल चरित्र है।

इसके साथ ही कवि ने रामलीला मंच पर रामलीला के महत्वपूर्ण किरदारों को रंगमंच में अभिनय के द्वारा जीवंत किया। जनक, दशरथ, विश्वामित्र, केवट, सुषेन वैद्य, विभीषण, जटायु तथा नारी पात्रों में कौशल्या एवं शबरी के किरदारों को बखूबी निभाया।

आपने नौटंकी में भी अपना किरदार बखूबी निभाया। नौटंकी में आपने 1944 ई0 से 1946 ई0 तक अभिनय कर अपने किरदारों को जीवन्त किया। इसी दरम्यान पंचमसिंह डाकू ने आपका अपहरण 1945 ई0 में कर

लिया था।

कवि ने वेद पुराणों एवं रामायण गीता के नीति एवं धर्म सिद्धान्तों को अपने काव्य का विषय बनाया है। उन सिद्धान्तों को आधुनिक परिवेश में ढालकर मानव मात्र के लिये ग्राह्य एवं सुगम बना दिया है।

कवि नन्दराम शर्मा जी ने काम, क्रोध, मद, लोभ आदि को नरक का द्वार बताया है। मनुष्य के लिये श्रीराम नाम का जप करने में ही सुख शान्ति मिलती है। 'नर्क के द्वार' शीर्षक गीत के माध्यम से ये रचना दृष्टव्य है–

काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह यह सबई नरक के पंथ है।

सब तज भज श्रीराम नाम, भज रहे जिन्हें सब संत है।[1]

राम–रावण युद्ध के समय जब विभीषण के द्वारा श्रीराम का नाम लिया जाता है तब लंका का राजसमाज तथा रावण उससे क्रोधित हो जाता है। कवि ने विभीषण के द्वारा राम शब्द की व्याख्या कितने सुन्दर ढंग से कहलवायी है–

रा अक्षर भैया रावण का

भाभी के म से जोड़ दिया

जब राम बन गया तब

हमने दुनिया से नाता तोड़ दिया

रावण भैया है पिता तुल्य

अरु मन्दोदरी सुमाता है

भैया–भाभी ही सब कुछ है

अपने तो भाग्य विधाता है।[2]

आख्यानिक गीति परम्परा के अन्तर्गत आपने पौराणिक कथानकों

को अपने काव्य का विषय बनाया है। गीध जटायु और रावण युद्ध का यह चित्र हमारे मन को आन्दोलित कर देता है। कवि की 'सुकर्म से सुगति' शीर्षक कविता की ये पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

जिसे जो मिली गति करम से मिली है।

परोपकार की कितनी सुन्दर गली है।

× × ×

सीता ने करुण स्वर में जब राम को पुकारा

हम पर विपत्ति पड़ी है, दे दो कोई सहारा

जैसे ही जटायु ने सीता की सुनी बानी

बानी को समझकर ही रघुकुल की नारि जानी

निश्चय कोई निशाचर सीता को लिये जाता

अन्याय सहन मुझसे होगा नहीं विधाता

खबरदार हो कौन छलिया छली है?

परोपकार की कितनी.................।[3]

श्री नन्दराम शर्मा जनपद के अच्छे साहित्यकार हैं। इनके सम्बन्ध में श्री शंकर दयाल शास्त्री भू0पू0 संस्कृत प्रवक्ता गाँधी महाविद्यालय उरई ने कहा है–"शर्मा जी ने धर्म के तत्वों को बड़े मनोरंजक ढंग से समाज के तहत अपने गीतों के माध्यम से रखा है कुछ पौराणिक गाथाओं को भी गीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।"[4]

कवि नन्दराम शर्मा ने अपने काव्य में पुराने आदर्शों को नया रूप देकर मानव जाति के लिये सुग्राह्य बना दिया है। सत्संग भजन एवं इन्द्रिय संयम पर बल दिया है। काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि को जीवन से सर्वथा

त्याज्य बताया है जो हमारे मनीषियों ने इन्हीं को त्यागने पर बल दिया था। कवि के ये संत विचार प्रशंसा के योग्य है।

गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज'

गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज' उरई तहसील के उन साहित्यकारों में से एक हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी साहित्य के क्षेत्र में अपना स्थान बनाते गये। इन्होंने अपनी लेखनी के द्वारा राष्ट्रीय सामाजिक तथा यथार्थवादी दृष्टिकोण रखते हुए समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया है। इसी दिशा को बढ़ाते हुए गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज' ने साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश किया।

गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज' का जन्म 26 फरवरी सन् 1934 ई0 को जालौन जनपद के मुख्यालय उरई में हुआ था। इनके पिता श्री भगवती शरण सक्सेना एक अच्छे साहित्यकार थे। पिता के यही गुण पुत्र गोपाल कृष्ण पंकज जी को विरासत में मिले थे। आपकी माता श्रीमती रामकिशोरी सक्सेना धार्मिक विचारों वाली महिला थी। माता–पिता के अच्छे संस्कार बालक पंकज पर पड़े। यही कारण है कि आज वे आदर्श शिक्षक, अच्छे विचारक एवं एक अच्छे साहित्यकार हैं। आपका विवाह श्री मनमोहन जौहरी की सुपुत्री श्रीमती रमा सक्सेना के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में श्रीमती नम्रता सक्सेना एवं श्रीमती अनामिका सक्सेना है। गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज' के छोटे भाई श्री रामजी कुमार सक्सेना हैं। वे भी अच्छे साहित्यकार हैं।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टर मीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1951 एवं 1953 ई0 में डी0ए0वी0 इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1955 ई0 में बी0ए0 की परीक्षा डी0वी0 डिग्री कालेज उरई से उत्तीर्ण करने के पश्चात् आपने डबल एम0ए0 अंग्रेजी विषय से ही 1959 ई0 में इलाहाबाद

विश्वविद्यालय इलाहाबाद से एवं 1961 ई० में कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर से उत्तीर्ण की।

आपका पहला गजल संग्रह 'दीवार में दरार है' जिसके पृष्ठों की संख्या 95 है। प्रकाशक– मेघा बुक्स, नवीन शाहदरा दिल्ली 110032 है। राष्ट्रीय स्तर की सभी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताएँ, गज़लें, चतुष्पदियाँ, रेडियो, व दूरदर्शन पर बोलने वाले राष्ट्रीय कवि सम्मेलनों में भागीदारी रही है।

आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

वक्त आता है, सताता है, गुजर जाता है

बेवजह आदमी हालात से घबड़ाता है।

आप खुशियों के भिखारी है मगर अपने को

रंज का जश्न मनाने में मजा आता है।

राजा–बेटा है मेरा दर्द अगर रूठा भी

सुबह का भूला हुआ शाम को घर आता है।

मेरा वजूद नहीं बन्द किताबों की तरह

मैं तो अखबार हूँ जो सबको नजर आता है।

यार बाजी का गुनहगार है 'पंकज' मेरा

कृष्ण के दर पै, सुदामा सा बिखर जाता है।[5]

कवि का ईश्वर मन्दिर–मस्जिद में नहीं है। उसका ईश्वर तो उसका स्वयं का गम है। इसी सन्दर्भ में आपकी यह चतुष्पदीय रचना दृष्टव्य है–

मेरी साँसें नील गगन है

टूटे सपने वृन्दावन है

मन्दिर–मस्जिद में क्या रखा

मेरे ईश्वर मेरे गम हैं।[6]

आपकी यह रचना भी दृष्टव्य है–

श्रीराम बोलना ही सियासत में आ गया

अब तो खुदा का घर भी अदालत में आ गया।

× × ×

रघुकुल का क्या करेगी बदज़ात मंथरा

बनवास अब तो राम की आदत में आ गया।[7]

'दीवार में दरार हैं कृति के सम्बन्ध में बालस्वरूप राही के ये शब्द–

'दीवार में दरार है' गोपाल कृष्ण पंकज का पहला गजल संग्रह है जो बड़ी देर से प्रकाशित हो रहा है। कहना चाहिये यह उनकी जीवन भर की कमाई है।

× × ×

'दीवार में दरार है' एक प्रौढ़ कवि की मुख्यतया गज़लों का महत्वपूर्ण संग्रह है जो हिन्दी गजल को एक मूल्यवान माना जा सकता है।[8]

गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज' यथार्थवादी कवि है। आपकी रचनाओं में समाज एवं धर्म का वास्तविक चित्र प्रस्तुत किया है। गम ही कवि का ईश्वर है, यह उनका नया दृष्टिकोण है। भाषा सरल सरस एवं प्रवाहमयी है। जनपद के साहित्यकारों में आपका विशिष्ट स्थान है।

मिश्रीलाल आर्य

हास्य व्यंग्य के बहुचर्चित साहित्यकार मिश्रीलाल ने अपने तीखे व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक विषयों पर करारा प्रहार किया है। उनके इन

व्यंग्यों पर कोई क्या कहता है इसकी परवाह वह नहीं करता है। शुद्ध सात्विक प्रकृति का यह व्यंग्यकार अपने सिद्धान्तों पर अटल व अडिग है।

मिश्रीलाल आर्य जी का जन्म 14 अगस्त सन् 1937 ई0 में किरावली जनपद आगरा में हुआ था। आपके पिता श्री मोतीराम आर्य तथा माता का नाम श्रीमती भगवती देवी है। आपका विवाह गोबरा जिला मथुरा निवासी श्री बंगाली बाबू की सुपुत्री श्रीमती शुकुन्तला देवी आर्य के साथ हुआ। आपके तीन पुत्र एवं चार पुत्रियाँ है। पुत्रों में देवेन्द्र, भूपेन्द्र व योगेन्द्र है तथा पुत्रियों में श्रीमती सर्वेश, श्रीमती सुमन, कु0 ममता व कु0 संगीता हैं।

आप सीधे–साधे एवं साफ लहजे में बात करना पसन्द करते हैं। रंग गोरा–चेहरे पर हल्की मूँछ, इस उम्र में भी सुगठित शरीर कवि के व्यक्तित्व को निखार देता है।

आपने हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त की। यह परीक्षा सन् 1950 में जी0एस0 के0 इण्टर कालेज किरावली आगरा से उत्तीर्ण की थी। आर्य समाज की दीक्षा लेने के कारण आपका उपनाम 'आर्य' हो गया। सम्प्रति आप उरई नगर में अपनी सोने-चाँदी की दुकान किये हुए हैं। आप सन् 1979 ई0 से उरई नगर में अपने निज निवास में रह रहे हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा श्री शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' जी से प्राप्त हुई। अभी तक आपका कोई भी रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। अप्रकाशित रचनाओं में सैकड़ो व्यंग्य तथा चतुष्पदियाँ है। यही व्यंग्य और चतुष्पदियाँ कवि सममेलनों में अच्छा खासा रंग जमा देती हैं। साहित्यकार के कहने का ढंग भी निराला है।

आपकी हास्य व्यंग्य से भरपूर कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

ये देश आकाओं का है कुछ भी करे इनको सब कुछ है गवारा

इनका ही पेट नहीं भरता है क्या खयाल रखेंगे हमारा।

देश में दूध की नदियाँ फिर से बहेंगी क्योंकि नेता चरने लगे है चारा।

एक टेम्परेरी आदमी ने पढ़े लिखे परमानैन्ट को फटकारा

इसलिये सारे जहाँ से अच्छा ये इंडिया हमारा।

हम बकरियाँ है इसकी ये भेड़िया हमारा।[9]

आपका यह व्यंग्य उन नेताओं के लिये है जो वोट लेकर संसद में पहुँच जाते है किन्तु जनता की समस्याओं के निराकरण में कोई दिलचस्पी नहीं रखते हैं–

मैंने एक नेता से कहा, कुछ जनता का भी ध्यान करो।

अपने ही घोंघा मत भरो उनके भी संकट दूर करो।।

वो बोला जनता के संकट दूर करना मेरे विभाग में कौन आवै।

हनुमान चालीसा में तो साफ लिखा है, संकट ते हनुमान छुड़ावै।।[10]

आज की संस्कृति पर विदेशी संस्कृति का पूरी तरह से आक्रमण हो चुका है और यह संस्कृति भारतीय संस्कृति पर हावी होती जा रही है। कवि क्या कर सकता है यह तो वह नही जानता है, किन्तु उसका असली चित्र खींचने में वह सफल रहा है। यथा–

अरे इनकी आरती उतारो कि हिन्दुस्तान में हिन्दी दिवस मना रहे हैं।

मैंकाले के बाप हैं अपने को सच्चा गाँधीवादी बदला रहे हैं।

आज की सीता, सावित्री को देखो

पेन्ट पहन कर क्लब में मटक रही हैं।

'ब्यूटी पार्लर' की खूँटी पर कल्चर लटक रही है।[11]

कवि ने बहुत पहले 'हिम्मत वाला' फिल्म देखी थी। उस फिल्म की

नायिका श्री देवी थी। कवि को वह नायिका भा गयी थी इस कारण वह स्वप्न में भी उसे याद करने लगा–

सपने में मेरी बात भई
सारे घर के सो गये, जब आधी रात भई।
का कहूँ और कैसी गुजरी, कछू नई जात कई।।
श्री देवी सपने में आकर के मुस्काय गई।
कहाँ गई मेरी श्रीदेवी क्यों तरसाय गई।।
मिश्री लाल यह सुनखें घर वाली नै लात दई।।[12]

वर्तमान समय में लोग असुरक्षा की भावना से ग्रसित है। एक तो दबंगो का ही खौफ सताता रहता है लोगों को, दूसरा अगर उन गुंडो का कत्ल हो जाता है तो प्रशासन के झमेले में फँसने का डर रहता है। चूहा बिल्ली और नेवला के माध्यम से कवि ने कितना सटीक व्यंग्य प्रस्तुत किया है–

चूहे गाँव छोड़कर के जंगल को भग रहे थे।
नेवला राजा उनसे भगने का कारण पूछ रहे थे।
चूहे बोले दो–तीन बिल्लियों का कत्ल हो गया है
नेवला बोला आपको तो फिर बहुत आराम हो गया है।
चूहे बोले तुमको आराम की पड़ी है,
हमें तो अपनी जान के लाले पड़ रहे हैं।
क्योंकि कि पुलिस वाले हम पर शक कर रहे हैं।[13]

कवि मिश्रीलाल 'आर्य' ने व्यंग्य विधा को अपनाकर इस विधा को समृद्ध बनाया है। कवि मंचो पर अपनी साधारण बोलचाल की भाषा में अपना व्यंग्य अपने खास लहजे के साथ प्रस्तुत करते हैं। कविगण एवं श्रोता उनकी

इन रचनाओं का भरपूर आनन्द उठाते हैं। व्यंग्य के साथ वे लोगों की कई समस्याओं से रूबरू कराते हैं।

विजय कुमार पाण्डेय
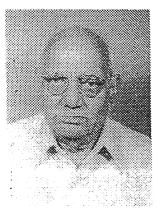
विजय कुमार पाण्डेय जी जालौन जनपद के ऐसे साहित्यकार हैं जिनका बाल्यकाल साहित्य प्रेमियों के बीच से गुजरा। पिता श्री झन्नीलाल पाण्डेय ऐसे साहित्य प्रेमी थे जो अपने निज निवास उरई में कवि गोष्ठी के द्वारा मूर्धन्य विद्वानों, साहित्यकारों को बुलाते थे और काव्य पाठ सुनते थे। इनके यहाँ महान साहित्यकार सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला,' मैथिलीशरण गुप्त, हरिवंशराय 'बच्चन' जैसे कलाकारों ने उरई को अपने काव्य पाठ के द्वारा धन्य बनाया। इन सब का प्रभाव विजयकुमार पाण्डेय जी पर भी पड़ा।

विजय कुमार पाण्डेय का जन्म 27 नवम्बर सन् 1935 ई०को उरई में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री झन्नी लाल पाण्डेय तथा माताजी का नाम श्रीमती फूलकुँवर पाण्डेय था। आपका विवाह ग्राम व पो0 सूपा (महोबा) निवासी पं0 श्री बृजलाल त्रिवेदी की सुपुत्री श्रीमती पुष्पा पाण्डेय के साथ हुआ। आपकी पाँच संतानों में चार पुत्र व दो पुत्रियाँ है। सबसे बड़े पुत्र श्री अवधेश कुमार पाण्डेय का विवाह श्रीमती सुशीला के साथ हुआ। इनके दो पुत्र रोहित कुमार पाण्डेय व अभिषेक कुमार पाण्डेय है। कवि के दूसरे पुत्र श्री महेश कुमार पाण्डेय हैं जिनका विवाह श्रीमती ममता पाण्डेय के साथ हुआ। इनकी दो पुत्रियाँ कु0 शिवांगी पाण्डेय व कु0 स्वर्णिम पाण्डेय व एक पुत्र अनमोल पाण्डेय है। आपके तीसरे पुत्र अविनाश पाण्डेय है जिनका विवाह

श्रीमती मधु पाण्डेय के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री कु0 पलक है। कवि के चौथे पुत्र शैलेन्द्र पाण्डेय हैं। इन्हें राजनीति और साहित्य में विशेष रुचि है। कवि की दो पुत्रियों में बड़ी पुत्री श्रीमती शैलजा दुबे कानपुर निवासी शरभ दुबे को ब्याहीं गयीं हैं। इनकी दो संतानों में एक पुत्र संचित दुबे तथा पुत्री नेहल दुबे है। आपकी दूसरी पुत्री श्रीमती पद्मजा बाजपेयी, श्री प्रदीप बाजपेयी छत्तीसगढ़ को ब्याहीं है। इनकी एक पुत्री कु0 रिमझिम है। कवि के सभी पोते–पोतियाँ वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आपने बी.ए. तथा एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की है। आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1953 तथा 1955 ई0 में गाँधी इण्टर कालेज उरई एवं डी0ए0वी0 कालेज, उरई से उत्तीर्ण की। आपने समस्तीपुर पटना (बिहार) से बी.ए. की परीक्षा सन् 1961 में उत्तीर्ण करने के उपरान्त सन् 1964 ई0 में लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा अपने पिता श्री झन्नीलाल जी पाण्डेय से मिली।

आपकी विद्यार्थी जीवन की एक घटना जो कवि ने साक्षात्कार के समय मुझे बतायी–विद्यार्थी जीवन में जब ये साइकिल से अपने घर आते थे। हर रविवार को इनके दरवाजे के सामने हाट लगी रहती थी। उस रविवार को एक सब्जी वाले ने दरवाजे के ठीक सामने अपनी सब्जी की टोकरी रख ली तो इन्होंने गुस्से में उसकी टोकरी फैंक दी। वह सब्जी वाला बोला– "हम तो बरगद की छाया में बैठे थे। हमें क्या मालूम इस बरगद में भी काँटे उग आये हैं।" तब से कवि का जीवन बदल गया और इस तरह की घटना जीवन में फिर कभी नहीं आयी।

पाण्डेय जी की अभी तक कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई है। अप्रकाशित कृतियों में 'आनन्द शतक' 'गीतिका' (काव्य संग्रह) तथा 'दिव्या', 'प्रेममिलन', 'यादें' इनकी कहानियाँ है।

कवि की कुछ रचनाएँ वर्तमान राजनीति, शृंगार, जीवन एवं रहस्य से परिपूर्ण है। इन्हीं विषयों से सम्बन्धित कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

कैसे–कैसे वायदे और कैसे–कैसे दाँव।

दिल्ली से हाथी चला, चूहा पहुंचा गाँव।।

फूलन फूली फिरत है, देख पुलिस हुड़दंग।

छुट्टा सूचीबद्ध है, बिन सूची के बन्द।।

फूल कँटीले हो गये, कर काँटन कौ संग।

चन्दन विष व्यापन लगो, ऐसौ परो कुसंग।।

राजनीति के खेल भी, हैं कैसे बेमेल।

पूँछ हिलै कुर्सी मिलै, जीभ हिले पै जेल।।

माया की माया चली, परो राम से काम।

दुविधा में दोऊ गये, माया मिली न राम।।

रक्षक–भक्षक हो रहे, इस राज्य में आज।

कृष्ण चीर खींचत मिले, अब कौन बचावै लाज।।

नेता इम सह लेत हैं, वोटर की तकरीर।

नवल वधू सह लेते जिम, प्रथम मिलन की पीर।।[14]

कवि ने रहस्यवाद पर भी अपनी लेखनी चलायी है। आपकी कुछ रहस्यवादी पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

साँझ भई हंसा चले, अपने पंख समेट।

मान सरोवर में सजन, कल फिर होगी भेंट।।

जिन्दगी है परचा गणित का, गुणा भाग लगता है।

हासिल कुछ होता नहीं, बाकी सब बचता है।।

लाली पूँछत प्रात, साँची बोलो बैन।

हमें छोड़ तुम कित गये, कहाँ गँवाई रैन।।[15]

आपकी रचनाओं में श्रृंगार के दोनों पक्षों का अनूठा संगम है। आपकी श्रृंगार परक ये रचनाएँ बहुत ही अच्छी बन पड़ी हैं। कुछ रचनाएँ दृष्टव्य हैं–

आज तुम्हारी याद में, दिया हमारा संग।

होली अपनी हो गयी, बिन गुलाल बिन रंग।।

बिना तुम्हारे ये दिवस, ऐसे ही कट जात।

जैसे दिन गरमिन कटे, जाड़े जैसी रात।।

प्यार पंथ में परत है, अजब अनौखे फंद।

दर्शन चिन्तन मनन से, बाढ़त परंमानन्द।।[16]

कवि विजयकुमार पाण्डेय के साहित्य का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कवि में प्रतिभा विद्यमान है। इस प्रतिभा का वे सदुपयोग कर रहे हैं। वर्तमान में कवि घर पर ही साहित्य सृजन कर रहे हैं। आप जनपद की विभूति है। आप साहित्यकारों का भी सम्मान करते है। उनसे परिचर्चा करने पर आनन्द की प्राप्ति होती है।

यज्ञदत्त त्रिपाठी

महान साहित्यकार पं0 यज्ञदत्त त्रिपाठी जालौन जिले के चमकते हुए सितारे हैं, जिनकी लेखनी निर्झर के समान कल–कल करती हुई सरल भाव से बहती चली

जाती है। उसमें कोई रुकावट नही, यह धारा जबर्दस्ती नही बहायी गयी है वरन् भावों के अनुकूल स्वतः ही बहती दिखायी देती है। अबाध रूप से– बिना प्रयत्न के। नारी सम्बन्धी विषयों पर तो यह धारा इतनी निर्मल, इतनी पवित्र और इतनी शीतलता लिये हुए बहती है कि इस धारा में नहाने से दग्ध हृदय में शीतलता के छींटे पड़े बिना नहीं रहते है। 'तपस्या के प्रसून' खण्ड काव्य ऐसी रचना है जो कवि को सम्पूर्ण साहित्यकार बना देती है।

कवि यज्ञदत्त त्रिपाठी का जन्म 1 मार्च सन् 1938 ई0 को उत्तर प्रदेश के जालौन जनपद के मुख्यालय उरई नगर से 8 किमी0 दूर ग्राम ऐर में हुआ था। इनके पिता पं0 सियाकुमार त्रिपाठी धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे जो धार्मिक पुस्तकों के पठन–पाठन में उनका अधिकांश समय व्यतीत होता था। पिता के उत्तम संस्कार बालक यज्ञदत्त त्रिपाठी जी पर पड़े। आपकी माता का नाम श्रीमती अहिल्या देवी था। कवि यज्ञदत्त त्रिपाठी का विवाह जनपद जालौन के कुदारी निवासी स्व0 पं0 रामानुज शास्त्री की पुत्री श्रीमती कृष्णा देवी के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में श्रीमती कविता त्रिपाठी, नवनीत त्रिपाठी एवं सिद्धार्थ त्रिपाठी हैं। श्रीमती कविता त्रिपाठी बांसी जिला ललितपुर निवासी श्री शिवनारायण त्रिपाठी को ब्याही गयीं हैं। दूसरे पुत्र नवनीत त्रिपाठी जिनका विवाह श्रीमती मनोरमा त्रिपाठी के साथ हुआ। इनके दो पुत्र अमित तथा अभिषेक है। तीसरे पुत्र सिद्धार्थ त्रिपाठी है जिनका विवाह श्रीमती सविता त्रिपाठी के साथ हुआ। आपका एक पुत्र सौमित्र त्रिपाठी है।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव ऐर में हुई। जूनियर हाईस्कूल तक की शिक्षा डकोर से उत्तीर्ण करने के बाद स्नातक की शिक्षा उरई से उत्तीर्ण की। एल.एल.बी. की परीक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से

उत्तीर्ण की। सम्प्रति जनपद के प्रखर अधिवक्ता के रूप में विख्यात हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त, रामाधारी सिंह 'दिनकर' एवं महादेवी वर्मा जी से मिली।

आपकी प्रकाशित कृतियों में 'तपस्या के प्रसून' खण्डकाव्य है जो अप्सरा मेनका और महर्षि विश्वामित्र के पौराणिक कथा प्रसंग पर आधारित है। प्रकाशक– कविता प्रकाशन राठ रोड, उरई उ0प्र0 है। पृष्ठों की संख्या 122 है। अप्रकाशित कृतियों में 'विषघूँट', 'दुष्यन्त–प्रिया' एवं अन्य फुटकर रचनाएँ हैं।

'तपस्या के प्रसून' नारी बिडम्बना का चित्रण है। कवि के शब्दों में– ''तपस्या के प्रसून' का रचनाकाल अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष अथवा इसके आस–पास का समय रहा है। इस करण नारी 'तपस्या के प्रसून' का प्रमुख विषय बन गयी है।[17]

'तपस्या के प्रसून' खण्ड काव्य के माध्यम से पौराणिक कथा प्रसंग के आधार पर आधुनिक नारी के उत्पीड़न का कितना सुन्दर चित्र खींचा है। आधुनिक युग की प्रत्येक नारी की क्षुब्धता इन निम्न पंक्तियों से स्पष्ट हो जाती है। जब मेनका अपनी सखी से यह प्रश्न पूछती है–

हम कब तक चुपचाप सहेंगी
यह अपना उत्पीड़न ?
मर्यादा की पायल पहने–
नर्तकियों का जीवन
कब तक हमें बिताना होगा
बता उर्वशी रानी

कब तक नर को छूट रहेगी,

करने की मनमानी।[18]

कवि इन समस्याओं का समाधान भी सुझाता है। कवि उर्वशी के मुख से कहलवाता है–

अर्थ तन्त्र को कर में लेकर

जब तक हम न चलेंगी

तजकर गृह का कूप न जब तक

हम बाहर निकलेंगी।

तब तक नर्तन करना होगा

पुरुषों के इंगित पर

जब तक अपना बोझ न लेगी

नारी अपने ऊपर।।

निर्भरता का दोष बना, अवरोध हमारे पथ का।

इस कारण से रुका हुआ है, चक्र प्रगति के पथ का।।[19]

कवि ने नारी के समग्र जीवन पर सूक्ष्मातिसूक्ष्म दृष्टि डाली है। वर्तमान समाज में तलाक की समस्या, दहेज आदि की समस्याओं के कारण महिलाओं को एकाकी जीवन अपनाना पड़ता है तो वे अपना समय व्यतीत करने हेतु एवं आत्म निर्भरता के लिये या तो वह विद्यालयों में शिक्षिका बन जाती है या फिर किसी कार्यालय में नौकरी कर लेती है। नारी जब अपनी मेहनत और लगन के बल पर आगे बढ़ती है तो नर की विभिन्न मानसिक विकृतियां उसके पथ का रोड़ा बन जाती है। घर से बाहर पग रखने पर स्त्री अपवित्र हो जाती है ऐसा अधिकतर पुरुषों का विचार है। यही बात मेनका ने

भी सुनी है। वह शंका करती हुई कहने लगती है–

स्त्री पावन हुई अपावन

घर बाहर पग धरके?

मैं सुनती हूँ नारी बिगड़ी–

सदा स्वतन्त्र विचर के।।[20]

इस शंका को कवि उर्वशी के माध्यम से इस प्रकार दूर करता है–

जग में जिसने स्वतन्त्रता का अर्थ नही समझा है

पावस के पानी जैसा होकर स्वच्छन्द बहा है।

कूलों की सीमा में जिसने जीवन बाँध न पाया

मन की तीक्ष्ण धार पर चलकर तन जो साध न पाया

नारी हो वह अथवा नर हो, बिगड़ा ही करता है।

बिना अर्थ बहने वाला जल राहों में भरता है।।

कोई उसका गेह न होता न ही किसी को भाता।

इधर–उधर बहते–बहते ही जीवन व्यर्थ गँवाता।।

नारी–नर का भेद भुलावा, मिथ्या भ्रान्ति हमारी।

स्त्री पुरुष बिगड़ते दोनों होकर स्वेच्छा चारी।[21]

कभी–कभी नारी को ऐसा काम करना पड़ता है जो वह नहीं करना चाहती है या करने के लिये बाध्य होना पड़ता है। कोई उसके आन्तरिक भावों को नहीं समझता है उसके बाह्य सौन्दर्य को देखकर जग समझता है कि वह प्रसन्न है, खुश है। कमल के माध्यम से कवि ने नारी की इस विवशता को कितने सहज ढंग से उकेरा है–

हँसता हुआ निहार जलज को,

जग यह जान न पाया।

फँसी पंक में सहती कितने

कष्ट कंज की काया।

ऊपर से हँसने का अभिनय अन्तर में दुविधा है।

नही हमें यह भी कहने की स्वतन्त्रता–सुविधा है।।

फँसी पंक में पद्म देह सी हम सब की काया है।

अधरों की मुस्कान मृषा है, मिथ्या की छाया है।[22]

परतन्त्रता की बेड़ी में जकड़ी नारी के हृदय के उद्‌गारों को कवि ने मेनका के द्वारा इस रूप में व्यक्त किया है–

बेटी मुझे करना क्षमा, बेटी मुझे करना क्षमा।

कुछ भी न तुझको दे सकी, मैं मातृ पद की कालिमा।

मैं क्या करुँ मुझ पर स्वयं कोई न मेरा स्वत्व है।

सुरराज का आदेश ही– मेरा मृषा मातृत्व है।[23]

'तपस्या के प्रसून' खण्डकाव्य के माध्यम से कवि ने सुख–दुख की बड़ी अच्छी व्यंजना प्रस्तुत की है किसी का सुख कुछ है तो किसी सुख कुछ। कवि की ये पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

एक स्वरूप नहीं सुख–दुख का

सब अनुभूति प्रधान।

कहीं विलास सुखद लगता है

और कहीं बलिदान।।

सुखद आलसी को लगते हैं, सुप्त नयन निंदयारे।

कर्मठ कर्मशील का सुख हैं जग जाना भुनसारे।।

श्वान शृंगाल काग ग्रिद्धों का सुख आमिष–दुर्गन्ध।

इनका चित्त नहीं हर पाती, सुरभित सुमन सुगन्ध।।[24]

कवि रस और अलंकारों के साथ कविता में कल्पना को भी महत्वपूर्ण मानता है। कवि ने कल्पना का मानवीकरण करके उसके अस्तित्व को स्वीकारा है। पूर्ववर्ती कवियों ने भी कल्पना को कविता के लिये अति आवश्यक माना है। कल्पना की सुन्दर व्यंजना दृष्टव्य हैं–

रजनी का शृंगार चन्द्रमा, कविता का आभूषण।

तू है मेरी बहन कल्पना, कवियों का धन जीवन।[25]

वर्तमान समय में कई अविवाहित लड़कियाँ बच्चों को जन्म देकर कूड़ा–कचरा समझकर एकान्त निर्जन स्थान में फैंक आती हैं। कवि ने इस बात को 'तपस्या के प्रसून' काव्य के माध्यम से कितने सटीक ढंग से उभारा है–

पिता–माता अनेकों नित्य आकर

स्वयं को और शिशुओं को छिपाकर

यहां आये और तजकर गये हैं–

न मेरे हेतु अनुभव नये हैं।[26]

आपने नारी के समग्र जीवन का उसकी मर्मान्तक वेदना का और नारी उत्पीड़न का पर्दाफाश किया है। नारी के प्रति कवि की अनुभूति चरम तक पहुँच जाती है। निश्चित रूप से कवि इस प्रसंग को उठाने में सफल रहा है। उन्होंने जनपद जालौन को साहित्यिक रूप में 'तपस्या के प्रसून' खण्डकाव्य देकर जालौन को एक निधि प्रदान की है। यह कृति युगो–युगों तक आने वाले लोगों द्वारा पढ़ी जायेगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

कवि जीवन के निकट इतना पहुँचा हुआ प्रतीत होता है कि जीवन में

एक तरफ फूल है तो दूसरी तरफ काँटे। फूल और काँटो में कोई स्थायित्व नही है। यह संसार नश्वर है फिर भी व्यक्ति एक दूसरे से ईर्ष्याभाव लिये जीते रहते हैं। पतझड़ और बसन्त के माध्यम से कवि की सुन्दर कल्पना–

हँसा प्रसून झड़े पतझड़ के, सूखे पत्ते को निहार कर–
कहाँ गया वह हास–हरापन, कहाँ गयी वह सर–सर, मर–मर?
फूल! न पूछो किसने छीनी, मुझसे वह मेरी हरियाली।
आस–पास ही छिपी हुई है, शिशिर निगोड़ी जलने वाली।
प्रिय बसन्त के फूल न भूलो, ईर्ष्या–प्रगति साथ चलते हैं।
उनमें कुछ तुमसे जलते हैं, इनमें कुछ हमसे जलते हैं।।
फूलों को, कोमल पत्तों को, ताप–तुषार जला जाते है।–
किन्तु नहीं यह जलने वाले काँटो का कुछ कर पाते है।[27]

कवि बहुमुखी प्रतिभा का धनी साहित्यकार है। आपने बुन्देली भाषा में भी कुछ रचनाएँ लिखी हैं। बुन्देली भाषा में शीर्षक गीत– "ई कौ आय चन्द्रमा न ऊकौ आय चन्द्रमा" माध्यम से काव्य सृजन किया है–

कुमुदनी फूली, कहै, मेरौ आय चन्द्रमा
चपल चकोरी कहै, मेरौ आय चन्द्रमा
दोउन की पहुँच से, ऊँचौ आय चन्द्रमा
ई कौ आय चन्द्रमा न ऊकौ आय चन्द्रमा।[28]

ऐसी प्रतिभाएँ अथवा महापुरुष जो सार्वभौमिक परहित के लिये जन्म लेते है वे किसी एक के नहीं सबके हित के लिये जिनका निर्माण दूसरों के उपकार के लिये हुआ है वह किसी एक के लिये नही सबके हित के लिये जीते हैं। भले ही कुछ लोग ऐसा मानते रहें कि वे हमारे हैं। यदि इसे इस

प्रकार कहें कि ऐसे परहित जीवी विभूतियों को सभी अपना मानते है किन्तु सत्य यह हैं कि वे सभी के होते है किसी एक के नहीं।

यज्ञदत्त त्रिपाठी का 'तपोभूमि बुन्देलखण्ड' धारावाहिक का प्रसारण एवं आलेख नियमित रूप से आकाशवाणी में प्रसारित होते रहे हैं।

कवि अधिवक्ता है इस कारण इनके साहित्य में तार्किक शैली का प्रयोग हुआ है।

कवि यज्ञदत्त त्रिपाठी को कविता के हर क्षेत्र में सफलता मिली है किन्तु नारी के उत्पीड़न के विषय में यह सफलता चरम तक छू गयी है। आप नारी के पक्ष में खड़े दिखायी देते हैं। उनका काव्य पाठक के हृदय को आनन्द से भर देता है। यही कवि की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है तथा ख्याति का कारण बन जाती है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि कवि की कल्पना यथार्थ के धरातल को छू लेती है। कल्पना और यथार्थ एक दूसरे से आलिंगनबद्ध होकर एकाकार हो जाते है। आगे भी जनपद को कितना दे पायेंगे यह तो समय ही बतायेगा।

रूपनारायण शुक्ल

साहित्य सरोवर में कभी—कभी ऐसे कमल खिल उठते हैं जो अनायास ही मन को अपनी ओर खींचे बिना नहीं रहते है। प्रातः काल की स्वर्णिम आभा में यह और अधिक सुवासित हो उठता है। ऐसे ही कमलों में एक कमल रूपनारायण शुक्ल है जिन की लेखनी साहित्य सरोवर में लोल—लहरियाँ तट चूमती बड़ी भली प्रतीत होती हैं। रूपनारायण

शुक्ल एक श्रेष्ठ गीतकार हैं।

कवि रूपनारायण शुक्ल का जन्म 5 अप्रैल सन् 1939 ई0 में ग्राम उमरा रसूलपुर (कुड़नी) घाटमपुर (कानपुर) में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री भगवान दीन शुक्ल एवं माता का नाम श्रीमती जयदेवी शुक्ला था। आपका विवाह बड़ा बाजार कालपी निवासी श्री शिवनन्दन दत्त त्रिपाठी की सुपुत्री श्रीमती पार्वती देवी शुक्ला के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में एक पुत्र था तथा दो पुत्रियाँ हैं। भाग्य की बिडम्बना कहें या ईश्वर का कड़वा मजाक आपका इकलौता पुत्र डॉ0 दिवाकर शुक्ल असमय ही मृत्यु के मुख में चला गया। कवि ने इस असहनीय आघात को धैर्य के साथ सहन किया। आपकी बड़ी बेटी श्रीमती रश्मि त्रिवेदी हिन्दी प्रवक्ता, गाँधी इण्टर कालेज सिंधौली (सीतापुर) का विवाह श्री देवेन्द्र कुमार त्रिवेदी के साथ हुआ। इनकी तीन संतानों में कु0 निधि, शौर्य एवं ऐश्वर्य हैं। कवि की दूसरी पुत्री श्रीमती अपर्णा मिश्रा अंग्रेजी प्रवक्ता, जी.जी.आई.सी. (हमीरपुर) का विवाह श्री अरविन्द कुमार मिश्र के साथ हुआ। इनके तीन पुत्र मयंक, प्रशांत एवं शशांक हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1935 ई0 में व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की। इण्टरमीडिएट की परीक्षा भास्करानन्द इण्टर कालेज नरवल (कानपुर) से सन् 1957 ई0 में उत्तीर्ण करने के उपरान्त बी.ए. की परीक्षा सन् 1959 ई0 में डी.ए.वी. कानपुर (आगरा विश्वविद्यालय) से उत्तीर्ण की। सन् 1966 ई0 में एम.ए. भूगोल की परीक्षा एस.डी. कालेज कानपुर से उत्तीर्ण की। 1961 ई0 में आपने एल.टी. की परीक्षा डी.ए.वी. कानपुर से उत्तीर्ण करने के पश्चात् शिक्षक पद पर नियुक्त हो गये। आप 1965 ई0 से 1999 ई0 तक कोड़ा जहानाबाद (फतेहपुर) में कार्यरत रहकर यहीं से सेवा निवृत्त हुए। वर्तमान मे कवि अपने निज

निवास 595, पुराना रामनगर, उरई में निवास कर रहे हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा दामूपुरवा (हमीरपुर) में घी लेने पर पति–पत्नी में झगड़ा होने पर वही से 'उनका घी' कविता लिखकर शुरुआत की।

आपका अभी तक कोई काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपकी अप्रकाशित कृतियों में 'मँहगाई और किसान' स्टपनी, रफूगर (लेख) आदि हैं।

कवि समाज का दृष्टा होता है। अधिकतर लोग अपने दरवाजे पर 'स्वागतम्' लिख देते है। यह 'स्वागतम्' शब्द क्यों लिख दिया जाता है? इस पर आपकी ये रचना दृष्टव्य है–

सभी जानते हैं खुशियों में गम छिपा है

सभी मानते है प्रकाश में तम छिपा है

नैराश्य न हो जाये जीवन में

इसीलिये हर द्वार पर स्वागतम् लिखा है।[29]

इस क्षण भंगुर संसार में अपने रूप सौन्दर्य पर गर्व करना व्यर्थ है क्योंकि खिला हुआ फूल भी एक दिन मुरझाकर अवनि खण्ड में गिर जाता है। यही हाल मानव जीवन में रूप सौन्दर्य का है। कवि की यह कविता इसी ओर इंगित करती है–

मत अपने पर फूल–फूल खिला हुआ सौन्दर्य शाम तक ढ़ल जायेगा।

रोज न होगी मौसम की रंगीन बहारें रोज न होंगी पूनम की उजयाली रातें।

पावस की काली रजनी से छूट न पीछा जायेगा

मत अपने पर..........।[30]

कवि ने अपने जीवन में बहुत आघात सहे हैं। अब छोटे आघात उसके लिये नगण्य है। वह कह उठता हैं–

जग चाहे जितने दे दे आघात मुझे

मैं आघातों की सूची नहीं बनाऊँगा

आदि काल में जब प्रलय हुआ

केवल मनु योगी था बचा हुआ।।

उस पर निर्जनता का आघात हुआ

तब वसुधा पर जीवन का प्रात हुआ

ये है जग जीवन के सृजन हार,

इन आघातों पर श्रद्धा के सुमन चढ़ाऊँगा।।

जग चाहे जितने...................... ।[31]

कवि हमेशा प्रचार–प्रसार तथा गोष्ठियों से दूर रहा है। उन्होंने कभी अपने नाम का प्रचार नहीं किया। अपने मन के उद्‌गारों को कविता का रूप दे दिया है। कदाचित् जीवन के नैराश्य को आँसुओं के रूप में न निकालकर कविता के रूप में अपनी व्यथा को उजागर किया है। उनकी काव्य रचना में संसार की नश्वरता एवं उनकी अपनी मौलिक उद्‌भावनाएँ व्यक्त है। संघर्ष शीलता एवं मृदुभाषिता दोनों का मणिकांचन संयोग आपके जीवन में देखने को मिलता है। कवि वर्तमान में काव्य साधना में रत है। देखना है आप हिन्दी साहित्य में कितना नाम रोशन कर पाते हैं।
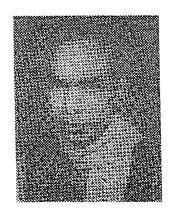
योगेश्वरी प्रसाद 'अलि'

''बुन्देलखण्डान्तर्गत प्रसिद्ध नगर महोबा के ऐतिहासिक परिवेश में श्री अमरजू देव का नाम अपना गौरवपूर्ण स्थान रखता था। कालान्तर में इसी कायस्थ परिवार के वंशज बाबूराम प्रसाद जी श्रीवास्तव आज

से लगभग 125 वर्ष पूर्व उद्दालक ऋषि की तपोभूमि उरई में असिस्टेंट इंजीनियर पी.डब्ल्यू.डी के पद पर आये और यहीं बस गये। इनके पुत्र बाबू शम्भूदयाल जी श्रीवास्तव पुलिस विभाग में थानेदार थे जिनका विवाह उरई निवासी बाबू दुर्गाप्रसाद ठेकेदार की पुत्री श्रीमती लक्ष्मीदेवी से हुआ था। मुंशी प्रभुदयाल श्रीवास्तव इन्हीं के पुत्र थे। मुंशी जी के घर में नौ पुत्र और पाँच पुत्रियों ने जन्म लिया केवल चार पुत्र ही जीवित रहे। सभी पुत्रियों का निधन हो गया। मुंशी जी अपनी दोनों छोटी बहनों (सुशीला एवं गिरिजा) को ही पुत्री मानते थे।[32]

'सन् 1919 के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मुंशी जी सरकारी सेवा को ठुकराकर झाँसी से उरई आये और आर्य समाज की स्थापना करके प्रधान बने। वैदिक शिक्षण संस्थाओं के संस्थापकों में भी आपकी प्रमुख भूमिका थी। विधि की बिडम्बना ऐसी हुई कि असमय में ही मुंशी जी के ज्येष्ठतम् पुत्र श्री विश्वनाथ प्रसाद जी 'अविकल' का देहावसान हो गया। मुंशी जी इस आघात को सहन न कर पाये और वे पक्षाघात के शिकार हो गये। सन् 1958 में इनका भी स्वर्गवास हो गया। अभी चार–पाँच वर्ष पूर्व मुंशीजी के द्वितीय पुत्र श्री ओंकार प्रसाद श्रीवास्तव भी अपना भरा पूरा परिवार छोड़कर चल बसे।[33]

इनके तीसरे पुत्र श्री तेजेश्वरी प्रसाद श्रीवास्तव प्राचार्य के पद पर राजकीय विद्यालय अशोकनगर म0प्र0 में सेवारत रहे जो अब अवकाश पा चुके हैं। वहीं उनकी पत्नी कुसुम श्रीवास्तव वरिष्ठ प्रवक्ता के रूप में सेवा रत रहीं। बाबू ओंकार प्रसाद श्रीवास्तव का परिवार मुंशी जी के चौथे पुत्र श्री योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' द्वारा कृष्णनगर स्थित पैतृक भवन, उरई में पल्लवित हो रहा है।[34]

मुंशी जी के कनिष्ठ पुत्र श्री योगेश्वरी 'अलि' हैं। जिन पर उनकी ममतामयी एवं धर्मपरायण माता श्रीमती राजकुमारी जी का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। संघर्ष एवं अभावों के अंक और आध्यात्मिकता के आँचल में पालित–पोषित कवि ने जब यथार्थ की धरती पर पैर रखा तो 15 वर्ष की अवस्था में ही पितृ स्नेह से वंचित हो गया। हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि श्री शिवराम 'मणीन्द्र' के सम्पर्क ने, जो कवि के मामा होते थे कवि को काव्य शास्त्र का ज्ञान एवं साहित्यिक अभिरुचि प्रदान की। इस प्रकार कवि के मानस में 'काव्य बीज' का प्रस्फुटन होने लगा, तथा कवि अब कवि सम्मेलनों में भी आने–जाने लगा।[35]

कविवर अलि का जन्म सम्बत् 1999 की बसन्तपंचमी तदनुसार 13 फरवरी सन् 1943 ई0 को उरई नगर स्थित पैतृक भवन में हुआ। आपने हाईस्कूल की परीक्षा डी.ए.वी. कालेज उरई से तथा इण्टर की परीक्षा गाँधी इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। आपने बी.ए., बी.एड. तथा एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षाएँ दयानन्द वैदिक महाविद्यालय, उरई से उत्तीर्ण कीं।

योगेश्वरी 'अलि' जी का विवाह जगम्मनपुर निवासी श्री उमाचरण श्रीवास्तव की पुत्री शशि प्रभा के साथ हुआ। कवि की चार संतानों में दो पुत्र गौरव व सौरभ तथा दो पुत्रियाँ ऋचा तथा गरिमा हैं।

जुलाई 1960 ई0 में महाकवि पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने कवि की रचनाएँ सुनने के पश्चात 'अलि' उपनाम दिया। सम्प्रति योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' स्थानीय डी.ए.वी. इण्टर कालेज, उरई में हिन्दी के प्रवक्ता हैं।[36]

अलि जी की भाषा परिनिष्ठित खड़ी बोली है। इसके साथ ही परम्परागत ब्रजभाषा पर भी समान अधिकार है। इनकी भाषा सरल सुबोध एवं बोधगम्य है।

इन्होंने गीत, नई कविता, गजल, छन्दोबद्ध आदि अनेक विधाओं में काव्य सृजन किया है। प्रत्येक क्षेत्र में आपकी लेखनी सरपट दौड़ रही है। साहित्यकार की रचना 'बात कर गये नयन' में उनका आशा एवं निराशा का द्वन्द्व पूर्ण रूप से दृष्टिगोचर होता है। यथा–

भटक न जायें नयन कहीं,

पथ पर दो दीप जला देना।

चलते–चलते क्यों मौन हुए

जाते–जाते कुछ कह देना।।

डूब रहा हूं बीच भँवर में

अब तो पार लगा देना।[37]

आपने अपने निराशा एवं कुण्ठा वाले भावों को कितने सटीक ढंग से उभारा है–

मुझे सुख कहीं भी न मिल सका, मैं दुखी हुआ तेरे प्यार से,

कोई पास मेरे न आ सका, मै ढका हुआ हूं गुबार से

मैं किसी गुनाह का राज हूं, जो न बज सका, मैं वो साज हूँ,

मुझे सुनके कोई करेगा क्या, मैं हूँ जख्मी अपने ही तार से।।[38]

आपकी रचनाओं में अलंकारों का अच्छा समावेश है। कविताओं में अलंकार जानबूझकर नही थोपे गयें है बल्कि अभिव्यक्ति के माध्यम से स्वतः ही समावेश होते गये हैं। यथा–

विकसे गुलाब से हैं कोमल कपोल चारु

वय की दमक मिली, रूप की लुनाई।[39] **(उपमा)**

गाल है गुलाब या कि छबीले सरोज है। (सन्देह)

कवि को दार्शनिक भावों के उभारने में भी सफलता प्राप्त हुई हैं–

यदि प्रिय हमसे मिलकर जाते

क्षणभर और अगर मिल जाते।

तो यह नयन–नयन से मिलकर

अंतस्तल की बात बताते।।[40]

'अलि जी' मानव मन के भावों को उभारने में सिद्धहस्त हैं। **इनके सम्बन्ध में पद्म भूषण डॉ0 रामकुमार वर्मा ने 'बात कर गये नयन' काव्य संग्रह के शुभाशीष शृंखला में लिखा है–**

''काव्य के उपवन में 'अलि' ने सुमनों के रस संचय से सुन्दर रचनाओं के जो निर्माल्य समर्पित किये हैं वे न केवल सौरभ सम्पन्न हैं, अपितु आकर्षक भी हैं। इस सुन्दर संग्रह में अनेक प्रकार की काव्य शैली के प्रयोग हैं जो अलि के काव्य ज्ञान और भाषाधिकार का परिचय देते हैं।''

कवि योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' कविता में रस, छन्द अलंकारों के प्रयोग में सिद्धहस्त तो हैं ही, इसके साथ भावानुकूल भाषा के शिल्पी भी हैं। आपने अपनी रचनाओं में विविध भावों को भरकर काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। आपकी काव्य रचना सतत् चल रही है। देखना है आप जनपद को अपनी प्रतिभा के माध्यम से कितना आगे बढ़ाते हैं यह कहना कठिन है।

परमात्मा शरण शुक्ल 'गीतेश'

मधुर कंठ, कोमल भाषा, गेय रचना के रचनाकार परमात्माशरण 'गीतेश' ऐसे स्वनाम धन्य कवि है जिन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से दूर–दूर तक अपना झंडा फहराया है। काव्य गोष्ठियों में आपकी उपस्थिति से हृदय तन्त्री निनादित हो उठती है। आप अपनी मधुर आवाज से गीतों के माध्यम

से समा बाँध देते है। इसी कारण आपको 'गीतों का राजकुमार' कहा जाता है।

परमात्माशरण शुक्ल 'गीतेश' का जन्म 31 मार्च सन् 1943 ई0 को जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में हुआ था। आपके पिता स्व0 पं0 गौरीशंकर शुक्ल एवं माता स्व0 श्रीमती काशीबाई शुक्ल थी। आपके पिता ग्राम धन्तौली (जालौन) के निवासी थे। पिता उरई में आकर बस गये थे। आपने प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक विद्यालय पाठकपुरा उरई से उत्तीर्ण की। सन् 1956 ई0 में डी0ए0वी0 कालेज, उरई से जूनियर हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने हाईस्कूल एवं इण्टर मीडिएट की परीक्षाएँ इसी कालेज से क्रमशः सन् 1958 एवं 1960 ई0 में उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1962, 1964 एवं 1967 ई0 में बी0ए0, एम0ए0 एवं बी0एड0 की परीक्षाएँ दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण कीं। इसके बाद आप गाँधी इण्टर उरई में प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए। वर्तमान में प्रवक्ता पद से सेवानिवृत्त होकर लेखन, चिन्तन व विचारों के प्रचार–प्रसार में रत हैं।

आपका विवाह मानिक चौक झाँसी निवासी स्व0 पं0 लालताप्रसाद गोस्वामी की सुपुत्री श्रीमती सीता शुक्ला के साथ हुआ। आपकी चार सन्तानों में तीन पुत्र एवं एक पुत्री है। आपकी पुत्री श्रीमती सुनन्दा गोस्वामी का विवाह बालाघाट (म0प्र0) निवासी श्री सलिल गोस्वामी जी के साथ हुआ। कवि के पुत्र रत्नों में अमित शुक्ल, मनीष शुक्ल एवं विशाल शुक्ल है।

साक्षात्कार के समय आपने अपने बचपन की एक घटना सुनायी– "मैं तैरना नहीं जानता था बाल बुद्धि में न जाने कैसी उमंग उठी और यमुना नदी में कूद गया और ईश्वरीय कृपा से बच भी गया।"

आपको लेखन की प्रेरणा अपनी जन्मदात्री माता स्व0 श्रीमती काशीबाई

शुक्ल से प्राप्त हुई।

अभी तक आपके सभी काव्य संग्रह अप्रकाशित है। आपकी फुटकर रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपके अप्रकाशित ग्रंथों में– 'उपहार', 'उपवन', 'अनुभूति के स्वर', 'चाँदनी में' एवं प्रबन्ध काव्य 'सीता कथा' (घनाक्षरी) छन्दों में सीता के बनवास का आख्यान है।

आपका उपनाम 'गीतेश' सन् 1962 ई0 में सरस्वती साहित्य परिषद सीपरी झाँसी द्वारा प्रदान किया गया।[41]

आपकी रचनाएँ समसामायिक विषय पर आधारित है। स्वयं कवि को जब कभी ऐसे संकट आये है तो धैर्य धारण करने में ही सारे संकट निपटते जाते हैं। आपने 'हालात बदलते जायेंगे' शीर्षक कविता के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये है–

संकट पर संकट आने दो, मेरे मन तनिक न घबराना।
तुम हिम्मत बाँधे रहे अगर, तो संकट भी टल जायेंगे।
मौसम की तरह जिन्दगी के, हालात बदलते जायेंगे।।
माना तुमने जितना पाया, उससे ज्यादा खो डाला है।
ठोकरें लगी दुर्दिन की तो, न किसी ने तुम्हें संभाला है।।
फिर भी मजबूत कलेजा कर, आँसू तुम कभी न बरसाना
ये आँसू मन को सींच–सींच, सपनों की फसल उगायेंगे।
हालात बदलते जायेंगे।[42]

सुख और दुख में कोई भेद नहीं है। यह अनुभव करने का अन्तर मात्र है। 'दुख का आभास नहीं होगा' शीर्षक कविता के माध्यम से कवि ने ये विचार प्रस्तुत किये हैं–

सुख–दुख में भेद नहीं कोई, अन्तर अनुभव करने का है।

दुख को सुख जैसा मानें तो, दुख का आभास नहीं होगा।।

मन कभी निराश नहीं होगा।।[43]

कवि कभी–कभी आनन्द में इतना विभोर हो जाता है कि अपने प्रियतम को पाने के लिये सिंधु से याचना करने लगता है कि ए सागर तू मुझे मेघ बना दे क्योंकि उसके प्रियतम गगन हो गये हैं। निम्नलिखित पंक्तियों में उनकी रहस्य भावना झलक उठती है।–

जो सौन्दर्य के तुम सुमन हो गये।

तुम्हें देखते हम नयन हो गये।

× × ×

बना दो मुझे मेघ ए सिन्धु तुम,

सुना है प्रियतम गगन हो गये।

है आनन्द शब्दों में कैसे कहें

हृदय बोलता, चुप बचन हो गये।[44]

इसी तरह की आपकी एक रचना 'कमाल है कुम्हार का' इसी रहस्यवादी भावना से ओत–प्रोत यह रचना दृष्टव्य है–

किसी को बनाया राजा किसी को भिखारी

किसी को बनाया पापी, किसी को पुजारी

खेल है ये रूप रंग माटी के निखार का

भाग्य है खिलौने का कमाल है कुम्हार का।[45]

पैंतीस वर्षो से कवि, कवि सम्मेलन में ससम्मान भाग लेता रहा एवं छतरपुर व लखनऊ आकाशवाणी, लखनऊ दूरदर्शन से आपकी अनेक रचनाएँ

प्रसारित हो चुकी हैं।

गीतेश जी ने कविता, छन्द, गीत, गजल एवं संस्मरण यात्रा वर्णन से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। जनपद में आप किसी परिचय के मोहताज नहीं है। अपना रास्ता स्वयं बनाते हुए अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर अपना मुकाम बना लिया है। आप जनपद के हिन्दी साहित्य में अपना गौरव पूर्ण स्थान रखते हैं। आप वर्तमान में हिन्दी सेवा में सतत् प्रयासरत् हैं। 'सीता कथा' अप्रकाशित प्रबन्ध काव्य आपकी ऐसी अनूठी रचना है जिसमें करुण रस साक्षात् सशरीर रूप में खड़ा दिखायी देता है। यह काव्य कवि को साहित्य में उच्च स्थान पर आसीन करने की क्षमता रखता है।

राजेन्द्र श्रीवास्तव लल्ला

प्रसिद्ध वकील एवं कवि राजेन्द्र लल्ला ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने जनपद में हिन्दी साहित्य की समृद्धि में विशेष योगदान दिया। आप महीने में एक निश्चित तिथि पर अपने आवास पर कवि गोष्ठी के माध्यम से साहित्यकारों को आमंत्रित करते है। आप प्रत्येक गोष्ठी में एक विषय रखते हैं जो समस्या पूरक होता है। उसी समस्या को कवि रचना बद्ध करके मंच पर प्रस्तुत करते हैं।

राजेन्द्र लल्ला का जन्म 24 जून सन् 1943 ई0 को जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री शिवराम 'मणीन्द्र' जनपद के उद्‌भट विद्वान एवं सुप्रसिद्ध कवि थे। इनके बाबा स्व0 श्री जगन्नाथ प्रसाद ग्राम बोहदपुरा (उरई) निवासी थे। आपकी माता का नाम

श्रीमती रामदेवी श्रीवास्तव था। कवि को साहित्यिक वातावरण घर से ही विरासत रूप में प्राप्त हो गया था। इसका प्रभाव बालक राजेन्द्र लल्ला पर भी पड़ा। राजेन्द्र लल्ला साहित्यकार के साथ–साथ साहित्य प्रेमी भी हैं। आपका विवाह आगरा निवासी श्री ओ.पी. श्रीवास्तव की सुपुत्री श्रीमती मंजू श्रीवास्तव के साथ हुआ। आपकी पाँच संतानों में तीन पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। आपके बड़े पुत्र का नाम धीरेन्द्र श्रीवास्तव है जिनका विवाह श्रीमती जया श्रीवास्तव के साथ हुआ। दूसरे व तीसरे पुत्र नवीन श्रीवास्तव एवं नितिन राज श्रीवास्तव है जो अभी अविवाहित हैं और उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आपकी पुत्रियों में श्रीमती अर्चना श्रीवास्तव है जो श्री शरद श्रीवास्तव जी को ब्याहीं गयीं है। इनकी संतानों में अर्पित श्रीवास्तव एवं कु0 अंशिया श्रीवास्तव है। दूसरी पुत्री श्रीमती वन्दना श्रीवास्तव है जिनका विवाह श्री मृदुल श्रीवास्तव के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री कु0 खुशी है।

आपने हाईस्कूल एंव इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ डी0ए0वी0 इण्टर कालेज उरई से क्रमशः सन् 1956 एवं 1958 ई0 में उत्तीर्ण कीं। सन् 1960 ई0 में बी.ए. की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई से उत्तीर्ण की। आपने एल.एल.बी. की परीक्षा सन् 1966 ई0 में उत्तीर्ण करके वकालत का व्यवसाय अपना लिया।

आप सामाजिक क्षेत्र में अखिल भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी परिवार परिषद के मंडलीय मंत्री, वी.के.एस. (पोस्ट ग्रेजुएट) म्यूजिक कालेज उरई के संस्थापक, डी.ए.वी. इण्टर कालेज, उरई के उप प्रबन्धक तथा बुन्देली परिषद भोपाल (मध्यप्रदेश) के जनपद संयोजक हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा पिता स्व0 श्री शिवराम 'मणीन्द्र' जी से प्राप्त हुई।

अभी तक आपका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहीं है। अप्रकाशित ग्रंथ 'कविता संग्रह' है।

आपकी विधा हिन्दी एवं उर्दू की मिश्रित गीतात्मक गजल एवं गजलात्मक गीत रचना है।

आप विभिन्न मंचों एवं संस्थाओं द्वारा सम्मानित हो चुके हैं।

आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

तेरे मुख पर श्याम घटा यदि न छाती,

तो शायद सावन का भरम न होता।

गम से नम हो आँख अगर फिर न रोती

तो शायद आँसू का जनम न होता।।[46]

कवि हमेशा ऐसे फूलों को अच्छा मानता है जो सारे जहाँ को अपनी महक से सराबोर कर दे। इसी प्रकार संघर्षों की आँधी में भी जो मुस्कराता रहता है, वही मनुष्य अपनी मंजिल तक पहुँचकर संसार में अपनी कीर्ति पताका फहराता है। विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से यह चतुष्पदी यहाँ दृष्टव्य है–

मधुवन में यूँ फूल खिला करते है कितने

मधुवन को महकाये वे फूल अलग होते हैं

संघर्षों की आँधी झकझोर दिया करती है

लेकिन फिर भी मुस्काएँ वे लोग अलग होते हैं।[47]

कवि रसिक मिजाज का व्यक्ति है यही कारण है कि उनकी रसिकता उनके साहित्य में भी परिलक्षित होती है। उनका यह रससिक्त शेर यहाँ दृष्टव्य है–

आदतन उसने कर दिये वादे।

गफलतन मैंने भी ऐतवार किया।।

वाती जो सरका दी तुमने, बुझते हुए दिये की।

उमर बढ़ा दी तुमने ज्यादा, जलते हुए हिये की।।[48]

कवि राजेन्द्र लल्ला को श्रृंगार रस में काफी सफलता मिली है। आपने अपनी महबूबा का चित्रण इस चतुष्पदी के माध्यम से किया है–

तुमको फ़नकार ने हसरत से बनाया होगा

फ़िर बड़े फ़ख्र से ये रूप सजाया होगा

तेरी तस्वीर का नूर कुछ और नहीं

ताजमहल घोल के रंगों में मिलाया होगा।।[49]

कवि राजेन्द्र लल्ला विरासत में मिली काव्य कला को अपनी प्रतिभा के माध्यम से निरन्तर आगे बढ़ाने में प्रयासरत है। हिन्दी में उर्दू मिश्रित शब्दों से भाषा में मिठास आ गयी है। यह मिठास जब श्रृंगार रस में डूबती है तो काव्य में सौन्दर्यता बढ़ जाती है। साहित्य के क्षेत्र में कवि का प्रयास अच्छा हैं।

धर्मनाथ प्रसाद

कवि, लेखक एवं संपादक धर्मनाथ प्रसाद जनपद के उन साहित्यकारों में से एक है जिन्होंने अपनी लगन एवं निष्ठा के बल पर अपना मुकाम हासिल किया है। आपने एक आदर्श अध्यापक के रूप में शिष्यों के बीच अच्छी लोकप्रियता प्राप्त की है।

धर्मनाथ प्रसाद जी का जन्म 22 फरवरी सन् 1946 ई0 को ग्राम लाकाटोला जिला सीवान (बिहार) में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री महाराज लाल एवं माता का नाम श्रीमती सरस्वती देवी था। आपका विवाह

ग्राम सैदपुर जिला सीवान (बिहार) निवासी स्व0 श्री अवध किशोर प्रसाद की सुपुत्री श्रीमती माधुरी देवी के साथ हुआ। आपकी पाँच सन्तानों में चार पुत्र एवं एक पुत्री है। आपके पुत्र संजीव कुमार, सन्तोषकुमार, अशोककुमार एवं मनीषकुमार है। आपकी पुत्री श्रीमती संगीता का विवाह श्री जितेन्द्र कुमार के साथ हुआ था किन्तु दुर्भाग्यवश श्री जितेन्द्रकुमार का स्वर्गवास हो गया। श्रीमती संगीता देवी का एक पुत्र आशुतोष कुमार है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1960 ई0 में एस.एस. एक्जामिनेशन बोर्ड पटना (बिहार) से उत्तीर्ण की। सन् 1962 ई0 में बिहार विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर से इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसी विद्यालय से आपने बी.ए. (आनर्स) की परीक्षा 1967 ई0 में उत्तीर्ण की। सन् 1972 ई0 में बी.एड. की परीक्षा एवं 1975 ई0 में एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षा कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर से उत्तीर्ण करके सनातन धर्म इण्टर कालेज, उरई में 1967 से हिन्दी प्रवक्ता पद पर कार्यरत रहे।

विद्यार्थी जीवन में ही आपको पिता जी की असामयिक मृत्यु से रूबरू होना पड़ा।

आपको लेखन की प्रेरणा आपके हिन्दी अध्यापक श्री जनार्दन प्रसाद द्विवेदी से प्राप्त हुई।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

आपकी अप्रकाशित रचना में 'वर्तिका' (काव्य संकलन) कवि की अनुभूतियों का कोष है। जिसमें इनके कुछ गीत एवं फुटकर रचनाएँ संग्रहीत हैं।

आपकी मुख्य विधा कविता, कहानी एवं निबन्ध है।

प्रत्येक कवि माँ भगवती का आराधन किसी न किसी रूप में करता है। धर्मनाथ प्रसाद जी ने भी पारम्परिक गीत के माध्यम से माँ सरस्वती की वन्दना की है जो यहाँ दृष्टव्य है–

ज्ञान की अविरल प्रभा दें, हम बनें उन्नत मना,
लीजिये हमको शरण में माँ! करें हम वन्दना।
विमल वीणा के स्वरों से, सृष्टि की नित लय मिले
गुंजरित हो स्वर बसंती, मधुप–पिक स्वर में मिले
प्रेरणा ले आपकी, ऋतुराज, है मधुमय बना
लीजिये हमको शरण में माँ! करें हम वन्दना।
मूल अभिधा तिमिर है, विश्व के संताप का
स्वयं मिट जाता जननि! पाकर अनुग्रह आपका।
क्षीर–नीर विवेक की, मिलती सतत् उद्भावना
लीजिये हमको शरण में माँ। करें हम वन्दना।[50]

आपकी एक रचना 'समाधि का दीप' के माध्यम से कवि की घनीभूति पीड़ा उमड़ पड़ी है। कवि की इस पीड़ा से सहज अन्दाजा लगाया जा सकता है कि कवि को जीवन में कितने कष्टों से गुजरना पड़ा है। अल्पायु में ही पिता ही छत्रछाया कवि के सिर से उठ जाने के बाद न जाने उसे कितनी रुकावटों का सामना करना पड़ा है। यही पीड़ा हृदय से पिघल कर कोरे कागज पर फैलती चली गयी–

मैं समाधि का दीप, विरह की व्यथा लिये,
दग्ध हृदय के सपनों को सुलगाता हूँ।
विजन देश में बन्धन का अभिशाप लिये

बुझी चिता की आग विकल दुहराता हूँ।

मुझे जलाना निज अंतर सुलगाना है,

सुधियों के शर झेल–झेल कर रोना है।[51]

इसी क्रम में कवि धर्मनाथ प्रसाद जी की ये रचना 'टूटी वीणा को क्यों कसते?'' के माध्यम से आपके हृदय के ये उद्‌गार–

मधु रंग रहा यह अंतर का

या मन का दीप बुझा हँसते?

यह व्यंग्य रहा है पीड़ा पर

पतझर में गीत कहीं बसते?

विष अमृत कहकर पी जाओ

विध्वंश नहीं कम हो सकता।

मधु मुकुलित चाँद सुधाकर हो

शबनम का दर्द न खो सकता।[52]

धर्मनाथ प्रसाद एक ऐसे कवि है जिनके मधुर गीतों की तान से हृदय झंकृत हो उठता है। भाषा शुद्ध खड़ी बोली एवं परिमार्जित है। भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। आपकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ एवं सामयिक लेख विद्वानों द्वारा प्रशंसित है।

शोभा श्रीवास्तव

आदर्श गृहणी, शिक्षिका एवं स्वरों की साम्राज्ञी श्रीमती शोभा श्रीवास्तव एक ऐसा व्यक्तित्व है जिनकी मधुर वाणी में स्नेह की धारा फूट पड़ती है। सादा जीवन उच्च विचार को इन्होंने अपने जीवन में समावेश कर

लिया है। इनकी वाणी में ऐसा जादू है कि कोई इनसे रुष्ट नही हो सकता है। कवयित्री का यह सादा जीवन दूसरों के लिये प्रेरणादायी है।

श्रीमती शोभा श्रीवास्तव का जन्म 2 अगस्त सन् 1946 ई0 में ग्राम कुरकुरू तहसील उरई में हुआ था। आपके पिता श्री लक्ष्मीप्रसाद श्रीवास्तव प्राइमरी पाठशाला कुरकुरू में अध्यापक के पद पर कार्यरत रहे। वर्तमान में वे अध्यापक पद से सेवा निवृत्त होकर घर में सुकार्य में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आपकी माता श्रीमती शान्ती श्रीवास्तव धार्मिक विचारों वाली महिला थी। पिता श्री लक्ष्मीप्रसाद श्रीवास्तव से इन्हें कविता लिखने की प्रेरणा मिली। आपका विवाह ग्राम छौंक (जालौन) निवासी श्री रामबहादुर श्रीवास्तव के सुपुत्र श्री ओमप्रकाश श्रीवास्तव के साथ हुआ। आपकी चार सन्तानों में दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। बड़े पुत्र राजू श्रीवास्तव का विवाह श्रीमती दीक्षा श्रीवास्तव के साथ हुआ। इनका एक पुत्र मयंक श्रीवास्तव है। दूसरे पुत्र संजू श्रीवास्तव है जो अभी अविवाहित है। कवयित्री की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती शैलजा श्रीवास्तव का विवाह श्री नरेश कुमार श्रीवास्तव के साथ हुआ जिनके मिनी एवं शिवम् दो पुत्र हैं। दूसरी पुत्री श्रीमती सीमा गौर का विवाह लहरिया पुरवा (उरई) निवासी श्री राजेन्द्र गौर के साथ हुआ।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1977 ई0 में उत्तीर्ण की। इसके उपरान्त इण्टरमीडिएट एवं बी.ए. की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1984 एवं 1986 ई0 में उत्तीर्ण की। एम.ए. (संस्कृत) की परीक्षा सन् 1990 में उत्तीर्ण की। इसके साथ ही आपने कढ़ाई–सिलाई में झाँसी से डिप्लोमा प्राप्त किया।

आप वर्तमान में जयदेवी अवस्थी माध्यमिक विद्यालय उरई में हिन्दी विषय की अध्यापिका हैं।

अभी तक आपका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। काव्य गोष्ठियों में आपकी कविताएँ बहुत सराही जाती हैं। आप अपने प्रियतम को पाने के लिये बेचैन रहती है। आप अपने प्रियतम में समा जाना चाहती है। आपका यह प्रियतम लौकिक न होकर अलौकिक है। आप ससीम से असीम की अवस्था में पहुंच जाना चाहती है। आपकी यह रहस्यवादी कविता यहाँ दृष्टव्य हैं–

प्राण मेरे तुम क्षितिज का द्वार खोलो

मैं तुम्हारे पास आना चाहती हूँ।

नेह निशदिन बाँटकर जो भी न रीते?

उस हृदय की थाह पाना चाहती हूँ।

बूँद मैं हूँ सिन्धु तुम व्यापक सलौने

मैं स्वयं उसमें समाना चाहती हूँ।

द्वैत भी अद्वैत बनता जिन क्षणों में

उस मिलन के गीत गाना चाहती हूँ।[53]

कवयित्री के इसी तरह के भाव निम्नलिखित कविता में भी दृष्टव्य होते हैं–

मैं तुम्हारा नेह पाकर, मगन इतनी हो गयी हूँ

है न सुध–बुध तन बदन की मैं तुम्हारी बावरी हूँ।

मैं रही निर्जीव काया जिन्दगी तुमसे मिली है,

तुम हमारे स्वर मधुर हो मैं तुम्हारी बाँसुरी हूँ।

मैं तुम्हारा नेह पाकर........................... ।

हो न पायेगी कभी तुमसे अलग पहचान मेरी

रूप जीवन तुम हमारे, मैं तुम्हारी माधुरी हूँ।

मैं तुम्हारा नेह...................... ।[54]

आपने राम और केवट के संवाद का ऐसा चित्र उकेरा है कि काव्य पंक्तियों को पढ़कर पूरा दृश्य हमारे मानस पटल पर छा जाता है। आपने मनहरण छंद के माध्यम से केवट के द्वारा यह कहलवाया है–

ठहरिये दीनबन्धु विनती हमारी एक
भर के कठौता आज जल भर लाऊँ मैं।
जादू तो भरा है नाथ आपके चरण में,
शक मेरे मन में है कैसे बताऊँ मैं।।
चरण जो छूके उड़ी नैया हमारी हाय
भूखे मरे परिवार कहा खिलाऊँ मैं।
बार–बार केवट की विनती ये सरकार,
बिन पग धोये नहिं नाव पै चढ़ाऊँ मैं।।[55]

श्रीमती शोभा श्रीवास्तव के काव्य में कोमल कान्त पदावली का प्रयोग बहुत अच्छा बन पड़ा है। आपकी भाषा भी प्रौढ़ एवं परिमार्जित है। आपकी रहस्यवादी कविताएँ तो महादेवी वर्मा की रहस्यवादिता के समकक्ष ठहरती प्रतीत होती हैं। निश्चित रूप से कवयित्री श्रीमती शोभा श्रीवास्तव की काव्य प्रतिभा उत्कृष्ट कही जा सकती है।

डालचन्द्र अनुरागी

जनपद के साहित्यकारों ने खड़ी बोली के साथ–साथ बुन्देली भाषा में साहित्य का सृजन किया है। बुन्देली भाषा में डालचन्द्र अनुरागी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। बुन्देली भाषा के सम्बन्ध में कवि का आत्मकथ्य इस प्रकार है– "ग्रामीण परिवेश

में बाल्यकाल से ही प्रकृति के सुरम्य वातावरण में लोकभाषा स्वतः स्फूर्ति हुई। बुन्देली भाषा में कृषकों की व्यथा कथा, माटी की सुगन्ध एवं शहरी विडम्वना का चित्रण अनजाने में ही होने लगा। श्रमिक जीवन; ग्राम्य अंचलों का नैसर्गिक सौन्दर्य ही मेरे प्रेरणा स्रोत हैं।''[56]

डालचन्द्र अनुरागी का जन्म ग्राम धगवाँ (हमीरपुर) में 2 जनवरी सन् 1948 ई0 को हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री राम भरोसे शाक्यवार एक साधारण गृहस्थ एवं माता स्व0 श्रीमती तुलसारानी पति के अनुकूल चलने वाली महिला थी। इनका विवाह ग्राम बड़ा खरका (हमीरपुर) निवासी स्व0 श्री मुलू शाक्यवार की सुपुत्री श्रीमती राजाबाई के साथ हुआ। आपके दो पुत्र एवं एक पुत्री है। बड़ा पुत्र श्री कृष्णकुमार पी.एन.बी. में कार्यरत हैं। इनका विवाह गाँधीनगर उरई निवासी श्री माताप्रसाद शाक्यवार की सुपुत्री श्रीमती विनीता कृष्ण के साथ हुआ जिनकी एक संतान बेबी काजल है। कवि के दूसरे पुत्र शिवकुमार का विवाह ग्राम चिल्ली (जालौन) निवासी श्री खेमचन्द्र मुखिया की सुपुत्री श्रीमती राजमणि के साथ हुआ। इनका एक पुत्र अभिषेक आनन्द है। कवि की पुत्री श्रीमती सन्तोषी का विवाह ग्राम कुकरगाँव (जालौन) निवासी श्री रामसहाय शाक्यवार के सुपुत्र श्री अशोक कुमार के साथ हुआ जो रक्षा मन्त्रालय भारत सरकार में कार्यरत हैं। इनकी दो संतानों में बेबी अंजली व पुत्र अनुकृति है।

आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव धगवाँ से ही शुरु हुई। जू0हा0 स्कूल की परीक्षा ग्राम जरिया (हमीरपुर) से प्राप्त करने के पश्चात् सन् 1965 ई0 में बी.एन.वी. इण्टर कालेज राठ से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1972 ई0 में जी.आई.सी. उरई से उत्तीर्ण की।

इसके उपरान्त सन् 1992 ई० में बी.ए. की परीक्षा गाँधी डिग्री कालेज, उरई से उत्तीर्ण की। सम्प्रति कार्यालय उप विद्यालय निरीक्षक जालौन स्थान उरई से सम्बद्ध हैं।

कवि उरई में सन् 1966 ई० से स्थायी रूप से निज आवास में सपरिवार निवास कर रहा है।

कवि को लेखन की प्रेरणा बाबा हरतारिया आश्रम जरिया से प्राप्त हुई। आप जब कक्षा 6 के विद्यार्थी थे तभी से आप बाबा से अगाध आस्था रखते थे। इन्होंने बाबा का साक्षात् दर्शन पाया तभी से उनकी स्मृति में बाल्यकाल से रचना का उद्गम होने लगा।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ हैं किन्तु फुटकर रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। 'अनुभूति के क्षण' (संकलन) समाज सेवा भोपाल म०प्र० शासन एवं 'सबकी खैर खबर' पत्रिकाओं में आपकी कविताओं को स्थान दिया गया।

आपकी रचनाओं पर जिला मजिस्ट्रेट जालौन, ज्येष्ठ पुलिस अधीक्षक जालौन, जिला जज जालौन व अन्तर्राष्ट्रीय मंच शिवालय कानपुर से सम्मानित व पुरस्कृत किया गया।

कवि मुख्यतया बुन्देली भाषा का कवि है। इनके काव्य में जिला हमीरपुर की लोधन्ती भाषा के शब्दों की प्रचुरता है। आपकी बुन्देली भाषा की कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य है–

देखौ कैसो जमानौ है आओ उरे

हर गली में मान मन में शैतान है।

धरम की जौन धुरिया पकर कै रैहै

अपनी आफत के मारै परेशान है।[57]

वर्तमान समय में कुर्सी के लिये आपाधापी मची हुई। कवि बचपन से ऐसा सुनता आ रहा है किन्तु आज जब चारों तरफ कुर्सी के लिये मार–काट मची देखता है तो वह कह उठता है–

हमकौ बाई बता गई ती बेटा सुनौ

देश के काजै मर गये पहलवान है।

बिनकी बातें पुरानी हँसी सी लगै,

आज कुरसी कौ चऊँ ओरी घमसान है।।[58]

कवि प्रकृति का चितेरा होता है। प्रकृति का कौन सा दृश्य कवि को भा जाये कुछ कहा नहीं जा सकता है। कवि का बचपन गाँव में व्यतीत हुआ है। बसन्त के मौसम में पकी फसलें सोने की तरह सुशोभित हो रही हैं। 'बसन्त' शीर्षक गीत के माध्यम से ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

आ गई बसन्त द्वार निगुर चली डार डार,

लगन लगौ नौनों, यो सोने सौ हार हार।

खेतन में कहन लगीं,

फसलें कहानी

वारी न रए बैस

हो गई सयानी।।

एक बार मौका नै, पछुआ के झौंका ने,

सर की चुनरिया कौ कर डारो तार–तार।।

गाँव वारी 'हिरिया' के,

लरका खिसियाने।

हारन में बिरवा

करौदा गदराने।।

झोर झोर झकरन सै, खजूरी के बहरन सै

ढो लै गये लरका सब, हातन से झार–झार।[59]

आपने अपनी बुन्देली भाषा में गाँव के मेला का चित्र बड़ी बारीकी से उकेरा है। ''भौजी मेला देखन आई!'' शीर्षक कविता के माध्यम से यह हास्य व्यंग्य दृष्टव्य है–

भौजी मेला देखन आई, पैर नई इकलाई

मुयमां चउअर पान दबोचें, पी रई दूध मलाई

घर के दाम खुटी माँ खौंसे, धर बोली मुस्काई

खरचा देव लला 'अनुरागी' बची न एकउ पाई

अटक परेखाँ बनी तुमारी है निज की भौजाई।

× × ×

दौरे लला तुरत मुस्का कें, दै दओ लोट टुराकै

बोली नीके लला हमारे, अंगुरी गाल दबाकें।

रैंचकुआ कौ मजा लूट लो, चलियो हमें लिवा कै

बहियाँ नाम गुदा दो अपनौ, बहियाँ नरम दबाकैं

धकधक हौन लगी 'अनुरागी', देखी जेब टटाकै।[60]

आपकी राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत रचनाएँ भी अच्छी बन पड़ी हैं। आपकी राष्ट्रीय भावना से पूर्ण यह रचना दृष्टव्य है–

फूल खिलते रहें खूब महके चमन

है ये दुनिया से प्यारा हमारा वतन

भारती का हिमालय बना ताज है

गंगधारा बजती मधुर साज है

लड़ती चट्टान से दर्द करती समन

है ये दुनिया.................. ।[61]

आपने चेतावनी गीत परम्परा को आगे बढ़ाते हुए 'बिलवारी' शीर्षक गीत के माध्यम से इनके विचार दृष्टव्य है–

दिन रह गओ घरी भरे कौ

रे मन! भज लै नाम हरी कौ

सरका लै रे मन के मन का

कब टूटै तार लरी कौ

रे मन भज लै नाम.................. ।[62]

कवि बुन्देली काव्य में अधिक रमा है चूँकि उनकी बहुत सी रचनाएँ खड़ी बोली में है लेकिन ह्दय के भाव बुन्देली के माध्यम से प्रस्फुटित होकर पाठक के ह्दय में सीधा प्रभाव छोड़ते हैं।

रामप्रकाश त्रिपाठी

कवि रामप्रकाश त्रिपाठी का जन्म 1 अक्टूबर सन् 1949 ई0 कों घाटमपुर (कानपुर) में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री अश्विनी कुमार त्रिपाठी एवं माता स्व0 श्रीमती शारदा देवी थी। आपका विवाह ग्राम सिम्हरा कासिमपुर (जालौन) निवासी स्व0 श्री देवीप्रसाद पाण्डेय की पुत्री श्रीमती नारायण देवी के साथ हुआ। आपकी पाँच संतानों में दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हैं। आपके बड़े पुत्र का नाम विनोद कुमार त्रिपाठी एवं छोटा पुत्र पवन कुमार त्रिपाठी है। आपकी पुत्रियों में साधना, हेमलता एवं प्रभा है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1965 ई0 में श्री गाँधी वि0पी0 इ0 कालेज घाटमपुर से उत्तीर्ण की। इण्टरमीडिएट की परीक्षा (व्यक्तिगत) सन् 1968 ई0 में उत्तीर्ण करने के बाद बी.ए. की परीक्षा रामस्वरूप ग्रामोद्योग डिग्री कालेज पुखरायाँ से सन् 1971 ई0 में उत्तीर्ण की। एम.ए. की परीक्षा सन् 1973 ई0 में इसी महाविद्यालय से उत्तीर्ण करने के बाद बी.एड. की परीक्षा डी.वी. डिग्री कालेज, कानपुर से सन् 1974 ई0 में उत्तीर्ण की। सम्प्रति श्री महावीर इण्टर कालेज सामी (जालौन) में एल.टी. ग्रेड पर कार्यरत हैं। ये 15 वर्ष से सामी (जालौन) में निवास कर रहे हैं।

आपके बचपन की दुखद स्मरणीय घटना में अल्पायु में ही माता जी का स्वर्गवास हो गया था।

आपको लेखन की प्रेरणा पिता जी से व जीवन की परिस्थितियों से प्राप्त हुई।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु कुछ रचनाएँ विवेक, विकास मासिक पत्रिका राजस्थान से प्रकाशित होती रही हैं।

आपने अभी तक लगभग 80 रचनाएँ लिखीं हैं जिनमें से कुछ नीचे दृष्टव्य है–

मर–मर कर जीना भी, क्या जीना है?

है गरल सुधा सा, सादर यदि पीना है।[63]

इसी तरह 'संदेश' शीर्षक कविता के माध्यम से आपकी ये पंक्तियाँ–

सुनो–सुनो ए मेरे मीत।

गाओ तुम धरती के गीत।।[64]

आपका ये 'ईर्ष्या' गीत भी अच्छा बन पड़ा है–

मैं दुर्भावों की जननी हूँ।

अस अभाव में जन्मी हूँ।।

मानव को निष्क्रिय करती हूँ।

बुधि विवेक को हरती हूँ।।[65]

कवि एक अध्यापक है इसी कारण उसके जीवन में आदर्शवादी भाव अधिक सक्रिय रहे हैं। यही प्रभाव उनकी रचनाओं में भी दृष्टिगोचर होता है। यही इनके काव्य का मुख्य अंग है।

अब्दुल मलिक अब्बासी 'साकी'

अब्दुल मलिक अब्बासी ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने सामाजिक, राजनैतिक एवं राष्ट्रप्रेम की धारा को अपने काव्य के माध्यम से अबाध रूप से प्रवाहित की है। आप जनपद एवं जनपद के बाहर की काव्य गोष्ठियों में उत्साह के साथ भाग लेते रहते हैं।

अब्दुल मलिक अब्बासी 'साकी' का जन्म 14 अगस्त सन् 1950 ई0 में आजमगढ़ उ0प्र0 में हुआ था। आपके पिता स्व0 मु0 बसी अब्बासी जी एवं माता श्रीमती मुसलेमां खातून है। आपका विवाह श्री खान उल-हक़ 'मशरिकी' की सुपुत्री श्रीमती मलंका के साथ हुआ। आपकी संतानों में चार पुत्र एवं एक पुत्री है। आपके पुत्रों के नाम-शादाब अब्बासी, नायाब अब्बासी, मेरान अब्बासी और कैफी अब्बासी है। आपकी पुत्री कु0 तूबा अब्बासी है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1966 ई0 में राष्ट्रीय इण्टर कालेज आजमगढ़ से उत्तीर्ण की तत्पश्चात् 1968 ई0 में इण्टर मीडिएट की परीक्षा समता इण्टर कालेज सादात गाजीपुर से उत्तीर्ण करने के पश्चात् बी.ए. की परीक्षा जनता डिग्री कालेज आजमगढ़ से सन् 1970 ई0 में उत्तीर्ण की। आपने एम.ए. की परीक्षा डी.वी. डिग्री कालेज उरई से उत्तीर्ण करने के बाद

इसी कालेज से बी.एड. की परीक्षा सन् 1978 ई0 में उत्तीर्ण की।

वर्तमान में कवि राजकीय सेवा 'जिला पूर्ति कार्यालय हमीरपुर' में प्रधान लिपिक के पद पर तैनात है।

कवि उरई जालौन जनपद में सन् 1972 ई0 से अपने निज निवास 103 गणेश गंज, उरई में निवास कर रहा है।

आपको लेखन की प्रेरणा अल्लामा ख़ाबुल हम बख्तयार 'मशरिकी' से मिली।

आपने अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया।

'दर्द के दरख्त' आपकी प्रकाशित रचना है। आपकी मुख्य विधा उर्दू/हिन्दी शायरी है।

देश प्रेम एवं सम सामयिक घटनाएँ आपके काव्य का विषय रहा है। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं—

नये वर्ष का नयी तमन्ना से कीजै सम्मान

कि जुग—जुग जीवै हिन्दुस्तान।

नई—नई राहें पैदा हों—देश का हो उत्थान

कि जुग—जुग जीवै..........।

× × ×

साइंस और टिक्नोलॉजी में भारत हो बलवान

कि जुग—जुग जीवै............

इल्मो हुनर लेने आये, चीन अमरीका जापान

कि जुग—जुग................।

पढ़े मुसलमां गीता, हिन्दु अपनाएँ कुरान

कि जुग................।

दूर रहे हम सबसे 'साके', वैरभाव अज्ञान

कि जुग–जुग........।[66]

आपने वर्तमान परिवेश में देश में फैली बेरोजगारी एवं विकसित देशों की तरफदारी करने वालों को इस रचना के माध्यम से अपनी बात कही है–

आला कुर्सी के तलबगार इकट्ठे होंगे

फिर सजाये गये ये दरबार इकट्ठे होंगे।

लोग चौतरफा के ज़रदार इकट्ठे होंगे।

लाखो अशफाकों भगतसिंह अभी बिखरे हैं

वक़्त पड़ने पर सरेदार इकट्ठे होंगे।

इतनी बेकारी है, मेला वहीं लग जायेगा।

तू तू– मैं मैं में जहाँ चार इकट्ठे होंगे

सिर्फ डिग्री ही नहीं हाथों को कुछ काम भी दो

वरना हर चौक पर बेकार इकट्ठे होंगे

चलो यू एन ओ की मिटिंगौ का भी जलवा देखें

जुल्म के सारे तरफदार इकट्ठे होंगे

बात कहने में ही कुछ बात बनेगी साके

बज्म में सैकड़ों फनकार इकट्ठे होंगे।।[67]

आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से समसामयिक विषयों पर लेखनी बड़ी कुशलता से चलायी है। आपने उर्दू मिश्रित हिन्दी भाषा का प्रयोग किया है। किन्हीं–किन्हीं रचनाओं में उर्दू के शब्दों का ही बाहुल्य है। आपका लेखन कार्य सुव्यवस्थित है।

पं० रविशंकर मिश्र

पं0 रविशंकर मिश्र जनपद जालौन के महान साहित्यकार तत्वज्ञानी एवं कवित्व सम्पन्न कलाकार हैं। आपके बोलने का लहजा निराला है। जैसा आपका स्वभाव वैसा आपका कृतित्व दोनों का समन्वय सबसे अलग हटकर है। धोती कुर्त्ता माथे पर तिलक आपके व्यक्तित्व को निखार देता है।

पं0 रविशंकर मिश्र जी का जन्म 5 जनवरी सन् 1951 ई0 में उरई में हुआ। आपके पिता श्री हरगोविन्द मिश्र एवं माता जी श्रीमती अवध कुँवर जी है। आपका विवाह ग्राम अण्डा (जालौन) निवासी स्व0 श्री नाथूराम दुबे की सुपुत्री श्रीमती पुष्पा मिश्रा के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में संजय, विवेक एवं नीरज मिश्र हैं।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1967 एवं 1969 ई0 में जनता हाईस्कूल उरई तथा गाँधी इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। पुनश्च 1971 ई0 में आपने डी.वी. डिग्री कालेज उरई से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने बी.एड. की परीक्षा सन् 1972 ई0 में गाँधी महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। आपने एम.ए. हिन्दी एवं संस्कृत विषयों की परीक्षाएँ सन् 1976 ई0 एवं 1978 ई0 में उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप राजकीय इण्टर कालेज कदौरा (हमीरपुर) में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा डॉ0 रामस्वरूप खरे जी एवं मोहन जी से प्राप्त हुई।

आपका अभी तक कोई काव्य संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु

वीणा कादम्बिनी, मधुस्यन्दी आदि पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। आपने अपनी रचनाओं का सृजन गीत विधा में किया है। आपको पारथ प्रेम समिति के द्वारा गीत शिरोमणि की उपाधि से विभूषित किया गया है। आपकी रचनाओं का प्रसारण आकाशवाणी छतरपुर तथा लखनऊ केन्द्र से यदा–कदा होता रहता है।

कवि भावुक होता है। जब भावुक हृदय में भावनाएँ (शोक हास, रति, उत्साह आदि) मन को उद्वेलित करने लगती हैं और वे भावनाएँ हृदय से निकलकर कोरे कागज पर उतरती है तो गीत (कविता) बन जाते हैं। इस गीत के माध्यम से कवि के हृदय के ये उद्‌गार–

यों तो गीत हमारे
फिर भी स्नेह सुधा अंजलि से
मलय पवन मधुरिम अंचल से
बन सकते है मीत तुम्हारे
नहीं सफल साधक के स्वर है नहीं भाव की भाषा
फिर भी बाँध नहीं पायेगी इन्हें कोई परिभाषा
प्रेमी मन मन्दिर से निस्सृत जहाँ सकल दुख दोष विसर्जित
बन सकते है मीत तुम्हारे।[68]

कवि की श्रृंगार रस से परिपूर्ण यह रचना भी दृष्टव्य है–

साथ–साथ चलते रहने से मन हो गया तुम्हारा।
कौन ताप है इस युग में, जो मैने नहीं सहा है
फिर भी रस का सागर हूँ प्यासों ने यही कहा है।
यह मेरी क्षमता तो क्या है? हाँ अनुराग तुम्हारा।

तुमने दिन से हँसना सीखा रजनी से शरमाना

शायद मुझसे भी सीखा है सपनों से खो जाना,

× × ×

आकर्षण में और रूप में अन्तर समझ गया हूँ।

मेरे सभी गीत बन जाएं मंगल गान तुम्हारा।[69]

पं० रविशंकर मिश्र कभी–कभी छायावाद की तरफ भी मुड़ जाते हैं। उनकी ये पंक्तियाँ छायावाद के दर्शन कराती।

कितनी बार कसम खाई है, उनसे कभी नहीं माँगूँगा

पर उनके सम्मुख जाते ही झोली का मुख खुल जाता है।

मुझमें कल्मष ही कल्मष है

उनमें सुचिता ही सुचिता है

मैं पूरा टेढ़ा–मेढ़ा हूँ

उनमें ऋजुता ही ऋजुता है

इसीलिये मेरे दोषों पर उनका ध्यान नहीं जाता है।

× × ×

छोड़ो भी पिछली बातों को

रात दिवस किसकी चलती है

वंदनीय बस वही मनुज है

जिसमें मानवता पलती है

पहले कुछ आँसू ढुलकाओ तभी मिलन का सुख भाता है।[70]

पं० रविशंकर मिश्र एक अच्छे कवि के साथ एक अच्छे भागवत–कथा वाचक भी हैं। आप अपने मधुर संभाषण से सभी के बीच लोकप्रिय हैं। आपके

बोलने से ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे आप शब्दों को तोलकर बोल रहे हों। आपकी कविताओं में अध्यात्मिक पक्ष की अनुगूँज अधिक सुनाई देती है। सीधे, सरल विचारों का यह कवि जनपद जालौन का स्वनामधन्य साहित्यकार है।

रामजी कुमार सक्सेना

रामजी कुमार सक्सेना यथार्थवादी व्यक्तित्व का धनी साहित्यकार है। वर्तमान के प्रति उनमें आक्रोश है। आप हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनो भाषाओं के अच्छे ज्ञाता हैं।

रामजी कुमार सक्सेना का जन्म जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में 23 नवम्बर सन् 1951 ई0 को हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री भगवती शरण सक्सेना एक अच्छे साहित्यकार थे। आपकी माता स्व. श्रीमती रामकिशोरी सक्सेना एक धार्मिक विचारों की महिला थी। माता–पिता के अच्छे संस्कार बालक रामजी कुमार सक्सेना पर प्रत्यक्ष रूप में पड़े। आपका विवाह सीतापुर निवासी श्री राजेश्वरी प्रसाद बरतरिया की सुपुत्री मधु सक्सेना के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में विरल सक्सेना जो इंजीनियरिंग व कम्प्यूटर सर्विस में अध्ययनरत है तथा सुपुत्री कु0 वर्तिका सक्सेना कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ डी.ए.वी. इण्टर कालेज उरई से सन् 1965 एवं 1967 ई0 में उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1969 ई0 में बी.ए. की परीक्षा डी.वी.डिग्री कालेज उरई से उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् 1971 ई0 में एम.ए. (अर्थशास्त्र) की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1972 ई0 में आपने बी.एड. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने अपनी स्कूली शिक्षा को जारी रखते हुए सन् 1982 ई0 में एम.ए. (अंग्रेजी) की परीक्षा व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की। सम्प्रति, आप डी.ए.वी. इण्टर कालेज उरई में सन् 1972 ई0 से

अंग्रेजी प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

आप पाश्चात्य विद्वान टी.एस. इलियट से अधिक प्रभावित है। इसके अतिरिक्त हिन्दी कवियों में आप निराला, महादेवी वर्मा, हरवंशराय 'बच्चन' आदि छायावादी कवियों से प्रभावित हैं। दुष्यन्त कुमार की गजल को आप विशेष पसन्द करते हैं।

आपका अभी तक कोई कविता संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी रचना 'शायद आँख तुम्हारी नम है' कविता यहाँ दृष्टव्य हैं–

मन का पर्वत पर्वत उड़ना।
तन का सीमाओं मे दहना।।
यह भी विधि का एक नियम है,
शायद आँख तुम्हारी नम है।
हानि–लाभ है, यश अपयश है।
हर कोई इसमें परवश है।।
जीवन का ऐसा ही क्रम है।
शायद...............नम है।
कब किसका किससे परिचय है।
क्षण भर को होता अभिनय है।।
जीवन है जीवन का भ्रम है।
शायद......... नम है।।
फिर भी चलो जरा मुस्करा लें।
क्षण भर सही मगर हम गालें।।

वैसे जीवन भर का गम हैं।

शायद.............नम है।[71]

आपने कुछ कविताएँ अंग्रेजी भाषा में लिखी हैं। इन सभी कविताओं में दुःखवाद की छाया ही दिखाई पड़ती है। कवि एक तरफ दुख से दुःखी है तो दूसरी तरफ वह दुख का अपने जीवन में आने पर स्वागत करता है।

रामजी कुमार सक्सेना एक चिन्तनशील साहित्यकार है। सांसारिक वस्तुओं को देखते है तो उन्हें सब जगह असमानता ही दिखती है। कोई धनी है तो कोई बहुत अधिक निर्धन है कोई सुखी है तो कोई दुखों से घिरा है। इन सब दृश्यों से कभी-कभी खिन्न हो जाते हैं। यही उनकी रचनाओं का प्रतिपाद्य विषय भी है।

अरुण नागर

महाकाली कला शोधकेन्द्र के संस्थापक एवं हास्य व्यंग्य के साथ विविध छन्दों के माध्यम से कविता को अलंकृत करने वाले अरुण नागर का जन्म 26 सितम्बर 1956 ई० में अजयगढ़ जिला पन्ना (म०प्र०) में हुआ था। आपके पिता स्व० श्री शम्भू दयाल नागर एवं माता स्व० श्रीमती शारदा देवी नागर थी। आपका विवाह लखनऊ निवासी श्री उमाशंकर याज्ञिक (गुजराती ब्राह्मण) की सुपुत्री श्रीमती किरन नागर के साथ हुआ। श्रीमती किरन नागर भी एक कवयित्री है। आपकी तीन संतानों में दो पुत्र एवं एक पुत्री है। पुत्रों में अलंकृत नागर, अंकित नागर एवं सुपुत्री आस्था नागर है ये वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सनातन धर्म इण्टर कालेज उरई से सन्

1972 ई0 में उत्तीर्ण की। सन् 1974 ई0 में आपने इण्टरमीडिएट की परीक्षा पुण्य प्रताप उच्चतर विद्यालय अजयगढ़ से उत्तीर्ण करने के बाद 1977 ई0 बी.ए. की परीक्षा महाराजा महाविद्यालय छतरपुर (म0प्र0) से उत्तीर्ण की।

आपके बचपन की एक स्मरणीय घटना में आप ट्रक वाले से बिना बताये ही ट्रक पर सवार हो गये और फिर ट्रक से कूदने पर आपके हाथ–पैर छिल गये थे।

आपको लेखन की प्रेरणा स्वयं के एकाकी जीवन से प्राप्त हुई। आप तुकबन्दी में कविता बैठे–बैठे ही बना देते हैं जिसमें हास्य व्यंग्य शामिल होता है।

अभी तक आपका कोई कविता संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ हैं किन्तु विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

आपकी अप्रकाशित रचनाओं में 'चन्दन मन के साँप' एवं 'प्रशंसा के पोस्टर' आपके व्यंग्य संग्रह है 'गट्ठर' भी आपका काव्य संग्रह है।

वर्तमान में कवि अपने निज निवास 53, विजय नगर काली कवि मार्ग उरई में निवास कर रहे हैं। महाकवि काली आपके पूर्वज थे। आप सन् 1972 ई0 से उरई में निवास कर रहे है।

जीवन के बारे में कवि का सन्देश है– "धरती पर आभार बनें, धरती पर आ भार नहीं।"

कविता के सन्दर्भ में कवि के विचार इस प्रकार हैं–

कविता दर्द की बेटी है', वह हर सीने में चुपचाप लेटी है।

वक्त की विसंगतियाँ जब उसे गुदगुदाती है तो होठों पर

झरने की तरह झरती हैं।।

लोग पूछते है मुझसे कि तुम रातों रात बन गये कैसे इतने बड़े कवि।

मैं कहता हूँ जो आग सुलगती रही बरसों से वो आज धधक पड़ी है।।

कविताएँ तो मेरे लिये मामूली सी कड़ी है।

दो मिनट सोचने की देर है, कविता सामने खड़ी है।।[72]

कवि अरुण नागर अच्छे साहित्यकार हैं। छन्दों के माध्यम से नायक और नायिका की हँसी ठिठौली का दृश्य इस प्रकार चित्रित किया है–

लाल–लाल रंग लाल, गोपिन के डाल–डाल

कर दये मोहन ने गोरे–गोर गाल लाल।

लाल–लाल है गुलाल, खेले सब ग्वाल बाल,

करतई बबाल देखो कैसौ नन्द लाल

लाल–लाल माल भई, राधा माला माल भई,

साँवरे कौ प्रेम है आज मिलो बेमिसाल।

बेमिसाल माधौ ने चल–चल चपल चाल

खेली ऐसी होली कि मन कौ मिटो मलाल।।[73]

आपकी रचनाओं में विभिन्न रसों का परिपाक हुआ है लेकिन श्रृंगार रस के दोनों पक्षों (संयोग एवं विप्रलम्भ) का ही प्रयोग किया है। विप्रलम्भ श्रृंगार का एक उदाहरण यहां दृष्टव्य है–

नजर चुराई श्याम ने, न जर गई क्यों देह।

नजर–नजर नहिं कर सको, तो फिर नाहक नेह।।[74]

आपकी हास्यपरक रचनाओं में एक रचना मे कवि ने हनुमान जी के बल का वर्णन चटपटी भाषा में मनहरण छन्द के माध्यम से प्रस्तुत किया जो आपकी कवि कला को उजागर करती है–

मुक्केबाजी में आ जी रावण को दिलाई याद,

केशरी कुश्ती में भी दाँव पेंच प्रवर थे।

लघु जंप दीर्घ जम्प मारे कैसे–कैसे जंप

लांग जंपरों में आप सबसे जबर थे।

गिरि ही उखाड़ लाये लखन बचाने हेतु,

वजन उठाने में भी आप कितने सुपर थे।

जादू जैसे काम इसीलिये कर पाये सभी,

श्रीराम के आप सच्चे लवर थे।[75]

आप अच्छे व्यंग्यकार है। आपकी कुछ व्यंग्य से युक्त रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य है–

वे सच्चे साधू हैं, पैसा नहीं छूते

सिर्फ पैसे वालो को छूते हैं।

राम –राम से काम अब, कदम–कदम पर क्लेश,

नोट–वोट के खेल में, भूले अपना देश।[76]

कवि अरुण नागर ऐसे कवि के रूप में विख्यात है जिन्होंने हास्य व्यंग्य में रचनाओं का सृजन किया हैं। छन्द शास्त्र के अनुकरण पर भी रचनाएँ लिखी हैं। छन्दों में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग उनका अपना मौलिक प्रयास है। अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से छन्द में भी हास्य झलकने लगता है। कवि बराबर काव्य सृजन में लगन शील है। देखना है ये हिन्दी साहित्य में अपना मुकाम किस ऊँचाई तक बना पाते है।

श्रीमती माया सिंह 'माया'

आधुनिक महादेवी वर्मा मायासिंह 'माया' ऐसी कवयित्री है जिनकी पीड़ा की तरल तरंगों में आँसू बनकर कविता निकलती है। इस पीड़ा का कारण, कवयित्री को

बचपन में ही अपने माता–पिता के सुख से वंचित रहना है। मात्र पाँच वर्ष की अल्पावस्था में ही माता का देहान्त हो गया था। यही कारण है कि कवयित्री का दुख एवं पीड़ा से गहन साक्षात्कार रहा है। उन्होंने पीड़ा को महसूस ही नहीं किया है वरन् पीड़ा उनकी चिर संगिनी रही है।

श्रीमती माया सिंह 'माया' का जन्म 13 मई 1957 ई0 को कानपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम कालिकासिंह एवं माता का नाम सोना देवी था। मात्र पाँच वर्ष की अल्पायु में इनकी माता का स्वर्गवास हो गया। इनका लालन–पालन इनकी विधवा मौसी ने किया और अच्छे संस्कार भी दिये। इनका विवाह स्वामी अखण्डानन्द की जन्मस्थली ग्राम रिरुआ बुजुर्ग जिला हमीरपुर में हुआ। कन्यादान की रस्म बूढ़ी मौसी ने की थी क्योंकि माता जी की मृत्यु के कुछ समय पश्चात् पिता की भी छत्रछाया कवयित्री के सिर से उठ गयी थी। इनके पति श्री जगरूपसिंह जो अच्छे विचारक, विश्लेषक और कर्मठ शिक्षक है, धर्मरक्षक के रूप में कवयित्री को सदैव मार्ग दर्शन दिया है। आपने व्यक्तिगत रूप से हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1972 एवं 1974 ई0 में आर्यकन्या इण्टर कालेज, उरई से उत्तीर्ण करने के बाद बी. ए. तथा एम.ए. (इतिहास) की व्यक्तिगत परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1976 एवं 1978 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। आपने उपचारिका (राजकीय सेवा) की परीक्षा सन् 1984 ई0 में राजकीय सेवा लखनऊ से उत्तीर्ण करने के बाद महिला राजकीय चिकित्सालय उरई में उपचारिका के पद पर कार्यरत हैं।

आपकी तीन संतानों में सबसे बड़े पुत्र कुँवर दीपेन्द्र सिंह है जिनका विवाह श्रीमती वन्दना सिंह के साथ हुआ। इनके दो पुत्र कु0 मनु व कु0 तनु

है। आपका दूसरा पुत्र कुँवर जीतेन्द्र सिंह तथा एक पुत्री कु0 नेहा सिंह है जो वर्तमान में बारहवीं कक्षा की छात्रा है आप अपने परिवार के साथ सन् 1972 ई0 से उरई में निवास कर रही हैं। वर्तमान में आप बैंक कालौनी 238/1सी राजेन्द्र नगर, उरई में अपने निज निवास में रह रही हैं।

आपने गीत, गजल, कविता, कहानी, मुक्तक, लघुकथा विधा पर अपनी लेखनी चलायी। आपकी अब तक प्रकाशित रचनाओं में 'विश्व काव्यांचल (अन्तर्राष्ट्रीय संकलन)' 'विश्व गन्धा' 'शून्य की संचेतना' आदि काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

आपको सन् 1999 ई0 में विक्रम शिला विद्यापीठ द्वारा विद्या वाचस्पति (पी-एच0डी0) की उपाधि प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त साहित्य शिरोमणि, महादेवी वर्मा सम्मान, साहित्य शिरोमणि, प्रतिभा प्रकाशन रामपुरा द्वारा सन् 2000 ई0 में दिया गया। जैमिनी अकादमी द्वारा 'रामवृक्ष बेनीपुरी जन्म शताब्दी सम्मान' 4 अक्टूबर 2002 ई0 में मिला।

आपका 'शून्य की संचेतना' काव्य संकलन मैथिली विश्व पीठ दरभंगा एवं विक्रम शिला विद्यापीठ भागलपुर द्वारा शोध परीक्षाओं के पाठ्यक्रम मे सहायक पुस्तक के रूप में स्वीकृत है।[77]

कवयित्री का बचपन नैराश्य में बीता है। उन्हें हर पल माता-पिता के प्यार का अभाव खटकता रहा है। उनका मन अपनों की भीड़ में भी बिलखता रहता है। उनके हृदय की घनीभूति पीड़ा इन पंक्तियों के माध्यम से उमड़ पड़ी है-

अपने की इस भीड़ में बिलखे

मन मेरा अन्जाना सा।

जब चाहे रोता हँसता है,

देखो ये दीवाना सा।।

हमदर्दी के देख लिये हैं

जितने मेरे ठिकाने थे,

मेरे दिल को क्यूँ लगता है,

सबके सब वीराना सा।।

हर कातिल मुझसे कहता है,

मै तेरा दीवाना हूँ।

आँख मेरी नम हो कहती है

यह चेहरा पहचाना सा।।

खून के धब्बे दीवारों के,

खोल न देवें राज कोई।

धो पायेंगे आँसू भी क्या

यह तो दाग पुराना सा।[78]

श्रीमती माया सिंह 'माया' को दर्द और पीड़ा ने गहरे तक पैठ बना ली है। उन्हें संसार का हर मुखड़ा रोता सा ही प्रतीत होता है। आपकी ये पंक्तियाँ इस दर्द की साक्षी बनकर पन्नों में उभर पड़ी–

फिर चुपके से सूने मन में, अनचाहा दर्द पिघलता है।

फिर घुँघराले से इस दर्पण में, हर मुखड़ा रोता दिखता है।।

आँखो के घेरे में 'माया', जाने में कौन करकता है।

फिर बूँद–बूँद करके विरहा, सावन सा खूब बरसता है।[79]

कवयित्री की वेदना असीम है किन्तु वह अपनी मिट्टी को, अपने

हिन्दुस्तान की मिट्टी को नहीं भूलती है। उनका देश प्रेम इन पंक्तियों में झलक उठता है—

चरणों में सागर की लहरें

शीश मुकुट हिमवान है

शस्य श्यामला धरती वाला

अपना हिन्दुस्तान है।[80]

कवयित्री कभी—कभी छायावादी कवियों की तरह लौकिकता से अलौकिकता की तरफ बढ़ने लगती है। वह प्रेयसी (आत्मा) बन प्रियतम (परमात्मा) के विरह में जलने लगती है और मेघों को धरती पर बरसने को कहने लगती है—

मेघ बरसो तृप्त धरती कह रही है।

प्रिय तुम्हारी ही प्रतीक्षा में तपन यह सह रही है।

× × ×

दामिनी को संग लेकर

इन्द्रधनुष के रंग लेकर

प्रिय पधारो गगन में प्रेयसी, विरह में दह रही है।

मेघ बरसो तप्त धरती कह रही है।[81]

कवयित्री परोपकार की भावना से ओत—प्रोत है। वह इस शरीर को मिट्टी से मिलने से पहले किसी के काम आने की कामना करती है—

ऐसा भी क्या गुनाह किया है मैंने?

उनकी दुआ सलाम से भी हम चले गये।

× × ×

मर के मिट्टी में मिलने से,

तो बहतर है यही

ये तन काम किसी के कहीं आ

जाये तो अच्छा होगा।[82]

आपके कविता संग्रह 'शून्य की संचेतना' में अन्तर्राष्ट्रीय शुभकामनाएँ एवं सम्मतियाँ प्राप्त हुई हैं। **डॉ0 हाइडी पावेल हिन्दी लैक्चरर सेन्ट पेटर्स बुर्ग रूस के अनुसार–** ''डॉ0 माया सिंह 'माया' के कविता संग्रह 'शून्य की संचेतना' में संकलित कविताओं में से कुछ कविताएँ (डॉ0 सुमन द्वारा प्रेषित) मैंने पढ़ी। बहुत सुन्दर लगी, वैसे भी सुमन जी द्वारा सम्पादित अन्तर्राष्ट्रीय संकलनों में माया सिंह 'माया' की कविताएँ पढ़ती रही हूँ। वे वास्तव में अन्तर्राष्ट्रीय कवयित्री हैं और बहुत अच्छा लिखती हैं।[83]

डॉ0 राधासिंह भागलपुर के अनुसार– ''डॉ0 माया अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभरीं है और उनसे आशा है कि वे लगातार लिखती रहेंगी तथा अपनी छाप को धूमिल नहीं होने देंगी।[84]

डॉ0 श्यामसुन्दर सुमन के अनुसार – ''कवयित्री अनेक पत्र–पत्रिकाओं और अन्तर्राष्ट्रीय कविता संग्रहों में छप चुकी हैं और चर्चित हुई हैं। उनकी अनेक कविताएँ हिन्दी के पाठ्यक्रमों में लगी हैं। उसमें प्रतिभा है, इस कारण उसे अनेक स्थानों से सम्मानोपाधियाँ प्राप्त हुई हैं।[85]

कवयित्री डॉ0 माया सिंह 'माया' के सम्बन्ध में 'शून्य की संचेतना' काव्य संग्रह के सम्पादक डॉ0 श्यामसुन्दर सुमन जी के अनुसार– ''आधुनिक महादेवी वर्मा– डॉ0 माया सिंह 'माया' का मौलिक कविता संग्रह 'शून्य की संचेतना' का नाम उनकी छपी कविता 'शून्य की

संचेतना' के आधार पर रखा गया है।"[86]

कवयित्री डॉ0 माया सिंह 'माया' को आधुनिक महादेवी वर्मा कहना सार्थक प्रतीत होता है। उनके काव्य में पीड़ा एवं वेदना की घनी अनुभूति दृष्टिगोचर होती है। आपके जीवन में परिजनों का अभाव हमेशा खटकता रहा है। इस कारण उनके हृदय में पीड़ा ने स्थायी आवास बना लिया है। उनके हृदय से कविता रूपी आँसू निकलते हैं जो हृदय की गहराइयों को छू लेते है। पाठक उस वेदना से अविभूति हो उठता है।

राकेश कुमार पटैरिया

जनपद जालौन के दूर–दराज क्षेत्रों (ग्रामीण अंचलों) में भी साहित्यकारों ने अपनी काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऐसे कवियों ने जन्म लिया है जिन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा से लोगों के हृदय में अपना स्थान बना लिया है। राकेश कुमार पटैरिया ऐसे ही कवि हैं। आपका जन्म उरई तहसील के ग्राम कोटरा में 24 जनवरी सन् 1963 ई0 को हुआ था। आपके पिता का नाम श्री विन्द्रावन पटैरिया व माता का नाम श्रीमती रामकिशोरी देवी है। पिता एक कृषक एवं माता आदर्श गृहणी हैं। गाँव की धूल मे खेलने वाले इस बालक के हृदय में न जाने कब काव्य का बीजारोपण हो गया और वही बीज पल्लति व पुष्पित होकर अपनी सुगंधि को बिखेरने लगा। आपका विवाह भटेवरा खुर्द कुलपहाड़ तहसील जिला महोबा निवासी श्री स्वामीप्रसाद पाठक की सुपुत्री श्रीमती सावित्री देवी के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में तरुण, कु0 शिखा व कु0 निशा है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा 1978 ई0 में नेहरु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय महोबा से उत्तीर्ण की। कुछ समय पश्चात् सन् 1980 ई0 में आपने

इण्टरमीडिएट की परीक्षा वैदिक इण्टर कालेज सोमई (जालौन) से उत्तीर्ण करने के उपरान्त सन् 1982 ई० में बी०के०डी० कालेज झाँसी से बी०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा स्वतः जाग्रत हुई। पूर्ण रूप से इसका प्रस्फुटन श्री ओमप्रकाश 'अमर' द्वारा आकाशवाणी छतरपुर से 'हरदौल चरित' सुने जाने से हुआ। आप वेत्रवती साहित्य परिषद कोटरा में महामंत्री पद पर आसीन हैं।

आपका अभी तक कोई काव्य संकलन प्रकाशित नहीं हुआ किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं जैसे दैनिक भास्कर झाँसी, दैनिक मौलिक अधिकार झाँसी में प्रकाशित होती रही है।

आपके अप्रकाशित काव्य संग्रह में 'नायिका भेद' है। जिसके पृष्ठों की संख्या 35 है।

कवि काव्य के द्वारा समाज सुधार की आशा रखता है। इसके साथ ही देश प्रेम से सम्बन्धित उत्कृष्ट रचनाओं के द्वारा साहित्य को समृद्ध करना चाहता है। यह साहित्यकार की आशा है।

कवि को पारम्परिक छन्द बद्ध रचनाएँ अधिक प्रिय है। आपकी यह छन्द बद्ध रचना दृष्टव्य है–

तुम खों बरजै अब कौन कहौ, जित ही तितही तुम लाल चहे।
अब नहिं करिये हरि लाखों सौंह, चलौ उतही जित रात रहे।[87]

गरीब व्यक्ति को नहीं सताना चाहिये। यह बात सनातन से मनीषी एवं समाज सुधारक कहते चले आ रहे हैं। इसी सन्दर्भ में कवि के ये विचार दृष्टव्य हैं–

तू गरीब को न छेड़ कभी, वरना बेचारा रो देगा।

सुन लिया उसके मालिक ने अगर, तुझे ज़र, ज़मीन से खो देगा।[88]

कवि राकेश कुमार पटैरिया तहसील उरई के उगते हुए सितारे के समान हैं। अभी देखना है यह सितारा अपनी साहित्य रूपी लेखनी से साहित्य जगत में कितना प्रकाश फैला पाता है।

डॉ० अलका नायक

डॉ0 अलका नायक एक आदर्श शिक्षिका एवं अच्छी साहित्यकार के रूप में जानी जातीं है। आपका जन्म 12 फरवरी सन् 1964 ई0 को उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री अम्बिका प्रसाद दुबे तथा माता जी का नाम श्रीमती इन्द्रा दुबे है। आपका विवाह कोंच निवासी श्री प्रभुदयाल नायक के सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार नायक के साथ हुआ। आपकी तीन सन्तानों में डॉ0 शैली नायक, कु0 प्राची नायक एवं मास्टर अंचित नायक है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1978 ई0 व 1980 ई0 में राजकीय बालिका इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की । पुनश्च बी0ए0 की परीक्षा सन् 1983 ई0 में गाँधी महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। आपने पी–एच0डी0 की उपाधि बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से प्राप्त की। सम्प्रति आप गाँधी महाविद्यालय उरई अर्थशास्त्र विषय की रीडर हैं।

आप स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम में निरन्तर सहभागिता से सामाजिक क्षेत्र में उनका योगदान निरन्तर बना रहता है।

कवयित्री को लेखन की प्रेरणा समाज की स्वार्थपरक सोच से प्राप्त हुई।

आपकी प्रकाशित रचना 'नवसदी के श्रेष्ठ कवि' में अतुकान्त शैली की कविताओं की सहभागिता है जो ABN पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित हैं। आपने अतुकान्त शैली में कविता और गीत लिखे हैं।

आपको अलीगढ़ विश्वविद्यालय में प्रसिद्ध कवि 'नीरज' द्वारा सम्मानित किया गया।

आपने अपनी कविता के माध्यम से समाज में दोहरी जिन्दगी जी रहे लोगों का चित्रण 'बहुरुपिये' शीर्षक से किया है। उनकी ये पक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

दोहरी जिन्दगी जीने वाले लोग,

प्रसिद्ध होते जा रहे हैं।

आडम्बर का जादू दिखाने वाले,

सिद्ध होते जा रहे हैं।[89]

इसी प्रकार 'जिजीविषा' शीर्षक के माध्यम से कवयित्री ने ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया है जो कठिन परिस्थितियों में जी लेता है और अपना मुकाम भी बनाता जाता है। इस कविता में कवयित्री ने पत्थर, काई आदि प्रतीकों का प्रयोग किया है। यथा–

झरने का गिरता हुआ पानी

तोड़ देता है।

बड़े–बड़े शिला खण्डों का घमण्ड

जहाँ किसी का पाँव नही जमता

वहाँ पाँव जमा लेती है काई

जिजीविषा का मतलब पत्थर से नहीं

काई से पूछो।[90]

मनुष्य का शरीर क्षणभंगुर है, और सांसारिक रिश्ते–नाते भी सब झूठे हैं। अच्छा कार्य करने से मनुष्य की कीर्ति ही इस जगती पर रह जाती है। कवयित्री ने 'क्षणभंगुरता' शीर्षक के माध्यम से अपने विचार प्रकट किये हैं–

चार दिवस के नाते रिश्ते,

झगड़े और लड़ाई।

चार दिवस की आपा धापी,

मानव की बरियाई।

अन्त काल में जाना होगा,

सबको निपट अकेला।

साथ न होगा कोई संगी,

हाथ न होगा धेला।

जाने किस क्षण किस दिन किसकी,

मौत कहाँ आयेगी।

काया होगी भस्म कीर्ति बस,

पीछे रह जायेगी।।[91]

कवयित्री डॉ0 अलका नायक ने समाज में फैली असमानता, स्वार्थपरता से व्यथित होकर ही उनके उद्‌गार कविता के रूप में फूट पड़े हैं। अपनी बात को इन्होंने बड़े सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। उन्होंने न तो किसी को डाँटा है और न फटकारा है बस सीधी बात ही सब कुछ कह देती है।

किरण नागर

श्रीमती किरण नागर का जन्म 5 जनवरी सन् 1966 ई0 में सपई जिला कानपुर में हुआ था। आपके पिता का नाम उमाशंकर याज्ञिक (महाराष्ट्रीय ब्राह्मण) तथा माता का नाम श्रीमती उमा शंकर देवी है। आपका विवाह श्री अरुण नागर के साथ हुआ जो जनपद जालौन के हास्य व्यंग्य के अच्छे कवि हैं। आपकी तीन संतानों में दो पुत्र एवं एक पुत्री है। अलंकृत नागर एवं अंकित नागर आपके पुत्र एवं आस्था नागर आपकी पुत्री है।

आपकी विद्यालयी शिक्षा इण्टरमीडिएट तक हुई। आपने हाईस्कूल की परीक्षा छुटकी भण्डार इण्टर कालेज लखनऊ से सन् 1982 ई0 में उत्तीर्ण की। इण्टरमीडिएट की परीक्षा 1993 ई0 में कुसमिलिया इण्टर कालेज कुसमिलिया (उरई) से उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा कवि मंजुल मयंक जी से मिली। अभी तक आपका कोई संकलन प्रकाशित नहीं हुआ है लेकिन विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं। आपके लेखन की विधा छन्द एवं गीत है। इसके साथ ही गाने व नृत्य में रुचि रखती हैं।

आकाशवाणी छतरपुर से भी गीत, कविताएँ प्रसारित होती रही हैं।

आप जागरुक महिला मंच की राष्ट्रीय अध्यक्षा है। आपने वीरांगना झलकारी बाई समिति से पुरस्कार भी प्राप्त किया।

आप सामाजिक बदलाव से क्षुब्ध दिखाई प्रतीत होती हैं जिसमें गाँव का स्नेह, ईमान सब बदल गया है। इस बदलाव का चित्रण आपने इन पंक्तियों में प्रस्तुत किया –

क्या हुआ परिवेश को, बदल गयी परिभाषाएँ

धूप की छाँव की

लहू–लहू हो गई देह

नेह के गाँव की

जाने किसकी लग गई बद्दुआ

विश्वास में विष वास हुआ

ऐसे में कौन करे बात अब

ईमान के थके हुए पाँव की

किसने उड़ा दी हमारे सपनों की चिन्दियाँ

आज फिर चर्चा है सरे आम

समय शकुन के पाँव की

क्या हुआ...................... ।[92]

कवयित्री अभी लिख रही हैं। अगर इनका प्रयास ठीक तरह से चलता रहा तो निश्चित रूप से जनपद में अपना स्थान बनाने में कामयाब जरूर होंगी। आप कितनी ऊँचाइयों को छूती है यह तो अभी समय के गर्भ में है।

विजय कुमार गुप्त

हास्य व्यंग्य से अपनी लेखनी की शुरुआत करने वाले विजयकुमार गुप्त का जन्म 2 अक्टूबर सन् 1969 ई0 को सन्दलपुर (कानपुर देहात) में हुआ था। आपके पिता श्री रमेशचन्द्र गुप्त एवं माता श्रीमती राममूर्ति देवी है। आपका विवाह परौर (कन्नौज)

निवासी श्री बाबूराम गुप्त की सुपुत्री श्रीमती संध्या गुप्ता के साथ हुआ आपके दो पुत्र रॉबिन गुप्त एवं बिट्टू है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1984 एवं 1986 ई0 में सनातन धर्म इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। आपने बी. ए. की परीक्षा सन् 1989 ई0 को दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा कवि सम्मेलनों में कवियों की रचनाएँ सुनने से प्राप्त हुई।

आपके प्रिय साहित्यकार अशोक चक्रधर एवं सुरेन्द्र शर्मा (हरियाणा) है।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नही हुआ है। काव्य गोष्ठियों में आपकी हास्य परक रचनाएँ लोगों के मन को प्रफुल्लित कर देती हैं।

सम्प्रति आप एस.आर.इण्टर कालेज उरई में शिक्षक के पद पर कार्यरत हैं। आप सन् 1980 ई0 से उरई में निवास कर रहे हैं।

कुछ समय पहले चीन देश में 'फ्लूवर्ड' एक नयी बीमारी फैली थी, जिसमें अनेक लोग इस बीमारी के कारण काल कवलित हो गये थे किन्तु शीघ्र ही इस बीमारी पर काबू पा लिया गया था। इसी 'फ्लूबर्ड' बीमारी को लेकर आपने एक हास्य लिखा है जो यहाँ दृष्टव्य है–

'फ्लू वर्ड' का डर अब ऐसा सताता है।
अध्यापक कक्षा में
बच्चों को मुर्गा नहीं बनाता है
बच्चा भी/ अध्यापक को
धमकाता हैं, गुर्राता है

स्कूल नहीं आऊँगा / शोर मचाऊँगा

ज्यादा बोलोगे

तो,

मुर्गा बन जाऊँगा।[93]

सम सामयिक घटनाक्रमों पर आप अपनी कलम को गति प्रदान कराते हैं। 26 दिसम्बर 2004 ई0 को प्राकृतिक समुद्री भूकम्प 'सुनामी' ने लाखों लोगों को अपने आगोश में ले लिया था। कवि ने इस मंजर को टी.वी. में देखा, अखबारों के माध्यम से पढ़ा और उस हादसे को आपने इन शब्दों में व्यक्त किया—

जो चला गया, जो बीत गया, वो बीता कैसा साल रहा

कुछ अच्छा कुछ प्यारा गुजरा, कुछ—कुछ ये बदहाल रहा

× × ×

सोनू को सुनामी ले गयी, सोनम बिन भाई की हो गयी।

न माँ का अपना लाल रहा, न पूछो कैसा हाल रहा।

जो उन पै गुजरी कहीं न गुजरे, बना बनाया कोई न बिगरे

पर मर्जी ऊपर वाले की, जो हम सबको है पाल रहा।

जों चला गया...।[94]

विजय कुमार गुप्त एक प्रतिभाशाली कवि है। प्रचार—प्रसार एवं प्रकाशन के अभाव में यह कवि अभी अंधेरे के गर्त में डूबा है। यदि उचित प्रचार—प्रसार मिलता रहा तो यह साहित्यकार जनपद में अपना गौरव पूर्ण स्थान बना लेगा।

चन्द्रप्रकाश दुबे 'चन्द्र'

नवोदित साहित्यकारों की अग्रिम पंक्ति में चन्द्रप्रकाश दुबे का नाम उल्लेखनीय है। आपने दोहा, पंचचामर, महाभुजंग, प्रयात आदि छन्दों के माध्यम से आपने साहित्य जीवन की शुरुआत की।

चन्द्रप्रकाश दुबे का जन्म 3 नवम्बर सन् 1969 ई0 को बघौरा, उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री ओमप्रकाश दुबे एवं माता का नाम श्रीमती कुसुमा देवी है। आपका विवाह ग्राम विधूना जिला औरैया निवासी श्री चन्द्रिका प्रसाद शुक्ल की सुपुत्री श्रीमती स्नेहलता के साथ हुआ। आपकी दो सन्तानों में पुत्री कु0 सोनल एवं पुत्र शिवम् है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1984 एवं 1986 ई0 में आचार्य नरेन्द्र देव इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। बी. ए. की परीक्षा सन् 1988 ई0 में गाँधी महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा श्री हरिश्याम 'पारथ' के प्रोत्साहन एवं श्री जावेद कुदारी के साथ रहने से मिली।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न समाचार पत्रों में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रही हैं।

आपको विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिनमें 'श्री रघुवीर जानकी पुरस्कार', 'पारथ प्रेम समिति द्वारा, 'प्रबल प्रताप मारुति पुस्तकालय एवं वाचनालय' पुरस्कार माननीय बाबूराम एम.काम. मंत्री खाद्य एवं रसद, भवानी शंकर जन सेवा समिति द्वारा सम्मानित किये गये। इसके अतिरिक्त आप पेण्टिंग में पुलिस लाइन उरई में पुलिस अधीक्षक

द्वारा चार बार सम्मानित हो चुके हैं।

आपकी अधिकतर रचनाएँ श्रृंगार रस से परिपूर्ण हैं। श्रृंगार रस से ओत–प्रोत यह दोहा यहाँ दृष्टव्य हैं–

मीठे–मीठे बैन है, तीखे–तीखे नैन।
जीने देखे प्रेम ते, बाके छीने चैन।।[95]

इसी प्रकार आपने 'महाभुजंग प्रयात' छन्द के माध्यम से नायिका का हँसाना, बुलाना, रुलाना आदि चेष्टाओं का सुन्दर चित्रण किया है–

मुझे याद आया तुम्हारा फसाना
हसीनों तुम्हारा दिलों को लगाना
मनाना, बुलाना, हँसाना, रुलाना
हमारा नहीं है कहीं भी ठिकाना
इरादा नहीं था हमारा सताना
मुझे याद आया तुम्हारा बताना
किसी को किसी से न ऐसे मिलाना
दुबे को पड़ेगा पसीना बहाना।[96]

कवि चन्द्र प्रकाश दुबे ने पारम्परिक छन्दों को अपने काव्य का माध्यम बनाया है। आपकी भाषा साधारण बोलचाल की भाषा है। आपकी अधिकांश रचनाओं में श्रृंगार रस का परिपाक हुआ है। आप साहित्य साधना में सतत् प्रयासरत हैं।

शफीकउर्रहमान 'कशफी'

शफीकउर्रहमान युवा पीढ़ी के ऐसे गजलकार है जिनकी गजलों में समाज, देश एवं प्यार–मुहब्बत का जज्बा विद्यमान

रहता है। जिसे पढ़कर–सुनकर दिल वाह –वाह कहने को मजबूर हो जाता है। इनके गजल पढ़ने का अन्दाजा सबसे अलग है।

शफीकउर्रहमान 'कशफी' का जन्म 6 दिसम्बर 1969 ई0 को उरई नगर में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री सलीम खाँन थे। आपकी माता का नाम श्रीमती मुन्नी बेगम है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1983 ई0 में जी.आई0सी0 उरई से उत्तीर्ण की। कारण वश आपकी शिक्षा हाईस्कूल से आगे न बढ़ सकी और यहीं (उरई नगर) में अपना छोटा सा व्यवसाय शुरु कर दिया जो आपकी जीविका का साधन है।

आप वर्तमान में अपने निज निवास 205 शिवपुरी उरई (जालौन) में निवास करते हैं तथा इसी नगर के समाजवादी पार्टी के नगर प्रवक्ता हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा उस्ताद शायर जनाव स्व. बाबू खाँन (पागल) साहब से मिली।

आपको 'नौ बहारे अदब' एवं 'गौहरे अदब' की उपाधि से नवाजा गया है।

अभी तक आपका कोई भी ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु आपके कत्आत तथा गजलें महफिल में समां बाँध देते हैं। कुछ गजलें यहाँ दृष्टव्य है–

मुझको ये फिक्र मिले, मुझको फ़राज़ी पहले
दिल ये कहता है कि बनूँ इक नमाज़ी पहले
मेरे मावूद ज़माने का तक़ाज़ा ये है
कि बनूँ आज के हालात में ग़ाज़ी पहले।[97]

जो दीन और धर्म को हथियार बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना

चाहते हैं ऐसे लोगों से वह कहता है कि–

जीना इन्सान का दुशवार बनाने वालो
कुछ तो सोचो ज़रा सरकार बनाने वालो
अजमते हिन्द को पाक़ीज़ा बना रहने दो
दीन और धर्म को हथियार बनाने वालो।[98]

आज ये संसार ऐटम बम की नींव पर रखा हुआ है। पता नहीं है यह कब इस संसार को शोलों में बदल दे उसके लिये बस एक चिनगारी की जरूरत है। आज दुनिया ऐटम बमों से भयभीत है। इसी सन्दर्भ में शायर के विचार–

ये आलसी निज़ाम भी ज़ेरो ज़वर है बस
अन्जाम से इन्सान अभी बेखबर है बस
है ऐटमी कगार पे दुनियाँ खड़ी हुई
चिंगारी डाल दे कोई इतनी कसर है बस।[99]

आपका ये कत्आत दिल में मीठी–मीठी गदगुदी पैदा कर देता है–

ये रोना लाख भला मुझको जब हँसाई से
उम्मीद अपनी क्या रखते किसी पराई से।
दुलहन के रूप में देखा तो पलकें भीग गयीं
बला का दर्द मिला उनकी मुँह दिखाई से।।[100]

आपने अपनी गज़लों में सामाजिक, राजनीतिक एवं वर्तमान परिस्थितियों को अपने लफ़्ज़ के सहारे उतारा है। आपकी ये गज़ल दृष्टव्य है–

हमारी कहानी पुरानी बहुत है,
मगर इस दरिया में पानी बहुत है।
फ़कीरों की सफ़ में तो वो भी खड़ा है,

जिसे लोग कहते थे दानी बहुत है।

है भारत का बचपन जो नंगा व भूखा,

तो फिर चार दिन की ज़वानी बहुत है।

फ़िज़ाओं में बिखरी है ज़ुल्फ़ों की खुशबू,

तुम्हें ढूँढ़ लेंगे निशानी बहुत है।

वो अहवाल अपना पूछेंगे कशफ़ी

बता देना आँखों में पानी बहुत है।[101]

शायर शफीकउर्रहमान 'कशफी' अच्छे शायर है। कवि गोष्ठियों में आप अपनी शायरी से गोष्ठी में समां बाँध देते हैं। आप नवोदित साहित्यकारों में उभरते हुए कलाकार हैं। आगे कहाँ तक आप पहुँच पाते हैं यह तो वक्त ही बतायेगा।

अपर्णा खरे

अपर्णा खरे सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं युग कवि डॉ0 रामस्वरूप खरे पूर्व प्राचार्य दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई की कनिष्ठा आत्मजा है। आपकी माता श्रीमती कमला देवी एक अत्यन्त विनम्र समाज सेवी एवं साहित्यानुरागिनी संभ्रान्त महिला है। पूर्व में आप भवानीशंकर सरस्वती शिशु एवं विद्या मन्दिर की व्यवस्थापिका भी रह चुकी हैं।

महाकवि हरिश्याम 'पारथ' (प्रणेता निर्बल के बलराम) ने गुरुवर स्वरूप जी एवं गुरुमाता के नाम पर 'कमला स्वरूप' नितान्त अभिनव वर्णवृत्त की रचना करके उनकी महानता का परिचय दिया है। इसमें 42 सर्ग 4545 छन्द हैं।

अपर्णा बचपन से ही अत्यधिक प्रतिभाशालिनी रही हैं। विरासत रूप

में अपने पिता श्री से जो सारस्वत अवदान प्राप्त हुआ, उसी के कारण यह साहित्य जगत में अपना नाम उजागर कर सकी। तदनुसार वि0 सं0 2029 पौष शुक्ल पक्ष 3 रविवार श्रावण नक्षत्र में 15 जूलाई 1973 प्रातः 2.30 बजे जालौन जिला के मुख्यालय उरई में परम गृहस्थ संत श्री भवानी शंकर जी महाराज के चन्द्र नगर अवस्थित आश्रम में आपका जन्म हुआ।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद उ0प्र0 से क्रमशः आर्य कन्या इण्टर कालेज तथा राजकीय इण्टर कालेज से संस्थागत छात्रा के रूप में द्वितीय श्रेणी में सन् 1987 एवं 1989 ई0 में उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1992 ई0 में जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से बी0ए0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके गृह जनपद का नाम उजागर किया। पुनश्च जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से ही आपने एम0ए0 की परीक्षा प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व लेकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके माता–पिता के यश सौरभ को चतुर्दिक मुखरित किया। सन् 1996 ई0 में बुन्देलखण्ड वि0वि0 झाँसी से सम्बन्ध दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से बी0एड0 की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात सन् 1998 ई0 में यहीं से हिन्दी साहित्य विषय लेकर एम0ए0 की उत्तरार्द्ध परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करके पिता श्री की इच्छा पूरी की। दिसम्बर 1999 ई0 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग दिल्ली से आयोजित 'नेशनल एजूकेशन एविलिटी टेस्ट' का लैक्चर शिप (NET) परीक्षा इतिहास विषय लेकर सफलता पूर्वक उत्तीर्ण की। 28 जनवरी 2002 को इतिहास विषयान्तर्गत 'इतिहास एवं पुरातत्व को जनपद जालौन की देन' विषय पर उत्कृष्ट शोध प्रबन्ध लिखकर एवं जमा करके अपनी

अनुसन्धान वृत्त से सभी को अवगत एवं अचम्भित किया।

इस शैक्षिक विवरण के अतिरिक्त आप में पत्रकारिता की अनूठी क्षमता विद्यमान है। विचार मीमांसा, नई दुनियाँ, दैनिक भास्कर के सम्पादकीय विभागों में सम्बद्ध रहकर दीपावली विशेषांक का सम्पादन किया और अच्छी खासी प्रशंसा अर्जित की। यहीं से आपने 'प्रांकुर' नामक हिन्दी की मासिक पत्रिका का प्रधान सम्पादक का गुरुतर दायित्व निभाया। भोपाल से वापस आकर आपने एक वर्ष तक अर्चना माहेश्वरी कन्या हाईस्कूल राजेन्द्र नगर उरई में सहायक आचार्या के रूप में अपना अभूत पूर्व योगदान किया। इसके बाद एक वर्ष तक डी0वी0सी0 उरई में हिन्दी विभाग से सम्बद्ध रहकर स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में हिन्दी साहित्य का प्रशंसनीय प्राध्यापन कार्य किया। अनन्तर एक वर्ष महारानी लक्ष्मीबाई शिक्षण संस्थान (हाईस्कूल) में प्रधानाचार्या का दायित्व निभाया है। इसी बीच न्यू लाइफ सर्किल स्टडी सेन्टर द्वारा संस्थापित पी0सी0एस0 व आई0ए0एस0 एवं प्रशासनिक प्रतियोगिताओं की तैयारी करने हेतु इनमें मार्ग दर्शन किया। सम्प्रति रामस्वरूप यादव महाविद्यालय पूँछ–झाँसी में हिन्दी विभाग में प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं।

डॉ0 सर्वेश कुमार खरे प्राध्यापक डी0एस0एन0 कालेज उन्नाव, अतुल कुमार खरे, स्वामी दर्पण प्रकाशन नाडियाड गुजरात, देवेश कुमार खरे आकाश वाणी लखनऊ एवं ब्रह्मानन्द खरे प्रवक्ता रसायन विज्ञान शहीद भगत सिंह साइंस कालेज, उरई चारों आपके अग्रज बन्धु हैं। आपकी सबसे बड़ी बहिन श्रीमती स्नेहलता श्रीवास्तव राजकीय इण्टर कालेज ललितपुर में प्रवक्ता हैं जो सुरेश चन्द्र श्रीवास्तव सहा0 बे0 शिक्षा अधिकारी को ब्याहीं गयी हैं।

परम पूज्य गुरुदेव डॉ0 रामस्वरूप खरे जी ने सन् 1975 के सितम्बर

मास में अभिनव साहित्य परिषद् की संस्थापना की जिसमें जनपद जालौन के एवं अन्यान्य जनपदों के कवि साहित्यकारों ने अपना सारस्वत योगदान देकर इस संस्था को अखिल भारतीय स्तर का स्थान प्रदान कर दिया। इस परिषद् की नियमित साहित्यिक गोष्ठियाँ स्मरणीय ही नहीं वरन् पूर्णरूपेण उल्लेखनीय रहीं जिनमें एकल काव्य पाठ, कहानी वाचन, कवि सम्मेलन, गोष्ठियाँ तथा शायरों के योगदान आदि पर समय–समय पर परिचर्चाएँ आयोजित की जाती थीं। इस परिषद द्वारा अनेकानेक कवियों, साहित्यकारों को उनकी हिन्दी साहित्य की सेवा के उपलक्ष्य में पुरस्कृत भी किया जाता था। तात्पर्य यह है कि डॉ0 खरे साहब का 5 प्राध्यापक निवास सचमुच एक प्रयाग जैसा तीर्थस्थान बन गया था। इस साहित्यिक वातावरण का प्रभाव अपर्णा के मन पर पड़ा और उसे यह भान तक नहीं हुआ कि वह अपनी षोडश युवावस्था में कैसे कवयित्री बन गयी। काव्य गोष्ठियों में उनकी रचनाएँ विद्वानों के द्वारा खूब सराही जाने लगीं।

अपर्णा जी की सर्वप्रथम प्रकाशित रचना कादम्बिनी पत्रिका (सम्पादक राजेन्द्र कुमार अवस्थी) में प्रकाशित हुई थी जिसे अत्यधिक सराहा गया। आपके लगभग 80 लेख, 45 कविताएँ एवं रेडियों रूपक प्रकाशित प्रसारित हो चुके हैं। सुन्दर एवं मधुर गीतों के लिये आप प्रायः सर्वाधिक चर्चित हैं। बृजभाषा की एक प्रसिद्ध रचना यहाँ दृष्टव्य है–

बैठी हुती सखियान के बीच,

कि श्याम अचानक आय गयौ री।

रीझौ हुऔ कछु खीझौ हुऔ,

सखि देखत ही मुसकाय गयौ री।

तोर–मरोर कै कंज कलीन कौ,

बीथिन माँझ बिछाय गयौ री।।[102]

प्रत्येक कवि भगवती सरस्वतती का आराधन किसी न किसी रूप में करता है। अपर्णा ने भी पारम्परिक रूप में सरस्वती स्तवन प्रस्तुत किया है जो इस प्रकार है–

मातु श्वेत वस्त्र धार, कण्ठ में जलज हार,

मेरे मन मानस के हंस पै विराजिये।

एक हाथ वेद ऋचा, दूसरे में दिव्य पुष्प,

मेरे मन मन्दिर में ज्ञान दीप वारिये।।

हाथ में लिये हुए हैं वीणा सुख दायिनी देवि,

कस मंजु मधु तार बुद्धि को सुधारिये।

दीन हीन मति हीन अति सुअम्ब मोहि

कीजे न बिलम्ब अब डूबत उबारियो।।[103]

खड़ी बोली हिन्दी में आपकी 'प्रभात' शीर्षक रचना अत्यन्त प्रसिद्ध है। सम्पूर्ण गीत में सरस मधुर एवं प्रभाव शालिनी शैली के दर्शन और प्रसाद गुण प्रशंस्य है। यथा–

उषा पूर्व में प्रकट हो गई, खोल भोर का द्वार।

देखो शीतल मंद सुगंधित बहने लगी बयार।।

वन उपवन में कलरव गूँजा।

दूर हो गई सकल कालिमा।

पूर्व दिशा में मृदु अधरों पर

खेल रही है सुखद लालिमा।।

सुखदा सूर्य रश्मियाँ पाकर जाग उठा संसार।

हुई कंज कलिकाएँ प्रमुदित, पा प्रियतम का प्यार।।

गुन–गुन गाती भ्रमरावलियाँ

पी पराग के चषक सुहाने।

सुखद धूप की सखियाँ गातीं

मधुर प्रभावी मनहर गाने।।

खग उड़ते सब नील गगन में स्वर्णिम पंख पसार।

सचमुच है स्वतन्त्रता में सुख, कह–कह बारम्बार।[104]

उनकी प्रिय शिष्या श्वेता दीक्षित जो एम.ए. हिन्दी की छात्रा रही ने उनके अध्यापन व्यक्तित्व और स्वभाव के विषय में लिखा है–

चन्दा सी मन मोहक छवि आपकी

बेला सी मधुर गंध आपकी

चाल छन्द जैसी है मन भावन आपकी

भुला नही पाती मैं।[105]

आप जहाँ कबीर, तुलसी, जायसी, सूर, चन्द्रवरदायी विद्यापति से प्रभावित हैं वहीं आपको रामचन्द्र शुक्ल की समीक्षा पद्धति बड़ी ही भली लगती है। आधुनिकतम् लेखकों एवं कवियों में हरिवंश राय 'बच्चन', डॉ0 रामकुमार वर्मा, उपन्यास सम्राट प्रेमचन्द्र, श्री विद्या निवास मिश्र, महादेवी वर्मा, अमृता प्रीतम, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी से प्रभावित हैं।

गद्य लेखन भी आपका प्रौढ़ एवं परिष्कृत है। आपकी सम्पादकीय टिप्पणियाँ और सामयिक लेख विद्वानों द्वारा प्रशंसित हैं।

शिखा दीक्षित

जनपद जालौन की साहित्यिक परम्परा में एक नाम कु0 शिखा दीक्षित का है। अल्पायु में ही आपके हृदय में काव्य का बीजारोपड़ हो गया है और वह बीज अब अंगड़ाई लेकर विशाल वट वृक्ष का रूप धारण करने को तत्पर दिखाई पड़ रहा है। यदि उसे अनुकूल परिवेश मिलता रहा तो निश्चित रूप से मेरी इस धारणा को सच साबित करके दिखा भी देंगी।

कु0 शिखा दीक्षित का जन्म 2 जून सन् 1983 ई0 को उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री राजेशकुमार दीक्षित एवं माताजी श्रीमती प्रभा दीक्षित है। आपके प्रपिता श्री श्री बल्लभ दीक्षित जनपद के अच्छे साहित्यकारों में से एक थे। आपका बड़ा भाई शेखर दीक्षित एवं छोटे भाई बहन शिवम् दीक्षित व शिवा दीक्षित है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1997 एवं 1999 ई0 में आर्य कन्या इण्टर कालेज, उरई से उत्तीर्ण की। पुनश्च बी.ए. की परीक्षा सन् 2002 ई0 में सनातन धर्म बालिका महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। एम.ए. (अर्थशास्त्र) की परीक्षा 2004 ई0 में दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप इसी कालेज दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई में मानदेय पर अध्यापन कार्य कर रहीं हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा अपने प्रपिता श्री श्री बल्लभ दीक्षित जी से प्राप्त हुई।

आपका अभी कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। अभी आप

अपनी रचनाओं को अपनी डायरी के पन्नों में उतारतीं जा रही हैं। डायरी वाली कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य है–

नारी ने नारी को समझा एक माटी का पुतला
पग–पग पर किया अपमान समझ के अबला।
परिवार के लिये करती वह अपना जीवन उत्सर्ग
मानव कहता विधि का विधान है ये उत्सर्ग।
माँ की ममता है उसमें और है परिवार का मान
फिर भी लोग उसे क्यों देते हैं सम्मान?

× × ×

कोई और क्या समझे त्याग की मूरत को
औरत समझ न पायी औरत को।[106]

कवयित्री साहसी एवं ठोस इरादों वाली एक ऐसी लड़की है जो अपने बल पर अपना भाग्य खुद संवारना चाहती है और बुलन्दियों को छू लेना चाहती है ताकि उसका नाम स्वर्णाक्षरों में हमेशा लिखा रहे। 'आकांक्षा' शीर्षक कविता से कवयित्री की यह रचना दृष्टव्य है–

मैं हर पल को जीना चाहती हूँ,
बुलन्दियाँ आसमां भी छूना चाहती हूँ।
चाहती हूँ हर बेड़ियों को तोड़ना,
उन्मुक्त पवन बनकर उड़ना चाहती हूँ।
मैं रजनी के तिमिर में प्रभा लाना चाहती हूँ।
करना चाहती हूँ साकार जीवन का हर सपना,
हर दुख की पीड़ा समझना चाहती हूँ।

मैं हर मन में छिपी व्यथा जानना चाहती हूँ।[107]

कवयित्री ने अभी साहित्यिक क्षेत्र में अपना पहला कदम बढ़ाया है। बिना कदम डगमगाये वह ऊँचाइयों की तरफ बढ़ती जा रही है। प्रयास कर रही है— सतत्, क्रियाशील हैं।

प्रज्ञा श्रीवास्तव 'आकांक्षा'

जब हृदय की अतल गहराइयों में भावनाएँ उद्वेलित होकर शब्दों को लय बद्ध करके कोरे कागज पर उतरकर गीत, गजल, कविता का रूप धारण कर लेती हैं तब कवि का जन्म होता है। व्यक्ति अपने जीवन की कुण्ठा, निराशा, आनन्द की अभिव्यक्ति से हृदय के उद्‌गारों को अपने आप से कहता चला जाता है। इन भावनाओं का साधारणीकरण होकर उसके हृदय को असीम आनन्द से भर देता है। आगे चलकर यही स्रोत निर्झर का रूप धारण करके संसार के प्राणियों की प्यास बुझाकर वातावरण को हरा—भरा बनाता जाता है।

कु0 प्रज्ञा श्रीवास्तव ऐसे नवोदित साहित्यकारों में से एक है जिसने विद्यार्थी जीवन में ही काव्य रचना का प्रारम्भ कर दिया और अपने गीत एवं गजल के माध्यम से सहृदय पाठकों के द्वारा प्रशंसा प्राप्त की। कु0 प्रज्ञा श्रीवास्तव का जन्म 25 मार्च सन् 1985 ई0 में उरई में हुआ था। आपके पिता श्री बृजनारायण श्रीवास्तव एवं माता श्रीमती रानी श्रीवास्तव हैं।

प्रज्ञा श्रीवास्तव ने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1999 ई0 में राजकीय बालिका इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण करने के पश्चात् इसी विद्यालय से इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 2001 में उत्तीर्ण की। वर्तमान में आप दयानन्द

वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई में अध्ययनरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा अब्दुल हफ़ीज अन्सारी की नज्म पढ़कर मिली। अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपके गीत, गज़लें प्रकाशित होती रहती हैं।

आपकी गजलों और गीतों का विषय प्रेम रहा है। आपने श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग और वियोग) का उद्‌घाटन अपनी लेखनी के माध्यम से किया। इन्ही विषयों पर आपकी कुछ रचनाएँ दृष्टव्य हैं–

देखी है हमने मुहब्बत बेशुमार आपकी आँखों में।
भरा हो जैसे प्यार ही प्यार आपकी आँखों में।।
आपकी मुहब्बत का अंदाज निराला है।
छुपा है जैसे कोई कलाकार आपकी आँखों में।

× × ×

आपको समझ जाऊँ ये 'आकांक्षा' है मेरी
दिखा है मुझे राज, हर बार आपकी आँखों में।[108]

इसी तरह आपकी ये वियोग की रचना अच्छी बन पड़ी है। निम्नलिखित रचना यहाँ दृष्टव्य है–

किससे पूँछूँ तेरा पता, किससे लूँ तेरी खबर।
ढूँढ़ती हैं चारों तरफ मुझको मेरी नजर।।

× × ×

कितनी मुद्‌दत के बाद आये हो इन गलियों में,
चले जाना ठहरो तो सही प्रहर दो प्रहर।[109]

नायिका को अपने नायक की आँखे बहुत सुन्दर व भली लगती

हैं।उसकी खुबसूरत आँखों को देखकर नायिका कहती है–

तुम्हारी आँखे........
इतनी गहरी, इतनी प्यारी
लगता है सारी दुनिया
इन आँखों में समा जायेंगी।
एक कशिश है इनमें
और मेरा चेहरा पढ़ने
की शक्ति है इनमें।
चाहती हूँ देखती रहूँ इन्हें
ऐसे की पलक न झपके और
भर लूँ इन आँखों का प्यार मैं
अपने दिल में
मगर कहाँ देख पाती हूँ।[110]

कवयित्री कु0 प्रज्ञा श्रीवास्तव 'आकांक्षा' नवोदित पीढ़ी की साहित्यकार हैं। ये हिन्दी साहित्य को कितनी ऊँचाइयों तक ले जायेंगी यह तो अभी समय के गर्भ में छिपा है। फिलहाल कवयित्री इस क्षेत्र में पूरी तरह से समर्पित दिखाई देती हैं।

1. पंचामृत, रचयिता, नन्दराम शर्मा प्रकाशक– श्री विश्वनाथ जी कौशल, पृ0सं0 3
2. पंचामृत, रचयिता, नन्दराम शर्मा प्रकाशक – श्री विश्वनाथ जी कौशल, पृ0सं0 39,40
3. पंचामृत, रचयिता, नन्दराम शर्मा प्रकाशक – श्री विश्वनाथ जी कौशल, पृ0सं0 24
4. पंचामृत, रचयिता, नन्दराम शर्मा प्रकाशक – श्री विश्वनाथ जी कौशल, पृ0सं0 24
5. कवि के भाई श्री रामजी कुमार सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 19/07/2003
6. कवि के भाई श्री रामजी कुमार सक्सेना से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 19/07/2003
7. 'दीवार में दरार है, रचयिता, गोपाल कृष्ण सक्सेना, 'पंकज', प्रकाशक मेधा बुक्स दिल्ली, 110032, पृ0सं0 22
8. 'दीवार में दरार है, रचयिता, गोपाल कृष्ण सक्सेना, 'पंकज', प्रकाशक मेधा बुक्स दिल्ली, 110032, पृ0सं0 5

9,10,11 कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 26/01/03

12,13 कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 26/01/03

14 कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 09/01/2003

15 कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 09/01/2003

16 कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 09/01/2003

17. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 16
18. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 24
19. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 24
20. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 25

21. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 25,26

22. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 19

23. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 95

24. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 60,61

25. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 5

26. 'तपस्या के प्रसून' रचयिता, यज्ञदत्त त्रिपाठी, प्रकाशक–कविता प्रकाशन, राठ रोड, उरई, पृ0सं0 110

27. सर्जना 2003 सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं019

28. साक्षात्कार द्वारा कवि से सुनी गई रचना, साक्षात्कार का दिनांक, 23/12/2003

29. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक, 22/02/2004

30. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 22/02/2004

31. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 22/02/2004

32. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशन–अपर्णा प्रकाशन, उरई शुभाशीष श्रृंखला में युगकवि डॉ0 राम स्वरूप खरे जी द्वारा कवि परिचय पुस्तक 10–04–1984

33. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशन–अपर्णा प्रकाशन, उरई शुभाशीष श्रृंखला में युगकवि डॉ0 रामस्वरूप खरे जी द्वारा कवि परिचय पुस्तक10–04–1984

34. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशन–अपर्णा प्रकाशन, उरई शुभाशीष, श्रृंखला में, युगकवि डॉ0 राम स्वरूप खरे जी द्वारा कवि परिचय पुस्तक

35. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशन—अपर्णा प्रकाशन, उरई शुभाशीष, श्रृंखला में युगकवि डॉ0 राम स्वरूप खरे जी द्वारा कवि परिचय पुस्तक
36. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशक— अपर्णा प्रकाशन, उरई
37. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशक— अपर्णा प्रकाशन, उरई पृ0 सं010
38. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशक— अपर्णा प्रकाशन, उरई पृ0 सं086
39. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशक— अपर्णा प्रकाशन, उरई पृ0 सं0 104
40. 'बात कर गये नयन', रचयिता, योगेश्वरी प्रसाद 'अलि' प्रकाशक— अपर्णा प्रकाशन, उरई पृ0 सं0 102
41. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 30.04.2003
42. सर्जना 2003 सम्पादक – डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 50
43. सर्जना 2003 सम्पादक – डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 51
44. काव्य मञ्जूषा 2003 सम्पादक— प्रवीण सक्सेना 'उजाला', पृ0सं0 82
45. काव्य मञ्जूषा 2003 सम्पादक— प्रवीण सक्सेना 'उजाला', पृ0सं0 83
47,48,49, कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 14/09/2004
50. 'प्रज्ञा' पत्रिका सनातन धर्म इ0का0, 1997—98 अंक—9 सम्पादक— धर्मनाथ प्रसाद
51. 'काव्य मञ्जूषा' 2003 सम्पादक— प्रवीण सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 73
52. 'काव्य मञ्जूषा' 2003 सम्पादक— प्रवीण सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 74
53. कवयित्री द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 26/01/03
54. कवयित्री द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 26/01/03
55. कवयित्री द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 26/01/03
56. 'अनुभूति के क्षण' सम्पादक— डॉ0 राम स्वरूप खरे, पृ0सं0 43

57. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 08/01/2003
58. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 08/01/2003
59. 'अनुभूति के क्षण' सम्पादक– डॉ0 राम स्वरूप खरे पृ0सं0 45
60. जालौन जनपद के साहित्यकार, 1995, सम्पादक– नासिर अली, 'नदीम', पृ0सं0 143
61. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 8/01/2003
62. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 8/01/2003
63. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 04/04/2004
64. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 04/04/2004
65. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 04/04/2004
66. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 25/01/2003
67. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 25/01/2003
68. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, उजाला, पृ0सं0 64
69. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, पृ0सं0 65
70. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, पृ0सं0 66
71. स्वर्ण जयन्ती विशेषांक, 1979–80, डी.ए.वी. इण्टर कालेज, उरई जालौन, सम्पादक– महेन्द्र प्रकाश गुप्त, पृ0सं0 75
72. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त उनके विचार, साक्षात्कार का दिनांक 05/05/2003
73. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक– प्रवीण कुमार 'उजाला', पृ0सं0 55
74. कवि के द्वारा साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 05/05/03
75. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीणकुमार 'उजाला' पृ0सं0 54
76. सर्जना 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 143
77. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक– डॉ0 श्याम सुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 79
78. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक –डॉ0 श्याम सुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 25
79. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक –डॉ0 श्याम सुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 19
80. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक –डॉ0 श्याम सुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 63

81. सर्जना 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 58

82 काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला', पृ0सं0 53

83. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक – डॉ0 श्यामसुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 6

84. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक –डॉ0 श्यामसुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 8

85. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक –डॉ0 श्यामसुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 13

86. 'शून्य की संचेतना' सम्पादक –डॉ0 श्यामसुन्दर 'सुमन', पृ0सं0 13

87. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 25/06/2003

88. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 25/06/2003

89,90,91 कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/2004

92 कवयित्री द्वारा साक्षात्कार से प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक, 05/05/2003

93. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 15.3.2005

94. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 15.3.2005

95. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 13.12.2004

96. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 13.12.2004

97 शायर से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 5/10/2003

98 शायर से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 5/10/2003

99 शायर से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 5/10/2003

100 शायर से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 5/10/2003

101 शायर से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 5/10/2003

102,103,104,105 कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 23/07/03

106,107 कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 10/12/2004

108 काव्य मञ्जूषा 2003, सम्पादक– प्रवीण सक्सेना, 'उजाला', पृ0सं0 14

109 काव्य मञ्जूषा 2003, सम्पादक– प्रवीण सक्सेना, 'उजाला', पृ0सं0 13

110 सर्जना 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 174

षष्ठ अध्याय

कालपी तहसील के साहित्यकार

हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल'
जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति
उमाश्री
राजेन्द्र सिंह (नूरपुर वाले)
सुरेश चन्द्र त्रिपाठी
डॉ० जयश्री पुरवार
ठाकुर दास पाल
अब्दुल रहमान 'रब्बानी'
विशम्भर नाथ शुक्ल 'घायल'
मंजू गुप्ता
प्रमोद कुमार 'कुदरती'
प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला'
रविकान्त 'नेशे'

हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल'

कवि हरिनारायण श्रीवास्तव व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते हैं। वर्तमान भौतिकवादी एवं राष्ट्र में फैलती पश्चिमी सभ्यता, शिक्षा का गिरता स्तर, देश की पेचीदा राजनीति एवं धर्म के नाम पर समाज को खण्ड–खण्ड करने वाली विकृत मानसिकता पर बड़े ही सटीक एवं संयत रूप से व्यंग्य के माध्यम से इन समस्याओं को उठाया है। इसके साथ ही इन समस्याओं के समाधान की ओर संकेत किये हैं। वर्तमान समाज में चारों ओर भ्रष्टाचार व्याप्त है। मनुष्य अपनी सर्व सुविधा प्राप्त करने की लालसा में पतन के गड्ढ़े में गिरता जा रहा है। परिश्रम वह करना नहीं चाहता है इन सब पर इनकी लेखनी ने तीखा प्रहार किया है।

इस महान व्यंग्यकार का जन्म कालपी तहसील के हरकूपुर ग्राम में 9 जुलाई सन् 1933 ई0 को हुआ था। इनके पिता का नाम स्व0 श्री सत्ती प्रसाद श्रीवास्तव तथा माता का नाम स्व0 श्रीमती सरस्वती देवी था। श्रीमती सरस्वती देवी जालौन निवासी श्री रामकुमार श्रीवास्तव की सुपुत्री थी। इनका पालन इनके मामा स्व0 श्री सूबालाल श्रीवास्तव के यहाँ हुआ। इनके मामा के जीवन की हर क्रिया व्यंग्य से परिपूर्ण थी। उन्हीं से इन्हें व्यंग्य लेखन की प्रेरणा प्राप्त हुई। ये सन् 1961 ई0 से जालौन नगर में आकर रहने लगे थे।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1956 ई0 एवं 1958 ई0 में व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण कीं। सन् 1961 ई0 में आपने बी0ए0 की परीक्षा भी व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की और बी0एड0 की परीक्षा

डी0वी0 कालेज कानपुर से उत्तीर्ण की।

इसके पश्चात् आप अध्यापन कार्य करने लगे थे। इनका उपनाम 'विकल' है।

हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल' का विवाह ग्राम मड़ोरी जिला जालौन निवासी श्री रामनारायण श्रीवास्तव की सुपुत्री श्रीमती उमा देवी श्रीवास्तव के साथ हुआ। आपकी पाँच सन्तानों में दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हैं। बड़े पुत्र का नाम अशोक कुमार श्रीवास्तव है। दूसरे पुत्र सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव हैं जिनका विवाह मोंठ निवासी ओंमकार सिंह खरे की सुपुत्री श्रीमती प्रीति श्रीवास्तव के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री कु0 प्रियंका श्रीवास्तव एवं दो पुत्र राहुल व वरुण हैं जो विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। कवि की बड़ी बेटी श्रीमती शशि श्रीवास्तव का विवाह नागपुर में पार्श्व सन्स कम्पनी के मैनेजर श्री चन्द्रप्रकाश श्रीवास्तव के साथ हुआ। उनके दो पुत्र सचिन व संदीप हैं। दूसरी पुत्री श्रीमती कल्पना श्रीवास्तव गोखिया जिला बाँदा के ओमप्रकाश श्रीवास्तव को ब्याहीं गयीं हैं। उनकी दो सन्तानों में विशाल व कु0 रोशनी श्रीवास्तव है। कवि की तीसरी पुत्री अल्पना श्रीवास्तव है जो दुर्भाग्यवश वैधव्य जीवन व्यतीत कर रही हैं। उनका एक पुत्र वासु श्रीवास्तव है।

इनके बचपन की स्मरणीय घटना में आपने बचपन में नाले में डूबती हुई एक लड़की को बचाया था और विद्यालयी जीवन की एक घटना में एक्सीडेंट में एक लड़के की जान बचाकर सबसे अच्छा मानवीय उदाहरण पेश किया था।[1]

आप व्यंग्य की साक्षात् प्रतिमा हैं। आपके बचपन की एक अन्य घटना भी इसी व्यंग्य से ओत प्रोत है–

''एक बार मकर संक्रान्ति के त्योहार पर इनकी माता जी ने इन्हें पिसनारी को लड्डू देने को कहा। लड्डू दो प्रकार के बने हुए थे– बड़े व छोटे । कवि बड़ा लड्डू लेकर गया तो इन्हें लगा कि शायद माँ रुष्ट है तो बडे लड्डू के साथ छोटे लड्डू को भी साथ में ले जाकर उसे दे दिया जबकि छोटा ही लड्डू देना था।[2]

आप जनपद के ऐसे व्यंग्यकार है जिन्होंने समाज एवं राष्ट्र में व्याप्त बुराइयों पर अपने व्यंग्य का प्रहार किया है। इसी प्रकार के व्यंग्य से ओत–प्रोत यह रचना दृष्टव्य है–

कैसा अन्तर्द्वन्द्व हो रहा, क्षण–प्रति–क्षण छलछन्द हो रहा।
निराकरण रह गया निरुत्तर, दन्द–फन्द निर्द्वन्द्व हो रहा।।[3]

आपने चरित्र और नैतिकता पर भी तीखा व्यंग्य किया है। आपका यह व्यंग्य यहाँ दृष्टव्य है–

खाकर मैनडेक्स की गोली
नैतिकता चरित्र से बोली
ह्विस्की के दो पैग लगाओ
क्यों हताश बैठे हम जोली
बप्पी लहरी साज बजाओ
हिल मिल डिस्को डांस रचाओ
जमकर अंग–अंग थिरकाओ
हाँफ–हाँफ कर गाना गाओ।[4]

''विकल' जी ने आज के शासन प्रबन्ध पर भी करारी चोट की है–

सच्चा सचमुच रोग ग्रस्त है

और व्यवस्था पूर्ण ध्वस्त है

किये अराजकता आतंकित

जन जीवन सब अस्त–व्यस्त है

मनमानी कर रहा प्रशासन

कहीं नहीं दिखता अनुशासन।[5]

'विकल' जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। जहाँ कवि ने शासन तन्त्र पर करारी चोट की है वहीं प्रजातन्त्र सरकार की वास्तविक स्थिति का चित्रण किया है। प्रजातन्त्र कैसा होना चाहिये। देश पर मँहगाई आतंकवाद को वे प्रशिक्षण के रूप में मानते हैं। यथा–

जनता हित में जनता द्वारा

चुनी हुई सरकार

हमारी जनता की सरकार

कर रही जन–जन का उद्धार

धन्य है प्रजातन्त्र सरकार।

कहते है कुछ लोग कि शासन

ढीला–ढीला है,

और प्रशासन मनमौजी

उद्दण्ड हठीला है।

तो क्या यह तो स्वतन्त्रता को

पनपाने वाली

प्रजातन्त्र की प्रगतिशील

प्रायोगिक लीला है।[6]

कवि ने गाँधीवादी दर्शन को अपने भावों के माध्यम से इन पंक्तियों में क्रमबद्ध किया है–

जीवन दर्शन की वीणा पर, सत्य अहिंसा प्रेम स्वरों में,
गाँधीवाद अपूर्व रागिनी, घर–घर जाकर सुना रहा है।[7]

पश्चिमी सभ्यता के अंधानुकरण पर विकल जी ने यह व्यंग्य रचना प्रस्तुत की है। इस रचना का शीर्षक 'कुछ पता नही' के माध्यम से कितनी करारी चोट की है–

इस नई सभ्यता का विकास
कितना होगा कुछ पता नहीं

× × ×

यह नई सभ्यता भारत में
पश्चिमी मार्ग से आई थी
कुछ चटकीले पर खर्चीले
पहनावे लेकर आई थी,

इन पहनावे का आकर्षण
धोती कुर्ता से जीत गया
यह नेक टाई का फन्दा भी
सादा साफी से जीत गया।[8]

कवि खड़ी बोली के साथ –साथ बुन्देली भाषा का भी ज्ञाता है। आपने फाग का रंग बुन्देली चौकड़ियों के माध्यम से श्रृंगार से सरावोर कर दिया है। इस वर्णन में फाल्गुन का मस्त महीना व होरी का रंग गुलाल हमारी आँखों के सामने दृष्टिगोचर होने लगता है–

गोरी गाल गुलाल लगा दओ, तन मन सिग पुलका दओ

अंग–अंग सराबोर कर डारो, ऐसो रंग बरसा दओ

हँस–हँस कहि–कहि जीजा–जीजा, मारन मंत्र फुरा दओ

विकल' कयें का कर दओ गोरी, सोउत नाग जगा दओ

× × ×

अब तौ हमऊँ खेलिहें होरी, बचन न पइहौ गोरी

ऐसी कय कें पकरी सारी, गालन मल दई रोरी,

भर कौरी ओली में लै लई, भरी नाँद धर बोरी

'विकल' कयें तुम जा जानत तीं, कै बच जैहौ कोरी।[9]

कवि हरिनारायण 'विकल' का व्यंग्य में जनपद जालौन में प्रमुख स्थान है। इनका स्वस्थ व्यंग्य, समस्या और समाधान का अनूठापन लिये कवि की काव्य प्रतिभा को देदीप्तमान कर रहा है। **इनके सम्बन्ध में युग कवि डॉ0 रामस्वरूप खरे ने लिखा है–**" विकल जी की भाषा विषयानुकूल, सरल और प्रवाहमयी है। भावों में सरलता की सरस्वती की जल धारा प्रवाहमान है। अनायास अलंकारों की छटा यत्र–तत्र सर्वत्र मनोमुग्धकारिणी है। छन्दों की पायलों की झनकार लय ताल में आबद्ध संगीतमयी है।[10] **माया हरिश्याम 'पारथ' के शब्दों में–**" श्री हरिनारायण जी 'विकल' कवियों की कसौटी एवं मानक है। उनके काव्य चित्रों का परिलेख इदंतन जन मानस में व्याप्त कुण्ठाओं का परिलेखन तो करता है किन्तु अतिगूढ़ एवं रहस्यमय अभिव्यक्ति के साथ।[11]

श्री सन्तोष सौनकिया 'नवरस' के शब्दों में–" आज अधिकांश व्यंग्यकार मातृ अश्लील एवं छिछला हास्य तथा फूहड़ चुटकुले लिखकर

सस्ती लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं और व्यंग्यकार होने का दम्भ पाले हुए हैं। ऐसे व्यंग्य लेखन में न ही कोई श्रम करना पड़ता है, न समय देना पड़ता है। जो घटित हो रहा है उसमें हास्य का पुट देते हुए ज्यों का त्यों लिख देना व्यंग्य हो जाता है। श्री 'विकल' जी उन व्यंग्यकारों में नहीं है।[12]

श्री मिथिलेश कुमार द्विवेदी के शब्दों में—'' निःसन्देह 'विकल' जी के काव्य सृजन की पैनी धार समाजोपयोगी तथा जनमानस में मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित करने में सहायक हैं। उनके इसी प्रकार अनवरत सृजनरत रहने की संभावनाएँ हैं।[13]

कवि हरिनारायण 'विकल' एक सशक्त व्यंग्यकार एवं समाज के हर पहलू के आप कुशल चितेरे हैं। सचमुच आपका व्यंग्य किसी की बखिया न उधेड़कर शालीनता के साथ उसका उद्घाटन करते हुए उसकी समस्याओं के समाधान की तरफ सूक्ष्म संकेत देना है। आपकी बुन्देलखण्डी रचनाओं में श्रृंगार रस का अच्छा परिपाक हुआ है।

जगज्योति सिंह 'महर्षि जगज्योति':—

साहित्य मनीषी एवं आयुर्वेद के जानकार महर्षि जगज्येति सिंह ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने कवि कर्म के माध्यम से समाज को 'विकल्पावली' जैसा ग्रंथ देकर समाज के कल्याण का मार्ग दर्शन किया है। आपने अपने कठिन परिश्रम एवं लगन से अपने जीवन के सारे अनुभवों का निचोड़ उस ग्रन्थ में समाहित कर दिया है।

जगज्योति सिंह ''महर्षि जगज्योति' का जन्म विसं0 1995 ई0 को ग्राम सरसई जिला जालौन में हुआ था। इनके जन्म एवं विद्यार्थी जीवन के सम्बन्ध में **डॉ0 बीर बहादुर सिंह गुर्जर एम0 काम0, एम0 ए0, पी—एच0डी0**

वरिष्ठ प्रवक्ता डी0ए0वी0 डिग्री कालेज कानपुर के अनुसार–''वि0 सम्वत् 1995 प्रतिपदा चन्दवार को प्रतिष्ठित जमींदार पिता श्री प्रतापसिंह के इकलौते नामधारी पुत्र महर्षि तथा माता श्रीमती राधा देवी के नामधारी जगज्योति सिंह मेरे सहपाठी मित्र का जन्म ग्राम सरसई (जालौन) में हुआ।[14]

यह बचपन से ही शासक बुद्धि के चंचल एकाकी सात्वयक सत्यवादी, सदाचारी महात्मा स्वभाव के परहितकारी दयावान समाजोन्नति संघर्षकारी निर्भीक साहसी दार्शनिक कवि रहे हैं।

जब यह गाँव के स्वर्निम नव इण्टर कालेज के सर्व सम्मतीय प्रबन्धक थे तब जेपी आन्दोलन में डेढ़ वर्ष की सजाकाल के अन्तराल में गड़बड़ होने के उपरान्त कमेटी की आपाधापी में 5 लोग मरने वाले गोली काण्ड के बीच–बिचाव करने में गोली लगने से लंगड़े होने के बाबजूद भी अपने दायित्वो को निवाहते सराही 6275 दोहों का रूप सहित लिखा जाने वाला यह अनौखा 'विकल्पावली' ग्रंथ सर्वोचित श्रेष्ठ होने का हम पुष्टिकारी गौरव करते हैं।[15] महर्षि जगज्योति सिंह का विवाह ग्राम सेरस जिला झाँसी निवासी श्री भमरसिंह की सुपुत्री श्रीमती रघुवंश मणि के साथ हुआ। आपकी पाँच सन्तानों में एक पुत्र मणीन्द्र प्रताप सिंह एडवोकेट हैं जिनका विवाह श्रीमती आशा के साथ हुआ। इनका एक पुत्र प्रद्युम्न जनमेश है। महर्षि की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती राजेशकुमारी एडवोकेट का विवाह डॉ0 समरसिंह के साथ हुआ। दूसरी पुत्री श्रीमती ज्योतिष्ना सिंह का विवाह इंजीनियर कमलेश्वर सिंह के साथ हुआ। कवि की तीसरी पुत्री श्रीमती चन्द्रकान्ता सिंह का विवाह श्री राजेन्द्र सिंह के साथ हुआ जो जगदलपुर (म0प्र0) में जज के पद पर

आसीन हैं और चौथी पुत्री श्रीमती सीमा सिंह का विवाह श्री महेन्द्र सिंह के साथ हुआ जो आजकल अमेरिका में कार्यरत हैं।

आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की इसके साथ ही अपने आयुर्वेद से सम्बन्धित एवं योग का ज्ञान प्राप्त किया। इनसे सम्बन्धित अनेक दोहा विकल्पावली 'ग्रंथ' में हैं।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में केवल एक वृहत् ग्रंथ रूस्प सहित 'विकल्पावली' प्रकाशित है। इसके प्रकाशक– योगाध्यात्मक दिव्याश्रम खोड़ी मन्दिर भाटी पहाड़ी फतेहपुर वेरी महरौली न्यू दिल्ली 110030 है। इसका प्रकाशन 13 जुलाई 2003 को हुआ था। इस वृहत् ग्रंथ मे 102 अध्याय एवं 6275 दोहे है। इस वृहत् ग्रंथ के सम्बन्ध में विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं– **जिनमे डॉ0 वी.वी. लाल एम.ए.पी–एच.डी., डी लिट्, कुलपति बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी के शब्दों में** – ''मानवीय समस्याओं के समाधान पर लिखा जाने वाला 102 अध्यायों में रूस्प सहित अलग–अलग शीर्षकों पर 6275 दोहों का 'विकल्पावली' ग्रंथ विश्व के सभी प्रकार के लोगों की सभी प्रकार की विविध तरह की जीवन निर्वाहक वतहताओं से सम्बन्धित लौकिक–अलौकिक काल क्रमिक कारणों से पैदा होने वाले साध्य–असाध्य समस्यक दुखों चिन्ताओं का विकल्प्योपचारिक कल्याण कारी मार्ग दर्शक मंत्र रूपी रीति–नीति विज्ञान का अभूतपूर्व सराहनीय अति अच्छा महिम शुभाषों का सत्याप्त सारगर्भित ग्रंथ है।[16]

डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरवार प्रो0 दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर उरई के शब्दो में – ''मैं आपातकाल (1975–77) के साथी बन्दी बन्धु की साहित्यिक प्रतिभा से पहिले से भी परिचित था पर इस कृति की उपादेयता

व प्रासंगिकता की कितनी भी प्रशंसा की जाय कम है।[17]

विकल्पावली, मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष का उद्‌घाटन करती है। मानव जीवन के रहन–सहन, आचार–विचार सभी का सम्मिलित रूप इस ग्रंथ में निहित है। स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी ऋषि मुनियों की परम्परा का निर्वाह करती हैं। निश्चित ही यह ग्रंथ मानव जीवन के लिये लाभकारी होगा। विकल्पावली के कुछ दोहे जीवन के विभिन्न पहलुओं को छूते हुए यहाँ दृष्टव्य हैं–

प्रेमी का कुत्ता भी प्रिय–लगता पूज्य महान।

द्रोही का मेहमान भी –लगत असह बेईमान।।[18]

सुख में हँसने वाला और दुख में रोने वाला व्यक्ति वह जीव के अमरात्मिक विज्ञान को नहीं जानता है। अर्थात् सुख–दुख में समान रहने वला व्यक्ति जीवन के अटल क्रिया विधान को समझ लेता है और वह सुख–रुख में समान आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता रहता है। यथा–

सुख हँसते दुख रोउत वह –जो स्थूल कृतवान।

नहीं जानते जीव का, अंमरात्मिक विज्ञान।।[19]

तीनों कालों के लिये यह बात निर्विवाद रूप से सत्य है मीठी वाणी सभी को प्रिय लगती है और मीठी वाणी बोलने वाला सभी को प्रिय हो जाता है तथा सभी लोग उसके वश में हो जाते हैं। कवि ने अपने दोहे के माध्यम से बात कही है–

प्रिय सच मीठी बात से– को नहिं वश में होय।

असत निरर्थक कटु वचन–सुन सब तजते जोय।।[20]

महर्षि जगज्योति सिंह जी जनपद के सशक्त हस्ताक्षर हैं जिन्होंने ऋषियों की परम्पराओं को जीवित रखते हुए उनके विचारों को अपने काव्य

में स्थान दिया है। उनका ग्रंथ विकल्पावली निश्चित रूप से लोगों के लिये प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

उमा श्री

उमाश्री गीत और ग़ज़ल की सुविख्यात कवयित्री है। आपका जन्म 17 अक्टूबर सन् 1944 ई0 को कालपी में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री दीनदयाल श्रीवास्तव एवं माता स्व0 श्रीमती गंगा देवी श्रीवास्तव थी। आपका विवाह श्री एम.के. श्रीवास्तव जी के साथ हुआ। आपकी दो सन्तानों में चि0 आशीष व चि0 अनुज है जो विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आपने एम.ए., एम.एड. साहित्यरत्न तक शिक्षा प्राप्त की।

आपको लेखन की प्रेरणा अच्छे साहित्यकारों की पुस्तकें पढ़ने से प्राप्त हुई। इसके साथ ही आप 'सागर' साहब की गज़लों से विशेष प्रभावित हैं।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नही हुआ है। आपकी रचनाएँ देश की स्तरीय पत्र–पत्रिकाओं में व सहयोगी काव्य संकलनों में प्रकाशित होकर चर्चित हैं।

कवयित्री का आत्मकथ्य– "जीवन का प्रतिफल आशाओं से भरा है।"[21]

सम्प्रति आप रेखा हॉस्पीटल के पास आनन्द नगर फीरोजाबाद (म0प्र0) में अपने लेखन सम्पादन में व्यस्त है।

वर्तमान समय की परिस्थितियों पर आपकी लेखनी प्रखरता के साथ चली है। आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

हो गयी देश भक्ति उसी दिन दफन।

जब तिरंगे का बगलों पर डाला कफन।।

जाहिलों को अगर चुन के लाओगे तुम।

रोके कहेगी धरती बिकेगा गगन।[22]

आपको अनेक जगह सम्मान व पुरस्कार प्राप्त हुए हैं किन्तु इन पुरस्कारों एवं सम्मानों की धाँधली देखकर इन्होनें कई बार पुरस्कारों को ठुकरा दिया है।

आप एक अच्छी कवयित्री है। आपकी अप्रकाशित कृतियाँ प्रेस में है। कृतियों के प्रकाशन से निश्चित रुप से समाज एवं देश के लिये यह कृतियाँ अवश्य ही दिशा निर्देश करने वाली होंगी।

राजेन्द्र सिंह (नूरपुर वाले) :–

कवि राजेन्द्र सिंह जनपद के ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से पौराणिक गौण पात्रों को अपनी रचना का विषय बनाया है और उन पात्रों के चरित्र का मानवीय आधार पर चित्रण किया है।

कवि राजेन्द्र सिंह जी का जन्म 14 जनवरी सन् 1945 ई0 को ग्राम नूरपुर तहसील कालपी में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री भगीरथ सिंह (साहित्याचार्य) काव्य शास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे। घर का वातावरण साहित्य से परिपूर्ण था, इसी कारण कवि को रचना धर्मिता विरासत में मिल गयी थी। आपकी माता जी स्व0 श्रीमती पार्वती देवी थी। आप जब नौ वर्ष के थे तभी आपकी माता जी का स्वर्गवास हो गया था। आप माता के प्यार–दुलार से वंचित रहे। इनका विवाह मुसमरिया निवासी श्री विश्वेश्वर

सिंह की सुपुत्री श्रीमती सन्तोषी देवी के साथ हुआ किन्तु दुर्भाग्यवश आपकी पत्नी श्रीमती सन्तोषी देवी का निधन 13 मई 2001 को हो गया। आपकी 6 सन्तानों में तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ है। आपके सबसे बड़े पुत्र कमलाकान्त एम0ए0, एल0एल0बी0 का विवाह श्रीमती त्रिवेणी देवी के साथ हुआ जिनके आलोक कुमार पुत्र एवं श्रीमती सविता देवी पुत्री हैं। `कवि के दूसरे पुत्र जयप्रकाश सिंह एडवोकेट हैं जिनका विवाह श्रीमती सन्तोषी के साथ हुआ।तीसरे पुत्र के रूप में नरेश चन्द्र जी हैं जिनका विवाह श्रीमती रेखा देवी के साथ हुआ और इनके दो पुत्र आकाश और अमन हैं जो अभी विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।कवि की सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती गार्गी जौनपुर (कानपुर) निवासी श्री रामजी सिंह को ब्याही गयीं हैं। इनकी दो संतानों में विनीत व कु0 नीशू है। कवि की दूसरी पुत्री श्रीमती गायत्री देवी का विवाह रूरा (जालौन) निवासी श्री योगेन्द्र भूषण सिंह के साथ हुआ। इनके इकलौते पुत्र का नाम भारतेन्दु है। आपकी तीसरी पुत्री श्रीमती सावित्री देवी का विवाह कालपी निवासी श्री कुलदीप सिंह के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में एक पुत्री सोनाली व पुत्र शिवम् है।

आपने जूनियर हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1958 ई0 में मुसमरिया (जालौन) से उत्तीर्ण की। हाईस्कूल व इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1961 एवं 1964 ई0 में व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की। बी0ए0 की परीक्षा सन् 1966 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण करने के पश्चात एल0एल0बी0 की परीक्षा सन् 1968 में दयानन्द वैदिक कालेज ऑफ ला कानपुर से उत्तीर्ण की। सम्प्रति कवि नगर में वकालत का व्यवसाय करते हैं।

कवि के बचपन की स्मरणीय घटना कवि के ही शब्दों में–'' सन् 1954 ई0 में माँ की मृत्यु हो गयी थी। उस समय मेरी उम्र मात्र 9 वर्ष की थी। माँ की स्मृति में मैंने एक छन्द लिखा। पिता जी ने उस छन्द को देखा। छन्दशास्त्र के अनुसार वह छन्द अशुद्ध था या ये कहें कि तुकबन्दी थी। इस पर पिताजी ने मेरे कान तो खींचे ही उन्होंने छन्द शास्त्र की शिक्षा भी दी जो मुझे आज भी याद है। उस समय की कान खिंचाई और उपदेश आज भी यथावत ह्रदय पटल पर अंकित है।''[23]कवि को लेखन की प्रेरणा पिता श्री भगीरथ सिंह जी व श्री हरिश्याम पारथ जी से मिली।

अभी तक कवि का कोई भी रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपकी अप्रकाशित कृतियों में 'नारी क्रान्ति' (खण्डकाव्य), श्रीमद्‌भगवद्‌गीता का पद्यानुवाद तथा श्रद्धांजलि गीत संग्रह है।

आपको पारथ प्रेम परिषद द्वारा पिंगलविद् की उपाधि से विभूषित किया गया।

आपने पौराणिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक युग की नारी का चित्र खींचा है। आपके अप्रकाशित खण्डकाव्य 'नारी क्रान्ति' में महाभारत के पात्र शाल्य व अम्बा के चरित्र को उकेरा है। इसी खण्ड काव्य के कुछ रोला छन्द यहाँ दृष्टव्य है–

मेरा वह आराध्य! मुझी से रुष्ट हुआ है।
हुआ विधाता वाम रुष्ट मम इष्ट हुआ है।।
अपमानित कर प्रेम, रहा प्रेम मेरा मुझको ही
सहना यह भी दंश, अरी नारी तुझको ही।।[24]

कवि हिंसा, वीभत्स एवं नग्नता को पूर्ण रूप से वर्जित मानता है। वह

ऐसे साहित्य की रचना करना चाहता है जिसकी अभिव्यक्ति सुन्दर हो साथ में यथार्थ को छिपाया न जाये। इसी सन्दर्भ में कवि के विचार इस गीत के माध्यम से दृष्टव्य हैं–

कवि मत ऐसे संकेत करो, आहत हो जिससे मन उनका

हो सत्य शिवम् सुन्दर न जहाँ, है व्यर्थ सुकाव्य सृजन उनका।

हो सत्य किन्तु वह नग्न न हो,

वीभत्स हिंस्र बन जाय नहीं

अभिव्यक्ति सुन्दरम् हो लेकिन

उसमें यथार्थ ढक पाय नहीं।

वह सत्य रहे पर प्रिय भी हो, कर दे तन–मन अंतस झंकृत।

हो शब्द क्लिष्ठ श्रुत मधुर न हो, है श्रव्य न काव्य कथन उनका''।[25]

कवि को जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है और उस पीड़ा को उन्होंने महसूस किया है। वह पीड़ा चाहे बाल्यावस्था से अब तक मातृस्नेह से वंचित वाली हो या सहधर्मिणी का अचानक साथ छूट जाने का हो। कवि अपनी पीड़ा को स्वयं पीना चाहता है उसे पीड़ा का बँटवारा स्वीकार नहीं है। कवि का यह गीत पीड़ा के रूप में उमड़ पड़ा है–

देख सके जो अंतस के व्रण, अब वह नयन उदार नहीं।

तन की मन से कह भी लूँ तो घटता मन का भार नहीं।।

बोझिल मन है–बोझिल तन है

बोझिल तन–मन का चेतन है

भूख हरण अवगुंठित ऐसे

बोझिल जीवन का केतन है।''

बोझ तुम्हें दूँ निज पीड़ा का, है स्वीकार नही मन को यह,

सहने दो एकाकी मुझको , बँटवारा स्वीकार नहीं है।।[26]

कवि राजेन्द्र सिंह (नूरपुर वाले) एक ऐसे साहित्यकार हैं जो कविता में छन्दों का प्रयोग उपयुक्त मानते हैं। छन्दों से मुक्त कविता के वे प्रबल विरोधी हैं। पारम्परिक छन्दबद्ध रचना ही उनकी प्रिय रचना है। सम्प्रति आप अपने व्यवसाय वकालत के साथ–साथ साहित्य को 'नया आयाम देने के हेतु प्रयासरत हैं। आप साहित्य को (छन्द से युक्त काव्य) कितनी ऊँचाई पर पहुँचाते हैं यह तो अभी समय के गर्भ में है।अभी तक के रचना साहित्य में आपने अपनी प्रखर बुद्धि का परिचय दिया है। भाषा सरल, सरस व हृदयग्राही हैं। आपकी रचनाओं में प्रवाह है जो पाठक उन रचनाओं का आनन्द के साथ रसानुभूति करता है।
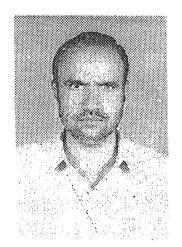
सुरेश चन्द्र त्रिपाठी :—

पं0 सुरेश चन्द्र त्रिपाठी खड़ी बोली एवं बुन्देली भाषा के ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से जनमानस की विचार धाराओं को अपने काव्य में स्थान दिया है। आपकी रचनाओं में नाद सौन्दर्य एवं माधुर्य गुण विद्यमान है। आपने गणित जैसे नीरस विषय को लेकर अपनी कविता के माध्यम से उसमें रुचि जागृत की है।

पं0 सुरेश चन्द्र त्रिपाठी का जन्म 21 जून सन् 1946 ई0 को गुरु का इटौरा तहसील कालपी में हुआ था। आपके पूर्वज ग्रा0 व पो0 विरहर जनपद (कानपुर देहात) के रहने वाले थे। आपके पिता अपनी ससुराल (गुरु के

इटौरा) में आकर बस गये थे। यहीं कवि सुरेश चन्द्र त्रिपाठी का जन्म हुआ और बचपन बीता। आपके पिता श्री रामदत्त त्रिपाठी एवं माता इटौरा जनपद जालौन निवासी श्री काशीप्रसाद द्विवेदी की सुपुत्री श्रीमती सुन्दर बाई त्रिपाठी हैं। कवि सुरेश चन्द्र त्रिपाठी का विवाह ग्रा0 व पो0 चिलौली (कानपुर देहात) निवासी श्री गिरिजाशंकर द्विवेदी की सुपुत्री श्रीमती प्रेमलता त्रिपाठी के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में अभिताभ त्रिपाठी एवं गोपाल त्रिपाठी है। अभिताभ त्रिपाठी का विवाह श्रीमती प्रियंका त्रिपाठी के साथ हुआ। इनके दो पुत्र अविरल व विभु हैं। दूसरे पुत्र गोपाल त्रिपाठी अविवाहित हैं।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1961 ई0 एवं 1963 ई0 में के0सी0बी0, एस0ए0एस0 इण्टर कालेज फतेहपुर (उ0प्र0) एवं गवर्नमेन्ट इण्टर कालेज फतेहपुर से उत्तीर्ण की। सन् 1966 ई0 में बी0एस–सी0 की परीक्षा क्राइस्ट चर्च कालेज कानपुर से उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् 1971ई0 में डी0वी0 कालेज उरई से बी0एड0 की परीक्षा उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप इण्टर कालेज हरदोई गूजर में अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा अपने माता–पिता से प्राप्त हुई। अभी आपकी कोई कृति प्रकाशित नही हुई है। अप्रकाशित कृतियों में श्रीमद् भगवद् गीता (अनूदित) वाल्मीकि रामायण सुन्दर काण्ड दोहानुवाद, कादम्बरी कथामुख हैं। इसके अतिरिक्त आपकी मौलिक रचनाओं में 'दमयंती स्वयंवर', 'प्रणय' तथा अनेक कविताएँ एवं गीत है।

आपकी अनूदित कृति वाल्मीकि रामायण (सुन्दरकाण्ड) के कुछ दोहानुवाद यहाँ दृष्टव्य है–

सुमन, सुवासित, सुविकसित, सितभूषित पथ पेख।

अतुलित बालयुत वात सुत, हरषित भये विशेष।।[27]

आपकी बुन्देली भाषा की रचनाओं में ग्राम्य जीवन की झाँकी स्पष्ट रूप से झलकती है। ग्राम बधुओं का कुँआ से पानी खींचना, घूँघट, कमर में करधनी एवं गोरा–गोरा मुख किसको आकर्षित नहीं करेगा। उनकी ये पंक्तियाँ पूरा चित्र उकेर रही हैं–

महकी–महकी हर साँस अंगनिया में फूली–फूली धनिया

ऊपर पूनों को चाँद लिपट रई, गोरी गोरी चाँदनियाँ।

ब्याव भओ घूँघट में रच दई, एक नई दुनियाँ

लगत न मन अब ई बिन छिन भर, ऐसी जा निकरी गुनियाँ

अब जोगी जन्दा खिलै बिसर गये, गुड्डा गुड़िया महमुलिया

महकी–महकी.........................।[28]

कवि इसी बुन्देल खण्ड की माटी में पला बढ़ा है। बचपन की यादों को संजोये हुए एक दिन इन्हीं यादों को अपने कागज पर उतार देता है। पहले (बचपन) के जमाने में क्या होता है उसी का चित्रण कवि इन पंक्तियों में कर रहा है–

काये फलाने?कहौ ढिकाने?

पहले जैसे पौर–पौर में, रातन में तुलसी रामायन

आल्हा फाग मल्हार दिवारी, भजन कीर्तन अचरी गारी

ढ़ोला और दादरे गोटें, कजरी औ ख्यालन की चोटें

होत हतीं अब उयसेई सुन लेव ठौरठौर पै फिल्मी गाने।

काय फलाने...........................।[29]

माँ ज्ञानदायिनी सरस्वती देवी की स्तुति में कवि सुरेश चन्द्र त्रिपाठी

ने खड़ी बोली में यह रचना प्रस्तुत की है। यह रचना दृष्टव्य हैं–

मानस मराल पृष्ठ सारस विशाल

तावै धवल प्रकाश पुंज जननि विराजती

उर दिव्य माल दिव्य वसना विधान

दिव्य गंध अनुलेप दिव्य भूषन सँवारती

सप्त स्वर सप्त सुख तार–तार झनकार

तारता जीवन सँवार सिन्धु तारती

ज्ञान कीर्ति केतु शुभ्र साजे शून्य मध्य अम्ब

भारत की भारती उतारूँ तेरी आरती।[30]

कवि की रचनाओं में प्रकृति चित्रण अनूठा बन पड़ा है। पूरे प्रकृति चित्रण में मानवीकरण की छटा अनुपम है। प्रकृति पर नारी का आरोप है। कवि के प्रकृति चित्रण की छटा यहाँ दृष्टव्य है–

उत्कल मुकुल पतंग प्रभा पा मुँह नयन खोले

मोहन मंत्र भ्रमर श्रवण में उसके जब बोले।

रातों दहे चकोरी देखे शीत भानु मुख को

कौन जान पाया है उसके अन्तर के दुख को।

छुई–मुई जब छू लेने भर से शरमाती है।

प्रिये! तुम्हारी याद मुझे आकर दुलराती है।[31]

कवि सुरेश चन्द्र त्रिपाठी साहित्याकाश के ऐसे नक्षत्र हैं जो अपनी आभा से चहुँ ओर प्रकाश फैला रहे हैं। इनका साहित्य बुन्देली समाज का दर्पण है जो पूर्व समय की यादों को संजोये कागज के पृष्ठों में उतारकर अतीत की झाँकी प्रस्तुत करती है। आज के भौतिकवादी युग में ग्राम्य जीवन

में भी अमूल–चूल परिवर्तन हुए हैं। इनकी रचनाएँ इतिहास का दर्पण बन गयी है। इनके साहित्य को पढ़कर भूला हुआ अतीत हमारे सामने आ जाता हैं। ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित रचनाएँ निश्चित रूप से प्रशंसनीय हैं। आप बराबर काव्य साधना में रत है। आप साहित्य को कितनी ऊँचाइयाँ दे जाते है यह तो समय ही बतायेगा।

डॉ० जयश्री पुरवार :–

लेख, कहानी, कविता, अनुवाद व सम्पादन आदि अनेक विधाओं पर अपनी प्रखर लेखनी चलाने वाली साहित्यकार डॉ0 जयश्री पुरवार साहित्य की ऐसी देवी हैं जिन्होंने अपनी त्रिशूल रूपी लेखनी के द्वारा सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक क्षेत्र में रूढ़िवादिता, अराजकता एवं व्यर्थ के कर्मकाण्ड के दानवों को मार गिराने का भरसक प्रयत्न किया है और इस कार्य में वे सतत् प्रयासरत हैं।

डॉ0 जयश्री पुरवार का जन्म 20 जून सन् 1947 ई0 को दिल्ली में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री रक्षाकर जी विभागाध्यक्ष संस्कृत डी0वी0 कालेज उरई में कार्यरत रहे। आपकी माता श्रीमती सरसी दत्त एक आदर्श गृहणी एवं धार्मिक विचारों की महिला थीं। आपका विवाह कालपी निवासी श्री मंगली प्रसाद के सुपुत्र डॉ0 राजेन्द्र कुमार पुरवार के साथ हुआ जो डी0वी0 कालेज उरई में राजनीतिशास्त्र के प्रोफेसर हैं इसके साथ ही वे एक अच्छे साहित्यकार भी हैं। आपकी दो संतानों में एक पुत्र राजर्षि एवं पुत्री कु0 रंजिता है। सम्प्रति आप डी0वी0 कालेज उरई में राजनीति शास्त्र विभाग की अध्यक्षा हैं।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1962

एवं 1964 ई0 में जी0जी0 आई0सी0 उरई तथा आर्य कन्या इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। पुनश्च बी0ए0 एवं एम0ए0 की परीक्षाएँ सन् 1966 एवं 1968 ई0 में डी0वी0 कालेज उरई से उत्तीर्ण की। आपने पी–एच0डी0 की उपाधि सन् 1980 ई0 में कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर से प्राप्त की।

चन्द्र नगर (पश्चिमी बंगाल) से जुलाई 1957 में उरई आगमन वाली स्मरणीय घटना कवयित्री को हमेशा याद रहती है और जीवनपर्यन्त रहेगी।[32]

आप सामाजिक क्षेत्र में कल्याणी महिला विकास संस्थान की अध्यक्षा, नारी जागरुकता एवं साक्षरता के लिये विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से नारी के उत्थान हेतु कार्य कर रही हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा स्वतः बाल्यकाल से प्राप्त हुई। आपने साहित्य के क्षेत्र में विभिन्न विधाओं पर अपनी लेखनी चलाकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। आपने लघुकथा, कहानी, कविताएँ आदि लिखीं और अनुवाद भी किये। आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'नवअंकुर' हिन्दी मासिक का सम्पादन(1983–1986) 'अभिनव ज्योति' का सम्पादन (1996–98) में, 'छायानट' (अक्टूबर–दिसम्बर 2000) में प्रकाशित लेख, 'वर्तमान', सितम्बर अक्टूबर 2000 में बंगला साहित्य शताब्दी विशेषांक में 25 कविताओं का अनुवाद, गाजियाबाद, राष्ट्रीय चेतना लखनऊ 2001 में प्रकाशित लेख, 'मेरी हिन्दी मेरी शान' कविता संग्रह नई दिल्ली से प्रकाशित कविता, 'लोक कला 'दर्पण' लखनऊ से 2001 में प्रकाशित लेख, 'काव्य गरिमा' 2002 नई दिल्ली कविता संग्रह में प्रकाशित कविता, 'राष्ट्र धर्म' फरवरी 2002 में लखनऊ से प्रकाशित लेख। इसके अतिरिक्त 'सरिता', 'कादम्बिनी', 'अभिनव ज्योति', 'सिंहनाद', 'कर्मयुग प्रकाश,' 'आज' आदि अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में लेख, कहानी

व कविताएँ प्रकाशित हुईं।[33]

काव्य के क्षेत्र में आपका योगदान उल्लेखनीय है। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

टूटते हुए उसूलों से चिपके रहने का नहीं

उसूलों के नये पौधे उगाने का इरादा है।

उम्मीदों के ढहते हुए दीवारों को संजोकर,

नयी पीढ़ी के लिये नया मकां बनाने का इरादा है।[34]

आज के अन्याय एवं समाज में फैली हुई अराजकता ने कवयित्री के हृदय को झकझोर दिया है। आज पुनः कुरुक्षेत्र के संघर्ष का समय आ गया है। आज समाज के लिये एक और कृष्ण की आवश्यकता है जो पुनः इस समाज को कर्मयोग की शिक्षा एवं गीता का ज्ञान सिखा सके। 'समय की पुकार' शीर्षक कविता से कवयित्री ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

समय आ गया है आज फिर कुरुक्षेत्र के संघर्ष का

कृष्ण के आह्वान का कौरव के विध्वंश का।[35]

इस प्रकार आपके काव्य का मूल्यांकन करने पर हम पाते हैं कि कवयित्री को समाज के प्रति एक टीस है। उस टीस को मिटाने के लिये वह योगेश्वर को पुनः पृथ्वी पर आने की प्रतीक्षा करने लगती हैं। डॉ0 जयश्री पुरवार ने साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान देकर जनपद की साहित्य परम्परा को आगे बढ़ाया और वे सतत् प्रयत्नशील हैं। साक्षरता हेतु भी बराबर प्रयासरत् हैं।

ठाकुरदास पाल :–

ग्रामीण परिवेश में जीवन यापन करने वाले ठाकुरदास पाल ऐसे

साहित्यकार हैं जिन्होंने ग्रामीण भाषा (बुन्देली) में गीत, फाग एवं गारी की रचना करके साहित्य में अपनी विशेष रुचि का परिचय दिया है। आप आल्हा गायन एवं फाग में समय–समय पर पुरस्कृत होते रहे हैं।

ठाकुर दास पाल का जन्म 1 जनवरी सन् 1952[36]ई0 में ग्राम कुँआखेड़ा तहसील कालपी जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रोपन दास पाल एवं माता जी का नाम श्रीमती रुक्मण देवी था। आपका विवाह ग्राम इटैलिया (बाजा) जिला हमीरपुर निवासी श्री नाथूराम पाल की सुपुत्री श्रीमती रामकली देवी के साथ हुआ। आपकी छैः सन्तानों में चार पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। सबसें बड़े पुत्र जितेन्द्र पाल (रज्जन) का विवाह श्रीमती शकुन्तला देवी के साथ हुआ। इनकी तीन सन्तानों में संजू कुमार, इन्द्रजीत एवं बेवी हेमलता हैं। कवि के दूसरे पुत्र का नाम सत्येन्द्र पाल सिंह का विवाह श्रीमती माया के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री बेबी श्वेता है। कवि के तीसरे एवं चौथे पुत्र रविकान्त एवं आशीष कुमार है। पुत्रियों में सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती उमा देवी का विवाह पारेन (जालौन) निवासी श्री चन्द्रभान के साथ हुआ। दूसरी पुत्री का नाम कु0 सुमन है जो वर्तमान समय में शिक्षा प्राप्त कर रही हैं।

कवि की स्कूली शिक्षा मिडिल क्लास तक है। आपने मिडिल की परीक्षा सन् 1962 ई0 में जू0हा0 स्कूल इटौरा से उत्तीर्ण की।आपको लेखन की प्रेरणा खेत सिंह यादव कुलपहाड़ (महोबा) द्वारा रचित गारी को पढ़कर प्राप्त हुई।

आपकी अभी तक कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई है। अप्रकाशित रचना संग्रह 'अनौखी' जिसमें गारी, गीत एवं फागें संग्रहीत हैं।

इसके साथ ही आप एक अच्छे आल्हा गायक भी हैं। महोबा के कजरिया मेला में आपकों आल्हा गायन में पूरे बुन्देलखण्ड में पाँचवा स्थान प्राप्त हुआ था।

कवि ने अपनी रचनाएँ जन भाषा अर्थात् गाँव देहात की भाषा में अपने भाव व्यक्त किये है। प्रचार–प्रसार से दूर गाँव–देहात के विशेष कार्यक्रमों में अपने भावों को छन्द बद्ध करके मौज मस्ती के साथ गाते हैं।

अब्दुल रहमान रब्बानी

अब्दुल रहमान रब्बानी जनपद जालौन के ऐसे साहित्यकार है जिन्होंने हिन्दी एवं उर्दू दोनों भाषाओं में अपनी लेखनी चलाकर साहित्य के क्षेत्र में विशेष योगदान दिया। हिन्दी में जहाँ आपने कविता, कहानी, समीक्षा एवं शोध विधा में अपनी लेखनी के द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया वहीं आपने रुबाइयों एवं गजलों के माध्यम से अपनी प्रखर बुद्धि का परिचय दिया है।

अब्दुल रहमान रब्बानी का जन्म 5 अगस्त सन् 1952 ई0 को मैनपुरी में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री अब्दुल बदीर एवं माता का नाम स्व0 श्रीमती हसीना बेगम था। आपका विवाह दौलतपुर (कानपुर) निवासी श्री अजीज अहमद की सुपुत्री श्रीमती रुखसाना सावरी के साथ हुआ। आपके दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हैं। पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र मुहम्मद अहमद रहमानी एवं छोटा पुत्र नूर मुहम्मद रहमानी है। पुत्रियों में आपकी बड़ी पुत्री श्रीमती आबिदा रहमानी का विवाह लखना (इटावा) निवासी मुहम्मद इरशाद के साथ हुआ। इनका एक पुत्र इकबाल है। रब्बानी जी की दूसरी पुत्री श्रीमती जाहिदा

रहमानी का विवाह फतेहपुर निवासी श्री अजमत उल्ला के साथ हुआ। इनका एक पुत्र रहमत उल्ला है। तीसरी पुत्री माजदा रहमानी अभी अविवाहित हैं।

आपने सभी परीक्षाएँ व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की हैं। हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ 1969 ई0 में एवं 1972 ई0 में उत्तीर्ण की। बी0ए0 एवं एम0ए0 की परीक्षाएँ सन् 1976 में तथा 1984 ई0 में उत्तीर्ण की। आपने अपना शोध कार्य (पी–एच0डी0) सन् 1992 ई0 में पूर्ण किया।

आपको लेखन की प्रेरणा पं0 कदालीराम शुक्ल (प्रधानाध्यापक) से मिली।

आपकी प्रकाशित हिन्दी पुस्तकों में 'रहमान की शायरी', 'मेरी कविता कौन सुनेगा', 'यह कैसी तकदीर मिली है', आदि। इसके अतिरिक्त उर्दू में 'कविशमता–ए–ख्वाब', 'आईना, मता–ए–यकी' तथा 'नक्शेहयात' हैं। अप्रकाशित रचनाओं में कालपी के औलिया, आतिशे कारसार हैं।

उत्कृष्ट साहित्य सेवा के लिये आपको शिवदयाल वर्मा पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

कवि समाज में फैले मतभेदों से अन्जान बना रहना चाहता है तथा समाज में अमीरी और गरीबी की गहरी खाई ने निर्धनों को अलग–थलग कर दिया है। कवि ने इस बात का भी खुलासा किया है कि वर्तमान समय में गरीबों की कोई नहीं सुनता है। उसकी तो सच बात भी स्वीकार नहीं की जाती है। रुबाई के माध्यम से कवि के ये विचार दृष्टव्य हैं–

मतभेद से अनजान बना रहने दो,

सद्भाव की पहचान बना रहने दो।

हिन्दू या मुसलमान बनाने वालो

इंसान को इंसान बना रहने दो।।[37]

कवि ने आज के नेताओं पर करारा व्यंग्य किया है। नेताओं को जनता देश का कर्णाधार बनाकर दिल्ली पहुँचाती है और वे जनता को बरगलाकर सिर्फ अपना पेट भरते हैं। जनता की परेशानियों पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता है। 'नेता श्री' शीर्षक गीत के माध्यम से उनके गीत की ये पंक्तियाँ–

वो भी समझ न पाये, जिन्होंने विषधर कीले हैं।

आप कितने जहरीले हैं ?

चिकनी – चुपड़ी बातें करके लोगों को बहलाते।

अपने मन का भेद किसी से हरगिज नहीं बताते।

ऊपर से भोले, अन्दर से बड़े गँसीले हैं।।

आप कितने जहरीले हैं ?[38]

आपकी गजलें भी अच्छी बन पड़ी हैं। आपकी गजल का नमूना यहाँ दृष्टव्य है–

जब मेरी याद सताये तो मुझे खत लिखना।

रात को नींद न आये तो मुझे खत लिखना।।[39]

अब्दुल रहमान रब्बानी जनपद जालौन की ऐसी शख्सियत है जिन्होंने अपनी रचना धर्मिता के माध्यम से समाज की उन समस्याओं को उठाया है जो समाज को बुरी तरह से जकड़े हुए है, चाहे वह देश का वर्तमान नेता हो या समाज का वह निर्धन व्यक्ति जिसकी सत्य बात को भी स्वीकार नहीं किया जाता है। कवि तर्कशील भी है।रब्बानी जी स्वभाव से नम्र एवं हर ऐसे व्यक्ति की मदद करते हैं जो अभी उँगली पकड़कर चल रहा है। गर्व से दूर–स्वाभिमान

से भरपूर साहित्यकार अब्दुल रहमान 'रब्बानी' नवोदित साहित्यकारों के लिये आदर्श है। आपकी रचना धर्मिता को देखते हुए यह कहा जा सकता है आप निश्चित रूप से एक सफल साहित्यकार हैं।

विशम्भर नाथ शुक्ल 'घायल' :-

विशम्भर नाथ शुक्ल 'घायल' प्रमुखतः गजलकार हैं। आपकी गजलों में मिठास है जिसे लोग सुनकर वाह-वाह कर उठते हैं।

विशम्भर नाथ शुक्ल 'घायल' का जन्म 22 जून सन् 1955 ई0 को कालपी में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री सिद्ध नारायण शुक्ल एवं माता जी का नाम श्रीमती शान्ती देवी है। आपका विवाह इटावा निवासी श्री विमल कुमार जी की सुपुत्री श्रीमती रजनी शुक्ला के साथ हुआ। आपका एक पुत्र अमित कुमार शुक्ल है जो विद्यालयी शिक्षा प्राप्त कर रहा है।

आपने हाई स्कूल की परीक्षा सन् 1975 ई0 में एम0एस0बी0 इण्टर कालेज कालपी से उत्तीर्ण की। इसी विद्यालय से आपने इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1979 ई0 में उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा श्री रहमान रब्बानी जी से मिली। अभी तक आपका कोई गजल संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु आपकी फुटकर रचनाएँ विभिन्न पत्र -पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इसके अतिरिक्त आकाशवाणी छतरपुर से आपकी गजलों का प्रसारण अनेक बार हो चुका है।

आपने ग़ज़ल विधा को अपनाया है। साहित्यकार को इस विधा में काफी सफलता भी मिली है। आपकी कुछ ग़ज़लें यहाँ दृष्टव्य है-

आये जो मेरे सामने वो फितना ग़र कहीं

हम हों कहीं तो दिल हो कहीं और नजर कहीं

हलकी सी झलक ने तो दीवाना कर दिया

रहते वो हमारे सामने वो उम्र भर कहीं।[40]

विशम्भर नाथ शुक्ल जी के मुक्तक भी अच्छे बन पड़े है। यह दिल किसी काबिल नही था किन्तु तेरे समीप आने पर तूने दिल को दिल बना दिया। ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

वाकई न था ये किसी काबिल

दिल मेरा दिल बना दिया तूने

तेरा एहसान किस तरह भूलूँ

मुझको 'घायल' बना दिया तूने।[41]

समय पड़ने पर दोस्त बदल जाते हैं किन्तु शायर अपने आपको बदलना नहीं चाहता है। इसी पर घायल जी का यह मुक्तक भी दृष्टव्य है–

पेशे नजर ग़ज़ल भी ग़रज़ से ही काम था

इस वास्ते हम वक्त के साँचे में ढल गये

ये और बात थी कि न 'घायल' बदल सका

वरना बहुत से दोस्त हमारे बदल गये।[42]

शुक्ल जी की रचना धर्मिता ठीक बन पड़ी है। आपकी गजलों में एक कसक है जो प्रत्येक सहृदय व्यक्ति के दिल को छू लेती हैं। आप साहित्य को कितनी ऊँचाइयों पर ले जाते है यह तो वक्त ही बतायेगा।

मंजू गुप्ता

एक आदर्श शिक्षिका एवं साहित्यकार श्रीमती मंजू गुप्ता जनपद जालौन की ऐसी साहित्य सेविका है जिन्होंने अपनी कलम के जादू से सहृदय पाठकों को मोहित कर

दिया है। इसके साथ ही आपके पढ़ाने की शैली बहुत अच्छी है जिसके कारण छात्र/छात्राएँ आपके गुणों से प्रभावित होकर हिन्दी विषय को उत्साह के साथ पढ़ते हैं।

श्रीमती मंजू गुप्ता का जन्म 7 मई सन् 1968 ई0 को कालपी में हुआ था। आपके पिता श्री राधाप्रसाद गुप्त (संख्याधिकारी के पद से सेवा निवृत्त) हैं एवं माता स्व0 श्रीमती कमला देवी गुप्ता थीं। माता धार्मिक प्रवृत्ति की गृहस्थ महिला थीं। आप छः भाई–बहन हैं।

आपके भाई–श्री राकेश कुमार, श्री वीरेन्द्र कुमार एवं श्री अमित कुमार गुप्त हैं। आपकी दो बहनें श्रीमती रेखा गुप्ता एवं श्रीमती राखी गुप्ता हैं। आपका विवाह इटौरा तहसील कालपी जिला जालौन निवासी श्री कृष्ण कुमार गुप्त के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में पुत्र अंकित गुप्त एवं पुत्री कु0 अंशिका गुप्ता है जो अभी विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1984 ई0 में कस्तूरबा कन्या इण्टर कालेज झाँसी से उत्तीर्ण की। पुनश्च इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1986 ई0 में इसी कालेज से उत्तीर्ण की। सन् 1988 ई0 में बी0ए0 की परीक्षा आर्य कन्या डिग्री कालेज झाँसी से उत्तीर्ण की। आपने बी0एड0 की परीक्षा सन् 1989 ई0 में जे0 एन0 कालेज बाँदा से उत्तीर्ण की। एम0ए0 (हिन्दी) की परीक्षा सन् 1991 ई0 में बुन्देलखण्ड झाँसी से व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप एस0आर0 इण्टर कालेज उरई में प्रवक्ता (हिन्दी) पद पर कार्यरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा स्व0 श्री कपिल देव शुक्ल एम0ए0 (साहित्य रत्न) एस0आई0 इण्टर कालेज झाँसी से प्राप्त हुई।

आपकी रचनाओं का विषय सामाजिक है। उपदेशात्मक शैली का प्रयोग आपकी रचनाओं में हुआ है।

आप ठहरी शिक्षिका तो निश्चित रूप से छात्रों को उपदेश देना उन्हें सन्मार्ग दिखाना आपका कर्त्तव्य बन जाता है। यही उपदेश आपके काव्य में भी दृष्टिगोचर होते हैं यथा–

बहू और बेटियों को हरदम, समझो एक समान।

मानवता के लिये यही है, ईश्वरीय वरदान।।[43]

कवयित्री स्वान्तः सुखाय के लिये कविता करती हैं। प्रचार–प्रसार में उनकी कोई रुचि नहीं है। जब भी मन में कोई उद्‌गार उठते है उन्हें अपनी डायरी में क्रमबद्ध कर लेती हैं।

प्रमोद कुमार 'कुदरती'

नवोदित कलाकारों की पंक्ति में प्रमोद कुमार 'कुदरती' साहित्य परम्परा में अपना विशिष्ट स्थान बनाने हेतु सतत् प्रयत्नशील हैं। पुराने रीति–रिवाजों एवं रूढ़िवादिता के कट्टर विरोधी 'कुदरती' के काव्य में समग्र रूप से विद्रोह का स्वर मुखरित हुआ है।

प्रमोद कुमार कुदरती स्वभाव से नम्र, हँसमुख एवं तर्कशील है। औसत कद, चेहरा क्लीन सेब्ड एवं स्वच्छ और सादा कपड़े (पेन्ट शर्ट) आपके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। हाथ में उनका बैग एवं बैग के अन्दर एक डायरी हमेशा उनके साथ रहती है। प्रमोद कुमार कुदरती का जन्म 2 मार्च सन् 1973 ई0 को ग्राम0पो0 मुसमरिया तहसील कालपी जिला जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामगोपाल अहिरवार एवं माता

श्रीमती गेंदारानी हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1988 ई0 में रा0उ0मा0वि0 मुसमरिया (जालौन) से उत्तीर्ण की। इसके तीन वर्ष पश्चात् आपने इण्टरमीडिएट की परीक्षा (व्यक्तिगत रूप से) जनता इण्टर कालेज एट से सन् 1991 ई0 में उत्तीर्ण की। सन् 1998 ई0 में वैद्युत अभियांत्रिकी में त्रिवर्षीय डिप्लोमा गोविन्द बल्लभ पन्त पोलीटेक्निक लखनऊ उ0प्र0 से किया। सम्प्रति आप साहित्य सेवा एवं गृह काज में अपने माता पिता का हाथ बँटाते हैं।

आप आल इण्डिया डॉ0 भीमराव अम्बेडकर मिशनरी सोसायटी नई दिल्ली रजि0 सं0 5–29855 के सदस्य हैं।

श्री भवानी शंकर जन समिति उरई एवं अ0भा0 प्रतिभा प्रोत्साहन मंच उरई से आपको काव्य जिज्ञासु एवं साहित्य जिज्ञासु की उपाधि प्राप्त हुई।

अभी तक आपका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। अप्रकाशित कृतियों में 'लड़ाई हवा और चिराग की' काव्य संग्रह है। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

शिक्षित होकर मिट सकता है दुख
हर दुख इन्सान मिटा सकता है
पढ़ना लिखना मत छोड़ो
चाहे लड़का हो या लड़की हो
कर सकता हर मानव प्रगति
यदि गति में कोई बदलाव न हो।[44]

गुजरात की सम्प्रदायिक हिंसा में कवि अशिक्षा को काफी हद तक

दोषी मानता है। शिक्षा ही मानव को मानव बनाती है। शिक्षा का धर्म या जाति से कोई मतलब नहीं है–

वो शिक्षा नहीं अशिक्षा थी
गुजरात में ट्रेन की ट्रेन जली
शिक्षा का धर्म से क्या मतलब ?
शिक्षा का जाति से क्या मतलब ?
शिक्षा का दिन से क्या मतलब ?
शिक्षा का रात से क्या मतलब ?
तुम जब चाहे ले सकते हो
तुम जब चाहे दे सकते हो
शिक्षा हर वस्तु से मिल सकती है।[45]

कवि प्रमोद कुमार 'कुदरती' की रचनाओं में उपदेशात्मक शैली के दर्शन होते हैं। कवि अपने आप में मस्त होकर उपदेश देता चला जाता है। इस कारण इन की कविताओं में नीरसता आ गयी है। हृदय को सहज प्रफुल्लित करके कवि ऐसी रचनाओं को रचने में असफल रहा है। थोड़ा बहुत ज्ञान का भी बघार लगा दिया है इस कारण देखने में कुछ अच्छी लगती है किन्तु स्वाद वे नहीं दे सके। किन्तु ऐसा भी नहीं समझना चाहिये कि कवि में काव्य रचने की प्रतिभा नही है। यदि आपके उपदेशात्मक भाव में न्यूनता आती जायेगी आप अच्छे साहित्यकार सिद्ध होंगे। आप साहित्य सेवा में तन–मन से समर्पित हैं।

प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला'

कवि उपन्यासकार एवं सम्पादक प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला' नवोदित साहित्यकारों में ऐसा नाम है जिसने अपनी काव्य प्रतिभा एवं सफल सम्पादन से साहित्य जगत में अपना स्थान निश्चित कर लिया है। इनके द्वारा छन्द शास्त्र के अनुकरण पर लिखी छन्दबद्ध रचनाएँ विद्वानों द्वारा सराही गई। इस नवोदित कलाकार ने अपनी कम उम्र में ही जनपद में विशिष्ट मुकाम हासिल कर लिया है। इनके द्वारा सम्पादित काव्य मन्जूषा जिसमें प्रतिष्ठित एवं ख्याति प्राप्त साहित्यकारों के साथ नवोदित कलाकारों को स्थान दिया गया है। इस सम्पादन को देखते हुए निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि यह साहित्यकार नवोदित कलाकारों का अन्वेषक है।

प्रवीण कुमार सक्सेना का जन्म 15 मई सन् 1978 ई0 को कालपी में हुआ था। आपके पिता श्री विशम्भर दयाल सक्सेना सरकारी पद पर कार्यरत हैं। आपकी माता श्रीमती पूर्णिमा सक्सेना अत्यन्त मृदुभाषिणी एवं साहित्यानुरागिनी महिला है। धार्मिक क्रिया कलापों में आपकी विशेष रुचि है। प्रवीण कुमार सक्सेना की एक बहन कु0 अपर्णा सक्सेना भी कवयित्री हैं। आपके दो छोटे भाई पवन सक्सेना एवं प्रमोद कुमार सक्सेना है। उजाला अपने बहन भाइयों में सबसे बड़े हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1991 ई0 में छत्रसाल इण्टर कालेज जालौन से उत्तीर्ण की। इसके कुछ समय पश्चात् सन् 1996 ई0 में इण्टरमीडिएट

की परीक्षा बुन्देलखण्ड इण्टर कालेज कोटरा जालौन से उत्तीर्ण की। आपने बी0ए0 की परीक्षा सन् 2001 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की।इसके साथ प्रभाकर गायन, वादन (पंचम वर्ष) 2003 ई0 में पण्डित उमादत्त मिश्र संगीत महाविद्यालय उरई से डिप्लोमा प्राप्त किया।

आपको लेखन की प्रेरणा माया हरिश्याम 'पारथ' एवं डॉ0 रामस्वरूप जी खरे से मिली। आपने छन्द शास्त्र की विधिवत् शिक्षा माया हरिश्याम पारथ से प्राप्त की।

आपकी प्रकाशित कृतियों में –'प्यार की तड़प' (लघु उपन्यास) 22 फरवरी 1998 ई0 में प्रकाशित तथा कुल पृष्ठों की संख्या 65 है। लौकिक प्रेम पर आधारित उपन्यास नारी की समर्पण की भावना से ओत–प्रोत है किन्तु इस उपन्यास में लेखक पूर्ण अभिव्यक्ति देने में असमर्थ रहा है। कथानक यत्र–तत्र बिखरा पड़ा है। 'काव्य मञ्जूषा' साहित्यकारों की रचनाओं का संकलन है जिसमें अधिकांशतः नवोदित साहित्यकारों को स्थान दिया गया है। इस पुस्तक का सम्पादन वर्ष अक्टूबर 2003 है। इसके पृष्ठों की संख्या 96 है। अप्रकाशित कृतियों में– 'चाँदनी में धूप', 'स्मृति के साये मे', 'अभिलाषाओं के द्वार पर', 'तन वतन के लिये', 'कैसा समय' तथा 'बदकिस्मती' (उपन्यास) हैं।

कवि ने परम्परा के अनुसार माँ सरस्वती की वन्दना की है–

ज्ञान दे कमलासना तुझको नमन।
कर कृपा खिल उठे प्रज्ञा के सुमन।।
हुई हो जो भूल माँ उसको भुला दे।
एक अभिनव ज्ञान का दीपक जला दे।।[46]

कवि को छन्द शास्त्र का अच्छा ज्ञान है। उसने छन्द शास्त्र के अनुरूप ही अधिकतर रचनाएँ रची है। कवि द्वारा दी गई उपमाएँ अनूठीं हैं।

विहार करते हुए क्रौंच पक्षी मदान्ध है– दीवाने है। कवि की यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

मानस में रस घोलत है इक क्रौंच विहार मदान्ध दीवानो।
प्रीतम के निज यौवन सौं लगि देखत ही इत सौं मड़रानों।।
सावन के घन घेरत ही वह दौड़त भागत है पगलानो।
पावस मेघ विहार मयूर समान नचै खग ज्यों बदरानो।।[47]

श्रृंगार रस के वर्णन में कवि ने नायक और नायिका के मिलन का सुन्दर चित्रण किया है। नायक की ढिटाई और नायिका द्वारा इस छेड़खानी का अपनी अंतरंग सखी से बताना एक चित्र खींच देता है। कवि की ये पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

ढीट बड़ो हमरो सइयाँ पकड़े बहियाँ महुआ सम झौरे।
आज सखी मन मोर मतो कल की करनी मन में मधु घोरै।।
साथ गयो नदिया तट खेलत खींच लियो जल में वर जोरै।
प्राण प्रिया कह हाथन में भरके कपड़ा सम मोह निचोरै।।[48]

उपर्युक्त छन्द में महुआ एवं कपड़ा के उपमान कवि द्वारा स्वनिर्मित बिम्ब हैं। जो कवि के काव्य कौशल को दर्शाते हैं।

प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला' के काव्य को देखते हुए उन्हें श्रृंगारी कवि के रूप में प्रतिष्ठित किया जा सकता है। कवि का श्रृंगार में अधिक मन रमा है। आगे देखना है कवि श्रृंगार को ही अपने काव्य का विषय बनाता रहेगा या बदलाव करेगा कुछ कहा नहीं जा सकता है।

कवि ने श्रीकृष्ण और राधा के प्रेम प्रसंग को मन्तगयन्द सवैया के माध्यम से चित्रित किया है–

करे छेड़ा–छाड़ी मैया पनघट पर श्याम,

नन्द दुलारो बनो है रास रचवइया।

डगर–चलत कंकरी मार गागरी फोरे,

कर जोरा–जोरी पकड़त है कलइया।।[49]

कवि के हृदय में एक ऐसी भोली–भाली सूरत बसी है जिसे वह जीवन संगिनी बनाना चाहता है। वह सूरत कभी उसके स्वप्न में कविता बनकर आती है तो कभी रागिनी बनकर। कवि की यह स्वप्न सुन्दरी कवि के काव्य में कविता बनकर आ खड़ी होती हैं। कविता की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

हृदय में बसी तेरी भोली–भाली सूरत है,

जीवन संगिनी बन क्यों नहीं आ जाती हो ?

जाने क्यों सोचता हूँ बार–बार क्यों यही है सत्य

स्वप्न में कविता बन दिल में समाती हो।[50]

कवि ने 'काव्य मन्जूषा' संकलन का सम्पादन सफलता पूर्वक किया है। इस संकलन के सम्बन्ध में **डॉ0 मनु जी श्रीवास्तव रीडर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग बुन्देलखण्ड कालेज झाँसी ने लिखा है**–''समग्र रूप से काव्य मन्जूषा विषय वैविध्य युक्त सरस एवं मनोहारी संकलन है जिसमें सभी नवोदित कलाकारों ने अपनी कुशल मेधा का परिचय दिया है। प्रवीण कुमार सक्सेना का उन विचार वैविध्य वाले कलाकारों को एक मंच पर लाने का प्रयास स्तुत्य है। अन्त में मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नही है कि विविधा विचारों को वर्तमान एवं भावी पीढ़ी तक पहुँचाने का जो प्रयास सम्पादक

द्वारा किया गया वह उनके अथक प्रयासों का ही प्रतिफल है। मैं इसी हार्दिक कामना से इस संग्रह को देश और समाज के लिये उपयोगी व सारगर्भित मानता हूँ।[51]

प्रवीण कुमार सक्सेना साहित्य के प्रति लगनशील एवं निष्ठावान है। साहित्य को ऊँचाइयों तक पहुँचाने का जोश भी है। यह जोश कवि के कृतित्व को निखारने में पूर्णतया सहायक होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

रविकान्त 'नेशे' :—

जनपद जालौन के उदीयमान साहित्यकार रविकान्त 'नेशे' का जन्म 5 जुलाई सन् 1982 ई0 को ग्राम व पो0 अकबरपुर (इटौरा) तहसील कालपी में हुआ । आपके पिताजी का नाम श्री फूलसिंह व माता जी का नाम श्रीमती भूरी देवी है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1997 एवं 1999 ई0 में इण्टर कालेज इटौरा से उत्तीर्ण की। पुनश्च 2002 ई0 में आपने बी0ए0 की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। आपने एम0ए0 (राजनीति शास्त्र) की परीक्षा उत्तीर्ण करके इसी विषय पर शोधकार्य शुरु कर दिया है।

आपको लेखन की प्रेरणा आपके दादा जी की अकाल मृत्यु से विषाद एवं हृदय की घनीभूति पीड़ा से स्वतः ही प्रस्फुटित हुई। इसके अतिरिक्त आपको प्रेम में मिली असफलता के कारण घंटों एकान्त में बैठे रहने पर हृदय के उद्गार स्वतः ही कागज के पृष्ठों पर उतरते चले गये।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। अप्रकाशित

रचनाओं में– "A midnight kiss" एवं 'एक भिखारिन' कहानियाँ हैं। कहानी लेखन में आपको प्रतिभा प्रोत्साहन मंच द्वारा प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था।

आप हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में कविताएँ लिखते है। विद्यार्थी जीवन की एक घटना में– बी.ए. करने से पहले आप पूर्ण रूप से आस्तिक थे किन्तु डॉ0 रिपुसूदन जी के मार्क्सवादी विचारों से प्रेरित होकर आप पूर्ण रूप से नास्तिक हो गये।

आप अभी नवोदित साहित्यकार हैं। आपने गीत गजल आदि रचनाएँ लिखी हैं। कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

तुम्हारा स्नेह

तुम्हारा प्यार

सिर्फ ख्वाब ही रहा

हृदय की गइराई को न छू पाये।[52]

आपकी अंग्रेजी भाषा में भी यह कविता दृष्टव्य है–

I hath no desire

to live

Eagerness feelings has destroyed

hope vanushed

I can't gave the happyness.

any others.[53]

रविकान्त'नेशे अभी उन्होंने साहित्य जगत में अपने कदम रखे हैं। बढ़ते कदम मंजिल छू सकेंगे या नहीं। यह कहना कठिन है। कवि का झुकाव साहित्य की तरफ है।

1. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 22/12/2002
2. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 22/12/2002
3. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 13
4. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 13 व 14
5. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका द्वितीय अंक 1993, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 14
6. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 11
7. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 10
8. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 10
9. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 25
10. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 27
11 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 27
12. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 28
13. 'सबकी खैर ख़बर' त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल', परिचयाङ्क, सम्पादक– नासिर अली 'नदीम' पृ0सं0 29
14 'विकल्पावली' रचयिता, जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति परिचयाभियत शीर्षक से

उदघृत

15 'विकल्पावली' रचयिता– जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति परिचयाभियत शीर्षक से उदघृत

16 'विकल्पावली' रचयिता– जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति परिचयाभियत शीर्षक से उदघृत

17 'विकल्पावली' रचयिता– जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति परिचयाभियत शीर्षक से उदघृत

18 'विकल्पावली' रचयिता– जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति' दोहा संख्या 4658 पृ0सं0 502

19 'विकल्पावली' रचयिता– जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति' दोहा संख्या 384 पृ0सं0 40

20 'विकल्पावली' रचयिता– जगज्योतिसिंह 'महर्षि' जगज्योति' दोहा संख्या 4039 पृ0सं0 435

21. कवयित्री से फोन द्वारा प्राप्त जानकारी दिनांक 13.2.05

22. 'बूँद से सागर तक' सम्पादक–रसूल अहमद 'सागर' पृ0सं0 82

23 साक्षात्कार द्वारा कवि से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 14/05/03

24. अप्रकाशित खण्ड काव्य 'नारी क्रांति' से उद्घृत रचना

25. कवि से साक्षात्कार से प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 14/05/03

26. काव्य मञ्जूषा 2003, सम्पादक प्रवीण कुमार सक्सेना, उजाला, पृ0सं0 78

27,28 कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 03/08/2003

29,30,31 – कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 03/08/2003

32,33 कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त, जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक, 15/09/2003

34. सर्जना, 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 78

35. सर्जना, 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेशचन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 79

36. कवि से साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 13/02/04

37. काव्य मञ्जूषा 2003 सम्पादक–प्रवीण सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 61

38. काव्य मञ्जूषा 2003 सम्पादक–प्रवीण सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 63

39. काव्य मञ्जूषा 2003 सम्पादक–प्रवीण सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 63

40,41,42– कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 07/05/03

43. कवयित्री से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 25/04/2004

44. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 33

45. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 34

46. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 10

47. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 28

48. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 28

49. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 29

50. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 29

51. काव्य मञ्जूषा, 2003 सम्पादक– प्रवीण कुमार सक्सेना, 'उजाला' पृ0सं0 9

52,53 कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 23/08/2004

सप्तम अध्याय

कोंच तहसील के साहित्यकार

मुस्तफा खान 'दीवाना'
डॉ० अवधविहारी निगम 'जख्मी'
राधाचरण गुप्त 'चरण'
डॉ० हरीमोहन गुप्त
नारायण दास स्वर्णकार
मंसूर अली 'हसरत'
डॉ० एल.आर. श्रीवास्तव 'बिन्दु'
अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'
राजेन्द्र सिंह 'रसिक'
नरेन्द्र मोहन 'मित्र'
वहीद अहमद 'अदब'
रूपनारायण शुक्ल 'चंदन'
डॉ० सुरेखा 'जैन'
नन्दराम स्वर्णकार 'भावुक'
सुरेन्द्र कुमार नायक
मुहम्मद जावेद 'कुदारी'
ओंकार नाथ पाठक 'ओम'
राजकुमार हिंगवासिया 'राज'
दिनेश चन्द्र स्वर्णकार 'मानव'
भास्कर सिंह 'माणिक'
संजय सिंह स्वर्णकार
संजीव कुमार स्वर्णकार 'सरस'
कु० शारदा सिंह राजावत 'पायल'

मुस्तफा खान 'दीवाना'

उर्दू कविता की सशक्त विधा–गजल के यशस्वी साहित्यकार मुस्तफा खान "दीवाना" ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक, राष्ट्रीयता एवं श्रृंगार के ऐसे चित्र उकेरे हैं जो हृदय पर सीधा प्रभाव छोड़ते हैं।

मुस्तफा खान 'दीवाना' का जन्म 1930[1] ई0 को क्रोंच ऋषि की नगरी कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री बफाती खान था। माता श्रीमती कुलसूमन हैं। आपका विवाह उरई निवासी नूरहसन जी की सुपुत्री श्रीमती जैतून बेगम के साथ हुआ। आपकी छैः सन्तानों में चार पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। पुत्र क्रमशः जाहिद खान, शाकिर खान, असलम खान एवं शायर खान है। पुत्रियों में श्रीमती नज़्मा बेगम व श्रीमती नसरीन बेग़म है।

आपकी विद्यालयी शिक्षा मात्र कक्षा 6 तक ही हो सकी किन्तु आपने घर पर ही हिन्दी, उर्दू का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। कवि एवं शायरों की रचनाओं को सुनने से आपके हृदय में भी काव्य रचना का प्रस्फुटन होने लगा था। आज वे शायरों में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। आपके प्रिय शायर डॉ0 इकबाल हैं। सम्प्रति आप स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य करते हैं।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। कवि मंचों पर आप अपनी गज़ल एवं कविताओं का सस्वर पाठ करते हैं तो श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुनता है।

आपने अनेक गज़लों एवं कविताओं का सृजन किया है। आपकी रचनाओं में छायावाद की झलक स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। छायावाद

से प्रेरित आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

नगमा सराइ झरने, किसकी करते है वीरानों में
किसकी सदायें अभी हैं, पिन्हा सैरा की चट्टानों में
तुम जो नहीं तो कौन है, दिल की आती–जाती साँसों में
किसके कदमों की आहट है, फिर दिल के तहखाने में।[2]

आपने श्रृंगार रस से ओत–प्रोत रचनाओं का भी सृजन किया है। शायर माशूका के जलवे को इन शब्दों में व्यक्त करता है–

क्या करेगी ये खुदा जाने जिधर जायेगी,
जो हवा गेसुए जाना से गुजर जायेगी।
हर तरफ अंधेरा सा नजर आयेगा।
जुल्फ चेहरे पै जब उनके बिखर जायेगी।[3]

शायर मुस्तफा खान ''दीवाना'' ने हिन्दी–उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग अपनी रचनाओं मे किया है। आपकी रचनाएँ प्रभावी है। भाव और विचारों का तालमेल अच्छा है।

डॉ० अवधविहारी निगम 'जख्मी'
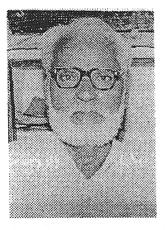
भारतीय उदात्त जीवन मूल्यों, पुरातन सांस्कृतिक अवधारणाओं, परम्पराओं का निर्वाह करने वाले कवि एवं शायर डॉ0 अवधविहारी निगम जी का जन्म 30 दिसम्बर सन् 1932 ई0 को कोंच कस्बे में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री शम्भूदयाल निगम था। आपके अग्रज श्री रामगोपाल निगम भू0पू0 चीफ रीडर कले0 उरई तथा अनन्तबिहारी लाल चीफ फार्मासिस्ट संयुक्त

चिकित्सालय उरई है। आपकी तीन बहनों में स्व0 श्रीमती कुसुमकली, स्व. श्रीमती लाड़ली देवी तथा श्रीमती जयदेवी है। आपका विवाह स्व0 श्रीमती कुसुम लता जी के साथ हुआ था, जिनका निधन 28 जुलाई सन् 1988[4] ई0 को हो गया था। आपके तीन पुत्र अरुण, पवन और शैलेन्द्र निगम है।

आपकी स्कूली शिक्षा इण्टरमीडिएट तक है। आप सहायक विकास अधिकारी (पशुपालन विभाग में) के पद पर कार्यरत रहे। आप इसी पद से सन् 1988 ई0 में सेवानिवृत्त भी हुए। सम्प्रति आप साहित्य सेवा में संलग्न है इसके साथ ही पशुपालन सुरक्षा एवं उनकी चिकित्सा में अपना बहुमूल्य समय देकर लोगों को मुफ्त जानकारी देते हैं।

आपके प्रकाशित काव्य संग्रह 'असलियत' व 'हयाते–हकीकत' है। हयाते–हकीकत के पृष्ठों की संख्या 74 है तथा प्रकाशक–डिवायन हैल्थ केयर प्रा0 लि0 कानपुर है। यह संग्रह 'जख्मी' जी ने अपनी पत्नी स्व0 श्रीमती कुसुमलता निगम को समर्पित किया है।

पति–पत्नी दो जिस्म एक जान होते हैं यदि इनमें से कोई एक साथ छोड़ जाता है तो निश्चित रूप से व्यक्ति टूट सा जाता है। फिर भी व्यक्ति को शेष जीवन तो जीना ही पड़ता है। कला व्यक्ति के लिये सहारा बनकर उसका पथप्रदर्शक बनती है। 'जख्मी' जी भी इसी कला (साहित्य) के माध्यम से जीवनरूपी गाड़ी को आगे बढ़ाते हुए अपने जीवन साथी की यादों में खोया हुआ कह उठता है–

दिल तड़प–तड़प कर रह जाता जब याद तुम्हारी आती है।
तस्वीर से दिल बहला लेता, जब याद तुम्हारी आती है।।
गुन्चे उदास कलियाँ सहमी, लुट गयीं बहारें गुलशन की।

अश्कों से दामन भर जाता; जब याद तुम्हारी आती है।।[5]

कवि केवल अपने दुख से ही दुखी नहीं है, न वह इतना स्वार्थी है। वह तो सहज सम्वेदना मानवता की व्यापक पृष्ठभूमि पर प्रतिष्ठित होकर परदुख कातरता, प्रेम, उदारता, एकता एवं विश्वबन्धुत्व की भावना से अभिमण्डित है। आपकी यह रचना इन्हीं भावों को प्रदर्शित करती है। यथा–

कैसी अब दुनियाँ में हल चल यह मची।
भाई को भाई से दहशत हो गयी।।
सभी पर है रहमत और नज़रे करम।
गिरजा गुरुद्वारा या हो दहरो हरम।।
दिखाया एक ही सब में कलन्दर शाह बाबा में।।[6]

कवि कभी–कभी जब लौकिक धरातल से अलौकिक धरातल की तरफ बढ़ने लगता है तो उनकी रचनाओं में छायावादी रूप झलकने लगता है। यथा–

हो गया उन से मेरा जो है फासला,
उनके नजदीक जायेंगे हम सब एक दिन।
उनका दीदार जब मुझको हो जायेगा,
हसरते–दिल निकलेंगे हम एक दिन।।[7]

आपके हृदय की पीड़ा आपकी रचनाओं में लावा बनकर उमड़ पड़ी है। आप अपनी प्रियतमा के वियोग में बिखर गये हैं। उनके ये हृदय के उद्गार उनकी कसक को उभारते हैं–

जबसे चले गये है वह सदमें उभर गये।
ऐसी चलीं हवाएँ गम, अरमां बिखर गये हैं।।[8]

आपने अपने हृदय के उद्गार सरल एवं सुबोध भाषा में व्यक्त किये हैं। उर्दू के शब्दों में सांगोपांग प्रयोग भाषा में मिठास भर देता है। आप श्रृंगार रस में ज्यादा रमे हैं। वियोग श्रृंगार तो इनकी रचनाओं का प्रतिपाद्य विषय बन गया है।

कवि के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये है। **डॉ0 कैलाश नाथ द्विवेदी मथुराप्रसाद महावि0 कोंच के शब्दों में–** "श्री जख्मी की अभिराम गजलें भारतीयता के सशक्त स्वरों से कोटि–कोटि काव्य रसिकों को अवर्जित करने में सर्वथा सक्षम है। इन गीत और गजलों में मानव जीवन का अन्तः बाह्य सौन्दर्य सर्वत्र भाव–भाषा से सुरभित सा मूर्त्तमन्त्र है, जिससे प्रत्येक भावुक जन मानस इन्हें प्रेम एवं आनन्द से गुनगुनाकर श्री जख्मी जी को अवश्य सराहेगा।[9]

नरेन्द्र मोहन स्वर्णकार मित्र जी के शब्दों में– "डॉ0 अवधविहारी निगम ने रस रास के संयोग और वियोग दोनों पहलुओं पर सहृदय साहित्य प्रेमी पाठकों को आनन्दानुभूति प्रदान कर जीवन दर्शन के साथ सृजनात्मक भाव–भूमि प्रदान करते हुए आध्यात्मिक लोक के द्वार तक दस्तक देते हुए मानवता का श्रेष्ठ सम्मान किया है।"[10]

कवि (शायर) श्रृंगार रस में ही ज्यादा रमा है। वियोग पक्ष इनका अधिक प्रबल रहा है। आप जनपद के ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से इस भूमि को गौरवान्वित किया है।

राधाचरण गुप्त 'चरण'

राधाचरण गुप्त को अपनी मिट्टी से असीम प्यार है। जिस मिट्टी में कवि पला–बढ़ा है वह उसे कैसे

भूल सकता हैं भले ही उसका कर्मक्षेत्र इस मिट्टी से न रहा हो। उसकी सोंध
ी बास उसके तन–मन में बसी हुई है। उनके सम्पूर्ण जीवन में बुन्देलखण्ड की ऐतिहासिक सांस्कृतिक एवं लोकसांस्कृतिक विरासत की जीवन्त छाप का समावेश है।

राधाचरण गुप्त 'चरण' का जन्म 2 मार्च सन् 1936ई0 को कोंच जनपद जालौन उ0प्र0 में हुआ था। आपके पिता श्री बद्रीप्रसाद बलैया एवं माता श्रीमती भगवती देवी हैं। आप सहायक विकास अधिकारी सहकारिता के पद पर कार्यरत रहे और इसी पद से आप सेवानिवृत्त भी हुए।

आपकी उच्च शिक्षा एम.ए. (हिन्दी) तक है। आपको संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित हिन्दी के मूर्धन्य साहित्यकार स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी पं0 प्रभुदयाल द्विवेदी से काव्य सृजन की प्रेरणा मिली।

आपकी प्रकाशित कृति 'गीत संचरण' है जिसके पृष्ठों की संख्या 68 है तथा प्रकाशक–सामाजिक साहित्यिक एवं रचनात्मक संस्था, औरैया (उ0प्र0) है। अप्रकाशित रचनाओं में 'आराधन' अनुगूँज, बेजुवाँ ज़ज़्बात, बुन्देली भाषा की 'पथरा एवं धनाँ–धनइयाँ' हैं। इसके अतिरिक्त कतिपय साहित्यकारों की कृतियों में उल्लेख, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में स्फुट रचनाओं का प्रकाशन। छतरपुर रेडियो स्टेशन से कविता प्रसारण। कतिपय साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी हो चुके है। सम्पर्क सूत्र 83 आर्यनगर औरैया, 206122, उ0प्र0 है।

कवि बुन्देलखण्ड की भूमि में जन्मा पला बढ़ा है। वह इस मिट्टी को कैसे भूल सकता है। 'कृषक वन्दन' शीर्षक से यह रचना दृष्टव्य है–

माटी की गोद में पले

धरती के लाल लाड़ले।

माटी के लाल को प्रणाम

धरती के लाल को प्रणाम।।[11]

जो देश के लिये मर मिट जाते है वे हमारे लिये वन्दनीय होते हैं। देश पर प्राणों का बलिदान करने वाले शहीद की वन्दना कवि ने इस प्रकार की–

शहीदो शत–शत बार नमन

सपूतो शत–शत बार नमन।[12]

आज दहेज हमारे समाज की प्रमुख समस्या बन गया है। इस दहेज दानव ने अब तक न जाने कितनी नववधुओं को अपना ग्रास बना लिया है। सभी इस समस्या से पीड़ित हैं किन्तु इसका निराकरण अभी तक नहीं हो पाया है। कवि 'दानव–दहेज का अन्त करें' शीर्षक से लोगों को सचेत करता हुआ कहता है–

ओ! समाज के कर्णधार, कुछ सोचो, समझो याद करो।

इस हरी–भरी फुलबगिया को, इस तरह–न बरबाद करो।।

थी दीन पिता की चाह यही, लड़की की शादी हो जावे।

मिट जावे उर की दाह सभी, बेटी भी मेरी सुख पावे।।

किन्तु दहेज बिना अब तेरा, आज समाज में कौन धनी।।

कन्या भी वरदान कभी, पर आज वही अभिशाप बनी।।[13]

कवि की साहित्यिक प्रतिभा के सम्बन्ध में **मेजर आदित्य त्रिपाठी महामंत्री साहित्य भारती औरैया ने लिखा है**– 'चरण जी की काव्य भाषा रामबाण के समान अमोघ तो नहीं किन्तु उसमें लयात्मक संयोजन,

शब्द शक्ति, ध्वन्यात्मकता, काव्य गुण, रसात्मक बोध और सौष्ठव की गुणवत्ता विद्यमान है। 'चरण' जी की मुक्तक रचनाओं का यह स्तवक उनके बहुआयामी तेवरों का दिशासूचक है। मैंने उनकी सभी विधाओं की रचनाएँ सुनी–गुनी हैं।

कवि की भाषा सरल सुबोध व बोधगम्य है। सम सामयिक विषय पर आपकी लेखनी द्रुतगति से चली है। आप सामाजिक समस्याओं को उभारने में पूर्ण सफल रहे हैं। आपका यह कवि कर्म श्लाघनीय माना जायेगा।

डॉ० हरीमोहन गुप्त
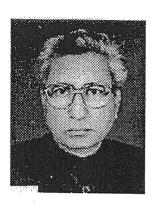
'कुणाल' खण्डकाव्य के रचयिता डॉ0 हरीमोहन गुप्त का जन्म 3 दिसम्बर सन् 1936 ई0 को चिरगाँव (झाँसी) में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री विश्वनाथ गुप्त थे। आपकी माता का नाम श्रीमती अवधकुमारी गुप्ता है। आपका विवाह कानपुर निवासी श्री राधाकृष्ण गुप्त की सुपुत्री श्रीमती उर्मिला गुप्ता के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में दो पुत्र एवं एक पुत्री है। आपके बड़े पुत्र डॉ0 हर्षवर्धन गुप्त का विवाह श्रीमती मधु गुप्ता के साथ हुआ। वरुण नीखरा पुत्र एवं कु0 चारु गुप्ता पुत्री है। कवि के दूसरे पुत्र कमलेश गुप्त है इनका विवाह श्रीमती सीमा गुप्ता के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में पार्थ नीखरा एवं कु0 दीक्षा गुप्ता है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1951 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज, कोंच से उत्तीर्ण की। सन् 1953 ई0 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा विपिन बिहारी इण्टर कालेज झाँसी से उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् 1958 ई0 (चिकित्साशास्त्र) की डिग्री शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय ग्वालियर से उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप कोंच कस्बे में ही अपना क्लीनिक खोले हुए है

और लोगों की सेवा पूर्ण निष्ठा के साथ करते हैं। कवि बचपन से ही कोंच कस्बे में स्थायी रूप से निवास कर रहा है।

आपको लेखन की प्रेरणा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी से प्राप्त हुई।

आपने पल्स पोलियों अभियान में अपना विशेष योगदान दियां इसके साथ ही आप मथुरा प्रसाद डिग्री कालेज के एम.ए. हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र को तथा जनपदीय उदीयमान कवि को पिता 'श्री विश्वनाथ गुप्त की स्मृति' में 500 रुपये का नकद पुरस्कार एवं स्मृति चिह्न भेंट करते हैं।

आपकी प्रकाशित पुस्तक कुणाल (खण्डकाव्य) है। यह खण्ड काव्य ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि पर लिखा गया ऐसा खण्डकाव्य है जिसमें मौर्य वंशीय अशोक के पुत्र कुणाल के उदात्त गुणों को दर्शाया है।

अप्रकाशित रचनाओं में 'सुदामा एक नवीन चिन्तन' 'अष्टावक्र' 'एकलव्य' एवं 'कर्ण' (खण्डकाव्य) हैं।

कवि लोक और परलोक के सम्बन्ध में जिज्ञासु है। वह अपने आपसे ही प्रश्न करके कहने लगता है–

एक प्रश्न जाग्रत था मन में,

मानव क्या जिन्दा रहता है, मरकर भी इस जग में।[14]

आपकी भाषा मुहावरेदार है। आपने इनका सटीक प्रयोग करके काव्य सौन्दर्य को बढ़ा दिया है। आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

हमने तो चाहा था, हम तिरसठ हो जाएँ,

क्यों है यह परिणाम कि हम छत्तीस हुए हैं।

चाहा था सब एक एक से ग्यारह होंगे,

हुए तीन तेरह दल ही चौबीस हुए हैं।[15]

'कुणाल' खण्डकाव्य के माध्यम से कवि ने कुणाल के शारीरिक सौष्ठव का कितना सुन्दर चित्र खींचा है–

यौवन के संग नेत्र उसी के है कजरारे,

चितवन चंचल चपल दृष्टि से सबको मारे।

गठी हुई है देह सलोना उसका चेहरा

रूप रंग समभाव रहा है वदन इकहरा।[16]

यह संसार मिथ्या है यह दार्शनिक विचार है। कवि इसी दर्शन का आश्रय लेकर कह उठता है–

हो निर्भय, संघर्ष करो यह मिथ्या जग है,

चलो सदा सद्पन्थ, वही तो सच्चा मग है।

क्यों आकुल हो किया नहीं जब यहाँ पाप है,

नीर–क्षीर का न्याय, सदा से यही छाप है।[17]

कवि ने 'कुणाल' खण्डकाव्य का विषय अच्छा चुना है। कवि इस खण्डकाव्य के माध्यम से जो कहना चाहता था वह कह गया। 'कुणाल' को भी नायक के पद पर आसीन करने में सफल रहा है किन्तु पूरे खण्डकाव्य में प्रकृति चित्रण, सूर्यास्त, सूर्योदय का कहीं नामों निशान तक नहीं है। उक्ति एवं अन्योक्ति का पूर्णतया अभाव हैं। सीधी–सीधी कहानी खण्डकाव्य की कसौटी पर खरी नहीं उतरती है। खण्डकाव्य एक उपवन के समान होता है जिसमें विभिन्न प्रकार के पुष्प उसमें सुवासित होते हैं। कुणाल खण्ड काव्य उपवन तो है किन्तु विभिन्न प्रकार के पुष्पों का अभाव है–सुगंधि का अभाव है।

कवि डॉ0 हरीमोहन गुप्त काव्य साधना में सतत् प्रयासरत है। चिन्तन ठीक है किन्तु अध्ययन का अभाव है। अच्छे साहित्यकारों की पुस्तकें पढ़ने से लेखन क्षमता में निरन्तर सुधार आता है ऐसा विद्वानों का कथन है।

नारायण दास स्वर्णकार

नारायण दास स्वर्णकार का जन्म 15 मार्च सन् 1943 ई0 में ग्राम पड़री तहसील कोंच जिला जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री लक्ष्मीनारायण स्वर्णकार एवं माता का नाम स्व0 श्रीमती किशोरी देवी था। आपका विवाह मुहल्ला डरु भौड़ेला झाँसी निवासी श्री शिवदयाल स्वर्णकार की सुपुत्री श्रीमती कुसुमलता स्वर्णकार के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में दो पुत्र एवं एक पुत्री है। बड़े पुत्र का नाम कृष्णकुमार स्वर्णकार है। इनका विवाह ग्राम करगवाँ जिला झाँसी निवासी श्री भगवान दास की सुपुत्री श्रीमती गीता देवी के साथ हुआ। इनका एक पुत्र है जिसका नाम हरिहर है। कवि के दूसरे पुत्र का नाम रामकुमार स्वर्णकार है। इनका विवाह जालौन निवासी श्री जयप्रकाश सोनी की सुपुत्री श्रीमती दीपा के साथ हुआ। इनकी दो संतानों में कु0 दीक्षा व मेघा है। कवि की सुपुत्री श्रीमती पंकजलता का विवाह श्री रामचन्द्र जड़िया के सुपुत्र श्री मनोजकुमार के साथ हुआ। इनका एक पुत्र आशीषकुमार है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1959 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। कुछ समय पश्चात् इण्टरमीडिएट की परीक्षा आपने इसी विद्यालय से सन् 1963 ई0 में उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा आपने व्यक्गित रूप से सन् 1974 ई0 में उत्तीर्ण की। सन् 1966 ई0 में आपने सी.टी. की परीक्षा जे.वी.टी.सी. झाँसी से उत्तीर्ण की। आपने एम.ए.

(संस्कृत) की परीक्षा व्यगितगत रूप से सन् 1985 ई में उत्तीर्ण की। आप जनता इण्टर कालेज उरई में शिक्षक पद पर कार्यरत रहे और इसी विद्यालय से आप सेवानिवृत्त भी हुए।

आपके अभी तक तीन रचना संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। वे प्रकाशित संग्रह इस प्रकार है– 'नव चेतना प्रसून' जिसके पृष्ठों की संख्या 64 है। दूसरे संग्रह 'इहलोक परलोक सुधारें' है इसके पृष्ठों की संख्या 83 है तथा तीसरा संग्रह 'निष्काम भक्ति' (विविधा है)

आपकी रचनाओं का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि आप कवि कम उपदेशक अधिक है। कहीं–कहीं तो वे उपदेशों की सीमा का अतिक्रमण भी कर जाते हैं जो पाठक के मन को बोझिल बना देते हैं किन्तु आपके द्वारा रचित राष्ट्रभक्ति की भावना से प्रेरित गीत अच्छे बन पड़े है। यथा–

आज देश पर फिर छाए संकट के बादल
देख रहा बुरी दृष्टि से बन्धु पाक अब।[18]

प्राचीन काल में जो कर्त्तव्य धारण किये जाते थे, उन कर्त्तव्यों को कवि ने आधुनिक युग में धारण करने पर बल दिया है। जबकि देशकाल के अनुसार कुछ कर्त्तव्य सिद्धान्त बदल जाते हैं। आज के चिन्तक, साहित्यकार एवं दार्शनिक ऐसी रूढ़ियों को तोड़ने में लगे हुए है। यह साहित्यकार इन रूढ़ियों से चिपका रहना चाहता है। जैसे सेवक के कर्त्तव्य में स्वर्णकार जी लिखते हैं– **''स्वामी की आज्ञा का पालन करना ही धर्म है।''**[19] उसी में आप पुनः लिखते है– **''कि जिस तरह हाथ–पैर और नेत्र शरीर की सेवा करते हैं उसी प्रकार सेवक स्वामी की सेवा व हित साधन में**

तत्पर रहे।"[20] स्वर्णकार जी ने स्वामी के कर्त्तव्य की तरफ भी इंगित किया है–"**स्वामी सेवक के सम्मान का ध्यान रखें–सेवक भी इंसान है, उसका भी कुछ सम्मान है।।**"[21]

साहित्यकार के इस कथन में सेवक के प्रति स्वामी का एहसान करना दिखायी देता है। जिस प्रकार से कहा जाता है कि "जीवों पर दया करो।" हम जीवों पर दया करें या न करें यह हमारे मन की बात है। हमारे संविधान में समानता का अधिकार है और ये बताया गया है कि लोकतन्त्र में न कोई स्वामी है और न कोई सेवक। हमें केवल अपने कर्त्तव्य के प्रति ईमानदार एवं वफादार रहना चाहिये। कवि की उपर्युक्त विचारधारा रूढ़ि वादिता की तरफ इंगित करती है जबकि साहित्यकार युगदृष्टा होता है।

कदाचित् नारायण दास स्वणर्सकार के साहित्य का उद्देश्य पुरानी रूढ़ियों एवं परम्पराओं की पुनः स्थापना करना है। कवि यदि चाहता तो अपने मौलिक चिन्तन के द्वारा सामाजिक विकृतियों पर अपनी धारदार लेखनी चलाकर समाज का भला कर सकता था किन्तु उपदेश के मोह में वह ऐसा करने में असफल रहा।

ऐसा नही है कि साहित्यकार ने समाजोपयोगी साहित्य की रचना नहीं की है लेकिन वह अल्प मात्रा में है। पड़ौसी के कर्त्तव्य सराहनीय है। यथा "**पड़ौसी के सुख–दुख में शामिल हों, आवश्यकता के समय धन सामग्री से सहयोग करें।**"[22] देशहित के लिये भी उनके सुझाव अनुकरणीय है– यथा– "**अपने हित की अपेक्षा देशहित को सर्वोच्च स्थान दें। देशहित के लिये अपने हित का त्याग करें।**"[23]

इस प्रकार साहित्यकार के साहित्य का अवलोकन करने पर

हम पाते हैं कि उन्होंने धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन किया है। इस कारण उन्होंने अनेक बातें ज्यों कि त्यों उतार दी हैं। उनके साहित्य में मौलिकता न्यून है। बिम्ब, उदाहरण रूढ़ि हैं फिर भी कहीं–कहीं ऐसी बातें उनकी कलम से निकली है जो जीवन में अनुकरणीय है।

मंसूर अली 'हसरत'

मंसूर अली 'हसरत' ऐसे स्वधन्य नाम साहित्यकार है जिन्होंने अपने काव्य के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को बल प्रदान किया है। ऐसे साहित्यकारों के लिये शिक्षा कोई मायने नहीं रखती है। इनके हृदय में जो भाव निहित हैं उन्हीं भावों को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर किया है। उनकी गज़लें मर्मस्पर्शी हैं जो सहृदय पाठकों को रसानुभूति कराती हैं।

मंसूर अली 'हसरत' का जन्म 1944[24] ई० में कोंच कस्बे में हुआ था। आपके पिता स्व० श्री कढ़ोरे राईन व माता स्व० श्रीमती ईदा थी। आपका विवाह सेरसा (झाँसी) निवासी श्री कल्ले की सुपुत्री श्रीमती जुम्मी के साथ हुआ। आपकी सात सन्तानों में पाँच पुत्र एव दो पुत्रियाँ है। पुत्रों में उस्मान, इस्लास, इसरार, आजिम, व निजाम है तथा पुत्रियाँ श्रीमती मोमीना बानो व श्रीमती समीना बानो है।

आपकी विद्यालयी शिक्षा कक्षा 4 तक है। सम्प्रति आप स्वतन्त्र लेखन में व्यस्त रहते हैं।

अभी आपका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ किन्तु आपकी रचनाएँ कवि मंचों पर श्रोताओं के द्वारा सराही जाती हैं। राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत आपका यह मुक्तक यहाँ दृष्टव्य है–

हमारे खून के कतरे चमन में चश्मदीद हैं,

हुए जो हक परस्ती पर फ़िदा वो गुलशहीद है।

हमारे देश की अज़मत क्या मिटायेंगे क्या हसरत,

अभी लाखों हमारे देश में अब्दुल हमीद हैं।।[25]

हसरत जी की यह गज़ल भी अच्छी बन पड़ी है–

हम समझे उनके घर कोई मेहमान आये हैं।

उसने तो मेरे कत्ल को कातिल बुलाये हैं।।[26]

आज के समय में हर जगह मार–काट चोरी डकैती की घटनाएँ आये दिन होती रहती हैं। लोगों के बीच भय व्याप्त है। इसी सन्दर्भ में शायर ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं–

मिलता कहाँ है चैनो अमन तेरे शहर में

करते हैं लोग ज़िन्दा दफ़न तेरे शहर में।[27]

आपकी भाषा उर्दू मिश्रित हिन्दी है। सरलता एवं सुबोधता लिये यह भाषा पाठक पर सीधा प्रभाव छोड़ती है। शायर मंसूर अली 'हसरत' ने अपने विचारों से समाज एवं राष्ट्र भावना की स्वस्थ तस्वीर खींची है। ये भाव देश और समाज के उत्थान हेतु प्रेरणादायी होंगे।

डॉ० एल. आर. श्रीवास्तव 'बिन्दु'

अपने प्रणय गीतों, सामाजिक एवं राजनैतिक विषय से सम्बन्धित कविताओं से जनमत की भावनाओं को गहराई तक प्रभावित करने वाले कवि डॉ0 एल. आर. श्रीवास्तव 'बिन्दु' एक प्रतिभा सम्पन्न कवि हैं।

डॉ0 एल.आर. श्रीवास्तव 'बिन्दु' का पूरा नाम

डॉ0 लल्लूराम श्रीवास्तव है। इनका जन्म 6 फरवरी सन् 1944 ई0 में ग्राम अटा पो0 कोंच में हुआ था। आपके पिता श्री जी.आर. श्रीवास्तव एव माता श्रीमती सरयू देवी थी। इनके दो विवाह हुए हैं— पहली पत्नी श्रीमती कैलाश कुमारी श्रीवास्तव का निधन 31 मई 1979 ई0 को हो गया था। इनकी तीन संतानें हुई, जिनके नाम क्रमशः रामबिहारी एडवोकेट, प्रमोदकुमार, एवं विनोदकुमार हैं। बड़े पुत्र रामबिहारी एडवोकेट का विवाह श्रीमती मीना के साथ हुआ, जिनके रोहित, अमित एवं पवन तीन पुत्र हैं। दूसरे पुत्र प्रमोद कुमार जो अर्जुन सिंह जू0 हाई स्कूल मण्डी कोंच में प्रधानाचार्य के पद पर कार्यरत हैं। इनका विवाह श्रीमती अंजना के साथ हुआ और इनके पुत्र प्रहलाद, प्रांजल एवं पुत्री मेघा है। डॉ0 एल.आर. श्रीवास्तव की दूसरी पत्नी श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव है जो स्वभाव से अत्यन्त विनम्र एवं शालीन है। डिस्पेन्सरी में ये डॉ0 साहब का पूरा हाथ बँटाती है अर्थात् मरीजों की देखभाल में माँ जैसा स्नेह लुटाती हैं। श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव अमीटा (कोंच) निवासी श्री सतीशचन्द्र की सुपुत्री हैं। इनके दो पुत्र राजीव कुमार एवं संजीव कुमार हैं जो पी.सी.एस. एवं आई.आई.टी. की तैयारी कर रहे हैं।

डॉ. एल.आर. श्रीवास्तव बहुत सज्जन एवं सरल स्वभाव के व्यक्ति है। आँखों में चश्मा, शरीर पर कुरता—पाजामा, चेहरा क्लीन सेव्ड एवं लम्बाई 6 पुट 8 इंच के लगभग है। रंग गेहुँआ इनके व्यक्तित्व को रौबीला एवं आकर्षक बनाता है। डॉ. एल.आर. श्रीवास्तव से साक्षात्कार उनके निवास स्थान कोंच में हुआ था, वहीं इनकी पत्नी श्रीमती अरुणा श्रीवास्तव भी उपस्थित थी। मैंने उनसे पूछा "दीदी आप भी कुछ लिखती है? उन्होंने हँसकर जबाब दिया— **"नहीं भइया हम कुछ नहीं लिखते हैं। हम तो लोगों की सेवा करते**

हैं।'' सचमुच उनमें बहुत स्नेह था। डॉ० साहब ने तुरन्त मेरे लिये एक कविता बनायी—

''आप आये हैं कवियों की कविता का करने शोध।

लगता है आपको हो गया है, वीणा वादिनी का बोध।।''

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1961 ई० में विपिन बिहारी झाँसी से उत्तीर्ण की। सन् 1965 ई० में इण्टरमीडिएट की परीक्षा एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण करने के कुछ समय पश्चात सन् 1972 ई० में बी.ए. एम.एस. की परीक्षा आर्य वैदिक स्टेट कालेज, झाँसी से उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप स्वयं का एक अस्पताल कोंच में खोले हुए हैं और पूर्ण मनोयोग से लोगों की सेवा करते हैं।

अभी तक आपका कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु फुटकर रचनाएँ विभिन्न पत्र—पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

कवि 'बिन्दु' धीरे—धीरे व्यतीत होती जिन्दगी के इन पलों के बारे में सोचता है तो उसे यह जिन्दकी बेवफा सी प्रतीत हो रही है। कवि पूर्णरूप से यह महसूस करने लगा है कि रोज—रोज जिन्दगी मौत में तब्दील होती जा रही है। कवि की ये पंक्तियाँ हिन्दी गज़ल के माध्यम से दृष्टव्य है—

तनहा—तनहा बेवफा महसूस होती जिन्दगी

रफ्ता—रफ्ता कफ़न में दफ़न होती जिन्दगी।[28]

कवि डॉ० लल्लूराम श्रीवास्तव 'बिन्दु' शृंगार रस में अधिक रमे दिखायी देते हैं। कवि भौंरे के माध्यम से उत्कृष्ट प्रेम के लिये जीवन की आहुति देकर प्रेम का पाठ सिखाता है। ''मैं भौंरा कलियों का प्रेमी'' शीर्षक गीत के माध्यम से कवि के ये विचार दृष्टव्य है—

मैं भौरा कलियों का प्रेमी फूल—फूल पर जाता हूँ

सच्चा मित्र सभी फूलों का मैं उपवन—उपवन गाता हूँ।

मैंने राधा—कृष्ण कथा सुन

सीखा है मादक रस पीना

और गोपियों से सीखा है

कृष्ण प्रेम में जीवन जीना।

प्रेम और प्रेमिकाओं के मैं सन्देश भी लाता हूँ।

सच्चा मित्र सभी फूलों का मैं उपवन—उपवन गाता हूँ।[29]

डॉ. एल.आर. श्रीवास्तव 'बिन्दु' निःसन्देह हिन्दी के समर्थ कवि है। आपने विविध विषयों को काव्य के माध्यम से हिन्दी को सशक्त एवं समर्थ बनाने का सफल प्रयास किया है, साथ ही श्रृंगार की कोमल एवं मधुर धारा अविच्छन्न रूप से प्रवाहित की है। आपका सफलतम् प्रयत्न साहित्य के प्रति इसी क्रम में रहा तो निश्चित रूप से आप जनपद के श्रेष्ठ कवि सिद्ध होंगे।

अयोध्या प्रसाद जी 'कुमुद'

जनपद जालौन के साहित्य सरोवर में ऐसे प्रसून खिले हुए हैं जो उस सरोवर की सौन्दर्यता—उसके लालित्य की वृद्धि करने में अहम् भूमिका निभा रहे हैं, चाहे वो कमल हो या कुमुद। उषा की रक्ताभ रश्मि को पाकर जहाँ कमल कली अपने पूर्ण यौवन को प्राप्त कर प्रकृति की सहज सुन्दरता को चार—चाँद लगा देती है, वहीं कुमुद अपने प्रियतम चन्द्र की रजत रश्मियों को पाकर जन्मजात चकोरी से हठात् ईर्ष्यावश चाँदनी का श्रृंगार कर लुभाने में कोई कसर नही छोड़ती है। उस सरोवर में सारी रात अनेक

हाव–भावों के साथ मचलती–इठलाती हुई हास–परिहास करती रहती है। अयोध्या प्रसाद जी गुप्त साहित्य सरोवर के ऐसे ही कुमुद हैं। जिस प्रकार से सरोवर में कुमुदनी की अनुपस्थिति तडाग को अधूरेपन का एहसास कराती है उसी प्रकार कुमुद जी का स्थान जनपद के साहित्य रूपी सरोवर में यदि इनका नाम न आये तो यह सरोवर अपने आपको अधूरा महसूस करेगा।

आयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' जी का जन्म भाद्रपद कृष्ण षष्ठी सम्वत् 2002 एवं हाईस्कूल के प्रमाण पत्र के अनुसार 15 जुलाई 1944 ई0 में क्रोंच ऋषि की नगरी कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व. श्री बद्रीप्रसाद सेठ एवं माता जी का नाम स्व. श्रीमती रामकली देवी था। आपके प्रपिता (बाबा) स्व. सेठ रामदीन ग्राम सिकरी (हमीरपुर) से आकर यहाँ बस गये थे। आपका विवाह ग्राम सामी (जालौन) निवासी श्री पन्नालाल जी की सुपुत्री श्रीमती रानी के साथ हुआ। आपकी पाँच संतानों में दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ है। पुत्रों में सबसे बड़े पुत्र प्रसन्न बैंकट जिनका विवाह इलाहाबाद निवासी श्री जगदीश प्रसाद गुप्त की सुपुत्री श्रीमती रश्मि के साथ हुआ। इनकी एक पुत्री कु0 उदिशा है। दूसरे पुत्र नमन कुमुद है जो अभी अविवाहित हैं कवि की पुत्रियों में सबसे बड़ी पुत्री श्रीमती भावना गुप्ता जो दमोह (जबलपुर) निवासी इंजीनियर श्री शरद कुमार गुप्त को ब्याही गयीं हैं। इनकी दो संतानों में अक्षत एवं कु0 अनु है। कुमुद जी की दूसरी पुत्री प्रेरणा गुप्ता है जिनका विवाह दतिया निवासी इंजीनियर श्री संजयकुमार गुप्त के साथ हुआ। इनके दो पुत्र अमोघ व विनायक हैं। तीसरी पुत्री प्रतिभा गुप्ता है जो गोरखपुर निवासी इंजीनियर श्री हरीमोहन गुप्त को ब्याही गयीं हैं। इनकी दो संतानों में उत्सव एवं गुड्डी है।

कुमुद जी ने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1960 ई0 एवं 1962 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। सन् 1965 ई0 में बी.एस-सी. (गणित) की परीक्षा डी.ए.वी. कालेज कानपुर से उत्तीर्ण की। पुनश्च 1967 ई0 में लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से एल.एल.बी. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात सन् 1970 ई0 में एम.ए. (हिन्दी) विषय की परीक्षा डी.वी. कालेज, उरई से उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा आन्तरिक प्रेरणा से स्वतः ही प्राप्त हुई। तुलसी, मैथिलीशरण गुप्त एवं गिरिजा प्रसाद जी से आप विशेष प्रभावित रहे। आपने 12 वर्ष की आयु (सन् 1957) में कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। इनकी प्रथम कविता है– **''हे श्याम! इधर तुम आ जाओ।''**

लोक संगीत, लोकनृत्य, लोकनाट्य, लोकचित्रकला आदि में आपका प्रमुख योगदान रहा।

आपके द्वारा विपुल साहित्य का प्रकाशन हुआ है। आपकी प्रकाशित कृतियों में बुन्देलखण्ड का लोक जीवन (संस्कृति विभाग उ0प्र0 का प्रकाशन), 'लोकसंस्कृति' (सह लेखन) (संस्कृति विभाग उ0प्र0, प्रकाशन), बुन्देलखण्ड के लोकगीत एवं लोकनृत्य (द्विभाषी फोल्डर) (संस्कृति विभाग उ0प्र0), बुन्देलखण्ड की फागें, (प्रकाशन उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी), बुन्देलखण्ड की काव्यात्मक कहावतें (उत्तर माध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद), जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता (नमन प्रकाशन, उरई), सप्तदल (नमन प्रकाशन उरई), साहित्य मंजूषा (प्रसाद प्रकाशन, कोंच)

पत्रिका सम्पादन में लोकनृत्य विशेषांक (छायानट अतिथि सम्पादक), उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी, उरई विशेषांक, जालौन जनपद विशेषांक,

बुन्देलखण्ड पर्यटन विशेषांक (सारस्वत) सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कालेज उरई, लोक कला दर्पण (स्मारिका संस्कार भारती राष्ट्रीय लोक कला महोत्सव), सिंहनाद (मासिक), समर्पण (मासिक) एवं नवअंकुर (प्रबन्ध सम्पादन)

आपको उत्कृष्ट सम्पादन एवं लेखन हेतु अनेक पुरस्कार/सम्मान प्राप्त हुए हैं। कुछ सम्मान व पुरस्कार इस प्रकार है–

बुन्देलखण्ड विश्व विद्यालय झाँसी द्वारा बुन्देली लोक साहित्य एवं संस्कृति में विशिष्ट योगदान हेतु वि0वि0 का 'विशिष्ट सम्मान' 'सीनियर फैलोशिप' : भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा, ''अकादमी पुरस्कार'' उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी द्वारा, पं0 रामनरेश त्रिपाठी पुरस्कार– उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा, ''विद्याभास्कर पुरस्कार'' उ0प्र0 के मुख्यमंत्री द्वारा, ''लोक कला रत्न'' नौटंकी कला केन्द्र '(बुन्देलखण्ड इकाई) द्वारा, ''सेठ गोविन्द दास सम्मान''– उ0प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा, 'संस्कार भारती सम्मान 2001', ''साधक सम्मान''–नवोदित लोक कला संस्थान, सागर म0प्र0 द्वारा, राव बहादुर सिंह बुन्देला 'स्मृति सम्मान'–बुन्देली उत्सव बसारी द्वारा।

पद–प्रतिष्ठा : लोककला विशेषज्ञ, संस्कृति विभाग (भारत सरकार), सदस्य–उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद (भारत सरकार), सदस्य–रामपुर राजा लाईब्रेरी बोर्ड, रामपुरा (भारत सरकार), सदस्य निर्णायक मण्डल राष्ट्रीय युवा उत्सव (नेहरू युवा केन्द्र संगठन)

उ0प्र0 फिल्म विकास निधि (पटकथा चयन समिति), अ0भा0 लोककला प्रमुख–संस्कार भारती, महामंत्री– संस्कार भारती, उ0प्र0, उपाध्यक्ष उ0प्र0 जर्नलिस्ट एसोसिएशन, उपाध्यक्ष– उ0प्र0 विद्यालय प्रबन्धक महासभा पूर्व सदस्य–उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी, पूर्वमंत्री उ0प्र0 हिन्दी साहित्य सम्मेलन,

अध्यक्ष जिला पत्रकार समिति।[30]

इसके अतिरिक्त आपने सन् 1965 ई0 में राबर्ट फ्रास्ट की अंग्रेजी कविता 'जंगल' का हिन्दी में अनुवाद किया। इसी कविता को हरवंशराय बच्चन ने भी अनुवाद किया था। डॉ0 बच्चन ने कुमुद जी के इस कार्य की प्रशंसा की थी।

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' जी सम्प्रति में वकालत के पेशे के साथ साहित्य साधना में भी रत है और अपने निज निवास मण्डपम् राठ रोड, उरई में रह रहे हैं।

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' से हिन्दी और पत्रकारिता के सम्बन्ध में साक्षात्कार के दौरान उनके निवास स्थान मण्डपम् में मेरी बातचीत हुई उस बातचीत के अंश इस प्रकार हैं–

प्र0– पत्रकारिता और साहित्यकारिता के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

कुमुद जी– पत्रकारिता का सिद्धान्त है निर्भीकता और निष्पक्षता। तथ्यों को सुरक्षित रखते हुए किसी घटनाक्रम पर अपनी स्वतन्त्र टिप्पणी देना पत्रकारिता का अधिकार है किन्तु यह टिप्पणी लोकहित में होनी चाहिए। पत्रकार लोक न्यासी होता है। पत्रकार को भारतीय संविधान में अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का कोई अधिकार नहीं दिया गया है। यह अधिकार केवल भारत के नागरिकों को दिया गया है। पत्रकार नागरिकों के लिये इस अधिकार का प्रयोग उनके न्यासी के रूप में जनहित में करता है। इससे इतर कार्य यदि करता है तो वह न्यास भंग का दोषी है तथा पत्रकारिता का दोषी है।

साहित्य वह हैं जिसमें हित का भाव सुरक्षित है। हित यानि लोकहित,

वह भी एक कालखण्ड के विशेष में नही अपितु सार्वकालिक होना चाहिए जो कवि इस मानक पर खरा उतरा है वही कालजयी होता है।

प्र0– आज का साहित्यकार अल्पजीवी है। सैकड़ों में एकाध सफल हो पाता है। इसका मुख्य कारण क्या है?

कुमुद जी– केवल युग विशेष घटना विशेष या व्यक्ति विशेष की संवेदनाओं तक जो अपने को सीमित रखता है वह साहित्यकार अल्पजीवी होता है। व्यष्टि की संवेदनाओं को समष्टिगत बनाना साहित्यकार का धर्म है। तुलसी, कबीर, रसखान, प्रसाद व मैथिलीशरण गुप्त आदि साहित्यकार इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं।

प्र0– बुन्देली भाषा उसकी काव्यगत कहावतें संस्कृति आदि को आपने एकत्रित कर उनका सम्पादन किया, यह आपका श्लाघनीय प्रयास है किन्तु लोक भाषा एवं संस्कृति से लोग दूर होते जा रहे हैं। क्या यह सब पुस्तकों तक सीमित रह जायेगा?

कुमुद जी– किसी भी अंचल में वहाँ की लोकाभिव्यक्ति वाचिक परम्परा से सुरक्षित रहती है। यह परम्परा हजारों वर्षों की दीर्घकालिक जन अभिव्यक्ति और अनुभवों का सार होती है, इसीलिये इसका संरक्षण व्यापक लोकहित में है। विदेशी आक्रान्ताओं ने भारतीय संस्कृति का मूलोच्छेदन करने के लिये या कहें गौरवशाली अतीत से काटने के लिये इसे हेय बनाने की कोशिश की है। इस संस्कृति से प्रभावित लोग लोकसंस्कृति को ग्रामीण या गँवारु संस्कृति कहते हैं और आज के तथाकथित शिक्षित वर्ग का बहुलांश इससे विमुख होता जा रहा है, इसलिये आज के तथाकथित अभिजात्य वर्ग में वाचिक परम्परा विलुप्त की ओर है। मेरा यह विचार है कि भारतीय मूल्यों, जीवन दर्शन को समझने के लिये लोक की वाचिक परम्परा का अनुशीलन अपरिहार्य है। इसी

विचार से मैंने अपने जीवन का एक बड़ा भाग गाँव–गाँव जाकर तथा जीर्ण–शीर्ण पत्रिकाओं के बिखरे पन्नों को समेटकर, लोकगीत, लोकगाथाओं, लोककथाओं, सुभाषित कहावतों सूक्तियों लोकनाट्य, लोकसंगीत, लोक कलाओं तथा चित्रकलाओं, शिल्प आदि का संकलन, सम्पादन व प्रकाशन आदि का अभिलेखीकरण करने का निश्चय किया था। इस दिशा में लगभग एक दर्जन पुस्तकों का मेरे द्वारा लिखे जाने के बावजूद भी बहुत कार्य शेष है और यह कार्य केवल एक व्यक्ति का नहीं। विभिन्न क्षेत्रों व अंचलों में अलग–अलग व्यक्तियों को इसमें जुटना पड़ेगा तभी यह अनुष्ठान सफल होगा।[31]

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' जनपद जालौन के साहित्यकार, पत्रकार एंव श्रेष्ठ अधिवक्ता हैं। बहुमुखी प्रतिभा का यह धनी साहित्यकार साहित्य एवं पत्रकारिता को श्रेष्ठता के शिखर पर पहुँचाकर अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कर जनपद को साहित्यिक सम्पदा से धनी बनायेगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

राजेन्द्र सिंह 'रसिक'

तहसील कोंच की धरती साहित्य के ही अनुकूल है। उस मिट्टी में साहित्यकार जन्म लेकर अपनी प्रतिभा के बल पर अपना नाम रोशन करते हैं। इसी साहित्यकारों की श्रेणी में राजेन्द्र सिंह 'रसिक' का नाम भी जुड़ गया है। इन्होंने कवि मंचों पर अपनी प्रतिभा की धाक जमा दी है। कवि मंचो पर इनकी उपस्थिति अवश्य देखी जा सकती है।

कवि राजेन्द्र सिंह 'रसिक' का जन्म 1 फरवरी सन् 1945 ई0 को कस्बा कोंच में हुआ था। आपके पिता श्री कन्हैया लाल सिंह जी व माता स्व0 श्रीमती धनकुँवरि देवी थी। माता–पिता के अच्छे संस्कार बालक राजेन्द्रसिंह

जी पर पड़ने स्वाभाविक थे। आपका विवाह गोहद तहसील जिला भिण्ड (म0प्र0) निवासी श्री बाल किशुन सिंह की सुपुत्री श्रीमती चन्द्रकांता के साथ हुआ। आपकी दो सन्तानों में पुत्र योगेन्द्र सिंह व पुत्री रेखा सिंह है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1960 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1962 ई0 में व्यक्तिगत रूप से इण्टरमीडिएट की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1966 ई0 में बी. ए. की परीक्षा माधवराव सिन्धिया महाविद्यालय ग्वालियर से उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप स्वास्थ्य विभाग में हैल्प सुपर वाईजर हैं।

अभी तक आपकी कोई कृति प्रकाशित नहीं हुई है किन्तु विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं रहा है। आपसी विचारों के न मिलने से आप कुछ वर्षो से अलग-अलग रह रहे हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा स्वतः ही प्राप्त हुई है। आपका सबसे प्रिय कवि आपका छोटा भाई धीरेन्द्र धीर है।

इन्होंने अधिकतर मुक्तक छन्दों को ही अपने काव्य का आधार बनाया है। इसके साथ-साथ आपने गीतों की भी रचना की है। इनके गीत की एक बानगी यहाँ दृष्टव्य है-

ऐसा गीत सुनाओ प्रियवर, मन को भा जाये।
अन्तर्मन खिल उठे खुशी अधरों पर छा जाये।।[32]

कवि का प्रयास है कि लोगों के मन के भीतर नफरत और साम्प्रदायिकता छायी है, उसे मिटना चाहिये। इसी विषय पर इनका ये मुक्तक दृष्टव्य है-

साम्प्रदायिकता दिलों से अब तो मिटना चाहिए।

छाये जो नफरत के बादल इनको छँटना चाहिए।।

भाई चारा हो अमर ये सोच लो अब तो रसिक,

बन गई जो खाइयाँ वो आज पटना चाहिए।[33]

कवि की रचनाओं का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि कवि में काव्यात्मक प्रतिभा विद्यमान है किन्तु प्रचार–प्रसार एवं प्रकाशन के अभाव में उनका कृतित्व सामने नहीं आ सका है। कवि मंचों के माध्यम से वे अच्छे कवि होने का प्रमाण दे चुके हैं किन्तु प्रकाशित कृतियाँ कवि को अमर पद प्रदान कराती है। इसका कवि के लिये अभाव है। वर्तमान में कवि साहित्य साधना में रत दिखाई देता है।

नरेन्द्र मोहन 'मित्र'

जनपद जालौन की साहित्यिक परम्परा में एक नाम नरेन्द्र मोहन मित्र जी का भी है। आप साहित्यकार ही नहीं वरन् एक अच्छे अभिनेता भी है। रामलीला में अपने आकर्षक व्यक्तित्व एवं रौबीली आवाज में रावण, बाणासुर, बालि आदि का चरित्र बखूबी निभाया और लोगों के ह्रदय में अपना स्थान बना लिया है। पूर्व में आप स्वर्णकार समिति के मंत्री भी रह चुके हैं''।

आपका जितना अन्तर्मुखी व्यक्तित्व विकसित हुआ है उतना ही बाहरी व्यक्तित्व भी निखर आया है। भरा हुआ चेहरा, स्वस्थ शरीर, चेहरे पर छोटी–छोटी मूँछें, बुलन्द आवाज एवं वेशभूषा में (कुर्ता पजामा) ये आपके बाह्य व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। आपका जन्म 11 दिसम्बर सन् 1947 ई0 को कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व. श्री रामस्वरूप स्वर्णकार एवं माता का नाम स्व. श्रीमती भगवती देवी था। आपको बचपन में ही पिता जी

ने रामायण, महाभारत आदि महान ग्रंथों की कथाओं का श्रवण कराया। यही कारण था कि बालक नरेन्द्र मोहन को धार्मिक चरित्र खूब भाने लगे थे। आपका विवाह गुरसराय निवासी श्री लक्ष्मीनारायण भगत जी की सुपुत्री श्रीमती कमलेश कुमारी के साथ हुआ। आपकी चार संतानों में दो पुत्र एवं दो पुत्रियाँ हैं। बड़े पुत्र संजय सिंघाल जो कि एक कवि हैं इनका विवाह श्रीमती अनीता के साथ हुआ। इनके दो पुत्र स्वास्तिक एवं सिद्धार्थ है। मित्र जी के दूसरे पुत्र संजीव कुमार 'सरस' है जिनका विवाह श्रीमती रूबी के साथ हुआ। इनका एक पुत्र सौमित्र है। पुत्रियों में बड़ी पुत्री श्रीमती श्रद्धा है जो मुसमरिया जिला जालौन निवासी श्री कृष्णमोहन को ब्याही हैं। कृष्ण मोहन दिल्ली में प्रोफेसर है। इनकी एक पुत्री श्रुति है। कवि की दूसरी पुत्री का नाम कु0 प्रीति है जो वर्तमान में समाजशास्त्र से एम.ए. कर रही हैं।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद इलाहाबाद उ0प्र0 से एस.आर.पी.इण्टर कालेज, कोंच से संस्थागत छात्र के रूप में सन् 1962 एवं 1967 ई0 में उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा अपने मामा जी श्री नारायनदास 'बरसैया' गुरसराय से प्राप्त हुई।

अभी तक आपका कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु फुटकर रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। अप्रकाशित रचनाओं में 'समरसता गीतों का संग्रह', मुक्तक संग्रह, 'बुन्देलखण्डी संग्रह' एवं राष्ट्रीय गीत हैं। आपके नाटकों में भक्त रघुनाथ, बलिदान में देवयानी, 'ययाति', 'कच', 'सती सावित्री' अभिनीत हो चुके हैं। आपके खुदीराम बोस, झलकारी बाई प्रसिद्ध एकांकी है।

कवि की रचना धर्मिता श्रेष्ठ बन पड़ी है। कवि उन लोगों से सहमत नहीं है जो लक्ष्य प्राप्ति से पूर्व ही पथ में आने वाली बाधाओं से डर जाते हैं। हिन्दी गज़ल के माध्यम से कवि के ये विचार दृष्टव्य हैं–

परछाई से डर जाते हैं सूरज पाने वाले लोग।
कुछ दौलत में बिक जाते हैं देश चलाने वाले लोग
तिनका–तिनका जोड़कर, जिनने उमर गुजारी है।
अपने घर में कैद हो गये, बड़े घराने वाले लोग।।[34]

मनुष्य को कभी निराश नहीं होना चाहिये। उसका भी कोई न कोई निराकरण संभव है। इस धरती ने ऐसे–ऐसे महापुरुषों को जन्म दिया है जिन्होंने अपने पौरुष से इतिहास बदल डाले है। यहाँ तो गाय चराने वाले, ग्वाल बालों के साथ बाल क्रीड़ाएँ करने वाले पुरुष ने संसार को गीता जैसा ज्ञान सुनाकर मानव जाति को कृतार्थ कर दिया। इसी सन्दर्भ में कवि की ये पंक्तियाँ–

दिल में मत कर बन्द निराशा, निश्चित कोई निवारण होगा।
नही सफलता मिल पायी जो, खोजो कोई कारण होगा।।
गाय चराने वालों ने भी बदल दिये इतिहास यहाँ पर,
गीता ज्ञान सुनाने वाला, नहीं पुरुष साधारण होगा।[35]

कवि नरेन्द्र मोहन 'मित्र' ने राष्ट्र प्रेम से ओत–प्रोत रचनाओं का भी सृजन किया है। कवि राष्ट्रप्रेम के साथ इंसानियत–ईमानदारी को बार–बार नमन करना नहीं भूलता है। उनकी ये पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

उनके चरण में मेरा नमन बार–बार है।
प्राणों से बढ़कर जो करता देश को प्यार है।[36]

कवि उन आदर्शो एवं मर्यादाओं को जो भारतीय संस्कृति के अनुरूप है। उन्हें गढ़ना चाहता है किन्तु प्रत्येक पथ में बड़े से बड़ा रोड़ा है। इस कारण कवि को यह सब करने में कठिनता का आभास हो रहा है। कवि ने इस बेबस कठिनाई को अपने इस बिम्बों के माध्यम से उकेरा है–

बेबस नयनों की भाषा को पढ़ना बहुत कठिन है।
जैसे हिम गिरि की चोटी पर, चढ़ना बहुत कठिन है।।
वात्सल्य में डूबी ममता, करती जब आलिंगन
उन्नत भाल तिलक कर अंकित, बहन करे जब चुम्बन
ऐसी अनुपम प्रतिमाओं को गढ़ना बहुत कठिन है।[37]

कवि ने वर्तमान समय में रिश्वत के मायाजाल को अपनी कलम के माध्यम से और शब्दों की कारीगरी से उस पर ऐसा कटाक्ष किया है कि उसकी तस्वीर हमारी आँखों के सामने साकार हो उठती है। कवि की रिश्वत से सम्बन्धित ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

कुर्सी मेजें खिड़की द्वारे, सब कहते दस्तूर चाहिए
सुविधाओं के लिये आज कर, सुविधा शुल्क जरूर चाहिए।
सरकारी मंदिर में बेबस, भूले भटके अगर चाहिए।
जिन नज़रों से नज़र मिलाओ, नज़रें कहती नज़र चाहिए।[38]

कवि नरेन्द्र मोहन 'मित्र' जनपद के अच्छे साहित्यकार एवं कलाकार है। आपकी लेखनी काव्य के प्रत्येक पक्ष में अबाध रूप से निर्झरणी की तरह बहती है। मित्र जी वास्तविक एवं जन्मजात कवि है। निश्चित रूप से आप साहित्य को अपने हुनर के माध्यम से नयी ऊँचाइयों पर ले जायेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है।

वहीद अहमद 'अदब'

मुक्तक एवं गजलकार वहीद अहमद 'अदब' का जन्म सन् 1947[39] ई0 को कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व. श्री हकीम अहमद एवं माता का नाम श्रीमती सलीमन है। आपका विवाह जहाँनाबाद (फतेहपुर) निवासी श्री अब्दुल शकूर की सुपुत्री श्रीमती किशवरजहाँ के साथ हुआ। आपकी पाँच सन्तानों में एक पुत्र एवं चार पुत्रियाँ है। पुत्र का नाम गुलजार अहमद एवं पुत्रियाँ नाहिद अख्तर, शाहीन अख्तर, हसीन अख्तर एवं नाज़नीन अख्तर है।

आपकी स्कूली शिक्षा हाईस्कूल तक है जो सन् 1956 ई0 में एस.आर. पी. कोंच से उत्तीर्ण की थी। विद्यार्थी जीवन से ही आपके हृदय में काव्य का स्फुटन होने लगा था। आपने सैकड़ों मुक्तक एवं गजलों की रचना की। कवि मंचों पर आपकी रचनाओं का सस्वर पाठ श्रोताओं को भाव विभोर कर देता है।

अभी तक आपका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु फुटकर रचनाओं में आशावाद एवं मानवतावाद की झलक दिखायी देती है। इसके साथ ही आपने राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत रचनाओं का सृजन किया है। राष्ट्रीय भावना से प्रेरित यह रचना दृष्टव्य है–

राहे वफा में बाँध कमर हो जायें ज़फाऐ बेअसर।

कुर्बां हो जाये दिलो जिगर–अदब नगमा वतन का सुनाता चल।[40]

दूसरों के दर्द को जो अपना दर्द समझता है वही इंसान होता है और जो इसके विपरीत आचरण करता है वह जीवन में कभी सुकून नहीं पा सकता है। इस बात को शायर ने इस प्रकार व्यक्त किया है–

दर्द गैरों का जो अपनी तरह समझा नहीं करते।

वो अपनी जिन्दगी में सुकूँ पाया नहीं करते।।[41]

कवि (शायर) का दृष्टिकोण आशावादी है। जीवन पथ पर आगे बढ़ते जाना है और रास्ते की बाधाओं को दूर करते हुए मंजिल तक पहुँचना ही जीवन है–

ए पथिक! तू चलता चल राह के काँटे बिनता चल।

माना कि मंजिल पुरखतर तू खौफ न अपने मन में कर।।[42]

आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। इन्होंने बुन्देली में भी काव्य सृजन किया है। मानव की क्रमिक अवस्थाओं का चित्र इन पंक्तियों के माध्यम से किया है–

जौ जग ठौर ठगन कौ जानौ ठग लओ बचो न एकऊ दानों।

खोलतई आँख दई किलकारी, कहाँ–कहाँ चिल्लानो।।

नंगो भूखो आओ कहाँ से भेद कोऊ न जानो।

दो से चार भई जब आँखे हरोई हरौ दिखानो।।[43]

साहित्यकार 'अदब' ने हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा के साथ बुन्देली भाषा का भी अच्छा प्रयोग किया है। यह मिश्रित भाषा कवि की काव्य कला के सौन्दर्य निरूपण में सहायक सिद्ध हुई है। आपका यह प्रयास निश्चित रूप से प्रशंसनीय है।

रूपनारायण शुक्ल 'चन्दन'

रूपनारायण शुक्ल का जन्म 15 जनवरी सन् 1948 ई० में कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व. श्री बारेलाल शुक्ल व माता का नाम स्व० श्रीमती रामदुलारी शुक्ला था। आपका विवाह ग्वालियर निवासी स्व. श्री

माताप्रसाद त्रिपाठी की सुपुत्री श्रीमती प्रमिला शुक्ला के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में दो पुत्र–राजेश कुमार शुक्ल व मनीष कुमार शुक्ल तथा पुत्री श्रीमती रचना दुबे है, इनका विवाह समथर (झाँसी) निवासी राजू दुबे के साथ हुआ।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1972 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। इण्टरमीडिएट की परीक्षा अपने इसी कालेज से सन् 1975 ई0 में उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा सोम ठाकुर जी से मिली। अभी तक आपका कोई भी रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ हैं। गीत, गज़ल मुक्तक आदि विधाओं पर आपकी त्वरित लेखनी चली है।

आपने पारम्परिक रूप से अपनी माटी–अपने देश की वन्दना की है। आपकी यह रचना 'माटी की वन्दना' यहाँ दृष्टव्य है–

शीश झुकाते बसुन्धरा को हम करते हैं वन्दन।

सर्वधर्म सम्मेलन है मेरी देश की माटी चन्दन।।[44]

वर्तमान समय में आदमी, आदमी से द्वेष भावना से प्रेरित है। इसी विषय पर आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

फितरत का पाठ सबको पढ़ाता है आदमी

अमृत में जहर आज मिलाता है आदमी

चन्दन की खुशबू दब गयी बारूदी हवा से

घर–घर बना के बम चलाता है आदमी।[45]

कवि ने आज के नेता को जो चौराहे पर भाषण देता है उसका चित्रण इस प्रकार किया है–

सुख दर्शन दीवार के पीछे, दुख दर्शन चौराहे पर

एक दुल्हनिया घर पर बैठी, एक दुल्हन चौराहे पर

हाला प्याला मधुशाला है और बगल में साकी है

पीकर मदिरा देकर नारा, और भाषण चौराहे पर।[46]

रूपनारायण शुक्ल 'चन्दन' ने समसामयिक विषय पर अपनी लेखनी चलायी है। आपकी रचना धर्मिता ठीक बन पड़ी है। आप इस कार्य में प्रयासरत हैं।

डॉ० सुरेखा जैन

एक आदर्श अध्यापिका एवं साहित्यकार डॉ0 सुरेखा जैन एक ऐसा व्यक्तित्व है जिन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त करके कमला नेहरु बालिका इण्टर कालेज कोंच (जालौन) के प्रधानाचार्या के उच्च पद को सुशोभित किया। मृदु भाषिणी, योग्य शिक्षिका इन्हीं गुणों के कारण वे छात्राओं की पथ प्रदर्शक एवं आदर्श बन गयीं हैं।

डॉ0 सुरेखा जैन का जन्म 1 अप्रैल सन् 1950 ई0 को चिरगाँव (झाँसी) में हुआ था। इनके पिता का नाम स्व. श्री खेमचन्द्र जैन एवं माता का नाम स्व. श्रीमती शांति जैन था। शिक्षित माता–पिता ने बेटा–बेटी में कोई भेद न मानते हुए डॉ0 सुरेखा जैन को उच्च शिक्षा दिलायी। इसी का परिणाम है कि डॉ0 सुरेखा जैन आज कालेज में प्रधानाचार्या जैसे गरिमामय पद पर आसीन है। आपका विवाह श्री पद्माकर जी के साथ हुआ। आपके दो पुत्र–नितिन जैन एवं नमन जैन है। नितिन जैन का विवाह कानपुर की ऋतु जैन के साथ हुआ। नमन जैन वर्तमान समय में बी.एस–सी. (जीवविज्ञान) विषय से कानपुर विश्वविद्यालय में अध्ययनरत हैं।

आपने हायर सेकण्डरी की परीक्षा सन् 1966 ई0 में शासकीय बालिका अशोक नगर जिला गुना मध्यप्रदेश से उत्तीर्ण की। सन् 1969 ई0 में बी.ए. की परीक्षा एम.एल.वी. डिग्री कालेज भोपाल से उत्तीर्ण की। पुनश्च 1975 ई0 एम.ए. की परीक्षा हमीदीया वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय भोपाल से उत्तीर्ण की। इसी वर्ष सन् 1975 ई0 में आपने प्रयाग से साहित्यरत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1972 ई0 में रविन्द्र महाविद्यालय भोपाल से बी.एड. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात 1985–87 ई0 में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से "बुन्देली लोकगीतों में उपासना का स्वरूप" विषय पर शोधकार्य (पी–एच.डी.) पूरा किया।

आपने गद्य एवं पद्य दोनों विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है। आपकी कहानी – 'मेरेलाल' दया, ममता एवं करुणा से ओत–प्रोत कथानक है। 'शिक्षक शक्ति' आपके गीतों का संकलन है।

आपको लेखन की प्रेरणा इनके भाईसाहब श्री गनेशीलाल बुधौलिया राठ के सान्निध्य में रहकर प्राप्त हुई।

कवयित्री के अनुसार शिक्षक को अच्छे गुणों को विकसित करना चाहिए ताकि उसके आदर्शो का अनुकरण करके वे देश के अच्छे नागरिक बन सके। इसके साथ ही शिक्षक को प्रशासन से न्यायोचित अधिकार भी मिलना चाहिए। वे इस अधिकार को शक्ति संगठन के द्वारा न्यायोचित रीति से प्राप्त करना चाहती हैं। उनकी ये पंक्ति इसी विषय से सम्बन्धित हैं–

शक्ति संगठन से ही होती है, कलियुग में,

सदा एक जुट रहे, यही संकल्प हमारा।

हम शिक्षक है, भिक्षुक नहीं, दया जो माँगे

हमें हमारा न्यायोचित अधिकार चाहिए।[47]

डॉ0 सुरेखा जैन एक अच्छी अध्यापिका एवं कवयित्री है। समाज में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार का इनका विशेष प्रयास रहता है। आप शिक्षार्थियों के लिये प्रेरणास्रोत हैं।

नन्दराम स्वर्णकार 'भावुक'

नन्दराम स्वर्णकार भावुक जी का जन्म 14 अप्रैल सन् 1952 ई0 में कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व. श्री फकीरचन्द्र स्वर्णकार था। आपकी माता श्रीमती गेंदारानी स्वर्णकार धार्मिक विचारों की महिला हैं। माता–पिता के अच्छे संस्कार बालक नन्दराम स्वर्णकार पर भी पड़े। आपका विवाह महोबा निवासी श्री बद्रीप्रसाद स्वर्णकार की सुपुत्री श्रीमती चुन्नीदेवी के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में दो पुत्र–अशोक कुमार व दीपक कुमार है तथा पुत्री श्रीमती पुष्पा देवी है जिनका विवाह दतिया (म.0प्र0) निवासी श्री मनोज कुमार के साथ हुआ।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1970 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। इण्टरमीडिएट की परीक्षा आपने सन् 1973 ई0 व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की। बी.टी.सी. की परीक्षा आपने 1975 ई0 में उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप पूर्व माध्यमिक विद्यालय पचीपुरा (कोंच ब्लाक) में स0अ0 के पद पर कार्यरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा भवानी शंकर सिंह लोहिया 'बंधु' से प्राप्त हुई।

अभी तक आपका कोई संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपने सैकड़ों गीत एवं मुक्तक लिखे हैं।

जनपद जालौन दस्यु प्रभावित क्षेत्र है। आज समय बदल चुका है, पूर्व की भांति डाकू गाँव या शहरों में डाका डालने नहीं आते है। अपहरण के द्वारा लोगों से मुँहमाँगी कीमत वसूल कर लेते हैं। दस्युओं का पूरा ''नैटवर्क'' फैला हुआ है। यहाँ आदमी ही आदमियों को दस्युओं के हवाले कर देता है। कवि ने इसका खुलासा इस प्रकार किया है–

आदमी का रूप नहीं, आदमी दिखाते हैं,

बहुरुपिये नज़र आदमी में आते हैं।

दस्यु दल जंगलों से आते न शहर कभी,

आदमी को आदमी ही वहाँ बेच आते हैं।।[48]

आपकी रचनाओं में प्रेम व बन्धुत्व की भावना का स्वर भी मुखरित हुआ है। यथा–

धुन्ध नफ़रत की हटाओ, द्वेष की होली जलाओ।

प्रेम की धारा बहाकर, ज्योति जीवन की जलाओ।[49]

बसन्त ऋतु के आने पर सब जगह मादकता छा जाती है। लताएँ फूलों से लद जाती हैं। प्रकृति का रूप नववधू के समान झलकने लगता है। इस खुशी के अवसर पर कवि का ये उल्लास सचमुच मन में गुदगुदी पैदा कर देता है–

फूले–फूले फूलों से मधुवन मुस्काया है

आया है मधुमय बसन्त संग खुशियाँ लाया है।[50]

'भावुक' जी ने सरल व सुबोध बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। अतः भाषा एवं भाव प्रभावी है।

सुरेन्द्र कुमार नायक
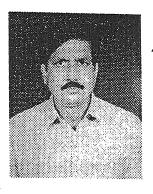
जनपद जालौन के साहित्यकारों में सुरेन्द्र कुमार नायक का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपने अपने कवि कर्म के माध्यम से सामाजिक विषमताओं पर तीखा प्रहार किया है। कहीं-कहीं व्याप्त समस्याओं के हल का सुझाव भी दिया है।

सुरेन्द्र कुमार नायक जी का जन्म 25 अगस्त सन् 1954 ई0 कोंच में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री प्रभुदयाल नायक एवं माता जी श्रीमती गंगा देवी है। आपका विवाह महावीरपुरा उरई निवासी श्री अंबिका प्रसाद दुबे की सुपुत्री डॉ0 अलका नायक के साथ हुआ। आपने बैंक प्रबन्धक की नौकरी त्यागकर सम्प्रति एक्यूप्रेशर विशेषज्ञ के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त की है। आपकी तीन संतानों में एक पुत्र एवं दो पुत्रियां है। बड़े पुत्र का नाम ऐश्वर्य नायक तथा पुत्रियाँ डॉ शैली नायक एवं प्राची नायक है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1969 ई0 में शालिग्राम पाठक इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। पुनश्च इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1971 ई0 में विपिन बिहारी इण्टर कालेज झाँसी से उत्तीर्ण की। सन् 1973 ई0 में बी. एस-सी. की परीक्षा विपिन बिहारी डिग्री कालेज झाँसी से उत्तीर्ण करने के पश्चात् एम.एस-सी. की परीक्षा बी.एस.एस.डी. कालेज नवावगंज कानपुर से उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा सन् 1975 ई0 में महादेवी वर्मा को दीक्षान्त समारोह में सुनने से मिली।

अभी तक आपका कोई संकलन प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न

पत्र–पत्रिकाओं एवं समाचार पत्रों में रचनाओं का प्रकाशन यदा–कदा होता रहता है। आपकी अप्रकाशित रचनाओं में 'अग्नि साक्षी' गद्यगीत संकलन है जो स्त्री–पुरुष सम्बन्धों पर आधारित है।

वर्तमान समय की विकृतियों को कवि ने 'नागफनी' शीर्षक कविता के माध्यम से उकेरा है। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

मन की अतल गहराइयों में
किसने कब रोप दिया नागफनी का पेड़
मन के कोने–कोने से रिसता लहू
मन का कतरा–कतरा जख्मी।[51]

वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर भी आपने 'शिक्षा' शीर्षक के माध्यम से प्रकाश डाला है। कवि की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

गुरु का गौरव समाप्त हो गया
शिक्षा व्यवसाय हो गयी।
शिष्य का वेतन भोगी कर्मचारी
बनकर रह गया गुरु।[52]

वर्तमान समय में गॉडफादर बनाने की परम्परा जोर पकड़ती जा रही है बिना गॉडफादर बनाये कोई काम नहीं हो रहा है। 'गॉडफादर' शीर्षक रचना के माध्यम से कवि के ये विचार–

कला और राजनीति में गॉडफादर
बनाने की परम्परा है।
गॉडफादर जिसके सिर पर हाथ रखता है
उसका सिर गायब हो जाता है।

यूँ कहिये उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है

और वह गाडफादर में विलीन हो जाता है।[53]

कवि सुरेन्द्रकुमार नायक एक अच्छे कवि के साथ ही अच्छे स्वभाव के व्यक्ति हैं। आप हिन्दी साहित्य साधना में सतत् प्रयासरत है। आप हिन्दी साहित्य को कितनी ऊँचाइयों तक ले जाते हैं यह तो समय ही बतायेगा।

मुहम्मद जावेद 'कुदारी'

जनपद जालौन की उर्वरा भूमि ने ऐसे साहित्यकारों को जन्म दिया है जिन्होंने अपनी साहित्यिक प्रतिभा के बल पर जनपद को गौरवशाली बनाया है। ऐसे साहित्यकार एकता, भाईचारा एवं मिश्रित संस्कृति को जीवन्त बनाये रखने में कभी पीछे नहीं हटे है। मुहम्मद जावेद 'कुदारी' ऐसे ही स्वधन्य नामों में से एक हैं।

मुहम्मद जावेद 'कुदारी' का जन्म 1 अक्टूबर सन् 1957 ई0 (बड़ी दीपावली के दिन) कोंच तहसील के कुदारी नामक ग्राम में हुआ था। कुदारी जी के पिता जी का नाम श्री शमीन अहमद फारुकी एवं माता का नाम श्रीमती अशफाक फातिमा है। आपकी माता सादुल्ला नगर लखनऊ निवासी श्री उद्दीन की पुत्री हैं। आपका विवाह लखनऊ निवासी श्री अलीखान की सुपुत्री श्रीमती शाहीन के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में एक पुत्र आमिर एवं पुत्री उज्मा है जो विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

मुहम्मद जावेद 'कुदारी' एक अच्छे साहित्यकार के साथ ही एक अच्छे चित्रकार भी हैं। आपने जनपद एवं जनपद के बाहर भी अपनी कला एवं साहित्यिक प्रतिभा से लोगों के हृदय में अपना स्थान बना लिया है। आपने जितने मनोयोग से पावन मक्का और मदीना के चित्र दीवालों पर गढ़े हैं उतने

ही मनोयोग से हनुमान, भगवान शंकर एवं दुर्गामाता के चित्र दीवारों पर उकेरे है और उन पर अपनी सारी कला पराकाष्ठा तक पहुँचा दी है। मन्दिरों की दीवारों पर बने चित्र बरबस ही मन को लुभा लेते हैं। उन चित्रों को देखकर हमारा मन वाह किये बिना नहीं रह सकता है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1971 ई0 में गाँधी इण्टर कालेज कुदारी माधौगढ़ से उत्तीर्ण की। इण्टर—मीडिएट की परीक्षा आपने आर्टिस्ट (पेन्टर) विषय से उत्तीर्ण की।

आपकी एक स्मरणीय घटना में आपकी कला को देखते हुए गाँव के लोग इनके लिये शहर से रंग एवं ब्रुश खरीदकर दे देते थे। आपने कई बार रोजा रखकर भी पेन्टिंग करने कुदारी से जालौन 20 किमी0 पैदल यात्रा की।

अभी तक आपका कोई भी रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपकी अप्रकाशित रचनाओं में 'छन्द गीत संग्रह' 'हँसते गीत' एवं 'शिव छन्द' हैं।

आपकी प्रतिभा को देखते हुए कई संस्थाओं ने आपको पुरस्कारों से नवाजा है। आपको सन् 1984 ई0 में 'फोकस' पुरस्कार सन् 1986 ई0 में 'कलाश्री' कन्हैयालाल प्रयागदास स्मृति द्वारा दिया गया। प्रज्ञाराम मण्डल द्वारा श्रीराम के चरित्र के छन्दों द्वारा यशोगान के लिय 'गुरु' का पुरस्कार दिया गया।

साहित्यकार जावेद 'कुदारी' जी का स्वर सामाजिक चेतना एवं राष्ट्रीय एकता पर अधिक मुखरित हुआ है। इसके साथ ही आपने धार्मिक पात्रों को अपने काव्य का विषय बनाया है।

इसी के साथ ही आपने अपनी कला के माध्यम से सीताजी का सुन्दर चित्र, हनुमान जी का आकर्षक चित्र तथा माँ के चरण मन्दिरों में अधिकांश जगह पर बनाये हैं।

आपने तुगरा लेखन मस्जिद में मक्का और मदीना के सुन्दर दृश्य पेन्टिंग के द्वारा उकेरे। सैकड़ों मंदिरों में जैसे काशी, इलाहाबाद, उज्जैन, देवास आदि मंदिरों का श्रृंगार किया।

हिन्दी साहित्य में आपने अपनी कविताओं में जीवन जगत के चित्र उकेर कर उत्कृष्ट रचना धर्मिता का परिचय दिया है। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य हैं–

गालिब मेरे चाचा थे, तुलसी थे मेरे बाबा।
मैं शेर भी पढ़ूँगा, चौपाइयों के साथ।।
जो मिटने के नये तेवर, नये अंदाज देते है।
तो उनसे दूर रहिये वे आवाज देते हैं।।[54]

कवि ग्राम्य जीवन से सम्बन्धित रहा है। इस कारण किसानों के परिश्रम को वह जानता है कि वे कितना परिश्रम करते हैं। इसी सम्बन्ध में कवि के ये विचार प्रस्तुत है–

खेतों की कंघी कर डाली, माँग सजा दी दानों से।
कितना श्रम है कितना फल है, पूछो जरा किसानों से।।[55]

आज के युग में हर तरफ लूटमार मची हुई है। वे चाहे भीड़ भरे रेलवे स्टेशन हों या धार्मिक स्थान हों। वहाँ भी जेबकतरों से बचना मुश्किल हो जाता है इसी सन्दर्भ में कवि की यह रचना दृष्टव्य है–

कुंभ नहाये पाप धुलाये, हो गये नये पुराने से।
गंगा तट पर कितने लुट गये पूछो ये जिजमानों से।।[56]

आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार हैं। आपके सवैया छन्द भी बरबस मन को आकर्षित कर लेते हैं। एक कहावत है– नंगा नहाये तो निचोड़े

क्या? कवि की यह उदात्त कल्पना शक्ति ही है कि उसने नंगा (शंकर जी) से भी गंगा निचोड़वा दी। यथा—

उमायें लिवायें जटाये बढ़ायें कितै ना दिखाये लपेट भुजंग।
विराट ललाट त्रिपुण्ड लगात, त्रिलोक दिखात सुगंधहु अंग।।
गमागम होत डमाडम होत, बमाबम होत भुजंग तरंग।
जो नंग नहात निचोरत का, सु निचोर दई लट से निज गंग।।[57]

आपने श्रीराम के बाल वर्णन का अनूठा चित्रण किया है। इन रचनाओं को पढ़कर कवि रसखान का स्मरण हो आता है। कुदारी जी को आधुनिक युग का रसखान कहना अतिशयोक्ति न होगी। श्रीराम के बाल चरित्र की मनोहर झाँकी यहाँ दृष्टव्य है—

कौशल की नगरी मह देखव, खेलत कौन खिलौनन वारौ।
खेलत की छवि का बरनौ मुख चूमत गात दिठौनन वारौ।।
द्वार चलै ठुनकै मचलै अरु सोवत नाहि बिछौनन पारौ।
रामलला की कला निरखौ पलकैं अँखयान सु पौरन झारो।।[58]

इसी तरह 'नाथ सैवया' के माध्यम से कवि ने मक्का और मदीना नगर की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की है। उस नगरिया के आगे तो कवि को जन्नत (स्वर्ग) का सुख भी तुच्छ प्रतीत होता है—

नैनन सूरत तोर बसी अब कौनहु मूरत प्यारी न लागै।
जैसी मदीनां नगरिया सजी, सखि जन्नत बाकी किनारी न लागै।
तोरे चरन छूकै खारौ समुन्दर जो बरसाय घन जल खारौ न लागै।
अबकी मदीना बुला लेव सवै, मन ओरई नाही कुदारी में लागै।[59]

कुदारी जी को जितनी ख्याति कवि रूप में मिली है उतनी ही आपको

चित्रकारी में भी प्राप्त हो गई है। आप में कला और काव्य का अदभुत समन्वय है। जितने जीवंत चित्र दीवारों में उकेरे है उतने ही सुन्दर बिम्ब आपकी कविताओं में दृष्टिगोचर होते हैं। निश्चित ही जावेद कुदारी जी ने जनपद को कला एवं साहित्य दोनों में धनी बना दिया है। देखना है अभी आप कला एवं साहित्य को कितनी ऊँचाइयों तक ले जाते हैं।

ओंकार नाथ पाठक 'ओम'

गीत, गजल एवं मुक्तक विधाओं पर लेखनी चलाने वाले ओंकार नाथ पाठक का जन्म 5 अगस्त सन् 1958 ई0 को कोंच में हुआ था। आपके पिता डॉ0 गणेश प्रसाद पाठक भूतपूर्व आनरेरी मजिस्ट्रेट तथा माता श्रीमती कमला देवी पाठक है। आपका विवाह श्री लक्ष्मीनारायण वैद्य प्रधानाचार्य एस.पी. इण्टर कालेज झाँसी की सुपुत्री श्रीमती सुनीता पाठक के साथ हुआ। आपके दो पुत्र सिद्धार्थ पाठक एवं सत्यार्थ पाठक है जो विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1972 ई0 में सेठ विन्द्रावन इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1974 ई0 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा सन् 1976 ई0 में मथुरा प्रसाद महाविद्यालय कोंच से उत्तीर्ण करने के उपरान्त सन् 1980 ई0 में विधि स्नातक की परीक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से उत्तीर्ण की।

आपको लेखन की प्रेरणा कवि गोपालदास 'नीरज' की कविताएँ सुनने से प्राप्त हुई।

आपने अनेक रचनाओं का सृजन किया है। उनमें से कुछ रचनाएँ

यहाँ दृष्टव्य हैं—

फुलनों ने सरिता से जब माँगा आलिंगन

आज नहीं वह कल—कल करती चली गयी।[60]

आपको शृंगारिक रचनाओं के सृजन में भी सफलता मिली है। आपकी यह शृंगारिक रचना यहाँ दृष्टव्य है—

क्या मजा मिलता है आपको रूठ जाने में

रूठने में लगे है दो घड़ियाँ, उम्र कट जायेगी मनाने में।।[61]

कवि ने विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है।

आपने अपने विचारों एवं भावों को व्यक्त करने का माध्यम मुक्तक छन्दों को बनाया है।

राजकुमार हिंगवासिया 'राज'

साहित्य में योगदान देने वालों की अगली कड़ी में राजकुमार हिंगवासिया का नाम उल्लेखनीय है। आपने सामाजिक, राजनैतिक एवं शृंगारिक रचनाओं का सृजन किया है। आपका जन्म 5 फरवरी सन् 1963 ई0 को कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री बृजमोहन हिंगवासिया था। माता जी श्रीमती श्यामादेवी है। आपका विवाह ग्राम बरहल पो0 कैलिया (जालौन) निवासी श्री किशोरी शरण तिवारी की सुपुत्री श्रीमती आशा के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में दो पुत्र प्रियम व प्रणय तथा पुत्री कु0 प्रिया है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1977 ई0 में अमरचन्द माहेश्वरी इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1979 ई0 में इण्टरमीडिएट

की परीक्षा एस.आर.पी.इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। सन् 1981 ई० में बी.काम. की परीक्षा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से उत्तीर्ण की। इसी कालेज से आपने एम.काम की परीक्षा सन् 1984 ई० में उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप छत्रसाल ग्रामींण बैंक में कैशियर के रूप में कार्यरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा कवि गोपालदास 'नीरज' की रचनाओं के सुनने से प्राप्त हुई।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य है–

अंतस के अँधियारे में, जब मैने उजियाला पाया।
हर इन्सान लगा अच्छा सा, एक नशा मतवाला छाया।।
कोई बुरा नहीं होता है, सब अच्छे होते हैं जग में।
खुद में ही जब डूबकर देखा, खुद को ही छल वाला पाया।।
अन्तस के अँधयारे ....।[62]

आपकी यह गज़ल भी अच्छी बन पड़ी है–

हो रही तार–तार इन्सानियत की भावनाएँ
ढूँढ़ता फिरता है वह प्यार की सम्वेदनाएँ
खोके शिष्टाचार देखो घूमता है मूक सा
पूजता है अर्थ करके क्रूरता की वन्दनाएँ।[63]

राजकुमार हिंगवासिया 'राज' ने अपने काव्य के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त किया है। आपकी रचनाएँ भाव जगत के प्रसून चुनने में सफल कही जा सकती है।

दिनेश चन्द्र स्वर्णकार 'मानव'
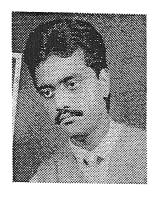
गीतों के माध्यम से कवि मंचों पर अपनी आवाज का जादू बिखेरने वाले दिनेश चन्द्र स्वर्णकार 'मानव' एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसे देखकर सहज अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता है कि ये गीतकार होंगे। मितभाषी, भरे हुए चहरे पर घनी मूँछें कद 5 फुट के लगभग रंग गोरा स्वस्थ शरीर एवं पहनावा पेन्टशर्ट है। आपका उपनाम 'मानव' है।

मानव जी का जन्म 5 मई सन् 1966 ई0 को कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री रामगोपाल स्वर्णकार एवं माता श्रीमती विमला देवी है। आपका विवाह सागर (म0प्र0) निवासी स्व. श्री भागीरथ प्रसाद जड़िया की सुपुत्री श्रीमती ज्योति के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में एक पुत्र अरुण उपाख्य गोलू एवं पुत्रियाँ कु0 अपर्णा व सुवर्णा हैं।

आपकी उच्च शिक्षा एम.एस–सी. (बायो) तक है। सम्प्रति आप अपना स्वतन्त्र व्यवसाय (सोनारी) में संलग्न है।

आपको लेखन की प्रेरणा सोम ठाकुर की रचनाओं को सुनने से मिली।

आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

कुछ ज्वलन्त से प्रश्न उठे मेरे मन में

कैसे खिले बसन्त और कोयल बोले मधुवन में।[64]

कवि हिन्दी भाषा से विशेष प्रेम करता है। उसकी प्रशंसा में वह गा उठता है–

शून्य जगत को मिली पूर्ण परिभाषा हिन्दी से।

विश्व न होगा उऋण हिन्द की भाषा हिन्दी से।।[65]

कवि मानव ने गीतों के साथ मुक्तक एवं ग़ज़लों की भी रचना की है। ग़ज़लों के माध्यम से आपने समाज का विद्रूप चेहरा बेनकाब किया है यथा–

रातों को जागता हूँ, इतनी सी कशमकश में

कब तक रहेगी बुलबुल सैयाद के कफ़श में

जाहिर है ज़माने में उनके उसूल लेकिन

बिकते हुए दिखे वो दौलत की पेशकश में।[66]

आपकी यह रचना भी अपने आप में बेजोड़ है–

रोटी के लिये दौड़ा, बस ने कुचल दिया।

महफ़ूज़ था वो जब तक, थी भूख उसके वश में।[67]

कवि दिनेशचन्द्र 'मानव' ने गीत एवं गज़ल विधा पर अपनी प्रखर लेखनी चलायी है। अपनी रचनाओं को समसामयिक परिवेश में ढालकर साहित्य में अपना विशेष योगदान दिया है।

भास्कर सिंह 'माणिक'

कविता, गजल, मुक्तक एंव बाल कविता आदि विधाओं पर अपनी लेखनी चलाने वाले साहित्यकारों की पंक्ति में भास्कर सिंह 'माणिक' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी रचनाओं को प्रकाशित कर समीक्षकों के द्वारा प्रशंसा प्राप्त की भास्कर सिंह 'माणिक' ने यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ किया है।

भास्कर सिंह माणिक का जन्म 15 जुलाई सन् 1969 ई0 को कोंच में

हुआ था। आपके पिता श्री रामरूप 'पंकज' एक ख्याति प्राप्त साहित्यकार हैं। माता श्रीमती मुन्नी देवी एक साधारण गृहस्थ महिला है। कवि को पिता के साहित्यिक गुण विरासत में प्राप्त हो गये। भास्कर सिंह 'माणिक' का विवाह औरैया निवासी श्री श्यामसिंह की सुपुत्री श्रीमती रचना स्वर्णकार के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में एक पुत्र मयंक मोहन एवं पुत्री प्रियांजलि है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षा अमरचन्द्र माहेश्वरी इण्टर कालेज कोंच से क्रमशः सन् 1984 ई0 एवं 1986 ई0 में उत्तीर्ण की। आपने बी.ए. की परीक्षा सन् 1990 ई0 में मथुरा प्रसाद महाविद्यालय कोंच से उत्तीर्ण की। सम्प्रति आप वित्त विहीन विद्यालय में अध्यापन कार्य करते हैं।

पोलियो उन्मूलन अभियान में आप अपना अमूल्य समय देकर उसमें सहयोग करते हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा अपने पिता श्री रामरूप स्वर्णकार पंकज जी से प्राप्त हुई।

आपकी प्रकाशित रचनाओं में एक बाल कविता संग्रह प्रकाशित हो गया है। इसके अतिरिक्त अनेक पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती है। आप राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सम्मान से एवं साहित्य शिरोमणि सम्मान से सम्मानित हो चुके हैं। आप मुख्य रूप से ओज, एवं व्यंग्य के कवि है।

आपकी बाल कविताओं में देशप्रेम का भी स्वर मुखरित हुआ है। देश प्रेम से सम्बन्धित आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

माँ आशीष मुझे दे दे, मैं भी रण में जाऊँगा

आजादी की खातिर मैं, हँस कर शीश चढ़ाऊँगा।

भारत माँ बुला रही रण भूमि में

कर विजय तिलक माँ, मैं अरिदल को मार भगाऊँगा।[68]

माणिक जी ने राष्ट्रीय भावनाओं की अभिव्यक्ति में जो बाल दिवस के भविष्य की कल्पना की है वह बड़ी ही मार्मिक है–

चाचा नेहरु के मन कल्पनाओं का सागर होगा

बाल दिवस बच्चों का होगा।

हाय भुखमरी बेकारी में, सुख की छाया देख न पाये

वर्तमान तो डूब चुका है 'माणिक', अब भविष्य का क्या होगा?[69]

कभी–कभी कवि जिन्दगी के सफर से उकता जाता है। जिस कार्य को वह करता है उसे उसका फल सकारात्मक न होकर नकारात्मक निकलता है। इसे मानव मन की विडम्बना कहें या मन की नकारात्मक सोच। इसी सन्दर्भ में कवि की ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

मैं खुद एक पहेली बन गया हूँ

जिन्दगी के सफर से थक गया हूँ।

पेड़ हमने उगाये थे आम के,

सोचता हूँ बबूल के कैसे हो गये हैं।[70]

कवि को बाल रचनाओं में अच्छी सफलता मिली है। इसके अतिरिक्त अन्य रचनाएँ भी अच्छी बन पड़ी हैं। युवा कवि 'माणिक' साहित्य साधना में पूर्ण रूप से समर्पित दिखाई देता है। यह युवा कवि सृजन की कितनी ऊँचाइयों को छुयेगा–यह तो अभी समय के गर्भ में है किन्तु इनकी साहित्य साधना से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह कवि जनपद जालौन के कवियों में अपना विशिष्ट स्थान अंकित करायेगा।

संजय सिंह 'स्वर्णकार'

संजय कुमार स्वर्णकार सुप्रसिद्ध साहित्यकार नरेन्द्र मोहन मित्र जी के सुपुत्र हैं। आपकी माता श्रीमती कमलेश कुमारी एक अत्यन्त विनम्र एवं साहित्यानुरागिनी संभ्रान्त महिला है। पूर्व में आप बालिका इण्टर कालेज, कोंच में अध्यापन कार्य कर चुके हैं।

आप बचपन से ही साहित्य में रुचि रखते थे। विरासत रूप में अपने पिताश्री से जो सारस्वत योगदान प्राप्त हुआ उसी कारण ये साहित्य जगत में अपना नाम उजागर कर सके। आपकी कविताएँ साहित्यिक गोष्ठियों में विद्वानों द्वारा समय–समय पर सराही गयीं। आपका जन्म 1 जुलाई 1969 ई० को कोंच में हुआ।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः 1986 ई० एवं 1988 ई० में द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण करने के पश्चात डी०पी० एड० की परीक्षा सन् 1993 ई० में उत्तीर्ण की। आपने एम.ए. की परीक्षा सन् 1995 ई० में उत्तीर्ण की।

इस शैक्षिक विवरण के अतिरिक्त आपमें खेलकूद सम्बन्धी प्रतिभा विद्यमान है। यूनिवर्सिटी तैराकी, जिला पावर लिफटिंग 285 किग्रा वजन उठाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। यूनिवर्सिटी शतरंज प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। 1990–91 में खेलकूद में महाविद्यालय चैम्पियन रहे। साथ ही एन.सी.सी. प्रमाण पत्र भी प्राप्त किया।

इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों में लेखन, 'अमर उजाला' पत्र में रंग भरो प्रतियोगिता एवं 'दैनिक भास्कर' में काव्य रचना लिखकर क्रमशः तृतीय

एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इन्हें प्रेस रिपोर्टिंग का भी अनुभव प्राप्त है।

आपका विवाह श्रीमती अनीता के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में स्वास्तिक एवं सिद्धार्थ हैं। इसके साथ ही आपका एक भाई संजीवकुमार एवं बहनें श्रद्धा एवं प्रीति हैं।

अभी तक आपका कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु फुटकर रचनाएँ समय-समय पर विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं-

शिक्षा की नयी ज्योति जगाती है बेटियाँ
पर्वत को लाँघ शून्य में जाती है बेटियाँ
सागर को पार कर चुकी खेलों के जगत में,
भारत का मान रोज बढ़ाती हैं बेटियाँ।।[71]

हमारे देश की महिलाएँ हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। चाहे वह एवरेस्ट की चोटी छूने की बात हो या चाँद पर अपना परचम लहराने की। कल्पना चावला ऐसी ही भारत की एक बेटी थी जिसने अपनी प्रतिभा के बल पर चाँद को छूने का सपना साकार कर लिया था दुर्भाग्यवश कोलम्बिया विमान 1 फरवरी 2003 ई० को दुर्घटना ग्रस्त हो गया। इस विमान में बैठे सभी सात अंतरिक्ष यात्रियों में कल्पना चावला भी कोलंबिया स्पेस शटल हादसे में मारी गई। कल्पना की स्मृति में कवि के ये उद्‌गार-

कल्पना की कल्पना न हो सकी साकार अब,
एक बार पहले पूर्ण करके दिखायी है।
जन्म से ही भा गया था तारों वाला ही शहर,
लगता है अब वहाँ दुनियाँ बसायी है।।[72]

जीवन को चलाने के लिये भोजन अति आवश्यक है। बिना भोजन के जीवन की कल्पना निरर्थक है। भोजन में रोटियों का अलग ही महत्व है। इसके महत्व को कवि संजय ने शब्दों के माध्यम से इस प्रकार व्यक्त किया जाये –

बनने से पहले लक्ष्य बनाती हैं रोटियाँ,

जिसके नसीब में वहाँ जाती है रोटियाँ।

देखे है राजा रंक सभी टूटते हुए,

आइना सच्चा रोज दिखाती हैं रोटियाँ।।[73]

आप एक अच्छे व्यंग्यकार भी है। व्यंग्य के माध्यम से आपने अपनी बात कही है। आपने समाज, देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के क्रिया–कलापों पर अच्छा व्यंग्य किया है। आपका यह व्यंग्य नीचे दृष्टव्य है–

भीमसेन भूखन मरें, करिया गोरे लाल।

अस्सी साल के पप्पू देखे, सौ के बारेलाल।।

कहा किसी ने देने वाला, छप्पर फाड़ के देता।

प्रतिभावान बने चपरासी, नकलबाज सब नेता।।

हिन्द में रह रहे हिन्दुस्तानी, कश्मीर में मर रहे।

बने चौधरी दादागिरी, बगदादन पर कर रहे।।[74]

कवि किसी न किसी रूप में माँ सरस्वती की आराधना करता है। वेद पुराण, उपनिषद सब यही कहते हैं कि नवों देवियों में माँ भगवती का ही अंश है। ऐसी ही माँ भगवती की वन्दना कवि द्वारा की गयी है'–

मातु चन्द्रघंटा तीज दिवस तुम्हारा लागे

शोभित सुभाल घंट आकृति दिखात है।

अस्त्र दश हस्त दश दिखे मम खल त्रस्त

हिय माँहि बसि नहीं जगत बिसरायी है।[75]

साहित्यकारों की नयी खेप हिन्दी साहित्य में बहुत कुछ कर गुजरने की लालसा में बराबर प्रयत्नशील दिखायी देती हैं किन्तु कौन जान सकता है कि इन नवोदित साहित्यकारों में सबसे आगे कौन होगा? ऐसा ही प्रयत्न रहा तो यह नवोदित कलाकार संजयसिंह स्वर्णकार एक दिन अपने लक्ष्य तक पहुँचने में पूर्ण सफल होगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

संजीव कुमार स्वर्णकार 'सरस'

साहित्यकार, चित्रकार, मूर्तिकार, बाँसुरी वादक एवं तबला वादक एक साथ अनेक गुणों से विभूषित संजीवकुमार स्वर्णकार का जन्म 13 अप्रैल सन् 1976 ई0 को कोंच में हुआ था। आपके पिता श्री नरेन्द्रमोहन 'मित्र' जनपद के अच्छे साहित्यकारों में से एक है। पिता के ये संस्कार संजीवकुमार जी को विरासत में मिले है। आपकी माता श्रीमती कमलेश कुमारी विनम्र एवं साहित्यानुरागिनी महिला है। आपके अग्रज श्री संजयसिंह स्वर्णकार भी कवि है। आपकी दो बहनें श्रीमती श्रद्धा एवं कु0 प्रीति स्वर्णकार है। आपका विवाह श्रीमती रूबी के साथ हुआ। आपका एक पुत्र सौमित्र स्वर्णकार है। कवि का उपनाम 'सरस' है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1992 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् सन् 1994 ई0 में इसी विद्यालय से इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने बी.ए. एवं एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1997 एवं 1999 ई0 में मथुरा प्रसाद महाविद्यालय कोंच से उत्तीर्ण की। इसके अतिरिक्त आपने बाम्बेआर्ट, संगीत प्रभाकर (तबला),

एन.सी.सी. के तीनों प्रमाण पत्र ए.बी.सी. भी प्राप्त किये है।

कवि ने विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलायी है। आपने मानव जीवन के यथार्थ का चित्रण बड़े ही मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है। आपकी कुछ रचनाएँ यहा दृष्टव्य हैं–

मैं समय के चक्र सा चलता रहा

रोज उगता रहा मैं ढलता रहा

साथ में कुरआन गीता रख सकूँ

ख्वाब मेरी आँख में पलता रहा

भूख के काले अँधेरे में 'सरस'

आश का चूल्हा बस जलता रहा।[76]

दूसरे की कमी निकालना बड़ा आसान है किन्तु स्वयं की कमी देखना बड़े साहस की बात है। कवि इस तथ्य को भलीभाँति जान चुका है। इसी सन्दर्भ में आपके विचार यहाँ दृष्टव्य हैं–

मेरे जीवन में फूल नहीं काँटे हैं

क्योंकि मैंने सुख छीने दुख बाँटे हैं।

सदा दूसरों की कमियाँ देखी हैं

अपने कर्मो के हिसाब कब छाँटे हैं।[77]

हमारे देश की प्रमुख समस्याओं में एक समस्या लोगों का गाँव से शहर की तरफ पलायन करना है और शहर आकर यही ग्रामीण गुमनामी का जीवन व्यतीत करने लगते हैं। कवि ने इस समस्या को अपनी रचना के माध्यम इस प्रकार उठाया है–

अब निशां मिटने लगे हैं पाँव के।

लोग शहरों में हुए गुम गाँव के।।

बह रहा लावा हर इक कूँचे गली।

सज़र अब कटने लगे है छाँव के।।[78]

संजीवकुमार स्वर्णकार 'सरस' बहुमुखी प्रतिभा का धनी साहित्यकार है। इनकी रचनाओं का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि आपने सामाजिक यथार्थ को अपने साहित्य में स्थान दिया है। इनका यह कृतित्व श्लाघनीय है।

कु० शारदा सिंह राजावत 'पायल'

साहित्य एक ऐसा विषय है जिसमें मानव मन की भावनाएँ, बुद्धि एवं हृदय से उठने वाले उद्रेक ही साहित्यकार को जन्म देते हैं। इसमें क्या लड़की क्या लड़का इसका कोई भेद नहीं होता है। यह तो अभेद है। हृदय से जब भावनाएँ उमड़ती है तो मस्तिष्क में उन भावनाओं की तीव्र सुगबुगाहट कोरे कागज में उतरती जाती है। यहीं से कवि का जन्म होता है। और कविता फलने फूलने लगती है। साहित्याकारों में पुरुषों के साथ महिलाएँ भी जनपद में अपना विशिष्ट स्थान बनाये हुए हैं। उनकी साहित्य साधना किसी भी तरह से कम नहीं है।

इसी क्रम में शारदासिंह 'राजावत' पायल का नाम उल्लेखनीय है। कंधे पर बैग और उसी में मोबाइल मुक्त हँसी और बात करने में निर्भीकता यह 'पायल' की प्रमुख विशेषता है। शारदा सिंह राजावत 'पायल' का जन्म 7 जून सन् 1982 ई0 में कस्बा कोंच में हुआ था। आपके पिता श्री रमेशसिंह राजावत एवं माता श्रीमती ऊषा सिंह है। माता–पिता के अच्छे संस्कार बेटी शारदा

सिंह में स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होते हैं।

शारदा सिंह राजावत 'पायल' ने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् क्रमशः 1996 एवं 1998 ई0 में श्रीनाथूराम पुरोहित बालिका इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। पुनश्च बी.ए. की परीक्षा सन् 2001 ई0 में श्री मथुरा प्रसाद महाविद्यालय कोंच से उत्तीर्ण की। आप एम.ए. (अंग्रेजी) विषय से दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई में अध्ययनरत हैं।

आपको लेखन की प्रेरणा इशरत अली खां कालपी वालों से तथा प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला' से मिली।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में फुटकर रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं। आपने 'अधूरी जिन्दगी' नामक उपन्यास भी लिखा है जो अप्रकाशित हैं आपकी मुख्य विधा गजल गीत, एवं कविता है।

कवयित्री की चिन्तन धारा में उसे यह प्रतीत होने लगता है जैसे उसकी जिन्दगी तमाशा बन गई हो। वह यह मान बैठी है कि उसकी तकदीर में कुछ खास नहीं है। फिर भी उसकी जिन्दगी उसे सितारा बना गयी है। कवयित्री की इसी सन्दर्भ में ये पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं–

आज दर्दे दिल को मेरे इक फ़साना बना गयी जिन्दगी।

दवा कुछ न दी उसकी इक तमाशा बना गयी जिन्दगी।।[79]

व्यक्ति जब आत्म केन्द्रित हो जाता है तो उसमें न जाने कितने दुर्गुण अपने आप पनपने लगते हैं। स्वार्थ भावना बढ़ती चली जाती है। जब वही व्यक्ति हिल–मिलकर रहता है तो मानवता खिल उठती है। कवयित्री इसी भाव को पाने को व्याकुल है। इनकी ये पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

आत्म केन्द्रित व्यक्ति रखता है,

सदा ध्यान अपना।

भूल जाता है जिम्मेदारियाँ

और कर्त्तव्य अपना।[80]

आज हम पूर्ण रूप से स्वतन्त्र हैं। पूर्व की भाँति आज हमारी कलम बँधी हुई नहीं है। इसीलिये कवयित्री आज बसन्त का उत्सव मना रही है। बसन्त आया है शीर्षक कविता के माध्यम से कवयित्री के ये विचार दृष्टव्य हैं—

कवियों की कलम में प्राण भर आया है

चली गयी ख़िजा अब बसन्त आया है

वाणी में बसन्त मधुरम भर आया है।

तेरा ही दिगन्त ऐश्वर्य छाया है।

चली गयी..................................।[81]

कु0 शारदा सिह राजावत 'पायल' कोंच तहसील की नवोदित साहित्यकार हैं। आप जिस निष्ठा एवं लगन से साहित्य की सेवा कर रही हैं यदि यह क्रम सतत् रहा तो निश्चित रूप से आप जनपद में अपना विशिष्ट स्थान बनाने में सफल होंगी।

1,2,3, शायर 'दीवाना' से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05

4. शायर ज़ख्मी जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05

5. 'हयाते–हकीकत', रचयिता, अवधबिहारी लाल निगम, प्रकाशक–डिवायन हैल्थ केयर कानपुर प्राक्कथन से

6. 'हयाते–हकीकत', रचयिता, अवधविहारी लाल निगम, प्रकाशक–डिवायन हैल्थ केयर कानपुर प्राक्कथन से

7. 'हयाते–हकीकत', रचयिता, अवधविहारी लाल निगम, प्रकाशक–डिवायन हैल्थ केयर कानपुर पृ0सं0 69

8. 'हयाते–हकीकत', रचयिता, अवधविहारी लाल निगम, प्रकाशक–डिवायन हैल्थ केयर कानपुर, पृ0सं0 50

9. 'हयाते–हकीकत', रचयिता, अवधविहारी लाल निगम, प्रकाशक–डिवायन हैल्थ केयर कानपुर प्राक्कथन से

10. 'हयाते–हकीकत', रचयिता, अवधविहारी लाल निगम, प्रकाशक–डिवायन हैल्थ केयर कानपुर, प्राक्कथन से

11. 'गीत संचरण', रचयिता, राधाचरण गुप्त 'चरण' प्रकाशक–सामाजिक साहित्यिक एवं रचनात्मक संस्था, औरैया, उ0प्र0 पृ0सं0 42

12. 'गीत संचरण', रचयिता, राधाचरण गुप्त 'चरण' प्रकाशक–सामाजिक साहित्यिक एवं रचनात्मक संस्था, औरैया, उ0प्र0 पृ0सं0 30

13. 'गीत संचरण', रचयिता, राधाचरण गुप्त 'चरण' प्रकाशक–सामाजिक साहित्यिक एवं रचनात्मक संस्था, औरैया, उ0प्र0 पृ0सं0 21

14. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04

15. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04

16. 'कुणाल', रचयिता– डॉ0 हरिमोहन गुप्त, पृ0सं0 19

17. 'कुणाल', रचयिता– डॉ0 हरिमोहन गुप्त, पृ0सं0 74

18. 'नव चेतना प्रसून', रचयिता– नारायण दास स्वर्णकार, पृ0सं0 30

19. 'इहिलोक–परलोक सुधारें', रचयिता– नारायण दास स्वर्णकार, पृ0सं0 54
20. 'इहिलोक–परलोक सुधारें', रचयिता– नारायण दास स्वर्णकार, पृ0सं0 54
21. 'इहिलोक–परलोक सुधारें', रचयिता– नारायण दास स्वर्णकार, पृ0सं0 54
22. 'इहिलोक–परलोक सुधारें', रचयिता– नारायण दास स्वर्णकार, पृ0सं0 57
23. 'इहिलोक–परलोक सुधारें', रचयिता– नारायण दास स्वर्णकार, पृ0सं0 59
24. शायर से साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
25. शायर से साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त रचनाएँ साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
26. शायर से साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त रचनाएँ साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
27. शायर से साक्षात्कार के द्वारा प्राप्त रचनाएँ साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
28. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना–साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04
29. सर्जना, 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 101
30. अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' (संक्षिप्त परिचय)
31 साहित्यकार 'कुमुद' से साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 20/02/05
32. कवि गोष्ठी उरई में कवि द्वारा मंच पर सुनी रचना, दिनांक 20/09/04
33. कवि गोष्ठी उरई में कवि द्वारा मंच पर सुनी रचना, दिनांक 20/09/04
34. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 17/03/04
35. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 17/03/04
36. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 17/03/04
37. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 17/03/04
38. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 17/03/04
39. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05
40. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05
41. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05
42. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05
43. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05

44. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05
45. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05
46. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक, 19/02/05
47. स्मारिक 1997 उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ, सम्पादक–सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा, पृ0सं0 20
48. कवि से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
49. कवि से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
50. कवि से साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
51. 'सर्जना', 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 118
52. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 21.11.2003
53. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 21.11.2003
54. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 23/09/04
55. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 23/09/04
56. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 23/09/04
57. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 23/09/04
58. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 23/09/04
59. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 23/09/04
60. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
61. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
62. सर्जना, 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 128
63. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक– प्रवीण सक्सेना 'उजाला' पृ0सं0 43
64. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
65. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
66. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
67. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05
68. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक– प्रवीण सक्सेना 'उजाला' पृ0सं0 35
69. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक– प्रवीण सक्सेना, उजाला, पृ0सं0 36

70. 'सर्जना', 2003, सम्पादक— डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0 संख्या 215

71. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04

72. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04

73. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04

74. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04

75. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 17/03/04

76. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05

77. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05

78. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना, साक्षात्कार का दिनांक 19/02/05

79. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक— प्रवीण सक्सेना उजाला, पृ0सं0 15

80. काव्य मञ्जूषा, 2003, सम्पादक— प्रवीण सक्सेना उजाला, पृ0सं0 18

81. सर्जना, 2003, सम्पादक— डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 216

अष्टम अध्याय

माधौगढ़ तहसील के साहित्यकार

गोपीचरण 'गिरि'
ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'
रसूल अहमद 'सागर' बकाई
डॉ० मिथिलेश कुमारी शुक्ला
शब्बन खान 'गुल'
मु० मुजीब आलम
बाँके बिहारी द्विवेदी
रविकान्त चन्दन

गोपीचरण 'गिरि'

गोपीचरण गिरि कविता, गीत और गज़ल के सशक्त हस्ताक्षर है। आप मानवतावादी रचनाकार एवं राष्ट्रीयता के पक्षधर हैं। आपने सामाजिक तथा आर्थिक विसंगतियों के प्रति विद्रोह अपनी कविता के माध्यम से मुखरित किया है। आपकी रचनाओं में एक स्वर क्रान्तिकारिता का भी उपजा है।

गोपीचरण गिरि का जन्म 9 फरवरी सन् 1928ई0 को रामपुरा तहसील माधौगढ़ जनपद जालौन में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री कमलअयन एवं माता स्व0 श्रीमती पुना देवी थी। स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी कविवर श्री सुन्दरलाल सक्सेना से प्रभावित होकर सन् 1944 ई0 में आपने राजनीति में प्रवेश किया तथा काव्य सृजन के लिये लेखनी उठायी। सन् 1954 ई0 में भारतीय क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी के आन्दोलन में दफा 144 तोड़कर जेल गये। दो माह पश्चात् सजा काटकर रायबरेली जेल से रिहा हुए। अनेक नेताओं के साथ रहने का आपको अवसर भी मिला।[1] आपका एक पुत्र रमेश था किन्तु दुर्भाग्यवश अल्पायु में ही उसका निधन हो गया। कवि के जीवन का एकमात्र सहारा छिन जाने से कवि टूट चुका था किन्तु इन्होंने धैर्य के साथ इस विषम परिस्थिति का सामना किया। आपने एम.ए. (हिन्दी) तक उच्च शिक्षा प्राप्त कर, नगर महाविद्यालय कानपुर में सेवारत रहे और यहीं से सन् 1988 ई0 में सेवा निवृत्त हुए। सम्प्रति आप 135 चन्द्रनगर, चकेरी रोड कानपुर उ0प्र0 में निवास करते हैं।

आपकी एक प्रकाशित कृति 'अन्तर के स्वर' (काव्य संग्रह) है, जिसके सम्पादक— राधाचरण विद्यार्थी हैं। इसके अतिरिक्त आपकी प्रसिद्ध रचनाएँ राष्ट्रीय

एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र–पत्रिकाओं एवं संकलनों में प्रकाशित होती रही हैं।

आपने सामाजिक एवं राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत रचनाओं का सृजन किया है। अन्तरं में जो मथा वही इनकी काव्य पंक्तियों में उतर आया। आप मन्दिर–मस्जिद के चक्कर में नहीं पड़ते हैं। आप भाईचारे एवं प्रेम पर अधिक बल देते हैं साथ ही धर्म के नाम पर लोगों को आपस में लड़ाने वालों से कहते हैं–

मंदिर और मस्जिदों के ही
राम रहीम यहाँ लड़ते हैं।
नहीं समझते अर्थ धर्म का
रामायण कुरान पढ़ते हैं।

धर्म अंध अपने दोषों को
एक दूसरे के सिर मढ़ते।
इनका है वर्चस्व तभी तक
जब तक हम सब रहें झगड़ते।[2]

कवि के इकलौते पुत्र रमेश का अल्पकालीन बीमारी के पश्चात् निधन हो गया था। इस वज्राघात ने उनको बुरी तरह से झकझोर दिया था। पुत्र की स्मृति में उनका यह शोक गीत ह्रदय की पीड़ा को कसका देता है–

अंधों सा अब अंधकार में
पग–पग पर मैं भटक रहा हूँ
जीवन पथ के चौराहे पर
मतिभ्रम हो, सिर पटक रहा हूँ।

पथ निर्देशित करने वाला

अस्त हुआ मेरा ध्रुवतारा

बुझते–बुझते अपनी लौ से

जला गया सर्वस्व हमारा।।[3]

कवि गोपीचरण 'गिरि' की रचनाएँ हृदयस्पर्शी एवं उनके मर्माहत की वेदना हैं। इतने दुखों के होते हुए भी यह साहसी कवि पलायन नहीं करता है। वह छाती ठोंककर तूफानों से लड़–भिड़ जाता है। वह कहता है–

दुख मिला विरासत में मुझको

संघर्ष राह दिखलाता है।

बस इसीलिये तूफानों से भी

लड़ना मुझको भाता है।

पर्वत की छाती चीर बढ़ा–

जीवन आगे, तो रुका नहीं।

रोड़ा–चट्टानों के आगे

विद्रोही का सिर झुका नहीं।[4]

कवि ने अपनी रचनाओं में सरल सुबोध एवं जन सामान्य के समझने हेतु बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है। संगीतात्मकता एवं भावनुरूप सम्प्रेषणीय की दृष्टि से यह भाषा कवि के भावों को वहन करने में पूर्ण सफल है।

कवि गोपीचरण 'गिरि' के काव्य के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार प्रकट किये हैं–

डॉ0 रामस्वरूप त्रिपाठी अध्यक्ष– हिन्दी विभाग डी.ए.वी कालेज कानपुर के शब्दों में– 'अन्तर के स्वर' की अधिकांश रचनाओं में एक ही सन्देश है, जो पाठक के मन को बरबस छू लेता है। कवि ने भावानुरूप सरल

भाषा के प्रयोग से सम्प्रेषणीयता को महत्व दिया है, क्योंकि शब्द चयन शब्द संगुम्फन और संगीतात्मक प्रवाह सहृदय को अधिक प्रभावित करते हैं।''[5]

डॉ0 देवेन्द्र दीपक संचालक पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग महानन्द मिशन कालेज गाजियाबाद के शब्दों में – ''गिरि'' का कवि नाराज है, खिन्न है। समाज में व्याप्त विडम्बनाओं और विद्रूपताओं के प्रति कवि की यह खिन्नता सात्विकता और निष्ठा के प्रति उनकी भीतरी अभिन्नता का ही प्रतिफल है। वाययीयता और व्यंजनाश्रित दुरूहता से मुक्त 'गिरि' की कविता का लिवास निहायत सादा और प्रभावशाली है।''[6]

अनुभूति एवं अभिव्यक्ति दोनों का सामंजस्य कवि की मौलिक प्रतिभा का द्योतन है। उनका भोगा हुआ यथार्थ अभिव्यक्ति के रूप में कोरे कागजों में उतरता चला गया है। अपनी पीड़ा के साथ–साथ कवि दूसरों की पीड़ा को उसकी वेदना को स्वर देने में कहीं नहीं चूका है।

कवि गोपीचरण 'गिरि' ने जिस धैर्य एवं साहस के साथ अपनी जीवन यात्रा को पूर्ण करते हुए समाजोपयोगी साहित्य का सृजन किया है। यह इनके महान व्यक्तित्व एवं महानता का परिचायक है।

ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग'
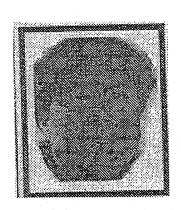
सुविख्यात कवि ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग' बहुमुखी प्रतिभा के धनी और वरिष्ठ साहित्यकार हैं। आपका जन्म 4 मई सन् 1933 ई0 को जगम्मनपुर तहसील माधौगढ़ जनपद–जालौन में हुआ था। आपका उपनाम 'पराग' है।

आपकी उच्च शिक्षा एम.ए. तक है। आप

शासकीय सेवा में कार्यरत रहकर उपनिदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए।

आपकी प्रकाशित काव्य कृतियाँ– 'धरती का कर्ज', देहरी दीप, 'नदी में आग लगी है', 'फूल के अधरों पर पत्थर' तथा 'अनकहा ही रह गया' आदि हैं। इसके अतिरिक्त आपने 'विदुरा', 'नीराजन', 'निर्धन', 'विभा', 'भोर जगी कलियाँ', 'गीतायन' तथा 'नूपुर अन्तर्मन के' आदि कृतियों का सफल सम्पादन किया है।[7]

आपने अपनी काव्य प्रतिभा से साहित्य जगत में अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है। आपकी ग़ज़ल की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

फूल के अधरों पे पत्थर रख दिया।
गंध को काँटों के अन्दर रख दिया।
यूँ नये उपचार आजमाये गये
ज़ख्म को मरहम के ऊपर रख दिया।
क्या ग़ज़ब भाषा है दुनिया की
राहजन का नाम रहवर रख दिया।।[8]

उम्र बीत रही है। जिन्दगी के सम्बन्ध में आपने विभिन्न रूपक प्रस्तुत किये है। इसी सन्दर्भ में उनकी यह ग़ज़ल दृष्टव्य है–

उम्र बढ़ती जा रही है, घट रही है ज़िन्दगी
यह न पूछो किस तरह से कट रही है ज़िन्दगी
क्या शिकायत नाव से, पतवार से मल्लाह से
बाढ़ में डूबा नदी का तट रही है ज़िन्दगी।[9]

ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग' ने साहित्यिक खड़ी बोली के साथ ही उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है। समसामयिक रचनाओं पर आपकी लेखनी

प्रखरता के साथ चली है।

'पराग' जी ने अपने विपुल साहित्य का सृजन करके यह सिद्ध कर दिया है प्रतिभा को ढका नहीं जा सकता है। वह प्रतिभा चाहे ग्रामीण अंचल में हो या शहरी, इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता है। यह प्रतिभा अपना मुकाम खोज ही लेती है।

रसूल अहमद 'सागर' बकाई

जनपद जालौन में रसूल अहमद 'सागर' बकाई का नाम हिन्दी ग़जल एवं गीतकार के रूप में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। आपने भाषा की साम्प्रदायिकता, वर्ग भेद एवं मज़हबी संकीर्णता को मिटाते हुए मानवता हेतु पथ प्रशस्त किया है।

रसूल अहमद 'सागर' बकाई का जन्म 24 जुलाई सन् 1941 ई0 को उत्तर प्रदेश के जालौन जिलान्तर्गत माधौगढ़ तहसील के रामपुरा ग्राम में एक सम्मानित एवं स्वाभिमानी निर्धन पठान परिवार में हुआ था। आपके पिता स्व0 मुंशी नन्हे खाँ पेशकार थे। आपकी माता का नाम स्व0 जनैब खातून एक गृहस्थ महिला थीं। आपका विवाह जालौन निवासी श्री लाल मुहम्मद की सुपुत्री श्रीमती रईसा बेगम के साथ हुआ। आपके पाँच पुत्र–मु0 आबिद, मु0 जाहिद, मु0 ताबिश, मु0 मुजीब आलम एवं म0 आरिफ है। आपके पाँचो पुत्र विवाहित हैं और जनपद के विभिन्न कस्बों में अपने–अपने व्यवसाय में कार्यरत हैं।

कवि का का उपनाम 'सागर' बकाई है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1958 ई0 में समरसिंह इण्टर कालेज

रामपुरा (जालौन) से उत्तीर्ण की। सन् 1963 ई0 में आपने इण्टरमीडिएट की परीक्षा व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की। कुछ समय अन्तराल सन् 1971 ई0 में बी0ए0 की परीक्षा जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से व्यक्तिगत रूप से उत्तीर्ण की। इसी विश्वविद्यालय से आपने एम0ए0 की परीक्षा सन् 1992 ई0 में उत्तीर्ण की। इसके साथ ही आपने सी0टी0 का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। आपने विभिन्न विद्यालयों में शिक्षण कार्य करते हुए शासकीय इण्टर कालेज मिहुँना जिला भिण्ड (म0प्र0) से सन् 2003 ई0 में सेवा निवृत्त हुए।

आपकी प्रकाशित कृतियाँ– 'अर्चना के गीत,' 'संवेदनाओं के क्षितिज', 'दोहा शतक', 'गर्म लहू की बूँदें' तथा 'धूप सिरहाने खड़ी है' आदि है। इसके अतिरिक्त आपने 'दमाने जिन्दगी', अन्वेषिका, 'बूँद से सागर तक', 'शब्द बोलते हैं' का कुशलतापूर्वक सम्पादन किया है।

अप्रकाशित कृतियों में – 'जनपद जालौन के प्रवासी कवि', 'जाग मेरे वतन', 'सागर सतसई', 'माटी के मोती', 'हिन्दी सेवी मुस्लिम कवि', 'एक पुरुष एक देवता', नज़्म एवं रुवाइयात आदि हैं।

इसके साथ ही आपकी रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। आकाशवाणी लखनऊ तथा छतरपुर केन्द्र से रचनाओं का प्रसारण हुआ है। रायबरेली व लखनऊ से गीत और गज़लों का कैसेट तैयार किया जा चुका है।

आपकी प्रमुख विधाएँ–कविता, कहानी, समीक्षा, गीत, गज़ल, मुक्तक, नज्म, रुबाई, दोहा व घनाक्षरी है।

आपको अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए। कुछ पुरस्कार इस प्रकार है– 'मद्य निषेध साहित्य' प्रतियोगिता पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र 24 मई

1965 ई0 में ग्वालियर से, 'वाकिफ आवार्ड' (राजीव गाँधी सेवा संस्थान) 23 मई सन् 1996 ई0 को रायबरेली से, 'साहित्य अकादमी' पानीपत द्वारा 14 सितम्बर 1997 ई0 को, 'कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' 25 फरवरी सन 1999 ई0 को, 'रचना पुरस्कार' 1 जुलाई सन् 2002 ई0 को हिन्दी अकादमी दिल्ली से प्राप्त हुआ।

आपकी मानद उपाधियाँ – आचार्य, मानवरत्न, गज़ल सम्राट, आधुनिक कबीर, कलम का अब्दुल हमीद, काव्य महारथी आदि हैं।

'सागर' बकाई जी की आस्था मज़हब के दकियानूसी विचारों में नहीं हैं वह अपनी देश भक्ति का प्रमाण देते हुए कहता है–

मुसलमां हूँ मग़र अब्दुल हमीद जैसा मुसलमां हूँ

मिरा ये कौल पहुँचा दो वतन के इक–इक घर तक।[10]

आज के सामाजिक परिवेश में लोग आतंकवाद एवं दस्युओं से भयभीत रहते हैं। कवि ने इस समस्या को इन शब्दों में उठाया है–

आदमी होने लगा फिर जंगली।

आँख का तेवर सरासर चम्बली।

सभ्यता की वर्णमाला को हुआ क्या।

अक्षरों से गंध आती नक्सली।[11]

यदि मनुष्य के अन्तस में लगन, आस्था एवं प्रेम हो तो इंसान की तो बात ही क्या है पत्थर भी पिघल जाते है। शायर के ये विचार यहाँ दृष्टव्य हैं–

लगन हो, आस्था हो, प्रेम हो, विश्वास हो दिल में।

पिघलते से नज़र आयेंगे तुमको यार पत्थर तक।।[12]

कवि एवं शायर रसूल अहमद बकाई के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों ने

विचार व्यक्त किये है।

डॉ0 शिवमंगल सिंह 'सुमन' उपाध्यक्ष कालिदास अकादमी उज्जैन के शब्दों में; – जद्दोजहद की इस दुनिया में सागर साहब का कलाम इन्सानियत के घावों पर मरहम लगाने का काम करता है। राष्ट्र को आज ऐसे ही शायरों और फनकारों की जरूरत है। अफरा–तफरी और दौरे–हाजिर के इस नफरत भरे माहौल में 'सागर' साहब जैसी शायर हस्तियाँ ही इस देश को बचा सकती हैं। मैं ऐसे विदग्ध, सहृदय और मार्मिक कलाकार के उत्तरोत्तर उत्कर्ष की कामना करता हूँ।"

'सागर साहब बुन्देलखण्ड के गौरव हैं।[13]

डॉ0 आर.एस. भारती के शब्दों में – "सागर साहब की रचनाओं में एक ओर जहाँ व्यापक सहानुभूति है वहीं दूसरी ओर सामाजिक विद्रूपताओं, वर्जनाओं और अभावों के प्रति आक्रोश भी है।[14]

डॉ0 सीता किशोर खरे पी–एच.डी., डी.लिट्. दतिया म0प्र0 के शब्दों में – "सागर साहब में गज़ब की प्रतिभा का पुंजीभूत सम्मिलन है। उनका प्रेरक साहित्य आगे आने वाली पीढ़ियों के लिये सही गैल बताने में समर्थ है।"[15]

रसूल अहमद 'सागर' बकाई जी की भाषा हिन्दी उर्दू मिश्रित हैं यह भाषा उनके विचारों को वहन करने में पूर्ण सक्षम है। राष्ट्रीय एकता एवं मानवीय मूल्यों को बड़ी तन्मयता के साथ इन्होंने अपनी गज़लों एवं गीतों में दिखाया है। निश्चित रूप से आप जनपद जालौन के सशक्त हस्ताक्षर हैं।

डॉ० मिथलेश कुमारी शुक्ला

डॉ० मिथलेश कुमारी शुक्ल जनपद की ऐसी साहित्यकार हैं जिन्होनें रामायण, महाभारत के पात्रों को अपने काव्य का विषय बनाया है। इन पात्रों के माध्यम से कवयित्री ने युगानुरूप चरित्रों को गढ़कर समाज में नयी चेतना जागृत की है तथा अच्छाई बुराई के प्रति अपना नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

डॉ0 मिथलेश कुमारी शुक्ल का जन्म 2 फरवरी सन् 1956 ई0 को उ0प्र0 के जालौन जिलान्तर्गत माधौगढ़ तहसील के धरमपुरा ग्राम में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री श्रीराम उपाध्याय था।

आप बचपन से ही साहित्य के पठन–पाठन में रुचि रखती थी। यही पठन–पाठन आपके काव्य का प्रेरणास्रोत बना। आपने बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से 'रामचरित मानस और भुशुण्ड रामायण का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध प्रबन्ध लिखकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। सम्प्रति 4 एफ नबाब युसुफ अली रोड सिविल लाइन इलाहाबाद उ0प्र0 में निवास कर रही हैं।

आपकी प्रकाशित कृति 'कुम्भकर्ण (खण्ड काव्य) हैं इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

कुम्भकर्ण खण्डकाव्य के आधार पर कवयित्री ने कुम्भकर्ण से आदर्श राजनीति की चर्चा कराते हुए रावण को उसके कुकृत्य की तरफ इंगित किया है। परायी स्त्री पर बुरी नजर डालना या उसका हरण करना अच्छी बात नहीं है और बिना कारण के शत्रु पैदा करना किसी तरह से उचित भी नहीं हैं–

तुम कहते हो राम आ गया है लंका सीमा पर,

स्वयं बुला लाये तुम, उसकी पत्नी को चोरी कर।

स्वयं शत्रु चढ़ आये तो संघर्ष बहुत अच्छा है

पर वैरी पैदा करना, सच ठीक नहीं रत्ती भर।[16]

किसी भी युग में आयुधों का निर्माण मानवता की भलाई नहीं कर सकता है। वर्तमान समय में भी हथियारों की होड़ा–होड़ी में न जाने कितने प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का निर्माण किया जा रहा है। कवयित्री ने इस समस्या को अपने काव्य के माध्यम से उठाया है। इसी कारण उनके पात्र युगानुरूप दृष्टिगोचर होते हैं। यथा–

अस्त्रों के पर्वत पर बैठा हुआ अबुध–अज्ञानी

अपनी विकल भावनाओं की कहता रूप कहानी।

किन्तु मौन जागृत निवेश का, प्रहरी सजग हृदय जो

मरुथल में भी गूढ़ कर्म से उफना देता पानी।।[17]

कवयित्री ने कुम्भकर्ण के माध्यम से नीतिचर्चा को उठाया है क्योंकि कोई भी शासन मात्र भय और दण्ड से नहीं चलता है। युगानुरूप परिस्थितियों के माध्यम से इस चर्चा को उठाना कवयित्री के लिये अभीष्ट था। आपकी यह नीति चर्चा यहाँ दृष्टव्य है–

आधारित भय और दण्ड पर यदि है मात्र–प्रशासन,

जनमानस में पनप न पाया, प्रेम जनित अनुशासन।

थोड़े से हिचकोले खाकर, राज्य तन्त्र व सारा,

टूट बिखर जाता है, देता हुआ क्रान्ति का ज्ञापन।।[18]

आपकी भाषा सरस एवं साहित्यिक खड़ी बोली है। बोध गम्य भाषा सहृदय पाठक पर अपना प्रभाव छोड़ने में सक्षम है।

डॉ0 मिथिलेश कुमारी के काव्य के सम्बन्ध में विभिन्न मनीषियों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं–

रामेश्वर शुक्ल अंचल के शब्दों में– "भाषा, भाव विचार और चरित्र सृष्टि सभी दृष्टियों से यह खण्डकाव्य स्तरीय है। खण्डकाव्य की रचना परम्परा पहले से आज निखर आई। स्फुट गीतों और मंचीय क्षणिकाओं, कणिकाओं व्यंग्योक्तियों के इस युग में खण्डकाव्य को जैसे लोकरंजन से विरल कोई विधा मान लिया गया है।[19]

डॉ0 मिथलेशकुमारी शुक्ल ने हिन्दी साहित्य को अपना अमूल्य योगदान देकर जनपद में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। भाषा पर आपका पूर्ण अधिकार है। निश्चित रूप से आपने जनपद के साहित्यकारों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी है।

शब्बन खान 'गुल'

शब्बन खान गुल का जन्म 1 जून सन् 1965 ई0 को जनपद जालौन की माधौगढ़ तहसीलान्तर्गत ग्राम बँगरा में हुआ था। आपने इण्टरमीडिएट की परीक्षा अपने ग्राम बँगरा से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप 10 वर्ष तक केन्द्रीय सेवा में अधिकारी पद पर कार्यरत रहे किन्तु यह पद उन्हें रास नहीं आया और नौकरी से त्यागपत्र देकर पूर्णरूप से पत्रकारिता और साहित्य लेखन में व्यस्त हो गये। देश की स्तरीय पत्र–पत्रिकाओं व काव्य संकलनों में आपकी रचनाएँ ससम्मान प्रकाशित होती हैं।

आप सन 1985 ई0 से उ0प्र0 के जनपद बहराइच में स्थायी रूप से निवास कर रहे हैं।

आपने समसामयिक विषयों पर अपनी व्यंग्यात्मक लेखनी चलाकर अनेक समस्याओं को उठाया है। भ्रष्टाचार पर तो आपकी लेखनी बड़ी प्रखरता के साथ चली है। आपकी यह रचना आज के भ्रष्ट प्रशासन की पोल खोल देती है–

खुल गयी मुहल्ले में

एक नयी पुलिस चौकी

यह खबर सुनकर,

एक जवान बेटी की माँ चौंकी।[20]

आज हमारा देश ही नहीं वरन् सारा संसार बेराजगारी की समस्या से पीड़ित है। लोगों को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं होती है। कवि 'गुल' ने 'एक टुकड़ा रोटी' शीर्षक के माध्यम से इस समस्या को उकेरा है–

रात बड़ी अंधेरी है,

दिन भी आफत के मारे हैं।

हम भूखे नंगे सहमे,

पिचके पेट हमारे हैं।

एक जून की रोटी को,

बेरोजगारी के आलम में

हम फिरते मारे–मारे हैं।[21]

कवि शब्बन खान 'गुल' जनपद के अच्छे व्यंग्यकारों में से एक है। आपकी रचना धर्मिता अच्छी है। देखना है यह व्यंग्यकर साहित्य से जनपद को कितनी ऊँचाइयों तक ले जाता है।

मु० मुजीब आलम

मु0 मुजीब आलम का जन्म 1 जून सन् 1976 ई0 को जनपद जालौन के ग्राम रामपुरा में हुआ था। आपके पिता रसूल अहमद 'सागर' बकाई एक उच्चकोटि के साहित्यकार हैं। आपकी माता रईसा बेगम एक सद्‌गृहस्थ महिला है। आपका विवाह उरई निवासी श्री रईसखां की सुपुत्री श्रीमती इशरत बेगम के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में अफ़ज़ल, अरशद एवं अमन है।

आपने इण्टरमीडिएट तक शिक्षा प्राप्त की। प्रिंटिंग प्रेस एवं कम्प्यूटर संचालन को आपने अपनी जीविकोपार्जन का माध्यम बनाया।

अभी तक आपका केवल एक गजल संग्रह प्रकाशित हुआ है। इसके साथ ही देश की प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित होती रहती हैं।

जिन्दगी की तमाम वास्तविकताओं को दर्द का जामा पहनाने वाले 'आलम' जी की गज़लें पाठकों को प्रभावित करती हैं। इसी तरह की यह गज़ल यहाँ दृष्टव्य है–

गज़ल से हार जाती जिन्दगी
वेदना के गीत गाती जिन्दगी
देह पद पीड़ा कसक का भार है
दर्द के आँसू बहाती जिन्दगी
भूख से लड़ती रही ये रात–दिन
निर्धनों की लड़खड़ाती जिन्दगी।[22]

मु0 मुजीब आलम ने ग़ज़ल विधा को अपनाकर साहित्य में प्रवेश किया है। आपकी रुचि लेखन की तरफ हैं। आप साहित्य में कितना योगदान दे पाते हैं यह तो समय के गर्भ में है। पिता के पद चिह्नों पर चलकर उनकी साहित्य रूपी गाड़ी को आगे बढ़ाते है या वहीं खड़ी रह जायेगी। अभी से कुछ कहना मुश्किल है।

बाँके बिहारी द्विवेदी

मधुर कंठ के धनी, गाँव की मिट्ठी की सोंधी महक से अभिभूत कवि बाँकेबिहारी का जन्म 1 फरवरी सन् 1978 ई0 को ग्राम ईंटो तहसील माधौगढ़ के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। आपके पिता डॉ0 नाथूराम द्विवेदी एवं माता श्रीमती रामवती द्विवेदी धर्मपरायण और उच्च विचारों वाली गृहस्थ महिला हैं। आपका विवाह ग्राम पिचौरा निवासी श्री सन्तोष कुमार पाण्डेय की सुपुत्री श्रीमती नीतू द्विवेदी के साथ हुआ। आपका एक पुत्र चि0 हर्ष द्विवेदी है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1993 एवं 1995 ई0 में श्री जवाहर इण्टर कालेज गोहन तथा सनातन धर्म इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण कीं। सन् 2000 ई0 में आपने बी.ए. की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। पुनश्च एम. ए. (हिन्दी) की परीक्षा इसी महाविद्यालय से सन् 2002 ई0 में उत्तीर्ण की।

आपका अभी तक कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ है। आपका अप्रकाशित काव्य संग्रह 'बिहारी शतक' है। आपकी फुटकर रचनाएँ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

आपको हिन्दी साहित्य परिषद दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से 'सर्वोच्च कवि पुरस्कार' प्रदान किया गया। प्रतिभा प्रोत्साहन समिति द्वारा 'सारस्वत उपाधि' प्रदान की गयी। आप दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई के अध्यक्ष भी रहे।

सम्प्रति आप तिरुपति फार्मेसी उरई में प्रबन्ध निदेशक हैं।

कवि का बचपन गाँव में व्यतीत हुआ है। बचपन का वह गाँव उसे भूलता नहीं हैं किन्तु जब कभी वह गाँव जाता है तो गाँव में अनेक बुराइयाँ व्याप्त हो चुकीं है। इसी कारण कवि यह सब देखकर व्यथित हो उठता है। आपने इसी सन्दर्भ में 'मेरागाँव' शीर्षक कविता से अपने भावों को प्रकट किया है। गाँव की भाषा भावों के अनुरूप है। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य है—

मेरा प्यारा सुन्दर गाँव। उतना ही न्यारा है नाव।।
जन्म जहाँ पर हुआ था मेरा। जहाँ अलग था शाम सेबरा।।
जहाँ प्यार, सभी को सब करते, बच्चे सदा बड़ों से डरते।।
पीर परायी को हर लेते। सुख—दुख में सब साथ थे देते।
बड़ेन के पैर छूते थे बच्चे। सबके तन में मन थे अच्छे।
पर उस गाँव में किसकी नजर लग गयी।
सुख शांति वहाँ से कहाँ भग गयी।
अब कोऊ काऊ के हाल न पूँछे।
देख और को तानत मूँछें।।
सबई—सबई के दुश्मन हुय गये।
प्रीति—रीति अब कहूँ खुय गये।[23]

कवि को जीवन की दुश्वारियों में बचपन की याद आने लगती है।

इन्हीं के बचपन के सम्बन्ध में इन्हीं की यह रचना–

जीवन की इन दुश्वारियों में बचपन की यादें आती हैं।

लू के इन कठिन थपेड़ों में, नयी फुहारें लाती हैं।।

मेरा बचपन निकल गया क़ब, याद नहीं है मुझको

अब तो सतत् हमेशा करना है, जीवन में संघर्ष।

निकल गये है बचपन के सुन्दर–सुन्दर वर्ष।।

बचपन के उस अल्हड़पन की यादें कभी–कभी छा जाती हैं

जीवन की इन दुश्वारियों में, बचपन की यादें आती हैं।[24]

कवि आज के सामाजिक परिवेश में व्याप्त बुराइयों से उसके मन में हताशा सी छा गयी है। समाज की बिगड़ती मर्यादाओं से आहत कवि श्रीराम के आदर्शो को समाज में पुनः स्थापित करने में जोर देता हुआ कहता है–

हे पुरुषोत्तम राम जो तुमने बाँधी मर्यादा

वो छूट रही है आज, वो टूट रही है आज।।

हे..राम ....

तुमने आज्ञाकारी बनकर, दुनिया को सिखलाया।

गुरु भक्ति और पिता भक्ति का मार्ग सभी को दिखलाया।

तुमने अपने कुल के बचनों की सदा है राखी लाज।

है पुरुषोत्तम...।[25]

कवि बाँके बिहारी द्विवेदी एक नवोदित साहित्यकार हैं। इनकी रचना धर्मिता में काफी निखार की गुंजाइश है। आप साहित्य साधना में लगातार प्रयासरत हैं। काव्य गोष्ठियों में आप पूर्ण मनोयोग से भाग लेकर अपनी रचनाओं का सस्वर पाठ करते हैं किन्तु यह साहित्यकार जनपद को कितना

कुछ दे पायेगा यह तो अभी समय के गर्भ में है।

रविकान्त 'चन्दन'

अतुकान्त, गीत एवं व्यंग्य विधाओं से अपने लेखन का प्रारम्भ करने वाले रविकान्त का जन्म 25 जून सन् 1979 ई0 को तहसील माधौगढ़ जनपद जालौन के ग्राम जगम्मनपुर में हुआ था। आपका उपनाम 'चन्दन' हैं। आपके पिता का नाम श्री शान्तेलाल तथा माता का नाम श्रीमती लीलावती है। आपके पिता एक अच्छे शिक्षक हैं तथा माता जी एक सद्गृहस्थ महिला हैं। माता–पिता के अच्छे संस्कार बालक रविकान्त पर भी पड़े। साहित्यकारों के सान्निध्य में आपको लेखन की प्रेरणा मिली।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टर मीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1994 एवं 1999 ई0 में श्री राजमाता वैश्नीजू देव इण्टर कालेज जगम्मनपुर से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् बी.ए. की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से सन् 2002 ई0 में उत्तीर्ण की। एम.ए. (हिन्दी साहित्य) की परीक्षा सन् 2004 ई0 में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली से उत्तीर्ण की।

आप विद्यार्थी जीवन की प्रमुख घटना जे.एन.यू. नई दिल्ली में चयनित हो जाने को मानते हैं।

आपको बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी द्वारा 2002 ई0 को सर्वश्रेष्ठ 'छात्र कवि' का पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

अभी तक आपका कोई रचना संग्रह प्रकाशित नहीं हुआ हैं। सर्जना, संकलन में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। माँ शीर्षक से रचित यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

हे माँ!

तू ही थी जिसने मुझे जीवन दिया

जननी! तेरे बड़े उपकार है मुझ पर

मुझे निहारने का कितना था चाव तुझमें

रखा तूने नौ मास अपने उदर में

× × ×

मैं तुझे क्या दे सका

मात्र चिर निरव कब्र

अथवा

अग्नि से धधकती चिता अवसान पर।

चाहता हूँ लौटा लूँ, अपने प्यार को

स्पर्श को, संसार को

किन्तु ये अंजुलि भर तेरे,

फूल लेकर क्या करूँगा?

हे अज्ञात देव!

लौटा सके तो, लौटा दे

मेरी माँ को!

मेरी माँ को!

मेरी माँ को।[26]

रविकान्त 'चन्दन' अभी नवोदित साहित्यकार हैं। इस क्षेत्र में ये एक जागरुक कलाकार हैं। साहित्य को इस नवोदित साहित्यकार से बहुत अशाएँ हैं।

1. 'बूँद से सागर तक', सम्पादक–रसूल अहमद 'सागर' बकाई, पृ0सं0 14
2. 'अन्तर के स्वर', रचयिता, गोपीचरण 'गिरि' प्रकाशक– भारत सावित्री प्रकाशन गाजियाबाद, पृ0सं0 79
3. 'अन्तर के स्वर', रचयिता, गोपीचरण 'गिरि' प्रकाशक– भारत सावित्री प्रकाशन गाजियाबाद, पृ0सं0 17
4. 'अन्तर के स्वर', रचयिता, गोपीचरण 'गिरि' प्रकाशक– भारत सावित्री प्रकाशन गाजियाबाद, पृ0सं0 19
5. 'अन्तर के स्वर', रचयिता, गोपीचरण 'गिरि' प्रकाशक– भारत सावित्री प्रकाशन गाजियाबाद, आवरण पृष्ठ से
6. 'अन्तर के स्वर', रचयिता, गोपीचरण 'गिरि' प्रकाशक– भारत सावित्री प्रकाशन गाजियाबाद, आवरण पृष्ठ से
7. 'बूँद से सागर तक' सम्पादक–रसूल अहमद 'सागर', बकाई पृ0सं0 83
8. 'बूँद से सागर तक' सम्पादक–रसूल अहमद 'सागर', बकाई पृ0सं0 83
9. 'दामाने जिन्दगी', सम्पादक रसूल अहमद 'सागर', प्रकाशक– प्रतिभा प्रकाशन, रामपुरा, जालौन पृ0सं0 22
10. 'संवेदनाओं के क्षितिज', रचयिता, रसूल अहमद 'सागर', बकाई, प्रकाशन–अमन प्रकाशन, महरौली नई दिल्ली पृ0सं0 62
11 'संवेदनाओं के क्षितिज' रचयिता, रसूल अहमद 'सागर', बकाई, प्रकाशन–अमन प्रकाशन, महरौली नई दिल्ली पृ0सं0 45
12. 'धूप सिरहाने खड़ी है', रचयिता– रसूल अहमद 'सागर' बकाई, पृ0सं0 59
13. 'संवेदनाओं के क्षितिज', रचयिता, रसूल अहमद 'सागर' बकाई, प्रकाशन– अमन प्रकाशन महरौली नई दिल्ली, पृ0सं0 21
14. 'अर्चना के गीत' गीतकार –रसूल अहमद 'सागर' बकाई, प्रकाशक– प्रतिभा प्रकाशन, रामपुरा जालौन आवरण पृष्ठ से
15. 'संवेदनाओं के क्षितिज', रचयिता रसूल अहमद 'सागर' बकाई, प्रकाशन–अमन

प्रकाशन महरौली नई दिल्ली, पृ0सं0 17

16. 'कुम्भ कर्ण', खण्डकाव्य कवयित्री, डॉ0 मिथिलेश कुमारी शुक्ला, प्रकाशक–प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद, पृं0सं0 15

17 'कुम्भ कर्ण' खण्डकाव्य कवयित्री, डॉ0 मिथिलेश कुमारी शुक्ला, प्रकाशक–प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0सं0 25

18. 'कुम्भ कर्ण' खण्डकाव्य कवयित्री, डॉ0 मिथिलेश कुमारी शुक्ला, प्रकाशक–प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ0सं0 42

19. 'कुम्भ कर्ण' खण्डकाव्य कवयित्री, डॉ0 मिथिलेश कुमारी शुक्ला, प्रकाशक–प्रयाग प्रकाशन, इलाहाबाद, भूमिका से

20. 'बूँद से सागर तक' सं0 रसूल अहमद 'सागर' बकाई, प्रकाशक– प्रतिभा प्रकाशन, रामपुरा (जालौन) पृ0सं0 41

21. बूँद से सागर तक सं0 रसूल अहमद 'सागर' बकाई, प्रकाशक– प्रतिभा प्रकाशन, रामपुरा (जालौन) पृ0सं0 41

22. बूँद से सागर तक सं0 रसूल अहमद 'सागर' बकाई, प्रकाशक– प्रतिभा प्रकाशन, रामपुरा (जालौन) पृ0सं0 58

23. सर्जना, 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 154

24. 'काव्य मञ्जूषा', 2003, सम्पादक–प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला', पृ0सं0 31,

25. कवि से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त रचना साक्षात्कार का दिनांक 20/02/04

26. सर्जना, 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 165

नवम अध्याय

जनपद जालौन के पत्रकार

मूलचन्द्र अग्रवाल
रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव 'प्रमत्त'
रामगोपाल शर्मा
रमेशचन्द्र गुप्त
राधेश्याम दाँतरे
नरेन्द्र मोहन
विनोद गौतम
बृजेन्द्र मयंक 'एडवोकेट'
अनिल शर्मा
बृजराज सिंह परिहार
श्रीधर सिंह चौहान
कृष्ण पाल सिंह
राजनारायण शुक्ल
दीपक कुमार अग्निहोत्री
सलीम अंसारी
अरविन्द कुमार द्विवेदी
शैलेन्द्र सिंह राजावत
राकेश द्विवेदी
अक्षय सक्सेना
संजीव श्रीवास्तव
राहुल दुबे

पत्रकारिता

आधुनिक युग में पत्रकारिता पूरे विश्व के लिये एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम समस्त संसार के देशों का क्रियाकलाप, घटनाएँ, दुर्घटनाओं की जानकारी पत्रकारिता के माध्यम से करते हैं। लोकतन्त्रीय व्यवस्था में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका हैं।

'आधुनिक लोकतन्त्रीय व्यवस्था में पत्रकारिता की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका है। यही कारण है कि इसे 'चतुर्थ सत्ता' कहा गया है। कार्यपालिका, न्यायपालिका, तथा विधायिका की भाँति पत्रकारिता लोकतन्त्र का न केवल आधार स्तम्भ है वरन् तीनों अंगों को नियंत्रित नियमित और संचालित करने वाला अंग है। इसी माध्यम से लोकतन्त्र की रक्षा भी सम्भव होती है।[1]

साहित्य की भाँति पत्रकारिता भी समाज की विभिन्न गतिविधियों, क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं का दर्पण है। समसामयिक घटनाचक्र के सन्दर्भ में शीघ्रता में लिखा गया लेख पत्रकारिता कहा जाता है।[2]

पत्रकारिता पर विभिन्न विद्वानों ने अपने मत प्रकट किये हैं–

'आधुनिक पत्रकारिता' नामक ग्रंथ में डॉ0 अर्जुन तिवारी ने इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटेनिका के आधार पर निम्न व्याख्या प्रस्तुत की है– ''पत्रकारिता के लिये अंग्रेजी में जर्नलिज्म शब्द व्यवहृत होता है जो 'जर्नल' से निकला जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण जर्नल में रहता था। जर्नल से बना जर्नलिज्म शब्द अपेक्षाकृत व्यापक है। समाचार पत्रों विविधकालिक पत्रिकाओं के सम्पादन, लेखन एवं तत्सम्बन्धी कार्यो को पत्रकारिता के अन्तर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन की

कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता हैं।[3]

डॉ0 बद्रीनाथ कपूर के अनुसार, ''पत्रकारिता पत्र–पत्रिकाओं के लिये समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाश, आदेश आदि देने का कार्य है।''[4]

हिन्दी शब्द सागर के अनुसार, ''पत्रकार का काम या व्यवसाय पत्रकारिता है।''[5]

''सी.जी. मूलर, सामयिक ज्ञान के व्यवसाय को पत्रकारिता मानते है। इस व्यवसाय में आवश्यक तथ्यों की प्राप्ति, सावधानी पूर्वक उनका मूल्यांकन तथा उचित प्रस्तुतीकरण होता है।''[6]

श्री रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर के अनुसार, ''ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना ही पत्रकला (पत्रकारिता) है।''[7]

विखेय स्टीड ने पत्रकारिता को कला, वृत्ति और जन सेवा माना है।[8]

पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत विस्तृत हो गया है। शहरों में ही नहीं अब ग्रामों में भी लोग देश–विदेश की जानकारी हेतु एवं अपने–अपने जनपद की खबरों का ज्ञान प्राप्त करने के लिये लोग अखबार पढ़ते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि सभी प्रकार के धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक क्रिया–कलापों को जन–जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।

पत्रकारिता के उद्‌देश्य

पत्रकारिता का उद्‌देश्य सूचना देना, शिक्षित करना एवं मनोरंजन करना है। अपनी बहुमुखी गतिविधियों के कारण यह समाज एवं देश के उद्‌देश्य के लिये निहित हैं। इसके उद्‌देश्य इस प्रकार है–

पत्रकारिता समस्त विश्व में होने वाली विभिन्न घटनाओं को त्वरित गति से जन–जन तक पहुँचाती है। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने तो सारे विश्व को एक सूत्र में पिरो दिया है। विश्व की समसामयिक घटनाओं की जानकारी जन हित के लिये उपादेय सिद्ध हो रही है।

पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण कार्य लोगों को शिक्षित करना है। महापुरुषों के जीवन वृत्त एवं विभिन्न दार्शनिकों के विचार लोगों को अच्छे जीवनयापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके साथ ही स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारियाँ विज्ञान कला के क्षेत्र में होने वाली विभिन्न ज्ञान की बातों को हम पत्रकारिता के माध्यम से प्राप्त करते हैं। पत्रकारिता मनोरंजन के क्षेत्र में महती भूमिका निभाता है। रेडियो, टेलीविजन के माध्यम से जनता का मनोरंजन करती है। इसके साथ ही समाचार पत्रों में राजनीति, खेलकूद आदि से सम्बन्धित कार्टून एवं हास्य–व्यंग्य के स्तम्भ जनता का भरपूर मनोरंजन करते है। हास्य व्यंग्य के लेख मनोरंजन के साथ–साथ प्रेरणा भी प्रदान करते हैं।

पत्रकारिता का महत्व

पत्रकारिता ने हमारे स्वतन्त्रता संग्राम में महती भूमिका निभायी है। इसके योगदान को हम भारतवासी भुला नहीं सकते हैं। पत्रकारिता के माध्यम से ही पूरा राष्ट्र एकजुट होकर स्वतन्त्रता संग्राम में तन–मन से जुड़ गया था। भारत को स्वतन्त्रता दिलाने में पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। स्वतन्त्रता के पश्चात् लोकतन्त्र की भूमिका निभायी। स्वतन्त्रता के पश्चात लोकतन्त्र की सुरक्षा का दायित्व भी इसी विधा को जाता है। स्वस्थ लोकतान्त्रिक परम्परा को स्थापित करना इसी के जिम्मे आया है। आवश्यकता है ऐसे पत्रकारों की जो ईमानदारी से अपने इस कार्य को करें ताकि देश का

सर्वांगीण विकास सम्भव हो सके।

हिन्दी पत्रकारिता के विकास में बुन्देलखण्ड जनपद का योगदान

भारत वर्ष का मध्य भाग बुन्देलखण्ड अपनी गौरवशाली परम्परा तथा इतिहास के लिये विशेष महत्व रखता। कहा जाता है कि महाराज छत्रसाल ने स्वतन्त्र बुन्देलखण्ड की स्थापना की थी और उसकी भौगोलिक तथा प्राकृतिक सीमाओं का निर्धारण निम्न प्रकार किया था–

इत जमुना उत नरमदा, इत चम्बल उत टौंस।

छत्रसाल सौ लरन की रही न काहू हौंस।।[9]

बुन्देलखण्ड की पत्रकारिता का इतिहास, देश के प्रथम राष्ट्रीय पत्र 'पयामे आजादी' के साथ सम्बन्ध है। इस पत्र के प्रकाशन की योजना प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत बिठूर के पेशवा नाना साहब धू–धू पन्त के सान्निध्य में उनके मंत्री अजीमुल्ला ने कानपुर में बनायी थी किन्तु युद्धकाल की राजनीतिक स्थिरता और अव्यवस्था को ध्यान में रखकर इसका मुद्रण दिल्ली और झाँसी से होता था। हिन्दी उर्दू और मराठी में प्रकाशित इस पत्र का प्रथम प्रकाशन फरवरी सन् 1857 में सम्राट बहादुरशाह के पौत्र मिर्जा बेदारबख्त द्वारा किया गया था। हिन्दी, उर्दू तथा मराठी में एक साथ प्रकाशित स्वतन्त्रता संग्राम का यह मुख–पत्र अपने एक–एक शब्द में क्रान्तिकारी मसाल जलाने में सक्षम था।[10]

झाँसी से मराठी में प्रकाशित इस पत्र की अपीलों और घोषणाओं पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि यह देश का ऐसा प्रथम राष्ट्रीय पत्र था जिसने देश के भावी पत्रकारों का मार्ग प्रशस्त किया। सच बात तो यह है कि

इस पत्र ने ही हिन्दी पत्रकारिता की आधार शिला रखी। 'पयामे आजादी' के अंक अब अप्राप्य है। इसके कुछ अंक ब्रिटिश संग्रहालय में संग्रहीत हैं, ऐसी सम्भावना की जाती है। 'पयामे आजादी' संसार का एक मात्र ऐसा पत्र है जिसके पाठकों तक को इतनी क्रूर निर्दयी और हैवानी सजा मिली है जिसकी मिसाल अन्यत्र कहीं नहीं मिलती। स्वतन्त्रता की पहली लड़ाई में भारतीयों की पराजय हुई और दिल्ली पर सर विलियम हावर्ड ने कब्जा कर लिया। इस कब्जे के साथ ही इस पत्र के सम्पादक बेदारवक्त को गिरफ्तार कर लिया, उनके शरीर पर सुअर की चर्बी पोतकर उन्हें फाँसी दे दी गयी।[11] सर हेनरी कादिल ने अपनी पुस्तक "Indian home Memoier's में लिखा है कि ''अंग्रेजों ने उन सभी लोगों को लटका दिया जिनके घरों में 'पयामे आजादी' का कोई अंक मिला।[12]

स्वतन्त्रता से पूर्व के बुन्देलखण्ड के कुछ प्रमुख पत्र एव पत्रकार–

सन् 1920 ई0 के आस–पास बुन्देलखण्ड क्षेत्र के प्रमुख पत्र इस प्रकार है–

'''स्वाधीन' (बालाप्रसाद शर्मा), 'लोकपथ' (सत्यदेव वर्मा), मातृभूमि (पं0 रघुनाथ विनायक धुलेकर), 'सनाढ़य हितकारी' (पं0 श्रवण कुमार मिश्र), 'प्रजामित्र' (द्वारिकेश मिश्र), 'जयाजी प्रताप' (सिंधिया महाराज), 'देशी राज्य तथा जनक्रांति' (लखपत राम शर्मा), 'चिनगारी', 'क्रान्तिकारी' (कृष्णचन्द्र शर्मा), 'हिन्दी केशरी' (मोहम्मद शेर खाँ), 'झाँसी न्यूज', 'संयुक्त मोर्चा' तथा 'दैनिक प्रकाश' (मणिराम कंचन)[13]

उर्दू में प्रकाशित कुछ पत्र–

'अजीज हिन्दु' (मो0 रफीक साहब), 'नया कदम' (बहशत झाँसवी), 'तलाश' (एम.ए. रिजवी)[14]

जनपद जालौन की पत्रकारिता–

हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास जनपद जालौन के पत्रों और पत्रकारों की चर्चा किये बिना अधूरा ही रहेगा, क्योंकि इस जनपद ने न केवल ऐसे पत्रकार दिये जिन्होंने जनपद में रहकर पत्रकारिता का पोषण किया अपितु ऐसे भी अनेक पत्रकार दिये जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर के पत्रों का प्रकाशन करके अथवा श्रमजीवी पत्रकार के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर पत्रकारिता की अग्र पंक्ति में स्थान प्राप्त किया। इनमें 'विश्वमित्र' का तथा 'एडवांस' के संस्थापक बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल (कोटरा) का नाम सर्वोपरि है जिन्होंने 1911 ई0 में कलकत्ता से दैनिक 'विश्वमित्र' का प्रकाशन किया था।[15]

जहाँ तक जनपद के अन्दर रहकर पत्रकारिता की सेवा का प्रश्न है इसका शुभारम्भ सन् 1912 ई0 से होता है। संपादकाचार्य अम्बिका प्रसाद बाजपेयी द्वारा लिखित समाचार पत्रों के इतिहास के अनुसार 1912 ई0 में देश में जो तीन मासिक पत्र निकले उनमें एक कोंच से प्रकाशित हुआ नाम था ''सत्यप्रकाश''। इसका आकार 8 × 6 इंच का था।[16]

1913 ई0 में कोंच से साप्ताहिक 'भास्कर' का प्रकाशन पं0 कृष्णगोपाल शर्मा (चौबे जी) ने किया। यह पत्र केवल दो वर्ष चला। इसी बीच सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी श्री बृजबिहारी मेहरोत्रा जो बाद में सांसद एवं संविधान सभा के सदस्य बने, जनपद में रहे। उन्होंने 1913 ई0 में 'देहाती' का प्रकाशन साप्ताहिक के रूप में प्रारम्भ किया। बाद में पं0 बेनीमाधव तिवारी के सम्पादन

में 1924 तक इसके निकलने की सूचना मिलती है। इसी वर्ष जेल में एक मुखबिर की हत्या करने पर क्रान्तिकारी गोपीनाथ साहा को फाँसी हुई। इस घटना पर देहाती ने एक अग्र लेख लिखा कि जिस जज ने साहा को फाँसी दी, ,उसकी बुद्धि को फाँसी लगे। इस पर देहाती का प्रकाशन बन्द हुआ, मुकद्मा चला तथा संपादक को तीन वर्ष की सजा भुगतनी पड़ी।[17]

1936 ई0 में कोंच से गयाप्रसाद गुप्त रसाल ने साप्ताहिक 'वीरेन्द्र' जो 1963 ई0 में लखनऊ स्थानान्तरित हो गया और अभी भी 69 वें वर्ष में सफलता पूर्वक प्रकाशित हो रहा है।[18] सन् 1937 ई0 पं0 गोविन्द नारायण तिवारी उरई के साप्ताहिक 'दर्शक' का प्रकाशन किया। बाद में इसका प्रकाशन भी गया प्रसाद रसाल ने अपने हाथों में लेकर कुछ वर्ष तक कोंच से निकाला।[19]

आजादी की घोषणा के तुरन्त बाद सन् 1947 ई0 में श्री मन्नीलाल श्रीवास्तव के सम्पादन में साप्ताहिक 'दिग्विजय' का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण नयी कड़ी थी।[20] सन् 1949 ई0 में पं0 बेनीमाधव तिवारी ने साप्ताहिक 'हलंचल' प्रकाशित किया जो मृत्युपर्यन्त 1952 तक चला।[21] 1958 ई0 में श्री शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' तथा विष्णुदत्त शर्मा द्वारा साप्ताहिक 'बुन्देला'[22] प्रारम्भ किया जो अब तक बुन्देला जी द्वारा नियमित प्रकाशित हो रहा है।

1960 ई0 के बाद साप्ताहिक पत्रों का अवाध सिलसिला शुरु हो जाता है।[23] जिनमे प्रमुख पत्र इस प्रकार है– 'कौटिल्य' (राधेश्याम दाँतरे), 'निशाचर' (कृष्ण सक्सेना तथा चन्द्रमोहन जौहरी), 'मनमौजी' (महावीर श्रीवास्तव / बाबूराम पाण्डेय), 'आलोचक' (बालमुकुन्द शास्त्री), 'दीपक' (राधेश्याम दाँतरे), 'उरई टाइम्स' (धीरजमन सिंह), 'उरई झलक' (शिवनन्दन गुप्त),

'अग्निचरण' (कृष्ण बल्लभ भारती), 'दुष्ट दमन' (एस.पी. दुबे), 'धड़ल्लेदार' (शारदा बेलवी), 'माहिल' (राधाकान्त शुक्ल), 'बुन्देलाम्बर' (अथाह), 'राष्ट्र का ठोस कदम' (गजेन्द्र सिंह) 'मेगाटन' (धीरजमन सिंह) 'दिनान्त' (राजेन्द्र कुलश्रेष्ठ), 'एलार्म' (के.पी.शास्त्री), कोंच से प्रकाशित – 'कोंच टाइम्स', 'चौधरी दर्शन', 'रिछारिया दर्शन', 'तातवाड़ मेल', जालौन से प्रकाशित–'बालचर्चा', 'जालौन टाइम्स', कालपी से प्रकाशित– 'व्यासभूमि' प्रमुख है। इनमें चुटीली भाषा के लिये 'धड़ल्लेदार' एक अविस्मरणीय पत्र रहा है।[24]

जनपद जालौन के दैनिक पत्र–

जिले में दैनिक पत्रों की परम्परा 1960 ई0 में पं0 यज्ञदत्त त्रिपाठी द्वारा सम्पादित 'दैनिक कृष्णा' से प्रारम्भ होती है किन्तु यह शुरुआत अल्पजीवी हुई। फिर 1962 ई0 में श्री जगत नारायण त्रिपाठी ने 'दैनिक बहेलिया' को दैनिक स्वरूप दिया। कुछ दिनों 'जै जाग मुक्ति सन्देश'– भी दैनिक छपा।[25]

नियमित दैनिक की सशक्त परम्परा का श्री गणेश 1971 ई0 में दैनिक कर्मयुग प्रकाश के प्रधान सम्पादक श्री रमेश चन्द्र गुप्त ने किया। इसके कार्यकारी सम्पादक थे श्री शम्भूदयाल शशांक। बाद में श्री शशांक जी ने पं0 बलदेव प्रसाद पालीवाल द्वारा स्थापित दैनिक 'जन उत्साह' का भी सम्पादन किया। इस बीच 'दिन वीर' (सम्पादक श्री आनन्दस्वरूप पिपरैया), 'एलार्म' (सम्पादक श्री के.पी. शास्त्री), 'अग्निचरण' (सम्पादक श्री कृष्ण बल्लभ भारती), दैनिक परम्परा में जुड़ गये। 1988 के मध्य दैनिक 'लोक सारथी' (सम्पादक श्री प्रदीप माहेश्वरी) ने केवल दैनिक के रूप में अपनी यात्रा शुरु की। मार्च 1989 में दैनिक 'सोच समझ' (प्रधान सम्पादक श्री सुरेश जायसवाल) भी प्रारम्भ हुआ था। इसे 1994 ई0 में प्रदीप निगोतिया ने नये तेवर के साथ

प्रकाशित किया। कुछ दिन तक चन्द्र गुप्त ने दैनिक 'दीवान सांध्य' का संस्करण के रूप में प्रकाशन किया।[26]

जनपद जालौन के कुछ प्रमुख पत्रकार इस प्रकार है–

मूलचन्द्र अग्रवाल

हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में स्व. मूलचन्द्र अग्रवाल अपना महत्वपूर्ण स्थान रखते थे। आपका जन्म जालौन जनपद के उरई तहसील के कोटरा नामक गाँव में सन् 1893[27] ई0 को हुआ था।

आपका एक पुत्र कृष्ण चन्द्र अग्रवाल है। पिता की असमय मृत्यु के कारण उनकी माता जी ने शिक्षा–दीक्षा दिलायी। आपकी शिक्षा जनपद के मुख्यालय उरई में हुई। इसके पश्चात् की शिक्षा आपने मेरठ से प्राप्त की। अध्ययन समाप्त करने के पश्चात आप कलकत्ता पहुँचे। आप विलक्षण प्रतिभा के धनी पत्रकार थे। आपने अपने उद्यम से धन भी खूब कमाया और दान भी खूब दिया। विद्यालय, महाविद्यालयों को भूमि दान में देकर शिक्षा की ज्योति जलाने में अग्रणी भूमिका निभायी। आपने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी भाग लिया जिसके कारण आपको अनेक बार जेल जाना पड़ा। आपने सन् 1915[28] में 'विश्वमित्र' नाम का दैनिक पत्र निकलवाया। इस पत्र के आप स्वामी भी थे। इसके अतिरिक्त आपने अन्य अनेक पत्रों का सम्पादन एवं प्रकाशन किया। यथा– 'सान्ध्य दैनिक', 'साम्यवादी', 'अंग्रेजी पत्र 'लिवर्टी' और 'एडवांस' बंगला दैनिक 'मातृभूमि', अंग्रेजी साप्ताहिक 'इलेस्ट्रेटेड इण्डिया' जैसे अनेक पत्रों तथा पत्रिकाओं का प्रकाशन तथा सम्पादन किया।[29]

दैनिक विश्वमित्र के प्रकाशन से हिन्दी–पत्रकारिता जगत में क्रान्ति का भी श्री गणेश हुआ। इससे पूर्व के दैनिक पत्रों में दैनिकता तो रहती थी।

पर उनमें दैनिकत्व का अभाव था। 'विशाल भारत' नामक पत्र में सन् 1931 में प्रसिद्ध सम्पादकाचार्य अम्बिकाप्रसाद बाजपेयी ने इस स्थिति को इस प्रकार व्यक्त किया– ''उन दिनों आजकल की तरह तारों का सुभीता नही था। इसलिये समाचार पत्रों से ही लेकर समाचार छापने पड़ते थे। विदेशी समाचार तो पुराने हो जाते थे और देशी भी कुछ नये नहीं रहते थे। इसलिये पुराने समाचारों से तारीख हटा देनी पड़ती थी। दैनिक 'विश्वमित्र' ने हिन्दी समाचार पत्रों में इस दृष्टि से क्रान्ति की और अपना विशेष योगदान अंकित किया।[30]

पं0 कमलापति त्रिपाठी ने 'पत्र और पत्रकार' पुस्तक में इस तथ्य को इस प्रकार कहा– ''यह स्थिति तब बदली जब 'विश्वमित्र' का प्रकाशन श्री मूलचन्द्र अग्रवाल के प्रयास से होने लगा....। उन्होंने स्वतन्त्र रूप से तारों की सेवा लेना प्रारम्भ किया, पत्र में नवीनता और मौलिकता भरी, वाणिज्य तथा सामाजिक और राजनीतिक प्रश्नों पर स्वतन्त्र रूप से लेखादि प्रकाशित करना प्रारम्भ किया।[31]

'विश्वमित्र' का 'रमता योगी' कालम श्री मूलचन्द्र जी ही लिखते थे। उन्होंने इस कालम के विषय में लिखा है– ''विश्वमित्र' प्रकाशित करने पर 'रमता योगी' शीर्षक से मैने प्रतिदिन एक कालम सामग्री देकर दो प्रतिष्ठित पत्रों के रहते हुए 'विश्वमित्र' के लिये पाठक प्राप्त कर लिये। विश्वमित्र को उल्लेखनीय बनाने के लिये कभी–कभी अंग्रेजी में भी अग्रलेख प्रकाशित किये जाते थे, जिससे अधिकारियों का ध्यान तुरन्त आकृष्ट हो।''[32]

श्री मूलचन्द्र अग्रवाल जी हिन्दी पत्रकारिता में सुधार एवं विकसित करने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहे। आप इस विषय पर गहरा चिन्तन करते

थे। आपने सम्पादकीय लिखकर दैनिक पत्र को नया आयाम दिया। इस महात्यागी, दानी एवं पत्रकार का देहान्त 31 अक्टूबर सन् 1956[33] को हो गया। इस महान पत्रकार को पत्रकार जगत हमेशा याद करता रहेगा।

रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव 'प्रमत्त'

रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव प्रमत्त, बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न एक ऐसा व्यक्तित्व था जिसने पत्रकारिता, खेलकूद तथा हिन्दी साहित्य में उल्लेखनीय कार्य किया और सम्मान के अधिकारी बने।

रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव का जन्म 13 दिसम्बर सन् 1913[34] ई0 में जनपद जालौन के मुख्यालय उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री शिवनारायण श्रीवास्तव था। बचपन से ही आपको मातृ–पितृ वियोग की पीड़ा सहन करनी पड़ी। आपका विवाह झाँसी निवासी श्री मोहनस्वरूप श्रीवास्तव की सुपुत्री स्व0 श्रीमती शिवकुमारी के साथ हुआ। आपकी आठ सन्तानों में छैः पुत्र एवं दो पुत्रियाँ है। पुत्रों में कृष्णकुमार, प्रबोध ा, राजीव, संजय, अजय एवं विनय है तथा पुत्रियों में श्रीमती अंजना एवं श्रीमती रेनू हैं।

आपकी शिक्षा बी.ए. एवं एल.एल.बी. तक है। आपने हिन्दी साहित्य में अनेक रचनाओं का सृजन कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा एवं प्रखर बुद्धि का परिचय दे दिया था। किन्तु प्रसिद्धि आपको पत्रकारिता में ही मिली।

वयोवृद्ध पत्रकार श्री रामेश्वर दयाल से आज सभी परिचित है किन्तु कविवर प्रमत्त जी को कम लोग ही जानते हैं। सन् 1950 ई0 में दिल्ली से प्रकाशित साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' के मुख्य पृष्ठ पर रेखांकित 'मीरा' के प्रणेता

स्व0 रामेश्वर दयाल लम्बरदार 'प्रमत्त' जी ही थे।[35]

'प्रमत्त' जी ने गाँधी जी तथा गाँधी दर्शन को ही अपना जीवन दर्शन बनाने का आजीवन प्रयास किया। राष्ट्रीय भावना और गाँधीवाद इनके सृजन का एक प्रमुख अंग है। यद्यपि वे श्रृंगार, करुण, प्रणय, पीर प्रकृति चित्रण और पौराणिक सांस्कृतिक रूप भी उभारने में सफल हुए हैं।''[36] आपका देहान्त 3 जुलाई 1999 ई0 को हो गया।

पत्रकारिता हो या साहित्य का क्षेत्र हो आपने प्रत्येक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है लेकिन जनपद में आपने वयोवृद्ध पत्रकार के रूप में ही ख्याति अर्जित की है। पत्रकारिता के योगदान के लिये श्री रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव 'प्रमत्त' सदैव याद किये जाते रहेंगे।

रामगोपाल शर्मा

निर्भीक पत्रकारों में अग्रगण्य श्री रामगोपाल जी शर्मा बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। आपका जन्म 4 मार्च सन् 1906[37] ई0 को हुआ था। सन् 1931 ई0 में आप इम्पीरियल पुलिस की परीक्षा में पहले ही प्रयास में चयनित हुए।[38]

आप जिला पत्रकार संघ जालौन के संस्थापक अध्यक्ष थे। आप ईमानदार निर्भीक, स्वभाव से हँसमुख एवं स्पष्टवादी थे। आप 1982 ई0 में जिला अधिवक्ता संघ के निर्विरोध अध्यक्ष तथा डी.वी.सी. उरई के विधि परामर्शदाता रहे। आपके पुत्र विजय तिवारी इलाहाबाद उच्च न्यायालय में अधिवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

अधिवक्ताओं द्वारा गठित 'आउल कलब' के आप प्रमुख सदस्य थे।[39] आप निर्धनों एवं असहायों को मुफ्त होम्योपैथी दवा बाँटते थे। आपकी स्मृति

में आज भी दवा बाँटी जा रही है। आपका निधन 16 सितम्बर सन् 1997 ई0 को इलाहाबाद में हो गया।

आपका नाम निष्पक्ष एवं निर्भीक पत्रकारों की श्रेणी में विशेष उल्लेखनीय है। आपको पत्रकारिता जगत एवं जनपद वासी भुला नहीं सकेंगे।

रमेश चन्द्र गुप्त

रमेश चन्द्र गुप्त जनपद जालौन के ऐसे पत्रकार थे जिन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से जालौन जनपद ही नहीं अपितु पूरे बुन्देलखण्ड की स्मरणीय सेवा की।

रमेशचन्द्र गुप्त का जन्म 22 सितम्बर सन् 1932[40] ई0 को कालपी में हुआ था। रमेशचन्द्र गुप्त जागरण संस्थापक स्व0 चन्द्रपूर्ण एवं स्व0 गुरुदेव गुप्त के भतीजे थे। आपके पिता श्री हरिश्चन्द्र गुप्त उरई नगर में व्यापार करने लगे थे। आपने उच्च शिक्षा प्राप्ति के उपरान्त व्यापार को अपनाया किन्तु इनका मन व्यापार में नहीं लगा। पत्रकारिता में इनकी गहरी रुचि होने के कारण इनका झुकाव पत्र प्रकाशन की तरफ हो गया। उरई से स्तरीय दैनिक प्रकाशन न होना इन्हें सदैव खटकता था। अतः इन्होंने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति से आर्थिक परिस्थितियाँ विपरीत होने पर भी 4 जुलाई 1971[41] को 'दैनिक कर्मयुग' का प्रकाशन उरई से शुरु किया। अपनी मेहनत और लगन से इस पत्र ने जनपद में लोकप्रियता प्राप्त की। सम्प्रति यह पत्र अच्छा व्यवसाय कर रहा है। रमेश जी ने दैनिक 'कर्मयुग प्रकाश' का एक संस्करण बाँदा से 24 सितम्बर सन् 1977 को प्रारम्भ किया। उनके द्वारा स्थापित अन्य पत्रों में साप्ताहिक 'अगस्त' और दैनिक दीवान, प्रमुख हैं। यह चमकता हुआ सितारा 4 मार्च 1997 ई0 को अचानक विलुप्त हो गया। इनके निधन से

पत्रकारिता को अपूरणीय क्षति हुई। इनके बाद इनके पुत्र संजय गुप्त एवं दामाद हरीश गुप्त ने पत्र की गरिमा को बरकरार रखा इसके उत्तरोत्तर विकास में सतत् प्रयत्नशील हैं।

जनपद में ऐसी अनेक हस्तियाँ हैं जिन्होंने पत्रकारिता एवं साहित्य में अविस्मरणीय योगदान दिया है। इस मरणधर्मी शरीर से जितना लोकहित हो सका उन्होंने किया। आगे की गाड़ी खींचना उनके उत्तराधिकारियों के लिये परम कर्त्तव्य बन जाता है। सुयोग्य उत्तराधिकारी इस कार्य को अपने परिश्रम एवं दृढ़ निश्चय से पूर्ण करते हैं। कहा भी गया है–

जौन ठौर से खींच खें, गाड़ी लाये बाप।

तासे कछु आँगू बढ़ै, तभई पुत्र परताप।।[42]

यह उक्ति संजय गुप्त एवं हरीश गुप्त पर पूरी तरह से लागू होती है। निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ये रमेश चन्द्र गुप्त एवं दैनिक कर्मयुग प्रकाश के सुयोग्य उत्तराधिकारी हैं।

राधेश्याम दाँतरे

राधेश्याम दाँतरे पत्रकार जगत में एक ऐसा नाम है, जिन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक उत्पीड़न एवं भ्रष्ट राजनीति का जमकर विरोध किया। आप पत्रकारिता के लिये पूरी तरह से समर्पित पत्रकार हैं। आप कई बार जेल गये– पुलिस विभाग से सीधे टकराये किन्तु अपने सिद्धान्तों के साथ कभी समझौता नहीं किया।

राधेश्याम दाँतरे का जन्म 10 अक्टूबर सन् 1933[43] ई0 में कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री प्रेमनारायण दाँतरे तथा माता का नाम श्रीमती किशोरी देवी दाँतरे हैं। आपका विवाह श्री गणेशराम मोनस की सुपुत्री

श्रीमती कुसुम लता दाँतरे के साथ हुआ। आपकी सात सन्तानों में एक पुत्र एवं छैः पुत्रियाँ हैं। पुत्रियों में सर्व श्रीमती पुष्पा बुधौलिया, निर्पम शर्मा, ज्योति पुरोहित, तृप्ति पाण्डेय,. कुमुद वैद्य एवं पूनम शर्मा है। आपका इकलौता पुत्र पवन दाँतरे है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1946 एवं 1952 ई0 में एस.आर.पी. इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा आपने सन् 1958 ई0 में शिवपुरी (म0प्र0) से उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् 1979 ई0 में विधि स्नातक की परीक्षा बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से उत्तीर्ण की।

आपके विद्यार्थी जीवन की घटना में आपने साक्षात्कार के समय बताया ''जहाँ में एल.एल.बी. कर रहा था, उसी समय इन्दिरा गाँधी द्वारा आपातकाल की घोषणा पूरे देश में कर दी गयी। इसके विरोध में मैं जेल गया।[44]

आपने कविता, गीत, कहानी एवं लेख आदि विधाओं से साहित्य को समृद्ध किया। आपकी प्रकाशित रचनाओं में 'रघुनाथ सिंह काण्ड' लेख सत्य घटना पर आधारित था। धारावाहिक प्रकाशन में 'वसुन्धरा' एवं 'प्याज की परतें (उपन्यास) हैं।

आप जनपद के अच्छे पत्रकार हैं। आपने विभिन्न पत्रों के माध्यम से लेख आदि लिखकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

आपने दैनिक 'साप्ताहिक कोंच' का सम्पादन सन् 1955 ई0 से प्रारम्भ किया था किन्तु अर्थाभाव के कारण इसका प्रकाशन बन्द हो गया। साप्ताहिक 'कौटिल्य' जिसके आप सम्पादक, एवं प्रकाशक दोनों थे का सन् 1960–1970 ई0 तक प्रकाशन किया। आप 20 वर्ष तक दैनिक 'जागरण'

कानपुर के जिला संवाददाता रहे। सन् 1978 से 1983 ई0 तक आपने दैनिक 'जनसत्ता' नई दिल्ली के संवाददाता के पद पर कार्य किया। 'नवभारत टाइम्स' लखनऊ में 1984 से 1990 ई0 तक संवाददाता के रूप में कार्य किया इसके अतिरिक्त आप उ0प्र0 जर्नलिस्ट एसोसियेशन (उपजा) के जिला संस्थापक रहे। सम्प्रति आप 'क्रांति कार्य कारिणी' के सदस्य एवं ग्वालियर से प्रकाशित होने वाले पत्र दैनिक 'नवभारत' में हमीरपुर व जालौन के संवाददाता हैं।

पत्रकार जीवन की घटना में आप से साक्षात्कार के माध्यम से मिली जानकारी के अनुसार–"बी.बी.सी. लन्दन में पत्रकारों के उत्पीड़न के विरोध में मुझे पुलिस का उत्पीड़न सहन करना पड़ा। सन् 1987–88 ई0 में प्रेस काउन्सिल ऑफ इण्डिया ने मेरे प्रकरण को बिना शिकायत किये हुए स्वतः सुनवायी की थी। देश के सभी अखबारों ने इस घटना को प्रकाशित किया था। 'नवभारत' नवजीवन तथा अंग्रेजी पत्रों – 'इण्डियन एक्सप्रेस', 'द हिन्दू', 'मद्रास' 'हिन्द', 'दिल्ली' तथा सम्पादकों ने संपादकीय लेख लिखे थे। आकाशवाणी और बी.बी.सी. से समाचार प्रसारित हुए थे। विधान सभा, विधान परिषद की कार्यवाही का सभी पत्र–पत्रिकाओं ने बहिष्कार किया था। उस समय उ0प्र0 के मुख्यमंत्री वीरबहादुर सिंह थे। मुलायम सिंह, कलराज मिश्र आदि ने मेरे पक्ष में पत्र लिखे थे। विधान सभा और विधान परिषद की कार्यवाही ठप्प रही थी। उस समय के डी0एम0 श्री ए0के0 जोशी और एस0एस0पी0 श्री बी0एल0यादव का यहाँ से तबादला कर दिया गया था। गौरक्षा आन्दोलन और रामलीला काण्ड में भी मैं जेल जा चुका हूँ। कोंच बन्द 8 दिन रहा था।"[45]

आपको पत्रकारिता के क्षेत्र में कई बार सम्मान भी प्राप्त हो चुका है।

नरेन्द्र मोहन

नरेन्द्र मोहन जनपद के महान पत्रकार, साहित्यकार एवं व्यवसायी के रूप में जाने जाते हैं। इन्होंने अपनी प्रतिभा से केवल जनपद का ही नहीं अपितु पूरे देश का नाम ऊँचा किया है। विदेशों में भी आपने देश का परचम लहराया है। आपका जन्म 10 अक्टूबर सन् 1934 ई0 को कालपी जिला जालौन में हुआ था।[46]

'आपके पिता का नाम बाबू पूर्णचन्द्र जी था। मोहनबाबू के पूर्वज राजस्थान से तत्कालीन संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश) आये और कानपुर के बिठूर में बसे। वहीं नाना साहब पेशवा का इनके पूर्वजों को संरक्षण मिला और 1857 के स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के कारण परिवार के सभी पुरुषों को फाँसी की सजा दे दी गयी। शहीदों के इस परिवार में मोहन बाबू का जन्म हुआ परिस्थितियों से जूझने का सबक इन्हें विरासत में मिला।'[47]

आपने एम.काम. तक शिक्षा प्राप्त की और प्रारम्भ से ही अपने पिता के सान्निध्य में पत्रकारिता और व्यवसाय का गहन अध्ययन किया। पत्रकारिता की शिक्षा के लिये वे अमेरिका भी गये और इंटरनेशनल प्रेस इंस्टीट्यूट से भी उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया।[48]

आपने अपनी मेहनत एवं लगन से ही यह मुकाम हासिल किया है। आप दैनिक जागरण के सम्पादक एवं सांसद रह चुके हैं। आप अपने जीवन में हमेशा संघर्षरत् रहे। वे विकास की सतत् प्रक्रिया पर विश्वास रखने वाले थे। यही कारण है कि आप आखिरी समय तक आपने कर्त्तव्य पथ पर अडिग

रहे। आज पत्रकारिता एवं साहित्यकारिता में आपने जो स्थान बनाया है वह इतने कम समय में बहुत ही कम लोग बना पाते है। गीता के श्लोक 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा' फलेषु कदाचन्, को सार्थक करते हुए आपका 20 सितम्बर 2002[49] को देहावसान हो गया।

नरेन्द्र मोहन देश की एक महान हस्ती थे। इनके निधन पर **प्रधानमंत्री अटलबिहारी बाजपेयी ने श्रद्धांजलि देते हुए कहा**– "हिन्दी पत्रकारिता के विकास में नरेन्द्र मोहन ने गहरा प्रभाव छोड़ा और वे आदर्शो, मुद्दों और देश प्रेम से ओत–प्रोत पत्रकारिता के पहरुवे बने रहे। सामान्यतया हर क्षेत्र विशेष रूप से व्यवसाय के क्षेत्र में उनकी सोच और कार्य में गहन संवेदनशीलता थी और वे अपने समय की जटिलताओं को अच्छी तरह समझते थे।[50]

मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ0 मुरली मनोहर जोशी के शब्दों में – "नरेन्द्र मोहन पत्रकार जगत के स्तम्भ थे। उनके निधन से राष्ट्र ने एक योग्य सांसद, निर्भीक पत्रकार खो दिया है। इसकी क्षतिपूर्ति असम्भव है।"[51]

उत्तरांचल के मुख्यमंत्री नारायण दत्त तिवारी के शब्दों में– "उनके निधन के समाचार से मैं स्तब्ध रह गया। उनके सुझावों से अनेक समस्याओं के निराकरण में सहयोग मिलता रहा।"[52]

मुलायम सिंह यादव अध्यक्ष समाजवादी पार्टी के शब्दों में – "नरेन्द्र मोहन ने अपने अखबार के माध्यम से देश के भाषाई समाचार पत्रों को नयी दिशा देने का प्रयास किया, वह बेमिसाल हैं।"[53]

कवि के सुपुत्र संजय गुप्त के शब्दो में उनकी पहली पुण्यतिथि के अवसर पर– "महान पत्रकार संवेदनशील कवि, विद्वान, चिन्तक तथा अपने पिता स्व0 श्री नरेन्द्र मोहन जी की आज उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर

मैं श्रद्धा पूर्वक नमन करता हूँ। उन्होंने न केवल सही मार्ग दिखाया बल्कि कदम–कदम पर मेरा साहस बढ़ाया। × × × मेरे जीवन के प्रेरणा स्रोत वही हैं।[54]

आपने लेखन की शुरुआत कहानियों, यात्रा, संस्मरणों और सामयिक विषयों पर टिप्पणियों के साथ प्रारम्भ किया। आपने हजारों लेख व कविताएँ लिखीं। आपकी प्रकाशित पुस्तकों में– 'भारतीय संस्कृति', 'धर्म और साम्प्रदायिकता', 'आज की राजनीति और भ्रष्टाचार', 'हिन्दुत्व', 'प्रतिरक्षा और सामरिक नीति', (गद्य) 'अमृत की ओर', 'तुम्हारा संगीत', 'दासत्व से उबारो', 'खोलो द्वार' (पद्य) और 'सत्य की धूप' आदि हैं।

एक बार आपको 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के मंच से सम्बोधन का अवसर भी प्राप्त हुआ। वे प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष रहे, इसके अतिरिक्त सामाजिक, राजनीतिक संस्थाओं से सम्बन्धित रहे। सन् 1996 ई0 में राज्य सभा के सदस्य भी चुने गये।

आप पत्रकार के साथ ही एक अच्छे साहित्यकार भी हैं। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

कोई अवसाद नहीं/कोई विवाद नहीं

न कोई अश्रुपात/न है कम्पित गात

पवन पुकार रहा/दूर खड़ा द्वार से

हंस भाव जाग गया/पीत पर्ण उड़ चला

उड़ान ही नियति है/ उसमें ही गति है

मृत्यु ही जीवन है/ यही सत्य मति है।[55]

कवि दीन–हीन होकर अपने आराध्य से प्रार्थना करता है और अपने

अश्रुमोतियों को समर्पित करता हुआ कह उठता है–

और तो कुछ है नहीं

इन अश्रुओं को ही करो स्वीकार

तोड़ दो सारे बन्धन

कर दो मुझे मुक्त

नहीं मुझे स्वीकार।[56]

कवि एवं पत्रकार नरेन्द्र मोहन जी की जीवन गाथा 'कालपी से संयुक्त राष्ट्र संघ' तक की यात्रा है। यह यात्रा साधारण यात्रा ही नहीं वरन् असंभव यात्रा है। इस यात्रा को विरले, लाखों में एकाध ही प्राप्त कर पाते हैं। इन्होंने जनपद की मिट्टी को अपने गौरव एवं गरिमा से पवित्र बना दिया है। धन्य है ऐसी मिट्टी जिसने नरेन्द्र मोहन जैसे व्यक्ति को जन्म दिया। ऐसी मिट्टी को मेरा नमन और इस मिट्टी मे जन्म लेने वाले बाबू नरेन्द्र मोहन जी को नमन–शत–शत नमन।

विनोद गौतम
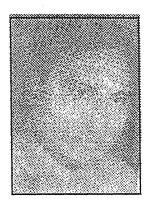
विनोद गौतम का जन्म 25 नवम्बर सन् 1949 ई0 को झाँसी में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री गनेश प्रसाद शर्मा व माता स्व0 श्रीमती शांति देवी शर्मा थी। आपका विवाह बँगरा (जालौन) निवासी श्री मनमोहन लाल शर्मा की सुपुत्री श्रीमती शशि शर्मा के साथ हुआ। आपकी चार सन्तानों में दो पुत्र आशीष शर्मा व निशीथ शर्मा है तथा पुत्रियाँ कु0 सौम्या शर्मा व कु0 नमिता शर्मा है।

आपकी शिक्षा एम.ए. (हिन्दी) एवं विधि स्नातक तक है। व्यावसायिक

पत्रकारिता से सम्बन्ध होने के कारण आप जिला पत्रकार कल्याण समिति साहित्यिक संस्था 'पहचान' के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

आप विद्यार्थी जीवन में विद्यालय में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं बाल सभा आदि में प्रस्तुतियाँ देने पर शिक्षकों द्वारा निरन्तर उत्साह वर्धन किया जाता था। जिसके कारण आप लेखन की तरफ मुड़ गये।

साक्षात्कार के माध्यम से आपसे मेरी पत्रकारिता के सम्बन्ध में बातचीत हुई। इस बातचीत के अंश इस प्रकार है—

प्र0 आप पत्रकारिता एवं साहित्यकारिता से क्या आशा रखते हैं?

गौतम जी— साहित्य एवं पत्रकारिता से एक बेहतर समाज निर्माण तथा परिपूर्ण मानव निर्माण हेतु आशान्वित हूँ।

प्र0 आप साहित्य को क्या देना चाहते है?

गौतम जी— ऐसी अमर गीत रचनाएँ जो लोगों के गले उतर जाएँ। वह रचनाएँ जिन्हें आम आदमी उदाहरण के साथ बोल—चाल में प्रयोग करें। ऐसी कृतियाँ जिन्हें संग्रह में रखा न जाकर बार—बार पढ़ने का मन करे— जो समाज को दिशा दे और मनुष्य को सम्पूर्ण मानव में रूपान्तरित करें।[57]

आपने पत्रकारिता, सत्तर के दशक में झाँसी के दैनिक 'मध्य देश' से सम्पादन से प्रारम्भ की। करीब तीन वर्ष तक 'मध्य देश' पत्र का प्रथम पृष्ठ और स्थानीय समाचारों का लेखन सम्पादन तथा प्रस्तुति का कार्य किया। झाँसी में ही साप्ताहिक, सहगामी, साप्ताहिक देशध्वनि, का सम्पादन किया।

आप सन् 1980 ई0 में उरई (जालौन) आये और 'दैनिक 'एलार्म', दैनिक 'कर्मयुग प्रकाश', 'साप्ताहिक अगस्त', दैनिक 'दीवान' में क्रमशः समाचार लेखन, समाचार कथाएँ एवं समीक्षा लेखन का कार्य किया। सन् 1985 ई0 में

नई दिल्ली से प्रकाशित राजनैतिक पत्रिका नयी सदी का प्रकाशन शुरु कराया और नयी सदी के प्रथम सम्पादक हुए। हिन्दी साप्ताहिक 'प्रचण्ड' नई दिल्ली का कई वर्ष तक सम्पादन दिल्ली में रहकर किया। दिल्ली से प्रकाशित नयी सदी संस्थान की पत्रिका 'मधुर कथाएँ' तथा उर्दू की पत्रिका 'ज़रायम' में निरन्तर सत्यकथा लेखन भी इस बीच जारी रहा।

दिल्ली से लौटकर उरई में 'दैनिक लोक सारथी' के सहयोगी सम्पादक का दायित्व निभाया। स्थानीय समाचारों के लेखन के पश्चात् ग्वालियर (म0प्र0) से प्रकाशित 'नव प्रभात' में प्रभारी सम्पादक का दायित्व निभाया। ग्वालियर से पुनः उरई (जालौन) लौटकर उरई में दैनिक 'सोच समझ', का सम्पादन किया। इस बीच दैनिक 'अग्निचरण' तथा 'सूर्यजागरण' में प्रथम सम्पादक का दायित्व निभाया। सम्प्रति आप 'सांध्य दैनिक' बुन्देलखण्ड क्रांति, के मुख्य सम्पादक एवं साप्ताहिक 'आदर्श सत्ता' के स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक सम्पादक के रूप में कार्यरत हैं।

पत्रकारिता के साथ-साथ आप साहित्य में भी रुचि रखते हैं। आपने अनेक गीत एवं कविताओं का सृजन किया जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। आपकी कुछ रचनाएँ यहाँ दृष्टव्य है-

आग सीने में लगाती हैं ये चन्द्र किरन
दीप यादों के जलाती हैं ये चन्द्र किरन
तू खो गयी है कहाँ इस नदी से क्या पूछें
साफ वो मोड़ बताती है ये चन्द्र किरन।[58]

आपका ये गीत भी अच्छा बन पड़ा है। 'गीत धर्मिता' शीर्षक से यह गीत दृष्टव्य हैं-

कोई गाता गीत प्रथम कोई दुंहराता है

धड़कन का संगीत हवा के संग लहराता है।[59]

आपने पत्रकारिता एवं साहित्य विधा पर अपनी पैनी लेखनी चलायी है। आप जनपद के अच्छे पत्रकार एवं साहित्यकार हैं।

बृजेन्द्र मयंक 'एडवोकेट'

बृजेन्द्र मयंक 'एडवोकेट' जनपद के लगनशील एवं कर्त्तव्य निष्ठ पत्रकार हैं। तरुणावस्था से ही पत्रकारिता के शौक ने आपको एक प्रतिष्ठित पत्रकार के रूप में स्थापित किया।

आपका जन्म 1 जनवरी सन् 1954[60]ई0 को कोंच में हुआ था। आपके पिता का नाम स्व0 श्री मयंक मोहन अग्रवाल था। आपकी माता स्व0 श्रीमती मिथलेश कुमारी धार्मिक क्रिया–कलापों में रुचि रखने वाली एक गृहस्थ महिला थी। आपका विवाह टीकमगढ़ (म0प्र0) निवासी स्व0 श्री रामसहाय अग्रवाल जी की सुपुत्री श्रीमती शशि किरण मयंक के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में एक पुत्र आदर्श मयंक एवं सुपुत्री कु0 शिवांगी मयंक है जो वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1971 ई0 में एस.पी.इण्टर कालेज कोंच से उत्तीर्ण की और इसी कालेज से आपने इण्टर मीडिएट की परीक्षा सन् 1975 ई0 में उत्तीर्ण की। सन् 1978 ई0 में बी.के.डी. झाँसी से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद एल.एल.बी. की परीक्षा बुन्देलखण्ड वि0 वि0 झाँसी से उत्तीर्ण की।

आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी पत्रकार है। पत्रकारिता के साथ ही आपने गीत, कविताएँ, लेख, कहानी आदि लिखे।

आप सन् 1974 ई0 में साप्ताहिक पत्रिका 'एलार्म' के सह–सम्पादक के पद पर कार्यरत रहे। सन् 1975 ई0 में दैनिक 'जन उत्साह' उरई के संवाददाता के रूप में कार्य किया। आप इमर्जेन्सी में 1975 से 1977 ई0 तक उरई रायबरेली, आगरा सेन्ट्रल जेल में रहे। तत्पश्चात् सन् 1978–79 ई0 में दैनिक भास्कर, दैनिक मध्य प्रदेश झाँसी के संवाददाता रहे। आपने गौरक्षा आन्दोलन में पुलिस से संघर्ष किया और जेल गये। विभिन्न आन्दोलनों में अलग–अलग तीन माह तक जेल में रहे। आप सरकार के खिलाफ कभी नहीं झुके। सम्प्रति आप दैनिक 'आज' कानपुर में संवाददाता के पद पर कार्यरत है। इसके अतिरिक्त आपके अनेक लेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते हैं।

आप एक अच्छे पत्रकार के साथ–साथ आप एक अच्छे साहित्यकार भी है। अन्याय एवं असत्य के सामने आप कभी नहीं झुके। आज भी इसी सिद्धान्त को अपनाते हुए पत्रकारिता को नया आयाम देने के लिये प्रयासरत हैं। पत्रकारिता को आप कितनी ऊँचाइयों तक ले जाते हैं यह तो समय ही बतायेगा।

अनिल शर्मा

हिन्दी पत्रकारिता में अनिल शर्मा का विशिष्ट स्थान है। हँसमुख स्वभाव, प्रतिभाशाली, मिलनसार तथा सभी के साथ मृदु व्यवहार ये समस्त गुण आपके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

अनिल शर्मा का जन्म 1 जनवरी सन् 1955[61] ई0 को जिला बाँदा के लोहरा नामक ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री

रामरतन शर्मा एडवोकेट एवं माता श्रीमती सुनीता देवी है। आपका विवाह श्रीमती कमलेश शर्मा के साथ हुआ। आपकी एक मात्र संतान स्नेहपालिता सुश्री सुवर्णा शर्मा है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1971 एवं 1973 ई0 में राजकीय इण्टर कालेज बाँदा एवं आदर्श बजरंग विद्यालय बाँदा से उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा 1975 ई0 में उत्तीर्ण की। पं0 जवाहर लाल नेहरु महाविद्यालय बाँदा से आपने एम.ए. की परीक्षा सन् 1977 ई0 में उत्तीर्ण की। आपने पत्रकारिता में भी डिप्लोमा प्राप्त किया। कुछ समय पश्चात् सन् 1980 ई0 में आपने एल.एल.बी. की परीक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ से उत्तीर्ण की और डेढ़ वर्ष तक वकालत भी की। आप पत्रकारिता के क्षेत्र में सन् 1982 से आये।

पत्रकारिता के साथ–साथ आपका साहित्य में भी विशेष योगदान है। देश की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपकी कविताएँ कहानी तथा लघु कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं।

आप कुछ समय तक मुम्बई के 'जनसत्ता' पत्र के संवाददाता भी रहे। इसके पश्चात् आप पिछले 10 वर्षो से दैनिक 'अमर उजाला' जिसके प्रधान सम्पादक श्री अशोक अग्रवाल है के ब्यूरो प्रमुख हैं।

आप निडर पत्रकार के रूप में जाने जाते है। डी.एम. व एस.पी. से समस्याओं को लेकर कई बार टकराये आन्दोलन भी किये। आप 'नेशनल यूनियन ऑफ जर्नलिज्म' में राष्ट्रीय पार्षद भी रहे।

पत्रकार अनिल शर्मा से साक्षात्कार के दरम्यान (दिनांक 19/04/03) मेरी उनसे कुछ बातें हुई– मैं शाम के चार बजे उनके पास पहुँचा तो उन्होंने

मेरा परिचय पूछा। मैने परिचय बताया और अपना काम भी बता दिया। वे बोले– ''भाई कल आना– हाँ इस समय मत आना क्योंकि इस समय हमें बिलकुल फुर्सत नहीं होती है।'' वहाँ सब के सब कम्प्यूटर में उलझे हुए थे। मैं वापस लौट आया।

मैं भी एस.आर. इण्टर कालेज उरई में हिन्दी प्रवक्ता पद पर कार्यरत हूँ। इस कारण मुझे भी समय निकालने में कठिनाई हुई। तीन दिन बराबर उनके पास गया। उन्होंने तीनों बार बड़े प्रेम के साथ यही उत्तर दिया– ''भई! फिर वही टाइम।'' मैनें कहा कोई बात नहीं। सर चौथे दिन उन्होंने अपना अमूल्य समय शाम के चार बजे निकाल ही लिया और अपना बायोडाटा भरकर मुझे दे दिया। मैंने धन्यवाद देते हुए कहा– ''सर! मैं आपके बर्ताव से बहुत प्रभावित हूँ, इसी कारण में प्रतिदिन इसी टाइम (चार बजे शाम) पर आता रहा। आपने अपना अमूल्य समय मुझे दिया, मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

''बेटे बहुत नाम करोगे, बोलने का लहजा बहुत अच्छा है। जानते हो ऐसी बातें हम नेताओं के साथ करते है तब मुश्किल से उनका साक्षात्कार हो पाता है।'' इतना कहकर वे अपना पुनः कार्य करने लगे।

शर्मा जी बहुमुखी प्रतिभा से सम्पन्न पत्रकार हैं। आप एक अच्छे कवि भी है। आपने अपना दर्द इस कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। 'निराशावादी यह 'नवगीत' यहाँ दृष्टव्य है–

नावें सब खोखली हुई

कंगूरे टाँकते रहे

घर से उठता रहा धुआँ

दूर खड़े ताकते रहे।[62]

निराशा में डूबा साहित्यकार अपने आपको कस्तूरी मृग ही समझ बैठता है आपकी यह रचना भी दृष्टव्य है–

रिश्ते वो अजनबी हुए

हमने जो प्यार से छुए

कितना भी बोएँ हम अपनापन

आँगन में गंध उठे गैरों की

हम तो कस्तूरी मृग हुए।[63]

अनिल शर्मा जी ऐसे पत्रकार है जो अपनी कर्मठता एवं लगन से लोगों के लिये एक आदर्श बन गये हैं। उनका मृदु व्यवहार हर किसी को प्रभावित कर देता है। सचमुच में आप महान पत्रकार हैं। जनपद को आप जैसे पत्रकारों पर गौरव है।

बृजराज सिंह परिहार

पत्रकारिता की अगली पंक्ति में बृजराज सिंह परिहार का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनका जन्म 30 जुलाई सन् 1958[64] ई० को उरई में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री भारत सिंह परिहार एवं माता का नाम श्रीमती वेदवती देवी है। आपका विवाह श्रीमती कुसुम परिहार के साथ हुआ। आपकी तीन सन्तानों में श्रीमती रश्मि सेंगर, कु० रूबी एवं कु० प्रियंका है। श्रीमती रश्मि सेंगर का विवाह श्री सतेन्द्र सिंह सेंगर के साथ हुआ।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1973 ई० एवं 1975 ई० में जनता इण्टर कालेज, उरई तथा डी.ए.वी. इण्टर कालेज उरई

से उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा आपने व्यक्गित रूप से गाँधी महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। इसके साथ ही आपने 'बोम्बे आर्ट' में डिप्लोमा प्राप्त किया है।

आप पत्रकारिता के क्षेत्र में 20 अगस्त सन् 1993 से आये। तब से आप लगातार इसी क्षेत्र में कार्यरत हैं। आप दैनिक 'जागरण' झाँसी के नगर संवाददाता के पद पर कार्यरत हैं। आपके अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इसके अतिरिक्त आपकी एक कृति 'स्वतन्त्र चेतना' लखनऊ से प्रकाशित है।

पत्रकारिता के सम्बन्ध में आपके विचार– ''पत्रकारिता समाज एवं लोकतंत्रीय राष्ट्र के निर्माण में अपनी अहम् भूमिका निभा रही है। सत्य तथ्यों का उद्घाटन ईमानदारी से करना एवं हर वर्ग की समस्याओं एवं शोषण के विरुद्ध आवाज पत्र के माध्यम से सरकार तक पहुँचाना पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य है।''

पत्रकारिता के साथ ही आप एक नेक इंसान है। आप अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा एवं लगन के साथ करते हैं। निश्चित रूप से आप समाज के हर वर्ग की समस्याओं को अपने पत्र के माध्यम से अधिकारियों तक पहुंचाने का श्लाघनीय कार्य कर रहे है जो समाज तथा राष्ट्र का महत्वपूर्ण कार्य है।

श्रीधर सिंह चौहान

पत्रकार श्रीधर सिंह चौहान का जन्म 15 अप्रैल सन् 1960[65] ई० को बैरई (जालौन) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री रोशन सिंह चौहान तथा माता जी का नाम श्रीमती धनवन्ती देवी है। आपका विवाह श्रीमती मालती देवी के साथ हुआ। श्रीमती मालती देवी धार्मिक स्वभाव की आदर्श गृहणी हैं। आपके दो पुत्र कुलदीप सिंह

चौहान एवं राजदीप सिंह चौहान है। जो वर्तमान में विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1976 एवं 1978 ई0 में एम.एस.बी. इण्टर कालेज कालपी से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् सन् 1981 ई0 में बी.काम. की परीक्षा कानपुर विश्वविद्यालय कानपुर से उत्तीर्ण की।

आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में सन् 1987 ई0 से कदम रखा। सर्वप्रथम आप उरई (जालौन) के स्थानीय दैनिक पत्र 'लोकसारथी' में लिखते थे। इस पत्र के बन्द हो जाने पर सन् 1996 ई0 से दैनिक 'जागरण' कानपुर पत्र के संवाददाता हो गये। सम्प्रति आप इसी पत्र में कार्यरत हैं।

आपने अनेक फीचर एवं लेख लिखे हैं जो समय–समय पर दैनिक पत्र में प्रकाशित होते रहे हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ फोटो सहित खबर निकाले जाने पर आपका पुलिस से टकराव हुआ था। ऐसे ही अनेक कार्यो के लिये आपको धमकियाँ भी यदा–कदा मिलती रही हैं।

आप पत्रकारिता के लिये पूरी तरह से समर्पित पत्रकार है। श्रीधर सिंह चौहान निडर पत्रकार के रूप में जाने जाते है।

कृष्णपाल सिंह (कें.पी.सिंह)
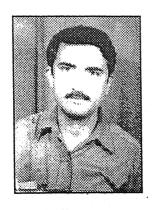
स्थानीय पत्र दैनिक 'अग्निचरण' उरई के सम्पादक पत्रकार कृष्णपाल सिंह मेधा के धनी ऐसे पत्रकार है जिन्होंने बहुत ही कम समय में दैनिक 'अग्निचरण' स्थानीय पत्र को स्थानीय लोगों तक पहुंचाने में अहम् भूमिका निभायी। बहुत से पत्र (स्थानीय) अपना वर्चस्व अधिक समय तक न रख सके और किसी कारणवश उनके सम्पादकों

को अपने पत्रों का सम्पादन बन्द करना पड़ा किन्तु दैनिक 'अग्निचरण' आज भी स्थानीय लोगों के बीच लोकप्रिय है। इसका बहुत कुछ श्रेय पत्र के सम्पादक कृष्णपाल सिंह को जाता है।

कृष्णपाल सिंह जी का जन्म 5 जुलाई सन् 1960 ई0 को कोठी निनावली जिला जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री सबदल सिंह एवं माता का नाम श्रीमती कमला देवी है।

आपने हायर सेकण्डरी की परीक्षा सन् 1975 ई0 में शासकीय उ0मा0 वि0 क्रमांक भिण्ड (म0प्र0) से उत्तीर्ण की। सन् 1978 ई0 में बी.एस–सी. की परीक्षा एम.जे.एस. कालेज भिण्ड से उत्तीर्ण करने के पश्चात् इसी कालेज से आपने एल.एल.बी. की परीक्षा सन् 1982 ई0 में उत्तीर्ण की।

पत्रकारिता के क्षेत्र में आप 26 जनवरी 1978 ई0 में आये तथा दैनिक 'जागरण', दैनिक 'भास्कर', दैनिक 'स्वदेश' आदि पत्र–पत्रिकाओं में फीचर एवं लेख लिखे।

आप एक निडर पत्रकार हैं। कठिनाइयों से संघर्ष करना ही आपका मुख्य उद्देश्य है। इनके विचार में, यदि हम कठिनाइयों से दूर भागें तो कठिनाइयाँ हमारा पीछा नहीं छोड़ सकती हैं। इनका तो एक ही सूत्र है– मैदान में डट जाओ, सफलता तो मिलेगी ही।

एक बार इन्हें दस्यु मलखान सिंह ने मंच पर खुली धमकी दी थी किन्तु इन्होंने उस पर कोई ध्यान न देकर अपने पत्र को बराबर उन्नति के शिखर तक पहुँचाने में क्रियाशील रहे। एस.पी. भिण्ड ने झूठे मुकद्में में इन्हें फँसाने की कोशिश की। सन् 1993 ई0 में जालौन के तत्कालीन एस.एस.पी. द्वारा झूठा मुकद्मा लिखने से आन्दोलन किया। सन् 1997 ई0 को जालौन

के तत्कालीन जिलाधिकारी के खिलाफ आन्दोलन किया।[66]

कृष्णपाल सिंह जनपद के पत्रकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखते है।

राजनारायण शुक्ल

राजनारायण शुक्ल का जन्म 25 मई सन् 1964 ई0 को इन्दिरा नगर कालपी जनपद जालौन में हुआ था। आपके पिता स्व0 श्री रामचन्द्र शुक्ल एवं माता स्व0 श्रीमती शान्ति देवी शुक्ला है। आपका विवाह श्रीमती कल्पना शुक्ला के साथ हुआ। आपकी पाँच सन्तानों में– शिवम्, सुन्दरम्, मंगलम्, शास्वतम् एवं सुनेत्रम् हैं।

आपने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की है। यह परीक्षा आपने सन् 1992 ई0 में कालपी महाविद्यालय कालपी से उत्तीर्ण की।

आप पत्रकारिता में 15 फरवरी 1984 ई0 से जुड़ गये थे। सम्प्रतिं आप दैनिक 'स्वतन्त्र भारत' जिसके सम्पादक के.के. श्रीवास्तव है के आप संवाददाता के रूप में कार्यरत हैं।

आपने कुछ फीचर भी लिखे हैं उनमें 'महर्षि वेदव्यास' की जन्मभूमि कालपी अतीत से वर्तमान तक' आपका प्रमुख फीचर है।

शुक्ल जी से मैंने जब पत्रकारिता के सम्बन्ध में पूछा तो **उन्होंने अपनी बेबाक राय में बताया**– "पत्रकारिता की दशा दयनीय हो गयी है। चाटुकारिता एवं स्वार्थपरता की भावना प्रबल हो गयी है, जबकि हमारा उद्देश्य सृजनात्मक भ्रष्टाचार के विरोध में आवाज एवं सफेदपोशों की चाटुकारिता से दूर रहना चाहिए। पत्रकार की कोई सीमा नहीं है– कोई स्तम्भ नहीं है। देश की मजबूती के लिये– समाज के उत्थान हेतु ही पत्रकारिता का उद्देश्य निहित होना चाहिए। भ्रष्टाचार के इस दल–दल में

पत्रकारिता भी आलिंगन बद्ध हो चुकी है।[67]

राजनारायण शुक्ल एक चिन्तनशील पत्रकार है। पत्रकारिता में चाटुकारिता एवं स्वार्थपनां निश्चित रूप से देश एवं समाज के लिये घातक है। देश एवं समाज के लिये ऐसे ही चिन्तन शील एवं जागरुक पत्रकारों की आवश्यकता है। जो स्वार्थ रहित एवं निडर हों।

दीपक कुमार अग्निहोत्री

दैनिक 'हिन्दुस्तान' लखनऊ के जिला संवाददाता दीपक कुमार अग्निहोत्री का जन्म 1 सितम्बर सन् 1964 ई0 को उरई में हुआ था। आपके पिता श्री जे.पी. अग्निहोत्री एवं माता श्रीमती रामजानकी देवी है। आपकी माता धार्मिक विचारों की एक सद्गृहस्थ महिला हैं। माता–पिता के अच्छे संस्कार दीपक कुमार अग्निहोत्री पर भी पड़े। यही कारण है कि दीपक कुमार अग्निहोत्री शांत, मिलनसार एवं योग्य पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। आपका विवाह श्रीमती ज्योति अग्निहोत्री के साथ हुआ। आपकी तीन संतानों में शुभम् एवं सौरभ अग्निहोत्री है तथा सुपुत्री सुश्री सुरभि अग्निहोत्री है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1980 एवं 1982 ई0 में उत्तीर्ण की। बी.ए. एवं एम.ए. हिन्दी की परीक्षाएँ आपने सन् 1984 एवं 1986 ई0 में उत्तीर्ण की। बी.एड. की परीक्षा सन् 1988 ई0 में तथा एल.एल.बी. की परीक्षा सन् 1990 ई0 में उत्तीर्ण की।

आप पत्रकारिता के क्षेत्र में सन् 1983 ई0 में (विद्यार्थी जीवन) कदम रखा। तब से आप निरन्तर पत्रकारिता में लगे हुए हैं।

दैनिक 'भास्कर' झाँसी, 'आज' कानपुर, 'हिन्दुस्तान' लखनऊ, 'अमर उजाला' आगरा व कानपुर दैनिक 'जागरण' कानपुर, 'जनसत्ता' दिल्ली, 'अमृत प्रभात' इलाहाबाद, 'नूतन कहानियाँ', 'मनोहर कहानियाँ', 'माया', 'अवकाश', 'रविवार सण्डे मेल', 'पाँचजन्य', 'राष्ट्रधर्म' आदि पत्र–पत्रकाओं में लेख एवं फीचर प्रकाशित होते रहे हैं।

दीपक कुमार अग्निहोत्री बहुमुखी प्रतिभा का धनी पत्रकार है। **पत्रकारिता के सम्बन्ध में आपके विचार यहाँ दृष्टव्य हैं–**

सूचनाओं का ऐसा माध्यम जो समाज में (हम सबके बीच) घटित होने वाली घटनाओं (अच्छी तथा बुरी) को सबके सामने उन्हें उजागर करना पत्रकारिता है। इन घटनाओं को पत्र के माध्यम से पढ़कर (अच्छी खबरों को) अपने जीवन में उतारने का प्रयास एवं बुरी घटनाओं से जीवन में सीख लेना ही प्रत्रकारिता का उद्देश्य है।"[68]

सलीम अंसारी
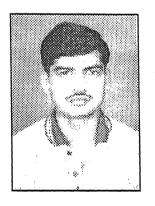
स्थानीय पत्र दैनिक 'अग्निचरण' उरई के पत्रकार सलीम अन्सारी ऐसे पत्रकार है जो पूरी ईमानदारी के साथ भ्रष्टाचार एवं अराजकता के विरुद्ध अपनी कलम चलाते हैं। अनेक कठिनाइयों के बीच भी इन्होंने अपने कर्त्तव्य के प्रति मोह त्याग नहीं किया है।

सलीम अन्सारी का जन्म 1 मार्च सन् 1966 ई0 को कालपी में हुआ था। आपके पिता श्री अब्दुल लतीफ एवं माता श्रीमती पदरुन्निशाँ है। आपका विवाह श्रीमती शबाना खातून के साथ हुआ।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1980 ई0 में ठक्कर बापा इण्टर

कालेज कालपी से उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1982 ई0 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा एम.एस.वी. इण्टर कालेज कालपी से उत्तीर्ण की। बी.ए. की परीक्षा सन् 1984 ई0 में कालपी कालेज कालपी से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् सन् 1987 ई0 में एम.ए. की परीक्षा आपने व्यक्गित रूप से उत्तीर्ण की। आपने विधि स्नातक की परीक्षा बी.के.डी. झाँसी से सन् 1992 ई0 में उत्तीर्ण की।

पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने सन् 1989 ई0 से पदार्पण किया। आप 'दैनिक लोक सारथी' उरई पत्र में आप संवाददाता के रूप में कार्यरत रहे। सन् 1999 ई0 से दैनिक 'अग्निचरण' में पत्रकार के रूप में कार्यरत हैं।

अपने जीवन की स्मरणीय घटना में साक्षात्कार के दरम्यान आपने बताया— "सन् 1994 ई0 में अराजक तत्वों के विरुद्ध समाचार प्रकाशित करने पर गुण्डों द्वारा लूटपाट एवं हमला हुआ जिस कारण कालपी थाने में एफ.आई.आर. दर्ज हुई। इसके विरुद्ध जनपद के पत्रकारों द्वारा आन्दोलन किया गया। सरकार द्वारा इनकी सुरक्षा में कुछ दिनों तक सुरक्षा गार्ड भी तैनात रहे।[69]

सलीम अंसारी ने पत्रकारिता के माध्यम से अपना विशेष स्थान बना लिया है। विपरीत परिस्थितियों में भी आप साहस के साथ उस परिस्थिति का सामना करने वाले निडर एवं साहसी पत्रकार है। पत्रकारिता को आपसे बहुत उम्मीदें हैं।

अरविन्द कुमार द्विवेदी

दैनिक 'आज' कानपुर के जिला संवाददाता अरविन्द कुमार द्विवेदी का जन्म 8 दिसम्बर सन् 1967[70] ई0 को कालपी (जालौन) में हुआ था। आपके पिता श्री आनन्द नारायण द्विवेदी तथा माता का नाम स्व0 श्रीमती

शिवकुमारी द्विवेदी है। आपका विवाह श्रीमती ममता द्विवेदी के साथ हुआ आपके दो पुत्र अंकुर एवं आकाश हैं।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ सन् 1982 एवं 1984 ई0 में उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1986 ई0 में बी.एस–सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने सन् 1987 ई0 में सेनेटरी इंसपेक्टर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने बी.एड. की परीक्षा सन् 1991 ई0 में उत्तीर्ण की तथा एल.एल.बी. की परीक्षा सन् 1992 ई0 में उत्तीर्ण की।

आप पत्रकारिता के क्षेत्र में अप्रैल सन् 1996 ई0 में आये। दैनिक 'स्वदेश' ग्वालियर, दैनिक 'आज' झाँसी, 'अक्षर भारत' नई दिल्ली, 'अमृतप्रभात' इलाहाबाद आदि पत्रों में फुटकर लेख एवं फीचर लिखे।

जनपद जालौन की हिन्दी पत्रकारिता में आपका प्रमुख स्थान है। आप पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं को बड़ी ही शालीनता के साथ उठाते हैं।

शैलेन्द्र सिंह राजावत

शैलेन्द्र सिंह राजावत जनपद के ऐसे पत्रकार है जिन्होंने अपनी योग्यता के बल पर पत्रकारिता जगत में अपना एक स्थान बना लिया है।

शैलेन्द्र सिंह का जन्म 10 मार्च सन् 1968 ई0 को कस्बा रामपुरा तहसील माधौगढ़ जिला जालौन में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री जयसिंह राजावत व माता श्रीमती रानी देवी है। आपका विवाह ग्राम कहटा थाना डकोर जनपद जालौन निवासी श्री मुलूसिंह परिहार की सुपुत्री श्रीमती सरोजसिंह के साथ हुआ।

शैलेन्द्र सिंह राजावत औसत कद के व्यक्ति है। रंग, गोरा, भारी

आवाज, तथा चेहरे पर घनी मूंछे उनके व्यक्तित्व को निखारती हैं। ये जीन्स की पेन्ट एवं सफेद शर्ट पहनना ज्यादा पसन्द करते हैं। मोबाइल हमेशा इनकी जेब की शोभा बढ़ाता है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1986 एवं 1988 में समरसिंह इण्टर कालेज रामपुरा (जालौन) से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् बी.ए. एवं एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1991 एवं 1993 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की।

आप विद्यार्थी जीवन (सन् 1986 ई0) में पत्रकारिता से जुड़ गये थे। आपने विभिन्न समाचार पत्रों में क्षेत्रीय संवाददाता के रूप में कार्य किया। कुछ समय पश्चात् आप दैनिक 'अग्निचरण' में सहायक जिला संवाददाता के रूप में तथा दैनिक 'लोक सारथी' में उप सम्पादक के रूप में कार्य किया। साप्ताहिक पत्र 'पूर्ण पुरुष' तथा साप्ताहिक 'बहेलिया' का सम्पादन भी आपने किया। सम्प्रति आप दैनिक 'आज' कानपुर के सहायक के रूप में उरई मुख्यालय के संवाददाता हैं।

पत्रकार शैलेन्द्र सिंह से साक्षात्कार के दरम्यान जब पत्रकारिता के सम्बन्ध में उनसे मैने बात की तो वे उखड़ पड़े। **पत्रकारों की पीड़ा उनके इस विद्रोही स्वर में उबल पड़ी–**

"आप पत्रकारों पर क्या शोध करोगे? जानते हो पत्रकारों पर क्या बीतती है, नहीं न। इन्हें 1200 रु0 या 2000 रुपये वेतन दिया जाता है। क्या हम जैसे पत्रकार मोबाइल रख सकते हैं– गाड़ी रख सकते हैं, परिवार चला सकते है? नहीं। यदि पैतृक सम्पत्ति न होती तो हम पत्रकारिता में अपने परिवार का भरण–पोषण नहीं कर सकते थे। ईमानदार और कर्मठ पत्रकारों

के यहाँ जाकर देखो– उनके पास आज तक मकान नहीं, उनके पास गाड़ी नहीं, वे आज भी पेइंगगेस्ट के रूप में रह रहे है। उनका इशारा (दैनिक अग्निचरण के सम्पादक के.पी.सिंह की तरफ था)।" फिर कुछ धीमे स्वर में पुनः बोले– "घर बैठे आलीशान बंगलों में बैठे पत्रकारों को मैं पत्रकार नहीं मानता हूँ। लेबल लगाने से पत्रकार नहीं होता है। कड़ी मेहनत करनी होती है। अपना सुख चैन त्यागना पड़ता है।"[71] शायद यह पीड़ा ऐसे समस्त पत्रकारों की पीड़ा है जो कठिन मेहनत के बावजूद मानसिक रूप से कहीं न कही अपने आपको हीन पाते हैं। चाहे वह आर्थिक रूप से हो या सामाजिक रूप से।

आपने पत्र के माध्यम से अनेक फीचर एवं लेख लिखे हैं। इसके साथ ही दस्यु निर्भय गुर्जर, अरविन्द गुर्जर एवं दस्यु साम्राज्ञी बबली आदि से साक्षात्कार लेकर दस्युओं की उन समस्याओं को उजाकर किया है जिस कारण उन्हें यह जीवन जीने पर मजबूर होना पड़ा। दस्यु निराकरण हेतु सूक्ष्म संकेत भी आपने अपने लेखों के माध्यम से दिया है।

राकेश द्विवेदी

दैनिक 'राष्ट्रबोध' के संवाददाता राकेश द्विवेदी का जन्म 23 जून सन् 1969[72] ई0 को हुआ था। आपके पिता का नाम डॉ0 डी.सी. द्विवेदी एवं माता श्रीमती राजेश्वरी द्विवेदी है। आपका विवाह श्रीमती किरण द्विवेदी के साथ हुआ। आपके दो पुत्र उत्कर्ष एवं निष्कर्ष हैं।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1984 ई0 में गाँधी इण्टर कालेज

उरई से उत्तीर्ण की। इसी विद्यालय से आपने इण्टरमीडिएट की परीक्षा सन् 1986 ई0 में उत्तीर्ण की। पुनश्च बी.ए. की परीक्षा सन् 1988 ई0 में गाँधी महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। बी.एड.की परीक्षा सन् 1990 ई0 में अतर्रा कालेज अतर्रा से उत्तीर्ण की। तत्पश्चात सन् 1992 ई0 में आपने एम.ए. की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की।

आप 3 अप्रैल सन् 1993 ई0 को पत्रकारिता से जुड़ गये। 3 अप्रैल सन् 1993 ई0 से 2002 ई0 तक आप दैनिक 'अमर उजाला' में संवाददाता रहे। 2002 ई0 के बाद से आप दैनिक 'राष्ट्र बोध' से जुड़ गये। सम्प्रति आप इसी पत्र में संवाददाता के पद पर कार्यरत हैं।

आपने अनेक भ्रष्ट अधिकारियों के कारनामे को अपने पत्र के माध्यम से उन्हे बेनकाब किया। इस समबन्ध में कई अधिकारियों से टकराव भी हुआ।

अक्षय सक्सेना

अक्षय कुमार सक्सेना दैनिक 'अमर उजाला' के पत्रकार एवं संवाददाता है। आपका जन्म 10 जुलाई सन् 1969[73] ई0 को भिण्ड (म0प्र0) में हुआ था। आपके पिता का नाम श्याम बाबू सक्सेना एवं माता का नाम श्रीमती सरोज सक्सेना है। आपका विवाह श्रीमती मधु सक्सेना के साथ हुआ।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1984 ई0 में डी.ए.वी. इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। आपने इण्टरमीडिएट की परीक्षा सनातन धर्म इण्टर कालेज उरई से सन् 1986 ई0 में उत्तीर्ण की। पुनश्च सन् 1988 ई0 में आपने बी.एस.–सी. की परीक्षा दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। इसी महाविद्यालय से आपने एम.एस–सी. की परीक्षा सन् 1990 ई0 में उत्तीर्ण की। गाँधी महाविद्यालय उरई से आपने बी.एड. की परीक्षा

1992 ई0 में उत्तीर्ण की।

आपने 13 मई सन् 1996 ई0 में पत्रकारिता जगत में पदार्पण किया। तब से आपने अनेक लेख तथा फीचर लिखे। इसके साथ ही विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते रहते हैं।

संजीव श्रीवास्तव

संजीव श्रीवास्तव का जन्म 1 जुलाई सन् 1976 ई0 को ग्राम बोहदपुरा (उरई) में हुआ था। आपके पिता श्री भगवान शरण श्रीवास्तव एवं माता का नाम श्रीमती मंजुला श्रीवास्तव है। आपका विवाह श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव के साथ हुआ। आपकी दो संतानों में सुरभि श्रीवास्तव एवं कु0 खुशी श्रीवास्तव है।

आपने हाईस्कूल की परीक्षा सन् 1995 ई0 में सर्वोदय इण्टर कालेज उरई से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् 1993 ई0 में इण्टरमीडिएट की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में डी.ए.वी.इण्टर कालेज उरई से उत्तीर्ण की। बी. एस–सी. की परीक्षा सन् 1998 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। एम.ए. (अर्थशास्त्र) की परीक्षा सन् 2000 ई0 में इसी महाविद्यालय से उत्तीर्ण की। आपने बी.पी.एड. (शारीरिक शिक्षा) की ट्रेनिंग भी ली है।

आप पत्रकारिता के क्षेत्र में सन् 2002 ई0 में आये। आप दैनिक 'अमर उजाला' कानपुर के संवाददाता हैं।

आपने पत्र 'अमर उजाला' में कुछ फीचर एवं लेख लिखे हैं। आपकी भाषा जनमानस के समझने के अनुकूल है अर्थात् आपकी भाषा साधारण

बोलचाल की भाषा है। 'खाली पेट के बावजूद स्वर्ण जीतने का जज्बा' शीर्षक से विश्व मैराथन में दसवाँ स्थान प्राप्त करने वाली हेमलता की व्यथा–कथा को आपने इस प्रकार उकेरा है–

इसे खिलाड़ी का नहीं देश का दुर्भाग्य कहा जायेगा कि प्रतिभा तो है पर कोई सँवारने वाला नहीं। जज्बा तो है पर खाली पेट। हौसला तो है, सुविधाएँ नहीं। ऐसे ही एक दुर्भाग्य से दो चार हो रहीं हैं हेमलता दिवाकर। मुम्बई में दसवें स्थान पर रही इस धाविका को उच्च कैलोरी वाला भोजन तो दूर चना खाकर गुजारा करना होता है। न उसे उच्च स्तरीय प्रशिक्षण मिला है, न अन्य सुविधाएँ। फिर भी उसे ललक है देश के लिये स्वर्ण जीकर लाने की।"[74]

राहुल दुबे

राहुल दुबे का वास्तविक नाम शशि शेखर दुबे है किन्तु पत्रकारिता जगत में राहुल दुबे के नाम से जाने जाते हैं। राहुल दुबे का जन्म 8 अक्टूबर सन् 1982 ई0 को ग्राम रिनियाँ पो0 बड़ागाँव निकट उरई में हुआ था। आपके पिता श्री अशोक कुमार दुबे जो रेलवे विभाग में सहायक मुख्य टिकट निरीक्षक के पद पर कार्यरत हैं। आपकी माता का नाम श्रीमती मीना दुबे हैं। आपका एक छोटा भाई शशांक शेखर दुबे एवं बहन श्रीमती अंजु दुबे है। श्रीमती अंजु दुबे अरतरा (हमीरपुर) निवासी श्री प्रशांत दुबे के सुपुत्र श्री राजेश दुबे को ब्याही गयीं है।

आपने हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट की परीक्षाएँ क्रमशः सन् 1996 एवं 1998 ई0 में श्रीकृष्ण उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गढ़र (जालौन) तथा

वैदिक इण्टर कालेज सोमई (जालौन) से उत्तीर्ण कीं। आपने बी.ए. एवं एम.ए. (हिन्दी) की परीक्षाएं क्रमशः सन् 2001 एवं 2003 ई0 में दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की।

आपने सर्वप्रथम 'नीलेक्स इंड्रिया' (हिन्दी मासिक) हरियाणा में जिला संवाददाता के रूप में कार्य किया। सन् 2002 ई0 से दैनिक पत्र 'अमर उजाला' कानपुर के संवाददाता के रूप में कार्यरत है। आपने अभी तक करीब 10–12 लेख[75] एवं कुछ फीचर लिखे। आपका 'बैलगाड़ी' फीचर काफी प्रशंसनीय रहा था।

आप पूर्ण रूपेण समर्पित पत्रकार हैं। आप पत्रकारिता को कितनी ऊँचाइयों पर ले जाते हैं यह तो समय ही बतायेगा। अभी से कुछ कहा नहीं जा सकता है।

इसके अतिरिक्त बहुत से ऐसे पत्रकार है जो गाँव–देहात एवं कस्बों से जुड़कर वहाँ की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक गतिविधियों को पत्र के माध्यम से शासन–प्रशासन तक पहुँचाने का श्लाघनीय कार्य कर रहे हैं। वे पत्रकार इस प्रकार है–

अमर उजाला

सत्येन्द्र पस्तोर, योगेश द्विवेदी, वीरेन्द्र तिवारी, राहुल श्रीवास्तव, रमेश तिवारी, राजीव तलवार (कोंच), उदयनारायण द्विवेदी, शरत् खन्ना (कालपी), सुखदेव सिंह (माधौगढ़), अमित पुरवार (रामपुरा), रामअवतार दोहरे (कदौरा)

दैनिक जागरण झाँसी–

मुकेश उदैनिया, बृजेश मिश्र, राजेश द्विवेदी (उरई) पुरुषोत्तम रिछारिया (कोंच), नवाबसिंह गुर्जर (जालौन), आशीष दुबे (कालपी), शिवराज सिंह

चौहान (माधौगढ़), राकेश व्यास (कोटरा), हर्षकुमार दुबे (कदौरा), आशीष चतुर्वेदी (जोल्हूपुर), विपिन श्रीवास्तव (आटा), नज़र मास्टर (एट)

दैनिक जागरण कानपुर–

राकेश द्विवेदी, संजयशर्मा, शिंवकुमार सिंह जादौन, अवधेश निरंजन, श्यामपाल सिंह (उरई), असर अहमद (कोंच), प्रदीप गौरव (माधौगढ़), ज़मील अहमद (रामपुरा), महेश गुप्त (कदौरा), सुनील श्रीवास्तव (जालौन)

स्वतंत्र भारत कानपुर–

रवीन्द्र पांचाल, रमेश पांचाल (उरई), राजेन्द्र उपाध्याय (कोंच), अवध ेश बाजपेयी (कालपी), मु0 शाकिर (जालौन), सत्यनारायण शर्मा (माधौगढ़)

स्वतंत्र चेतना लखनऊ–

सुनील शर्मा (कालपी), सुशील द्विवेदी (कोंच)

दैनिक आज–

हेमन्त सिंह, मनोजकुमार 'राजा', अमित कुमार द्विवेदी, अंजनी कुमार चतुर्वेदी, प्रदीपकुमार द्विवदी (उरई), निरंजन लाल माहेश्वरी (जालौन), चौधरी बृजेन्द्र मयंक, राजेश कुमार यादव (कोंच), दीपचन्द्र सैनी, राजू पाठक, सन्तोष द्विवेदी (कालपी), गजेन्द्र सिंह चौहान, रामबाबू रजक (माधौगढ़), बृजेश तिवारी (आटा) अंजनी शर्मा (कोटरा)

दैनिक कर्मयुग प्रकाश–

नाथूराम निगम, सन्तोष राठौर, भगवती प्रसाद विश्वकर्मा, रामआसरे त्रिवेदी, अमरचन्द्र वर्मा, देवेन्द्रसिंह जादौन, गोपाल विश्नोई, पत्रकार रघुराज प्रसाद, पवन कुमार सैन, पवन कुमार रैकवार, सोनू भदौरिया, महेन्द्र प्रताप सिह दाऊ (उरई), राजीव तलवाड़, रमेश तिवारी (कोंच), रामकेश साहू,

ब्रह्मकिशोर श्रीवास्तव, रामजी कुशवाहा, त्रिलोकी नाथ गुप्त (जालौन), हरिश्चन्द्र दीक्षित 'बापू' रमेश सोनकर, रमाकान्त कुशवाहा, सतीश द्विवेदी मरगायाँ (कालपी) अनिल राठौर, अमरनाथ शर्मा (माधौगढ़), शिवाकान्त पाठक, राजाकरन (बागी) (कदौरा), मकसूद खाँ, अमित पुरवार (रामपुरा), उमेशचन्द्र 'रेजा' (जगम्मनपुर) सुरेशचन्द्र माहेश्वरी (गोहन), सुरेन्द्र शुक्ल (जोल्हूपुर) गनेशदुबे (आटा) विनयकुमार गुप्त (उसरगाँव), महेशकुमार चौधरी (चमारी), मुत्तजर हक उर्फ मुन्टू (एट) रामबाबू शिवहरे (पिरौना) कमल कान्त पाटकार (कोटरा), रामप्रकाश अग्रवाल (सैदनगर) छत्रपाल सिंह (हरदोई गूजर)।

दैनिक अग्निचरण

संजय मिश्र, रमाशंकर शर्मा, देवीशरण 'बादल' (उरई), रमाकान्त निरंजन (जालौन), शिवराज सिंह चौहान, सत्यनारायण शर्मा (माधौगढ़), रमेश तिवारी (कोंच), ओमप्रकाश उदैनिया (कैलिया), रामबाबू रजक (रामपुरा), सुरेन्द्र द्विवेदी (ईंटो) आदि पत्रकार हैं।

1. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
2. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
3. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
4. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
5. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
6. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
7. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
8. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं04
9. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000

पृ0सं04

10. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक—रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं0 4
11. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक—रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं024
12. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक—रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं024
13. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक—रेखाप्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं025
14. 'हिन्दी साहित्य' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक—रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं025
15. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 23
16. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 24
17. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 24
18. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 25
19. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 25
20. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 26
21. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 26
22. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 26
23. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक— अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 26

24. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक– अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 27

25. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक– अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 28

26. जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, लेखक– अयोध्या प्रसाद 'कुमुद' पृ0सं0 28 व 29

27. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक, 1999–2000, सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' पृष्ठ संख्या 110

28. 'हिन्दी साहित्य' बु0वि0वि0 झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं0 31

29. 'हिन्दी साहित्य' बु0वि0वि0 झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं0 31

30. 'हिन्दी साहित्य' बु0वि0वि0 झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखाप्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं0 31

31. 'हिन्दी साहित्य' बु0वि0वि0 झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं0 32

32. 'हिन्दी साहित्य' बु0वि0वि0 झाँसी (बी.ए. तृतीय वर्ष का पाठ्यक्रम) लेखक डॉ0 शंकर शरण तिवारी, प्रकाशक–रेखा प्रकाशन, आगरा प्रकाशन वर्ष 2000 पृ0सं0 32

33. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक, 1999–2000, सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' पृ0सं0 110

34. वयोवृद्ध पत्रकार रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव 'प्रमत्त': एक अवलोकन 14 जुलाई 1999

35. वयोवृद्ध पत्रकार रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव 'प्रमत्त': एक अवलोकन 14 जुलाई 1999

36. वयोवृद्ध पत्रकार रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव 'प्रमत्त': एक अवलोकन 14 जुलाई 1999

37. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक, 1999–2000, सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', पृ0सं0 111

38. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक, 1999–2000, सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', पृ0सं0 111

39. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक, 1999–2000, सम्पादक–अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', पृ0सं0 111
40. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक, 1999–2000, सम्पादक–अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', पृ0सं0 112
41. सारस्वत (वार्षिक पत्रिका) उरई विशेषांक, 1999–2000, सम्पादक–अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद', पृ0सं0 112
42. सद्विचार सतसई, रचयिता– डॉ0 हरगोविन्द सिंह पृ0 सं0 69
43. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक, 04/05/2003
44. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 04/05/2003
45. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 04/05/2003
46. 'प्रेम की भाषा', रचयिता नरेन्द्र मोहन, प्रकाशक– योगेन्द्र कुमार गुप्त जागरण प्रकाशन, कानपुर, आवरण पृष्ठ
47. दैनिक जागरण कानपुर शीर्षक– 'नरेन्द्र मोहन एक नज़र में', दिनांक 21 सितम्बर 2002 पृ0सं0 13
48. दैनिक 'जागरण' कानपुर शीर्षक– 'नरेन्द्र मोहन एक नज़र में', दिनांक 21 सितम्बर 2002 पृ0सं0 13
49. 'प्रेम की भाषा' रचयिता–नरेन्द्र मोहन' प्रकाशक–योगेन्द्र कुमार गुप्त, जागरण प्रकाशन कानपुर, आवरण पृष्ठ
50. दैनिक जागरण कानपुर, शीर्षक– 'पत्रकारिता के एक युग का अवसान', दिनांक 21 सितम्बर 2002 पृ01
51. दैनिक जागरण कानपुर,, शीर्षक– 'पत्रकारिता के एक युग का अवसान', दिनांक 21 सितम्बर 2002 पृ01
52. दैनिक जागरण कानपुर, शीर्षक– 'पत्रकारिता के एक युग का अवसान', दिनांक 21 सितम्बर 2002 पृ013
53. दैनिक जागरण कानपुर, शीर्षक– 'पत्रकारिता के एक युग का अवसान', दिनांक 21 सितम्बर 2002 पृ013

54. दैनिक जागरण कानपुर, शीर्षक– 'सहज और असाधारण थे नरेन्द्र मोहन, दिनांक 13 जुलाई 2003 सम्पादकीय पृष्ठ
55. 'प्रेम की भाषा' रचयिता नरेन्द्र मोहन, प्रकाशक– योगेन्द्र कुमार गुप्त, जागरण प्रकाशन कानपुर, पृ0सं0 44
56. 'सत्य की धूप', रचयिता नरेन्द्र मोहन, प्रकाशक–जागरण प्राकशन कानपुर, पृ0सं0 61
57. कवि एवं पत्रकार शर्मा जी से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 13/12/2004
58. 'अनुभूति के क्षण', सम्पादक– डॉ0 राम स्वरूप खरे, पृ0सं0 90
59. सर्जना, 2003, सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 63
60. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 04/05/2003
61. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 22/05/2003
62. सर्जना, 2003, सम्पादक – डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 32
63. सर्जना, 2003, सम्पादक – डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय, पृ0सं0 32
64. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 07/05/03
65. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 22/05/2003
66. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी साक्षात्कार का दिनांक 17/05/2003
67. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 21/05/2003
68 पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 21/05/2003
69. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 22/05/2003
70. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 16/05/2003
71. पत्रकार शैलेन्द्र सिंह से साक्षात्कार का कुछ अंश, साक्षात्कार का दिनांक 14/03/2005
72. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 17/05/2003
73. पत्रकार से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 14/06/2003
74. दैनिक 'अमर उजाला' कानपुर, दिनांक 05/02/2005 प्रथम पृष्ठ
75. पत्रकार राहुल 'दुबे' से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, साक्षात्कार का दिनांक 15/03/2005

उपसंहार

मेरा जन्म हमीरपुर में हुआ। मैंने बी.एस–सी. (गणित) की परीक्षा दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई से सन् 1990 ई0 में उत्तीर्ण की। कुछ समय उपरान्त बी.एड. की परीक्षा सन् 1997 ई0 में सनातन धर्म बालिका महाविद्यालय उरई से उत्तीर्ण की। हिन्दी साहित्य से परास्नातकीय परीक्षा सन् 1999 ई0 में ब्रह्मानन्द महाविद्यालय, राठ (हमीरपुर) से उत्तीर्ण की। इसी बीच में मैं अपने गुरु डॉ0 रामस्वरूप खरे के सम्पर्क में आया। मेरी इच्छा हमीरपुर जनपद के साहित्यिक योगदान के शोध करने की थी किन्तु डॉ0 साहब ने बताया कि इस विषय पर तो मैं स्वयं ही शोधकार्य करा चुका हूँ। अतएव ''तुम जनपद जालौन के सारस्वत योगदान' पर शोधकार्य कर सकते हो। विश्वविद्यालय झाँसी द्वारा इसी शीर्षक को स्वीकार भी कर लिया गया।

पाँच छैः महीने जनपद जालौन से सम्बन्धित सामग्री प्राप्त करने में लग गये। मैने सुप्रसिद्ध साहित्यकार बनारसी दास चतुर्वेदी के किसी एक लेख में पढ़ा था कि आज जनपदीय साहित्यकारों पर शोध करने की महती आवश्यकता है, यद्यपि ये कार्य श्रम साध्य एवं अत्यन्त गम्भीर है फिर भी यदि लगन और दृढ़ निष्ठा हो तो सरलता पूर्वक इसका निर्वाह किया जा सकता है। अपने स्वप्न को साकार करने के लिये मैंने विषय से सम्बन्धित अनेक पत्र–पत्रिकाओं का संकलन किया और परम आदरणीय गुरु डॉ0 खरे साहब के निर्देशन में सम्बन्धित पुस्तकों का अध्ययन, मनन और चिन्तन प्रारम्भ कर दिया।

किसी भी युग के साहित्यकार की मनः स्थिति जानने के लिये तत्कालीन युगीन परिस्थितियों का एवं उसके आस–पास के वातावरण का

बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है क्योंकि व्यक्ति जैसे परिवेश में रहता है उसकी छाप उसके व्यक्तित्व पर अवश्य पड़ती है। भौगोलिक परिस्थितियों, सामाजिक परिस्थितियों का साहित्यकार के कोमल मन पर अवश्यमेव प्रतिबिम्ब पड़ता है। उदाहरणार्थ राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की भिन्न–भिन्न काव्य कृतियों में युगीन वातावरण के सजीव चित्र दृष्टिगोचर होते हैं। इन्हीं सब बातों को सोचकर मैंने 'जनपद जालौन का सारस्वत योगदान' पर शोध कार्य करने का संकल्प लिया।

प्रथम अध्याय के अन्तर्गत मैंने जनपद जालौन की पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक सामग्री की ओर ध्यान देते हुए उपर्लिखित सभी परिस्थितियों का विश्लेषण करने का प्रयास किया है जिसके अन्तर्गत जनपद जालौन की भौगोलिक सीमा, जलवायु, वातावरण, कृषि उद्योग धन्धे इत्यादि का विवेचन करते हुए इस जनपद के शैक्षिक विकास की रूपरेखा प्रस्तुत की और तत्पश्चात यहाँ के साहित्यिक योगदान की चर्चा करते हुए काव्य की प्राचीन परम्परा और अर्वाचीन परम्परा में योगदान करने वाले कवि और साहित्यकारों का सुस्मरण किया है। यह परम्परा अकबर के सुप्रसिद्ध नवरत्नों में से एक वीरबल से प्रारम्भ होकर कु0 प्रज्ञा श्रीवास्तव 'आकांक्षा' अत्याधुनिक काव्यधारा को परिपुष्ट बनाने वाले सन् 1985 ई0 तक के उदीयमान कवियों के काव्य का आंकलन किया है।

शोधकार्य को सम्यक रूप से समुपस्थित करने के लिये मैंने शोध ग्रंथ के **द्वितीय अध्याय** में इस जनपद के दिवंगत साहित्यकारों के प्रति सश्रद्ध श्रद्धांजलि एवं भावांजलि अर्पित करने का एक विनम्र प्रयास किया है। इसके अन्तर्गत आने वाले प्रमुख उल्लेखनीय कवियों में श्रीपति मिश्र, हरगोविन्द

दयाल नश्तर, डॉ0 आनन्द, भगीरथ सिंह 'साहित्याचार्य', बाबूराम गुबरेले, कालीदत्त नागर, बालकृष्ण शर्मा 'विकास', रामबाबू अग्रवाल, कृष्णदयाल सक्सेना, 'निःस्पृह', शिवराम श्रीवास्तव 'मणीन्द्र' एवं आदर्श 'प्रहरी' का उल्लेख किया है। इनमें कालीदत्त नागर (कालीकवि) का महत्वपूर्ण स्थान है जिनकी हनुमत्पताका, गंगा गुण मंजरी एवं छविरत्नम् उल्लेखनीय काव्य कृतियाँ है। इनके काव्य में रीतिकालीन प्रवृत्तियों के दर्शन सुलभ होते हैं। प्रथम कृति में मारुत सुत बजरंग बली के लंका प्रयाण का वर्णन घनाक्षरियों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। दूसरी कृति में गंगा की देवलोक से प्रादुर्भूति और धराधाम पर अवतरण एवं उनकी अकथनीय महिमा का वर्णन किया गया है जबकि तृतीय कृति में दोहा छन्द के माध्यम से श्रृंगार की अनूठी अभिव्यंजना नायिका–भेद के माध्यम से व्यक्त किया गया है। इससे सम्बन्धित तीन उदाहरण दृष्टव्य है–

लंकपुर जारन उजारन अशोक बन,
मारन हों असुर कुमारन की भीर कौ।
काली कवि निपट निवारन सिया कौ शोक,
पार परतारन हौं जलनिधि नीर कौ।।

(हनुमत्पताका)

गंग नीर तेरे जिन कीन्है जलपान ते तो,
पापिन के वृन्द्र इन्द्र आसन रचे फिरै।
एकन सैं एक–एक एकन सैं रार करै
लैबे कह राज जौंम जोरन जचे फिरै।।
काली कवि ऐसे पति अमित अनेक सुन,

सुनकै सची के लोल लोचन लचै फिरै
बगरे विमानन मैं सिगरे सुरेश आज,
नगरे पुरन्दर के झगरे मचे फिरै।

गंगा गुण मंजरी

लाल मालती मंजु की, कुंज गलिन में आय।
नारि गयी ये गुण भरी ईंगुर सो ढरकाय।।

छवि रत्नम्

इसी प्रकार हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि होते हुए श्री हरगोविन्द दयाल 'नश्तर' ने उर्दू के माध्मय से हिन्दी साहित्य की अनूठी सेवा की। उनके दो दीवाने प्रसिद्ध है– जख्में खंदा एवं नश्तर कदा। आपकी दो श्रेष्ठ रचनाएँ दृष्टव्य हैं–

कैदे ताल्लुकात है दुनिया में वजहे–गम,
गर आशियाँ न हो तो गमें–आशियाँ कहाँ।
आने में इतनी देर लगानी न थी तुम्हें,
पहुँचा मेरा ख्याल न जाने कहाँ–कहाँ।।

इन दोनों कवियों के अतिरिक्त दिवंगत कवियों में श्रीपति मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। इनकी प्रमुख कृतियाँ– 'काव्य सरोज', 'काव्य सुधाकर' 'अनुप्रास कथन' आदि हैं। आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

तहँ देवधुनी तट भोजपुर दान स्थान करवान छम
श्री अवदुल्लह सेब तँह राजत धुव मघवान सम।

इसी शृंखला में जालौन तहसील के वीर रस शिरोमणि डॉ0 आनन्द का नाम उल्लेखनीय है जिनका सुप्रसिद्ध महाकाव्य झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

चर्चित है। उनकी कुछ वीर रस की पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य है–

आज कोई सामने आता नहीं था,

आ गया तो लौटने पाता नहीं था।

तेग रानी की न थी जिसके गले पर

कौन जिसका मौत से नाता नहीं था।।

गीतकारों में सुप्रसिद्ध दिवंगत गीतकार श्री शिवराम श्रीवास्तव 'मणीन्द्र' एवं बालकृष्ण शर्मा 'विकास' के नाम भी कम उल्लेखनीय नहीं है। उन्होंने जनपद में गीत काव्यधारा को भावांजलियाँ देकर अत्यधिक रूप में समृद्ध किया है। दोनों ही सरस कवियों की कुछ सरस पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

लुटा दिया करते है, क्षण में

इसी हेतु मणि अश्रु अमोल

चोरी की निधि पर, दुनियाँ में

हुआ भला है किसको प्यार।

'मणीन्द्र'

इधर मैं पथ पर इतना चला

कि चलकर थका, थका सो गया

उनींदा होकर जब फिर चला

देखता अपना पथ खो गया।

'विकास'

इसी प्रकार प्राचीन वर्णिक वृत्तों का प्रयोग करने वाले और **डॉ० रामस्वरूप खरे के मतानुसार** – 'बुन्देलखण्ड के आधुनिक हरिऔध पं० बाबूलाल 'गुबरेले' इनकी लगभग बारह काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी है।

इनके कृतित्व पर बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से दो शोधार्थियों ने लघुशोध भी प्रस्तुत किये हैं। हरिऔध की शैली में मंदाक्रान्ता छन्द यहाँ दृष्टव्य है–

सूर्यांशी था करण जग में वीर भी था मही का।
शोभाशाली सुभग गुण थे तेज था भानु ही सा।
दानी भी था सरल चित था संयमी भी सुधी भी।
विद्या सीखूँ सकल शर की कर्ण की कामना थी।

वसुषेण

इस अध्याय के अन्तर्गत पं0 चतुर्भुज शर्मा द्वारा प्रणीत 'विद्रोही की आत्मकथा' उल्लेखनीय है एवं शिवसहाय स्वामी 'आरण्यक' का स्मरण करना मैं नहीं भूला हूँ। उन्होंने गद्य–पद्य दोनों विधाओं पर अपनी लेखनी चलाकर विद्या की अधिष्ठात्री देवी भगवती सरस्वती के मन्दिर में काव्यकृति कुसुमों को समर्पित किया है। उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ– 'सृष्टि' (महाकाव्य), 'सीता अन्वेषण' (खण्ड काव्य) 'मुक्त काव्य लक्षण', 'शब्दकला' (समीक्षा शास्त्र), 'जिन्दगी के कण', 'रेवती', 'चन्द्रहास', 'उल्का' उनके प्रमुख उपन्यास हैं।

सरस गीत एवं मुक्तकों के लिये सुप्रसिद्ध गीतकार एवं मुक्तक सम्राट आदर्श 'प्रहरी' जी को भी मैं विस्मृत नहीं कर पा रहा हूँ। अतएव उनके कुछ मुक्तक की पंक्तियाँ उदाहरणार्थ प्रस्तुत कर रहा हूँ–

बिना तपे तुम कैसे कंचन
नागपाश बिन कैसे चंदन
विषपायी जब तक न बनोगे
तब तक कौन करे अभिनन्दन।

'प्रहरी'

इसी क्रम में प्रहरी जी के पिता श्री कृष्णदयाल सक्सेना 'निःस्पृह' को भी भुलाया नहीं जा सकता है। वे एक आदर्शवादी शिक्षक एवं सुप्रसिद्ध कवि थे। वे अपने गुरु श्री किशोरी लाल खरे संस्थापक प्राचार्य दयानन्द वैदिक महाविद्यालय उरई को शिष्यभाव से पूर्ण रूपेण समर्पित थे जिनका यशोगान प्रथम प्रकाशित कृति 'प्रेरणा के स्त्रोत' में पदे—पदे सश्रद्ध वर्णन किया है। उनकी कुछ चर्चित पंक्तियाँ इस प्रकार है—

वाह रे! सुधन्य 'गुरु' अनन्य इस भूतल पर

रोम—रोम त्याग—वह्नि प्रज्वलित प्रदीप था।

जो अबोध—शिष्य—बिन्दु मोती बनाता रम्य

शिक्षण तुम्हारा कुछ विलक्षण सा सीप था।

इस अध्याय में 26 साहित्यकार हैं। इनका परिचयात्मक, काव्यात्मक एवं समीक्षात्मक वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

इस शोध प्रबन्ध के **तृतीय अध्याय** में जनपद जालौन के लेखकों को लिया है। इनमें निबन्धकार, समीक्षाकार, कोषकार, उपन्यासकार, गद्यगीतकार, कहानीकार, नाटककार एवं अन्य विधाकारों को लेकर जनपद को अनेक विधाओं से सम्पन्न करने वाले लेखकों का परिचयात्मक एवं समीक्षात्मक वर्णन किया है। इस अध्याय में लेखकों का क्रम जन्मतिथि के अनुसार नहीं हैं अपितु विधा के अनुसार है। इन लेखकों में डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव का नाम अग्रगण्य है। इन्होंने डबल डी.लिट् (हिन्दी) की उपाधि लेकर न केवल जनपद का अपितु पूरे देश का नाम रोशन किया है। आपकी हिन्दी सेवा अनूठी है। आपकी समीक्षाएँ महान विद्वानों द्वारा प्रशंसनीय रही हैं।

इसी शृंखला में डॉ0 दिनेश चन्द्र द्विवेदी एवं डॉ0 नारायण दास

समाधिया का भी नाम कम उल्लेखनीय नहीं है। शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली में आपकी रचनाओं ने हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाने में एक पग आगे बढ़ाने का कार्य किया है।

इसी प्रकार उपन्यासकारों में प्रतिभा जौहरी का नाम उल्लेखनीय है। आपके प्रमुख उपन्यास 'हिमालय की गोद में' तथा 'दिशाहीन दिशा' है। इसके अतिरिक्त आपके प्रमुख कहानी संग्रह 'परछाइयाँ' व 'प्रतिध्वनि' है। जिसमें सामाजिक जीवन का यथार्थ चित्रण मिलता है।

इसी क्रम में विनेन्द्र स्वरूप सक्सेना 'दीपेश' ने भी 'रानी मार्गो, 'अमलतास' 'मुट्ठी में रेत' एवं 'तुम' उपन्यासों की रचना करके जनपद को उपन्यास विधा से समृद्ध किया है। आपके उपन्यास काल्पनिक होते हुए भी सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिम्बित करते हैं।

गद्यगीतकार के रूप में डॉ0 रामस्वरूप खरे का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपके गद्यगीत भावानुकूल है तथा मन पर गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। इन गद्य गीतों में लेखक ने अपने मनोभावों को उकेरने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। आपने शताधिक रचनाओं का सृजन किया है। आपकी प्रमुख रचनाएँ 'अध खिले फूल' (गद्य गीत), 'काँपती परछाइयाँ', 'चिन्तन के मोती', 'संध्या हो गयी' आदि हैं।

श्रीमती उषा सक्सेना ने कहानी विधा पर अपनी लेखनी प्रखरता से चलायी है। इसके अतिरिक्त निबन्ध एवं नाटकों में भी आपको अच्छी सफलता मिली है। आपकी प्रमुख कृतियाँ– 'एक बिरवा चन्दन का' (कहानी संग्रह), 'पथ अभिलाषी' (नाटक), 'बरखा–बसन्त' (ललित निबन्ध) है।

इसी क्रम में व्यंग्यकार रणवीर सिंह सेंगर का नाम भी उल्लेखनीय है।

आपने इस विधा के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों पर करारा व्यंग्य किया है।

इस अध्याय में 18 साहित्यकार हैं

इस शोध प्रबन्ध के **चतुर्थ अध्याय** में मैंने सुविधा की दृष्टि से कवि एवं साहित्यकारों का तहसीलशः वर्णन किया है। इस अध्याय में तहसील जालौन के प्रसिद्ध कवि एवं छन्द शास्त्र के ज्ञाता माया हरिश्याम 'पारथ' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। 'निर्बल के बलराम' अप्रकाशित महाकाव्य ही इन्हें महाकवि घोषित कर देता है। इसके साथ ही आपने विपुल साहित्य की रचना की है। इनके साहित्य का प्रतिपाद्य विषय भक्ति एवं समाज चेतना है। 'छंद माया' ग्रंथ इन्हें 'आचार्य' के पद पर आसीन करने में पूर्णतया समर्थ हैं। इस कारण इनको 'आधुनिक केशव' कहना अतिशयोक्ति न होगी।

इसी क्रम में वीर रस शिरोमणि शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। आपने बुन्देली काव्यधारा को नया आयाम देकर बुन्देली साहित्य की श्रीवृद्धि की है। इनका यह प्रयास स्तुत्य एवं श्लाघनीय कहा जा सकता है। वीर रस से ओत–प्रोत आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

डाकू उत्तर देत ''लूट है रोजी अपनी;
को है अपुन? कहाँ के? हमने चीन्ह न पावो
आँखे खोलौ, चीनौ खोलो कान सुनावै–
मैं हौ लक्ष्मीबाई, बा झाँसी की रानी,
अंगरेजन से छिड़ गओ है संग्राम भयंकर
मरबे और मारबे हेत फिरौं भन्नानी।।

घनाक्षरी छन्दों में अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा से सबको अविभूति करने

वाले ब्रह्मानन्द मिश्र मीत के छन्द अच्छे बन पड़े हैं। इस के साथ ही आपने गीतों की भी रचना की है। आपके इस गीत की पंक्तियाँ अवलोकनीय हैं–

स्वागत में भाव सुमन अर्पित और ये निवेदन समर्पित है

लन्दन से आज काल से मिली सौगातें

भारत के जन–जन के अन्तर में संचित हैं।

स्वागत के बाजों का शोर जरा धीरे हो,

कान में पड़े न कहीं झाँसी की रानी के।

इसी श्रृंखला में डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया का नाम गीतकारों में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। आपने गीत विधा को समृद्ध करके जनपद जालौन के साहित्यिक योगदान में महती भूमिका निभायी है। गीत की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दृष्टव्य हैं–

दिल की चौखट पर प्रियवर की आहट रोज हुआ करती

मृदुल भावना स्नेहातुर अन्तर को रोज छुआ करती।।

नासिर अली 'नदीम' ने हिन्दी ग़जल और दोहों के माध्यम से अपनी वाणी को अभिव्यक्ति दी हैं आपके दोहे सामाजिक चेतना का बिम्ब खींचते हैं। आपके दोहों का अवलोकन करने पर रहीम दास जी की याद आये बिना नहीं रहती है। आप निश्चित रूप से रहीमदास जी के उत्तराधिकारी सिद्ध होते हैं। आपके कुछ दोहे यहाँ दृष्टव्य हैं–

धन कौ एक सुभाव है, ज्यों आवै त्यों जाय।

सो 'नदीम' उत्तम यही, धन सेवा सैं आय।।

इसी प्रकार हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि पूरन चन्द्र मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। आप एक अभिनेता और अच्छे चित्रकार भी हैं। आपके व्यक्तित्व एवं

कृतित्व पर बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी से शोधार्थी पंकज कुमार दुबे ने लघुशोध भी प्रस्तुत किया है। आपने खड़ी बोली एवं बुन्देली दोनों भाषाओं में काव्य रचना की। आपने गीत गज़ल एवं मुक्तकों की रचना की है। आपका यह मुक्तक दृष्टव्य है–

क्या बात बन सकेगी भला बात बदल के।

इन्सानियत मिटेगी ख्यालात बदल के।।

जो चाहते हो वो तुम्हें हासिल नहीं होगा।

कपड़ों की तरह दोस्तो, जज्बात बदल के।।

इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या 25 है।

शोध प्रबन्ध के **पंचम अध्याय** में तहसील उरई के कवि एवं साहित्यकारों के व्यक्तित्व, कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनकी कृतियों को समीक्षात्मक दृष्टि से उनका आंकलन किया है। इस अध्याय में कवि यज्ञदत्त त्रिपाठी का नाम उल्लेखनीय है। उनका खण्डकाव्य 'तपस्या के प्रसून'' अच्छा बन पड़ा है तथा विद्वानों द्वारा सराहा भी गया है। इसमें पौराणिक कथा मेनका और विश्वामित्र की कथा को नये सन्दर्भ में परिभाषित किया है। नारी शोषण का चित्रण कवि ने बड़े मनोयोग से किया है। इसी सन्दर्भ में आपकी यह रचना उदाहरणार्थ प्रस्तुत है–

नारी बोली, 'प्रजनन–पोषण

सृजन हमीं करती हैं।

फिर भी क्यों ऋषि राज–

जन्म भर हम आहें भरती हैं?

इसी अध्याय में वेदना की गायिका माया सिंह 'माया' का नाम भी कम

उल्लेखनीय नहीं है। आपके गीतों में वेदना का साम्राज्य लहरा उठा है। इसी कारण इन्हें आधुनिक महादेवी कहना अनुपयुक्त न होगा। इसी सन्दर्भ में आपकी यह रचना दृष्टव्य है–

आँखों के घेरे में 'माया'

जाने मे कौन करकता है।

फिर बूँद–बूँद करके बिरहा

सावन सा खूब बरसता है।

इसी क्रम में पं0 रविशंकर मिश्र का नाम गीतकार के रूप में विशेष प्रसिद्ध है। आपके गीतों में भक्ति और शांत रस की प्रधानता है। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

जो अपने में नही व्यवस्थित उनसे व्यर्थ अपेक्षा

जग से मान भले पर जाए प्रिय से पूर्ण अपेक्षा

संवर्धित संस्करण शुभम् के, प्रियवर प्रेम करो यदि इनसे

बन सकते हैं गीत तुम्हारे।

इसी क्रम में नवोदित साहित्यकारों में शफीक उर्रहमान 'कशफी', अपर्णा खरे, शिखा दीक्षित एवं प्रज्ञा श्रीवास्तव 'आकांक्षा' का प्रयास प्रशंसनीय कहा जा सकता है यद्यपि ये साहित्यकार अपने आपको स्थापित करने में संघर्षरत हैं। यह संघर्ष एक दिन उन्हें पद प्रतिष्ठा प्रदान करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या 27 है।

षष्ठ अध्याय के अन्तर्गत तहसील कालपी के साहित्यकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। इन कवियों में व्यंग्यकार

हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल' का नाम व्यंग्य विधा में विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने स्वस्थ व्यंग्य के माध्यम से सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक समस्याओं को उठाया है। विकल जी के सम्बन्ध में **श्री राधेश्याम योगी जी** ने त्रैमासिक पत्रिका सबकी खैर खबर के जनप्रिय व्यंग्यकार हरिनारायण विकल, में लिखा है– "विकल के व्यंग्य उनके अंतर्मन की सुधारवादी बेचैनी है– विकलता है, जो उनकी हर रचना से पुकार लगाती है। 'विकल' का कलाकार बहुत भोला है।" विकल जी के कुछ व्यंग्य यहाँ दृष्टव्य हैं–

जनहित में अब ऐसा करिये

लेन–देन वैधानिक करिये

हर दफ्तर के दरवाजे पर

रिश्वत दर की सूची भरिये।

इसी क्रम में राजेन्द्र सिंह (नूरपुर वाले) ने छन्दोबद्ध रचनाओं का सृजन करके अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है। आपकी अप्रकाशित कृतियाँ 'नारी क्रांति' (खण्डकाव्य) रोला छन्द में, 'राम की हृदय वेदना' (बरवै छन्द) है। रोला छन्द के माध्यम से आपने नारी के प्रति अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये हैं–

नारी का अपमान सदा नर करता आया।

अपना ही वर्चस्व सदा दिखलाता आया ।।

अग्नि परीक्षा हेतु, कभी पावक में नारी।

करती धरा प्रवेश, कभी लेकर मन भारी।।

(नारीक्रांति)

बुन्देली एवं खड़ी बोली के गायक सुरेश चन्द्र त्रिपाठी को भी भुलाया

नहीं जा सकता है। आपने बुन्देली काव्य के माध्यम से ग्रामीण जीवन के सुन्दर बिम्ब प्रस्तुत किये हैं। ग्रामीण जीवन से सम्बन्धित आपका यह गीत यहाँ दृष्टव्य है–

मका, बाजरा, जुण्डी की रोटी, अब इक्का–दुक्का खातई।
काकुन, कुढ़ई और संवारी खेतन में कहूँ बए न जातई।।
देखौ जा ईसुर की लीला, फरा–बरा थोपा और चीला।
कोहरी–चना करायल सतुआ, चेंच, नौरपा, भाजी, भतुआ।।

इसी श्रृंखला में अब्दुल रहमान 'रब्बानी' का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन्होंने उर्दू के साथ ही हिन्दी ग़जल को नया आयाम दिया है। इनके गीतों में व्यंग्य के भी दर्शन होते हैं। आपका यह गीत उदाहरणार्थ अवलोकनीय है–

चापलूस चंचल चपरासी, चमचे घेरे रहते।
आपकी अनुचित बातों को भी उचित–उचित जो कहते।
गाये बेसुरा राग, ये समझे बड़े सुरीले हैं।।
आप कितने जहरीले है।

प्रवीणकुमार सक्सेना 'उजाला' नवोदित साहित्यकारों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। इन्होंने माया हरिश्याम 'पारथ' से छंदशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की। इस कारण आपने अधिकांशतः छन्दोबद्ध रचनाएँ लिखी हैं। आपने एक लघु उपन्यास 'प्यार की तड़प' लिखा है किन्तु वे इस प्रयास में सफल नहीं हो पाये। काव्य साहित्य में आप सफलता के झंडे गाड़ सकते हैं। ऐसा मेरा विश्वास है। आपका यह वर्णवृत्त छन्द इन्द्रवज्रा यहाँ दृष्टव्य है–

वीणा बजाओ नव वर्ष आया।

देखो यहाँ आज उल्लास छाया।

जागो नया सुन्दर प्रात लाया

पक्षी गणों ने नव गीत गाया।

इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या 13 है।

शोध प्रबन्ध के **सप्तम् अध्याय** में तहसील कोंच के साहित्यकारों को लिया गया है। इस अध्याय में नरेन्द्र मोहन 'मित्र', अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' डॉ० एल०आर० श्रीवास्तव 'बिन्दु' का नाम उल्लेखनीय है। इनके गीतों में मानवतावादी दर्शन की झलक मिल जाती है। आपके गीतों में लय एवं प्रवाह अच्छा है। इन सरस कवियों की कुछ सरस पंक्तियाँ यहाँ अवलोकनीय हैं–

धृतराष्ट्र जब फँसे मोह में, भीष्म बँधे हो प्रण में

दु:शासन मिल जाये द्रोण से, व्यूह रचाये रण में

तो चक्रव्यूह से अभिमन्यु का बचना बहुत कठिन है

जैसे हिमगिरि की चोटी पर चढ़ना बहुत कठिन है

नरेन्द्र मोहन 'मित्र'

जग मिथ्या है, तत्व सत्य है,

क्षण भंगुर मेंहदी कहती है।

जन्म मृत्यु के नियमित क्रम सी

यह रचती धुलती रहती है।

हर रमणी अपने यौवन को, शायद अक्षय समझ रही थी

पर तुमने यह चित्र रचाकर, नश्वरता की दिशा बता दी

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

छेद काठ में कर सकता मैं,

पर न पुष्प भेदन कर पाऊँ।

मैं ऐसा सुगन्ध का प्रेमी,

बैठे फूल में प्राण गँवाऊँ

जीवन की आहुति देकर मैं, पाठ प्रेम का सिखलाता हूँ

सच्चा मित्र सभी फूलों का, मै उपवन–उपवन गाता हूँ।

छन्दोबद्ध रचना, गीत, गज़ल आदि विधाओं पर उत्तम लेखनी चलाने वाले मुहम्मद जावेद 'कुदारी' का नाम अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जहाँ आपने हिन्दू धर्म के विभिन्न देवी–देवताओं के सौन्दर्य वर्णन, भक्ति वर्णन का अनूठा चित्रण किया है, वहीं पावन मक्का और मदीना के भी सुन्दर चित्र खींचे है। आपकी भक्ति रस से ओत–प्रोत रचनाओं को पढ़कर कवि रसखान की याद आये बिना नहीं रह सकती है। कुदारी जी को 'जनपद जालौन का रसखान' कहना अतिशयोक्ति न होगी।

नवोदित साहित्यकारों में दिनेशचन्द्र स्वर्णकार 'मानव', भास्कर सिंह 'माणिक' संजय सिंह स्वर्णकार, संजीवकुमार स्वर्णकार 'सरस' एवं शारदा सिंह राजावत 'पायल' प्रमुख हैं

इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या 23 है।

शोध प्रबन्ध के **अष्टम अध्याय** में माधौगढ़ तहसील के साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय व्यक्तित्व एवं कृतित्व का मूल्यांकन किया गया है। इन कवियों में रसूल अहमद 'सागर' बकाई का नाम उल्लेखनीय है। आपकी प्रकाशित कृतियाँ – 'अर्चना के गीत', 'संवेदनाओं के क्षितिज', 'दोहाशतक', 'गर्म लहू की बूँदे' तथा 'धूप सिरहाने खड़ी है' आदि कृतियाँ हैं। इन्होंने गीत

श्रीवृद्धि की है। आपकी गज़लें हृदय पर सीधा प्रभाव छोड़ती है। यही कारण है कि आपको विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कार एवं उपाधियाँ प्राप्त हुई हैं। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

प्यास माँगे नीर केवल आचमन को,

चीर थोड़ा चाहिए नंगे बदन को।

तुम उन्हें हनुमान की ताकत बताओ,

भूल बैठे जो धनिक लंका दहन को।

इसी प्रकार गोपीचरण 'गिरि' के गीत अच्छे बन पड़े हैं। करुणा से भरे हुए गीत मन को शोक के सागर में डुबोते जाते हैं क्योंकि कवि का एक मात्र पुत्र रमेश अल्पायु में ही चल बसा था। एक मात्र सहारा के अचानक छिन जाने पर व्यक्ति की क्या हालत हो जाती है यह इनके काव्य में साकार हो उठा है। आपकी यह रचना यहाँ दृष्टव्य है–

आया था प्रकाश ले दीपक

लेकिन छोड़ गया अंधियारा

बुझते–बुझते अपनी लौ से

जला गया सर्वस्व हमारा।।

इसी श्रृंखला में डॉ0 मिथिलेश कुमारी 'शुक्ला' का नाम महत्वपूर्ण है। आपकी एक प्रकाशित कृति कुम्भकर्ण (खण्ड काव्य) है। आपने कुम्भ कर्ण के माध्यम से राजनीति, धर्मनीति, समाजनीति की विशद चर्चा की है। आपने युगीन परिस्थितियों पर भी अपने भाव प्रकट किये हैं।

इसी अध्याय में ओमप्रकाश चतुर्वेदी 'पराग', शब्बन खान 'गुल',

बाँकेबिहारी द्विवेदी के नामों का उल्लेख किया गया है। इनके प्रयास को सार्थक कहा जा सकता है।

इस अध्याय में साहित्यकारों की संख्या 8 है।

इस शोध प्रबन्ध के **नवम अध्याय** के अन्तर्गत जनपद जालौन के पत्रकारों का संक्षिप्त परिचय, व्यक्तित्व, कृतित्व एवं मूल्यांकन किया गया है। हिन्दी साहित्य में जितना योगदान साहित्यकारों का है उतना ही योगदान पत्रकारों का भी है।

आधुनिक युग में पत्रकारिता का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। पत्रकारिता के माध्यम से पूरे विश्व की घटनाओं, क्रिया कलापों आदि की हम जानकारी प्राप्त करते हैं। आज के युग में यह इतनी महत्वपूर्ण है कि इसे 'चतुर्थ सत्ता' कहा गया है। पत्रकारिता लोकतन्त्र का आधार स्तम्भ बन गया है।

जनपद जालौन की पत्रकारिता ने प्रदेश स्तर पर ही नहीं वरन् देश स्तर पर अपना नाम रोशन किया है। इस अध्याय के अन्तर्गत आने वाले प्रमुख दिवंगत पत्रकारों में नरेन्द्र मोहन, मूलचन्द्र अग्रवाल एवं रामेश्वर दयाल 'प्रमत्त' जी है। वर्तमान पत्रकारों में अनिल शर्मा, दीपककुमार, अग्निहोत्री, अरविन्द कुमार द्विवेदी का नाम उल्लेखनीय है। दिवंगत पत्रकारों में नरेन्द्र मोहन जी का महत्वपूर्ण स्थान है। ये दैनिक पत्र 'जागरण' के संस्थापक एवं संपादक रहे। इसके साथ ही आप सांसद भी रह चुके हैं। आपका जन्म कालपी (जालौन) में हुआ था। आपने अपनी लगन एवं निष्ठा से पत्रकारिता को नये आयाम दिये। एक बार आपको संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच से सम्बोधन का अवसर मिला। जनपद जालौन से संयुक्त राष्ट्र संघ की यात्रा कोई साधारण यात्रा नहीं है। विरले ही इस मुकाम को हासिल कर पाते हैं।

पत्रकारिता के साथ–साथ आपने कहानियाँ, यात्रा संस्मरण, हजारों लेख एवं कविताएँ लिखीं। आपकी गद्य की प्रमुख कृतियाँ– 'भारतीय संस्कृति' 'धर्म और साम्प्रदायिकता', 'आज की राजनीति और भ्रष्टाचार', 'हिन्दुत्व', प्रतिरक्षा और सामरिक नीति आदि रचनाएँ हैं। आपकी काव्यकृतियाँ– 'अमृत की ओर', 'तुम्हारा संगीत', 'दासत्व से उबारो', 'खोलो द्वार', और 'सत्य की धूप' आदि है।

दैनिक 'विश्वमित्र' के संस्थापक एवं स्वामी बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल का जन्म उरई तहसीलान्तर्गत कोटरा ग्राम में हुआ था। दैनिक 'विश्वमित्र' के प्रकाशन ने हिन्दी पत्रकारिता जगत में क्रांति का श्रीगणेश किया था। इस पत्र के पूर्व के दैनिक पत्रों में दैनिकता तो रहती थी पर उनमें दैनिकत्व का अभाव था। बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल ने अपनी सूझ–बूझ से इस अभाव को दूर किया। इसके अतिरिक्त आपने 'सान्ध्य दैनिक', 'साम्यवादी', 'अंग्रेजी पत्र 'लिबर्टी और एडवांस', बंगला दैनिक 'मातृभूमि', अंग्रेजी साप्ताहिक 'इलेस्ट्रेटेड इण्डिया' पत्रों का प्रकाशन एवं सम्पादन किया। बाबू मूलचन्द्र अग्रवाल ने पत्रकारिता को पालित–पोषित करके उसकी श्री वृद्धि में अपना विशेष योगदान किया। जनपद जालौन आपके इस योगदान को भुला नहीं सकेगा।

इसी क्रम में रामेश्वर दयाल श्रीवास्तव 'प्रमत्त' का भी नाम उल्लेखनीय है। आप जीवन भर गाँधी दर्शन से प्रभावित रहे, साथ ही इस दर्शन को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। पत्रकार के साथ–साथ आप एक अच्छे कवि भी थे। आपने साहित्यकार एवं पत्रकार के रूप में समाज सेवा का कार्य किया।

वर्तमान पत्रकारों में अनिल शर्मा, अरविन्द कुमार द्विवेदी, दीपक

अग्निहोत्री का नाम भी आदर के साथ लिया जा सकता है। इन्होंने अनेक लेख एंव फीचर लिखकर पत्रकारिता को नये आयाम देने का प्रयास किया है। आप सतत् रूप से इस पत्रकारिता को नयी ऊँचाइयाँ देने के लिए दृढ़ संकल्प हैं।

नवोदित पत्रकारों का झुकाव इस ओर अधिक दिखायी देता है। ये नवोदित पत्रकार श्रम एवं दृढ़ आत्मविश्वास से पत्रकारिता की सेवा कर रहे हैं।

उपर्युक्त विवेचना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार जनपद जालौन की पुरातात्विक और ऐतिहासिक सम्पदा प्रचुर मात्रा में विद्यमान है उसी प्रकार इस जनपद की साहित्यिक सम्पदा भी कम उल्लेखनीय नहीं हैं। यहाँ के एक–एक कवि की एक–एक पुस्तक पर शोध कार्य प्रस्तुत किया जा सकता है। इस सन्दर्भ में माया हरिश्याम 'पारथ' का नाम अग्रगण्य है जिन्होंने 'निर्बल के बलराम' महाकाव्य में सात हजार छन्दों में रामकथा का वर्णन किया है। इसी प्रकार उनका दूसरा पिंगल शास्त्रीय ग्रंथ है 'छंदमाया'। इसमें आचार्य भिखारीदास एवं जगन्नाथ प्रसाद 'भानु' की शास्त्रीय परम्परा का अर्थ लक्षण परम्परा का निर्वाह करते हुए अनेक नवीन छन्दों का सृजन किया है और उन्हें सिद्ध करके साहित्य जगत के सामने प्रस्तुत किया है।

इसी प्रकार इनका तीसरा ग्रंथ है 'भक्त सुदामा' जिसका लोकार्पण दिनांक 19 जून 2005 ई0 में पूर्व कबीना मंत्री बाबूराम दादा के द्वारा सम्पन्न हुआ। ये भी एक छांदसिक काव्य है। यद्यपि इसे खण्डकाव्य लिखा गया है। किन्तु शास्त्रीय दृष्टि से इसे महाकाव्य की कोटि में रखा जा सकता है क्योंकि इसमें कुल मिलाकर 'दिव्य मित्रता' स्तेय, प्रारब्ध भोग, निर्धनास्तेयि धन्या,

हरिमिलन यात्रा, भक्त वत्सलता, लक्ष्मी और सन्त, माया दर्शन एवं फलश्रुति नामक नौ सर्ग हैं। इस ग्रंथ में कुल 287 घनाक्षरियों का एवं 88 सवैया एवं तीन स्फुट छन्दों का प्रयोग किया है। इस प्रकार इसकी कुल छन्द संख्या 378 हो जाती है। प्रत्येक सर्ग के अन्त में प्रयुक्त वर्णवृत्तों का सोदाहरण विवेचन भी किया गया है।

हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने काली कवि, डॉ0 आनन्द, मणीन्द्र, माया हरिश्याम 'पारथ' जैसी अनेक श्रेष्ठ काव्य प्रतिभाओं का मूल्यांकन नही कर पाया है। भविष्य में जब भी हिन्दी साहित्य के इतिहास का लेखन किया जायेगा तब उसमें काव्य प्रतिभाओं को अवश्यमेव स्वीकार करना पड़ेगा। अस्तु जनपद जालौन का सरस्वत योगदान किसी भी प्रकार कम नहीं है। यहाँ के साहित्य और साहित्यकारों की कीर्ति कौमुदी काव्याकाश में मुखरित होकर प्राणियों को शीतलता और सांत्वना प्रदान करती रहेगी। अनेक शोधार्थी आगे चलकर इन साहित्यकारों के अनुद्घाटित तथ्यों का निरूपण करके अपने को कृत्य–कृत्य समझेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

क संस्कृत

श्रीमद् भगवत गीता रचयिता— श्री कृष्ण द्वैपायन व्यास

ख हिन्दी

'अकबरी दरबार', ' ले0— रामचन्द्र वर्मा

1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम और जनपद जालौन, डी.के.सिंह

अवधी ग्राम साहित्य, द्वितीय अध्याय,— डॉ. कृष्णकिशोर मिश्र

'अबला', रचयिता— बाबूराम गुबरेले

अधखिले फूल — रचयिता — डॉ0 राम स्वरूप खरे

अद्यतन हिन्दी कविता, सम्पादक— डॉ0 रणजीत

अनुभूति के क्षण, सम्पादक—डॉ0 रामस्वरूप खरे

'अन्तर के स्वर' रचयिता— गोपीचरण गिरि

'अर्चना के गीत' रचयिता— रसूल अहमद सागर 'बकाई'

आदि भारत— प्रो0 अर्जुन चौबे

आइन—ए—अकबरी— ले0 अबुल फजल

आञ्जनेय, रचयिता— बाबूराम गुबरेले

आलोक दर्शन, रचयिता— रामबाबू अग्रवाल

आदि ज्योति, रचयिता—माया हरिश्याम पारथ

'इतिहास एवं पुरातत्व' को जनपद जालौन की देन (अप्रकाशि ग्रंथ) कु0 अपर्णा खरे

इहिलोक परलोक सुधारें, रचयिता— नारायणदास स्वर्णकार

ईसुरी प्रकाश— संपादक — गौरीशंकर द्विवेदी

उदय और विकास, सम्पादक— रामचरण हयारण

एन्सीएन्ट इंडिया, आर.सी. मजूमदार

एस्ट्रडी ऑफ ओरीजन होम्लोर— श्री कुंजबिहारी दास

एचिन्सन

अंधकार युगीन भारत— काशीप्रसाद जायसवाल अनु, रामचन्द्र वर्मा

कल्चर हिस्ट्री ऑफ बुन्देलखण्ड— एम.एल. निगम

'कला और कलम', डॉ0 गिरिराज किशोर अगवाल

कविता कौमुदी, पंचम भाग, रामनरेश त्रिपाठी

काली कवि और उनका काव्य अप्रकाशित शोध ग्रंथ, लेखक— डॉ0 ओमप्रकाश खरे

काव्य सुधाकर— श्रीपति हस्तलेख हि0 सा0 सम्मेलन प्रयाग

काव्य सरोज— श्रीपति मिश्र

काव्य मञ्जूषा, सम्पादक— प्रवीण कुमार सक्सेना 'उजाला'

क्रांति दूत, रचयिता —बाबूराम गुबरेले

कुछ सतरें कुछ पंखुड़ियाँ, रचयिता— विनेन्द्र स्वरूप सक्सेना, दीपेश

'कुणाल', रचयिता— हरिमोहन गुप्त

कुम्भकर्ण, खण्ड काव्य कवयित्री — डॉ0 मिथिलेश कुमारी शुक्ला

कैकेयी, रचयिता— बाबूराम गुबरेले

गीत सरिता, रचयिता — बाल कृष्ण शर्मा विकास

'गीत संचरण', रचयिता— राधाचरण गुप्त 'चरण'

गंगा गुणमंजरी, रचयिता— काली दत्त नागर'

चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास– डॉ0 अयोध्या प्रसाद पाण्डेय

चन्देल राज और जैजाक़ मुक्ति सं0– आर.के. दीक्षित

छत्तीसगढ़ी लोक गीतो का परिचय, श्यामाचरण दुबे भूमिका भाग

छविरत्नम्, सम्पादक– भगवान दास अग्रवाल

जनपद जालौन के मध्यकालीन प्रमुख भवनों का मूल्यांकन –डॉ0 हरीमोहन पुरवार

जनपद जालौन के वर्तमान कवि' अप्रकाशित रचना

जालौन जनपद साहित्य और पत्रकारिता, सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त, कुमुद'

जालौन जनपद के साहित्यकार, सम्पादक– नासिर अली नदीम

जिला गजेटियर, जालौन 1921

जिला विकास पुस्तिका प्रकाशन 2001–200 सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग उ0प0 जनपद जालौन

झाँसी की रानी, रचयिता– डॉ0 आनन्द

'तपस्या के प्रसून' रचयिता यज्ञदत्त त्रिपाठी

द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया भाग–3 कर्नल वेलेजली हेम

द स्टूडेन्ट इंगलिश डिक्शनरी

द माथिर उल–उमरा, प्रथम भाग– एच0 बेबरिच

'दामाने जिन्दगी', रचयिता– रसूल अहमद सागर बकाई

दिल्ली सल्तनत, डॉ0 आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव

'दिव्यलोक', रचयिता– मोहनलाल शाण्डिल्य

'दीवार में दरार है', रचयिता– गोपाल कृष्ण सक्सेना 'पंकज'

देखों जो पीरो पट, रचयिता— शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला'

'देवव्रत', रचयिता— शिवसहाय 'आरण्यक'

देवापगा स्मृति विशेषांक, सम्पादक— राजेन्द्र सिंह सेंगर, उरई

'धरती गाती है'— देवेन्द्र सत्यार्थी

'धूप सिरहाने खड़ी हैं' रचयिता रसूल अहमद सागर बकाई

नव चेतना प्रसून, लेखक— नारायणदास स्वर्णकार

'नारी क्रान्ति', अप्रकाशित ग्रंथ, रचयिता— राजेन्द्र सिंह सेंगर

नाली में लोट—पोट, लेखक— रणवीर सिंह सेंगर

नीति—संक्षेप, लेखक— नाथूराम गुप्त

प्राचीन भारत का इतिहास— श्री माली और झा

प्राचीन भारत— ले0 रामशरण अग्रवाल

प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति— के.सी. श्रीवास्तव

पुष्पांजलि, सम्पादक— डॉ0 अभयकरन सक्सेना

पेशवा बाजीराव एण्ड मराठा एक्पेंशन— वि0जी0 दिघे

प्रेम की भाषा, रचयिता—नरेन्द्र मोहन

पंच विन्ध्य, पत्र 23 से 29 जनवरी 2000

पंचामृत, रचयिता— नन्दराम शर्मा

फाइनल रिपोर्ट ऑफ सैटिलमेन्ट अपरगना कालपी, पी.जे. व्हाइट

'बात कर गये नयन', रचयिता— योगेश्वरी प्रसाद 'अलि'

बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास— पं0 गोरेलाल तिवारी

बुन्देलखण्ड का इतिहास— पं0 चतुर्भुज शर्मा

बुन्देलखण्ड का पुरातत्व— डॉ0 एस.डी. त्रिवेदी

बुन्देलखण्ड केशरी महाराज छत्रसाल बुन्देला— डॉ0 भगवानदास गुप्ता

बुन्देली काव्य परम्परा, द्वितीय— डॉ0 बलभद्र तिवारी

बुन्देली कहावत कोश, सम्पादक— कृष्णानन्द गुप्त

बुन्देली लोकगीत, भूमिका ख ग

बुन्देली लोक काव्य, सम्पादक— बलभद्र तिवारी

बुन्देलखण्ड का इतिहास— दीवान प्रतिपाल सिंह

'बूँद से सागर तक' सम्पादक— रसूल अहमद 'सागर' बकाई

ब्रोकमेन

भारतीय स्थापित्य— डॉ0 द्विजेन्द्र नारायण शुक्ला

भाषा विज्ञान— डॉ0 राम स्वरूप खरे

भाषा का सर्वेक्षण खण्ड नौ— डॉ0 ग्रियर्सन

'भीष्म की आत्म समीक्षा' रचयिता— बाबूराम गुबरेले

म

मजूमदार एंव कुशलकार प्रथम भाग

मध्यकालीन साहित्य सन्दर्भ सं0 डॉ0 किशोरीलाल गुप्त

मराठों का नवीन इतिहास द्वितीय भाग— जे.जी.ए. सर देसाई

माडर्न वर्ना कुलर लिटरेचर ऑफ हिन्दुस्तान ले0 ग्रियर्सन

मेडिवल इंडिया अण्डर मोहम्मडन रूल— स्टेन ली पूल

युगकवि स्वरूप : व्यक्तित्व एवं कृतित्व— राममनोहर

युगकवि डॉ0 रामस्वरूप खरे का बाल साहित्य' लेखिका संगीता गुप्ता

रत्नेश शतक — रामरत्न शर्मा 'रत्नेश'

'रागी के गीत' रचयिता डॉ0 लक्ष्मण गणेश दीक्षित

राजस्थानी कहावतें भूमिका भाग, डॉ0 सुनीत कुमार चटर्जी

राजस्थानी लोकगीत, सूर्यकिरण पारीक

राजस्थानी लोकोक्ति संग्रह भूमिका, डॉ0 वासुदेव शरण अग्रवाल

राष्ट्रभाषा सन्देश (हि0सा0स0प्रयाग) 15 जून 1985 में प्रकाशित चक्रधर नलिन का लेखांश

लोक साहित्य की भूमिका, श्री सत्यव्रत अवस्थी

व्यथा कथा है मेरी पाती', रचयिता– डॉ0 श्यामसुन्दर सौनकिया

वाल्मीकीय रामायण, लेखक– नाथूराम गुप्त

विकल्पावली, रचयिता–जगज्योति सिंह 'महर्षि' जगज्योति

विद्रोही की आत्मकथा, लेखक– पं0 चतुर्भुज शर्मा

विष्णु पुराण की भूमिका – एच.एल. विल्सन

वीर बुन्देला लाल हरदौल, लेखक– रामरूप स्वर्णकार 'पंकज'

शून्य की संचेतना सम्पादक– डॉ0 श्यामसुन्दर सुमन

'शोध धारा' सितम्बर 2004– फरवरी 2005 संपादक– डॉ0 नीलम मुकेश

स्टैण्डर्ड डिक्शनरी ऑफ फोक लोर भाइथालॉजी एण्ड लीजैण्ड भाग–2

स्मृतियों के आँचल में – लेखिका सुशीला मिश्रा

'स्मारिका' भारतीय इतिहास संकलन समिति उ0प्र0 (1982) शोधलेखक– ठाकुर प्रसाद वर्मा

स्वरूप काव्य का समीक्षात्मक विवेचन, समीक्षक– डॉ0 दुर्गाप्रसाद श्रीवास्तव

सत्य की धूप, रचयिता– नरेन्द्र मोहन

समथिंग रिटन बाई हैण्ड दा स्टूडेन्ट डिक्शनरी

समीक्षा दर्शन, लेखक – डॉ0 नारायण दास समाधिया

सर्जना, 2003 सम्पादक– डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय

सहस्त्राब्दि साहित्यकार कोश, सम्पादक– डॉ0 राम स्वरूप खरे

'संवेदनाओं के क्षितिज' रचयिता– रसूल अहमद 'सागर' बकाई

संक्षिप्त हिन्दी व्याकरण– पं0 कामताप्रसाद गुरु

हत्यारी दौलत, लेखक– अमित कुमार द्विवेदी प्रकाशक– शिवा पॉकेट बुक्स, मेरठ

हमारा ग्राम साहित्य– पं0 रामनरेश त्रिपाठी

हर्षिता भूगोल, लेखक– डॉ0 बी0शर्मा

हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों का संक्षिप्त विवरण भाग–2

हयाते–हकीकत, रचयिता– अवधविहारी लाल निगम

हिन्दी भाषा का इतिहास– डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा

हिन्दी भाषा का परिचयात्मक ज्ञान प्रथम संस्करण 1973, डॉ0 राम स्वरूप खरे

हिन्दी साहित्य प्रथम खण्ड– डॉ0 गणेशदत्त 'सारस्वत'

हिन्दी साहित्य (बुन्देलखण्ड वि0वि0 के तृतीय पाठ्यक्रम से) प्रकाशन– रेखा प्रकाशन आगरा

हिन्दी शब्द सागर

हिस्ट्री ऑफ चन्देल राज

हँसते गीत, अप्रकाशित ग्रंथ संम्पादक– राजेन्द्र श्रीवास्तव लल्ला एवं गीतेश

हँसते लोचन रोते प्राण, रचयिता– राम स्वरूप सिन्दूर

'त्रिजटा', रचयिता– बाबूराम गुबरेले

श्री गुरु चालीसा, रचयिता– माया हरिश्याम 'पारथ'

श्रीपति मिश्र ग्रंथावली, सम्पादक– लक्ष्मीधर मालदीव

ग पत्र–पत्रिकाएँ

'अमर उजाला' कानपुर सम्पादक– श्री शम्भूनाथ शुक्ल

'अभिव्यक्ति' वार्षिक पत्रिका (1999–2000) श्री गाँधी इण्टर कालेज, उरई

गाँधी महाविद्यालय के संस्थापक – पं0 चतुर्भुज शर्मा प्रकाशित पत्र

'दैनिक जागरण' कानुपर सम्पादक– श्री संजय गुप्त

'धर्मयुग' सितम्बर 1973 सम्पादक – डॉ0 धर्मवीर भारती

'पंच विन्ध्य' 23 से 29 जनवरी 2000

प्रज्ञा पत्रिका (1997–98) सनातन धर्म इण्टर कालेज, उरई सम्पादक– धर्मनाथ प्रसाद

'माधुरी' महादेव लाल बरगाह– अंक अप्रैल 1942

वयोवृद्ध पत्रकार रामेश्वर दयाल श्रीवास्त्व 'प्रमत्त': एक अवलोकन 14 जुलाई 1999

स्मारिका 1997 उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षक संघ, कोंच, सम्पादक – सुरेन्द्र सिंह कुशवाहा

स्मारिका (स्वर्ण जयन्ती वर्ष 6 फरवरी 2001) दीक्षान्त समारोह दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय, उरई, सम्पादक– राजेश चन्द्र पाण्डेय

'स्वर्ण जयन्ती' विशेषांक 1979–80 डी.ए.वी. कालेज, उरई, सम्पादक– महेन्द्र प्रकाश गुप्त

सबकी खैर ख़बर त्रैमासिक पत्रिका 1997 जनप्रिय हरिनारायण श्रीवास्तव 'विकल' सम्पादक– नासिर अली 'नदीम'

सबकी की खैर खबर द्वितीय अंक 1993 सम्पादक– नासिर अली 'नदीम'

साप्ताहिक हिन्दुस्तान नई दिल्ली जून 1962

सारस्वत वार्षिक पत्रिका (1999–2000) उरई विशेषांक सम्पादक– अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

सारस्वत' वार्षिक पत्रिका जनपद जालौन विशेषांक सम्पादक–अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

परिशिष्ट
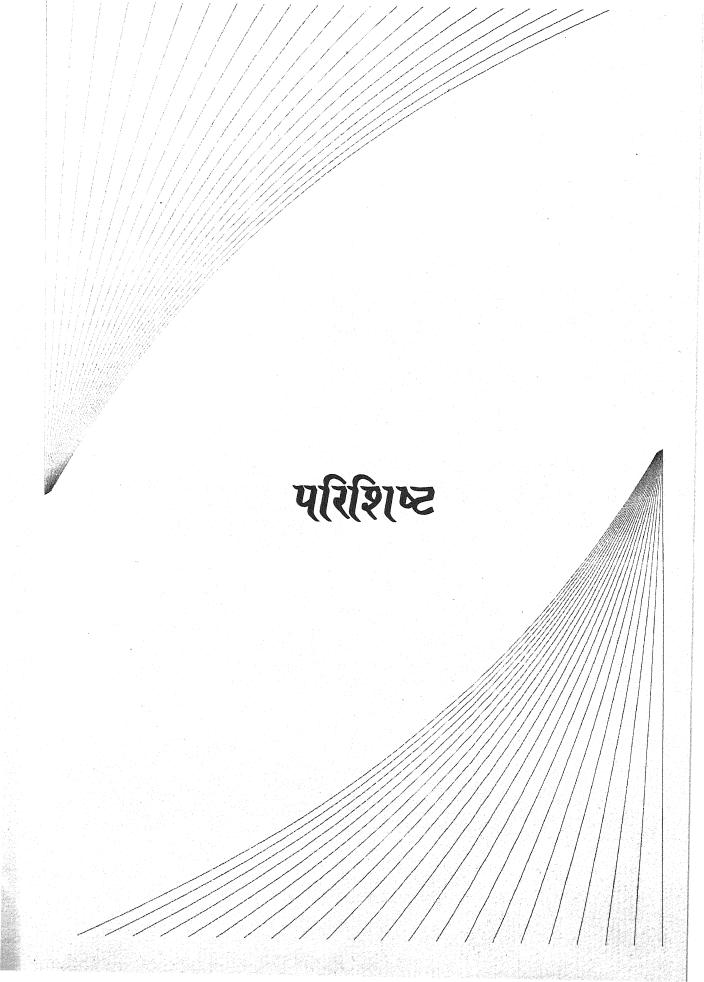
सुप्रसिद्ध साहित्यकारों के चित्र

दिवंगत साहित्यकार

काली दत्त नागर

कृष्णदयाल सक्सेना

बल्लभ दीक्षित

श्यामसुन्दर गुप्त

सन्तोष दीक्षित

शिवराम श्रीवास्तव मणीन्द्र

आदर्श प्रहरी

भगीरथ सिंह

रामबाबू अग्रवाल

बालकृष्ण शर्मा

शिवसहाय 'आरण्यक'

द्वारिका प्रसाद 'रसिकेन्द्र'

वर्तमान साहित्यकार

युगकवि डॉ0 रामस्वरूप खरे

डॉ0 दिनेश चन्द्र द्विवेदी

डॉ0 हरीमोहन पुरवार

डॉ0 नारायण दास समाधिया

डॉ0 राजेन्द्र पुरवार

अश्विनी कुमार

सुशीला मिश्रा

नीलम काश्यप

राधेश्याम 'योगी'

माया हरिश्याम 'पारथ'

नाथूराम गुप्त

राम मोहन शर्मा

रवीन्द्र शर्मा

पूरन चन्द्र 'पूरन'

नासिर अली 'नदीम'

शिवानन्द मिश्र 'बुन्देला'

नन्दराम शर्मा

रविशंकर मिश्र

माया सिंह 'माया'

शोभा श्रीवास्तव

किरण नागर

विजय कुमार गुप्त

मिश्रीलाल आर्य

प्रज्ञा श्रीवास्तव 'आकांक्षा'

राजेन्द्र श्रीवास्तव, लल्ला

यज्ञदत्त त्रिपाठी

अलका नायक

शिखा दीक्षित

शफीक उर्रहमान

डालचन्द्र अनुरागी

हरिनारायण श्रीवास्तव

राजेन्द्र सिंह

रविकान्त 'नेशे'

रहमान रब्बानी

प्रवीण कुमार 'उजाला'

सुरेश चन्द्र त्रिपाठी

अयोध्या प्रसाद गुप्त

सुरेखा जैन

नरेन्द्र मोहन 'मित्र'

रसूल अहमद बकाई

डॉ0 मिथलेश कुमारी

गोपीचरण 'गिरि'

शारदा सिंह 'पायल'
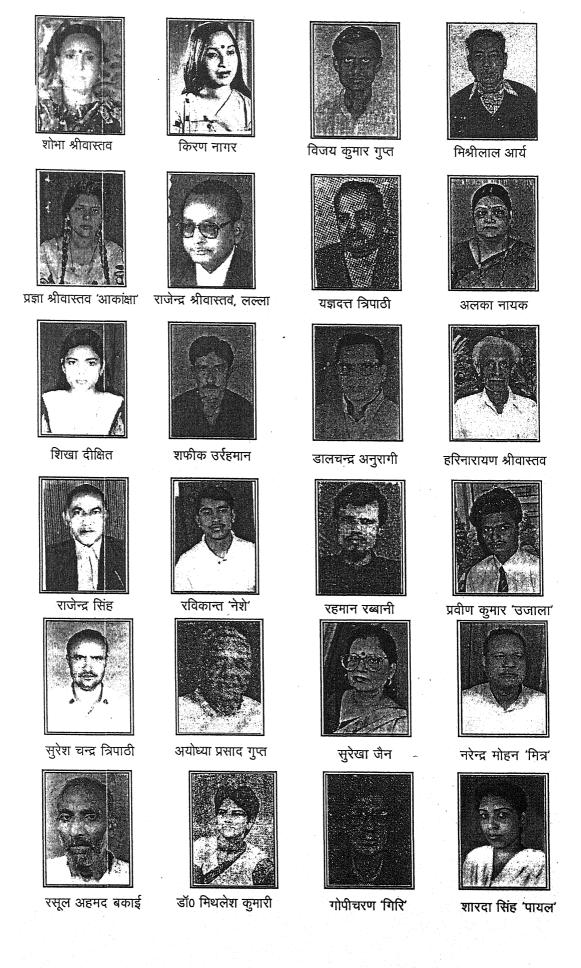
पत्रकार

स्व0 नरेन्द्र मोहन

बृजराज परिहार

दीपक कुमार अग्निहोत्री

अनिल शर्मा

के. पी. सिंह

श्रीधर सिंह चौहान

अरविन्द कुमार द्विवेदी

राहुल दुबे

संजीव श्रीवास्तव

कवि, लेखक एवं विचारक, मनीषी तो होता ही है, वह दोषज्ञ भी होता है। विचिकित्सा उसका समालोचन-शास्त्र है, विचक्षणता उसका तर्क कवच। काव्य प्रभविष्णुता एवं रचना-धर्मिता उसके करणीय कर्म सुकर्म हैं। इनमें प्रथम प्रभविष्णुता प्राकृत है, ईश्वर प्रदत्त है एवं द्वितीय रचनाधर्मिता सत्वानुरूपा क्रिया है। बिन्दु से पिण्ड एवं पिण्ड से भ्रूण तदनन्तर शरीर का विराटत्व विकास प्रक्रिया है जो सब में समान नहीं होती। एक व्यक्ति में समग्र रूप से एक साथ भी नहीं होती। शनैः शनैः ही सम्भव है।

माया हरीश्याम पारथ

२८-७-२००५

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद' का स्वहस्त लेख

श्री लखनलाल पाल को उनके उद्यमपूर्ण शोधकार्य पर
अनेक शुभकामनाएं

अनुशासित क्रमवश पतझर से, मधुमास बदलते देखा है।
संयम के बल पर यौवन का, विश्वास बदलते देखा है।
निःस्वार्थ साधना के बल पर, संसार बदलना क्या मुश्किल,
संकल्पों के बल पर युग का, इतिहास बदलते देखा है।

अयोध्याप्रसाद गुप्त 'कुमुद'

१६।८।२००५

रामजी कुमार सक्सेना का स्वहस्त लेख

Hail To Sorrow

Hey Sorrow!
Thou prevailest upon all the beings.
I seek your company
As like cloud-flakes
Thy [illegible] exquisitry ecstasy & mirth
Your place is safe
Your impact is safe
I feel not disillusioned any more
And heave a sigh of relief
in your company blest
Cherished by the peak

7.1.1978
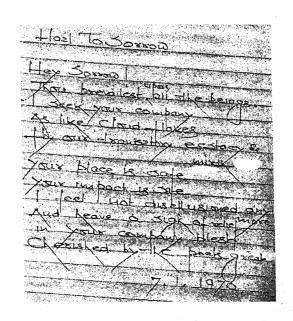
यज्ञदत्त त्रिपाठी का स्वहस्त लेख

- शुभ कामना सन्देश -

यह जान कर मैं हर्ष विभोर हूँ कि युवा कवि - एवम् साहित्यकार श्री लखनलाल पाल ने अत्यन्त लगन और परिश्रम के साथ 'जनपद जालौन के सारस्वत योगदान' जैसे सर्वथा नवीन विषय पर अपना शोध-कार्य सम्पन्न - कर लिया है।

शिक्षा के क्षेत्र मे यह शोध-कार्य कर के, शोध-कर्ता - श्री लखनलाल पाल ने बुन्देलखण्ड के इस उपेक्षित जनपद की - साहित्यिक प्रतिभाओं को उजागर किया है। ऐसा कर के - प्रबुद्ध शोध कर्ता ने जनपद जालौन और इस की परिधि में - रचित एवम् विकसित साहित्य तथा साहित्यकारों के प्रति - अनुग्रह किया है जो उन का प्रशंसनीय प्रयास है। उन का - स्वयं का साहित्यिक योगदान भी एक श्रेष्ठ साहित्यकार की - श्रेणी में, उन्हें खड़ा करने के लिये पर्याप्त है।

मैं ने उन के द्वारा रचित उन का प्रथम उपन्यास - 'रंग दे तिरंगा खून में' पढ़ा,अन्य स्फुट काव्य रचनायें भी। उन की सभी रचनायें राष्ट्र-प्रेम और देश-भक्ति की - भावनाओं से ओत-प्रोत हैं।

उन की सफलता के लिये मैं उन्हें अपनी शुभ-कामनायें - प्रेषित करता हूँ और शोध-कर्ता के उज्वल भविष्य की - कामना करता हूँ। पुन: पुन: बधाई।

उरई
दिनांक १४-८-०५

शुभाकांक्षी -
प. यज्ञदत्त त्रिपाठी
कालपी

साहित्यकारों एवं पत्रकारों के जन्मस्थान
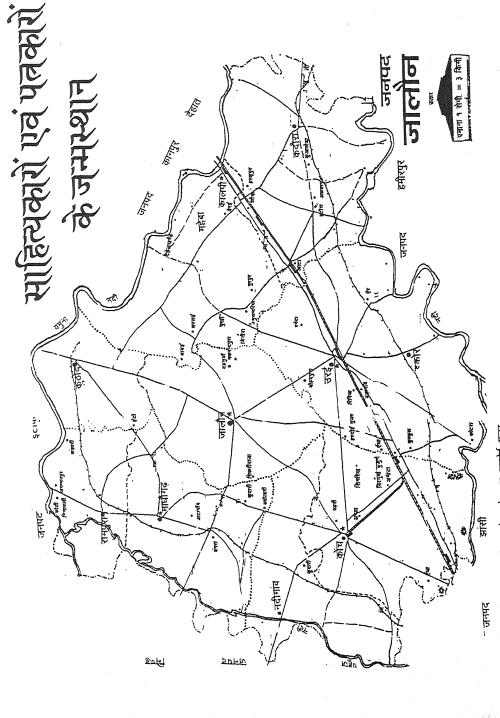
उरई तहसील – उरई, ऐंधा, ऐर, कुरकुरू, कोटरा, रिनिया, रगेदा, बोहदपुरा, हरदोई, गूजर
जालौन तहसील– जालौन, दहगुवाँ, मकरन्दपुरा, सिकरी राजा, क्योलारी (कैलाशनगर), हदरूख, कोठी निनावली
कोंच तहसील– कोंच, पड़री, कुदारी, पहाड़गाँव, नदीगाँव
कालपी तहसील– कालपी, हरकूपुर, सरसई, नूरपुर, इटौरा, कुआंखेड़ा, मुसमरिया, अकबरपुर, बैरई, बाबई

अन्य उल्लेख्य सामग्री

सुशील मिश्रा

सिविल लाइन्स, उरई (जालौन)

नाथूराम गुप्त

संस्कृति प्रसार न्यास,

खोया मण्डी, उरई (जालौन)

दूरभाष : 05162–252069

माया हरिश्याम 'पारथ'

गुरुकुल 221 सुशील नगर,

ऑफीसर कालौनी के सामने, उरई

दिनेश चन्द्र द्विवेदी

सुशील नगर, राजकीय कालौनी

ई टाइप के सामने, उरई (जालौन)

नासिर अली नदीम

41/1 नारोभास्कर, जालौन, उ0प्र0

नरेन्द्र मोहन 'मित्र'

गाँधी नगर, कोंच, जालौन

अयोध्या प्रसाद गुप्त 'कुमुद'

मण्डपम्, राठरोड, उरई (जालौन)

दूरभाष : 05162.252450

डॉ0 नारायण दास समाधिया

प्राचार्य, दयानन्द वैदिक स्नातकोत्तर

महाविद्यालय, उरई (जालौन)

माया सिंह 'माया'

बैंक कालौनी

238/1 सी, राजेन्द्र नगर, उरई

राजेन्द्र श्रीवास्तव 'लल्ला'

अम्बेदकर चौराहा पटेल नगर

उरई (जालौन)

शफीक उर्रहमान

205 शिवपुरी, उरई (जालौन)

यज्ञदत्त त्रिपाठी

राठ रोड, मण्डी गेट के सामने,

उरई (जालौन)

रहमान रब्बानी

727, राम चबूतरा, नई बस्ती

कालपी –285204

दूरभाष : 274093

रसूल अहमद –'सागर' बकाई

रामपुरा, जिला जालौन

राममोहन शर्मा 'मोहन'

गणेश जी, गीत गली, जालौन

सुरेन्द्र नायक

782, नया रामनगर,

कोटरा रोड, उरई (जालौन)